श्रीः

कबीर साहेबका मुख्य ग्रंथ ।

मूलबीजक टीकासहित

जिसको

कबीरपंथी महात्मा पूरनसाहेब जोकि कबीरसाहेबके समान हो गये उन्होंने अपने अनुभवसे टीका बनाया ।

उसीको

बीजक मूल तथा बीजक टीकाके कविताओंके सूचीपत्र और पञ्च कोशनके कोष्टक सहित.

बुरहानपुर निवासी कबीरपन्थी साधु काशीदासजी द्वारा शुद्ध प्रति पाकर,

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बम्बई.

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-मुद्रणयन्त्रालयमें

मुद्रित कर प्रकाशित किया ।

संवत् १९७८, सन् १९२१.

यह पुस्तक खेमराज श्रीकृष्णदासने बंबई खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा लेन, निज "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्-प्रेसमें अपने लिये छापकर यहाँ प्रकाशित किया।
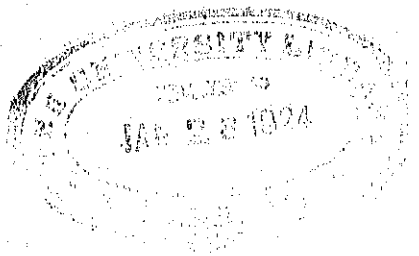
श्री कबीर साहिब

भूमिका

कबीर साहेबकी बानीके बहुत ही ग्रन्थ हैं परन्तु मुख्य सत्य निर्णयरूप ग्रन्थ बीजक है । उसमें रमैनी, शब्द, साखी आदि बानी रक्खी हैं परन्तु संस्कृतके श्लोककी समान मुख्य गूढ अर्थकी समझ होनेकी बहुतही कठिनता है । बहुतसे साधु सन्त और ही और अर्थ लगाते रहैं याहीते कबीर पन्थियोंमें भी नाना पंथ होगयेहैं । कोई बिरले ही संत पूर्ण अर्थ जानते रहैं और कोई बिरलेही साधुको यथार्थ बोध होता रहा । सत्तर वर्षके पीछे बुरहानपुर नागझिरी स्थानपर एक कबीरपंथी महात्मा पूरन साहेब केवल कबीर साहेबकेही समान होगये । उन्होंने यह सब न्यूनता देखकर दयास्वभावसे और अपने स्वानुभवसे बीजककी त्रिजा बनाई जिसको बीजक टीका कहते हैं वही यह ग्रंथ है जिसमें सब मूल बीजकका अर्थ सुलभतासे सफा खोलकर दर्शाये हैं और नाना मत मतांतरोंके सिद्धांतोंकी सब कसर बतायके जीवको जीवन्मुक्त स्थिति जैसे कबीर साहेब उपदेश किये हैं सोई स्थिति रहनी संयुक्त देखाये हैं यह ग्रंथ प्रथम लखनऊमें छपा था पीछे इलाहाबादमें छपा । परंतु छपानेवालोंने केवल रोजगार कर नफाके ही तरफ देखके बुरहानपुरके महंत साहेबके सम्मति बिना और बुरहानपुरके विचारवान् साधुनसे अच्छे शोधे बिना छपवाये इससे हजारों चुकें रहगयीं और कहीं कहीं अर्थका अनर्थ भी होगया है याहीते हमने बुरहानपुरके महन्तसाहेब और कासीदासजी आदि साधु द्वारा अच्छी शुद्ध प्रति प्राप्त कर वही त्रिजा छपाई है देखनेसेही जानोगे जो कबीरपंथी कबीर साहेबके सत्य न्यायरूप ज्ञानका शौक और चाह रखते हैं उन्हें शीघ्रही मँगाकर अपना मनुष्य जन्म सुधारना चाहिये ।

प्रकाशक.

सूचीपत्र ।

॥ दया गुरुकी ॥

मूल बीजकके शब्दनका सूचीपत्र.

इति मूलबीजकके शब्दनका-सूची-पत्र समाप्त.

बीजकटीकामें पूरनसाहेबकृत कवित्तआदिका सूचीपत्र ।

समाप्त.

अथ पंच कोशनका कोष्ठक

नाम	स्थूलदेह	सूक्ष्मदेह	कारणदेह	महाकारणदेह	कैवल्यदेह
१ कोश	अन्नमय	प्राणमय	मनोमय	ज्ञानमय	विज्ञानमय
२ आश्रम	ब्रह्मचर्य	गृहस्थ	वानप्रस्थ	संन्यास	परमहंस
३ चिह्न	आचार	गुरुमय	जङ्गमआत्म-लिंग	शिवलिंग	प्रसाद
४ प्रलय	नित्य	नैमित्य	विश्व	महा	एकान्त
५ दशा	बाल	पिशाच	उन्मत्त	मूक	जड
६ अवस्था	जाग्रत्	स्वप्न	सुषुप्ति	तुरीया	उन्मनी
७ साधन	श्रवण	मनन	निदिध्यास	साक्षात्कार	सहजास्वरूप
८ मुक्ति	सालोक्य	सामीप्य	सारूप्य	सायुज्य	निर्गुण(जीवन-न्मुक्ति)
९ अभिमान	विश्व	तैजस	प्राज्ञ	प्रत्यगात्मा	निरंजन
१० दीक्षा	कोहं	योहं	शिवोहं	सोहं	अनामयोहं
११ आनन्द	विषय	योग	अद्वैत	विदेह	ब्रह्म
१२ निर्णय		अक्षर	क्षेत्रज्ञ	आत्म	कूटस्थ
१३ देवता	गणेश	मार्तण्ड	रुद्र	ईश्वर	निरंजन
१४ शक्ति	क्रिया		ज्ञान	इच्छा	परा
१५ अग्नि	जठर	काम	मन्द	बडवा(ज्ञान)	ब्रह्म
१६ पाद गायत्री	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	ब्रह्मपद
१७ बहिर मुद्रा	खचरी	भूचरी	चांचरी	अगोचरी	सर्वसाक्षिनी
१८ वाचा	वैखरी	मध्यमा	पश्यंती	परा	अनिर्वाच्य
१९ मात्राॐकारकी	अकार	उकार	मकार	इकार(अर्धमात्रा)	यँकार (बिंदु)
२० गुण	रज	सत्व	तम	शुद्धसत्व	निर्गुण
२१ देवता	ब्रह्मा	विष्णु	रुद्र	ईश्वर	शिवदेव
२२ स्थानद्वार	नेत्र	कण्ठ	हृदय	मूर्धनी	शिखा
२३ प्रमाण	साढेतीनहाथ	अंगुष्ठा	अर्धअंगुष्ठ	मसर	प्रमाणहीन
२४ ब्रह्म	तारक	दण्डक	कुण्डल्य	अर्धचन्द्र	बिन्दु

नाम	स्थूलदेह	सूक्ष्मदेह	कारणदेह	महाकारणदेह	कैवल्यदेह
२५ स्थानचक्र	त्रिकुटी	श्रीहट	गोल्हाट	औटपीठ	भँवरगुफा
२६ मुख्य दिशा	पूर्व	पश्चिम	दक्षिण	उत्तर	ऊर्ध्व
२७ दिशानकीदेवता	इंद्र	वरुण	यम	कुबेर	ब्रह्मा
२८ कर्म	सृजन	पालन	प्रलय	सूर्य	चन्द्र
२९ शून्य	अर्द्ध	ऊर्ध	मध्य	सर्व	महा
३० वर्ण	पीत	श्वेत	लाल	हरा	काला
३१ उच्चार	ह्रस्व	दीर्घ	उच्चार	रहित	उच्चार
३२ वेद	ऋग्	यजुः	अथर्वण	साम	सुसंवेद (स्वसंवेद्य)
३३ तत्त्व	पृथिवी	जल	अग्नि	वायु	आकाश
३४ उपदिशा	ईशान्य	नैर्ऋत्यत्व	आग्नेय	वायव्य	अधो
३५ दिशानकीदेवता	शिव	नैर्ऋत्य	आग्नेय	वायु	विष्णु
३६ बाजा	तन्तु	शंख	झांझ	मृदंग	वंसी
३७ पिण्डके वायु	अपान	प्राण	उदान	समान	व्यान
३८ आकाश	घटाकाश	मठाकाश	महदाकाश	चिदाकाश	निजाकाश
३९ कमलरंग	पीतऔरक्त	शामऔरक्त	रक्तऔश्वेत	शामऔशुद्ध पीत	पीत औ श्वेत
४० मार्ग	पपील	विहंगम	कपि	मीन	शेष
४१ वेद ऋचा	अर्द्ध	वामदेव	सत्पुरुष	ईशान्य कला	अघोर
४२ कला	ऊर्मी	धूर्मी	ज्योति	ज्वाला	कलातीत
४३ लोक	सत्य	वैकुण्ठ	कैलास	ज्वाला	निराधार
४४ गुप्त मुद्रा	सन्मुखी	उन्मीलनी	शांभवी	आत्मभावनी	पूर्णबोधनी
४५ झीनी वायु	किंकरा	नाग	कूर्म	देवदत्त	धनंजय
४६ विकार	अहं	मनमन्तव्य	बुद्धिबोधव्य	चित्तचिंतन	अन्तःकरण निर्विकल्प
४७ भूमिका	क्षिप्रा	गतागत	सौलेष्टता	सुलीन	अभाव
४८ भाव	प्रध्वंसा	प्राग	अनन्य	अत्यंता	भावातीत
४९ भोग	स्थूल	सूक्ष्म	आनन्द	आनन्दभास (ईश्वररूप)	ब्रह्ममय

इति पंच-कोशनका कोष्ठक

॥ सद्गुरवे नमः ॥

दया गुरुकी ।

अथ लिख्यते बीजकका त्रिज्या बुझार्थ ।

प्रथम अनुसार ।

बंदौं चरण सरोज । जिन्ह यह बीजक निर्मयो ॥
परख दिखायो खोज । ते गुरुसम दूजा नहीं ॥ १ ॥
निर्णय दीन्ह कृपाल । परख प्रकाशी स्थीरपद ॥
परखायो सब जाल । महादुखित जिब जानिके ॥ २ ॥
दया क्षमा सन्तोष । धीरज शील विचार गुण ॥
एक अनेक को धोख । परखायो निज परखते ॥ ३ ॥
अशरण शरण उदार । सुख साहेब सुखरू
हुँ टीका विस्तार । तब पारखते कृपानिधी ॥ ४ ॥
वंदौं सन्त समाज । जे निर्णई गुरु परखके ॥
दृढ मम हृदय विराज । सदा सुखी दयानिधी ॥ ५ ॥

अथ रमैनी मूल ।

रमैनी १.

अन्तर ज्योति शब्द इक नारी । हरि ब्रह्मा ताके त्रिपुरारी ॥
ते तिरिये भग लिंग अनन्ता । तेउ न जाने आदिउ अन्ता ॥
बाखारि एक विधाते कीन्हा । चौदह ठहर पाट सो लीन्हा ॥

हरि हर ब्रह्मा महंतों नाऊँ । तिन्ह पुनि तीन बसावलगाऊँ ॥
तिन्ह पुनिरचल खंड ब्रह्मंडा । छौ दर्शन छानवे पाखंडा ॥
पेट न काहू बेद पढाया । सुन्नति कराय तुरुक नहिंआया ॥
नारीमों चित गर्भ प्रसूती । स्वांग धरे बहुतै करतूती ॥
तहिया हम तुम एकै लोहू । एकै प्राण बियापै मोहू ॥
एकै जनी जना संसारा । कौन ज्ञानसे भयउ निनारा ॥
भौं बालक भग द्वारे आया । भग भोगीके पुरुष कहाया ॥
अविगतिकीगति काहुनजानी । एक जीभ कित कहूँ बखानी ॥
जो मुख होय जीभ दशलाखा । तो कोइ आय महंतों भाखा ॥
साखी--कहहिं कबीर पुकारिके । ई लेऊ व्यवहार ॥
राम नाम जाने बिना । भव बूडि मुवा संसार ॥ १ ॥

टीकाबुझार्थगुरुमुख--दोहा--मन माया कृत भास भौ, सोई शब्द ॐकार ॥ एक जीव अनुमानते, बानी रची विचार ॥ १ ॥ हरि हर ब्रह्मा तकतही, पुनि भग लिंग अनंत ॥ तिनहुँ न जाना अंत कछू, तब हारि कहा बेअंत ॥ २ ॥ बाखरी एक बनायके, ब्रह्मै उक्ती कीन्ह ॥ हंता मनमें लायके, चौदह भुवन पाटसो लीन्ह ॥ ३ ॥ बानीवचन--कर्तारूपी तीन भये, हरि हर ब्रह्मा नांव ॥ इन हिन तीनिहुं लोक रची, खंड ब्रह्मांड सो ठांव ॥ ४ ॥ छौ दर्शन छानवे कही, पाखंड दिये बनाय ॥ इतना बानी बचन सुनी, जीव सबै बौराय ॥ ५ ॥ गुरुमुख--गर्भवासके बीचमें, काहु न वेद पढाय ॥ यथा सुन्नति करवाय के, तुरुकहु नाहीं आय ॥ ६ ॥ बानीमें चित लायके, भयो गर्भ अभिमान ॥ ताते स्वांग बहुकरनि कही, हिंदू मूसलमान ॥ ७ ॥ तहिया हम तुम एकही, लोहू एकै प्रान ॥ एक मोह व्यापक सकल, कियो आपनो भान ॥ ८ ॥ एक नारि एक पुरुष जग, और

कहां ते आय ॥ कौन ज्ञान अनुमान करी, परेहु भर्मके माहिं ॥९॥ बहुतक बालक रूप धरी, भगद्वारे ते आय ॥ भग भोगन इच्छा करी, तब पुनि पुरुष कहाय ॥ १० ॥ अविगति एक अनुमान है, ताको कोइ न जान ॥ एक जीवपद स्वतः है, केतो कहौं बखान ॥ ॥ ११ ॥ जैसे मुख जीभ एक है, ऐसे होय दश लाख ॥ तो कोइ यामें श्रेष्ठ कहि, यथा महंतो भाख ॥ १२ ॥

साखी–कहाँ है जाहि पुकारहू । बानी लेव व्यवहार ॥
अनुमित सैन जाने बिना । बहु भरमि मुवा संसार ॥ १३ ॥

रमैनी २.

जीवरूप एक अंतर बासा । अंतर ज्योति कीन्ह परकासा ॥
इच्छारूपि नारि अवतरी । तासु नाम गायत्री धरी ॥
तेहि नारिके पुत्र तीनि भयऊ । ब्रह्मा विष्णु महेश्वर नांऊ ॥
फिर ब्रह्मैं पूछल महतारी । को तोर पुरुष केकारि तुमनारी ॥
तुम हम हम तुम और न कोई । तुमहिसे पुरुष हमें तोरि जोई ॥
साखी–बाप पूत की एकै नारी । एकै माय बियाय ॥
ऐसा पूत सपूत न देखा । जो बापहि चीन्हैं धाय ॥ २ ॥

टीकागुरुमुख–दोहा–जीवरूप जो जमा है, याते सब व्यवहार ॥ जीव अनुमाने सब भयो, खानी बानि विचार ॥ १ ॥ एक जीव अंतर मन, जो मानै प्रतिबिम्ब ॥ मानतहीं बासा कियो, कूरि-पद लाग्यो लीव ॥ २ ॥ बिम्बते बिम्बाकार भौ, सोई माया रूप ॥ पक्केसे कच्चा भयो, परचो अहंता कूप ॥ ३ ॥ हंता करि इच्छा कियो, नारिरूप कियो ठाढि ॥ गायत्री नाम धराय पुनि, विपीत मनमें बाढि ॥ ४ ॥ तेहि नारी परसंग भौ, तीन बुंद भग डार ॥ तब वह रूप विनाश भौ, उपजे तीनिउ बार ॥ ५ ॥ ब्रह्मा

विष्णु महेश अस, तिनिके तिनि नांव ॥ फिर ब्रह्मा पूछन लगे, टेकि जननिके पांव ॥ ६ ॥ कौन तुम्हारो पुरुष है,केकरि हो तुम नारि॥ यह संशय मैं पूंछहूं, मो प्रति कहो विचार ॥ ७ ॥माया वचन--तुम हम हम तुम और नहीं, निश्चय हृदय विचार ॥ तुमहिं सरीखे पुरुष जग, हमहिं सरीखी नारि ॥ ८ ॥

साखी--पुरुष कहियें बाप को । पुत्रहु पुरुष कहाय ॥
नारी कहिये स्त्री को । माता नारि कहाय ॥ ९ ॥

रमैनी ३.

प्रथम आरंभ कौन को भयऊ । दूसर प्रगट कीन्ह सो ठयऊ॥
प्रगटे ब्रह्मा विष्णु शिव शक्ती । प्रथमें भक्ति कीन्ह जिव उक्ती॥
प्रगटे पवन पानी औ छाया । बहु विस्तारके प्रगटी माया ॥
प्रगटे अंडे पिंड ब्रह्मंडा । पृथिवी प्रगट कीन्ह नौखंडा॥
प्रगटे सिद्ध साधक संन्यासी । ई सब लागिरहे अविनासी ॥
प्रगटे सुर नर मुनि सब झारी । तेहिके खोज परे सब हारी ॥
साखी--जीव शीव सब प्रगटे । वै ठाकुर सब दास ॥
कबीर और जाने नहीं । एक रामनामकी आस ॥ ३ ॥

टीकागुरुमुख--दोहा--प्रथम आरंभ भयो कौनसे, ताकर करहु विचार ॥ दूसर प्रगट कौने किया, जाते सब व्यवहार ॥ १ ॥ प्रगटे ब्रह्मा विष्णु शिव, ता शक्ति सो जान ॥ प्रथमें भक्ती कीन्ह तिन, करि आपन अनुमान ॥ २ ॥ पांच तत्व सब प्रगटे, अंड पिंड ब्रह्मंड ॥ बहु विस्तारिक रूप भौ, प्रगटी पृथिवी नौ खंड ॥ ३ ॥ प्रगटे योगी भक्त सब, ज्ञानी स्वयं अखंड ॥ ई सब लागी रहे हैं, अविनाशी के डंड ॥ ४ ॥ देव ऋषि औ मनुज सब, प्रगट भये हैं झार ॥ खोजत खोजत ब्रह्म को, सबै रहे हैं हार ॥ ५ ॥

साखी--जीव से प्रगट शीव भये । अब शिव ठाकुर जिव दास ॥
अबोध जीव कहत हैं । मोहिं राम नामकी आस ॥ ६ ॥

रमैनी ४.

प्रथम चरण गुरु कीन्ह विचारा । कर्ता गावै सिरजनहारा ॥
कर्म कै कै जग बौराया । सक्तभक्ति कै बांधेनि माया ॥
अदबुद रूप जातिकी बानी । उपजी प्रीति रमैनी ठानी ॥
गुणीअनगुणी अर्थ नहिं आया । बहुतक जनेचीन्हिनहिंपाया
जो चीन्है ताको निर्मल अंगा । अनचीन्हे नर भयो पतंगा ॥
साखी--चीन्हिचीन्हिका गावहु बौरे । बानी परी न चीन्ह ॥
आदि अंत उत्पति प्रलय । आपूही कहि दीन्ह ॥ ४ ॥

टीकागुरुमुख--दोहा-प्रथम गुरू ब्रह्मा बने, असकै कीन्ह विचार ॥ गावन लागे प्रेमसे, कोई एक सिर्जनहार ॥ १ ॥ कर्ता प्राप्तिके कारणे, बहुतक कर्म लगाय ॥ तेहि कर्मनमें बँधे जीव, सबै गये बौराय ॥ २ ॥ भक्तिरूपी माया सो;सक्त जीव भये बंध ॥ घूमन लागे बावरे, कछू न सूझै अंध ॥ ३ ॥ अदबुद रूप अपार अस, कहै ब्रह्मा की बानि ॥ तेहि पद प्रेम प्रवाहते, भक्ति सभन मिलि ठानि ॥ ॥ ४ ॥ गुणी जीव खोजन लगे, अनगुणिया अनुमान ॥ बहुतक चीन्हि न पाइया, तब हारि कहा निर्बान ॥ ५ ॥ जो यह धोखा चीन्हि है, पारख ताको अंग ॥ अनचीन्हें यह जगत जिव; जिमि दीपक ज्योति पतंग ॥ ६ ॥

साखी--चीन्हि चीन्हि का गावहु बौरे । बानीपरी न चीन्ह ॥
आदि अंत उत्पति परलय । आपूही कहि दीन्ह ॥ ७ ॥

रमनी ५.

कहांलौं कहौंयुगनकी बाता । भूले ब्रह्म न चीन्हैं बाता ॥

हरि हर ब्रह्माके मन भाई । बिबि अक्षर लै युक्ति बनाई ॥
बिबि अक्षर का कीन्ह बँधाना।अनहद शब्द ज्योति परवाना ॥
अक्षर पढ़ि गुणि राह चलाई । सनक सनंदनके मन भाई ॥
वेद कितेब कीन्ह बिस्तारा । फैल गैल मन अगम अपारा ॥
चहुँ युग भक्तन बांधल बाटी । समुझि न परी मोटरी फाटी ॥
भौ भै पृथिवी दहुँदिश धावै । अस्थिर होय न औषध पावै ॥
होयंबिहिस्तजोचित न डोलावै।खसमहि छाडि दोजखको धावै
पूरब दिशा हंस गति होई । है समीप सँधी बूझे कोई ॥
भक्ता भक्तिक कीन्ह सिंगारा।बूडि गयल सब मांझल धारा॥
साखी–बिन गुरु ज्ञान दुन्द भइ । खसम कही मिलि बात ॥
युग युग सो कहवैया । काहु न मानी बात ॥ ५ ॥

टीकागुरुमुख–दोहा–कहाँ लों कहौं युगन की, बात रची जो ठाट ॥ भूले ब्रह्म कहाय जीव, चीन्हें नहिं निज बाट ॥ १ ॥ हरि हर ब्रह्मा के मन, आय गई यह बात ॥ राम अस दुइ अक्षर ले, रचिया जग उत्पात ॥ २ ॥दुइ अक्षर बन्धान करि, माया ब्रह्म मिलाय ॥अक्षर पढीगुणि राह तब, दीन्ही आप चलाय ॥ ३ ॥ सनक सनन्दनके हिये, राच रही यह बात ॥ वेद कितेब बिस्तार करी, ताहिको गावै नाथ ॥ ४ ॥ फैले अगम अपार कही, काहु न पावै बाट ॥ चारिउ युग के भक्त सब,बांधन लागे घाट ॥ ५ ॥ समुझि परी नहिं काहु को, फाटा भरम अपार ॥ भय भय जीव धावन लगे, थीर न पावै पार ॥ ६ ॥ मायामुख–होय मुक्ति यह जीव की, जो कहुं चित न डोलाय ॥ राम अस खाविन्द छाडिके, नर कहां पेटको धाय ॥ ७ ॥ पूर्वसनातन ब्रह्म जो, परमहंस गति होय॥ है समीप सो कर्ता, संधि बूझै जो कोय ॥ ८ ॥ गुरुमुख–यह माया

का वचन सुनि, भक्तन कीन्ह सिंगार ॥ भक्ती नारि कहाय के, बूड़े मन की धार ॥ ९ ॥

साखी--गुरु नहिं ज्ञान दुन्द मची । खसम गहा इन हाथ ॥
युग युग कहनहार सो। मानत कोइनहिंबात ॥ १० ॥

रमैनी ६.

वर्णहु कौन रूप औ रेखा। दूसर कौन आहिजो देखा ॥
वो ॐकार आदि नहिं वेदा । ताकर कहहु कौन कुल भेदा ॥
नहिं तारागण नहिं रविचंदा। नहिं कछु होते पिताके बिंदा ॥
नहिं जल नहिं थल नहिं थिर पवना।को धरेनाम हुकुम को बरना
नहिं कछु होते दिवस निशु राती।ताकर कहहु कौन कुल जाती॥
साखी--शून्य सहज मन सुमिरते । प्रगट भई एक ज्योत ॥
ताही पुरुष की मैं बलिहारी।निरालब जो होत॥ ६ ॥

टीकागुरुमुख--दोहा--वर्णहु कौने रूप को, रेख भेद कस आहि ॥ दूसर कौन बतावहू, जाको देखन चाहि ॥ १ ॥ ॐकार की आदि को, वेदहु जानत नाहिं ॥ ताको काह बखानहू, कौन भेद कहि ताहि ॥ ॥ २ ॥ मायामुख--नहिं तारा रविचंदा नहीं, नहीं पिताके बिंद ॥ नहिं जल थल नभ पवन नहीं, रूपहीन गोविंद ॥ ३ ॥ गुरुमुख--चन्द्र सूर्य कछु ना हते, पांच तत्त्व तब नाहिं ॥ ताकर नाम कौने धरा, को हुकुम कहा जग माहिं ॥ ४ ॥ दिवस राति कछु ना हती, वर्ण रूप कछुनाहिं ॥ सो मिथ्या अनुमान है, का कहि वर्णहु ताहि ॥ ५॥
साखी-जीवमुख-शून्य माहिं सहजै विधी, मनहि सुमेर चढ़ाय ॥
प्रगट भई एक ज्योति जो, मैं बलिहारी ताहि ॥ ६ ॥
सोई पुरुष निर्लेप है, निरालंब कहि ताहि ॥
ताका मैं सुमिरन करौं, दुतिया कोई नाहिं ॥ ७ ॥

रमैनी ७.

तहिया होते पवन नहिं पानी। तहिया सृष्टि कौन उत्पानी॥
तहिया होते कली नहिं फूला। तहिया होते गर्भ नहिं मूला॥
तहिया होते विद्या नहिं वेदा। तहिया होते शब्द नहिं स्वादा॥
तहिया होते पिंड नहिं बासू। नहिं धर धरणि न पवन अकासू॥
तहिया होते गुरू नहिं चेला। गम्य अगम्य न पंथ दुहेला॥
साखी—अविगतिकी गति का कहो। जाके गांव न ठांव॥
गुण बिहूँना पेखना। का कहि लीजे नांव॥ ७॥

टीकागुरुमुख—दोहा—तहिया होते पवन नहीं, पानी तहिया नाहिं॥ तहिया सृष्टि कौने किया, दृढ कै निरखहु ताहि॥ १॥ जीवमुख—नहिं तब शक्ति संसार नहीं, गर्भ जीव तब नाहिं॥ विद्या वेद तब ना हते, शब्द स्वाद कहु काहिं॥ २॥ तहिया पिंडहु ना हते, नहीं पिंड में बास॥ पानी पृथिवी ना हती, पवनहु नाहिं अकाश॥ ३॥ तहिया गुरू ना हते, चेला तहिया नाहिं॥ गम्य अगम्य कहत बने नहिं, पंथ कठिन अति ताहिं॥ ४॥
साखी—गुरुमुख-जाकी गति कछु है नहिं, ताकी गति कहु काहि॥
गांव ठांव नहिं रूप नहीं, कैसे देखहु ताहि॥ ५॥

रमैनी ८.

तत्त्वमसी इनके उपदेशा। ई उपनिषद कहैं संदेशा॥
ई निश्चय इनके बड भारी। वाहिक वर्णन करें अधिकारी॥
परमतत्व का निज परवाना। सनकादिक नारद शुक माना॥
याज्ञवल्क्य औ जनक सम्वादा। दत्तात्रेय वोही रस स्वादा॥
वोहिबात राम वशिष्ठ मिलि गाई। वोहि बात कृष्ण उधव समुझाई॥
वोहि बात जो जनक दृढाई। देह धरे विदेह कहाई॥

साखी—कुल मर्य्यादा खोय के। जीवत मुवा न होय॥
देखत जो नहिं देखिया। अदृष्ट कहावै सोय॥ ८॥
टीकागुरुमुख—दोहा—मैंही ब्रह्म संदेश यह, वेदन जो कहि दीन्ह॥ यह निश्चय बारी परी, तब वाही को वर्णन कीन्ह॥ १॥ परमतत्त्व परमात्मा, ताको निज परमान॥ सनकादिक नारद मुनी, शुकाचार्य लिये मान॥ २॥ याज्ञवल्क्य और जनक को, यही भयो सम्वाद॥ दत्तात्रेय अवधूत को, यहि रस लाग्यो स्वाद॥ ३॥ यही बात रघुनाथ को, मुनि वशिष्ठ समुझाय॥ यही बात श्रीकृष्ण ने, उद्धव दीन्ह लखाय॥ ४॥ यही बात के भीतरे; जनकहु दृढता कीन्ह॥ देह धरे निशिदिन रहै, कहैं देह ते भिन्न॥ ५॥
साखी—जीयतही मरिजाइये, कुल मय्यादा खोय॥
जीव तो कबहुँ मरै नहीं, यह सब मिथ्या होय॥ ६॥
देह धरे जो जगत में, कहैं विदेही जान॥
देखेसे जो ना दिखै, सो मिथ्या धोखा मान॥ ७॥

रमैनी ९.

बांधे अष्ट कष्ट नौ सूता। यम बांधे अंजनी के पूता॥
यम के बाहन बांधे जनी। बांधे सृष्टि कहां लौं गनी॥
बांधेउ देव तैंतीस करोरी। संबरत लोहबंद गौ तोरी॥
राजा संबरे तुरिया चढी। पन्थी संबरे नामलै बढी॥
अर्थ बिहूना संबरे नारी। परजा संबरे पुहुमी झारी॥
साखी—बंदि मनावै सो पावै। बंदि दिया सो देय॥
कहैं कबीर सो फल ऊबरे। जो निशिवासर नामहिं लेय ९॥
टीकागुरुमुख—दोहा—अष्ट योग कष्ट ज्ञान, नौधा भक्ती मान॥ सूतजीव बांधन लगे, प्रपंच माया जान॥ १॥ भगवंत अपनी भक्तिमें

बांधे अज्ञनि पूत ॥ ब्रह्मादिक पंडित जते, सब बांधे एकै सूत ॥ २ ॥ बांधा सारी सृष्टि को, कहाँ लों करों बखान ॥ तैंतिस कोटी देवता, सकलो कियो बँधान ॥ ३ ॥ मायामुख—जग आसक्तता छाँडिके, जिन सुमिरा भगवान ॥ चौरासी छूटी तिन्हैं, पद पायो निर्वान ॥ ४ ॥ गुरुमुख—ज्ञानी तुर्या ऊपरै, सुमिरतहैं दिन रैन ॥ योगी अजपा में मिले, रहत मनहिंमें चैन ॥५ ॥ अर्थ बिहीना ब्रह्म को, सुमिरत हैं सबभक्त। कर्ता हर्ता हरिहि कही, सुमिरत हैं सब जक्त ॥ ६ ॥

साखी—मायामुख—वंदन करै भगवंतकी, सो फल पावै चार ॥
जाने जग उत्पति कियो, सो मुक्ति करे निर्धार ॥ ७ ॥
कहैं वेद मुनि मनुज तन, तेही उबरे जान ॥
नाम लेत निशिबासर, सुमिरे श्रीभगवान ॥ ८ ॥

रमैनी १०.

रहि लै पिपराही बही । करगी आवत काहु न कही ॥
आई करगी भौ अजगूता । जन्म जन्म यम पहिरे बूता ॥
बुता पहिरि यम कीन्ह समाना । तीन लोक में कीन्ह पयाना ॥
बाँधेउ ब्रह्मा विष्णु महेशू । सुर नर मुनि औ बांधु गणेशू९॥
बाँधे पवन पावक औ नीरू । चांद सूर्य बांधेउ दोउ बीरू ॥
सांच मंत्र बांधे सब झारी । अमृत वस्तु न जानै नारी ॥
साखी—अमृत वस्तु जानै नहीं । मगन भयो सब लोय ॥
कहहिं कबीर कामों नहीं । जीवहि मरण न होय ॥१० ॥

टीकागुरुमुख—दोहा—याहि राह ले जीवसब, बहे घोर अंधार ॥ फाँसी आवत देखिकै, काहु न कीन्ह पुकार॥ १ ॥आई फांसी जगत पर, भौ धोखा निर्मान॥जन्मजन्म यम देहधरि, कीन्हों बहुत बखान ॥ २॥ देह धरी गुरुवन सबै, कीन्हों बहुत समान ॥ बानी बहुत बनायके, सबहुन कीन्ह पयान ॥ ३ ॥ ता बानीमें बँधगये, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥

सुर नर मुनि बांधे सबै, गौरी पुत्र गणेश ॥ ४ ॥ पवन अग्नी औ जल बँधे, धरति अकाशके माहिं ॥ चान्द सूर्य दोऊ बँधे, छूटो कहु अब काहिं ॥ ५ ॥ साँच जीव बांधा सबै, बहु बानिनमें झारि ॥ अमृत जाको मरन नहीं, ताको जाने न नारि ॥ ६ ॥

साखी-अमृत वस्तु जो जीव है, ताको जाने न कोय ॥
धोखा झांई पायके, मगन मनहिंमें होय ॥ ७ ॥
जाको तुम निश्चय कियो, कहवाँ है सो रूप ॥
सो कछु काम न आइ हैं, जीवहि अमिय स्वरूप ॥ ८ ॥

रमैनी ११.

आंधरि गुष्ट सृष्टि भै बौरी ।तीन लोक में लागि ठगौरी ॥
ब्रह्मा ठगो नाग कहां जाई । देवता सहित ठगो त्रिपुरारी ॥
राज ठगौरी विष्णुपर परी । चौदह भुवन केर चौधरी ॥
आदि अंत जाकीजलकन जानी।ताकी डर तुमकाहेक मानी॥
वे उतंग तुमजाति पतंगा । यम घर कियउ जीवको संगा॥
नीम कीट जस नीम पियारा । विष को अमृत कहत गवांरा॥
विषके संग कौन गुण होई । किंचित लाभ मूल गौ खोई ॥
विष अमृत गौ एकै सानी ।जिन जानी तिन विषकै मानी॥
काह भये नर शुद्ध विशुद्धा । बिन परचय जग बूड नबुद्धा ॥
मतिके हीन कौनगुण कहई । लालच लागी आशा रहई ॥
साखी-मुवा है मारि जाउगे । मुये कि बाजी ढोल ॥
सपन सनेही जग भया। सहिदानी रहिगौबोल॥ ११॥

टीका गुरुमुख-दोहा-आंधरि गुष्ट कहिये वेद को, तामें सृष्टि बौरान॥ तीनिलोकके बीचमें, लागि ठगौरी जान॥ १॥ बानीमें ब्रह्मा ठगे, और शेष ठगे जाय ॥ देवन सहित महादेव ठगे, और विष्णु ठगे भाय॥ २॥ आदि अंत काहु जानी नहीं, काहे डरपहु ताहि।।सो मिथ्या अनुमान

है, रज्जु में सर्प दिखाहि ॥ ३ ॥ ज्योति स्वरूप ताको कियो, तुम भये कीट पतंग ॥ यम घर जीवको संग करि, जरि जरि मरहु पतंग ॥ ४ ॥ जस नीमके कीट को, नीमहि लागे पियार ॥ तैसे भग विषरूप है, अमृत कहत गवांर ॥ ५ ॥ विष विषय के संग में, कौन लाभ होय भाय ॥ किंचित सुखके कारणे, मूलहु आय गवांय ॥ ६ ॥ विष विषय जीव अमृत, गयो एकमें सान ॥ जिन जाना निज परखते, तिन विषये विषमान ॥ ॥ ७ ॥ हे नर तुम बहु शुद्ध थे, काहे भये बेशुद्ध ॥ बिन प्रपंचकी परिचय, सकलो बूडें अबुद्ध ॥ ८ ॥ मतिहीना काहे कहो, जाते बुद्धि नसाय ॥ लालच लागी झूठकी, तामें जन्म गमाय ॥ ९ ॥

साखी—गाया है सो मरि गया, गाव सो मरि जाय ॥
जाके भरोसे नाचत हो, ढोल बजाय बजाय ॥ १० ॥
स्वमवत जग हो गये, ऋषी और अवतार ॥
वचन निशानी रहिगया, जो उनका व्यवहार ॥ ११ ॥

रमैनी १२.

माटिककोटपषान को ताला । सोईके वन सोई रखवाला ॥
सो बन देखत जीव डराना । ब्राह्मण वैष्णव एकै जाना ॥
ज्यों किसान किसानी करई । उपजे खेत बीज नहिं परई ॥
छाँड़ि देहु नर झेलिक झेला । बूडे दोऊ गुरु औ चेला ॥
तीसर बूडे पारथ भाई । जिन बन डाहे दवा लगाई ॥
भूंकि भूंकि कूकुर मरि गयऊ । काज न एक सियारसे भयऊ ॥

साखी—मूस बिलारी एकसंग । कहु कैसे रहि जाय ॥
अचरज यक देखो हो संतो । हस्ती सिंघहि खाय ॥ १२ ॥

टीकागुरुमुख—दोहा—ब्रह्म भरम के कोट में, जड बुधि ताला दीन्ह ॥ ताहि कि सब बानी बनी, ताहिको रक्षक कीन्ह ॥ १ ॥

सो बानी को देखिक,भये जीव भयमान ॥ ब्राह्मण वैष्णव सबन मिलि, कहा एक भगवान ॥२॥ ज्यों किसान किसानी करे, उपजै खेत निदान ॥ तसी बहु शाखा बढी, चले पंथ सहिदान ॥ ३ ॥ छाँडिदेहु नर बानि कोफंद, तोहि कहौंसमुझाय ॥ गुरु शिष्य दोऊ बूडिगये, या फंदा में भाय ॥ ४ ॥ तीसर ब्रह्मादिक सबै, पंडित बूड़े धाय ॥ बिरह अग्नी परचायके, सब जग दीन्ह जराय ॥ ५ ॥ ब्रह्मादिक पंडित सबै, भूंकि भूंकि मरियाय ॥वेद भरोसा किये ते, काज न काहु बनाय ॥ ६ ॥

साखी–माया जीवहि एक सँग । कहु कैसे रहि जाय ॥
अचरज एक देखोहो संतो । धोखा जीवहि खाय ॥ ७ ॥

रमैना १३.

नहिं परतीत जो यह संसारा । गर्वकी चोट कठिन कै मारा ॥
सो तो शेषो जाइ लुकाई । काहू के परतीत न आई ॥
चले लोग सब मूल गमाई । यमकी बाढि काटि नहिं जाई॥
आजु काज जो काल अकाजा। चले लादि दिगंतर राजा ॥
सहज विचारे मूल गमाई । लाभते हानी होय रे भाई ॥
ओछी मती चद्रमा गौ अथई । त्रिकुटी संगम स्वामी बसई ॥
तबहीं विष्णु कहा समुझाई । मैथुन अष्ट तुम जीतहु भाई ॥
तब सनकादिक तत्व विचारा । जैसे रंक परा धन पारा ॥
भौ मर्याद बहुत सुख लागा । यहि लेखे सब संशय भागा ॥
देखत उतपति लागु न बारा । एक मरे एक करै विचारा ॥
मुये गयेकी काहु न कही । झूठी आशा लागि जग रही ॥
साखी–जरत जरत ते बाँचहू । काहु न कीन्ह गोहार ॥
विष विषय के खायहू । राति दिवस मिलि झार ॥ १३॥

टीकागुरुमुख—दोहा—नहिं प्रतीति संसार में, बिसरि गयो सब ज्ञान ॥ शब्द बान हृदय लगे, जो माये फूंका कान ॥ १ ॥ श्रवण द्वार होय संचरा, रहा हृदय दृढ होय ॥ काहू के प्रतीत नहिं, कितनहु कहौ सँजोय ॥ २ ॥ मूल गमाये लोग सब, धाये यमपुर जाय॥ यम बानी ऐसी बढ़ी, कोई न काठि सिराय ॥ ३ ॥ अबहिं करे तो काज है, मूये होय अकाज ॥ बानी बहुत संजोय के, चले दिढावन राज ॥ ४ ॥ वह बानी को श्रवण करि, लाभ जानि जिव धाय ॥ लाभ नहीं वह हानि है, धोखे जन्म गवाँय ॥ ५॥ ब्रह्मज्ञान के बीच में, यह मन गये थिराय ॥ दोऊ नेत्रन पलटि के, त्रिकुटी ध्यान लगाय ॥ ६ ॥ तब गुरुवन वैराग्यबहु, जीवन दीन्ह दिढाय॥ मैथुन अष्टप्रकार का, ताको जीतहु जाय ॥ ७ ॥ तब सब शिष्यन मिलिके, कीन्हों तत्त्व विचार ॥ जैसे महा कँगाल को, पायौ द्रव्य अपार ॥ ८ ॥ भौ मर्य्यादा ब्रह्मको, सुखमें मन ललचाय ॥ याही लेखा जानिके, संशय गयो पराय ॥ ९ ॥ देखत उत्पति जगतकी, लागत नहिं कछु बार ॥ एकै खोजत मरिगये, एकै करत विचार॥ १० ॥ खोजत खोजत मरि गये, तिनको कोइ न बताय ॥झूठी आस जगत में लागी, भोंदू तेहि भुलाय ॥ ११ ॥

साखी—गर्भवासमें जरत थे, बचै मनुष्य तन पाय ॥
अबहुँ न कीन्ह गोहार तुम, पुनि जग चले जहँडाय ॥ १२ ॥
ये विषया तो विष भया, सब जग खाया झार ॥
राति दिवस तामें रते, कोइ एक बचै सम्भार ॥ १३ ॥

रमैनी १४.

बड सो पाती आहि गुमानी । पाखंडरूप छलेउ नर जानी ॥
बामनरूप छलेउ बलि राजा । ब्राह्मण कीन्ह कौनको काजा॥

ब्राह्मण हीं सब कीन्ही चोरी । ब्राह्मण ही को लागल होरी॥
ब्राह्मण कीन्हो वेद पुराना । कैसेहुके मोहिं मानुष जाना॥
एकसे ब्रह्मै पंथ चलाया । एकसे हंस गोपालहि गाया ॥
एकसे शंभू पंथ चलाया । एकसे भूत प्रेत मन लाया ॥
एकसे पूजा जैनि विचारा । एकसे निहुरि निमाज गुजारा॥
कोइ काहूका हटा न माना । झूठा खसम कबीर न जाना ॥
तन मन भजि रहु मोरेभक्ता । सत्य कबीर सत्य है वक्ता॥
आपुहि देव आपु है पांती । आपुहि कुल आपु है जाती ॥
सर्वभूत संसार निवासी । आपुहि खसम आपु सुखवासी॥
कहइत मोहिं भयल युगचारी । काके आगे कहौं पुकारी॥
साखी—सांचहि कोई न माने । झूठहि के सँग जाय ॥
झूठेहि झूठा मिलि रहा । अहमक खेहा खाय ॥ १४॥

टीकागुरुमुख—दोहा—जाके गर्भगुमान बहू,बडसो पापी आहि ॥ ब्राह्मणरूप धरि जगत को, छले सबनको जाय ॥ १ ॥ वामनरूप भगवंत धरि, जाय छले बलिराज ॥ ब्राह्मण कीन्हो कौन को, कहा भला शुभ काज ॥ २ ॥ सांची वस्तु छिपाय के,झूंठ दीन्ह प्रगटाय॥ सब संसारके बीच में,आपहि देव कहाय ॥ ३ ॥ ब्राह्मण अपनी उक्तिसे, वेद पुराण बनाय ॥ कैसेहुकै मोहिं मानुष जानै, वेद नारायण आय ॥ ४ ॥कोइ ब्रह्मा कोइ हंस गोपाल, कोई शंभु बिचार॥ कोइ भूत प्रेत कोई जैनी, कोई निवाज गुजार ॥ ५ ॥ यहि बिचार निशि बासर करहीं, कोई हटा न मान ॥ झूठा खसम दिढावहीं, सोइ जीवन सब जान ॥ ६ ॥ मायामुख—तन मनसे निश्चय करो,सुमिरो श्रीभगवान ॥ सांचे प्रभुजी आप हैं,सांचेहि वेद बखान ॥ ७॥ आपुहि देवन देव हैं,पत्र पत्रमें आप । आपुही कुल औ जातिहैं,भ्रमवश होय सँताप ॥ ८ ॥सर्वभूत संसारमें, आपुहि कीन्ह निवास॥ आपुहि खाविंद

जगतमें,आपुहि सुख में वास ॥९॥ यह प्रकार कहते कहते, मोहिं भये युगचार ॥याते आगे कछु नहीं, जाको करहु पुकार ॥ १० ॥

गुरुमुख–साखी–सांचहि जीव झूठा ब्रह्म । झूठी माया होय ॥
तामें अहमक मिलतही ।गयो अपन पद खोय ॥ ११ ॥

रमैनी १५.

वो नई बदरिया परि गौ संझा । अगुवा भूला बनखँड मझा॥
पिया अँतै धन अंतै रहई । चौपरि कामरि माथे गहई ॥
साखी–फुलवा भार न ले सकै । कहै सखियन सो रोय ॥
ज्यों ज्यों भीजे कामरी । त्यों त्यों भारी होय ॥१५॥

टीकागुरुमुख–दोहा–उठी भरम की बादरी, परिगौ जम अँधियार ॥ अगुवा ब्रह्मा भूलिया, बानी वेद मँझार॥ १ ॥ अत पीया बनाइया, अंतरहा यह जीव ॥चारि वेद सिरपर धरै, युक्ति सबन मिलि कीव ॥ २ ॥

साखी–जीव भार न सहि सकै । कहै आपुसमें रोय ॥
ज्यों ज्या भीजै विषय में । त्यों त्यों.जडवत होय ॥ ३ ॥

रमैनी १६.

चलत चलत अति चरण पिराना । हारि परे तहां अतिरे सयाना।
गण गंधर्व मुनि अंत न पाया । हरि अलोप जग धंधे लाया॥
गहनी बंधन बाण न सूझा ।थाकि परे तहँ किछउन बूझा ॥
भूलि परे जिय अधिक डेराई । रजनी अंधकूप होय आई ॥
माया मोह उहां भरपूरी । दादुर दामिनि पवन अपूरी॥
बरसै तपे अखंडित धारा ।रैन भयावनकछुन अधारा ॥
साखी–सब लोगजहँडाइया । अँधा सबै भुलान ।
कहा कोई न माने । सब एकै माहिं समान॥१६॥

टीकागुरुमुख–दोहा–चलत चलन सब जगत में, अतिशय चरण पिराय ॥ ब्रह्म खोज मों हारिपरे,बडे सयाने भाय ॥ १ ॥ गण गंधर्व औ मुनिवर, काहू अंत न पाय॥ तबहिं कहा हरि गुप्त है, जग- को कर्म लगाय ॥ २ ॥जो बंधन मुनिवर दिया, सो गहिलिया संसार॥ बंधन जानि परो नहिं, सबै परे तहां हार ॥ ३ ॥ तहां कछू बुझा नहीं, भूले जीव डेराय ॥ भरम भूल अँधियारिया, परी जिवनपर आय॥ ४ ॥ वहां गुरुवन का मोह बहू, पंडित वेद सुनाय ॥ अर्धमात्राॐकार को, एकन एक दृढाय ॥ ५ ॥ बरसै बिरह अखंड विधि, तपै जीव सब झार ॥ भरम मोह भयावनो, कछु ना मिले अधार ॥ ६ ॥
साखी–सबै लोग जहँडाइया । अंधा सबै भुलान ॥
कहा कोई ना माने । सब एकै माहिं समान ॥ ७ ॥

रमैनी १७.

जस जिव आपु मिलै असकोई। बहुत धर्म सुख हृदया होई ॥
जासु बात राम की कही। प्रीति न काहूसों निर्वही ॥
एकै भाव सकल जग देखी । बाहर परे सो होय विवेकी ॥
विषय मोह के फंद छुड़ाई । तहां जाय जहँ काट कसाई॥
अहै कसाई छूरी हाथा । कैसेहु आवै काटौ माथा ॥
मानुष बड़ा बडा होय आया । एकै पंडित सबै पढ़ाया ॥
पढ़ना पढो धरो जनि गोई । नहिं तो निश्चय जाहु बिगोई ॥
साखी–सुमिरण करहू रामका । छाँडहु दुखकी आस ॥
तर ऊपर धै चापि हैं । जस कोल्हू कोटि पिचास।१७

टीकामायामुख–दोहा–जस जीव आप मिलै अस, कोई बहुत धर्म सुख होय ॥ राम बात तासों कहों, प्रीति निबाहै जो कोय ॥ १ ॥ गुरुमुख–एक भाव सब देखहीं, परे जालमें सोय ॥ बाहर परे यह

जालते, जो कोई विवेकी होय ॥ २ ॥ विषय मोह संसार के, फंद छुडाय बनाय ॥ ॥ ब्रह्मज्ञानी जहां रहत हैं, तहां बँधावा जाय ॥ ३ ॥ हाथ पोथी वेदान्त की, बैठे बडे महन्त ॥ कैसेहु जियरा आवहीं, मूंडहु ताहि तुरत ॥ ४ ॥ बडे बडे मानुष जे भये, ब्रह्म सबै पढाय ॥ कर्म धर्म सिद्धान्त मत, दीन्ही सबै दृढाय ॥ ५ ॥ मायामुख—पढना पढहू वेद का, कछू न राखो गोय ॥ बिना भक्ति भगवान की, निश्चय जाहु बिगोय ॥ ६ ॥

मायामुख—साखी—सुमिरण करहू रामका, छाँडि जगतकी आस ॥
नहीं तो महादुख है, होय नर्क में बास ॥ ७ ॥
तरे जीव ऊबरे यम, धर चापै जब सीस ॥
कोल्हू कोटि पचास में, तब सबै जाँयगे खीस ॥ ८ ॥

रमैनी १८.

अदबुद पंथ वर्णि नहिं जाई। भूले राम भूलि दुनियाई ॥
जो चेतहु तो चेतहुरे भाई। नहिं तो जीव यम ले जाई ॥
शब्द न माने कथै ज्ञाना। ताते यम दियो है थाना ॥
संशय सावज बसै शरीरा। तिन्ह खायो अनबेधा हीरा ॥
साखी—संशय सावज शरीर में। संगहि खेले जुआरि ॥
ऐसा घायल बापुरा। जीवहि मारै झारि ॥ १८ ॥

टीकागुरुमुख—दोहा—अदबुदपंथ कहिये ब्रह्मको, सो तो वर्णि न जाय ॥ भूलेब्रह्मकहायजीव, सबैचलेबौ आय ॥ १ ॥ चेतन होय तो चेतहू कहौं तोहिं समुझाय ॥ अनजाने यह जीवको, गुरुवन लीन्ह फदाय ॥ ॥ २ ॥ सार शब्द मानै नहीं, कहै बहु ज्ञान बनाय ॥ ताते फांसी गिरनने, थाना दीन्हों आय ॥ ३ ॥ संशयको उपदेश जो, बस्यो शरीरन आय ॥ अनबेधा हीरा जीव, ताने डारो खाय ॥ ४ ॥

साखी–संशय सर्प शरीर में, अछौ डसो निहार ॥
ता सँग खेलत जीयरा, रह्यो आपनपौ हार ॥ ५ ॥
विषय सर्प की चोट में, आपु गये बौवाय ॥
ऐसा घायल बापुरा, मारत जीवहिं धाय ॥ ६ ॥

रमैनी १९.

अनहद अनुभव केकारि आशा । ई विप्रीत देखहु तमाशा ॥
इहै तमाशा देखहुरे भाई । जहवांशून्य तहांचलिजाई ॥
शून्यहि बंछे शून्यहि गयऊ । हाथाछोडि बेहाथा भयऊ ॥
संशय सावज सकल संसारा । काल अहेरी सांझ सकारा ॥
साखी–सुमिरण करहू रामका । काल गहेहैं केश ॥
ना जानो कब मारि हैं । क्या घर क्या परदेश ॥ १९ ॥

टीका गुरुमुख–दोहा–अनहद जाकी हद नहीं, ताका करैं अनुभव विश्वास ॥ आशा बन्धि तमास यह, बनो ताहिको दास ॥ १ ॥ यही, तमासा देखोहो संतो, अचरज कहा न जाय ॥ शून्य जहां कछु है नहीं, तहां बँधायो धाय ॥ २ ॥ भग विषयमें फँदि रहा, अंतहु भग-में जाय ॥ आपन काया छोडके, गर्भवास को पाय ॥ ३ ॥ संशय-रूपी सर्प यह, डसौ सकल जग भाय ॥ गुरुवा शिकारी जीव के, सांझ सकारे धाय ॥ ४ ॥

साखी–मायामुख–सुमिरण करहू रामका । काल रहे हैं केश ॥
ना जानों कब मारि हैं क्या घर क्या परदेश ॥ ५

रमैनी २०.

अब कहुराम नामअविनासी । हारि छोडि जियरा कतहुँन जासी
जहां जाहु तहाँ होहु पतंगा । अब जनि जरहु समुझिबिषसंगा ॥
राम नाम लौलाय सुलीन्हा । भृङ्गी कीट समुझि मन दीन्हा ॥

भौअस गरुवा दुखके भारी । करु जिययतन जो देखु बिचारी
मनकी बात है लहरि बिकारा । ते नहिं सूझे वार न पारा ॥
साखी—इच्छा करि भव सागर । जामें बोहित राम अधार ॥
कहैं कबीर हरि शरण गहूँ । गौखुर बच्छ विस्तार ॥२०॥

टीका मायामुख—दोहा—अब कहु राम नाम, अविनाशी जो नित्य ॥ हरिपर छाडि के जीयरा, कतहुं न जावहु मीत ॥ १ ॥ गुरु-मुख—जहाँ जहाँ जाहू धाय के, तहाँ तहाँ होहु पतंग ॥ यहि जानि अब जरहु जिन, विषय अग्नि के संग ॥ २ ॥ राम नाम लौलाइया सुनिके वचन भुवंग ॥ भृंगी कीट को नेह लखि, निज मन लाय निसंग ॥ ३ ॥ऐसो भवसागर बढो दारुण दुख कहि जाँ ॥ कर जिय यतन विचार के, त्यागु परखिके ताहि ॥ ४ ॥ मनकी बात जो ब्रह्म है; सोई लहरि बेकारि ॥ काहुको जानि परौ नहीं, ताको वार न पार ॥ ५ ॥

साखी—ब्रह्म होय इच्छा करी, इच्छा ते संसार ॥
होय अनेक बहु दुखित भौ, तब तारक राम अधार ॥ ६ ॥
कहैं पंडित समुझाय के, श्रीहरि धरो अधार ॥
हरि कृपाते भवसागर, गौखुर बच्छ विस्तार ॥ ७ ॥

रमनी २१.

बहुत दुख दुख दुख की खानी । तब बचिहो जब रामहिजानी॥
रामहि जानि युक्ति जो चलई । युक्तिहि ते फंदा नहिं परई ॥
युक्तिहि युक्ति चला संसारा । निश्चयकहा न मानु हमारा ॥
कनक कामिनी घोर पटोरा । संमति बहुत रहै दिन थोरा ॥
थोरी संपति गौ बौराई । धर्मराय की खबरि न पाई ॥
देखि त्रास मुख गौ कुम्हिलाई । अमृत धोखे गौ विष खाई ॥

साखी—मैं सिरजों मैं मारों । मैं जारों मैं खाव ॥
जल थल महियां रमि रहों । मोर निरंजन नाव ॥ २१॥

टीका मायामुख—दोहा—बहुत दुख संसार यह, निश्चय दुखकी खानि ॥ तब बांचहुरे जीयरा, जब राम करहु पहिचानि ॥ १ ॥ राम निरंतर जानि के, युक्ति चलै जो कोय ॥ योग युक्ति ते फंद कटै, मुक्ति सहज में होय ॥ २ ॥ गुरुमुख—युक्तीसे युक्ती बढी, चला सकल जग जान ॥ निश्चय कहा न मानहीं, ब्रह्मसिंधु सुख मान ॥ ३ ॥ कनक कामिनी घोर पटोरा, संपति बहुत कमाय ॥ थोरे दिनकी साथि यह, अंत सबै पाछिताय ॥ ४ ॥ थोडी संपतिमें जगत, सबै चले बौराय ॥ धर्मराय जो काल है, ताकी खबरि न पाय ॥ ५ ॥ देखि त्रास संसारको, गयो जीव कुम्हलाय ॥ अमृत आतमघोखसे, हंता विष रह्यो खाय ॥ ६ ॥

ब्रह्ममुख—साखी—मैं सिरजों मैं मारों । जारों मैं मैं खाव ॥
जल थल महिया रमि रहों । मोर निरंजन नांव ॥ ७ ॥

रमैनी २२.

अलख निरंजन लखै न कोई । जेहि बंधे बंधा सब लोई ॥
जेहि झूठे सब बांधु अयाना । झूठा वचन सांच कै माना ॥
धंधा बंधा कीन्ह व्योहारा । कर्म विवार्जित बसे निनारा ॥
षट आश्रम औ दर्शन कीन्हा। षटरसबास षटै वस्तु चीन्हा ॥
चारि वृक्ष छौ शाखा बखानी। विद्या अगणित गनै न जानी॥
औरो आगम करे विचारा । ते नहिं सूझे वार न पारा ॥
जप तीरथ व्रत कीजे बहु पूजा । दान पुण्य कीजे बहु दूजा ॥
साखी—मंदिर तो है नेह का । मति कोइ पैठो धाय ॥
जो कोई पैठे धाय के । बिनासिरसेती जाय ॥ २२ ॥

टीका गुरुमुख—दोहा—अलख निरंजन कहत हैं, ताको लखे न कोय ॥ जेहिके बंधनसे सकल, जगत बँधावा होय ॥ १ ॥ जे झूठे गुरुवा जने, बांधे सकल अज्ञान ॥ झूठ बचन अनुमानको, ताहि सांचकै मान ॥ २ ॥ बहु बंधनमें बंधे जवि, करे कर्म व्यौहार ॥ कोइ कहै कर्म विवर्जित, निशि दिन ब्रह्म निनार ॥ ३ ॥ गेहि वानप्रस्थ संन्यासी, ब्रह्मचारी मुनी सिया ॥ योगी जंगम जैन संन्यासि फकिर, ब्राह्मण ये षट दर्शन किया ॥ ४ ॥ वोहँ सोहं हूँ अल्लाहू, महीनाद विस्तार ॥ तत्त्वनाम निरंजना, ये षट रसहिं विचार ॥ ५ ॥ अदेव मूल ब्राह्मण कहैं, अहंब्रह्म संन्यासि ॥ वायू कहत दरवेशसो, योगी धरणि निवासि ॥ ६ ॥ शशी अमीरस जैनी कहै, जंगम महदाकास ॥ षट दर्शन सिद्धांत यह, करे जगत विश्वास ॥ ७ ॥ चारि वेद छौ शास्त्र हैं, विद्या अगनित जान ॥ और अगम विचार करे, करि आपन अनुमान ॥ ८ ॥ वार पार सूझे नहीं, फाटा भरम अपार ॥ भय भय धावन लगे जिव, काहु न कीन्ह विचार ॥ ९ ॥ जप तप तीरथ व्रत बहू, कीजे पूजा दान ॥ पुण्य बहुत प्रकारका, ये भ्रम-जालामान ॥ १० ॥

साखी—फांसी तो है नेह की । मति कोइ पैठो धाय ॥
जो कोइ पैठे धाय के । सहजै धोखा खाय ॥ ११ ॥

रमैनी २३.

अल्प सुख दुख आदिउ अंता । मन भुलान मैगर मैं मन्ता ॥
सुख विसराय मुक्ति कहाँ पावै । परि हरि सांच झूठ निज धावै ॥
अनल ज्योति डाहैं एक संगा । नैन नेह जस जरै पतंगा ॥
करहु बिचार जो सब दुख जाई । परिहरि झूठा केर सगाई ॥
लालच लागी जन्म सिराई । जरा मरण नियराइल आई ॥

साखी--भरमका बांधा ई जग । यहि बिधि आवै जाय ॥
मानुष जन्म पाय के । नर काहे को जहँडाय ॥२३॥

टीकागुरुमुख–दोहा–अल्प सुखहि में दुःख है, आदहि में है अंत ॥ मन मतंग जग भूलिया, मानि ब्रह्मता हंत ॥ १ ॥ सर्वहि सुख बिसराय के, मुक्ती खोजत जाय ॥ सांचा निज पद छांडि के, निशि दिन धोखा खाय ॥ २ ॥ अनलज्योति मृगलोचनी, ताहि नेह जिय डाय ॥ जिमि दीपक ज्योति देखि के, जरत पतंगी धाय॥ ॥ ३ ॥ करहु बिचार जो सर्व में, दुख सकलो मिटि जाय ॥ ब्रह्म धोख यह त्यागहू, जो गुरुवन ठहराय ॥ ४ ॥ लालच लागी जग तको, तामें जन्म सिराय ॥ आगे पीछे करत ही, आई मृत्यु नगिचाय ॥ ५ ॥

साखी--भरमका बांधा ई जग । यहि विधि आवै जाय ॥
मानुष जन्म पाय के । नर काहेको जहँडाय ॥ ६ ॥

रमैनी २४.

चंद्र चकोर की ऐसी बात जनाई । मानुष बुद्धि दीन्ह पलटाई॥
चारि अवस्था सपनेहु कहई । झूठो फूरो जानत रहई ॥
[ि]थ्या बात न जानै कोई ।यहि विधि सब गैल बिगोई॥
आगे दै दै सबन गमाया । मानुष बुद्धि सपनेहुनहिंपाया॥
चौतिस अक्षरसे निकलै जोई । पाप पुण्य जानेगा सोई ॥
साखी—सोई कहंता सोई होहुगे । ते निकरी न बाहिर आव ॥
हो हजूर ठाढ कहत हों । तैं क्यौं धोखे जन्म गमाव २४

टीकागुरुमुख–दोहा–चंद्र चकोर की ऐसी, प्रीती दीन्ह दृढाय॥ मानुष बुद्धी हंस की, तुरत दीन्ह पलटाय ॥ १ ॥ चारि अवस्था स्वप्नवत, दीन्हीं सांच दृढाय ॥ झूठेही अनुमान को, सांच जीव पति-

थाय ॥ २ ॥ जो मिथ्या धोखाहै, ताको कोई न जान ॥ येही विधि सब नष्ट भये, ब्रह्मसिंधु सुखमान ॥ ३ ॥ आगे जो ऋषि मुनि भये, आपन पद सबै गमाय ॥ मानुष पद निर्णय कोई, स्वपनेहू नहिं पाय ॥ ४ ॥ चौतिस अक्षर जाल रची, कीन्हो जगपरवान ॥ तामें से जो निकरै, पाप पुण्य सोई जान ॥ ५ ॥

साखी–जो कहत सोई होहुगे । तैं निकारि न बाहिर आव ॥
जो हजूर सो तुमहिं हो । क्यों धोखे जन्म गमाव ॥ ६ ॥

रमैनी २५.

चौंतिस अक्षर का इहै बिशेषा । सहस्रों नाम याहिमें देखा॥
भूलि भटकि नर फिर घट आया।होत अजानसो सबन गमाया
खोजहिं ब्रह्मा विष्णु शिवशक्ती। अनंतलोक खोजहिं बहु भक्ती
खोजहिं गण गँधर्व मुनि देवा । अनंतलोक खोजहिं बहु भेवा

साखी–जती सती सब खोजहिं । मनहिं न माने हारि ॥
बड बड जीव न बांचिहैं । कहहिं कबीर पुकारि ॥२५॥

टीकागुरुमुख–दोहा–चौतिस अक्षर जाल में, सकलो धोखा जान ॥ सहस्र नाम ये जानिये, ताही को परमान ॥ १ ॥ भूलि भय कि भ्रमजाल में, फिर गर घट में आय ॥ होत अज्ञान गुरुवन सँग, पुनि सब दीन्ह गमाय ॥२॥ खोजहि ब्रह्मा विष्णु शिव, ता बानीको जान ॥ अनंत लोक सब खोजहीं, कारि बहु भक्ति प्रमान ॥ ३ ॥ खोजहिं गण गंधर्व मुनी, तैंतिस कोटी देव ॥ अनन्त लोकमें खोजहीं देखिदेखि बहु भेव ॥ ४ ॥

साखी–जती सती सब खोजहीं । मनहि न मानै हारि ॥
बड बड जीव न बांचिहैं । कहहिं कबीर पुकारि ॥ ५ ॥

रमैनी २६.

आपुहि कर्ता भये कुलाला। बहु विधि बासन गढै कुम्हारा॥
विधिने सबै कीन्ह एक ठाऊँ। अनेक यतन के बने कनाऊँ॥
जठर अग्निमों दीन्ह प्रजारी। तामहँ आपु भये प्रतिपाली॥
बहुत यतनके बाहर आया। तब शिव शक्ती नाम धराया॥
घरका सुत जो होय अयाना। ताके संग न जाहु सयाना॥
सांची बात कही मैं अपनी। भया दिवाना औरकी पुनी॥
गुप्त प्रगट है एकै दूधा। काको कहिये ब्राह्मण शूद्रा॥
झूठे गर्भ भूलो मति कोई। हिन्दू तुरुक झूठ कुल दोई॥
साखी--जिन्ह यह चित्र बनाइया। सांचा सो सूत्रधारि॥
कहहिं कबिर ते जन भले। जो चित्रवन्तहि लेहिनिहारि २६

टीकागुरुमुख--दोहा--जीव रूप करता बने, हंता भई प्रकास॥ तातें नाम कुलालभौ, ब्रह्मअस्मि भौ भास॥ १॥ भासते अंतःकरण भौ, चित मन बुद्धि हंकार॥ तातें इच्छा रूप भौ, नारि प्रगट तहि ठहार॥ २॥ ता नारी के चक्रपर, बहु विधि रूप उपाय॥ तेहि ते कर्ता आपुही, नाम म्हार कहाय॥ ३॥ ब्रह्म। बुद्धी कीन्हिय, सबै तत्त्व एक ठाम॥ बहु योनिन रूप ढारिया, अनेक यतन के नाम॥ ॥ ४॥ तब संकल्प मनने कियो, चल्यो चित्त तहि ठाम। बुद्धीने निश्चय धरो, तातें उबज्यो काम॥ ५॥ तत्व प्रकृती सब सम भई, मिलो कँवल जब जाय॥ जठर अग्नि के भीतरे, यहि विधि दीन्ह जराय॥ ६॥ तामें आपु प्रकाश भौ, भयो तहां प्रतिपाल॥ नर्क मूत्र मुखमें परे, उठे दुर्गंध विशाल॥ ७॥ तहां रूप साबुत भयो, तब पुनि बाहर आय॥ स्त्री औ पुरुष ऐसा जगमें नाम धराय॥ ८॥ जो यह मन अज्ञान भौ, भरमे जहां तहां धाय॥ अरे सयाने जीयरा,

ताके संग न जाय ॥९॥ सांच बात आपन कहौं, कछू न राखों गोय॥ गुरुबन संग मतिभंग भई, अंतहु चले बिगोय ॥ १० ॥ गुप्त प्रगट है एकै जीव, एकै रूप निहार ॥ ब्राह्मण शूद्र काको कहिये, ये सब झूठ बिचार ॥ ११ ॥ झूठ जाति कुल धर्म है, भूलि गहो मति कोय॥ हिन्दू तुरक मन मत है, झूँठ बने कुल दोय ॥ १२ ॥

साखी—जिन यह चित्र बनाइया । सांचा सो जीव रूप ।
तेई जन अति उत्तम । निश्चय किया सो रूप ॥ १३ ॥

रमैनी २७.

ब्रह्माको दीन्हों ब्रह्मंडा । सप्त दीप पुहमी नौ खंडा ॥
सत्य सत्य कहि विष्णु दृढ़ाई। तीन लोक मा राखिन जाई ॥
लिंगरूप तब शंकर कीन्हा । धरती खीलि रसातल दीन्हा॥
तब अष्टंगी रची कुमारी । तीनि लोक मोहा सब झारी ॥
दुतिया नाम पार्वतीको भयऊ। तप कर्ते शंकर कह दियऊ ॥
एकै पुरुष एक है नारी । ताते रची खानि भौ चारी ॥
सर्बन बर्बन देव औ दासा । रज सत तमोगुणधरति अकाशा
साखी—एक अंड ॐकारते । सभ जग भया पसार ॥
कहहिं कबीर सब नारि रामकी।अबिचल पुरुष भतार॥२७॥

टीकागुरुमुख—दोहा—जीव रूप कर्ता बने, इच्छा ते भइ नार॥ ताको अष्टंगी कही, तेहिते तीनिउ बार ॥ १ ॥ ब्रह्मा को ब्रह्मांड को, राज्य दियो है सौंपि ॥ सात दीप नौ खंड में, ध्वजा विष्णु की रोपि॥ ॥ २ ॥ ॐ ॐ कहि विष्णु दृढाई, तीन लोक मंझार ॥लिंगरूप शंकर करै, दीन्हों राज पतार ॥ ३ ॥ तब अष्टंगीने रची,कन्या रूप बनाय॥ तीनि लोक सब मोहिया, उवरो कोउ न पाय ॥ ४ ॥ दूसर नाम सती को, भयो पारवति आहि ॥ तब हिमाचल पिताने,शिवही दीन्ही व्या-

हि ॥ ५ ॥ एक नारि एक पुरुषते, रचना सबही झार ॥ चार खानि चौरासी, स्वर्ग मृत्यु पातार ॥ ६ ॥ श्रोता वक्ता प्रगट भये, भये देव औ दास ॥ रज सत तम गुण प्रगटे, धरती और अकाश ॥ ७ ॥
साखी–जीवरूप अनुमान ते । सब जग भया पसार ॥
जाकी सब नारी बनी । कहां है सोइ भतार ॥ ८ ॥

रमनी २८.

अस जोलहा काहुमर्मनजाना। जिन्हजगआनिपसारिनिताना
धरति अकाश दोउ गाड़ खंदाया।चांद सूर्य दो नरी बनाया ॥
सहस्र तारले पूरनि पूरी । अजहूँ बिनय कठिन है दूरी ॥
कहैं कबीर कर्मसे जोरी । सूत कुसूत बिने भल कोरी ॥

टीका गुरुमुख–दोहा–अस ब्रह्मा विप्रीत भौ, ताको कोइ न जान ॥ जासे बहु बानी बनी, पसरी जगमें आन ॥ १ अर्धकी श्वासा उर्ध करी, दहिने बांय मिलाय ॥ सुषुमना मारग गहि चढे, एसो दीन्ह दृढाय ॥ २ ॥ सहस नामकी भक्तिको, बहु विधि दीन्ही पूरि ॥ औरो अगम बताइया, ब्रह्म कठिन बहु दूरि ॥ ३ ॥ ब्रह्मा अपनी उक्ति से, बहु विधि कर्म बनाय ॥ सूत जीव कुसूत बानी, गुरुवन बांधी आय ॥ ४ ॥

रमैनी २९.

वज्रहुते तृण खिनमें होई । तृणते बज्र करे पुनि सोई ॥
निझरू नीरु जानि परिहरिया।कम का बांधा लालच करिया॥
कर्म धर्म मति बुधि परिहरिया।झूठा नाम सांच ले धरिया॥
रजगति त्रिविधि कीन्ह प्रकाशा।कर्म धर्म बुद्धिकेर विनाशा ॥
रविके उदय तारा भौ छीना । चर बीहर दूनोंमें लीना ॥
विषके खाये विष नहिं जावै । गारुड सो जो मरत जियावै॥

साखी–अलख जो लागी पलकमें । पलकही में डसि जाय ॥
विषहर मंत्र न मानै । तो गारुड काह कराय॥२९॥

टीका मायामुख–दोहा–छिनमें वज्र को तृण करै, तृण छिन वज्र समान । अपनी इच्छा मात्रमें ऐसे श्रीभगवान ॥ १ ॥ गुरुमुख–निझरू कहिये ब्रह्म को, नीरु सकल संसार ॥ ऐसा जाना जीवने, छाँडा जग व्यौहार ॥ २ ॥ ब्रह्म कर्ममें जायके, बँधे जीव तब जाय ॥ ज्ञान योग भक्ती आचरे, लालच बडी बलाय ॥ ३ ॥ कर्म भरतमें बँधेजीव, मति बुद्धि गई हेराय॥ सांचे छूठे नामको, सांच धरैं ललचाय ॥ ४ ॥ गुरुवाई तीन प्रकारकी, सबन कीन्ह प्रकाश ॥ कर्म भरम बतायके, बुद्धि का करहिं विनाश ॥ ५ ॥ जैसे सूर्य प्रकाश से, तारागण होय छीन ॥ ऐसे ब्रह्मज्ञान की, होत जग मति लीन ॥ ६ ॥ जैसे विष के खाय ते, विष नहिं उतरे भाय ॥ गारुड सोई जानिये, मरतहि देइ जिवाय ॥ ७ ॥

साखी–अलख समाधी धारि के, योगिन ध्यान लगाय ॥
सोइ ध्यान हियरे डसो, चढो जहर सब भाय ॥ ८ ॥
जहरी जीव मानै नहीं, कोटिन करो उपाय ॥
साधु विचारा क्या करै, जिमि बहु विधि बांस बजाय ॥ ९ ॥

रमैनी ३०.

औ भूले षट दर्शन भाई । पाखंड भेष रहा लपटाई ॥
जीव शीवका आहि नसौना । चारिउ वेद चतुर्गुण मौना ॥
जैनी धर्म का मर्म न जाना । पाती तोरि देव घर आना ॥
दवना मरुवा चंपाके फूला । मानहु जीव कोटि समतूला ॥
औ पृथिवीके रोम उचारे । देखत जन्म आपनो हारे ॥
मनमथ बिंद करे असरारा । कल्पे बिंद खसे नहिं द्वारा ॥
ताकर हाल होय अदबूदा । छौ दरशन में जैनि बिगुर्चा ॥

साखी--ज्ञान अमरपद बाहिरें । नियरे ते है दूरी ॥
जो जानें ताके निकटहै।नहिं तो रहा सकलघटपूरि॥ ३०॥

टीकागुरुमुख–दोहा–औ भूले षट दरशन, पाखंड भेष बनाय॥ ब्रह्म बानिको मानि के, सबै रहे लपटाय ॥ १ ॥ ये जीव शीव कासो कहैं, जाते होय बिनाश ॥ चारिउ वेद चतुर गुण, गावत भये निरास॥ ॥ २ ॥ जैनी अपने धर्म को, जाने नहीं विचार ॥ पाती तोरि देवघर आने, जामें जीव विहार ॥ ३ ॥ दवना मरुवा चंपाके फूला, जीवकोटि सूंघि अघाय ॥ताको मूरुख तोरि के, पथरा माहिं चढाय ॥४॥और शरीरके रोमको, शिष्यनसे उचराय ॥ उनकी नारिनसे भोग करे, आपन जन्म गमाय ॥ ५ ॥ मनमथ बिंदु असरार करी, भोगे नारी दुष्ट॥कल्प बिन्दु खसै नहीं, साधनसे करि पुष्ट॥६॥ताकर हाल अद-बुद होय, परे चौरासी माहिं ॥ छौ दर्शनके भीतरे जैनि चले जहँडाहिं ॥ ७ ॥

मायामुख–साखी–ज्ञान अमरपद सबसे न्यारा । सब घटमें दरसाय॥
जाने ताके निकट है । ना तो अकाशवत रहै समाय ॥८॥

रमैनी ३१.

सुमृति आहि गुणनके चीन्हा । पाप पुण्य को मारग कीन्हा॥
सुमृति वेद पढे असरारा । पाखंडरूप करे हंकारा ॥
पढे वेद और करे बडाई । संशय गांठि अजहु नहिं जाई॥
पढे शास्त्र जीव बध करई । मुडी काटि अगमन के धरई॥

साखी--कहहिं कबीर ई पाखंड। बहुतक जीव सताव ॥
अनुभव भाव न दरसै । जियत न आपु लखाव ॥ ३१ ॥

टीकागुरुमुख–दोहा–स्मृती वेद को चीन्ह के,बन रहे पंडाराय॥ पाप पुण्य को मारग, दीन्हों आपु चलाय ॥ १ ॥ वेद स्मृती पंडित

पढे, करे बहुत हंकार ॥ वेद पढे अस्तुति करे, छूटै न संशय जार ॥ २ ॥ पढै शास्त्र जीव बध करे, काटे मूंडी जान ॥ सो ताके आगे धरे पाथर मूरति मान ॥ ३ ॥

साखी—सुनो संत यह पंडित, बहुतक जीव सताय ॥
अनुभव आगु बतावहीं, जियत न आपु रखाय ॥ ४ ॥

रमैनी ३२.

अंध सो दर्पण बेद पुराना । दर्बी कहा महारस जाना ॥
जस खर चन्दन लादेउ भारा ।परिमल बास न जानु गवाँरा॥
कहहिं कबीर खोजे असमाना ।सो न मिला जोजाय अभिमाना

टीकागुरुमुख—दोहा—जैसो आँधरो दर्पण, ऐसो वेद पुराण ॥ महा रोगी क्या जाने, अमृतको परमान ॥ १ ॥ जस गदहाके ऊपरे, लादेउ चंदन भार ॥ परिमल सुख जानै नहीं, वह पशु मूर्ख गवाँर॥ ॥ २ ॥ कहाँ है जाही खोजहू, धरती औ असमान ॥ सो न मिला न मीलि है, जाते छूटै अभिमान ॥ ३ ॥

रमैनी ३३.

वेदकी पुत्री सुमृति भाई । सो जेवरि कर लेतहि आई ॥
आपुहि बरी आपन गर बंधा । झूठा मोह कालको फंदा ॥
बँधवत बंधा छोरिया न जाई ।विषय स्वरूप भूलि दुनि आई॥
हमरे देखत सकल जग लूटा । दास कबीर राम कहि छूटा ॥

साखी—रामहि राम पुकारते । जिभ्या परि गौ रोस ॥
सूधा जल पीवै नहीं । खोह पिवनकी हौस ॥ ३३॥

टीकागुरुमुख—दोहा—बेदहि से स्मृतीभई, तासो भयो पुराण ॥ सो फांसी ले हाथ में, पंडित करत बखान ॥ १ ॥ बेरी अपनी उक्ति ,आपन गर भौ बंध॥झूठ ब्रह्मका मोह कर, सोई कालको फंद॥ २ ॥

बंधन तो सब बंधिया,छोरो काहू न जाय ॥ विषयरूप सब भू-
लिया, ब्रह्म समाधि लगाय ॥ ३ ॥ हमरे देखत धोख में सबजग लूटो
जाय ॥ चारिउ युग में भक्त सब, राम कहै थिति पाय ॥ ४ ॥
साखी-रामहि राम पुकार ते,जिभ्या पारि गौ रोस ॥
एकहि रटि रटि मारि गये, एकहि लागी हौंस ॥ ५ ॥
शुद्ध जीव चीन्हें नहीं, करे बहुत अनुमान ॥
हौंसा हौंसी भरम में, बूडो सकल जहान ॥ ६ ॥

रमनी ३४.

पढ़ि पढ़ि पंडित करु चतुराई।निज मुक्ती मोहि कहोसमुझाई ॥
कहाँ बसे पुरुष कौनसागाँऊ।सो पंडित मोहि सुनावहु नाँऊ॥
चारि वेद ब्रह्मे निज ठाना । मुक्ति का मर्म उनहु नाहिं जाना॥
दान पुण्य उन बहुत बखाना।अपने मरणकी खबरि न जाना॥
एक नाम है अगम गँभीरा । तहवाँ अस्थिर दास कबीरा ॥
साखी-चिउंटी जहाँ न चढ़ि सके । राई ना ठहराय ॥
आवागमनकी गम नहीं।तहां सकलो जग जाय॥३४॥

टीकागुरुमुख-दोहा-पढि पंडित चतुराई करो, निज मुक्ती समु-
झाव ॥ कहां पुरुष केहि गांव में, सोइ सुनावहु नांव ॥ १ ॥ चारि
वेद ब्रह्मै किया, मुक्ति न उनहु पछान ॥ दान पुण्य उन बहुत कहां,
आपन मर्म न जान ॥ २ ॥ ॐ नाम एक अगम कही, बहुतहि
गहिर बताय ॥ तहां यह जीव स्थिर भयो, ताके दास कहाय ॥ ३ ॥
साखी-बानी जहां न चढि सकै, बुद्धि नहीं ठहराय ।
सो मिथ्या अनुमान है, तहां बंधायो जाय ॥ ४ ॥
आवागवन जहां है नहीं, तहां कैसेकै जाय ॥
परखो संतो धोख यह, भोंदू रखें भुलाय ॥ ५ ॥

रमैनी ३५.

पंडित भूले पढ़ि गुनिवेदा। आप अपनपौ जानु न भेदा॥
संझा तर्पण औ षट कर्मा। ई बहु रूप करे अस धर्मा॥
गायत्री युग चारि पढ़ाई। पूछहु जाय मुक्ति किन पाई॥
और के छिये लेत हो छींचा। तुमसो कहहु कौन है नीचा॥
ई गुण गर्भ करो अधिकाई। अधिके गर्भ न होय भलाई॥
जासु नाम है गर्भ प्रहारी। सो कस गर्भहि सकै सहारी॥
साखी—कुल मर्यादा खोय के। खोजिन पद निर्बान॥
अंकुर बीज नसाय के। नर भये विदेही थान॥३५॥

टीका गुरुमुख—दोहा—पंडित भूले वेद पढि, आपन आपुन जान॥ संध्या तर्पण कर्म षट, औ बहु धर्म बखान॥ १॥ गायत्री युग चारि पढाई, कहा मुक्ति किन पाय॥ औरके छुये छींटा लेहू, तुमसे नीच को भाय॥ २॥ अस्थि मांस औ रुधिर त्वचा, मल नख सिख भरपूर॥ जो तुममें सो सर्व में, ज्ञानत नहिं कस कूर॥३॥ ई गुण गर्भ अधिकार जो, यामें भलो न कोय॥ जासु नाम है गर्भ प्रहारी, कस सहिहैं गर्भ सोय॥ ४॥
साखी—कुलमर्यादा खोयके। खोजिन पद निर्वान॥
अंकुर बीज नसायके। नर भये विदेही थान॥ ५॥

रमैनी ३६.

ज्ञानी चतुर विचक्षण लोई। एक सयान सयान न कोई॥
सर सयान को मर्म न जाना। उत्पति परलय रैन बिहाना॥
बनिज एक सबन मिलि ठाना। नेम धर्म संयम भगवाना॥
हरि अस ठाकुर तजियो न जाई। बालहि बिहिस्तगावहिं दुलहाई
साखी—ते नर कहाँ गये। जिन दीन्हा गुरु चोटि॥
राम नाम निजु जानि के। छाँडि देहु बस्तु खोटि॥ ३६॥

टीका गुरुमुख–दोहा–ज्ञानी चतुर बुद्धिमान जो, सबन कीन्ह परमान ॥ एक सयाना ब्रह्म है, जी सदा अज्ञान ॥ १ ॥ दूसर सयान जो ब्रह्मा, ताको मर्म न जान ॥ उत्पति परलय होत है, जाकी रैन बिहान ॥ २ ॥ यह मायाका वचन सुनी, बनिज सभन मिलि ठान॥ नम धर्म औ भक्ति करी, प्रसन्न करहिं भगवान ॥ ३ ॥हरि अस ठाकुर काहुसे त्यागा कबहुँ न जाय ॥ जीव सबै दुलहिन बनै मुक्त पुरुष को गाय ॥ ४ ॥

साखी–राम नाम निज जानि के । जिन्ह गुरु दीन्हा मंत्र ॥
देखहु ते नर कहाँ गये । छाँडहू झूठ स्वतंत्र ॥ ५ ॥

रमैनी ३७.

एक सयान सयान न होई । दूसर सयान न जाने कोई ॥
तीसर सयान सयानदिखाई । चौथे सयान तहां ले जाई ॥
पचयें सयान न जाने कोई । छठयें मा सब गैल बिगोई ॥
सतयाँ सयान जो जानहु भाई। लोक वेदमों देउ देखाई ॥
साखी–बीजक बित्त बतावै । जो बित्त गुप्ता होय ॥
ऐसे शब्द बतावै जीव को। बूझै बिरला कोय ॥ ३७॥

टीका गुरुमुख–दोहा–एक सयान जो ब्रह्म है, सो सयान नहिं होय ॥ दूसर सयान जो माय , ताहि ना जाने कोय॥ १ ॥तीसर सयान जो त्रिगुण, भक्ति ज्ञान अरु योग ॥ चौथे सयान चहुँ वेद हैं धै धै लगावत सोग ॥ २ ॥पाचयें पाँचों तत्त्वहैं, जामें जीव रहे गोय ॥ छठये मनके फंद में सब जग चला बिगोय ॥ ३ ॥सतयां सयान जो जीवहै याते सब बिस्तार ॥ बानी खानी याहि ते, ब्रह्म सृष्टि जग झार॥ ४ ॥

साखी–बीजक ववित्त बतावै । जो बित्त गुप्ता होय ॥
ऐसे शब्द बतावै जीव को। बूझै बिरला कोय ॥ ५॥

रमनी ३८.

यहि विधि कहौं कहा नहिं माना। मारग माहिं पसारिनि ताना
राति दिवस मिलि जोरिन तागा। ओटत काटत भरम न भागा॥
भरम सब जग रहा समाई। भरम छोड़ि कतहुँ नहिं जाई॥
परैन पूरि दिनहु दिन छीना। तहां जाय जहाँ अंग बिहूना॥
जो मत आदि अंत चलि आई। सोमत सब उन्ह प्रगट सुनाई॥
साखी—यह सँदेसा फुरकै मानेहु। लीन्हेउ शीस चढाय॥
संतो संतोष सुख है। रहहु तो हृदय जड़ाय॥ ३८॥

टीका गुरुमुख—दोहा—यहि बिधि कहौ पुकारि के, कहा न कोई मान॥ बहु बिधि बानि दृढाय के, जीवन बांधो तान॥ १॥ राति दिवस मिलि जोरिया, बहु बिधि सुरति लगाय॥ पढत पढावत मरि गये, भरम न भागो भाय॥ २॥ भरम माहिं यह जगत सब, निशिदिन रहत समाय॥ भरम छाडि के जीयरा, अंतै कतहुं न जाय॥ ३॥ पूर परे नाहिं काहु की, होत दिनहु दिन छीन॥ खोजत खोजत तहां गये, जहवाँ अंग बिहीन॥ ४॥ आदि मत अनुमान को, सोई अंत चलि आय॥ सोइ बेद मत प्रगट करी, गुरुवन दीन्ह सुनाय॥ ५॥
साखी—यह सँदेसा फुरकै मानेहु लीन्हेउ शीस चढाय॥
संतो संतोष सुख है। रहहु तो हृदय ज़ुडाय॥ ६॥

रमैनी ३९.

जिन्ह कलमा कलिमाहिं पढाया। कुदरत खोज तिनहु नहिंपाया
कर्मत कर्म करे करतूता। बेद किलेब भये सब रीता॥
कर्मत सो जग भौ अवतरिया। कर्मत सो निमाजको धरिया॥
कर्मत सुन्नति और जनेऊ। हिंदू तुरक न जाने भेऊ॥

साखी-पानी पवन सँजोय के । चिया यह उत्पात ॥
शून्यहि सुरति समोइ के । कासो कहिये जात॥३९॥

टीका गुरुमुख--दोहा--कलिजुग में महमद भये, जिन्ह जग कलमा पढाय ॥ खोजत खोजत बानिमा, वोहु रहे पछिताय ॥ १ ॥ बडे बडे कर्मन करत है, वेद किताब विचार ॥ कर्महि करि करि जगत सब, पुनि पुनि लेत अवतार ॥ २ ॥ कर्महिसे जग भव भयो, कर्म निमाज गुजार ॥ कर्महि सुन्नति जनेउ कही, हिंदूतुरुक खुवार ॥ ३ ॥

साखी-बिंद औ पवन मिलाय भग । भया जगत उत्पात ॥
फिर भगहीमें सुरति लगाईया । अब कासो कहिये जात॥४॥

रमैनी ४०.

आदम आदि सुधि नहिं पाई । मामा हवा कहाँ ते आई ॥
तब नहिं होते तुरुक औ हिंदू । मायके रुधिर पिता के बिंदू॥
तब नहिं होते गाय कसाई । तब बिसमिल्ला किन फुरमाई॥
तब नहिं होते कुल औ जाती । दोजख बिहिस्त कौनउत्पाती
मन मसलेकी सुधि न जाना । मतिभुलान दुइ दीन बखाना॥

साखी-संजोगेका गुण रखै । बिजोगे का गुण जाय ॥
जिभ्या स्वारथ कारणे । नर कीन्हें बहुत उपाय॥४०॥

टीका गुरुमुख-दोहा--आदी आदम ब्रह्मा, तिनहु खबर नहीं पाय ॥ मामा हवा जो माया, कहो कहां ते आय ॥ १ ॥ हिंदू तुरुक तब ना हते, रुधिर औ बिंदु जमाय ॥ तब कहाँ, गाय कसाइ थे, विसमिल्ला किन्ह फुरमाय ॥ २ ॥ कुल जाती तब ना हती, दोजख विहिस्तहु नाहिं ॥ मन खनुमाने भूलिया, दो दीन बखाना ताहि ॥ ३ ॥

साखी-संकल्पे जग होत है । बिन संकल्प मिटि जाय ॥
यह मत सत्य करन को । नर कीन्हेउ बहुत उपाय ॥ ४ ॥

रमैनी ४१.

अंबु की राशि समुद्र की खाई।रवि शशि कोटि तैंतिसौं भाई ॥
भँवर जालमें आसन मांडा।चाहत सुख दुख संग न छाडा ॥
दुखको मर्म न काहू पाया । बहुत भांति के जग भरमाया ॥
आपुहि बाउर आपु सयाना। हृदया बसै तेहि राम न जाना ॥
साखी--तेहि हरि तेहि ठाकुर । तेहि हरिके दास ॥
ना यम भया न जामिनी। भामिनि चली निरास॥ ४१

टीका गुरुमुख--दोहा--अंबु कहिये पानीको पानी बानी जान॥ पानी कहिये कामको, जाते जग बंधान॥ १ ॥समुद्र कहिये ब्रह्म की खाइ माया जान ॥ माया कहिये काया को की भगखाइ बखान ॥ ॥ २ ॥ चन्द्र सूर्य औ देवता, तैंतिस कोटी भाय ॥ याही भँवर जाल में आसन दिया लगाय ॥ ३ ॥ चाहत हैं सब सुख बहू, दुखन संग छुडाय ॥ दुःखको मर्म न जानहीं, बहु विधि जग भरमाय॥ ॥ ४ ॥आपुहि जीव बाउर भयो, आप सयान रहाय ॥ हृदया जो धोखा बसो, ताको मर्म न पाय ॥ ५ ॥
साखी--जोई हरी सोई ठाकुर । सोई हरि का दास ॥
ना ब्रह्म भया न गुरुवा। भाविक चले निरास ॥ ६ ॥

रमैनी ४२.

जब हम रहल रहल नहिं कोई । हमरे माहिं रहल सब कोई ॥
कहहु राम कौन तेरी सेवा । सो समुझाय कहो मोहिं देवा ॥
फुर फुर कहेउ मारु सब कोई । झूठेहि झूठा संगति होई ॥
आंधर कहैं सबै हम देखा । तहाँ दिठियार बैठि मुखे पेखा॥
यहि विधि कहेउमानु जो कोई।जस मुख तस जो हृदया होई ॥
कहहिं कबीर हंस मुसकाई। हमरे कहल दुष्ट बहु भाई॥४२॥

टीकाब्रह्ममुख–दोहा-जब हम रहैं तब कछु नाहीं, सब जग हमरे मांहि ॥ जिमि बट बीज में जनिये, पत्र फूल फल छांहि॥ १ ॥गुरु--मुख–जब तुम रहे तब कछु नहीं, पत्र फूल फल छांहि ॥ तो सेवन कौने किया, सो मोहि कहो समुझाहि ॥ २ ॥सांच कहीं बिचार के सब जग मारन धाय ॥ झूठा धोख दृढावहीं, ताको सेवहिं जाय॥ ३॥ आंधर कहिये वेदको, कहैं सकल हम देख ॥ दिठियारो कहिये जीव को, बैठि ताहि मुख पेख ॥ ४ ॥ यहि विधि कहौं समुझाय के, जो कोइ माने लोय ॥ जैसी मुखते नीकरे, अस हृदया उदय होयँ ॥५॥ कहां हैं संतो जाहिमें, हंस बँधायो जाय ॥ हमरे कहैं यह जगत में, उठत दुष्ट बहु भाय ॥ ६ ॥

रमैनी ४३.

जिन्ह जीव कीन्ह आपु विस्वासा। नरक गये तेहि नर्कहिं बासा॥
आवत जात न लागे बारा। काल अहेरि साँझ सकारा ॥
चौदह विद्या पढि समुझावा। अपने मरनकी खबरि नपावा ॥
जाने जीवको परा अँदेशा। झूठहि आयके कहा सँदेशा ॥
संगति छाडि करे असरारा। उबहे मोट नर्ककर भारा ॥
साखी:-गुरुद्रोही मन्मुखी। नारी पुरुष बिचार ॥
ते नर चौरासी भरमिहैं। ज्यों लों चंद्र दिवाकार ॥ ४३॥

टीका–गुरुमुख-दोहा-अहं ब्रह्म कहलाय जिव, जिन्ह कीन्हा विश्वास॥ ते निश्चय नर्कहि गये, भयो नर्क में बास ॥ १ ॥ ब्रह्महिं ते जग होत है, जगतहीते ब्रह्म होय॥ सांझ सकारे दृढावहीं, महानास्ति पद सोय॥ २ ॥ पढिके चौदह विद्या, दीन्ह जगत समुझाय ॥ अपने मरन की खबरी, ब्रह्माहू नहिं पाय ॥ ३ ॥ जाने जीवको अंदेश भौ, झूठहि कहा संदेश ॥ बढो विरह सब जगत में, उपजे बहु न कलेश ॥ ४ ॥

संगत छाडि जगत की, करें तर्क व्यौहार ॥ उबरो चाह देह यह, मोट नर्ककर भार ॥ ५ ॥

साखी–गुरुपद से न्यारे भये । ब्रह्म अस्मि कहाय ॥
ते नर चौरासी भरमि हैं । रैन दिवस के न्याय ॥ ६ ॥

रमनी ४४.

कबहुं न भयउ संग औ साथा । ऐसहि जन्म गमायेउ आछा ॥
बहु रि न पैहो ऐसो थाना । साधु संगति तुम नहिं पहिचाना ॥
अब तोर होइ हैं नर्कमहँ बासा । निशिदिन बसेउ लबारके पासा ॥
साखी–जात सबनकहँ देखिया । कहहिं कबीर पुकार ॥
चेतवा होय तो चेति ले । नहिं तो दिवस परतु है धार ४४

टीका गुरुमुख–दोहा–संखकियो जो ब्रह्म को; सो कबहुँ न भौ साथ ॥ ऐसही जन्म गमायऊ , अच्छो मानुष्य जात ॥ १ ॥ बहुरि न पैहो देह यह, मानुष उत्तम रूप ॥ साधुन मिलि परखेउ नहीं, खानिबानि को भूप ॥ २ ॥ बिनु परखे तोहि जीयरा, होय नर्क में बास ॥ निशि दिन भर्महि मा बसे, और लबारन पास ॥ ३ ॥

साखी–जात सबनकहँ देखिया । कहहिं कबीर पुकार ॥
चेतवा होय तो जेति ले । नहि तो दिवस परतु है धार ॥ ४ ॥

रमैनी ४५.

हरणाकुश रावण गौ कंसा । कृष्ण गये सुर नर मुनि बंसा ॥
ब्रह्मा गये मर्म नहिं जाना । बड़ सब गये जे रहल सयाना ॥
समुझि न परलि राम की कहानी । निर्बल दूध कि सर्वक पानी ॥
रहि गौ पंथ थकित भौ पवना । दशों दिशा उजारि भौ गवना ॥
मीन जाल भौ ई संसारा । लोहकि नाव पषान को भारा ॥
खेवैं सबै मर्म हम जानी । ते यों कहैं रहे उतरानी ॥

साखी—मछरी मुख जस केचुवा । मुसवन मांह गिरदान ॥
सर्पन मांही गहे जुवा ऐसी । जात देखि सबनकी जान४५

टीका गुरुमुख--दोहा--हरणाकुश रावण गये, कंस गये गोपाल॥ सुर नर मुनि वंसन सहित, ब्रह्मागये बेहाल॥१॥बडे बडे सबही गये, जे रहे बहुत सयान ॥ चौरासी प्राप्ती भई, ब्रह्मसिंधु सुखमान ॥ २ ॥ समुझ परी नहिं राम की, कथनी बड़ी अपार ॥न्यारे ब्रह्म बतावही पुनि कहि जगत मंझार ॥ ३ ॥ जबहीं श्वासा थकित भौ, रहि गौ पंथ अपार ॥ देहसे जीव न्यारो भयो, दशहूं दिशा उजार ॥ ४ ॥ जीव सबै मछरी भये, जारो भौ संसार॥ धोखेकेरी नावरी, मन को गरुवा भार ॥ ५ ॥ खेवै सबै गुरुवा जने, कहै मर्म हम जान ॥ बूडत हैं सब भगहि में, कहैं रहे उतरान ॥ ६ ॥

साखी—देखि बंसि को केचुवा, मछरी आन बझान ॥
ऐसी फल श्रुति देखि के, जीव सबै हैरान ॥७॥
रंग देखि गिरदान को, मूसा सब मिलि धाय ॥
फकत ही आंखी गई, अस उपदेश सुभाय ॥ ८ ॥
गही छछूंदर सर्पमुख, उगिलत बनै न खात ॥
ऐसी माया जगत में, गही तजी नाहिं जात ॥ ९ ॥
देखि सुभग मृगलोचनी, धायो जैसो मूस ॥
छछूंदर देखै सर्प ज्यों, की बंसी ऊपर रूस ॥ १० ॥

रमैनी ४६.

बिनसे नाग गरुड गलि जाई । बिनसे कपटी औ सत भाई ॥
बिनसे पाप पुण्य जिन्ह कीन्हा।बिनसे गुण निर्गुणजिन्ह चीन्हा
बिनसे अग्नि पवन औ पानी। बिनसे सृष्टि कहां लों गनी ॥
विष्णुलोक बिनसै छिन माहीं। हौं देखा परलय की छाहीं ॥

साखी–मच्छरूप माया भई । जबरहिं खेले अहेर ॥
हरि हर ब्रह्मा न ऊबरे । सुर नर मुनि केहिं केर ॥४६॥

टीका गुरुमुख--दोहा--विनसे नाग गरुड गली, कपटी औ सत भाय ॥ पाप पुण्य बिनसे सबै, जिन्ह गुण निर्गुण गाय ॥ १ ॥ पांच तत्व सब नासे, विष्णु लोक विनसाय ॥ अहं ब्रह्म जो देखिया, सो परलय की छांय ॥ २ ॥

साखी--जीवरूप माया भई ।गुरुवा बने शिकारि ॥
हरि हर ब्रह्मा बँचे नहीं ।सुर नर मुनि कौन बिचारि ॥३॥

रमैनी ४७.

जरासिंधु शिशुपाल संधारा । सहस्रार्जुन छल सो मारा ॥
बड छल रावण सो गौ बीती। लंका रहल कंचनकी भीती ॥
दुर्योधन अभिमाने गयऊ । पडोकेर मर्म नहिं पयऊ ॥
मायाके डिंभ गयल सब राजा । उत्तम मध्यम बाज न बाजा॥
छौ चकवे बीती धरणि समाना। एकौ जीव प्रतीत न आना ॥
कहां लों कहौं अचेतहि गयऊ । चेतअचेत झगरा एक भयऊ
साखी–ई माया जग मोहिनी । मोहिन सब जग झार ॥
हरिश्चन्द्र सत्तके कारणे। घर घर साग बिकाय ॥ ४७ ॥

टीकागुरुमुख--दोहा--जरासिंधु शिशुपाल औ, सहस्रार्जुन मारि जाय ॥ रावण दुर्योधन गये, पंडौ गये बिलाय ॥ १ ॥ मायाकेरी डिंभ में, गये बड़े पृथिवी राय ॥ उत्तम मध्यम करनि जो, जाकी जगत सब गाय ॥ २ ॥ छौचकवे सब बीति के, धरणीमांहि समाय ॥ एकौ जीव प्रतीत नहीं, सबै चले जहँडाय ॥ ३ ॥ कहां लों कहौं अचेत ही गये, निर्णय लखे न बनाय ॥ झगरा चेत अचेत एक, जगत रहे अरझाय ॥ ४ ॥

साखी—ई माया जग मोहिनी। मोहि न सब जग झार॥
हरिश्चन्द्र सचके कारणे। घर घर सोग बिकाय॥ ५॥

रमैनी ४८.

मानिकपुर कबीर बसेरी। मद्दति सुनी सेख तकि केरी॥
ऊजै सुनी जौनपुर थाना। झूसी सुनी पीरनको नामा॥
इकइस पीर लिखें तेहि ठामा। खतमा पढे पैगंबर नामा॥
सुनी बोल मोहिं रहा न जाई। देखि मुकर्बा रहा भुलाई॥
हबी नबी नबी के कामा। जहाँ लों अमल सो सबै हरामा॥
साखी—शेख अकर्दी शेख सकर्दी। मानहु वचन हमार॥
आदि अंत औ युग युग। देखहु दृष्टि पसार॥ ४८॥

टीका गुरुमुख—दोहा—मानिक कहिये मानवो, पूर कहिये ठाम॥ कवीर कहिये जीवके, बसो और के धाम॥ १॥ मद्दति कहिये पोढता, शेख कहीये जीव॥ ताकी गुरुवन को कहत है, जोरे तकावत पीव॥ ॥ २॥ जेहि पुरकी बातें सुनी, तहँवाँ रोपेउ ठाम॥ झूठहि बातें सुनि सुनी, ले पीरन को नाम॥ ३॥ इकइस पीर लिखे तेहि ठामा, कारि आपन अनुमान॥ खतमा पढि पैगम्बर, नाम खलिल को ठान॥ ४॥ ऐसी वानी सुनिके, मोते रह्यो न जाय॥ कबर मुकर्वा देखि के, जग- में रहा भुलाय॥ ५॥ हवी कहै समुझाय के, सुनो बनी के काम॥ जहाँलों अमल बतावही, सो सब जानु हराम॥ ६॥
साखी—हिन्दू तुरु दोउ मिलि के। मानहु वचन हमार॥
आदि अंत औ युग युग। देखहु दृष्टि पसार॥ ७॥

रमैनी ४९.

दरकी बात कहो दरवेसा। बादशाह है कौने भेसा॥
कहाँ कूच कहाँ करे मुकामा। मैं तोहि पूछौं मूसलमाना॥

लाल जर्द की नाना बाना । कौन सुरति को करो सलामा ॥
काजी काज करहु तुम कैसा । घर घर जब ह करावहु भैंसा॥
बकरी मुरगी किन्ह फुरमाया । किसके कहे तुम छुरी चलाया॥
दर्द न जानहु पीर कहावहू । बैता पढि पढि जग भरमावहू॥
कहहिं कबीरएकसय्यद बोहावै। आप सरीखा जग कबुलावै॥
साखी—दिन को रहत हैं रोजा। राति हनत हैं गाय ॥
यह खून वह बंदगी । क्योंकर खुशी खुदाय ॥ ४९ ॥

टीका गुरुमुख—दोहा—दरकी बात दरवेश कहो, अल्लाहको निसान॥ कहाँ कूच मुकाम कहाँ, कहु भाई मूसलमान ॥ १ ॥ लाल जर्द नाना वर्णहैं किसको करहु सलाम ॥ काजी काज न चीनिया गर कटवाये हराम ॥२॥ बकरी मुरगी काटने, किन्ह फुरमाया भाय।किसके हुकुम तुम जीवपर, दीन्ही छुरी चलाय ॥ ३ ॥ दर्द न जाने बेपीरसे, जगमें कहावत पीर ॥ बैता पढि पढि जगत में, देत भरम जंजीर ॥ ४ ॥ कहहिं कबीर एक सय्यद, जगमें करें पुकार ॥ आपन अस सबन कह-लावहीं, नाहक करत खुवार ॥ ५ ॥
साखी—दिन को रहत हैं रोजा । राति हनत हैं गाय ॥
येह खून यह बंदगी। क्यों कर खुशी खुदाय ॥ ६ ॥

रमैनी ५०.

कहइत मोहि भयल युग चारी।समुझत नाहिं मोर सुतनारी ॥
बंसहि आगिलगि बंसहिजरिया। भरम भूल नर धंधे परिया ॥
हस्ति कै फंदे हस्ती रहई । मृगा कै फंदे मृगा रहई ॥
लोहे लोह जस काटु सयाना । त्रियाके तत्व त्रिया पहिचाना ॥
साखी—नारि रचंते पुरुषा। पुरुष रचंते नार ॥
पुरुषहि पुरुषा जो रचै । ते विरले संसार ॥ ५० ॥

टीका गुरुमुख—दोहा—कहत कहावत जगत को, रीति चले युग चारि ॥ समुझत नाहीं जीअरा, भया और की नारि ॥ १ ॥ अग्नि उठत है बांस ते, बांसहि देत जराय ॥ मनुष्यते भरम भयो, मनुष्य गयो बौराय ॥ २ ॥ भरम भुलाने नर सकल, परे बहु फंदन माँह॥ जैसे हस्तिके फंदते, हस्ती जात फँदाय ॥ ३ ॥ मृगसे मृगको फाँदहीं लोहे लोह कट जाय ॥ कुटनिनसे त्रिया फँदे, अस जग फंदी जाय ॥ ४ ॥

मायामुख—साखी—नारि रचै जस पुरुष को । पुरुष रचै जस नार॥
पारब्रह्म में जो रचै । ते बिरले संसार ॥ ५ ॥

रमैनी ५१.

जाकर नाम अकहुआ रे भाई । ताकर काह रमैनी गाई ॥
कहैं तातपर्य एक ऐसा । जस पथी बोहित चढि बैसा ॥
है कछु रहनि गहनिकी बाता। बैठा रहै चला पुनि जाता ॥
रहै बदन नहिं स्वांग सुभाऊ । मन अस्थिर नहिं बोलै काहू॥

साखी—तन राता मन जात है । मन राता तन जाय ॥
तन मन एकै होय रहै । तब हंस कबीर कहाय ॥५१॥

टीकागुरुमुख—दोहा—जाकर नाम अकह है,सो कस गाया जाय। गुरुवन ऐसो दृढाइया,जस पथी जहाज चढाय ॥ १ ॥ मायामुख— है कछु रहन गहनि की, बात कहौं समुझाय ॥ राम कहै बैठा रहै,चला सो वैकुंठ जाय ॥ २ ॥ राम नाम मुखसे कहै, धरे न स्वांग सुभाव॥ मनस्थीर नामहिं रख, वचन न बोलै काहु ॥ ३ ॥

साखी—जहाँ तन राता तहाँ मन गयो । मन राता तन जाय ॥
तन मन एकै होय रहै । तब जिव ब्रह्म कहाय ॥ ४ ॥

रमैनी ५२.

जहि कारण शिव अजहुँ वियोगी। अंग विभूति लाय भौ योगी॥
शेष सहस्र मुख पार न पावै। सो अब खसम सही समुझावै॥
ऐसी विधि जो मोकह ध्यावै। छठयें माँह दर्श सो पावै॥
कौनेहु भाव देखाई देहों। गुप्तहिं रहों सुभाव सब लेहों॥
साखी–कहहिं कबीर पुकारिके। सबका उहै बिचार॥
कहा हमार माने नहीं। कैसे छूटे भ्रम जार॥५२॥

टीका गुरुमुख–दोहा–जासे अजहुँ वियोग शिव, शेष पार नहिं पाय॥ सोई खसम अब सत्य कही, गुरुवन दीन्ह दृढाय॥ १॥ ब्रह्म मुख–जैसी विधि वेदन कही, ऐसे जो मोहिं ध्याय॥ सो नर अपने मनहि में, दर्श हमारो पाय॥ २॥ कवनेउ भाव से ताहि को, देउँ देखाई जाय॥ निशि दिन ताके संग रहों, जानो तासु सुभाव॥३॥ गुरुमुख–साखी–कहहिं कबीर पुकारि के। सब का उहै बिचार॥ कहा हमार माने नहीं। कैसे छूटे भ्रमजार॥ ४॥

रमैनी ५३.

महादेव मुनि अंत न पाया। उमा सहित उन जन्म गमाया॥
उनहू ते सिद्ध साधक होई। मन निश्चय कहु कैसे कोई॥
जबलग तन में आहै सोई। तबलग चेति न देखै कोई॥
तब चेतिहो जब तजिहो प्राना। भया अयान तब मन पछताना॥
इतना सुनत निकट चलि आई। मन का विकार न छूटै भाई॥
साखी–तीन लोक मुवा कौवायके। छूटि न काहु कि आस॥
एकै अँधरे जग खाया। सब का भया निपात॥५३॥

टीका गुरुमुख--दोहा--महादेव औ मुनि सकल, उनहू अंत न पाय॥ उमा सहित उन आपनो, खोजत जन्म गमाय॥ १॥

उन हीते सिद्ध साधक भये, कस मन अस्थिर होय ॥ जबलग जीव तनमें अहै, चेति न देखै कोय ॥ २ ॥ प्राण जाय तन छोड के, तब चेत-हुगे भाय ॥ भये अज्ञानी मानुषा, फिर मन में पछताय ॥ ३ ॥ इतनो सुनत हैं जगत सब, मौत निकट चलि आय ॥ मन विकार छूटै नहीं, अनवनि यतन नसाय ॥ ४ ॥

सारवी—तिहुँ लोकमुवा पुकारि के । छूटि न काहू की आस ॥
एक धोकेने सब खाया । जगका भया निपात ॥ ५ ॥

रमैनी ५४.

मारि गो ब्रह्मा काशि को वासी । शीव सहित मूये अविनासी ॥
मथुरा को मारिगो कृष्ण गोवारा । मारि मारि गये दशों अवतारा ॥
मारि मारि गये भक्ति जिन्ह ठानी । सर्गुणमां निर्गुण जिन्ह आनी ॥
सारवी—नाथ मछंदर बाचे नहीं । गोरख दत्त औ व्यास ॥
कहहिं कबीर पुकारि के सब परे कालकी फांस ॥ ५४ ॥

टीकागुरुमुख—दोहा—मरि गौ ब्रह्मा देह धरि, शिव मूये अभि-मान ॥ मथुरा के कृष्णहु मुये, दश अवतार मरे जान ॥ १ ॥ जिन्ह बहु विधि भक्ति करी, सोऊ मरे निदान ॥ मरे सोउ जिन्ह सगुण में, निर्गुण कियो बखान ॥ २ ॥

सारवी—नाथ मछंदर बांचै नहीं । गोरख दत्त औ व्यास ॥
कहहिं कबीर पुकारि के । ई सब परे काल की फांस ॥ ३ ॥

रमैनी ५५.

गये राम औ गये लछमना । संग न गई सीता ऐसी धना ॥
जात कौरव लागु न बारा । गये भोज जिन्ह साजल धारा ॥
गये पंडव कुन्ता ऐसी रानी । गये सहदेव जिन बुद्धि मति ठानी ॥
सर्व सोनेकी लंका उठाई । चलत बार कछु संग न लाई ॥

जाकर कुरिया अंतरिछ छाई । सो हरिचंद देखल नहिं जाई ॥
मूरख मनुसा बहुत संजोई । अपने मरे और लग रोई ॥
ई न जानै अपनेउ मरिजैबे । टका दश बिढै और ले खैबे ॥
साखी-अपनी अपनी करि गये । लागि न काहु के साथ ॥
अपनी करि गये रावणा । अपनी दशरथ नाथ ॥५५॥

टीकागुरुमुख--दोहा--राम औ लक्ष्मण गये, गये कौरव अरु भोज॥ कुन्ती पंडव सभ गये, गये सहदेवन खोज॥ १ ॥ रावन औ हरिश्चंद्र गये, मूरख तृष्णा बढाय ॥ अपनेहू मरि जायगा, रोवै औरको धाय॥ २॥ ई नहिं जानै बावरा, न आपनहू मरिजाय ॥ टका दशबिरह लगाय के, औरन को ले खाय ॥ ३ ॥

साखी--अपनी अपनीकरि गये । लागि न काहु के साथ ॥
अपनीकरि गये रावणा । अपनी दशरथ नाथ ॥ ४ ॥

रमैनी ५६.

दिन दिन चरै जलनीके पांऊ । गाड़े जाय न उमँगे काऊँ ॥
कंधन देई मस्करी करई । कहुधौ कौनि भांति निस्तरई॥
अकर्म करे औ कर्म को धावै । पढ़ि गुनि वेद जगत समुझावै ॥
छूंछे परै अकारथ जाई । कहहिं कबीर चित चेतहु भाई॥

टीका गुरुमुख--दोहा--मृगनैनीके पांव में, अग्निकुंड एक आय ॥ ये जियरा अज्ञान होय, दिन दिन जरे तहाँ जाय ॥ १ ॥ गड़ो जातहै भगहि में, उमंगत कोऊ नाहिं ॥ जहवाँ ते उपज्यो जगत यह, पैठत तेहि घर माहिं ॥ २ ॥ नारी है जग मोहिनी, दे आलिंगन धाहि ॥ करे मस्करी बहुत विधि, कहु जिव कैसे निबाहि ॥ ३ ॥ अकर्म निशिदिन करत है, औ पुनि कर्महि धाय ॥ पढि गुणि वेद जगत को, कर्महि देत दृढाय ॥ ४ ॥ नरतन छूंछो परत है, जात अकारथ भाय ॥ जस

ऊखहि ते रस परत ह, होत परहथा जाय ॥ ५ ॥ कहहिं कबीर चित चेतहू, बहु विधि कहौं बुझाय ॥ यह कामिनी तै बांचहू, नहिं तो यमपुर जाय ॥ ६ ॥

रमैनी ५७.

कृतिया सूत्र लोक एक अहई। लाख पचासिक आयू कहई ॥
विद्या वेद पढे पुनि सोई। वचन कहत परतक्षै होई ॥
पठी बात विद्या की पेटा । वाहुक भरम भया सँकेता ॥
साखी--खग खोजन को तुम परे । पाछे अगम अपार ॥
बिन परिचय कस जानिहो । कबीर झूठा है हंकार॥५७॥

टीकागुरुमुख—दोहा—बानीके अनुमानसे,कहैं लोक एक आहि॥ लाख पचासकी आयुष, तहां कहै समुझाय ॥ १ ॥ ऐसी वेद कि बात जब, पठी हृदय में आय॥वाहूको बहु भ्रम भया, बड संकेत बनाय ॥ २ ॥
साखी--ब्रह्म खोजनको तुम परे । गुरुवन कहा अपार ॥
परिचय बिना कस जानिहो । झूठा सकल बिचार ॥ ३ ॥

रमैनी ५८.

तैं सुत मान हमारी सेवा । तो कह राज देउ हो देवा ॥
अगम दुगम गढ़ देउँ छोडाई । औरो बात सुनहु कछु आई ॥
उत्पति परलय देउं देखाई । करहु राज सुख बिलसो जाई॥
एकौ बार न होइहैं बांको । बहुरि जन्म न होइहै ताको॥
जाय पाप सुख होइहै घना ।निश्चय बचन कबीर के माना॥
साखी--साधु संत तेई जना । जिन मानल बचन हमार ॥
आदि अंत उत्पति प्रलय । देखहु दृष्टि पसार ॥५८॥

टीका मायामुख—दोहा—अरे पुत्र तैं मानि ले, हमरी सेवा बनाय ॥ अठारह वरण का राज तोहि, देहौं युक्ति बताय ॥ १ ॥ आगम कहें अदृष्ट को, दृगम कहिये जो दृष्ट ॥ दोनों धोख छुडाय के, तोहि लखावहु सृष्ट ॥ २ ॥ औरौ बात सुनहु कछू, तोहि कहौं समुझाय ॥ उत्पति प्रलयहु बृद्धि सब, तो कहँ देहुं लखाय ॥ ३ ॥ करहुँ राज तिहुँ लोक को, बिलसहु सब सुख आय ॥ एकौ बार न होइहैं बांको, बहुरि जन्म नहिं पाय ॥ ४ ॥ जाय पाप सब देह को, होइहैं सुख अपार ॥ ब्रह्म वाक्य अरु बेदको, जो जानत निरधार॥ ५ ॥

साखी—साधुसंत तेई जना । जिन मानल वचन हमार ॥
आदि अंत उत्पति प्रलय । देखहु दृष्टि पसार ॥ ६ ॥

रमैनी ५९.

चढत चढावत भँडहर फोरी । मन नहिं जाने केकरि चोरी॥
चोर एक मूसै संसारा । बिरला जन कोइ बूझन हारा॥
स्वर्ग पताल भूम्य ले बारी । एकै राम सकल रखवारी ॥

साखी--पाहन ह्वै ह्वै सब गये। बिन भितियन के चित्र ॥
जासो कियेउ मिताइया । सो धन भया न हित॥५९॥

टीका गुरुमुख—दोहा—चढत चढावत श्वास को, छूटि गई यह देह ॥ मन नहिं जाने बावरा, काकी देइ सँदेह ॥ १ ॥ चोर एक अनुमान है, जाको ब्रह्म बखान ॥ विरला जन कोइ चीन्हि है, सो धोखे को जान ॥ २ ॥ मायामुख—स्वर्ग पताल औ भूम्य लौं, ई सब लाइं बार ॥ एकहि राम सनातन, है सबको रखवार ॥ ३ ॥

गुरुमुख--साखी—पाहन ह्वै ह्वै सब गये । बिन भितियन के चित्र॥
जासो कियेउ मिताइया । सो धन भया न हित ॥ ४ ॥

रमैनी ६०.

छाडहु पति छाडहु लबराई । मन अभिमान टूटि तब जाई ॥
जिन ले चोरी भिक्षा खाई । सो बिरवा पलुहावन जाई ॥
पुनि संपति औ पतिको धावै । सो बिरवा संसार ले आवै ॥
साखी--झूठा झूठ के डारहू । मिथ्या यह संसार ॥
तेहि कारण मैं कहत हौं । जाते होय उबार ॥ ६० ॥

टीका गुरुमुख--दोहा--छाडि देव पति ब्रह्मको, छाडहु लबरी बानि ॥ मन अभिमान टूटै तबै, होय कुशल जिव जानि ॥ १ ॥ जिन्ह ले चोरी आत्मा, खाई भिक्षा जान ॥ सोई कर्म अंकुर होय, आगे फिर पलुहान ॥२॥ पुनि संपतिको धावहिं, औ ब्रह्मको धाय॥ सोई सोई अंकुर होय, संसारहि ले आय ॥ ३ ॥
साखी--झूठ झूठकै डारहू । मिथ्या यह संसार ॥
तेहि कारण मैं कहत हौं । जाते होय उबार ॥ ४ ॥

रमैनी ६१.

धर्म कथा जो कहतहि रहई । लाबरि उठि जो प्रातहि रहई ॥
लाबरि बिहाने लाबरि संझा । एक लाबरि बसे हृदया मंझा ॥
रामहुकेर मर्म नहिं जाना । लेमति ठानिनि बेद पुराना ॥
वेदहुकेर कहल नहिं करई । जरतई रहे सुस्त नहिं परई ॥
साखी--गुणातीत के गावते । आपुहि गये गवांय ॥
माटी का तन माटी मिलि गो । पवनहिं पवन समाय ६१

टीका गुरुमुख--दोहा--धर्मकथा जो कहत हैं, बडे बडे पंडित भाय ॥ जो मिथ्या अनुमान है, ताहि सत्य खमुझाय ॥ १ ॥ सायं प्रात जो पढत है, सोऊ लाबरी जान ॥ एक लाबरी उपदेश को, लीन्ह हृदयमें मान ॥ २ ॥ रामहु केर मर्म को, जानत कोइ नहिं भाय ॥

अपनी मति अनुमान करी,वेद पुरान बनाय ॥ ३ ॥ वेदहु केर कहा करे, न कोऊ समुझाय ॥ निशिदिन जरतही रहे,कहुं न कोइ शितलाय ॥४॥
साखी—गुणातीत के गावते । आपहि गये गवाय ॥
माटीका तन माटी मिलि गौ । पवनहि पवन समाय ॥ ५ ॥

रमैनी ६२.

जो तू करता वर्ण बिचारा । जन्मत तीन डंड अनुसारा ॥
जन्मत शुद्र मुये पुनि शुद्रा । कृतम जनेउघालि जग धंदा॥
जो तू ब्राह्मणब्राह्मनिको जाया । और राह है काहे न आया ॥
जोतूतुरुक तुरकनि को जाया। पेट म काहे न सुन्नति कराया॥
कारी पियरी दूहहु गाई । ताकर दूध देउ बिलगाई ॥
छाड़हु कपट नर अधिक सयानी।कहहिं कबीर भजुशारंगपानी

टीका गुरुमुख—दोहा—जो तुम आपन करत हो,निशिदिन वर्ण विचार ॥ जन्मत ही त्रिदंड को, क्यों न कियो अनुसार ॥ १ ॥ जन्मत ही को शुद्र है मूयेहु पुनि शुद्र ॥ कृतम जनेऊ डारिया, जग धंधाको छुद्र ॥ २ ॥ भगहीं तें सब होत हैं, भगहीं में सब जायँ ॥ जो तुमब्राह्मण सत्य हो, तो भग द्वारे क्यों आय ॥ ३ ॥ जो तुम तुरुक सत्य हो,औ तुरुकिन को जाय ॥ तो माता के गर्भ में, काहे न सुन्नति कराय ॥ ४ ॥ कारी पीयरी गाय बहू, दूहहु एकै ठाय ॥ ताको न्यारा दूध पुनि, काहु न दीन्ह लखाय ॥ ५ ॥ छाडि देहु नर कपटको, कीन्हेउ बहुत सयानि ॥ कहाँहै जाहि पुकारहू छाडु भरम जग बानि ॥ ६ ॥

रमैनी ६३.

नाना रूप वर्ण एक कीन्हा । चारि वर्णवै काहु न चीन्हा ॥
नष्ट गये कर्ता नहिं चीन्हा । नष्ट गये औरहि मन दीन्हा ॥

नष्ट गये जिन वेद बखाना । वेद पढे पर भेद न जाना ॥
बिमलख करे नैन नहिं सूझा। भया अथान तब किछउ न बूझा॥
साखी—नाना नाच नचाय के। नाचे नट के भेष ॥
छट घट है अविनाशी । सुनहु तकी तुम शेष ॥६३॥
टीका गुरुमुख—दोहा—नाना रूप औ वर्ण भये, एकरूप ते जान ॥
सो नहिं काहू चीन्हिया, जो चारिउ वर्ण बखान ॥ १ ॥ नष्ट गये यह जगत सब, जो नहिं करते चीन्ह ॥ नष्ट गये यह जगत जिव, जो औरहि मन दीन्ह ॥ २ ॥ वेद पढ़ा जिन्ह चारहू, सोउ गये जहँडाय ॥ जाको कियो है वेद यह, ताको मर्म न पाय ॥ ३ ॥ ब्यौरा करहीं आँधरे, ऊंच नीच अर्थाय ॥ भया अज्ञान कर्म में, तब कछु बूझ न आय ॥ ४ ॥
साखी—नाना भाव नचावहीं । गुरुवा नाचहिं नट के भेष ॥
घट घट कहैं अविनाशी । गुरू शिष्य विशेष ॥ ५ ॥

रमैनी ६४.

काया कंचन यतन कराया । बहुत भांति के मन पलटाया ॥
जो सौबार कहौं समुझाई । तैयो धरो छोरि नहिं जाई ॥
जनके कहे जन रहि जाई । नौ निद्धी सिद्धी तिन पाई ॥
सदा धर्म जाके हृदया बसई । राम कसौटी कसतहि रहई ॥
जोरे कसावे अंते जाई । सो बाउर आपुहि बौराई ॥
साखी—तासे परी कालकी फांसी । करहु न आपन सोच ॥
जहां संत तहां संत सिधावे । मिलि रहे धूतहि धूत ॥६४॥
टीका गुरुमुख-दोहा-काया कंचन कारणे, बहु विधि यतन कराय॥
बहुत भांति के जगत में, दीन्हा मन पलटाय॥ १ ॥जो सौ बार बुझाय कहूँ, तोउ छोरि न जाय ॥ जो मिथ्या अनुमान है, ताको गह्यो

बनाय ॥ २ ॥ मायासुख–भक्तजननके कहेते, जो कोई रहिजाय॥ अष्ट सिद्धि नौ निद्धि सो, साधनही ते पाय ॥ भक्ती जाके हृदय में, बसै रामकी आय॥योग जप तप ध्यानमें, जिवको कसै बनाय॥ ३ ॥ राम कसौटी छाड़ि के, जो मन अंतै लाय ॥ सो बाउर है जीयरा, आपुहि जाय बौराय ॥ ४ ॥

गुरुमुख–साखी–तावे परि कालकी फांसी । सोच विचारहु संथ ॥
संत निकट संत जावहीं । मिलि रहे अंधहि अंध ॥ ५ ॥

रमैनी ६५.

अपने गुण को अवगुण कहहू । इहै अभाग जोतुम नविचारहू॥
तू जियरा बहुते दुख पावा । जल बिनु मीनकौनसंघ पावा॥
चात्रिक जलहल आसे पासा । स्वांग धरै भवसागरकी आसा
चात्रिकजलहल भरै जो पासा । मेघ न बरसे चले उदासा ॥
राम नाम ईहै निजु सारा । औरो झूठ सकल संसारा ॥
हरि उतंग तुम जाति पतंगा । यमघर कियेहु जीवको संगा॥
किंचित है सपने निधि पाई । हिये न माय कहाँ धरों छिपाई॥
हिये न समाय छोरी नहिं पारा। झूठा लोभ किछउ न विचारा॥
सुमृति कीन्ह आपु नहिं माना।तरवर तर छर छार होय जाना॥
जिव दुर्मति डोले संसारा । ते नहिं सूझे वार न पारा ॥
साखी--अंध भया सब डोले । कोइ न करै विचार ॥
कहा हमार मानै नहीं । कैसे छूटे भ्रमजार ॥ ६५ ॥

टीका–गुरुमुख–दोहा–अपने कीये गुण सकल,ताहि कहै निराकार॥ इहै अभागी मानुषा, तुम ना करहु विचार ॥ १ ॥ तू जियरा बहुतै पाय दुख, खोजि खोजि कर्तार ॥ जैसी जल बिन माछरी, तलफत बिना अधार ॥ २ ॥ चात्रिक पिहु पिहु करत है, भरा रहै जल पास ॥ ऐसे

जिव बहु भेष धरी, ब्रह्मसिंधुकी आस ॥ ३ ॥ चात्रिक के जल पास है, स्वाती बिना निरास ॥ अस राम नाम निज जानिके, जगमें रहत उदास ॥ ४ ॥हरी तो ज्योति स्वरूप है, तुम सब बने पतंग ॥ गुरुवन-के घर कीन्हेउ, सदा जीवके संग ॥ ५ ॥ कामिनि अग्नी स्वरूप है, जियरा बने पतंग ॥ गर्भवास मा कीन्हेउ, सदाजीवके संग ॥ ६ ॥ स्वप्ने में धन पाइयां, बडो हर्ष अधिकाय ॥ हृदया रोकत ना रुका, कहवां रखै छिपाय ॥ ७ ॥ हृदयामें मावै नहीं, छोरिउ नाहीं पार ॥ अस झूठ लोभ उपदेश को, कोई न करत विचार ॥ ८ ॥ आपुहि स्मृति बनाइया, आप लिया है मान ॥ ब्रह्म पक्षमा लागिके, भये भस्म गलतान ॥ ९ ॥दुर्मती जीव ब्रह्म ज्ञानी, सो डोलें संसार ॥ खोजहि निर्गुण ब्रह्म को, सूझै वार न पार ॥ १० ॥

साखी–अंध भया सब डोले । कोई न करै विचार ॥

कहा हमार मानै नहीं । कैसे छूटे भ्रमजार ॥ ११ ॥

रमैनी ६६.

सोई हितबंधू मोहि भावै । जात कुमारग मारग लावै ॥
सो सयान मारग रहि जाई । करै खोज कबहीं न भुलाई ॥
सो झूठा जो सुत को तजई । गुरुकी दया रामते भजई ॥
किंचित है एक तेज भुलाना । धनसुत देखि भया अभिमाना॥
साखी–दिया न खतना किया पयाना । मंदिर भया उजार ॥
मरि गये सो तो मरिगये । बांचे बांचनहार ॥ ६६ ॥

टीका मायामुख--दोहा--सोइ हित सोई बंधू, मोहिको अधिक पियार ॥ जात कुमारग जीयरा, लावै भक्ति मँझार ॥ १ ॥ सोई सयाना जीयरा, भक्ति करै मनलाय ॥ करत खोज निशिदिन रहै, कबहुँ न जात भुलाय ॥ २ ॥ गुरुमुख–सोई झूठा जानिये जो, जिव छोडिअंतै

जाय ॥ पारखके प्रकाश बल, भजै राम ते भाय ॥ ३ ॥थोरेसे अनु-मान में, बहुत भुलाने लोय ॥ धन सुत के अभिमान में, बहुतक गये बिगोय ॥ ४ ॥

साखी- दै उपदेश जग बांधिया । भरममें किया पयान ॥

पढि पढि बानी मरि गये । बचै सो वोही जान ॥ ५ ॥

रमैनी ६७.

देह हलाय भक्ति नहिं होई । स्वांग धरे नर बहुविधि जोई॥
धींगी धींगा भलो न माना । जो काहू मोहिं हृदया जाना ॥
मुख कछु और हृदय कछु आना । स्वप्नेहु काहू मोहिं न जाना॥
ते दुख पैहैं ई संसारा । जो चेतहु तो होय उबारा ॥
जो गुरु किंचित निंदा करई । सूकर श्वान जन्म ते धरई ॥
साखी--लखचौरासी जीवजंतुमें। भटकि भटकि दुख पाव ॥
कहैं कबीर जो रामहि जानै। सो मोहिं नीके भाव६७॥

टीका ब्रह्ममुख--दोहा--देह हलाय भक्ति नहिं, स्वांग धरे जो लोय ॥ सो बानी मोहिं भावै नहीं, अनिर्वाच्य मैं सोय ॥ १ ॥ मुख में तो कछु और है, हृदया में कछु आन ॥ ते नर मोहिं नपाइ हैं, स्वप्नेहु माहिं अयान ॥ २ ॥ मायामुख--ते दुख पैहैं जगत में, चेतहु तो होय उबार ॥ जो गुरु किंचित निंदा करहीं, सूकर श्वान औतार ॥ ३ ॥

साखी--लख चौरासी जीव जंतु में । भटकि भटकि दुख पाव ॥

कहै कबीर जो रामहिं जानै । सो मोहिं नीके भाव ॥ ४ ॥

रमैनी ६८.

तेहि वियोगते भयेउ अनाथा । परेउ कुंजवन पावै न पंथा॥
वेदो नकल कहै जो जाने । जो समुझै सो भलो न माने ॥

नटवट विद्या खेले जो जाने। तेहि गुण को ठाकुर भल माने
उहैं जो खेले सब घट माहीं। दूसर के कछु लेखा नाहीं॥
भलो पोच जो अवसर आवै। कैसहु के जन पूरा पावै॥
साखी--जेकर शर तेहि लागे। सोइ जानेगा पीर॥
लागे तो भागे नहीं। सुखसिंधुनिहार कबीर॥६८॥

टीकागुरुमुख--दोहा--तेहि वियोग ते जीव यह, भयो है दीन अनाथ॥ परयो बहु बानी जाल में, कहूं न सूझै पंथ॥ १॥ बेद नकल जो कहत है, सो जानै जो कोय॥ जो कोय जानै बापुरा, भल अनुमानै सोय॥ २॥ **माथामुख**--योग ध्यान जो करत है, प्रेम लक्षणा होय॥ तेहि के गुण परमात्मा, मानिलेत भल सोय॥ ३॥ उहै एक परमात्मा, खेलै सब घट माहिं॥ एक दोय को तहाँ कछु, लेखा कहा न जाहि॥ ४॥ भली बातहै अबहि के, जो आवै यहि बेर॥ कैसेहु जन ब्रह्म पायके, तजे चौरासी फेर॥ ५॥

साखी--जाकी सुरति लगी ब्रह्म में। सो जानेगा पीर॥
सुरति लगे तो टरै नहीं। सबमें निहारि मन थीर॥ ६॥

रमैनी ६९.

ऐसा योग न देखा भाई। भूला फिरे लिये गफिलाई॥
महादेवको पंथ चलावै। ऐसो बडो महंत कहावै॥
हाट बजारे लावै तारी। कच्चा सिद्ध माया पियारी॥
कब दत्ते मवासी तोरी। कब शुकदेव तोपचि जोरी॥
नारद कब बंदूक चलाया। व्यासदेव कब बंब बजाया॥
करहिं लराई मति के मंदा। ई अतीत कि तरकस बंदा॥
भये विरक्त लोभ मन ठाना। सोना पहिरि लजावे बाना॥
घोरा घोरी कीन्ह बटोरा। गांव पाय जस चले करोरा॥

साखी--सुंदरी न सोहै । सनकादिक के साथ ॥
कबहुँक दाग लगावै । कारी हांडी हाथ ॥६९॥

टीकागुरुमुख--दोहा-ऐसा योग न देखिया, भूला लिये गफिलाय॥ महादेवको पंथ चलावै, बडो महंत कहाय ॥ १ ॥ हाट बाजारके बीचमें, निश्चय लावै तारि ॥ कच्चा सिद्ध सो जानिये, माया लागे प्यारि ॥ २ ॥ तोरि भवासी दत्त कब, शुक कब तोप चलाय ॥ नारद कब बंदूक चलाई, व्यास कब बंब बजाय ॥ ३ ॥ करै लडाई मति के मंदा, ई अतीत कि तरकस बंद ॥ होय विरक्त लोभ मन ठान, अज्ञानी मतिमंद ॥ ४ ॥ सोना पहिर लजावै बाना, घोरा धोरि बटोरि ॥ गांव पाय जस चने करोरा, लीन्ही सैना जोरि ॥ ५ ॥

साखी--माया शोभा देत नहीं । भेष धारिनके साथ ॥
कबहीं दाग लगावही । कारी हांडी हाथ ॥ ६ ॥

रमैनी ७०.

बोलना कोसो बोलियरे भाई । बोलतही सब तत्त्व नसाई॥
बोलत बोलत बाढु बिकारा । सो बोलिये जो पडे विचारा॥
मिलहि संत वचन दुइ कहिये । मिलबि असंत मौन होयरहिये॥
पंडित सो बोलिये हितकारी । मूरखसो रहिये झखमारी॥
कहहि कबीर अर्धघट डोलै । पूरा होय विचार ले बोलै॥

टीकागुरुमुख--दोहा--बोलना कासोबोलिये, देखु कहां को भाय॥ मैंही ब्रह्म जब बोलिया, तबते जीव नसाय ॥ १ ॥ मन अनुमाने ब्रह्म भौ, एकन एक दृढाय ॥ बाढो ब्रह्म विकार तब, ब्रह्महि जगत कहाय ॥ २ ॥ सोइ बचन अब बोलिये, जोकछुपरे विचार । तत्त्वमस्यादि जाल सब, सो त्यागै निरधार ॥ ३ ॥ मिलहि संत कोइ पारखी, ताहि वचन कहु दोय ॥ जीवरूप यह सत्य है, औ बहु मिथ्या होय ४ ॥

मिलहि भ्रमिक अज्ञान कोउ, तहां रहो चुपकाय ॥सो नहीं चीन्हें मनुष्यपद धोखेमें बौवाय ॥५॥ मिले कोइ पंडित चतुर, औ निज खोजी भाय ॥तासों हितकर वचन कहो, जाते तपनजुडाय ॥ ६ ॥ मिले मूर्ख कोई मनमती, तासे कछू न बोल ॥ मौन गही रहु जीवमें वाक्य न करो अडोल ॥ ७ ॥ ज्यों लों अधघट जल रहे, डोलत रहे सो नीर ॥ जबलों हंसा ब्रह्म में, तौलों नाहीं थीर ॥ ८ ॥ पुरा होय विचार ले, गुरु पारख बल थीर ॥ सो बोले गुरुबुद्धि ले, शुद्ध वचन गंभीर ॥ ९ ॥

रमैनी ७१.

सोग बधावा जिन्ह सम के माना।ताकी बात इंद्रहु नहिं जाना ॥
जटा तोरि पहिरावे सेली । योग युक्तिकी गर्भ दुहेली ॥
आसन उडाय कौन बडाई । जैसे कौवा चील्ह मिडराई ॥
जैसी भीत तैसी है नारी । राजपाट सब गने उजारी ॥
जस नर्क तस चंदन जाना । जस बाउर तस रहैं सयाना ॥
लपसी लौंग गने एकसारा । खांड छांडि मुख फांके छारा ॥
साखी--इहै विचार विचार ते । गये बुद्धि बल चेत ॥
दुइ मिलि एकै होय रहा । मैं काहि लगाऊँ हेत॥७१॥

टीका मायामुख--दोहा--हर्ष शोक जिन सम कियो, दुख सुख दोउ सम जाहिं ॥ ताकी बातके मर्मको, इंद्रहु जानत नाहिं ॥ १ ॥ गुरुमुख--मस्तक जटा बढावहीं,हाथ कमंडलु देय॥योग युक्ति सिखलावहीं, गर्भ बानि परमेय ॥ २ ॥ आसनहू के उडाय से,कौन बढाई भाय ॥ जैसे गगन के बीचमें, काग चील्ह उडिजाय ॥ ३ ॥ जैसे देखत भीतको,तैसी देखै नारि ॥राज पाट जस गनतहै,तैसी गनै उजारि ॥ ४ ॥ जैसा देखै नर्क को, तैसा चंदन जान ॥ जैसा बाउर रहत

है, ऐसा रहै सयान ॥ ५ ॥ ब्रह्म जगत सम गनत है, खांड राख सम होय ॥ छाड़ै मूरुख खांड को, फांकै राख संजोय ॥ ६ ॥

साखी--यह विचार करते करते, नाना प्रकारके बोध ॥
कैवल्यसे चेतन नसा, जगत ब्रह्म मिलि सोध ॥ ७ ॥
आत्मा निश्चय कियो सबन मिल, यह धोकेकी नाव ॥
सब बूडे अनुमानमें, मैं कासों प्रीति लगाव ॥ ८ ॥

रमैनी ७२.

नारी एक संसारहि आई । माय न वाके बापहि जाई ॥
गोड न मूड न प्राण अधारा । जामें भमारि रहा संसारा ॥
दिना सात ले उनकी सही । बुद अदबुद अचरज का कही ॥
वाहीक बंदन करे सब कोई । बुद अदबुद अचरज बड होई ॥
साखी--मूस बिलाई एक सँग । कहु कैसे रहि जाय ॥
अचरज एक देखोहो संतो । हस्ती सिंघही खाय ७२

टीकागुरुमुख--दोहा-बानी एक जग आइया, सुन ताको परमान ॥ काया माया है नहीं, जीवहि को अनुमान ॥ १ ॥ गोड मूढ कछु है नहीं, प्राणहु नाहीं अधार ॥ तामें भरमि रहा सबै, मिथ्या यह संसार ॥ २ ॥ नेति नेति वह कहत है, सात स्वर्ग की बात ॥ ऐसी बुध अबुध बडी, अचरज कहो न जात ॥ ३ ॥ वाहि बानि की बंदना, करे सकल संसार ॥ बडी बुध अबुध भौ का, कहि अचरज सार ॥ ४ ॥

साखी--मूस जीव बिल्ली बानी, बिल्ली माया जोय ।
ताके संग जिव मिलि रहो, कैसे कुशलता होय ॥ ५ ॥
अचरज एक बड देखिये, अपने हाथ बनाय ॥
सोइ बानी औ स्त्री, जीव सिंघको खाय ॥ ६ ॥

चली जात देखी एक नारी । तर गागरि ऊपर पनिहारी ॥
चली जात वह बाटहि बाटा । सोवनहार के ऊपर खाटा ॥
जाड़न मरे सपेदी सौरी । खसम न चीन्हें धरणि भइ बौरी ॥
सांझ सकार दिया ले बारे । खसमहि छाड़ि संवरे लगवारे ॥
वाही केरस निसु दिन राची । पियासो बात कहैनहिं सांची॥
सोवत छाड़ि चली पिय अपना । ईदुख अबधौं कहैं केहिंसना॥

साखी--अपनी जाँघ उघारि के । अपनी कहीन जाय॥
की चित जाने आपना । की मेरो जन गाय ॥ ७२ ॥

टीका गुरुमुख-दोहा-अनुमति बानी देखि के, चलो जात संसार॥तरे देह गगरी रही, ऊपर सूरति पनिहार ॥ १ ॥ या घटसे वा घट चली,सोवनहारा जीव ॥ याके ऊपर शास्त्र षट, हुकुम दृढावहि पीव ॥ २ ॥ मरै जीव यह विरहते, जो बानी परचाय॥अच-रज संतो देखहू, जाडन मरै रजाय ॥ ३ ॥ खसम कहीये ब्रह्मको, सो तो जिव अनुमान ॥ घरनी कहिये जीवको, बिन चीन्हैं बौरान॥ ॥ ४ ॥ लगी लाग जो मूर्ति से, सो कहिये लगवार ॥ सांझ प्रात बारे दिया, ताहि कहै करतार ॥ ५ ॥ वाहीके रस राति दिन, राचि रही होय नार ॥ जाहि पिया कर थापिया, साँच न कहै विचार ॥ ॥ ६ ॥ सोवत हती अचेत है, छाडि चली यह देह ॥ देह संग पियाहु रहै, काहि कहै दुख येह ॥ ७ ॥

साखी-आपुहि बहु अनुमान करि । फंदा रचै बनाय ॥
जैसे का तैसा रहै । खोलि कहा नहिं जाय ॥ ८ ॥

मायामुख-साखी-की चित जाने आपनो । सब जग आत्मा आय ॥
की कोइ ज्ञानी पंडिता । तत्त्वमसी को गाय ॥ ९ ॥

रमैनी ७४.

लहिया होते गुप्त स्थूल न काया। न ताके सोग ताकि पै माया॥
कवल पत्र तरंग एक माहीं। संगेहि रहै लिप्त पै नाहीं॥
आस ओस अंडमा रहई। अगनित अंड न कोई कहई॥
निराधार आधार ले जानी। राम नाम ले उचरी बानी॥
धर्म कहै सब पानी अहई। जाति के मन पानी अहई॥
ढोर पतंग सरै घरियारा। तेहि पानी सब करै अचारा॥
फंद छोडि जो बाहर होई। बहुरि पंथ नहिं जोहै सोई॥
साखी--भरमका बांधा यह जग। कोइ न करै विचार॥
एक हरिकि भक्ति जाने बिना। भवबूडि मुवा संसार॥७४॥

टीका मायामुख--दोहा--स्थूल देह तब ना हती, हते ब्रह्म तब गुप्त॥ शुद्ध चैतन्य तब जानिये, अवस्थातीत सुषुप्त॥ १॥ ताको सोग कछु ना हता, माया ताही संग॥ जैसे कमल पत्रपर, न्यारो सदा तरंग॥ २॥ जस रहत कमल पत्रपै, न्यारो सदा तरंग॥ ऐसे माया अंड से, आत्मा रहत असंग॥ ३॥ आस बास सब छाडि के, रहै अंड के मांहि॥ अगणित अंडॐकार हैं, गनि न सकै कोइ ताहि॥ ४॥ गुरुमुख--निराधारनिःअक्षर कही, ताहि अधार ले जानि॥ राम नाम अनुमान करी, बानी बहुत बखानि॥ ५॥ शास्त्र कहैं निरवारि के, जैसो सब जल आहि॥ ऐसो है यह आत्मा, घटि बढ़ि कहा न जाहि॥६॥मन पानी का रूप है, शास्त्रनमाना जाहि॥ माना सो अनुमान है, पारख यथारत ताहि॥ ७॥ ज्ञानी भक्त योगी मरे, जेहि बानीमें भाय॥ सो बानी आचरण कारि, सब जग मारि मरि जाय॥ ८॥ तजा भरम जिन परख के, ते पुनि भये निनार॥ ते नहिं भवमें जावहीं, जहवाँ सब संसार॥ ९॥

साखी—भरमका बांधा यह जगत, यहि विधि आवै जाय ॥
कोइ न करे बिचार पुनि, ताते भटका खाय ॥ १० ॥
एक माया की बानी बिन, जाने यह रीति ॥
भरम अनुमान औ कल्पना, मानि मानि करे प्रीति ॥११॥

रमैनी ७५.

तेहि साहबके लागहु साथा । दुइ दुख मेटिके होहु सनाथा॥
दशरथ कुल अवतरि नहिं आया।नाहिं लंकाके राव सताया॥
नहिं देवकी के गर्भहि आया । नहीं यशोदा गोद खिलाया ॥
पृथ्वी रवन धवन नहिं करिया।पैठि पताल नहिं बलि छलिया
नहिं बलिराजा सो मांडलरारी।नहिं हरणाकुश बधल पछारी॥
बराह रूप धरणी नहिं धरिया।क्षत्री मारि निक्षत्रीनहिंकारिया ॥
नहिंगोवर्धनकर गहि धरिया।नहिंग्वालन सँग बनबन फिरिया
गंडुकी शालिग्राम नहिं कूला।मच्छकच्छहोय नहिंजलडोला।
द्वारावती शरीर नहिं छाडा । ले जगन्नाथ पिंड नहिं गाडा ॥
साखी—कहहिं कबीर पुकारि के । वहि पंथे मति भूल ॥
जेहिराखेउ अनुमानके । सो थूल नहिं अस्थूल ॥७५

टीका गुरुमुख—दोहा—साहेब जाकी साहेबी, सगरी भइ विस्तार॥ सो तो मानुष जानिये, वो नहिं दश अवतार ॥ १ ॥सो साहेब अब कहां है, जाके लागहु साथ ॥ दूसर धोखा सबैहै, मेटि के होहु सनाथ ॥ २ ॥

साखी—कहां है जाहि पुकारहू, सबका सिर्जनहार ॥
वै पंथे मति भूलहू, जो गुरुवन कहा पुकार ॥ ३ ॥
जेहि राखेउ अनुमान करी, सो थूल नहीं अस्थूल ॥
मिथ्या धोखा जानिये, महा अँधेरी भूल ॥ ४ ॥

रमैनी ७६.

मायामोह सकल संसारा । इहै विचार न काहु विचारा ॥
माया मोह कठीन है फंदा । करे विवेक सोई जन बंदा ॥
राम नाम ले बेरा धारा । सोतो ले संसारहि पारा ॥
साखी—राम नाम अति दुर्लभ । औरेते नहिं काम ॥
आदि अंत औ युग युग । मोहि रामहिते संग्राम ॥७६॥

टीकागुरुमुख—दोहा—माया कहिये गुरुवा, मोह उनका ब्यौहार॥ यह बन्धन जग कठिन भौ, काहु न कीन्ह बिचार ॥१॥ कठिन फंद है मोह का, माया दीन्ह दृढाय ॥ जो विवेक करी वेद को, सोइ जन बाँधी जाय ॥ २ ॥ सोरठा—सबन कीन्ह अनुमान, राम नाम नौका धरो ॥ सो ले सकल पथान, पार होहिं जिव जगतके ॥ ६ ॥
साखी—राम नामअति दुर्लभ । और ते नहिं काम ॥
आदि अंत औ युग युग । मोहि रामहिसे संग्राम ॥ ४ ॥

रमैनी ७७.

एकै काल सकल संसारा । एक नाम है जगत पियारा ॥
त्रियापुरुष कछु कथ्यो न जाई । सर्व रूप जग रहा समाई ॥
रूप निरूप जाय नहिं बोली । हलुका गरुवा जाय न तोली ॥
भूख न तृषा धूप नहिं छाहीं । दुख सुख रहित रहै तेहि माहीं
साखी—अपरंपरं रूपमगु रंगी । आगे रूप निरूप न भाय ॥
बहुत ध्यानके खोजिया । नहिं तेहि संख्या आय॥७७॥

टीका गुरुमुख—दोहा—एकै काल कहिये कल्पना, जो कल्पै संसार ॥ एक नाम ब्रह्म धोखा, सोई जगमें प्यार॥१॥मायामुख-त्रिया पुरुष कछु है नहीं, सर्व रूप जग पूर॥ रूप अरूप न कहि सको, नहिं नियरे नहिं दूर ॥२॥ हलुका है कि गरुवा, तौलो नाहीं जाय॥

भूख प्यास तहाँ कछु नहीं, नहीं धूप नहिं छांय ॥ ६ ॥ दुख सुख एकौ तहाँ नहीं, रहित रहे तेहि माहिं ॥ यही बोध निश्चय करो, अब कछु आगे नाहिं ॥ ४ ॥

साखी—आपहि सब में रमा है। आप सबन के पार ॥
रूप रंग रस आपही। आपहि सिरजनहार ॥ ५ ॥
आगे बहुत विचार भौ। रूप अरूप न ताहि ॥
बहुत ध्यान करि देखिया। नहिं तेहि संख्या आहि ॥ ६ ॥

रमैनी ७८.

मानुष जन्म चूकेहु अपराधी। यही तन केर बहुत हैं साझी॥
तात जननि कहैं पुत्र हमारा। स्वारथजानिकीन्हप्रतिपारा॥
कामिनि कहै मोर पिउ आही। बाघिनिरूप गिरासा चाही ॥
सुत कलत्र रहैं लौलाई। यमकी नाई रहै मुख बाई ॥
काग गिद्ध दोउ मरण विचारे। सौकर श्वान दोउ पंथ निहारें॥
अग्नि कहै मैं ई तन जारों। पानि कहै मैं जरत उबारों ॥
धरती कहै मोहि मिलि जाई। पवन कहै संग लेउं उड़ाई ॥
तेहि घर को घर कहै गवांरा। सो बैरी होय गले तुम्हारा ॥
सो तन तुम आपन कै जानी। विषय स्वरूप भूलेउ अज्ञानी॥
साखी—इतने तनके साझिया। जन्मोभरि दुख पाय ॥
चेतत नाहिं मुग्ध नर। बौरे मोर गोहराय ॥ ७८ ॥

टीकागुरुमुख—दोहा—मानुष जन्ममें चूकेहू, यही बडो अपराध ॥ यह तनकेर बहुत हैं, लावनहार उपाध ॥ १ ॥ मात पिता कहैं पुत्र है, हमरो बडो पियार ॥ अपने स्वारथ कारणे, वाहि कीन्ह प्रतिपार ॥ २ ॥ जेहिमा हमरो नाम हो, सेवा करिहैं हमार ॥ जगमें महिमाहोयहै, बाढै बंस अपार ॥ ३ ॥ नारि कहै मोर पीउ है, बाघिन रूपबनाहि ॥ हावभाव

कटाक्ष करी, मानो खाया चाहि ॥ ४ ॥ नाती पूत सब कहत हैं, पिता अपिता भाय ॥ याको धन हमको मिले, ये कैसेहु मरिजाय ॥ ५ ॥ गुरुवा जनकी बानी, येहु रही सुख फार ॥ जामें भरमि रहा सबै, मिथ्या यह संसार ॥ ६ ॥ काग गिद्ध दोउ कहत हैं, कब ये मरे गँवार ॥ हमको कछु भोजन मिलै, करब शरीर अहार ॥ ७ ॥ स्यार श्वान दोउ बैठि के, कहु विधि लाग लगाय ॥ कैसहु कै, नर आवै, तुरतहि डारों खाय ॥ ८ ॥ पांच तत्त्व यों कहत हैं, अपनोअपनो भाग ॥ तुरतहि लेहुं मिलायक होय देह जो त्याग ॥ ९ ॥ जेहि घरको घर कहत हो, सोतो बैरी तुम्हार ॥ एक दिना मरि जाहुगे, दै दै दुःख अपार ॥ १० ॥ सो तनको तुम आपना, कैकै लीन्हों मान । विषय रूप होय जगत में, भूलो रे अज्ञान ॥ ११ ॥

साखी—इतने साझीदेहके, कियो मोह इन संग ॥
जन्म भरो दुख पाइया, आखीर मिथ्याभंग ॥ १२ ॥
चेतत नाहीं मूर्ख नर, नाहक में बौरान ॥
मोर मोर गोहरावहीं, मोह जालको मान ॥ १३ ॥

रमैनी ७९.

बढवत बढी घटावत छोटी । परखत खरी परखावत खोटी ॥
केतिक कहौं कहांलों कही । औरो कहौं पडे जो सही ॥
कहे बिना मोहि रहा न जाई । बिरही ले ले कूकुर खाई ॥
साखी—खाते खाते युग गया । बहुरि न चेतहु आय ॥
कहहिं कबीर पुकारिके । ये जीव अचेत हि जाय ॥ ७९ ॥

टीकागुरुमुख—दोहा -बढत बढावत बहुते बढी, बानी और प्रपंच ॥ घटत घटावत घटा जीव, कहूं न पावै संच ॥ १ ॥ परखत को सांचा लगा, बानी को अनुमान ॥ परखाय जब गुरुने, ठहरा झूठ निदान ॥ २ ॥

केतिक कहौं समुझाय के, कही कहां लों भाय ॥ औरो कहौं परखाय के, परे सही जो आय ॥ ३ ॥ बिना कहे निरवार के, मोसों रहो न जाय ॥ बिरही जीव को लेइके, गुरुवा कूकुर खाय ॥ ४ ॥
साखी--पढत पढत बहु युग गये । अबहु न चेतहु आय ॥
कहाँ है जाहि पुकारहू । ई जीव अचेतहि जाय ॥ ५ ॥

रमैनी ८०.

बहुतक साहस करु जिय अपना। तेहि साहेबसे भेंट न सपना ॥
खरा खोट जिन नहिं परखाया। चाहत लाभ तिन मूलगमाया ॥
समुझि न परकी पातरी मोटी। ओछी गांठि सबै गौ खोटी ॥
कहहिं कबीर केहिं देहो खोरी। जब चलिहो झीझीं आशातोरी

टीका गुरुमुख--दोहा--बहु अनुमान जिव करत है, ब्रह्म पदारथ मान ॥ सो तो मिथ्या धोख है, स्वप्नेहु न मिले निदान ॥ १ ॥ खरा खोट जिन परखा नहीं, परख न ताके पास ॥ सो जिव लाभ की चाह करी, कियो आपनो नास ॥ २ ॥ मेही मोटी दोउ कष्टरूप, समुझि परी नहिं काहु ॥ पतरी कहिये ब्रह्म को, मोटी जगत बताहु ॥ ३ ॥ मोटी माया छोडि के, पतरी में भये बंध ॥ मन में बहुत बिचार करि, रचेउ झूठ फरफंद ॥ ४ ॥ कहवाँ है सो जीयरा, काहि देहूगे दोख ॥ छाडि चलि हौ जबै, झूठ कियो जो धोख ॥ ५ ॥

रमैनी ८१.

देव चरित्र सुनहु हो भाई। जो ब्रह्मा सो धियउ नसाई ॥
दूजे कहौं मँदोदरि तारा। जेहि घर जेठ सदा लगवारा ॥
सुरपति जाय अहिल्या छरी। सुरु गुरु घरणि चंद्रमें हरी ॥
कहहिं कबीर हरिके गुणगाया। कुंतिहि कर्ण कुँवारेहि जाया ८१

टीका गुरुमुख—दोहा—देव चरित्र सुनो रे भाई, कहौं तोहि समुझाय॥ जाहि कहत हैं ब्रह्मा, सो पुत्री सँग जाय ॥१॥ औरो सुनो मंदोदरी, तारा बडी रहाय॥ इन घर घर लगवार है, सुग्रीव बिभीषण भाय ॥ २ ॥ देवपती जो श्रेष्ठ है, जाको कहिये इंद्र ॥ तिनहूने छली अहिल्या, परे देह में छिद्र ॥ ३ ॥ हरयो जायके चंद्रमा, बृहस्पतीकी नार ॥ गुरु नारीसो भोग कियो, तबहि भयो बुधवार ॥ ४ ॥ कहवाँ है सो जीयरा, जिन्ह गुण बेदन गाय॥ कुंती कुँवारी नारि थी, तबहिं कर्ण उपजाय ॥ ५ ॥

रमैनी ८२.

सुखके वृक्ष एकजगत्र उपाया।समुझि न परलि विषय कछुमाया
छौ क्षत्री पत्री युग चारी । फल दुइ पाप पुण्य अधिकारी॥
स्वाद अनँत कछु बर्णिन जाई। कारि चारित्र सो ताहि समाई ॥
जो नटवट साज साजिया। जो खेलै सो देखै बाजिया ॥
मोहा बापुरा युक्ति न देखा। शिव शक्ती विरंचि नहिं पेखा॥
साखी—परदे परदे चलीगई। समुझि परी नहिं बानि ॥
जो जानै सो बाँचि है। नाहिंतो होतसकलकीहानि ॥८२॥

टीका गुरुमुख--सोरठा--एक जीव का नांव, इन्ह आपन अनुमान कारि ॥ सुख का वृक्ष उपाव, जासु ब्रह्म जग गाइया ॥१॥दोहा-समुझि परी नहि विषय कछु, जामें भया आनंद ॥ आनँदसे अहँ शक्ती भइ, बढो तहां ते फंद ॥२॥ छौ चकवे क्षत्री भये, ब्राह्मण भये युग चार ॥ पाप पुण्य दुइ फल भये, जीवहि को अधिकार ॥ ३ ॥ वै युग फल को स्वाद बहू, कछु बर्णी नहिं जाय ॥ बहु प्रकार जिव चरित्र करी; तेहिमा रहे समाय ॥ ४ ॥ जिन्ह यह बहु बानी रची; औ बहु बोध बनाय ॥ सोइ खेलत है तासु में; देखै सो बझि जाय ॥ ५ ॥

सोरठा--मोहि गया यह जीव,कृतम जुक्ति नहिं परखिया ॥ ब्रह्मा शक्ति शीव, सबै परे भ्रमफंदमें ॥ ६ ॥

साखी--परदे परदे चली गई । समुझि परी नहिं बानि ॥
जो जानै सो बांचि हैं । नहिं होत सकलकी हानि ॥ ७ ॥

रमैनी ८३.

क्षत्री करे क्षत्रिया धर्मा । सबाई वाके बाढे कर्मा ॥
जिन्ह अवधूगुरुज्ञानलखाया । ताकर मन ताहि ले धाया ॥
क्षत्री सो जो कुटुम सो जूझै । पांचौ मेटि एककै बूझै ॥
जीव मारि जीव प्रतिपारे । देखत जन्म आपनो हारे ॥
हाले करे निशाने घाऊ । जूझि परे तहां मन्मथ राऊ ॥
साखी--मन्मथ मरै न जीवै । जीवहि मरण न होय ॥
शून्य सनेही राम बिनु । चले अमनपौ खोय ॥ ८३ ॥

टीका गुरुमुख--चौपाई--क्षत्री नाम जीवको कहिये । जहां छै तीन उपाधी लहिये ॥ शब्द स्पर्श रूप रस गंधा । मन चित बुद्धि अहंकार सम्बंधा ॥ १ ॥ दोहा-क्षत्रिय धर्म जो बानी, औ पुनि विषय पांच ॥ तत्वमसी निर्णय करै, चौरासी को नांच ॥ २ ॥ नौ जने नौ कर्म को, करत हैं सहज सुभाव ॥ ताते जीव के बढत हैं, कठिन कर्म के दाव ॥ ३ ॥ जल परमाने माछरी, कुल परमाने सुद्ध ॥ जाको जैसा गुरु मिला, ताको तैसी बुद्ध ॥ ४ ॥ क्षत्री सोई जानिये, जूझै कुटुम मँझार ॥ पांचो विषय मेटिके, जीवका करै उबार ॥ ५ ॥ जीव मारि तन पालहीं, सो सब श्वान सियार ॥ अंत महा दुख पावहीं, चौरासी मँझार ॥ ६ ॥ जलद जाय जो करत हैं, जौन निशाने घाव ॥ जूझि गये तहां मनमथी, अंत सोई तन पाय ॥ ७ ॥

साखी—मनमथ कहिये कल्पना, औ मनमथ अनुमान ॥
सो तो मरे न जीवै, जीवहि मरणन जान ॥ ८ ॥
सनेही कहिये जीव को, शून्य कहीये ब्रह्म ॥
राम कहीये आत्मा, जो जीवहिको भर्म ॥ ९ ॥
सोई भरम जाने बिना, चले अपनपौ खोय ॥
आपुहि कल्पि अनुमान किय, आपुहि चला बिगोय ॥ १० ॥

रमैनी ८४.

ये जियरा तैं आपने दुखहि सम्हार।जेहि दुख व्यापिरहा संसार
माया मोह बंधा सब लोई । अल्प लाभ भूल गौ खोई ॥
मोर तोर में सबै विगुर्चा । जननी गर्भ वोद्रमा सूता ॥
बहुतक खेल खेलें बहु रूपा । जन भँवरा अस गये बहूता ॥
उपजि बिनशि फिर जुइनी आवै।सुख को लेश सपनेहु नहिंपावै
दुख संताप कष्ट बहु पावै । सो न मिला जो जरत बुझावै ॥
मोर तोर में जरे जग सारा । धृग स्वारथ झूठा हंकारा ॥
झूठी आस रहा जग लागी । इन्हते भागि बहुरि पुनि आगी॥
जेहि हितके राखेउ सब लोई। सों सयान बांचा नहिं कोई ॥
साखी—आपु आपु चेते नहीं । कहौं तो रुसवा होय ॥
कहहिं कबीर जो आपुन जागे।निरास्ती आस्ति नहोय॥८४॥

टीका गुरुमुख—दोहा—ये जियरा तैं आपने,दुखहि संभारहु भाय॥ जो झांइ अनुमान करी, जगमा रहेउ समाय ॥ १ ॥ प्रथमें झांइ भूलिया, मनमा भयो आनंद ॥ ता आनंदमा अंध भौ, समुझा नहीं यह फंद ॥ २ ॥ तहवां धीरज छूटिया, भौ आकाश अनुमान ॥दया

ते वायु शील ते तेज,विचारते जल जान ॥ ३ ॥सत्त सोइ धरती भई, झांई के गुण येह ॥ गुण प्रकृती सब पलटिया, उपजी कच्ची देह॥४॥ अब यह दुख संभारहु,जाते सकल उपाध ॥ इच्छाते नारि नारिते जग भौ, औ बानी कथी अगाध ॥५॥ ब्रह्माकेरी बात में, भूलि रहा सब लोय ॥ किंचित मुक्ती के कारणे, जीवहु आयो खोय ॥ ६ ॥ मुक्ती कहिये समाधि को, मुक्ती बोध को नाम ॥ मुक्ती कहिये स्त्री को, जाते खलित भौकाम ॥ ७॥ जगत ब्रह्म के बीच में, आतम निश्चय कीन्ह॥ पारख बिनु भूले सकल, गर्भ बास पुनि लीन्ह ॥ ८ ॥ बहु प्रकार ते खेलहीं, गुरुवाधरी बहु रूप॥जन भँवरा अस बहुतक, जाय परे भ्रमकूप९ उपजत बिनसत रहत हैं, फिर फिर जुइनी आय॥ सुखका लेश कहुँ जीयरा, सपनेहु नाहीं पाय॥ १० ॥ दुख संताप औ कष्ट बहू, निशिदिन जियरापाय ॥ सो पारख कहु ना मिला, जो जरतहिं लेत बुझाय ॥ ११ ॥ मोर तोर में जरत है, ब्रह्म जगतमंझार ॥ धृग धृग झूठा स्वारथ; झूठा है हंकार ॥ १२ ॥ झूठ ब्रह्म की आस में रहा सकल जग लाग ॥ एक आगते बांचिया, बहुरि नारि पुनि आग ॥ १३ ॥सोरठा--ज्ञानी पंडित दास, जे बड बड जग में भये ॥ सबै रहे गर्भबास, जिनकी प्रीति सब जगत को ॥ १४ ॥

टीका साखी--सोरठा--आपुहि आपु न जान, औ जाना सब ज्ञान को॥ बिनु पारख न ठिकान, कहां रहेगा जीव यह ॥ १५॥ काह कहौं समुझाय, कहौं तो रुसवा होत है॥ पारख नहीं थिति पाय, चले जीव सब भूल में ॥१६॥ कहां है ब्रह्म अनुमान, कहां आत्मा जगत कहां ॥ तोही ते सबै जान, बानी खानी कल्पना ॥ १७ ॥तूं जी चेतन जान, पारख बिना तोहि ठौर नहीं ॥ कहहिं कबीर

प्रमान, पारखमा थित होय रहू ॥१८॥ जो तूं आपन जान, नास्ती आस्ती होय नहीं ॥ परखो धोखा ज्ञान, पारख तेरो रूप है॥ १९॥

दोहा--भयो रमैनीको अंत । सुख साहब की दयाते ॥
पुनि बिनवों अब संत । शब्द बुझारथ कारणे ॥ २ ॥

इति रमैनी टीकासहित गुरुकी दयासे सम्पूर्ण ॥

दया गुरुकी।

अथ लिख्यते शब्द बुझार्थ।

प्रथम अनुसार।

शब्द १.

संतो भक्ति सतोगुर आनी।

नारी एक पुरुष दुइ जाया। बूझो पंडित ज्ञानी ॥
पाहन फोरि गंग एक निकरी। चहुं दिश पानी पानी ॥
तेहि पानी दुइ पर्वत बूडे। दरिया लहर समानी ॥
उडि माखी तरवर को लागी। बोले एकै बानी ॥
वह माखी को माखा नाहीं। गर्भ रहा बिनु पानी ॥
नारी सकल पुरुष वै खाये। ताते रहै अकेला ॥
कहहिं कबीर जो अबकी बूझै। सोई गुरु हम चेला ॥ १ ॥

टीकागुरुमुख—दोहा—संतो कहिये जीवको, संतो शांति स्वरूप॥ सं ो कहिये श्रोता, जो निवारत रूप ॥ १ ॥ भक्ती कहिये भावना, भक्ती बानी नाम ॥ भक्ती कहिये ईस्त्री, जाते उपजत काम ॥ २॥सतो गुरु ब्रह्माको कही, जो जानत हैं वेद ॥ सतोगुरु गुरुवनको कही,- जो जग में करत निषेद ॥ ३ ॥ नारी कहिये बानी को, जिन सब जगभरवाय॥नारी कहिये इस्त्री को, जिन भोंदि सकल जग खाय ॥ ४ ॥ हिन्दु तुरुक दो पुरुष हैं, नारी एकै आय ॥ पंडित ब्रह्मा को कहिये, ज्ञानी शंभु कहाय ॥ ५ ॥ पाहन मन प्रेम गंग, पानी बानी जान ॥ दोऊ दीन दोऊ पर्वत, दरिया ब्रह्म बखान ॥ ६ ॥ लहर जीव माखी

बानी, तरवर देह कहाय ॥ भाखा ब्रह्म गर्भ अनुमान, पानी बानि लखाय ॥ ७ ॥ नारीखानी इस्त्री, पुरुष सकल जिवखाय ॥ ताते गुरुपद भिन्न है, प्रत्यक्ष दियो लखाय ॥८॥ कहहिं कबीर यह बूझि हैं, सोई गुरू कहाय ॥ हम हंता संसार है, सो सब चेला आय ॥९॥१॥

शब्द २.

संतो जागत नींद ना कीजै।

काल न खाय कलप नहिं व्यापै। देह जरा नहिं छीजै ॥
उलटी गंग समुद्रहि सोखै। शशि औ सूरहि ग्रासै ॥
नौ ग्रह मारि रोगिया बैठो। जलमें बिम्ब प्रकासै ॥
बिनु चरणन को दुहुँ दिशि धावै। बिनु लोचन जग सूझै ॥
संशय उलटि सिंघ को ग्रासै। ई अचरज कोइ बूझै ॥
औंधे घड़ा नहीं जल बूड़े। सीधे सों जल भरिया ॥
जेहि कारण नर भिन्न भिन्न करें। सो गुरु प्रसादे तरिया ॥
बैठि गुफामें सब जग देखै। बाहर किछुउ न सूझै ॥
उलटा बाण पारधिहि लागे। सूरा होय सो बूझै ॥
गायन कहै कबहूं नहिं गावै। अनबोला नित गावै ॥
नटवट बाजा पेखनी पेखै। अनहद हेत बढ़ावै ॥
कथनी बदनी निजुके जोवै। ई सब अकथ कहानी ॥
धरती उलटि अकाशहि बेधै। ई पुरुषनकी बानी ॥
बिना पियाला अमृत अँचवै। नदी नीर भरि राखै ॥
कहैं कबीर सो युग युग जीवै। जो राम सुधारस चाखै ॥२॥

टीका गुरुमुख—जागृती गुरू कहते हैं कि जीव तू चैतन्य है चैतन्य कहिये जो स्वप्न सुषुप्ती ज्ञान विज्ञान दुःख सुख जानने वाला ऐसा

तू जागृत होके अचेत नींद मत करे ये अर्थ । तेरे को काल नहीं खाता औ कल्पना नहीं व्यापती, क्योंकि तू चैतन्य है और काल कल्पना आदि सब जड है सो जड तेरे को कैसे खायगा । तू अचेत मत होय । तू तो चैतन्य और तेरी देह जो कहिये स्वरूप जो पारख है सो भी जरा मरणसे रहित है सो तू अपने स्वरूप में ठहर और सब को परख । ये अर्थ । गंगा कहिये बानी को, सो बानी नाना प्रकार की तेरेसे पैदा हुई फिर उलटिके तेरेको सोखने लगी सो तू समझ । शशी कहिये योगी, सूर कहिये ज्ञानी, इस प्रकारसे कहीं ज्ञान दृढाया और कहीं योग दृढाया और दोनों को, भ्रमाया । जहाँ योग दृढाया, तहाँ चंद्र सूर्य दोऊ खैंच के नौ द्वारा मूंद के ब्रह्म रोग में ग्रसित हुआ । बैठ के ध्यान लगाया तब देहमें एक प्रतिबिम्ब प्रकाश हुआ सो ता प्रतिबिम्ब का प्रकाश कर्त्ता प्रतिबिम्बमें मग्न हुआ सो भी धोखा । और जहाँ ज्ञान दृढाया तहाँ श्रवण मनन करके, पंच विषय अंतःकरण-चतुष्टय ये नवोंका निदिध्यासन करके साक्षात्कार जाना कि मैं आत्माहूं तब जीवमें आनंद पैदा हुवा और वो आनंद में भूला । इस प्रकारसे तेरे में विकार पैदा होता है और तेरे को खाता है सो तू गाफिल मत होय। ये अर्थ । विनु चरणनकी कल्पना, सो कल्पना दशो दिशा में दौरतीहै फिर नाना प्रकारका अनुमान करके आनंद होता है आँखें मूंद के बोलता है कि सब जगत् मेरे को आत्मा सूझता है और प्रत्यक्ष अनुमान में अंधा हुआ है । संशय कहिये बानीको, सिंह कहिये जीव को। सो संशय इस जीवसे पैदा होती है और फिर इस जीव को घेरती है । उलटके इसकी कल्पना इसी को बंधन होती है ये आश्चर्य जानना । ये अर्थ । औंधा घडा कहिये ब्रह्म सो कदही जीव में बूडता नहीं क्योंकि ब्रह्म तो जीव-का अनुमान है इसवास्ते जीव ही अनुमान में बूडा औ घट घट में भरा तब बोलने लगा कि जिस वास्ते सबसे न्यारा ईश्वर, न्यारा ब्रह्म बोलते

थे, सो गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरु महेश इनके प्रसाद से वेदांत अनुभव से जाना कि एक आत्मा अद्वैत एकरस सदा निरंतर है । भँवरगुफामें अनुमान कर करके समाधी में जानत है कि एक आत्मा है, और ज्ञान गफा में श्रवन मनन निदिध्यासन करिके जानता है कि एक आत्मा सत्य है और बाहार तो अनेक मालूम देता है तब कछु मालूम नहीं भया, तब कहा कि जैसा का तैसा पूर्ण है इस प्रकार से निश्चय किया, देखो हे संतो इसी का अनुमान इसी को लगता है इस की तर्क उलट के इसीको लगी । ये अर्थ । औ पारधी कहिये ज्ञानी, बानी कहिये ज्ञान सो जिससे ज्ञान हुवा उसी को उलट के लगा औ बोधमें निश्चय किया बिना पारख जो कोई पारखी होय सो बूझै । ये अर्थ। गायन कहिये बानी सो सब बानी को कहने वाला जीव, इस जीव को कोई नहीं गावता, अब अनबोला जो अनुमान ताको जगत नित गाता है। नटवट कहिये चौरासी आसन सोभी जीव की कल्पना, बाजा कहिये दशनाद अनहद सो भी जीव की कल्पना, पेखनी कहिये दश मुद्रा सो भी, जीव की कल्पना, अनहद कहिये ब्रह्म, ब्रह्म कहिये अनुमान तामें ये जीव हेत बढाता है । कथनी कहिये बानी को, सो धोखे को यह निश्चय कर करके जानता है सो सत्य नहीं सब मिथ्या बानी बंधन है। जीव की कल्पना । ये अर्थ । पुरुष कहिये सनकादि नारदादि शौन-कादि व्यासादि जिनकी व बानी सुनि सुनि धरती के जीव आकाश को सुरति लगावते हैं यह आश्चर्य जैसा कोई एक अंधा बिना प्याला मन से कल्पिके कल्पना का पानी पीता है औ नदीमें पानी भरा है सो नहीं लेता । अथवा जैसा कोई एक गाफिल रस्ता चला जाता है औ उसके गोदीमें खांडके लड्डू हैं औ उसको भूख लगी सो मन के लड्डू खाता है तो भूँख कैसे जायगी इसवास्ते तू पारखमें स्थित हो

औ सब की परख । ये अर्थ ।मायामुख—गुरुवा लोग बोलते हैं कि सब में रमा है सो राम, इस को सुनके, श्रवण मनन निदिध्यासन करके जिन्हों ने जाना सो युग युग अमर हुआ, जिनने मैं आत्मा ऐसा अमृत पिया । ये अर्थ ॥ २ ॥

शब्द ३.

संतो घर में झगरा भारी ।

रातिदिवस मिलि उठि उठि लागे । पांच ढोटा एक नारी ॥
न्यारो न्यारो भोजन चाहैं । पांचों अधिक सवादी ॥
कोई काहु का हटका न मानैं । आपुहि आप मुरादी ॥
दुर्मति केर दोहागिन मेटै । ढोटेहि चाप चपेरै ॥
कहैं कबीर सोई जन मेरा । जो घर की रारि निबेरै ॥

टीकागुरुमुख—हे जीव ये घरमें जो बडा झगडा मचा है सो तू परख रात दिवस उठ उठके उपाधी लगती है जीवको पांच तत्व औ एक वानी न्यारा न्यारा भोजन चाहते हैं ।आकाश शब्द चाहता है वायु स्पर्श चाहता है, तेज रूप चाहता है, जल रस चाहता है, धरती गंध चाहती है, औ बानी तो जीवको शासने चाहती है इस प्रकारसे पांचों बडे स्वादी हैं कोई किसीका कहा मानता नहीं आपही आप मुख्त्यार हैं सो तू इनमें मत फँसे परखके न्यारा हो दुरमति कहिये ब्रह्मा आदि गुरुवा जिनकी मति सुन के जीव दूर हुआ इनकी बानी को चीन्हके मेटे पांचों विषयन के वश न होय परखै, सो जन पारखी पारखरूप । ये अर्थ ॥ ३ ॥

शब्द ४.

संतो देखत जग बौराना ।

सांच कहौं तो मारन धावै । झूठे जग पतियाना ॥

नेमी देखा धर्मी देखा । प्रात करे अस्नाना ॥
आतम मारि पषाणहि पूजे । उनमें किछउ न ज्ञाना ॥
बहुतक देखा पीर औलिया । पढे कितेब कुराना ॥
कै मुरीद तदबीर बतावैं । उन में उहै जोज्ञाना ॥
आसन मारि डिंभ धर बैठे । मनःमें बहुत गुमाना ॥
पीतर पाथर पूजन लागे । तीरथ गर्भ भुलाना ॥
टोपी पहिरे माला पहिरे । छाप तिलक अनुमाना ॥
साखी शब्दे गावत भूले । आतम खबरि न जाना ॥
हिन्दू कहै मोहि रामपियारा। तुरुक कहै रहिमाना ॥
आपुसमें दोउ लरि लरि मूये । मर्म न काहू जाना ॥
घर घर मंत्र देत फिरतु हैं । महिमा के अभिमाना ॥
गुरु सहित शिष्य सब बूडे । अंतकाल पछताना ॥
कहहिं कबीर सुनो हो संतो। ई सब भरम भुलाना ॥
केतिक कहा कहा नहिं माने। सहजे सहज समाना ॥

टीका गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि संतो देखत जग बौराना देखते हैं कि सब कल्पना मानुषरूपसे उठी औ वही कल्पना का खोज करते करते सब मर गये अब उनकी बातें सुन सुनके दिवाना हुआ । ये अर्थ ।सांच जीव कहौं तो मारन धावता है औ झूठे धोखे में जगत ने प्रतीत किया नेमी धर्मी जो नेम धर्मके करनेवाले प्रातःस्नान करते हैं औ आत्मा को कष्ट देते हैं, पाषाण पूजन करते हैं,उनमें कछु ज्ञान नहीं अज्ञान है । ये अर्थ । बहुतक पीर औलिया देखे जो किताब कुरान पढते हैं, चेला करके नाना प्रकार की हिकमतें बताते हैं उनमें वही ज्ञान है धोखा । ये अर्थ । कोई आसन मारि डिंभःधरे के बैठे; औ मन में बहुत अभिमान किया,पीतर पाथर पूजने लगा औ तीरथ गर्भ में

भूला। कोई एक टोपी पहिरे, माला पहिरे औ छाप तिलक लगायके अनुमान में परे। साखी शब्द गाने में भूले लेकिन आत्मा मेरा अनुमान ये खबर परी नहीं। ये अर्थ। हिंदू कहैं मोहि राम पियारा औ मुसलमान कहैं रहिमाना, आपुस में दोउ लरि लरि मूये परंतु ये धोखे का मर्म किसी ने जाना नहीं। घर घर जो मंत्र दीक्षा देते हैं, महिमा के अभिमान से जीवन को बन्धन करते हैं, सो गुरु सहित शिष्य सब भ्रम में बूडे, अंत में स्थिति न मिली ताते बहुत पछतावेंगे। जो अनुमान सब ने किया उन्हकी स्थित्ति कहां है, हे जीव सुनो ई सब भ्रम में भूले, मैंने केता कहा कोई कहा मानता नहीं सब धोखे में शमाये ये अर्थ ॥ ४ ॥

शब्द ५.

संतो अचरज एक भौ भारी। कहौं तो को पतियाई ॥
एके पुरुष एक है नारी। ताकर करहु बिचारा ॥
एके अंड सकल चौरासी। भरम भुला संसारा ॥
एके नारी जाल पसारा। जग में भया अँदेशा ॥
खोजत खोजत काहु अंत न पाया। ब्रह्मा विष्णु महेशा ॥
नाग फांस लीये घट भीतर। मूसनि सब जग झारी ॥
ज्ञान खडा बिनु सब जग जूझैं। पकरि न काहू पाई ॥
आपै मूल फूल फुलवारी। आपहि चुनि चुनि खाई ॥
कहहिं कबीर तेई जन उबरे। जेहि गुरु लियो जगाई ॥५॥

टीका गुरुमुख--गुरु कहते हैं कि हे संतो! ये बडा आश्चर्य हुवा निर्णय कहौं तो कोई पतियाता नहीं। एक पुरुष जो जीव रूप औ एक नारी जो स्त्री है इसके ऊपर और कोई नहीं यह विचार करो। ये अर्थ। एकै कहिये जीव अंड कहिये झांई जामें व्यापक होके सकल चौरासी

पैदा किया औ संसार नाना प्रकार के भ्रममें भूला । एक नारी कहिये बानी जो कल्पना कर करके जाल पसारा । फिर वही बानी सुन सुनके जगत् में अंदेशा भया कि कोई कर्ता दूसरा है तब सब मिल के खोजने लगे, सो खोजते खोजते किसी ने अंत पाया नहीं ब्रह्मा विष्णु महेश आदि हैं । तब कहा कि हमहीं ब्रह्म । ये अर्थ । नाग-फांस कहिये बानी को, सो नाना प्रकार की कल्पना करि के बानी बनाई औ सब जगत को झारि के लूटा । इन्ह के ज्ञानमें सब जगत मारा गया बिना तरवार परंतु ये बानी के अनुमान को कोई पकारि नहीं पाया, ये अर्थ । आपै ब्रह्म बना औ फूला फुलवारी जगत पैदा किया, फिर आपहि चुनि चुनि खाने लगा । गुरु कहते हैं कि हे जीव, वही जीव उबरे जिनको पारख गुरु ने परखाया सब धोखा, उसकी स्थिति पारख पर भई । ये अर्थ ।। ५ ।।

शब्द ६.

संतो अचरज एक भौ भारी । पु धइल महतारी ॥
पिता के संग भई बावरी । कन्या रहल कुँवारी ॥
खसमहि छाडि ससुर सँग गौनी । सो किन लेहु विचारी ॥
भाई के संग सासुरे गौनी । सासुहि सावत दीन्हा ॥
ननँद भौज परपंच रच्यो है । मोर नाम कहि लीन्हा ॥
समधी के संग नाहीं आई । सहज भई घरबारी ॥
कहहिं कबीर सुनो हो संतो । पुरुप जन्म भौ नारी ॥६॥

टीका गुरुमुख—हे संतो ! ये बडा आश्चर्य है जो स्त्री से पुरुष पैदा हुवा और फिर स्त्री को जाय के धरा । क्या इसको मालूम नहीं जो मैं स्त्री से पैदा हुवा औ मेरी माता स्त्री थी, अब मैं किस को जाय के पकडता हौं । ये अर्थ । पिता कहिये झांई, झाई कहिये जहांसे सबकी उत्पत्ति भई

सोई झांई आत्मा सोई झांई ब्रह्म । कन्या कहिये जीव सो जीव ने दूसरा खसम अनुमाना उस झांई के संग दिवाना हुवा । दिवाना कहिये भक्ती जो भक्ती नारी कहाये और कोई पुरुष है ऐसा अनुमान करके भक्ती करने लगे । इस प्रकार से बहुत भक्ती करके खोजते खोजते अंत नहीं पाया तब कहा कि ब्रह्म बे अंत है याते कन्या बिना खसम की रहि गइ । ब अंत कहि के खसम छोडा औ गुरुवा लोगन के संग में गया फिर ज्ञान विचार करने लगा । यह जीव जब कहीं अंत नहीं पाया तब बडे भय को प्राप्त हुवा कि मेरी कौन गती होयगी । ऐसे भय के संग जब गुरुवा लोगों के पास गया तब गुरुवा लोगोंने एक सावत दीन्हा । सावत कहिये उपदेश । उपदेश कहिये बोध फिर उस बोध का अनुभव करके ननँद भौज परपंच रच्यो है, ननँद कहिये गुरुवा जासो नेह लगा, भौज कहिये चेला जो भय को प्राप्त हुवा, परपंच कहिये बानी जासे सब कोई धोखा में परा ॥ ये अर्थ । फिर अनुमान करके बोला कि मोर नाम, नाम कहिये कल्पना । समधी कहिये ब्रह्मज्ञानी, नाहीं कहिये जीव, सो जीव ब्रह्मज्ञानी के संग में आय के सहज समाधी में स्थिति पाई । सहज समाधी कहिये अनुमान जो सहजै धोखे में मग्न हुवा । ये अर्थ । जब मग्न हुआ तब नाना प्रकार से अनुमान करके ब्रह्मपदको ठहराने लगा सो पद कहां है हे जीव सो तेरी झांई । सुनो हे संतो ! पुरुष जीव था सो दूसरा पुरुष अनुमान करके आप नारी हुवा । ये अर्थ ॥ ६ ॥

शब्द ७.

संतो कहौं तों को पतियाई । झूठ कहत सांच बनि याई ॥
लौके रतन अबेध अमोलिक । नहिं गाहक नहिं सांई ॥
चिमिक चिमिक चिमके दृग दुहुं दिश । अर्ब रहा छिरी आई ॥

आपे गुरू कृपा कछु कीन्हा । निर्गुण अलख लखाई ॥
सहज समाधी उनमनि जागे । सहज मिले रघुराई ॥
जहाँ जहाँ देखो तहाँ तहाँ सोई । मन मानिक बेधो हीरा ॥
परमतत्त्व गुरु सो पावै । कहे उपदेश कबीर ॥ ७ ॥

टीकागुरुमुख—गुरु कहते हैं कि हे संतो ! गुरुवा लोगों ने जो झूठा अनुमान बताया सोई जीव को सांच हुआ औ प्रतीत किया; सांची पारख बताये तो कोई पतियाता नहीं । ये अर्थ । जैसे कोई अनुमानसे अपने मन में एक हीरा बनाया । फिर उस हीरा को अपनी बुद्धि से निश्चय करके बोलता है कि; हीरा अबेध है, अमोल है ऐसा बोलके मग्न होता है परंतु मनके लड्डूसे कहीं भूख जाती है ? औ मनके रत्न की कहीं माला बनती है । हे संतो ! जिन्हने मन से अनुमान ग्रहण किया सोभी झूठा औ अनुमान भी झूठा । ये अर्थ । जब गुरुवा लोगों के शरण में ये जीव गया तब उन्होंने एक अलक्ष मुद्रा बताई तब हे जीव, आंखि की पलक न लगे ऐसी पूर्ण समदृष्टि से देखने लगा । तब नेत्रपर पित्त चढा औ चकचक चिम चिम नाना प्रकार के दृग दृश्य होने लगे । होते होते नेत्रमें मूर्छा छाय गई ये समाधी धोखा मिथ्या । जब समाधी छूटी तब जीव स्तुति करने लगा कि, आपही गुरु ने कछु कृपा करी सो निर्गुण अलख लखाया औ सहज समाधी उन्मनी में जगाया जासे सहज आनन्द को प्राप्त हुआ आत्मा परमात्मा की एकता भई । ये अर्थ । यह मायामुख अर्थ गुरुने दरसाया । गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि जहां जहां देखो तहां तहां सोई धोका छाय रहा है । जो मन से माना सो अनुमान में जीव बंधा औ अचेत होय रहा । औ गुरुवा लोग कहते हैं कि परमात्मा की प्राप्ति वेदांत अनुभवसे होती है । ये निश्चय ॥ ७ ॥

शब्द ८.

संतो आवै जाय सो माया।

है प्रतिपाल काल नहिं वाके। ना कहुं गया न आया ॥
का मकसूदर मच्छकच्छ नहोई। शंखासुर न संघारा ॥
है दयाल द्रोह नहिं वाके। कहहु कौन को मारा ॥
वै कर्ता नहिं बराह कहाये। धरणी धर्यो न भारा ॥
ई सब काम साहेब के नाहिं। झूठ कहैं संसारा ॥
खंभ फोरि जो बाहर होई। ताहि पतीजे सब कोई ॥
हरणाकुश नख बोद्र विदारा। सो कर्ता नहिं होई ॥
वामनरूप न बलि को याचै। जो याचै सो माया ॥
बिना विवेक सकल जग भरमे। माया जग भरमाया ॥
परशुराम क्षत्री नहिं मारे। ई छल माया कीन्हा ॥
सतगुरु भेद भक्ति नहिं जानै। जीवहि मिथ्या दीन्हा ॥
सिरजनहार न ब्याही सीता। जल पषाण नहिं बंधा ॥
वै रघुनाथ एककै सुमिरै। जो सुमिरै सो अंधा ॥
गोपी ग्वाल न गोकुल आया। कर्तै कंस न मारा ॥
है मेहरबान सबहिनको साहेब। ना जीता ना हारा ॥
वै कर्ता नहिं बौद्ध कहावै। नहीं असुर सहारा ॥
ज्ञानहीन कर्ता के भरमें। माया जग भरमाया ॥
वै कर्ता नहिं भये निकलंकी। नहिं कालिंगहि मारा ॥
ई छल बल सब माया कीन्हा। जत्त सत्त सब टारा ॥
दश अवतार ईश्वरी माया। कर्तांकै जिन पूजा ॥
कहहिं कबीर सुनो हो संतो। उपजै खपै सो दूजा ॥८॥

टीका गुरुमुख—हे संतो आवै जाय सो माया । जो पारख है सो उसका काल कदहीं नहीं । ना कहीं जाता है ना कहीं आता है। थीर पद है औ जो कर्ता है सो मानुषरूप, दश अवतार कर्ता न होय ब्रह्मा की बानी का भेद काहुको जान परा नहीं इसवास्ते सब धोखे में भरमे। औ दश अवतार माया, माया कहिये जो सब जीवों को बंधन देवै। जो बात वेदने ठहराई सो कहाँ है सब कल्पना । गुरु कहते हैं कि हे संतो ! जो पैदा होता औ नाश होता है सो कछु दूसरा पारख नहीं ये अर्थ ॥ ८ ॥

शब्द ९.

संतो बोले ते जग मारे ।
अन बोलेते कैसेक बनिहै । शब्दहि कोइ न विचारे ॥
पहिले जन्म पुत्र का भयेऊ । बाप जन्मिया पाछे ॥
बाप पूतकी एकै नारी । ई अचरज कोइ काछे ॥
दुंदुर राजा टीका बैठे । बिषहर करें खवासी ॥
श्वान बापुरा धरनिढाकनो । बिल्ली घर में दासी ॥
कार दुकार कार करि आगे । बैल करें पटवारी ॥
कहहिं कबीर सुनो हो संतो । भैंसे न्याव निबेरी ॥ ९ ॥

टीका गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि हे संतो ! प्रथम आरंभ में जो ब्रह्मादि सनकादि बडे बडे ज्ञान निर्णय करिके बोले सो सब अनुमान में मारे गये । ये अर्थ । जब बोलते थके औ बुद्धि ना चली तब अनुमान किया कि मैं सर्व साक्षी अबोल आत्मा । तो ये बोला ना भया बानी ना भया, तो बानी बोलका साक्षी । तब ये अनबोला आत्मा कैसे होगा । अनबोल: अनुमान, इस शब्द को कोई विचार नहीं करता धोखे में जाता है। ये अर्थ। पुत्र कहिये जीवको सो पहिले

पैदा भया औ बाप कहिये ब्रह्म सो पीछे पैदा हुआ जब जीवने अनुमान किया तब । फिर बोला कि जीव औ ब्रह्म दोनों इस जगत् में हैं ये आश्चर्य । जो कहते हैं कि पिंड में जीव औ ब्रह्मांड में ब्रह्म ये आश्चर्य कोई बूझै । औ पुत्र कहिये मानुष, बाप कहिये ब्रह्मा, सो मानुष पहिले पैदा हुआ पीछे ब्रह्मा पैदा हुआ ब्रह्माभी स्त्री से पैदा हुआ औ मानुष भी स्त्री से पैदा होता है ये आश्चर्य । औ पुत्र कहिये ब्रह्मा औ पिता कहिये विष्णु, सो ब्रह्मा पहिले पैदा हुआ पीछे विष्णु पैदा हुआ । एक अष्टंगीसे । ये अर्थ । दुंदुर कहिये वेद, राजा कहिये ब्रह्म, जो वेदने दृढाया सोई टीका बैठा गद्दी बैठा, यह सब को निश्चय हुआ तब गुरुवा लोग सब गुलामी करने लगे । श्वान कहिये ॐकार ॐकार कहिये शब्द को, सो शब्दका भ्रम जीव पर ढांका भ्रमाये । ये अर्थ। बिल्ली कहिये बानीको, सो नाना प्रकार की बानी घट घट में पैठी । तब ये जीव दूसरा पुरुष अनुमान करके धोखे का दास बना। कार कहिये क्षर, दुकार कहिये अक्षर; सो क्षर अक्षर सो रहित निः अक्षर । इस प्रकार से गुरुवा लोगोंने सबको दृढाया। सो निःअक्षर कहां है सो तो जीव का अनुमान जानिये । जब अक्षर नहीं आया तब अक्षरहीते निःअक्षर बोला । नाना प्रकार के भय लगाय के गुरुवा लोगों ने ये न्याय निबेरा कि सब अक्षर का जानने वाला निःअक्षर है । ये अर्थ ॥ ९ ॥

शब्द १०.

संतो राह दुनों हम दीठा ।
हिन्दू तुरुक हटा नहिं माने । स्वाद सबन को मीठा ॥
हींदू व्रत एकादशि साधे । दूध सिंघारा सेती ॥
अन्न को त्यागे मन नहिं हटके । पारन करे सगौती ॥
तुरक रोजा निमाज गुजारे । बिसमिल बांग पुकारे ॥

इन्हको बिहिसे कहां ते होवै । जो सांझै मुरगी मारै ॥
हिन्दू की दया मेहर तुर्कनकी । दोनों घटसे त्यागी ॥
ये हलाल वे झटका मारे । आग दुनो घर लागी ॥
हिन्दु तुरुक की एक राह है । सतगुरु सोइ लखाई ॥
कहहिं कबीर सुनो हो संतो । राम न कहूं खुदाई ॥ १० ॥

टीका गुरुमुख–गुरु कहते हैं कि हे संतो ! दोनों राह हम देखा जो हिन्दू तुरुक हटा नहिं मानते, अपना अपना स्वाद सबको मीठा लगा । हिन्दू एकादशी व्रत साधते हैं अन्नको त्याग करते हैं मनको नहीं हटकते तो दश इन्द्री औ मन को स्थिर करै सो एकादशी । ये अर्थ । तुरुक रोजा निमाज करते हैं और सब मिलके बांग देते हैं, सांझको मुरगी मारते हैं तो इनकी मोक्ष कहांसे होयगी दया सोई मोक्ष । ये अर्थ । हिन्दू तुर्क दोनों ने दया मेहर छोड़ी । और कोई छुरी से औ कोई तरवारसे गरा काटते हैं इस प्रकार दोनों घरमें आगि लगी । हिन्दू तुरुक की एक राह है जो ब्रह्मा औ महम्मदने बताई । ये अर्थ । गुरु कहते हैं कि हे संतो न कहुं राम हैं न कहुं खुदा है सब धोखा है ये अर्थ ॥ १० ॥

शब्द ११.

संतो पांडे निपुण कसाई ।
बकरा मारि भैंसापर धावै । दिल में दर्द न आई ॥
करि अस्नान तिलक दै बैठे । बिधिसो देवि पुजाई ॥
आतममर पलकमें बिनसै । रुधिर की नदी बहाई ॥
अति पुनीत उँचे कुल कहिये । सभा माहिं अधिकाई ॥
इन्हते दीक्षा सब कोई मांगे । हँसि आवै मोहि भाई ॥
पाप कटनकी कथा सुनावैं । कर्म करावै नीचा ॥

हम तो दोनों परस्पर देखा । यम लाये हैं धोखा ॥
गाय बधेते तुरुक कहिये । इन्हते वै क्या छोटे ॥
कहहिं कबीर सुनो हो संतो । कलिमा ब्राह्मण खोटे ॥ ११ ॥

टीका गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि, हे संतो ! पंडित पक्के कसाई । बकरा मारिके देवीका पूजन करावै, कसाई का कर्म करे सोई कसाई। इसवास्ते हिन्दू तुरुक दोनों झूठे हैं ।।

शब्द १२.

संतो मते मातु जन रंगी।

पियत पियाला प्रेम सुधारस । मतवाले सतसंगी ॥
अर्धे ऊर्धे भाठी रोपिनी । लेत कसारस गारी ॥
मूँदे मदन काटि कर्म कस्मल । संतति चुवत अगारी ॥
गोरखदत्त वशिष्ठ व्यास कपि । नारद शुक मुनि जोरी ॥
बैठे सभा शंभु सनकादिक । तहाँ फिरै अधर कटोरी ॥
अंबरीष औ याज्ञ जनक जड़ । शेष सहस्र मुख फाना ॥
कहँलों गनौं अनंत कोटिलों । अमहल महल दिवाना ॥
ध्रुव प्रह्लाद बिभीषण माते । माती शेवरी नारी ।
निर्गुण ब्रह्म माते वृन्दावन । अजहूँ लागु खुमारी ॥
सुरनर मुनियति पीरऔलिया । जिनरें पिया तिन्ह जाना ॥
कहैं कबीर गूँगे की शक्कर । क्यों कर करे बखाना ॥ १२ ॥

टीका गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि, हे संतो ! ये सब नाना प्रकार की मति में माते । योगी योगके रंग में रँगा, ज्ञानी ज्ञान के रंग में रँगा औ भक्त प्रेमलक्षणा में रँगा जो बानी सुनी सो अनुमान बाँधा जैसी बानी सुनी तैसी मूर्ति अपने मनसे बनाई औ उसको पुरुषपना दिया, आपने स्त्रीभावं लेके आशकी की, औ प्रेम में मग्न हुवा । इस

प्रकार अपने अपने सतसंग में सब मतवाले हुये। ये अर्थ। अर्ध कहिये पिंड तामें जीव ऊर्ध कहिये ब्रह्माण्ड तामें ब्रह्म, इस प्रकार से दो जगह रोपत किया ब्रह्मा की बानीने औ गुरुवा लोगोंने। सो सब बड़े बड़े जीव उस बानी का बिलछान करने लगे औ उसका रस औ अनुभव सो पीने लगे औ आनंद में मूँदते भये सब कर्म कचरा काटि के शुद्ध चैतन्य हुये। आगे संतति चूवने लगी, अनुभव बानी बनाय के जगत में उपदेश करने लगे। ये अर्थ। गोरखदत्त वशिष्ठ व्यास हनुमान नारद शुकदेव सनकादि येते एक मिलि सतसंग महादेवकी सभा में बैठ के करते हैं और अनुभव की तर्क उहां फिरती है अनुमान की कटोरी। अंबरीष याज्ञवल्क्य जनक विदेही जड़भरत शेष आदि सहस्र मुखसे विचार करते करते सब धोखे में दिवाने हुये। गुरु कहते हैं कि कहां लौं गनौं अनंत कोटि लौं सब अनुमान में दिवाने हुये। ये अर्थ। ध्रुव प्रहलाद विभीषण शबरी आदि प्रेम लक्षण भक्ती में मस्त हुये औ योगी लोग निर्गुण ब्रह्म होय के संसार में मस्त हुये। वृन्दावन कहिये संसार, सो अबहीं तक खुमारी छूटी नहीं गाफिली छुटी नहीं। ये अर्थ। मायामुख-माया कहती है कि सुर नर मुनि यती पीर औलिया जिन्होंने प्याला पिया तिन्होंने जाना कि एक ब्रह्म सत्य औ सब मिथ्या। जिन्होंने जाना सो मौन हुये। जैसे गुंगे को शक्कर खिलाई औ उसका स्वाद पूछो तो ँसे कहेगा इस प्रकार से समाधी में मौन हुवा ये अर्थ॥ १२॥

शब्द १३.

राम तेरी माया दुंद मचावै॥

गति मति वाकी समुझि परे नहिं। सुर नर मुनिहि नचावै॥
क्या सेमर तेरि शाखा बढ़ाये। फूल अनूपम बानी॥

केतक चातक लागि रहे हैं। त रूवा उडानी ॥
कहा खजूर बडाई तेरी । फल कोई नहिं पावे ॥
ग्रीषम ऋतु जब आनि तुलानी। तेरी छाया काम न आवे ॥
आपन चतुर औरको सिखवैं। कनक कामिनी सयानी ॥
कहहिं कबीर सुनो हो संतो। राम चरण ऋतु मानी॥ १३॥

टीका गुरुमुख–राम कहिये जो नाना योनिम रमा औ नाना मति में प्रकाश हुआ सो जीव । गुरु कहतेहैं कि हे जीव ! तेरी कल्पना ने बडी दुन्द मचाई । ये अर्थ । वो कल्पनासे जो जो मत बनी औ जो जी बानी बनी सो काहू को समुझ परी नहीं, कल्पनाने सुर नर मुनी सबको नचाया । ये अर्थ । सेमर कहिये माया, शाखा कहिये पंडित सो गुरु कहते हैं कि हे कल्पना ! तेरी बानी बहुत बढी औ पंडित लोगोंने बहुत दढाई,पुष्पीत वाच। जा बानीके सुनेसे केतके जीव आशा बंध होय रहे आगे कछु प्राप्ती न भई । ये अर्थ । जैसे सेमर का वृक्ष अच्छा देखकर औ बडा फूल देखके तोतेने सेवन किया कि मेरे को कछु फल मिलेगा सो उहां कछु प्राप्ती नहीं भई । ये अर्थ। क्या बानी बडाई तेरी,जो अर्थ धर्म काम औ मोक्ष यह चार फल बताये सो काहू ने भी नहीं पाये और जो तेरा आसरा किया सो भी जब मौत आयके तुलायगी तब कामनहीं आने का, आशा बासा सब छूट जायगा। ये अर्थ। गुरुवा लोग अपनी चतुराई औरनको सिखातेहैं बहुत प्रकार की बानी द्रव्य पैदा करने की औ उपदेश करने की औ वशीकरण मारण जारण उच्चाटन आदि सब विद्या बनाते हैं। सो गुरु कहते हैं कि हे संतो ई सब मिथ्या कहा है, अनुमान की बानी ये जीवने मान लिया। ये अर्थ॥ १३ ॥

शब्द १४.

रामुरा संशय गांठि छूटै । ताते पकरि पकरि यम लूटै ॥
होय कुलीन मिस्कीन कहावै। तूं योगी संन्यासी ॥
ज्ञानी गुणी शूर कवि दाता । ये मति किनहु न नासी ॥
स्मृति वेद पुराण पढै सब । अनुभव भाव न दरसे ॥
लोह हिरण्य होय धौं कैसे । जो नहिं पारस परसे ॥
जियत न तरेहु मुये का तरिहो। जियतहि जो न तरे ॥
गहिपरतीतकीन्हजिनजासों। सोई तहां अमरे ॥
जो कछु कियेउज्ञान अज्ञाना। सोई समुझ सयाना ॥
कहहिंकबीरतासोंक्याकहिये। जो देखत दृष्टि भुलाना ॥१४॥

टीका गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि हे जीव जो गुरुवा लोगोंने उपदेश किया सो अनुमानकी गांठी छूटती नहीं इसवास्ते फिर फिर गर्भ बासमें आता है औ फिर फिर गुरुवा लोग पकरि पकरिके तेरेको लूटते हैं। ये अर्थ। अरे तूहि कहीं ब्राह्मण हुआ और तूही कहीं मिस्कीन भक्त हुआ और तूहीकहीं योगी हुआ और तूही कहीं संन्यासी हुआ ज्ञानी हुआ, और कहीं गुणी हुआ, कहीं शूर हुआ और तूही कहीं कवीश्वर हुआ, कहीं दाता हुआ परंतु ये धोखा किनहूं नाश किया नहीं । ये अर्थ। कुलीन कहिये ब्रह्मा, मिस्किन कहिये विष्णु, योगी कहिये महादेव, संन्यासी कहिये दत्तात्रेय, ज्ञानी कहिये सनक दि, गुणी कहियेनारदादि शूर कहिये भीषमादि, कवी कहिये व्यासादि, दाता कहिये कर्ण आदि येते सब हुये पर अनुमान किसीसे नाश नहीं भया। ये अर्थ। स्मृति वेद पुराण पढते हैं, सब अनुभव भावना करते हैं परंतु सब पशु, मानुष कहांसे होय पारख पाये बिना। ये अर्थ । जियत न तरेहु मूये क्या तरीहो जायते अनुमान में बंध भये मुये कहां से छूटे गये। अर्थ। सो जो

जीवने जहाँ पकडिके प्रतीत किया सो तहाँ ही मरा । ये अर्थ । जो कुछ प्रथमारंभ में भूल की बानी बनाई सोई अब जीवने समझके निश्चय किया, सो निश्चय मिथ्या है । जो देखता है दृष्टि से कि जीव रूप से और कुछ नहीं और फिर भूलता है उससे क्या कहना ॥ १४ ॥

शब्द १५.

रामुरा चली बिन बनमा हो । घर छोडे जात जोलहाहो ॥
गज नौ गज दश गज उनइसकी । पुरिया एक तनाई ॥
सात सूत लौ गंड बहत्तर । पाट लागु अधिकाई ॥
तापट तूल तुले नहिंगजल अमाई । पसन सेर अढ़ाई ॥
तामें घटे बढे रतियो नहिं । करकच करे गहराई ॥
नित उठि बैठि खसम सो बरबस । तापर लागु तिहाई ॥
भींगी पुरिया काम न आवै । जोलहा चला रिसाई ॥
कहहिं कबीर सुनो हो संतो । जिन्ह यह सृष्टि बनाई ॥
छाड़ पसार राम भजु बौरे । भवसागर कठिनाई ॥ १५ ॥

टीका गुरुमुख—हे जीव ! यह माया गुरुवा लोग नाना प्रकारकी बानी पढि के औ कल्पना करिके संसार में दृढावने चले जाके पीछे ये जीव सब घर छोड के चले । ये अर्थ । अब कौन प्रकार के कल्पना करके बानी दृढाई सो सुनो । प्रथम एक अनुमान हुवा जो मेरा कर्ता कोई दूसरा है तब नाना प्रकार शब्द की कल्पना उठने लगी फिर उसका अर्थ मिलाय मिलाय के नौ व्याकरण बनाया । फिर शब्द का निश्चय करके चार वेद बनाया तामें निर्णय किया तीन पद का तत् त्वं असि, फिर छै शास्त्र बनाया । इस प्रकार से उनइसका एक ताना तनाया तामें सब जीव बंधा । फिर सोधन करने लगा कि पांच तत्त्व छठवां मन, सातवां जीव, नौ द्वार, बहत्तर कोठा येते से जो अधिक

है सो मैं आत्मा । ये अर्थ । फिर अनुभव पट बढा कि कहीं तौले से तूलता नहीं तब बेअंत कहा औ एक आत्मा ये निश्चय किया । तब सर्व व्यापक हुवा, पैसन सेर अढाई । ये अर्थ । तामें घटै बढै रतियो नहीं जैसे का तैसा न पाप न पुण्य, ना कर्म न धर्म करकच करे गहराइ पशुवत धर्म आचरण करने कगा । ये अर्थ । मैं आत्मानित्य हौं निरंतर हौं ऐसा मानके नाहक जबरदस्ती बंधन में परा । ता ऊपर त्रिपुटी लगी सत् चित् आनंद । ये अर्थ । जब त्रिपुटी लगी तब सर्व आपै ठहरा जब आपै ठहरा तब दूसरा भाव न ठहरा । जब दूसरा भाव न ठहरा तब दुख सुखका कारण आपुही रहा औ आवागमन में आप ही रहा । इस प्रकार से भींगी पुरिया काम न आव । नाना प्रकार की बानी में जब ये जीव भीजा तब असिपद हुआ, तत् त्वं दोनों एक हुवा जब दोनों एकही हुवा तब पूर्ववत् जैसे का तैसा रहा कुछ काम नहीं आया, एक दिन चोला छूट गया तब आप खिसियायके गर्भ बास को प्राप्त हुवा । ये अर्थ । गुरु कहते हैं कि हे जीव जो अनुमान करते हो सो कहाँ है । जो यह अनुमान करने वाला है उसीने सब सृष्टी बनाया । हे संतो सुनो जहां तक अनुमान कर्तव्य है सो सब छोडो आत्मा मान के दिवाने हुये सो भागो, परख के न्यारे होवो आत्माही भवसागर आत्माही सर्व बंधन है । ये अर्थ ॥ १५ ॥

शब्द १६.

रामुरा झींझी यंतर बाजै । कर चरण बिहूना नाचै ॥
कर बिनु बाजै सुनै श्रवण बिनु । श्रवण श्रोता सोई ॥
पा[illegible] सुबस सभा बिनु अवसर । बूझो मुनिजन लोई ॥
इन्द्रीबिनुभोगस्वादजिभ्याबिनु । अक्षय पिंड बिहूना ॥
जागत चोर मँदिर तहाँ मूसै । खसम अक्षत घर सूना ॥

बीज बिनुअकुर पेड बिनु तरिवर। बिनु फूले फल फरिया ॥
बांझ कि कोख पुत्र अवतरिया । बिनु पग तरिवर चढिया॥
मसिबिनुद्वाइतकलमबिनकागद । बिनु अक्षर सुधि होई ॥
सुधिबिनु सहज ज्ञान बिनु ज्ञाता ।कहहिं कबीर जनसोई॥ १६॥

टीका मायामुख--गुरुवा लोग कहते हैं कि हे जीव, इस शरीर में झीना नाद उठता है सो तुम सुनिके ब्रह्म पुरुष में मिलि रहो । ये अर्थ । हाथ पांव बिना नाच होता है नाना प्रकार के दृगादृश्य, सो तुम नेत्र उलट के ठहरके देखो। तहां हाथ बिना बाजा बजता है सो दोनों कान को ठेंठी देकर सुनो । सुनते सुनते गगन में मग्न हो, आप आपनपौ बिसार दे । ये अर्थ । ब्रह्म शुभ स्थान में पंच विषय औ अंतःकरण चतुष्टय नहीं । इस सभा बिना बडा आनंद है । ये अनुभव कोई मुनिजन योगीजन समुझेंगे । ये अर्थ । बिना इन्द्रिय वहाँ भोग है बिना जिभ्या वहाँ स्वाद है, रूप रेखा वहाँ कछु नहीं काया बिना अक्षय है । ये अर्थ । गुरुमुख--गुरु कहते हैं कि जीव जागृत होके अनुमान चोर घर लूटता है।आपहि खाविंद होय के शून्य में घर किया ये अर्थ । बीज बिनु अंकुर पेड बिनु तरिवर । गुरुवा लोग कहते हैं कि ब्रह्म शुद्ध चैतन्य, जहाँ जगत अंकुर नहीं, जहां अज्ञान का पेड़ नहीं, ऐसा निर्विकल्प सुखका वृक्षहै। जहाँ बिना बतलाये अनुभव होता है सहजै सहज । ये अर्थ । गुरु कहते हैं किये आश्चर्य ।जैसे कोई कहै कि बांझ के कोखि में पुत्र पैदा भया, बिना चरण झाड पर चढा, जैसा ये आश्चर्य मिथ्या ऐसा गुरुवालोगों का विचार । कि जैसा कोई एक धूपका मारा गर्मी से बहुत व्याकुल हुवा तब बिना पेड उसीने एक वृक्ष अनुमान किया और कहा क्या गहिरी छाया है सो धूप की गर्मी कसे जायगी ।अथवा जैसा कोई एक भूखा है बिना बीज एक वृक्ष

अनुमान करता है औ उसके फूलकाही ठिकाना नहीं तिस में बहुत फल लगा तब अपने मन से तोर खाता है सो भूख कैसे जायगी।जैसे बांझ पुत्र न्याय । ये अर्थ । मायामुख—गुरुवा लोग कहतेहैं कि बिना मसी, बिना द्वाइत, बिना कलम, बिना कागज,बिनाअक्षर,शुद्ध चैतन-न्यहै निःअक्षर । ये अर्थ । गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि बिना जीव जो धोखा में मग्न होता है सहजैं सहज सो कहाँ है बिना ज्ञान जो जान-ता है सो धोखा । ये अर्थ ॥ १६ ॥

शब्द १७.

रामहि गावै औरहि समुझावै । हरि जाने बिनु बिकल फिरे॥
जेहि मुख वेद गायत्री उच्चरे । ताके बच्चन संसार तरे ॥
जाके पांव जगत उठि लागे । सो ब्राह्मण जिव बध करे ॥
आपन ऊँच नीच घर भोजन। हीन कर्म हठि वोद्र भरे ॥
ग्रहण अमावस ढुकि ढुकिमाँगे। कर दीपक लिये कूप परे ॥
एकादशी व्रत नहिं जानै । भूत प्रेत हठि हृदय धरे ॥
तजि कपूर गाँठि विष बांधे । ज्ञान गँवाये मुग्ध फिरे ॥
छीजे साहु चोर प्रतिपाले । सत जानकी कूटि करे ॥
कहहिं कबीर जिभ्याके लंपट ।यहिविधि प्राणी नर्क परे॥ १७

टीका गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि ये गुरुवा लोग राम को गाते हैं और दूसरेन को समुझाते परंतु माया का मर्म जाना नहीं । जो बानी ने सबको भ्रमाया उसको न जाना इस वास्ते व्याकुल होय के फिर-ता है । ये अर्थ । जाके मुख से वेदगायत्री उच्चारण होता है औ जाके मुख से संसार मुक्त होना चाहता है औ जाके पांव संसार सब परता है सो ब्राह्मण जीव बध करते हैं ये आश्चर्य । आप ऊंच नी-च घर भिक्षा मांगते हैं औ भोजन करते हैं औ नीच कर्म करके हठ

दान लेते हैं पेट भरते हैं। ये अर्थ । ग्रहण, अमावस, दान प्रतिग्रह लेता है औ हाथ में नाना प्रकारके पोथी पुस्तक लेके भ्रम कूप में परताहै । ये अर्थ । एकादस जो आत्माहै सो उसका व्रत नहीं जानता, दया, क्षमा, शान्ति, आर्जव औ भूत प्रेत पूजन करके जीव हिंसा करता है; हृदय में हठ धरता है । ये अर्थ । कपूर कहिये जीव सो छाड के विष कहिये विषय सो गांठी बांधता है । इस प्रकार से ज्ञान गँवाये मूर्ख चौरासी में फिरता है । साहु कहिये जीव, चोर कहिये अनुमान, सो अनुमान का प्रतिपाल करके जीवका नाश होता है । औ संत जनकी मसखरी करता है ताते चौरासी को प्राप्त होताहै । ये अर्थ । गुरु कहते हैं कि हे जीव ! जो जो बड़े बडे कविता भये जिभ्या के लंपट । सो सब यही प्रकार करते करते नर्क को प्राप्त भये । ये अर्थ ॥ १७ ॥

शब्द १८.

राम गुण न्यारो न्यारो न्यारो ।

अबुझा लोग कहांलों बूझै । बूझनहार बिचारो ॥
केतेहि रामचन्द्र तपसीसे । जिन्ह यह जग बिटमाया ॥
केतेहि कान्ह भये मुरलीधर । तिन्ह भी अंत न पाया ॥
मच्छकच्छ औ बराह स्वरूपी । बावन नाम धराया ॥
केतेहि बौद्ध निकलंकी कहिये । तिन्ह भी अंत न पाया ॥
केतेहि सिद्ध साधक संन्यासी । जिन्ह बनबास बसाया ॥
केतेहि मुनिजन गोरख कहिये। तिन्ह भी अंत न पाया ॥
जाकी गति ब्रह्मै नहिं जानी । शिव सनकादि हारे ॥
ताके गुण नर कैसेक पैहो । कहहिं कबीर पुकारे ॥ १८॥

टीका गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि हे संतो ! राम कहिये आत्मा आत्मा कहिये सच्चिदानंद, गुण कहिये वेद, सो आत्मा का निर्णय करते हैं तीन प्रकार से, तत् त्वं असि सो पारख से न्यारा ये अर्थ । अबुझा कहिये जहाँ बुद्धि ना पहुंचे सो मिथ्या अनुमान,बूझनहार कहिये जीव, सो जीव मिथ्या अनुमान के पीछे लगा है कहाँलग बूझेगा ! जहाँ लग कल्पना करता है तहाँलग अनुमान की वृद्धि होती है । ये अर्थ । औ केते दश अवतार भये तिन खोजते खोजतेअंत पाया नहीं तब हारि कहा बेअंत। केतेई कपिल आदि सिद्ध भये औ केते साधक भये औ केतेही संन्यासी भये केतेई मुनि औ गोरख भये तिन्ह भी अंत न पाया । जहाँलग कल्पना किया तहाँलग बढती गई । जहाँ थका तहाँ एक आत्मा कहिके अनुमान में बँधा जा अनुमान को ब्रह्मा ने नहीं जाना, शिव सनकादि सब हारि रहे हैं । ताके खोज में सब नर पडे हैं सो कैसे पावेंगे । गुरु कहते हैं कि जाको सब जग ब्रह्म करके मानते हैं सो अनुमान मिथ्याहि नहीं,विचार करके देखो । ये अर्थ ॥१८॥

शब्द १९.

ये तत्तु राम जपो हो प्रानी । तुम बूझहु अकथ कहानी ॥
जाके भाव होत हरि ऊपर । जागत रैनि बिहानी ॥
डाइन डारे स्वनहां डोरे । सिंघ रहै बन घेरे ॥
पांच कुटुमंमिलि जूझन लागे । बाजन बाजु घनेरे ॥
रेहू मृगा संशय बन हांके । पारथ बाणा मेले ॥
सायर जरे सकल बन डाहे । मच्छ अहेरा खेलै ॥
कहहिं कबीर सुनो हो संतो । जो यह पद अर्थावे ॥
जो यह पद को गाय बिचारे । अपु तरे औ तारे ॥

टीका मायामुख—माया कहती है कि, जीव एक आत्मा सत्य और सब मिथ्या, सो तुम जानो ये बात अकथ है । जिसका भाव

भगवान पर रहता है सो आठ पहर ध्यान करके रात दिन बीती जाता है। ये अर्थ। गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि इस प्रकार की बातें गुरुवा लोग दृढावते हैं तब स्वनहा कहिये ॐकार। तासों जीवकी सुरति लगी। ये जीव सिंघ औ बन, बानी सो जीव बानी में घेरे रहता है । ये अर्थ। पांच कुटुम कहिये पांच देह; पांच कुटुम कहिये पांच इन्द्रिय, सो इसमें मिलके जीव सब नाश होने लगे। तब बाजन कहिये बानी सो कल्पि २के बहुत बानी बोले। ये अर्थ। रेहू कहिये ब्रह्म, मृगा कहिये मन, सो मन से जो कल्पना उठी सो संशय संशय से जो बनी सो बानी, बन कहिये ज्ञानीको इस प्रकार से हुवा। आगे सब बानी का विचार किया, चार देह का साक्षी हुवा तब कछु आगे सूझ परा नहीं। तब कहा कि मैं साक्षी बोध इस प्रकार से अनुमान में रहा। सब बानी छोड के निर्विकल्प होके मनही ब्रह्म हुवा। ये अर्थ। पारथ कहिये पंडित, बान कहिये ज्ञान, सो नाना प्रकार के ज्ञान पंडित लोग बोध करने लगे। ये अर्थ। सायर कहिये बानी, बन कहिये संसार, सो बानी की अग्नि में सब जग जरता है। मच्छ कहिये जीव, सो सब जीव अपनी अपनी कल्पना से बानी का जारा बनाते हैं फिर एक को एक फँसाते हैं । ये अर्थ। गुरु कहते हैं कि हे संतो कबीर कहाँ है। जो यह पद परखावै सोई पारख सोई कबीर जो इस पद को गायके विचार करे सो आप भी तरे औ केते ई जीव को तारे। सबको परखके पारखरूप हुवा। ये अर्थ॥ १९॥

शब्द २०.

कोई राम रसिक रस पीयहुगे। मीयहुगे युग जीयहुगे॥
फलअंकृत बीज नहीं बकला। शुक पंछी तहां रस खाई॥
चूवै न बुंद अंग नहिं भीजै। दास भँवर सब संग लाई॥

निगम रिसाल चारि फल लागे । तामें इती समाई ॥
एक दूरि चाहैं सब कोई । यतन यतन काहु बिरलेपाई ॥
गये बसंत ग्रीषम ऋतु आई । बहुरि न तरिवर तर आवै ॥
कहैं कबीर स्वामी सुख सागर । राम मगनहो सोय पावै ॥

टीका मायामुख—जो सब में रमा सो रामरस कहना जो सुन के विचार करके निश्चय करके जाना कि मैं आत्मा एक रस सो कोई मुमुक्षु जन एक आत्मा ऐसा जानै तो आवागमन से रहित होय । ये अर्थ । गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि इस प्रकार से माया ने फल की अंकित तो बताई । अंकित कहिये अनुमान को, रूप रेख कछु नहीं तहां शुक पंछी कहिये जीवको सो रस खाने लगे अनुभव लेने लगे, शुकाचार्य आदि दै जो फल अनुमान किया सो अनुमान का फल कदही उसमें से एक रसका बूँद चूब भी नहीं, अंग भीजा भी नहीं नाहक अनुमान के गुलाम होय के अनुमान में फंदते हैं कमल भ्रमर न्याय । ये अर्थ । मायामुख—मायाका उपदेश ऐसा है कि बेद ने जो चार फल बताये अर्थ धर्म काम मोक्ष आदि । सो उसका रस देख के सुर नर मुनी सब बधन में परे । इस ते आगे और कुछ है जो सबका जानने वाला सर्व साक्षी, सो उसकी चाह सब कोई करताहै परंतु यतन यतन अनेक जन्ममें कोई बिरला प्राप्ती होताहै । जब पंच विषय छूट जायेंगे तब मन स्थित होयगा । जब मन लय हुवा तब आवागमन से रहित हुवा फिर चोले में नहिं आवता । ये अर्थ । अब इस का साधन कहता हौं। प्रथमारंभ में मन नाभी में थीर करै सोहं सोहं शब्द में । जब मगन होवै तब आप आपनपौ सब बिसजन होके सुख के समुद्रमें बूडे, सोई आत्मस्थिति को प्राप्त होता है मुक्त होता है । ये अर्थ ॥ २० ॥

शब्द २१.

राम न रमसि कौन डंड लागा। मरिजैबे का करिबे अभागा ॥
कोई तीरथ कोई मुंडित केसा। पाखंड मंत्र भरम उपदेशा ॥
विद्या वेद पढि करे हंकारा। अन्तकाल मुख फांके छारा ॥
दुखित सुखित है कुटुम जेवावै। मरण बार एकसर दुख पावै ॥
कहहिं कबीरयहकलिहैखोटी। जो रहै करवासोनिकरैटोटी॥२१

टीका गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि हे जीव तू कौन धोखे में परा है धोखे से न्यारा नहीं होता। अरे हे अभागी! तू मर जायगा फिर तेरी सहायता कोई नहीं करेगा। ये अर्थ। कोई तीरथ करता है सो तीरथ भी अपनी जगह रह जायगा तेरो सहाय नहीं करने का। क्योंकि तीरथ जड औ तू चैतन्य। कोई मूँड मुँडाय संन्यासी भये सो भी जड अपनी जगह रहेगा तेरी कल्पना तेरी सहाय क्या करेगी। पाखंडी लोगोंने जो भ्रम बताया है मंत्र उपदेश सो भी जड तेरी कल्पना, उससे तेरा कल्याण नहीं होनेका। विद्या वेद पढिके जो अहंकार करते हैं सो भी कल्पना मिथ्या आखिर को मुखमें खाक पडेगी। अरे तू चैतन्य होय के जड कर्मन का आश्रित हुवा तो जडसे तेरा कल्याण कैसे होयगा औ जड तेरा सहाय कैसे करेगा। ये अर्थ। अपना सुख छोड के नाना प्रकारके कर्म कष्ट करके कुटुम का प्रतिपाल करता है मरण बेर वो भी संग होते नहीं अपने ही दुःख भोगने को परता है। गुरु कहते हैं कि हे जीव! सब मिथ्या धोखा है यह बानी जो गुरुवा लोगों ने बताई सो सब मिथ्या पारख कहीं नहीं। देखो जो जिसके घट में रही सो उसके मुखसे निकली कल्पना। ये अर्थ ॥ २१ ॥

शब्द २२.

अवधू छाडहु मन विस्तारा ।

सो पद गहो जाहिते सदगति । पारब्रह्मसो न्यारा ॥
नहीं महादेव नहीं महम्मद । हरि हजरत कछु नाहीं ॥
आदम ब्रह्मा नहिं तब होते । नहीं धूप नहिं छाहीं ॥
असियासै पैगम्बर नाहीं । सहस्र अठासी मूनी ॥
चन्द्र सूर्य तारागण नाहीं । मच्छ कच्छ नहिं दूनी ॥
बेद कितेब सुमृति नहिं संयम ।नहिं जीव न परछांई ॥
बंग निमाज कलिमा नहिं होते । रामहु नाहिं खुदाई ॥
आदि अन्त मन मध्य न होते । आतश पवन न पानी ॥
लख चौरासी जीव जन्तु नहिं । साखी शब्द न बानी ॥
कहहिं कबीर सुनो हो अवधू । आगे करहु बिचारा ॥
पूरण ब्रह्म कहांते प्रगटे । कृतम किन्ह उपराजा ॥ २२ ॥

टीका गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि हे योगी लोगो । हे ज्ञानी लोगो जो मनसे कल्पना करिके बानीका विस्तार भया औ योग विस्तार भया औ अनुमान विस्तार भया सो छोडके पारखको गहो जासे सब धोखा, मिटि जाय जो पारब्रह्म से न्यारा सर्व पारखी । ये अर्थ ।

ब्रह्ममुख—न महादेव, न महम्मद, न हरि, न हजरत, न आदम, न ब्रह्मा, न धूप, न छांह, न एक लाख अस्सी हजार पैगम्बर, न अठासी सहस्र ऋषी, न चंद्र न सूर्य, न तारागण, न मच्छ न कच्छ न सृष्टि न वेद न किताब न स्मृति न योग, न जीव न माया, न बांग न निमाज, न कलमा न राम न खुदा, न आदि न अंत न मध्य, न मन, न बुद्धी, न अग्नी, न पवन न पानी, न लख चौराशी जीव जंतू, न साखी न शब्द न बानी ये कछु था । पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानंद अद्वैत एकरस । ये अर्थ ।

गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि हे अवधू आगे विचार करो । जो पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानंद कहते हो सो कहाँ से प्रगटे, किन्हें अनुमान किया, कौनको आनंद हुवा। औ ये बानी वेद जगत् आदि कर्तव्य किसने किया कहाँ रहिके, सब मनुष्य कल्पना। ये अर्थ ॥ २२॥

शब्द २३.

अवधू कुदरत की गति न्यारी।
रंक निवाज करै वै राजा। भूपति करै भिखारी ॥
याते लोग हर फना लागे। चंदन फूल न फूला ॥
मच्छ शिकारी रमैं जंगल में। सिंघ समुद्रहि झूला ॥
रेंड़ रूख भये मलयागिर। चहुँदिश फूटी बासा ॥
तीन लोक ब्रह्मांड खंड में। अँधरा देखै तमासा ॥
पंगा मेरु सुमेरु उलंघै। त्रिभुवन मुक्ता डोलै ॥
गूँगा ज्ञान विज्ञान प्रकाशै। अनहद बानी बोलै ॥
अकाशहि बांधि पतालहि पठवै। शेष स्वर्गपर राजै ॥
कहैं कबीर राम है राजा। जो कछु करै सो छाजै॥ २३॥

टीका गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि हे ज्ञानी! हे योगी! ये नाना प्रकार की सिद्धी औ नाना प्रकार का धोखा जीव को देवै सो कुदरत कुदरत कहिये माया, जो कंगाल को राजा करै औ राजा को भिखारी करै। मनुष्य जो सब का राजा था उसको याचक बनाया औ धोखा जो पाषाण आदिक उसको दाता बनाया। ये अर्थ। याते लोग हर फना लागे। लोग कहिये जीव, हर कहिये जामें सब हर गये, फना कहिये जो कछु नहीं, सो धोखे में जीव फूले तत्त्वमसि कहायके। ये अर्थ। मच्छ शिकारी कहिये गुरुवा लोग सो संसार में रमते हैं उन की बातें सुनि के जीव सिंघ सो अनुमान समुद्रमें

झूलता है । ये अर्थ । रेंड रूख कहिये ब्रह्म,ब्रह्म कहिये धोखा,सो धोखा निश्चय हुवा । चारों तरफसे बासना फूटी, धोखामें जीव अंधा हुवा । पिंड ब्रह्मांड में तीन लोक का तमाशा देखने लगा, मुद्रा ध्यान लगाय के । ये अर्थ । पंगा कहिये मन, मन कहिये कल्पना सो कल्पना मेरु सुमेरु उडने लगी । तब विचार करके अर्ध ऊर्ध मध्य ये तीन लोक में एक आत्मा ये निश्चय किया मुक्त होके । ये अर्थ । फिर मौन हुवा कहा कि आत्मा अनिर्वाच्य, तब विज्ञान आत्म निर्णय औ ज्ञान ब्रह्म निर्णय प्रकाश किया । बेअंत बानी बोला कि आत्मा बेअंत इसकी हद नहीं । ये अर्थ । आकाश कहिये ब्रह्मांड औ पाताल कहिये पिंडांड, सो पिंडके श्वास को ब्रह्मांड में स्थिर किया । शेष कहिये ब्रह्म, सो ब्रह्मांड घर करके ब्रह्म हुवा धोखे में परा । ये अर्थ । जीवमुख-- जीव कहता है कि राम राजा है। सबका मालिक है, जो कुछ करे सो सही । ये अर्थ ॥ २३ ॥

शब्द २४.

अबधू सो योगी गुरु मेरा । जो यह पदका करे निबेरा ॥
तरिवर एक मूल बिनु ठाढ़ा । बिनु फूले फल लागा ॥
शाखा पत्र किछू नहिं वाके । अष्ट गगन मुख गाजा ॥
पौ बिनु पत्र करह बिनु तुम्बा । बिनु जिभ्या गुण गावै ॥
गावनहार के रूप न रेखा । सतगुरु होय लखावै ॥
पंछिक खोज मीन को मारग । कहैं कबीर दोउ भारी ॥
अपरमपार पार पुरुषोत्तम । मूरतिकी बलिहारी ॥ २४ ॥

टीका जीवमुख--हे ज्ञानी ! सो योगी गुरु मेरा, जो ये आत्मपद का नित्यानित्य विचार करिके जानते हैं कि आत्मा नित्य औ सब जग अनित्य । ये अर्थ । तरिवर कहिये देह, एक कहिये जीव, सो

ये जीव कहांसे पैदा भया बिना मूल । आत्माकी जगह पर तो स्फूर्ति भी नहीं औ जगत् निर्माण हुआ सो कहां से हुवा। शाखा कहिये गुण पत्र कहिये बानी सो तो आत्मा को नहीं निर्गुण,अनिर्वाच्य,सप्त स्वर्ग अपवर्ग पर्यंत, अखंड एकरस । मायामुख—माया कहती है कि जहां रूप नहीं सो पौ पौ कहिये आत्मा। बिनुपत्र कहिये बिना रूप, सो रूप कहां है मिथ्या मृगजलवत् । करह कहिये आधार, तुम्बा कहिये आत्मा,सो आत्मा निराधार,सर्व शून्य।ये अर्थ जिसके सत्ता मात्रसे जगत् निर्माण हुवा,बिना जिभ्या वेद गाया, सो गानेवाले को रूप रेखा कछु नहीं । जो सत्गुरु ब्रह्मा सनकादिक सम मिलैं तो ज्ञान अंजन दे के देखावै । आत्मस्थिति दिखाने को विहंगम मार्ग खेंचरी आदि मुद्रा पांच औ मीन मारग श्वासा उलटि चलावना औ सर्व विषयन की लै होना औ सर्वोपर आनंदकी प्राप्तिहोना ये दोनों महा कठिन हैं, अरे जाका पारावार नहीं अपरम पारहै सर्व साक्षी,उत्तम पुरुष,निःअक्षर, सो मूर्ती की बलिहारी। ये अर्थ ॥ २४॥

शब्द २५.

अबधू वो तत्तु रावल राता। नाचै बाजन बाजु बराता ॥
मौर के माथे दुलहा दीन्हा। अकथ जोरि कहाता ॥
मंडये के चारन समधी दीन्हा। पुत्र ब्याहि‍ऽ माता ॥
दुलहिन लीपि चौक बैठारी। निर्भय पद परकासा ॥
भाते उलटि बरातिहि खायो। भली बनी कुशलाता ॥
पानिग्रहण भयो भव मंडन। सुखमन सुरति समानी ॥
कहहिं कबीर सुनो हो संतो। बूझो पंडित ज्ञानी ॥ २५॥

टीका गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि ये ज्ञानी ये योगी लोग वह तत्त्वमा राते, जहां सनकादि नारदादि सब रते थे ब्रह्म पद में । ये अर्थ । बाजन कहिये इंद्रिय, बराता कहिये तत्त्व प्रकृति जब श्वामा ब्रह्मांड

को खैंची औ नाभी स्थानसे पलटि के डंडायमान हुई तब इंद्रिय सब कंपायमान होयके ब्रह्मांडमें दश प्रकार का नाद बजने लगा । सो नाद बिंदु औ कला तीनों मिलिके ज्योती प्रकाश हुई, सो ज्योतिको मौर कहिये । दुलहा कहिये जीव, सो जीव ज्योतीके ऊपर दिया । जो कथने में न आवै सो अकथ, अकथ कहिये ब्रह्म, ब्रह्म कहिये भय, सो खाविंद कहाने लगा । मंडया कहिये वेद, चारन कहिये उपदेश, समधी कहिये ब्रह्मज्ञानी, पुत्र कहिये जीव, माता कहिये गायत्री, गायत्री कहिये बानी, सो बानी का उपदेश ब्रह्मज्ञानी लोगोंने जीवको दृढाया वेद के प्रमाण से तब जीवकी लगन बानी से लगी । ये अर्थ । दुलहिन कहिये वृत्ती, सो वृत्ती बानी में लिप्त होय के शून्य हुई । चौक कहिये चित्त, मन, बुद्धि औ अहंकार सो शुद्धी बोधमें लीन हुई, मन अहंकार में लीन हुआ, अहंकार चित्तमें लीन हुआ औ चित्त बुद्धि ले के अतःकरण में लीन हुई । इस प्रकारसे चारों स्थित बैठ के ब्रह्म निर्भय पद प्रकाश हुवा । सो ब्रह्म जीवका अनुमान जीवसे उठा । भात कहिये अन्तःकरण, औ बराती कहिये चित्त मन बुद्धि आदि सर्व तत्त्वन को खाया । तब जीव ने मान लिया कि भली कुशल भई हम जीवन्मुक्त भये इस प्रकार से जगतमें बानी ग्रहण भई औ लौ लगी ब्रह्म से । सुषुमन में सुरति समाई सो सब धोखा मिथ्या है । हे संतो ! सुनो औ परख्यो । जो पंडित ब्रह्म औ ज्ञानी महादेव इन्हों जो बुझा सो धोखा । ये अर्थ ॥ २५ ॥

शब्द २६.

भाईरे बहोतबहोत क्या कहिये । कोई बिरले दोस्त हमारे ॥
गढन भंजन सँवारन आपे । ज्यों राम रखे त्यों रहिये ॥

आसन पवन योग श्रुति सुमृति । ज्योतिष पढि बैलाना ॥
छौ दर्शन पाखंड छानवे । ये कल काहु न जाना ॥
आलम दुनिया सकल फिरि आये । ये कल उहै न आना ॥
तजि करिगह जगत्र उचाये । मनसों मन न समाना ॥
कहहिं कबीर योगी औ जंगम । फीकी उनकी आसा ॥
रामहिं नाम रटै ज्यों चातक । निश्चय भक्ति निवासा ॥ २६ ॥

टीका गुरुमुख--भाई रे कहिये जीव को; सो गुरु कहते है कि बहुत बहुत क्या कहना कोई बिरले दोस्त हमारे । जो कोई पारख सो दोस्ती करे सो पारखी । जीवमुख--जीव कहता है कि पैदा करनेवाला औ नाश करनेवाला औ प्रतिपाल करनेवाला औ राम है सो जैसा भगवान रक्खे तैसा रहना । ये अर्थ । गुरु-मुख--गुरु कहते हैं कि अब कोई माया की बातें सुनके, आसन पवन योग साधने लगा राम को मिलने वास्ते । कोई श्रुति स्मृति पढि के दिवाना हुवा अनुमान में रता ये अर्थ । छौ दर्शन छानवे पाखंड, ये सब हुवा परंतु ये धोखा कोई न जाना । आलम दुनिया सबै फिरी आये । लेकिन वह खाविन्द जिसे बनाया तिसको कोई न ले आया । करिगह कहिये संसार, सो संसार छोड़िके जगत से उदास हुवा परंतु जिस खाविन्द को इन्ह माना सो कदही इसके मनमें आन के समाया नहीं मन की कल्पना । ये अर्थ । इस वास्ते गुरु कहते हैं कि, हे जीव ! कल्पना कहां है जीव के अनु-माने होती है । इस वास्ते योगी औ जंगम इन को कछु आकार मिला नहीं जब उनकी आस फीकी परी तब राम नाम रटने लगे जैसे चातक । ऐसा निश्चय भक्ति में किया कि जैसा सब बानी कहैं सो प्रमाण है । जैसे बडे बडे चले गये तैसे अपने भी चलना। ये अर्थ ॥ २६ ॥

शब्द २७.

भाईरे अद्बुद रूप अनूप कथ्यो है । कहौं तो को पतियाई ॥
जहाँ जहाँ देखों तहाँ तहाँ सोई । सब घट रहा समाई ॥
लक्ष बिनु सुख दारिद्र बिनु दुख । नींद बिना सुख सोवै ॥
जस बिनु ज्योति रूप बिनु आशिक। ऐसो रतन बिहूना रोवै ॥
भ्रम बिनु गंजन मणि बिनु निरख। रूप बिना बहु रूपा ॥
थिति बिनु सुरति रहस बिनु आनंद। ऐसो चरित अनूपा ॥
कहहिं कबीर जगत हारि मानिक। देखो चित अनुमानी ॥
परिहरि लाख लोभ कुटुम तजि । भजहु न शारंगपानी ॥२७॥

टीका गुरुमुख–गुरु कहते हैं कि भाईरे, जहां चित्त मन बुद्धि पहुँचती नहीं ऐसा अदभुत रूप बडे बडे गुरुवा लोगों ने कथा । अब मैं कहौं कि झूठ अनुमान है तो कोई मानता नहीं । ये अर्थ । जहां जहां देखों तहांतहां सोई अनुमान घट घटमें समाय रहा है । छल कहिये देखना, सो बिना देखे सुख माना । जैसे द्रव्य अपने पास है नहीं औ आंखि से कभी देखा भी नहीं औ सुख मान लिया कि मैं भाग्यवान सो मिथ्या हो । ऐसा आत्मा ब्रह्म भी मिथ्या है । कि जैसा कोई बडा भाग्यवान है सो स्वप्न में दुखित भया कि मैं महा दारिद्री,महा दुखी सो मिथ्या । इस प्रकार से सब जग विचार बिना दरिद्र दुखी भया, दरिद्र कहिये ब्रह्म, दुखी कहिये जीव । ये अर्थ। सो नाना प्रकारकी कल्पना करिके आंखि मूँदिके ध्यान लगाया, नींद बिना सुषुप्ति हुई तब बिना उजियारे की ज्योति प्रकाश हुई औ बिना रूप जीव आशिक हुवा । ऐसे सब बिना विचार अंधे रोतेहैं ये अर्थ । सब मिथ्या अनुमानमें परे । सो बिना भ्रम, नाहक भ्रम करिके जीवनको गंजन होता है दुख होता है । ये अर्थ।बिना मणी हीरा

की कीमत करते हैं, बिना रूप सब देखते है बहुरूप । सनक सनन्दन आदिने ठहराया कि निर्गुण ब्रह्म, रूप रेख रहित । ये अर्थ । स्थिति कछु है नहीं औ नाहक सुरति रक्खा है सोहं शब्द में । सोहं शब्द की उत्पति नाभी से नाभी नाशवंत शब्द भी नाशवंत, सो वो शब्द में सुरति रक्खी औ बिना जागृत्ति बिना, जाने आनंद हुवा मग्न हुवा । ये अर्थ । ऐसा चरित्र गुरुवा लोग करते हैं ये आश्चर्य मिथ्या धोखा । ये अर्थ । गुरु कहते हैं कि हे जीव ! सब जगतने मानिक माना सो मानिक कहां है । जिसको अपने चित्त के अनुमान से देखते हैं सो सब मिथ्या धोखा जानो । जाने सबका मन हर लिया, सो उन्मनी माया झांई । ये अर्थ ॥ २७ ॥

शब्द २८.

भाईरे गइया एक बिरंची दियो है। गइयाभारअभारऔभारी ॥
नौ नारी को पानि पियतु है । तृषा तेऊ न बुझाई ॥
कोठा बहत्तर औ लौ लावे । बज्र केंवार लगाई ॥
खूँटा गाडि दबरि दृढ बाधेउ । तैयो तोर पराई ॥
चारि वृक्ष छह शाखा वाके । पत्र अठारह भाई ॥
एतिक ले गम कीहिसी गइया । गइया अतिरे हरहाई ॥
ई सातों औरो हैं सातों । नौ औ चौदह भाई ॥
एतिक ले गइया खाय बढायो । गइया तैयो न अघाई ॥
पुरतामें राति है गइया । सेत सींगि है भाई ॥
अबरण बर्ण किछउ नहिं वाके । खद्ध अखद्ध खाई ॥
ब्रह्मा विष्णु खोजि ले आये । शिव सनकादिक भाई ॥
सिद्ध अनँत वाके खोज परे हैं । गइया किनहुं न पाई ॥

कहहिं कबीर सुनो हो सं जो यह पद अर्थावे ॥
जो यह पदको गाय विचारे । आगे होय निरबाहे ॥२८॥

टीका गुरुमुख–भाईरे कहिये जीवको गइया कहिये बानी, बानी कहिये ॐकार, बिरंची कहिये ब्रह्मा को, सो गरु कहते हैं कि हे जीव, जो बानी ब्रह्मा ने जगत में फैलायके दृढाया सो उस बानी का भ्रम बहुत बढा । ये अर्थ । नौ नारी कहिये नौ व्याकरण, पानी कहिये बानी, सो नौ व्याकरण की बानी पढी परन्तु तृषा तो बुझाई नहीं । तब बहत्तर कोठा से श्वासा ऐंचि के धोखे में लौलगाई बज्र केंवार आंखिसों लगाय लिया । ये अर्थ । खूंटा कहिये ब्रह्म सो अनुमान में सुरति दृढ बांधी औ मौन हुवा कि मैं मेरी सब मिथ्या । नाभीमें सुरति लगाया तब उस नाभीसे सोहँ सोहँ दो अक्षर उठा जीव के अनुमान से । फिर ये जीव मगन हुवा ताहू पर मौन तोरि के आगेको बढा । ये अर्थ । अब तीन पद बांधा कि सोहँ कहिये त्वं पद सोहं कहिये तत्पद दोनों पद मिलके मग्न हुवा सो असि पद । इस प्रकारसे त्रिपुटी अनुमान करके तीनोंका विचार किया । ये अर्थ । सोई चार वृक्ष बेद, छौ शास्त्र, छौ शाखा, अठारह पुराण पत्ता एक बानी वृक्ष पैदा किया । एतिक बानी लेके ब्रह्मादि सनकादि सबने गमन किया परंतु वही बानीने सबको भर्माया, बढी हरहाई । ये अर्थ । दो कल्पना किया समष्टि व्यष्टि औ सातों कहिये पांचों तत्वछठवाँ मन सतवाँ जीव । औ सातों कहिये शब्द, स्पर्श, रूप रस, गंध, हिरण्य-गर्भ औ ईश्वर, ये समष्टि व्यष्टि प्रमाण किया । नौ कहिये शब्द स्पर्श, रूप, रस, गंध, चित्त, मन, बुद्धि औ अहँकार, चौदह कहिये देवता एतिक सब लेके खाय डारा वह बानीने, परंतु ताहूपर गइया जोहै बानी सो अघाई नहीं औ खाती चली जाती है । ये अर्थ । जब सोहं सोहं दो शब्द

नाभी में उठने लगे औ उसमें सुरति लगी । शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध अहंकार, बुद्धी, चित्त ये सब मनमें लीन हुये । मन उन्मन निर्विकल्प हुवा तब सब नाश हुये । ये अर्थ । निर्विकल्प हुवा सर्वव्यापी हुवा, तब पूर्ण होयके वो बानी फिर उसमें राती । सेत कहिये हंस, हंस कहिये शुद्ध, सो मैं परमहंस परमशुद्ध ऐसा कहिये । ये अर्थ । तब कहा कि मैं अवर्ण वर्ण मेरे कछू नहीं, मैं खंड अखंड चराचर सब ऐसा कहिके कौन मरता है कौन जीता है, एक आत्मा निरंतर कहिके एक अनेक भक्षण करने लगा । ये अर्थ । ये खोज ब्रह्मा औ विष्णु ने लाया, सोई शिव सनकादिकने ग्रहण किया औ सिद्ध अनन्त वाके खोजमें परे हैं परंतु वो बात काहूने न पाई ऐसी बात माया उपदेश करती है । सो गुरु कहते हैं कि हे जीव, जो मायाने उपदेश किया सो मिथ्या भ्रांती । जो यह पदको निर्णय करै सो पारखी औ तत्त्वमसि आदिक गाय के विचार करे । औ आगे पारख को प्राप्त होय तब आवागमनसे रहित होय ये अर्थ ॥ २८ ॥

शब्द २९.

भाईरे नयन रसिक जो जागे ।

पारब्रह्म अविगत अविनाशी । कैसहुके मन लागे ॥
अमली लोग खुमारी तृष्णा । कतहुं संतोष न पावै ॥
काम क्रोध दोनों मतवाले । माया भरि भरि आवै ॥
ब्रह्म कुलाल चढाइनि भाठी । लै इंद्री रस चाखै ॥
संगहि पोच होय ज्ञान पुकारे । चतुरा होय सो पावै ॥
संकट सोच पोच यह कलिमा । बहुतक व्याधि शरीरा ॥
जहाँ धीर गंभीर अति निश्चल तहां उठि मिलहु कबीरा ॥ २९ ॥

टीका मायामुख—माया उपदेश करती है कि हे जीव, जो नैन में प्रेम जागे औ जीवको अनुराग होय । कैसेही तरहसे जो पारब्रह्म अविगत है जाकी गति ब्रह्मादि नहा जानते, अविनाशी जाको नाश नहीं उनमें मन लगे । ये अथ । गुरुमुख--गुरु कहते हैं कि जो माया ने उपदेश किया सो जीवको निश्चय हुवा औ लोग बिरही हुये । अनुमान की खुमारी चढी औ तृष्णा बढी, सो कहा संतोष न मिला, तब सब आत्मा ये निश्चय करता है । इस प्रकार से काम कहिये ब्रह्मा, क्रोध कहिये शंकर,सो दोनों मस्त हुये औ कल्पना भरि भरि आवने लगी तब नाना प्रकार की बानी बोली । ये अथ । ब्रह्म कहिये भ्रमको, कुलाल कहिये कुम्हार को, भाठी कहिये रस्तेको सो भ्रममें परा औ मैं चतन्य सर्व कर्ता ऐसा कहा औ नाना प्रकार के ज्ञान वेद आदि सब चलाया । कि प्रथमारंभ में जो मानुष था वह अहंता ग्रहण करके मैं ब्रह्म ऐसा भाव लिया तब एक स्त्रीरूप पैदा भया । ताते कर्ता कुम्हार बने जो नाना प्रकारके घट पैदा किया उत्पत्ती का रस्ता चलाया । अब सब इंद्रिन का रस लेने चाहते हैं औ उसी स्त्रीके संग में सभी खाली हुये औ नाना प्रकारके ज्ञान बोले कि कोई चतुर होय सो पावैगा । ये अर्थ । सो गुरु कहते हैं इस मिथ्या बानी में औ स्त्री में नाना प्रकार का कष्ट है औ नाना प्रकार की कल्पना है औ आवागमन है औ नाना प्रकार की उपाधि शरीर को है औ नाना प्रकार चिंता है । ताते बानी स्त्री आदि सर्व मिथ्या उपाधी सो तू त्यागन कर और जहां धीरज विचार सरित पारख है निश्चल, तहां उठि के मिलो हे जीव । ये अर्थ ॥ २९ ॥

शब्द ३०.

भाईरे दुइ जगदीश कहांते आया। कहु कौने बौराया ॥
अल्लाह राम करीमा केशवा। हरि हजरत नाम धराया ॥
गहना एक कनक ते गहना। यामें भाव न दूजा ॥
कहन सुननको दुइ कर थापे। एक निमाज एक पूजा ॥
वोही महादेव वोही महम्मद। ब्रह्मा आदम कहिये ॥
को हिंदू को तुरुक कहावै। एक जिमीपर रहिये ॥
बेद कितेब पढ़े वै कुतुबा। वै मुलना वै पांडे ॥
बेगर बेगर नाम धराये। एक मट्टी के भांडे ॥
कहहि कबीर वै दूनों भूले। रामहि किनहु न पाया ॥
वै खसी वै गाय कटावैं। बादिहि जन्म गमाया ३०

टीका गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि हे जीव ! दो जगदीश कहांते आ-ये ? जो कोई अल्लाह कोई राम, कोइ करीम, कोई केशव, कोई हरि, कोई हजरत ऐसे नाना प्रकारके नाम धराये सो कौन है कहो। तुमको किसने दिवाना किया। सबका अनुमान एक कि जैसे एक सोना औ नाना प्रकारके आभूषण बनायके न्यारा न्यारा नाम रखते हैं परंतु सुवर्ण औ भूषण दो नहीं। इस प्रकार से अनुमान एक औ नाम न्यारे न्यारे, कहने सुनने को दुइकर थापे कि एक निमाज एक पूजा। वही अनुमान महादेवने माना, वही अनुमान महमदने कहा, वही ब्रह्मा ने कहा, वही आदमने कहा, इस वास्ते कौन हिन्दू औ तुरुक कहना, सब एक अनुमानकी भूमिपर रहे। ये अर्थ। कोई वेद पढ़ा ब्राह्मण हुवा औ कोई किताब पढा निमाज पढ़ा तुरुक कहाया, इस प्रकारसे न्यारे न्यारे नाम धराये। परन्तु एक माटीके बासन, पांच तत्त्व आदि जीव सब एक। ये अर्थ। गुरु कहते हैं कि ये दोनों भूले। परन्तु जो सबमें

रशा है सो काहूने भेद न पाया। हिन्दू बकरा मारिके शक्तीकी पूजा करने लगे औ तुरक गाय मारने लगे। इस प्रकारसे नाहक बादहीमें जन्म गमाया, पारख न पाया। ये अर्थ ॥ ३० ॥

शब्द ३१.

हंसा संशय छूरी कुहिया। गइया पीवै बछरुवै दुहिया॥
घर घर सावज खेलै अहेरा। पारथ ओटा लेई॥
पानीमाहिं तलफगइ भुंभुरी। धूरि हिलोरा देई॥
धरती बरसे बादर भीजे। भीट भये पौराऊ॥
हंस उडाने ताल सुखाने। चहले बिंदा पाऊ॥
जौलों कर डोले पग चाले। तौलों आस न कीजे॥
कहहिं कबीर जेहि चलत न दीसे। तासु बचन का लीजे॥ ३१॥

टीका गुरुमुख–गुरु कहते हैं कि हे जीव, संशय रूपी छूरी जो सबके घटमें पैठी है सो सबजीवनका नाश करती है। संशय कहिये बानी। ये अर्थ। गइया कहिये बानी, गइया कहिये स्त्री बछरू कहिये जीव, सो ये बानी औ स्त्री जीवको खाती है, जीव क्षीण होता है। ये अर्थ। सावज कहिये उपदेश, उपदेश कहिये जो गुरुवा लोगोंने दिया सो अनुमान सो घट घटमें पैठा औ गुरुवा लोग सब जीवनको फांदने लगे औ सब जीव गुरुवा लोगोंके आश्रित होने लगे। पानी कहिये बानीको, भुंभुरी कहिये जीवको, सो नाना प्रकारकी बानीमें जीव सब तलफ गये। धूरि कहिये अनुमान, अनुमान कहिये मिथ्या, हिलोरा कहिये अनुभव, सो मिथ्या अनुभव करने लगे। ये अर्थ। धरती कहिये माया, माया कहिये गुरुवा लोग, सो नाना प्रकारकी बानी बरसने लगे औ बादर कहिये जीव सो सब वह बानीमें भीजे। भीट

कहिये वेद, सो सबको तारनेवाले भये । ये अर्थ । सूखा ताल कहिये निर्गुण, निर्गुण कहिये जो कछु नहीं, तहां ये जीव उडा सो नाना प्रकारके बानीमें बंध हुआ । चहला कहिये जगत्, सो जगत् आत्मा हुआ । ये अर्थ।गुरु कहते हैं कि हे जीव जबलग चोला साबूत है तब लग आशा किसी पदार्थकी मतकर । ब्रह्मकी या जगत्की या अनुमान भी मत माने । अरे जो चलते नजर नहीं आता सो धोखा उसका नाम क्या लेना । सबको परखके थीर होना । ये अर्थ । बिरह अर्थ हंसा कहिये जीव, संशय कहिये स्त्री, सो स्त्री सब जीव का नाश करती है । ये अर्थ । गइया कहिये स्त्री, बछरू कहिये पुरुष सो स्त्री भगमुख से पुरुष को पीती है औ पुरुष दुहा जाता है। ये अर्थ । सावज कहिये नारी, सो घरघर शिकार खेलती है ।

कवित्त"भौंह है कमान जाकी नैन दोउ बान लाये कामकी गांसि ठहराये मारत हिये तनिके ॥ कुचा दोउ गुरज जाके सीस परभुजंग ताके बिलारी सी चाल जाकी मारत जिवजानि के॥ महाकाली रूप धार जग को कीन्हो सँधार नर जाने मेरी नार लीन्ही निज मानिके॥ पूरण कहते बिचार नारी नहीं नर्कभार कीन्हा बहुते सिंगार जीवन को खानके ॥" इसप्रकार से घर घर स्त्री शिकार खेलती है औ जीव सब बडे बडे उसीका आसरा लेते हैं कि जैसे ब्रह्मादि सब चले वैसे आपन भी चलना । पानी कहिये काम को, सो जीव काम के मारे तलफने लगे । ये अर्थ । धूरि कहिये स्त्री, सो काम के हिलोरा देने लगी । धरती कहिये स्त्री, बादर कहिये पुरुष, सो स्त्री नाना प्रकार मोहबानी बरसाती है औ जीव सब भीज रहे हैं मोहित होय रहे हैं।ये अर्थ । भीट कहिये संसार, सो संसार में डूबे, आखिर एक दिन जीव तन छोड़ चले तब गर्भवासको प्राप्त भये । ये अर्थ । इसवास्ते जब

लग चोला साबूत है तबलग स्त्री पुत्र किसी की आशा मत करना सब नाशवन्त मिथ्या, जो चलते नहीं नजर आता, उससे प्रीति क्या करना। ये अर्थ ॥ ३१ ॥

शब्द ३२.

हंसा हो चित चेतु सबेरा। इन्ह परपंच केल बहुतेरा ॥
पाखंड रूप रचों इन त्रिगुण। तेहि पाखंड भूलल संसारा ॥
घरके खसम बधिक वै राजा। परजा क्या धौं करे बिचारा ॥
भक्ति न जाने भक्त कहावे। तजि अमृत विषके लिनसारा ॥
आगे बडे ऐसेही बूड। तिनहु न मानल कहा हमारा ॥
कहा हमार गांठी दृढ़ बांधो। निशिबासर रहियोहुशियारा ॥
ये कलि गुरू बडे रपंची। डारि ठगौरी सब जग मारा ॥
बेद किलेब दोउ फंदपसारा। तेहि फन्दे परु आप बिचारा ॥
कहहिं कबीर ते हंसन बिसरे। जेहिमा मिले छुडावनहारा ३२

टीका गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि हे हँसा ! तू चैतन्य है तासे जल्दी चेत। इन गुरुवा लोगों ने बहुत प्रपंच किया सो तू जान। ये अर्थ। नाना प्रकार का पाखंड स्वरूप रचा। त्रिगुण, ज्ञानी, भक्त औ योगी इनके पाखंड में सब संसार भूला, बानी सुनी सुनी भ्रमा। ये अर्थ। अरे जाको तन मन धनअर्पण किया सोई गुरुवा नाना प्रकार की कल्पना भ्रममें बांधिके जीव का नाश करने लगे अब चेलेलोग ये जीव बिचारे क्याकरेंगे। जैसे राजा जो देश का मालिक है सोई अपने देश के लोगों को फांसी देने लगा तब परजा कैसे बचे क्या करे बिचारे। ये अर्थ। भक्ती कहिये जो स्त्री आदि सब माया से भगै सो भक्ती, सो भगना तो जानते नहीं औ भक्त तो कहलाते हैं ये आश्चर्य। अमृत जीव, विष ब्रह्म, ब्रह्म कहिये भ्रम जासे जीव नाश

होता है सो जीव को छोड़ के ब्रह्म सार किया। ये अर्थ। आगे जो सनकादिक सरीखे बड़े बड़े भये सो सब अनुमान करते करते अनुमान में बूडे परंतु तिनहु न माना कहा हमारा । इसवास्ते जो गुरूने परखाया सो पारख निश्चय दृढ करो औ रात दिन कभी गाफिल न रहो हुशियार रहो। ये अर्थ। संसार में गुरुवा लोग बडे परपंची हैं नाना प्रकार की कल्पना डारिके सब जग को मारा। ये अर्थ। वेद किताब दोनों फंद पसारा, ता फंद में आप भी परा औ दूसरे को भी डारने लगा सो मिथ्या धोखे की फांसी है गुरू कहते हैं कि कहां हैवो हंस कदहीं भूलने का नहीं । जामें छुडाने वाला पारखी मिलै। सो सदा पारख हुवा। ये अर्थ ॥ ३२ ॥

शब्द ३३.

हंसा प्यारे सरवर तजि कहाँ जाय।
जेहि सरवर बिचमोतिया चुगत होते। बहु बिधि केलि कराय ॥
सूखे ताल पुरइनि जल छाडे । कँवल गये कुम्हिलाय॥
कहहिं कबीर जो अबकी बिछुरे।बहुरी मिलोकब आय३३

टीका गुरुमुख--गुरु कहते हैं कि हे हंसा प्यारे, सरवर तजि कहां जाय, देह छोडके कहां जायगा । जेहि देह में मुक्ति चाहते थे औ नाना प्रकार की क्रीडा करते थे। सो देह छोड के अब कहां जावोगे, ये अर्थ । सूखा ताल कहिये ब्रह्म को,पुरइनी कहिये जीव को, जल कहिये देह को, ब्रह्म कहिये भ्रम को, सो धोखे के भरोसे जीव ने देह छोडा सो गर्भबास को प्राप्त हुवा। ये अर्थ। गुरु कहते हैं कि जिस धोखे के भरोसे जीव बेफिकिर होयके देह छोड़ताहै सो कहां है मिथ्या धोखा। ये अर्थ। हे संतो सुनो जो मानुष तन पायके पारख ना मिला तो फिर कब मिलेगा सब को, परखके पारखपर थीर होवो ये अर्थ ॥ ३३ ॥

शब्द ३४.

हरिजन हंसदशा लिय डोलै । निर्मलनाम चुनि चुनिबोलैं ॥
मुक्ताहल लिये चोंच लोभावै । मौन रहैं कि हरियश गावै ॥
मान सरोवर तट के बासी । राम चरण चित अंत उदासी ॥
कागा कुबुद्धि निकटनहिंआवै । प्रति दिन हंसा दर्शन पावै ॥
नीर छीर का करे निबेरा । कहहिं कबीर सोई जन मेरा ॥

टीका मायामुख—माया कहती है कि जो हरि के जन हैं ज्ञानी सो हंस दशा शुद्ध परमहंस दशा लेके डोलते हैं, बिचरते हैं । बाल पिशाच जड़ मूक उन्मत । ये अर्थ । और कोई योगीजन जो निर्मल नाम तत्वमसि आदि लेके मग्न होते हैं। ये अर्थ । और कोई अर्थ धर्म काम मोक्ष आदि मुक्ताफल लेके मुख से नित भजन कीर्तन करके भगवान को लोभाते हैं कि मौन रहते हैं। कोई बोले तो हरीका गुणानुवाद गावते हैं । ये अर्थ। मान सरोवर तट के बासी । जो माना सो मान सरोवर तहां के रहने वाले, रामचरण पर चितरखनेवाले, सब जगसे उदास रहते हैं। धर दारा सुत कलत्र आदि सब से उदास ।ये अर्थ। कागा कुबुद्धि संसार, सो ये संसार के निकट नहीं आवते,दिन प्रति दिन हरिजन भगवत जग दर्शन पावते हैं बद्रीनाथ जगन्नाथ द्वारिकानाथ रामनाथ आदि । ये अर्थ। गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि ये हंस ना होय, जो नाना प्रकार की कल्पना औ अनुमान में बंध होके पृथिवीपर प्रतिमा,शिला सेवन करते हैं, जो जड चैतन्य एक करते हैं सो बक । औ जो नीर क्षीर का निबेरा करते हैं सो पारखी, नीर कहिये काया, काया कहिये माया, माया कहिये छाया, छाया कहिये नाशवंत,नाशवंत कहिये बानी, नाशवंत कहिये वेद, नाशवंत कहिये कल्पना अनुमान, ये नीर का अर्थ । क्षीर कहिये जीव, सो

नाना प्रकार के भ्रम में फँसा इसका जो निबेरा करताहै सोई पारखी पारखपर थीर है और सब कहां हैं मिथ्या धोखा। ये अर्थ ॥ ३४॥

शब्द ३५.

हरिमोर पिवमैं रामकी बहुरिया। राम बड़ो मैं तनकी लहुरिया
हरि मोर रहटा मैं रतन पिउरिया। हरिकानामलेकततिबहुरिया
छौ मास तागा बरस दिन कुकुरी। लोग कहैं भल कातल बपुरी
कहहिं कबीर सूत भल काता। चरखानहोयमुक्तिकरदाता३५

टीका जीवमुख—जीव कहता है कि जाने सब भक्तन का मन हर लिया सो हरि, सो मेरा खाविन्द मैं जो सब में रमा सो राम की स्त्री हूं। ये अर्थ। राम बडो सर्वज्ञ है कर्ता धर्ता ईश्वर। बे अर्थ। मैं जीव भगवान के अणु रेणु का सहस्रवां अंश ये त्वं पदार्थ। हरि कहिये जो अविद्या माया को हरे। अविद्या माया कहिये अज्ञान कारण, अविद्या हरे सो विद्या माया, विद्या माया कहिये ज्ञान जो स्थूल सूक्ष्म कारण का साक्षी तत्पदार्थ। रहटा कहिये देह जो चलता है सो मैं ज्ञान देही ब्रह्म। ये अर्थ। रतन कहिये ज्ञान, पिउरी कहिये शुद्ध, सो मैं शुद्ध चैतन्य। ये अर्थ। शुद्ध ज्ञान का अर्थ पिउरी क्यों ऐसी जो शंका होय, तो पिउरी कहते हैं, कि जो चरखा में परै और जामें सूत निकले औ पट बने सो पिउरी ऐसा शुद्ध ज्ञानानंद जब जीव हुवा तब महाकारण सब कारण का मूल हुवा जो महाकारण हुवा तो चित्त चतुष्टय के चरखेमें परा। जब चित्त चतुष्टय के चरखे में परा तब कारण सूत पैदा हुवा जासे सब जगत पट पैदा हुवा। ये अर्थ। गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि इस प्रकार से ज्ञानरूप कहके हरि का नाम कहिये ॐ सो लेके कथने लगे, बहुरिया माया गुरुवा। ये अर्थ। छौ मास कहिये छौ शास्त्र, ज्ञानरूपी पिउरी सौ

धागा निकरा । वर्ष दिन कहिये बारह मास त्वं पद तत्पद असिपद, क्षर अक्षर निअक्षर जहद अजहद जहदाजहद,जीव ब्रह्म औ आत्मा ये बारह मास एक जगह लपेटि एक के कुकुरी आत्मा । ये अर्थ । कौन प्रकार से बारह पद एक मिले सो सुनो।त्वं पद सोई क्षर क्षर सोई जहद, जहद सोई जीव । इसका जानने वाला तत्पद । तत्पद सोई अक्षर, अक्षर सोई अजहद, अजहद सोई ब्रह्म । असि पद सोई निअक्षर, निअक्षर सोई जहदाजहद, जहदाजहद सोई आत्मा।येअर्थ। नहीं जानता सो जीव, जानता सो ब्रह्म । नहीं सो अज्ञान जानता सो ज्ञान । ये दोनों उपाधी छुटी सोई आत्मा पूर्ण जैसे का तैसा। न तत, न त्वं, न क्षर, न अक्षर, नजहद, न अजहद, न जीव, न ब्रह्म एक आत्मा जैसा का तैसा । ये अर्थ । ब्रह्म कहिये समुद्र; जीव कहिये सरिता वापी कूप तडाग बहुत नांव परन्तु जल एक खारा फीका मीठा ये उपाधी, अंतर भूत जल एक । इस प्रकारसे नाम रूप उपाधि मिथ्या आत्मा सत्य ये कुकुरी का अर्थ, आत्मा को कुकुरी संज्ञा भई जो तंतु पटिका अधिष्ठान सो कुकुरी । जीव ब्रह्म का अधिष्ठान सो आत्मा । ये अर्थ । जीवमुख--अब जीव सब कहते हैं कि भाई बहुत निर्वाण ज्ञान कथा जीवन्मुक्त । ये अर्थ । गुरुमुख--गुरु कहतेहैं कि तत्वमसिआदि सूत बहुत काता । पर ये चरखा रहट चलाई जाता है । एक अनेक होता जाता है । परन्तु इससे कल्यान नहीं । विनु पारख स्थिति सब झूठी । ये अर्थ । पारख कहिये जो सब कल्पनाअनुमानको परखावै और थिर रहै । ये अर्थ ॥ ३५ ॥

शब्द ३६.

हरिठग ठगत ठगौरी लाई । हरिकेवियोग कैसे जिवहुरे भाई ॥
को का पुरुष कौन काकी नारी। अकथ कथा यमदृष्टि पसारी ॥

को काको पुत्र कौन काको बाप। कोरे मरे को सहै संताप ॥
ठगि ठगि मूल सबन का लीन्हा। राम ठगौरी काहु न चीन्हा॥
कहहिं कबीर ठगसो मन माना। गई ठगौरी जब ठग पहिचाना

टीका गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि हरिठग कहिये ज्ञानी, सो सब को ठगते फिरते हैं धोखा देते हैं। ठगौरी कहिये बानी, सो गुरुवा लोगोंने लगाई, अब यह गुरुवा लोगोंके विरह वियोगसे कैसे जीवोगे अरे भाई वियोगहीमें मरि जाहुगे बिना पारख। ये अर्थ। अरे कौन किसका पुरुष औ कौन किसकी नारी, जो पुरुष अनुमान किया सो जीवही ने किया औ जीव आप नारी बना। अपने मनसे पैदा हुई जो कल्पना सो नारी अपनी, तिसको पुरुष बनाया, ये अकथ बात है कथने योग्य नहीं। जो गुरुवा लोगोंने दृष्टी पसार के कथा सो सब कल्पना। ये अर्थ। को काको पुत्र कौन काको बाप। जो जिसका कर्ता सोई तिसका बाप, कर्ता आप मानुष होयके आपने जो अनुमान किया सो अपना पुत्र ताको अपना बाप बनाया औ आप पुत्र बना। ये अर्थ। अब जो जीवने कल्पना किया इष्ट देवता स्वर्गादिक सो सब निर्जीव, तिसका संताप जीव को लगा। अनुमान कल्पना करनेवाला जीव औ अनुमान कल्पना निर्जीव हुवा। ये अर्थ। इस प्रकारसे ये मायी गुरुवा लोगोंनें नाना प्रकार का धोखा देके ठग ठग के सबका जीव लिया। परंतु रामठगौरी जो बानी है औ स्त्री है सो काहू बिरलेने चीन्हा परखा। ये अर्थ। गुरु कहते हैं कि हे जीव, जो ठग से तेरा मन माना सो कहां है। ये गुरुवा लोगोंकी ठगौरी जबलग पारख नहीं मिली तबलग है जब पारख मिली तब ठग धोखे को पहिचान। स्त्री बानी सब धोखा ठहरा तब सब धोखा चीन्हा ठगौरी गई। ये अर्थ ३६

शब्द ३७.

हरि ठग ठगत सकल जग डोलै । गौन करत मोसे मुखहु नबोलै
बालपन के मीत हमारे । हमहि तजि कहांचलेहुसकारे ॥
तुमहि पुरुष मैं नारि तुम्हारी । तुम्हरी चाल पाहनहु ते भारी
माटीका देह पवन को शरीरा । हरिठगठगसोडरेकबीरा३७॥

टीका गुरुमुख–गुरु कहतेहैं हरीठग कहिये गुरुवालोग, सब संसार को ठगते फिरते हैं पुजाते हैं धोखा देके । ये अर्थ । कौन तरह से फिरते हैं सो सुनो । पृथिवी पर विचरते हैं, मोहसे मौन होके बोलते नहीं । मोह कहिये अनुमान, सो अनुमान किया अपने मनसे और मौनी हुए । तब कहने लगे कि हे भगवान् तुम हमारे जीवपनके मित्र अब हमको छोडके कहां जावोगे, जीव ब्रह्मका अंश । तुमही पुरुष, मैं तुमारी नारी । ये अर्थ । तुम्हरी चाल पाहनहुते भारी । पाहन कहिये पर्वत सो पर्वत मेरु चला जायगा परंतु तुम अचल कबहूं न चलोगे । ये अर्थ । माटीका देह पवन को शरीरा । माटीका देह कहिये स्थूल, पौन का शरीर कहिये सूक्ष्म, सो गुरुवा लोग बडी माया छुडायके सूक्ष्म माया में फसाते हैं । कबीर कहिये जीव को सो गुरुवा लोगोंने जो डर लगाया पाप पुण्य का तासे डरते हैं निशि दिन सोग लगा रहता है । ये अर्थ ॥ ३७ ॥

शब्द३८.

हरि बिनु भरम बिगुर्चनि गंदा ।
जहां जहांगयउ आपनपौ खोयउ । तेहि फन्दे बहु फन्दा ॥
योगी कहैं योग है नीका । दुतिया और न भाई ॥
लुंचितमुंडित मौनि जटाधारि । तिन कहु कहां सिधि पाई॥
ज्ञानी गुणी शूर कबि दाता । ई जो कहैं बड हमहीं ॥

जहाँ से उपजे तहां समाने । छूटि गये सब तबहीं ॥
बायें दहिने तजूँ विकारा । निजुकै हरिपद गहिया ॥
कहैं कबीर गूंगे गुर खाया । पूछे सो क्या कहिया ॥ ३८ ॥

टीका मायामुख–हरि कहिये जो सर्बस हर लेय, जो सर्बस हरे सो तुर्या । सो तुर्या बिना ज्ञान बिना मैं जीव अजान, ऐसा कहिये भ्रममें नाश हुवा खराब हुआ गंदा जीव । गंदी देह से न छूटे सोई गंदा। येअर्थ गुरुमुख–गुरु कहते हैं कि ऐसी ऐसी बातें सुनी जीवने अरे जहां जहां तू गया तहां तहां तू अपनपौ खोया । स्थूल में गया तब कहा कि मैं स्थूल, मेरी माता, मेरा पिता, मेरा भाई, मेरी घर, मेरा स्त्री, मेरा पुत्र, कुटुंब, द्रव्य सम्पति सब मेरी, मेरी मेरी कहिये बहुत माया में फंद॥ और जब नानाप्रकार की बानी सुनी, कि गुरु बिन औ भगवत भजन बिन जीव का कल्याण नहीं तब गुरुवा लोगों की शरण में गया । तब नाना प्रकार के बिचार वेदांत सिद्धांत जो गुरुवा लोगों ने बताया सो बिचार करने लगा कि मैं स्थूल का जाननेवाला स्थूल नहीं जैसा घरका रहनेवाला कछु घर नहीं जो घरका रहनेवाला घर होय तो घर कौन कहै ऐसा जो मैं स्थूल होता तो स्थूल कौन कहता । स्थूल तो साढ़े तीन हाथ, पांच तत्त्व, तीन गुण, चौदह देवता, दश इंद्रिय, जागृति अवस्था । सो मैं जागृति अवस्था को जानता हौं जो जो देखने में आवै सो जागृति । जागृति नेत्रस्थान में रहती है । और विश्व उसका अभिमान है सो मैं जागृति औ विश्व कधी नहीं इसका साक्षी । स्थूल के तत्त्व पांच, आशाक्र, वायु, तेज जल और पृथिवी । सो मैं आकाश को भी जानता हौं और आकाश की प्रकृती को भी जानता हौं । काम जो शरीर में स्फुरण होता है सो भी मैं जानता हौं और क्रोध जो आता है सो भी मैं जानताहौं और मोह जो होता है सो भी मैं जानता हौं औ लोभ जो

होता है सो भी मैं जानता हौं औ हर्ष जो होता है सो भी मैं जानता हौं काम क्रोध लोभ मोह हर्ष यही जो मैं होता तो मुझे कामने सताया औ मुझे क्रोध आया औ मुझे मोह भया औ मुझे लोभ हुआ औ मुझे हर्ष भया ऐसा कौन कहता । तो मैं आकाश की प्रकृतीको जानने वाला न्यारा हूं । जैसा जो दिवालको जानता है सो दिवाल नहीं जो आपही दिवाल होता तो दिवाल कौन कहे दूसरा वायु तत्व । सो मैं वायु तत्व को भी जानने वाला औ वायु की प्रकृतीको भी जानने वाला । बल करना, धावना, पसारना, संकोच करना औ बोलना ये वायु तत्व की प्रकृती क्या मैं नहीं जानता । मैं तो जानता हौं, तौ मैं वायू का भी साक्षी । अग्नी तत्व की पांच प्रकृती । नींद भी मैं जानता हौं, जँभुवाई भी मैं जानता हौं, आलस भी मैं जानता हौं, भूख प्यास आदि अग्नी तत्व का मैं जाननेवाला न्यारा हूं । जल को भी मैं जानता हौं औ जलके प्रकृती को भी जानता हौं । रुधिर, पसीना, मूत्र, बिंदु, और रार, इनका भी मैं साक्षी इनते न्यारा हूँ । पृथिवी की प्रकृती हाड मांस त्वचा नाडी औ रोम इनका जानने वाला मैं स्थूल से न्यारा सूक्ष्म हूं मैं स्थूल नहीं। तीन गुण कहने वाला मैं त्रिगुण नहीं । स्थूल के देवता ब्रह्मा औ गुण रजोगुण इसका भी मैं साक्षी । स्थूल के देवता चौदह । मनके देवता चंद्रमा जासे मन कल्पना करता है । बुद्धिके देवता ब्रह्मा जासे बुद्धि निश्चय करती है । चित्तके देवता नारायण जासे चित्त चलता है । अहंकार के देवता शंकर जासे अहंता आती।नेत्र के देवता सूर्य जासे नेत्र देखते हैं। कानके देवता दिशा जासे कान सुनते हैं । जीभके देवता वरुण जासे जिह्वा को स्वाद होता है । नाकके देवता अश्विनीकुमार जासे नाक को वास लेने का ज्ञान होता है।हाथ के देवता इन्द्र जासे हाथ लेता देता । पांवके देवता उपेन्द्र जासे पांव चलता फिरता है ।

त्वचाके देवता वायू जासे त्वचा को स्पर्श का ज्ञान होता है । वाचा इंद्रिका देवता अग्नि,शिश्नका देवता प्रजापती और गुदाके देवता यम जासे गुदा प्रच्छालन होता है। इस प्रकार चतुर्दश देवतासे अस्थूल का व्यवहार होता है सो मैं चतुर्दश देवता और इनकी इन्द्रिय व्यवहार सहित सब जानने वाला हूं । स्थूल का कोश अन्नमय सो अन्नमय औ अन्नमय कोश जो है सो सबका जाननेवाला मैं अन्नमय नहीं । तारक नाम,त्रिकुटी स्थल,बाल्य अवस्था, ब्रह्मचर्य आश्रम आदि जेतिक स्थूल की संपत्ती हैं सो सबका जानने वाला मैं स्थूल नहीं । जैसा घरका रहनेवाला घर होय तो मैं भी स्थूल होऊंगा तो मैं सूक्ष्म । इसप्रकार से आपनपौ होय के सूक्ष्म देह निज कर जान के बंधन में परा । नाना प्रकारकी क्रिया करने लगा, योग करने लगा, खेचरी आदि मुद्रा, समाधी प्राणायाम आदि इस प्रकार से सूक्ष्म देह के फंदमें बहुतेक फंदा । कोई और अनुमान किया कि मैं सूक्ष्म का जानने वाला सूक्ष्म कैसा; जो स्थूल नहीं तो मैं सूक्ष्म भी नहीं । सूक्ष्म कहिये अंगुष्ठ प्रमाण, स्वप्न अवस्था, शब्द स्पर्श रूप रस गंध ५ । चित्त मन बुद्धि अहंकार ४ । प्राण अपान समान व्यान उदान ५। दश इन्द्रिय सूक्ष्म पचीसवाँ अंतःकरण,छबीसवाँ जीव,इस प्रकार से छबीस कला एकत्र होय तब सूक्ष्म देह होताहै । औ स्वप्न होता है कंठ में सो मैं स्वप्न देखता हौं तो मैं स्वप्न कैसे होऊंगा। सूक्ष्म औ सूक्ष्म की तत्त्व प्रकृति मैं जानता हौं तो मैं सूक्ष्म भी नहीं। अरे जो जल देखने वाला जल होय तो मैं सूक्ष्म होऊँगा । जैसा जल जानने वाला जल से न्यारा तैसा मैं सूक्ष्म ते न्यारा। गृहस्थ आश्रम,गुरु नेह, पिशाच दशा, तैजस अभिमान, सोहं दीक्षा, योग आनंद, अक्षर मात्रा, वेद छंद, द्रव्य शक्ती, मार्तंड दैवत, काम अग्नी, भूचरी मुद्रा, उकार मात्र ,

मध्यमा वाचा, विष्णु देवता, सत्त्वगुण, कंठस्थान, दंडकनाम यजुर्वेद, वरुण दैवत, मठाकाश आदि जेतिक सूक्ष्म देह की संपत्तीहैं सो सब का जानने वाला मैं सूक्ष्म कैसे होऊँगा । तो मैं सूक्ष्म भी नहीं औ स्थूल भी नहीं । स्थूल सूक्ष्म दोनों को जाननेवाला मैं इन सब ते न्यारा सब ते परे ईश्वर । त्वं पद संपूर्ण।इसप्रकारसे जहाँ जहाँ गयेउ, आपनपौ तेहि खोयो तेहि फंद बहु फंदा।तब कोई एक और अनुमान किया किमैं ईश्वर भी नहीं मैं ईश्वर का साक्षी । सुषुप्ति अवस्था का साक्षी । जो सुषुप्ति अवस्था का सुख है सो मैं हृदय में जानता हौं । जो जाना नहीं तो कहा किनने, जो सुषुप्ती मैं कहता हौं तो सुषुप्ती मैं कैसे होऊँगा । सुषुप्ती अवस्था कारण देह । जहाँ प्राण अपान समान व्यान औ उदान हृदय स्थान में ये तत्व मिले तब सुषुप्ती भई । सो मैं जानने वाला चैतन्य ब्रह्म, मेरी अवस्था तुर्या । ये जगत् सब इन्द्रजालवत् अज्ञान में ज्ञान सर्व साक्षी । जब अपान में गंध मिला औ गंध में पृथिवी मिली । प्राण में रस मिला रस में जल मिला उदान में रूप मिला औ रूप में अग्नि मिली । समान में स्पर्श मिला औ स्पर्श में वायु मिला । व्यान में शब्द मिला औ शब्द में आकाश मिला । जब दश तत्त्वन की लै भई तब सुषुप्ती अवस्था भई । सो मैं सुषुप्ती का जानने वाला चैतन्य । सुषुप्ती अचेत औ मैं चैतन्य । कोई कहेगा कि जब सुषुप्ती भई तब कछु खबर रहती है । तो खबर कहना, शब्द स्पर्श रूप रस गंध आदि दश तत्त्व जहां लै हुये तहां खबर किस वस्तुकी रहेगी । जैसा विश्व प्रलय हुवा औ कोई एक सन्यासी रहा सो उन्हें क्या कहना औ किससे कहना औ वस्तुभी कुछ नहीं । ऐसा मैं चैतन्य औ जगत् सब इन्द्रजालवत्, मैं अविनाशी औ जगतस-ब नाशी।कारणदेह औ जेती कारणदेह की सम्पत्ती है सो सब का मैं साक्षी।कारण देह अर्ध पर्व, प्राज्ञ अभिमान, हृदय स्थान, मनोमय कोश,

वानप्रस्थ आश्रम, आत्मलिंग, विश्व प्रलय, उन्मत्त दशा, सुषुप्ती अवस्था, शिवोहं दीक्षा, अद्वैतानंद, निदिध्यास साधन, अज्ञान शक्ती, क्षेत्रज्ञ निर्णय, रुद्र दैवत, मंदाग्नी, तमोगुण तृतीयपाद गायत्री, चांचरी मुद्रा, मकार मात्रा, मध्यमा वाचा, महदाकाश, कपी मार्ग, विश्व प्रलय, अग्नी तत्व, साम वेद, बुद्धि बोद्धव्य व्यवहार, सौलेप्तता भूमिका, आनंदमय आदि जेतिक कारण देहकी संपत्ती है सो मैं जाननेवाला हूं। इस प्रकारसे त्रिगुण त्यागन करके ब्रह्म निष्ठामें जीव बँधा । जहाँ जहाँ गयउ आपनपौ खोयउ। ये अर्थ। तत्पदार्थ। आगे और कोई उलटके तत्पदका शोधन करने लगा। कि मैं जो चैतन्य होता तो चैतन्य कौन कहता। मैं तुर्या अवस्थाका जानने वाला तुर्या नहीं। ज्ञान तो मेरा विकार है। अरे मैं तुरीयातीत कैवल्य आत्मा। ज्ञान अज्ञान दोनों उपाधी, इसका साक्षी मैं विज्ञानरूपी। अरे जगत ब्रह्म उपाधी मैं निरुपाधी आत्मा जो तुर्याका कहनेवाला तुर्या नहीं तो ज्ञान का कहने वाला ज्ञान नहीं। जैसा का तैसा सर्व सम। जैसा नदी का पानी नदी नहीं समुद्र का पानी समुद्र नहीं, परंतु पानी सत्य औ नाम रूप उपाधी मिथ्या। इस प्रकारसे आत्मा सत्य ब्रह्म जगत दोनों उपाधी। तुर्या महा कारणरूप मसुर प्रमाण, नाभीस्थान नील वर्ण, परा वाचा, वायु तत्व, चित्त मन बुद्धि अहंकार, अपान मिला बुद्धि में, प्राण मिला मनमें, उदान मिला अहंकारमें, समान मिला चित्तमें, व्यान मिला अंतःकरण में, इस प्रकारसे महाकारणरूप तुर्या अवस्था; चतुर्थ आश्रम, महा प्रलय, मौन दशा, सायुज्य मुक्ती प्रत्यगात्मा अभिमान सोहं दीक्षा, विदेहानंद, साधन साक्षात्कार, इच्छा शक्ती, ॐपद वडवाग्नी, अगोचरी मुद्रा, शुद्ध सतोगुण, ईश्वर देव, इकार मात्रा, अर्ध चन्द्र, सूर्य क्रिया; अथर्वण वेद चिदाकाश,

मीन मार्ग, सुलीन भूमिका आदि जेतिक उपाधी है सो आत्मा की जगा में नहीं येती उपाधी मेरे को काहे को चहिये,मैं शुद्ध बुद्ध निरंजन निर्विकार । मेरी स्फूर्ति मात्र से जगत निर्माण हुआ जल तरंग न्याय, अहं परमहंस, न दुख न सुख उन्मनी वाचा, स्वसंवेद, निर्गुण न मैं मुक्त न मैं बंध,सर्वोपारि आनंद, अनामयोहं जान, कूटस्थ सदा शिव, पुण्यगिरि ब्रह्माभी, सर्वसाक्षी द्रष्टादृष्टि रहित निर्विकल्प, कलातीत कला, भावातीत भाव, आकाशवत् निजाकाश, मात्रा शून्य, शिखा स्थान, शेषमार्ग, सच्चिदानंद असि पदार्थ । इसप्रकारसे गुरु कहते हैं कि जहां जहां गया तहां तहां फंदा ये जीव बिना पारख । ये अर्थ । अरे जहांलग अनुमान किया तहांलग बढा जब थका तबएक आत्मा कहा।योगी कहिये जो योग ध्यान समाधिकरके पूर्वोक्त मन शांत किया सो कहते हैं क्रिया,सो कहते हैं कि योग है नीका जहां दुतिया नहीं एकानंद । नुंचित कहिये जैनी, मुंडित कहिये संन्यासी, इन कहां सिद्धि पाई कहां स्थिति पाई । ये अर्थ।मौनी जो बोलते नहीं पर उनका मन तो उन्मुन हुवा नहीं फिर उन कहां स्थिति पाई।जटाधारी तपस्वी बिना स्थिति जंगलमें फिरते हैं पशुवत् औ कहतेहैं कि हम योगी हम सिद्ध सहजमें स्थिति पाई । ये अर्थ ।ज्ञानी कहते हैं कि एक आत्मा निरंतर सोहं, दुतिया कोई नहीं सदा एकरस अद्वैत । ये अर्थ । गुणी कहिये भक्त,सो कहते हैं कि हम भगवत भजन में सदा प्रेममें बूडे रहते हैं हम मुक्त । शूर कहते हैं कि हम सर्व आशा बासा छोड के अपना चोला छोडते हैं हम मुक्त । कवि कहते हैं हम ही बडे । सर्व वेद छान छान के नाना प्रकार के कवित्त किये । दाता कहते हैं कि,हम दाता हमही बडे परंतु जहां से पैदा गर्भवास ते तहां समाये तब ज्ञान गुण आदि सभी छूट जायेंगे पारख बिना । ये अर्थ । बायें कहिये बाममार्ग, दहिने कहिये दक्षिण

मार्ग, सो दोनों छोडके निश्चय ज्ञानपद गहिया औ मौनी हुवा कि दूसरा कौन है जासे बोलना, अपने मनसे अनुमान करके मान-लिया । ये अर्थ । माया कहती है कि, जैसे गूँगे ने गुर खाया औ पूछे तो क्या कहेगा इस प्रकारसे ज्ञानी अपने को आप जानके मौन हुवा । ये अर्थ। **कवित्त**—हरी कहिये विद्या माया जासे सकल अविद्या हरे । तेहि बिनु कहीं जीव मूर्ख सकल भर्ममें नसायो है ॥ गंधाकहिये जीवको गंधी देह मेरी कह्यो । विषयनमें लंपट भयो ताते गोता खायो है ॥ १ ॥**गुरुमुख—कवित्त**--ऐसी ऐसी बातें सुनी जहाँ जहाँ जीव गयो । तहाँ तहाँ गुरवने फंदमें फँदायो है ॥ आपनपौ आप खोयो थाप रखी औरनकी। तेहीते बार बार बहुतें ठगायो है ॥ तुर्या-तीत अवस्था आतम जैसेक तैसा है जानिके। अजान भयो अस दे-खत भूलि देखते भुलायो है ॥ कहँ पूरन परख न लह्यो ऐसो गवाँर पारख बिना । फिरि फिरि भयो बुद्धिहीन जहाँको कहाँ समायो है ॥ १ ॥ योगी कहिये कपिल मुनी जिन सिद्ध ऐसो नाम धरयो । जैनी संन्यासी बौध तपसीतु छायोहै॥ज्ञानी सनकादिक औ गुनी नार-दादि भये । शूर भीष्मादि जिन्ह शूरता जनायो है ॥ कवी व्यासादि जिन्ह अष्टादश पुराण गाये। वेदनके सूत्र बनाये महिमा बहु भायो है॥ दाता कहिये कर्ण जे जगमें समर्थ भये । सबै करनी पाछे रही जब गर्भबास पायो है ॥ जगत ब्रह्म दोऊ छोडि आतमपर टिकारह्यो। जैसे गूँगा खायो गुर पूँछेसे क्या बतायो है ॥ २ ॥

शब्द ३९.

ऐसो हरिसो जगत लरतुहै । पांडुर कतहूं गरुड धरतु है ॥
मूस बिलाई कैसन हेतू । जंबुक करै केहरिसों खेतू ॥

अच्चरज एक देखो संसारा। स्वनहा खेदै कुंजर असवारा॥
कहहिं कबीर सुनो संतो भाई। इहै संधि काहु बिरलैपाई।३९।

टीका गुरुमुख–गुरु कहते हैं कि हरी कहिये माया, माया कहिये भक्ती योग ज्ञान, ज्ञान कहिये वेदान्त, सो वेदान्त से सब जगत लरते हैं। ये अर्थ। पांडुर कहिये जीव, गरुड कहिये माया, माया कहिये बानी, बानी कहिये कल्पना, सो जीव से कहीं कल्पना पकडी जाती है। अरे मूससे औ बिलाई से कैसी प्रीति बने। मूस कहिये जीव को, बिलाई कहिये कल्पना; तासों इन्ह प्रीति किया सोई कल्पना इसका काल हुवा। जंबुक कहिये पंडित, केहरी कहिये बानी, बानी कहिये कल्पना, केहरी कहिये स्त्री; सो पंडित लोग वेद बानीसे लडते हैं पक्ष पकड पकड के। ये अर्थ। स्वनहा कहिये गुरुवनको, स्वनहा कहिये ॐकार को, कुंजर मन, असवार जीव, सो गुरु कहते हैं कि पंडित ॐ कारका उपदेश करके जीव को नाना प्रकारके कर्मों में खेदते हैं। ये अर्थ। कहहिं कबीर कहिये गुरु, गुरु कहिये पारख, संतो कहिये पारखी जो परखे, भाई कहिये जीव, सो गुरु कहते हैं जीवको कि हे जीव जो गुरुवा लोगों ने ज्ञान औ कर्म दृढाया सो सब मिथ्या, इसकी पारख कोई बिरले को प्राप्त भई। ये अर्थ। बिरह अर्थ–ऐसा स्त्री से संसार लरता है जैसे गरुड से सर्प लडने गया सो उसने देखसे ही खाय लिया। ये अर्थ। अरे मूसा बिलाई की खुराक पकडनेके वास्ते दांव लगा रही है फिर मूसा बिलाई से प्रीती करने गया ऐसे स्त्री जीवको पकर के खाती है। जंबुक जीव, केहरी स्त्री, सो जीव उस स्त्री से भोग करने लगे सो उसने भग मुख से खाय लिया। गुरु कहते हैं कि ये आश्चर्य जो कुतिया, कुतिया कहिये स्त्री सो जीव को भगावती फिरती है। ये स्त्री किसी के स्वनहा कहिये परखनेमें न आई किसी बिरले ने परखी। ये अर्थ॥ ३९॥

शब्द ४०.

पंडित बाद बदेसो झूठा ।

रामके कहे जगत गति पावै । खाँड कहे मुख मीठा ॥
पावक कहे पांव जो डाहै । जल कहे तृषा बुझाई ॥
भोजन कहे भूँख जो भाजै । तों दुनिया तर जाई ॥
नरके संग सुवा हरि बोलै । हरि परताप न जानै ॥
जो कबहीं उडिजाय जंगलमें । तो हरि सुरतिं न आनै ॥
बिनु देखे बिनु अर्स पर्स बिनु । नाम लिये क्या होई ॥
धनके कहे धनिक जो होवे । निर्धन रहे न कोई ॥
सांची प्रीति विषय माया सो । हरि भक्तन की फांसी ॥
कहहिं कबीर एकराम भजे बिनु । बांधे यमपुर जासी ॥ ४० ॥

टीकागुरुमुख–पंडित कहिये ज्ञानी को, जाकी वेद शास्त्र पढ़िके बुद्धि पंडा होय सो पंडित, पंडित कहिये बड़ी बुद्धि, वास सो गुरु कहतेहैं कि पंडित जो बाद करते हो सो सब मिथ्या । अरे राम के कहेसे संसार की गति होय तो शक्कर के कहे मुंहभी मीठा होगा । जो शक्करके कहे मुख मीठा न होय तो राम के कहे से क्या होगा । ये अर्थ । पावक कहे पांव जो डाहै । जल कहे तृषा बुझाई ॥ भोजन कहे भूख जो भाजै । तो दुनिया तरि जाई ॥ जैसा नरके संगतसे सुवा राम राम बोलता है परंतु राम कौन ये नहीं जानता । फिर जो कधी पिंजरा से उड़िके जंगलमें जायगा तब राम नाम याद भी नहीं रहनेका । इस प्रकार से ये जीव जबलग नरदेही के संग रहता है तबतक ज्ञान भक्ती योग आचरण करता है जो कदहीं देह छोड़के चोरासीको जायगा तब कुछ एक भी खबर नहीं रहने की । अरे जो बीच देखी नहीं औ उसका दर्शन भी नहीं हुआ औ कधी स्पर्श भी नहीं हुवा तो वाके नाम लिये क्या होयगा । ये अर्थ । अरे जो दौलत कहे से दौलत होयतो

कंगाल कोई ना रहै । इस प्रकार से जो राम राम कहे से ज्ञान होय तो अज्ञानी कोई न रहे । ये अर्थ । बानीकी माया सो सांची प्रीति लगावते हैं येही हरिभक्त लोगोंकी फांसी है ॥ गुरू कहते हैं कि एक राम ऐसा अनुमान जो है सो उस अनुमान से भागे बिना ये जीव बंधन में है बांधा गर्भवास को जायगा । ये अर्थ । एक राम कहिये एक आत्मा सो अनुमान तासे भाग औ पारखपर ठहर । ये अर्थ ॥ ४० ॥

शब्द ४१.

पंडित देखहु मनमें जानी ।
कहु धों छूति कहां से उपजी । तबहि छूति तुम मानी ॥
नादे बिंदे रुधिर के संगे । घटही में घट सपचे ॥
अष्ट कँवल होय पुहुमी आया । छूति कहाँते उपजे ॥
लख चौरासी नाना बहुबासन । सो सब सरिभौं माटी ॥
एकै पाट सकल बैठाये । छूति लेत धौं काकी ॥
छूतिहि जेवन छूतिहि अचमन । छूतिहि जगत उपाया ॥
कहहिं कबीरते छूति विवर्जित । जाके संग न माया ॥ ४१ ॥

टीका गुरुमुख—गुरु कहतेहैं कि हे पंडित तुम अपने मनमें बिचार करके देखो कि छूति कहां से उपजी जो छूति तुमने मानी। नादबिंद पुरुष का औ रुधिर स्त्री का मिलिके स्त्रीके गर्भ में तुम्हारा चोला पैदा हुआ औ भगद्वारे से बाहर आया औ छूति कहां से उपजी। चौरासी लक्ष योनी जैसे नानाप्रकार के बासन एक माटी के । सो सब सरिभौ माटी सरि के गलि गये औ एक पाट धरती तापर तब बैठे अब छूति तो भी किसकी लेताहै। ये अर्थ। खान पान सब छूतई भया। स्त्रीके छूति से सब संसार पैदा हुवा। सब छूतिका मूल स्त्री सोतो अंगीकार किया औ छूति किसकी विचारते हो । गुरु कहते हैं कि सोई छूति से न्यारा है जाके संग स्त्री औ कल्पना नहीं । ये अर्थ ॥ ४१ ॥

शब्द ४२.

पंडित शोधि कहो समुझाई । जाते आवागवन नसाई ॥
अर्थ धर्म औ काम मोक्ष कहु । कौन दिशा बसे माई ॥
उत्तर कि दक्षिण पूर्व कि पश्चिम। स्वर्ग पताल कि माहीं ॥
बिना गोपाल ठौर नहिं कतहूं । नर्क जात धौ काहीं ॥
अनजाने को स्वर्ग नर्क है। हरि जाने को नाहीं ॥
जेहि डरसे सब लोग डरतु हैं। सो डर हमरे नाहीं ॥
पाप पुण्य की शंका नाहीं । स्वर्ग नर्क नहीं जाई ॥
कहहिं कबीर सुनो हो संतो । जहांका पद तहां समाई ॥४२

टीकागुरुमुख–गुरु कहते हैं कि पंडित तुम सोधिके समुझायके कहो जासे आवागवन नसाय । ये अर्थ । अर्थ धर्म काम मोक्ष आदि फल कहो कौन दिशामें रहते हैं । उत्तर कि दक्षिण पूर्व कि पश्चिम स्वर्ग पाताल कि माहीं । जाकी थापना तुमने किया । ये अर्थ । भला जो तुमने कहा कि बिना आत्मा कहूं ठौर नहीं सोई मालिक तो आत्मा नर्कमें क्यों जाताहै । मायामुख–माया कहतीहै,कि अज्ञानी जिनोंने आत्मा नहीं जाना ताको स्वर्ग नर्क है परंतु जो ज्ञानी है जिनोंने सर्व आत्मा ऐसा निश्चय किया,उसको ना स्वर्ग ना नर्क, सच्चिदानंद रूप, सदा निरंतर हैं । ब्रह्ममुख–जेहि डरसे सब लोग डरतु हैं । स्वर्ग नर्क औ नाना प्रकारकी चौरासी सो डर हमको नहीं हम शुद्ध चैतन्य । हमको पाप न पुण्य,न विधि न निषेध,न हम स्वर्गको जायँ, न हमको स्वर्गकी इच्छा, हम आत्मा जैसा का तैसा । ये अर्थ । गुरुमुख–गुरु कहते हैं कि हे संतो ये सब मिथ्या जीवका अनुमान है । सो ये जीवने अपने अनुमानसे कल्पना किया औ आप अपने में मग्न हुआ औ कहा कि एक आत्मा । ऐसा कहिके आत्मा जगत् हुवा तब जहां का पद

तहां समाया जैसा का तैसा, सर्व जल तरंग न्याय । जब सर्व आत्मा ठहरा तब गर्भवास का आवागवन का कारण ठहरा जो सर्व आत्मा है तो आवागमन कौन है झांई का पद झांई में समाया तब आवागवन में आपुही है इसवास्ते गर्भवाससे निकरा, हे संतो ! फिर गर्भ में समाया । ये अर्थ ॥ ४२ ॥

शब्द ४३.

पंडित मिथ्या करहु बिचारा । न वहां सृष्टि न सिरजनहारा ॥
थूल अस्थूल पवन नहिं पावक । रवि शशि धरणि न नीरा ॥
ज्योति स्वरूप काल न जहवां । वचन न आहि शरीरा ॥
धर्म कर्म किछवो नहिं उहवां । ना वहां मंत्र न पूजा ॥
संयम सहित भाव नहिं जहवां । सोधौ एक कि दूजा ॥
गोरख राम एकौ नहिं उहवां । ना वहां बेद बिचारा ॥
हरि हर ब्रह्मा नाहिं शिव शक्ति । तीर्थउ नाहिं अचारा ॥
माय बाप गुरु जहवां नाहीं । सोधौं दूजा कि अकेला ॥
कहहिं कबीर जो अबकी बूझै । सोई गुरु हम चेला ॥ ४३ ॥

टीका गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि हे पंडित, जो तुम नाना प्रकार की बानी का बिचार करते हो सो सब मिथ्या । अरे जहां तुम अनुमान कियौ हो तहां न सृष्टि न सिरजनहारा । मानुषसे अनुमान होता है कछु अनुमान मानुष नहीं । ये अर्थ । जब अनुमान मानुष नहीं तो अनुमान में कछु कर्तव्य भी नहीं; तो अनुमान ही है । न वो स्थूल, न वो सूक्ष्म वो तो झांई मिथ्या । न वहां पवन न अग्नी न चंद्र न सूर न धरणी, न नीर, न वहां ज्योति स्वरूप, न वहां काल, न बचन, न शरीर, न कर्म, न धर्म, न मंत्र, न पूजा, न संयम, न भाव; न वहां एक, न दोय, सो मिथ्या झांई । अरे जो जीव का अनुमान तहां

क्या रहेगा । वो मूल में अनुमानई झूठा फिर वहां क्या होयगा । न वहां गोरख न राम एको भी नहीं नजर आवते जो उस अनुमान में लीन हुये औ वहां वेद का विचार भी नहीं । न हरि, न हर, न ब्रह्मा न शिव न शक्ती, न तीर्थ न आचार, न माय न बाप, न गुरु, जहां कछु नहीं सो मिथ्या अनुमान जीव की कल्पना । अरे अनुमानमें क्या रहता है । जैसा अपने मनसे एक आम बनाया औ मनसेई खाया, न जीभ पर मालूम हुवा, न दांत को लगा न खट्टा न मीठा, न पेट भरा न भूख गई । इस माफिक नाना प्रकार के जो अनुमान करते हैं सो कहां हैं हे जीव सो सब तेरी कल्पना । जिन्ह अबकी बख्त समुझि के पारखपर ठहरा सोई गुरु औ हम आत्मा, हम ब्रह्म, हम जगत, ऐसा जो कहै सो चेला इसका परखावने वाला सोई गुरु । ये अर्थ ॥ ४३ ॥

शब्द ४४.

बुझ बुझ पंडित करहु विचारा । पुरुषा है की नारी ॥
ब्राह्मण के घर ब्राह्मणी होती । योगी के घर चेली ॥
कलमा पढि पढि भई तुरुकनी । कल में रहत अकेली ॥
बर नहिं बरे ब्याह नहिं करे । पुत्र जन्मावनहारी ॥
कारे मूंड को एकहु न छाडी । अजहूं आदि कुमारी ॥
मैके रहै जाइ नहिं ससुरे । सांई संग न सोवों ॥
कहैं कबीर मैं युग युग जीवों । जाति पांति कुल खोवों ॥ ४४ ॥

टीका गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि हे पंडित, हे बुद्धिमान, जो तुम सब बिचार किया सो खूब समझो । अरे जो कोई पुरुष अनुमान किया सो कहां है । कि ये जो कहते सो सब बातें भर हैं कहबेमात्र है । ये अर्थ । जो बानी ब्रह्माके घर गायत्री भई औ योगी के घर सिद्धी भई औ मुसलमान के घर कलमा भई, सो सब बानी जीव की कल्पना ।

संसार में अकेली रहती है लेकिन ब्रह्म खुदा ये कुछ नहीं। अरे जो बानी ने एक खसम बताया सो उसने आयके किसी की शादी भी नहीं की औ उसकी आश लगाके विरहनी तो बहुत भई परन्तु विवाह किसीसे भया नहीं औ उसके अनुमानसेही पुत्र होने लगे शिष्य साखा होने लगे। ये अर्थ। ऐसी ये बानी है कि कारे मुंडका कोई नहीं छोडा, स्त्री औ पुरुष सबको भ्रमाया जो खसम कोई ठहरा नहीं अबहूं आदि कुमारी। गायत्री का नाम कुमारिनी ब्रह्मचारिनी। ये अर्थ। मैके कहिये जहां पैदा होय, ससुरे कहिये जहां आशिक होय, सो ये बानी जगत् में पैदा भई औ जगत् में रही। जहां आशिकी गई तहां कदहीं भी गई नहीं। ये अर्थ। जीवमुख—सांई कहिये ब्रह्म को सोई जीव कहताहै कि मैं ब्रह्म, बिचार करके ब्रह्म भया अब मैं चैतन्य हुआ। सोवना कहिये अज्ञान सो मैं अज्ञान नहीं युग युग अविनाशी चैतन्य, ना मेरी जाति न पांति, ना मेरा कुल न कुटुम; ये सब नास्ति में आस्ति चैतन्य। नारी बानी नारी स्त्री। ये अर्थ ॥ ४४ ॥

शब्द ४५.

कौन मुवा कहो पंडित जना। सो समुझायकहो मोहिसना ॥
मुये ब्रह्मा विष्णु महेशू। पार्वती सुत मुये गणेशू ॥
मुये चन्द्र मुये रवि शेषा। मुये हनुमंत जिन्ह बांधलसेता
मूये कृष्ण मूये कर्तारा। एक न मुवा जोसिरजनहारा
कहहिं कबीर मुवा नहिं सोई। जाको आवागवन न होई ४५

टीका गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि पंडित जन कहिये ज्ञानी को, सो हे ज्ञानी लोग मूवा कौन। क्या जड मूवा कि चैतन्य मूवा सो मेरे को समुझाय के कहि देव। जो जड मूवा कहना तो पाँचों तत्व बनेई हैं

औ जो चैतन्य मूवा कहना तो जीव को मरण है नहीं तो मूवा तो भी क्या । जो अनुमान में कल्पना में लगा सोई मरा औ नाम रूप का नाश हुवा केही तरह से कि मरण नाम मिथ्या का है सो जो मिथ्या में लगा सो मिथ्या रूप हुआ । मिथ्या कहिये देह, मिथ्या कहिये ब्रह्म मिथ्या कहिये कल्पना, मिथ्या कहिये अनुमान, ये चार मिथ्यामें जो परा सो मरा, फिर फिर उत्पत्ति प्रलय में परा । जो ये चार मिथ्या को परख के छुटा सो बचा, पारख रूप हुवा आवागवन से रहित हुवा । ये अर्थ । अरे बडे ज्ञानी योगी भक्त सो सभी मर गये कोई बचा नहीं । ब्रह्मा विष्णु, महेश शक्ती औ गणेश ये पांचों देवता सर्वोपर सो भी कई एक बेर पैदा भये औ कई एक बेर मरे परन्तु कोई पारख पायके छूटा नहीं सब धोखे में मरे । ये अर्थ । चंद्र सूर्य शेष हनुमंत, ये भी कई एक बेर पैदा भये औ कई एक बेर मर गये । विना पारख धोखे में परे । ये अर्थ। कृष्ण भी मरे औ कर्तार भी मरे । कर्तार कहिये ईश्वर जो सृष्टि को पैदा किया, झांई के वश होय के सो भी झांई में परा, आपी ब्रह्म कहलाया औ जगतरूपी होय गया नाना कष्ट भोगता है । परंतु एक न मुवा जो सिरजनहारा । सिरजनहारा कहिये झांई धोखा सो ना मरा कि, जाकी समरसताई से जीव को नाना दशा की प्राप्ती भई औ जीव सब ही भूल में परे ताते अनेक दुःख भोगते हैं । ये अर्थ । सो गुरु कहते हैं कि जो झांई में समरस हुआ सो कहां है । वो तो मिथ्या झांई में परा औ सूने घर का पाहुना हुवा औ कहा कि जगत सब मेरा घर औ जगत सब मेरा स्वरूप, कनक कुंडल न्याय, ऐसा कहि के फिर जगत जाल में पहले सरीखे पडे रहे, सो जगमें मरणा जीना लगाई है । परंतु सोई नहीं मूवा कि जिन्हने ब्रह्म

औ जगत् आदि जाल सब परख के छाडा औ पारख स्थिति परम शांति को प्राप्त भया सोई नहीं मूवा। क्योंकि फिर ताको आवागवन नहीं पारख स्थिति सबसे न्यारी। सो सब को परखके शुद्ध पारख हुवा सोई नहीं मुवा औ आवागवन से रहित हुवा। ये अर्थ ॥ ४५ ॥

शब्द ४६.

पंडित एक अचरज बड होई ॥
एक मरि मुये अन्न नहिं खाई। एक मरे सीझे रसोई ॥
करि अस्नान देवन की पूजा। नौ गुण कांध जनेऊ ॥
हँडियां हाड हाड थरिया मुख। अब षट कर्म बनेऊ ॥
धर्मकरे जहां जीव बधतु है। अकर्म करे मोरे भाई ॥
जो तोहराको ब्राह्मण कहिये। तो काको कहिये कसाई ॥
कहहि कबीर सुनो हो संतो। भरम भूलि दुनियाई ॥
अपरम्पार पार पुरुषोत्तम। या गति बिरले पाई॥ ४६ ॥

टीका गुरुमुख–गुरु कहते हैं कि पंडित! ये बडा आश्चर्य है, जो एक मर जाता है अपना बेटा कि अपना बाप तो रोते हैं औ अन्न नहीं खाते हैं। और कोई पशु लायके मारिके उसको रसोईमें पकाते हैं औ खुशी होते हैं। तो क्या अपने सरीखा दूसरा नहीं गरीब जीवको दुख देते हैं उन्मत्त, यही कर्म से वो जीव नाना योनि में जाते हैं औ नर्क भोगते हैं। ये अर्थ। ऊपर डिंब देखो तो स्नान करते हैं, देव पूजन करते हैं, नौगुण का कांधे में जनेउ पहिरते हैं। औ हांडी में हाड, थारीमें हाड, मुखमें हाड, षट्कर्मी कहलाते हैं ब्राह्मण सो ये षट्कर्म बना, जो श्वान का कर्म आचरण करने लगे। और जहां यज्ञ होता है अश्वमेध, नरमेध, गोमेध अजामेध, तहां जीव मारे जाते हैं। तहां कहते हैं कि बडा धर्म।

अरे जहां जीवहिंसा होय सो महापाप ताको धर्म कहते हैं। इस प्रकार से अकर्म करते हैं । जो तुम्हारे को ब्राह्मण कहना तो कसाई किसको कहना ? जो जीवहिंसा करे औ करावै सो कसाई । ये अर्थ । इस प्रकार से सब यज्ञ आदिक करते कराते मारि मारि चौरासी में गये अब कहा सुनो हो सन्तो सब दुनियां नाहक भ्रममें भूली। जो कहते हैं कि अपरम्पार जाका पारावार नहीं सो सबके पार उत्तम पुरुष, निअक्षर ये जीव की कल्पना काहु बिरले को मालूम भई। ये अर्थ ॥ ४६ ॥

शब्द ४७.

पांडे बूझि पियहु तुम पानी।
जहि मटिया के घर में बैठ। तामें सृष्टि समानी ॥
छप्पन कोटि यादव जहां भीजे। मुनि जन सहस्र अठासी॥
पैग पैग पैगम्बर गाडे । सो सब सरि भौ माटी॥
मच्छ कच्छ घरियार बियाने। रुधिर नीर जल भरिया ॥
नदिया नीर नर्क बहिआवै । पशु मानुष सब सरिया ॥
हाड झरी झरी गूद गली गली। दूध कहांसे आया॥
सोले पांडे जेवन बैठे । मटियहि छूति लगाया ॥
बेद कितेब छाडि देहु पांडे । ई सब मन के भर्मा ॥
कहहिं कबीर सुनो हो पांडे । ईसब तुम्हारो कर्मा॥४७॥

टीका गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि हे पंडित ! तुम बूझि के पानी पीते होसो किससे बूझते हो, अरे जिस माटी के घर में तुम बैठे हो ताही में सब सृष्टि समाई तुमसे न्यारा कौन है।ये अर्थ। छप्पन कोटि यादव जहां सरिगये औ अट्ठासी हजार ऋषी सब सारि सारि माटीमें मिलगये सो माटी का एकै पाट पृथिवी तापर सब बैठे अब ये पाट से न्यारा कौनहै

जाकी तुम छूति लेते हो।अरे एक लाख अस्सीहजार पैगम्बर सब माटीमें मिलगये सोई माटीमें सब रहते हैं अब छूति तो भी किसकी लेते हो। ये अर्थ । भला पानी बे छूति कहना तो मच्छ कच्छ मगर आदि जंतु पानी में रहते हैं उसी में जन्मते हैं उनका रुधिर पानी में मिलता है। औ नदी में नर्क गोबर सभी बह आते हैं औ पशु मानुष सब मुर्दा नदी में डारते हैं सो उसी में सरता है । ऐसे पानी तुम अचार करते हो तो ये कसर जाना नहीं । अरे जो किसीने पानी छुइ लिया तो कैसे छूति होता है क्या पानी में कोई मिल जाताहै।तोकोई पानी लावै,पात्र शुद्ध होवे नेत्र से देख लेना औ छानि लेना, तब पावना । अरे शरीरमें सब मैल भरा है औ छूति तोभी किसकी किसकी लेना औ मानना।भला जो गऊ जलपान करती है सो उसको चारों वर्ण छूतेहैं औ उसकी चूँची में से दूध निकलता है। हाड झारि झारि, गूदगलिगलि। सो तो लेके पंडित सब जेवने बैठे औ देह को छूति लगाई । देह तो माटीहै; जो पृथिवी छूति होय तो देह भी छूति औ पृथिवी छूति न होय तो देहभी छूति नहीं । हे वेद किताब सब छाड देव पंडित ये सब मनके भ्रम हैं । जीव कहां है क्या पदार्थ है सभी मिथ्या है । हे संतो ! सुनो ये सब तुम्हारा कर्म है अनुमान कल्पना सब तुम्हारा कर्तव्य । ये अर्थ ॥ ४७ ॥

शब्द ४८.

पंडित देखहु हृदय बिचारी । को पुरुषा को नारी ॥
सहज समाना घट घट बोले । वाके चरित अनूपा ॥
वाको नाम काह कहि लीजै । ना वाके वर्ण न रूपा ॥
तैं मैंक्या करसि नर बौरे । क्या मेरा क्या तेरा ॥
राम खुदाय शक्ति शिव एकै । कहुं धौं काहि निहोरा॥

वेद पुराण कितेब कुराना । नाना भाँति बखाना ॥
हिंदू तुरुक जैनि औ योगी । ये कल काहु न जाना ॥
छौ दर्शन में जो परवाना । तासु नाम मन माना ॥
कहहिं कबीर हमहीं पै बौरे । ई सब सकल सयाना ॥४८॥

टीका मायामुख—माया कहती है कि, हे पंडित हे बुद्धिमान, हृदय में विचारके देखो कि आत्मा पुरुष है कि नारी । सर्व आत्मा घट घट बोलता है सो प्रकृती, आत्मा अबोल, अडोल। अरे वह आत्मा जाका ये सब चरित अनुप, नाना प्रकारका रूप दिखता है । जैसा जल के ऊपर बुदबुदा फेन तरंग ऐसा आत्मा बिना कछु नहीं, बौरा जल न्याय सर्व आत्मा । आत्माको ना वर्ण, ना रूप अरूप, अज, निराकार उसका नाम तो भी क्या कहना । जो सर्व नामका कहने वाला औ सर्व रूप का देखने वाला औ सर्व अक्षर को बनाने वाला, सो उसको क्या कहना ये अर्थ। अरे नर दिवाना तैं मैं क्या करता है, तू मैं को कहां ठिकाना हैं, अरे क्या मेरा क्या तेरा । ये आश्चर्य । आत्मा तो एक तंतु पट न्याय। रामखुदाय शक्ती शिव सर्व आत्मा। ये नाना प्रकार का बिकार आत्मा में खड़ा हुवा पर आत्मा सदा अलिप्त। पवन में जैसे भँवर पैदा होता है औ बिकार बौडर पर मालूम होता है परंतु पवन ही है मृत्तिका घट न्याय। अब संसार नाहक कल्पना करता है तो किस से कहेगा । ये अर्थ । नाना प्रकार की कल्पना किया वेद पुराण कितेब कुरान नाना भाँति बखाना। कोई हिंदू हुवा, कोई तुरक हुवा, कोई जैनी हुवा, कोई योगी हुवा परंतु ये बात किसीने ना जानी कि आत्मा में नाना उपाधी काहे को चाहिये, आत्मा केवल शुद्ध चैतन्य। ये अर्थ। गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि जो छौ दर्शन में प्रमाण भया सोई नाम औ सबने माना औ धोखे में परे। हे जीव, जो छौ दर्शन में प्रमाण भया सो कहां है अरे सब तेरी कल्पना है। मैं ब्रह्म, आत्मा हम, ऐसा कहि के सब

बौराया दिवाना हुवा । सयाना कहिये जीव सो कहने लगा कि ये सब सकल आत्मा सोई मैं । ऐसा गाफिल हुवा बिना पारख । ये अर्थ ॥ ४८ ॥

शब्द ४९.

बुझ बुझ पंडित पद निबान । सांझ परे कहँवां बसे भान॥
ऊँच नीच पर्वत ढेला ना ईंट । बिनु गायन तहवां उठे गीत ॥
वोसनप्यासमंदिर नाहिं जहवां । सहस्रों धेनु दुहावै तहवां ॥
नित अमावस नित संक्रांति । नित नित नौ ग्रह बैठे पांति ॥
मैं तोहि पूछौं पंडित जना । हृदया ग्रहण लागुकेतिखना॥
कहहिंकबीर इतनो नहिं जान । कौन शब्द गुरु लागा कान ॥

टीका गुरुमुख—गुरु कहते कि, हे पंडित बुद्धिमान जो तुमने निर्वाण पद बूझा औ बूझ में समाया । बुझ कहिये ज्ञान, बुझ कहिये बोध, तो चोला छूटेगा तब जानना कहां रहेगा । भान कहिये जानना, सांझ कहिये मरना । ये अर्थ । मायामुख—माया कहती है ऊँच ब्रह्मांड औ नीच पिंडांड सो पिंडांड प्राण ब्रह्मांड में चढावना । जहां ढेला ना ईंट औ बिनु गायन तहां गीत हो सो नाद में मिलि रहना । जहां न ओस न प्यास न मंदिर, निरामय है । जिसको सहस्रों धेनु दुहावती हैं सहस्रों श्रुती जिसको गावती हैं । ये अर्थ । अमावस योग कहिये जहां चंद्र की लय होय औ सूर्य का प्रकाश होय, दोनों नेत्र की काली पुतरीभ्रुकुटी में लै करना। ये अर्थ । शंका में राता सो संक्रांती, सोहं सोहं शब्द में लीन हुवा । इस प्रकारसे नित्य नित्य योगी लोग नौ ग्रह मार के आसन लगायके बेठते हैं। नौ दरवाजा मूंद के सन्मुखी में प्रवेश करते हैं । ये अर्थ । गुरुमुख— गुरु कहते हैं कि हे पंडित, हे योगीजन, मैं तुमको पूछता हौं कि

तुम्हारे हृदय में ग्रहण कब से लगा, ग्रहण कहिये धोखा सो धोखा तुमको कब से लगा । हे जीव जिस वस्तुका अनुमान करताहै उसका तो कहीं ठिकाना नहीं ।इतना भी नहीं जानता जो जीवसे अनुमान बानी कल्पना योग समाधी ज्ञान विज्ञान आनंद सब पैदा होता है तो अब कौन शब्द लेके गुरु कहाते हो । शिष्य लोगोंके कान में क्या कहते हो निर्णय बिना । ये अर्थ ॥ ४९ ॥

शब्द ५०.

बुझबुझ पंडित बिरवा न होय।आधे बसे पुरुष आधे बसे जोय
बिरवा एक सकल संसारा । स्वर्ग शीश जर गई पतारा ॥
बारह पखुरिया चौबिस पात । घने बरोह लागे चहुँ पास ॥
फूले न फले वाकि है बानी । रैन दिवस बैकार चुवै पानी ॥
कहहिं कबीरंकछुअछलोनतहिया।हरिबिरवाप्रतिपालेनजहिया

टीकागुरुमुख–गुरु कहते हैं कि हे पंडित !जानो, बूझ कहिये जानना । पंडित कहिये माया,माया कहिये गुरुवा,सोगुरुकहतेहैंकि ये गुरुवा लोगोंने जो जाना है बूझा है सो अबूझ। अबूझ कहिये धोखा जो कछु नहीं।ये अर्थ ।आधे बसे पुरुष आधे बसे जोय । जो एक पुरुष और एक स्त्री है औ कोई नहीं । ये अर्थ । मायामुख–सब संसार में एक ईश्वर है,जाका शीस स्वर्ग औ जड पतार, स्वर्ग कहिये भँवरगुफा,शीस कहिये ब्रह्मांड, पतार कहिये अर्ध, अर्ध कहिये नाभी जर कहिये जीव सो जाकी स्थिति भँवरगुफा में और सर्व व्यौहार नाभीसो करता है । ये अर्थ। बारह पखुरिया कहिये बारह रासी चौबिस पात चौबिस औतार, तो नाम रूप सर्व उसी का है । ये अर्थ । बरोह कहिये रोमांश, सो एक एक रोम में अनेक ब्रह्मांड चौतरफ लगे हैं । ये अर्थ । फिर कदहीं न फूलता न फलता न बढता

घटता है । उसीकी सब बानी औ उसीके सब चरित्र, रैन दिवस जाकी उत्पत्ती प्रलय, जब आंखि मूँदी तब सर्व प्रलय जब आंख खोली तब सर्व उत्पत्ती।येअर्थ।जाके शरीर का पानी बिकार पसीना सब चूवता है सो सब पानी समुद्र नदी आदि । ये अर्थ । गुरुमुख–गुरु कहते हैं कि जो माया ने उपदेश किया सो मिथ्या कछु है नहीं अरे जब यह मानुष हता तब कोई नहीं हता इसमें कल्पना उठी कच्चे तत्व के सुभाव से, सोई कल्पना ने सब मानुष की बुद्धी हर लिई। तब कहा कि कोई बडा ईश्वर हमारा प्रतिपाल करने वाला होगया तब से बहुत कल्पना करकरके नाना बानी बोला औ आप बंधनमें परा बिना पारख । ये अर्थ ॥ ५० ॥

शब्द ५१.

बुझ बुझ पंडित मन चित लाय । कबहिं भरलिबहैकबहिंसुखाय
खन ऊबै खन डूबै खन औगाह ।रतन न मिलै पावै नहिंथाह
नदिया नहीं सासरी बहै नीर । मच्छ न मरे केवट रहैं तीर॥
पोहकर नहिं बांधल तहां घाट ।पुरइनि नहीं कँवल महँबाट
कहहिं कबीर ई मनका धोख । बैठा रहै चला चहै चोख५१

टीका गुरुमुख–गुरु कहते हैं कि बूझ २ पंडित मन चितलाये। पंडित कहिये ब्राह्म, जो नाभी में मन चित लाय के बूझते २ अबूझ हो गये । बूझ कहिये जीव, अबूझ कहिये ब्रह्म बूझ कहिये जानना अबूझ कहिये न जानना बूझ कहिये चैतन्य अबूझ कहिये अचेत, सो अचेत हुआ।ये अर्थ।अब कबहीं तो बानी सब विधि स्थापना करती जातीहै औ कबही सब निषेध करती है, कि सब विधिवाद मिथ्या । ये अर्थ। ऐसी विधि बानी सुनिके कबहीं ये जीव ऊब उठताहै बेजार होता है. औ कबहूं वही बानीमें डूब जाताहै भ्रम जाता है। औ छिनमें बोलता

है कि अगवाह है । ये अर्थ । रतन कहिये ज्ञान, सो उस ज्ञान अन्त मिला नहीं तब कहा कि अथाह है । जब पार नहीं मिला तब अपार कहा । ये अर्थ । भवसागर कहीं नदी नहीं सासरी कहिये संशय, नीर कहिये पानी, सो संसार सब संशय की पानी में बहता है । ये अर्थ । मच्छ कहिये जीव, केवट कहिये गुरुआ सो सदा नजीक रहते हैं । जीव कुछ मरता नहीं एक चोला छोडा दूसरा बनाया । इस प्रकार से जीव अनेक चोला बनाता है तहां तहां गुरुवा लोग नजीक रहते हैं फांदने को । ये अर्थ । अरे जहां ताल नहीं तहां घाट बांधा, ताल कहिये ब्रह्म सो जहां कुछ नहीं तहां अनुमान बांधा । पुरइनी नहीं, पुरइनी कहिये जीव, कमल ब्रह्म, सो जहां जीव नहीं तहां ब्रह्म अनुमान बांधा, तो जहां जीव नहीं तहां कुछ नहीं । ये अर्थ । अरे जीव ! तेरे अनुमान से ब्रह्म है तू नहीं तहां क्या है ये सब मनका धोखा । जो समाधी करके बैठ रहे हो औ ज्ञान दशा बाल पिशाच मूक जड औ उन्मत्त लेके फिरे सो मनकी कल्पना । ये अर्थ ॥ ५१ ॥

शब्द ५२.

बूझि लीजे ब्रह्म ज्ञानी ।

घुरि घुरि वर्षा वर्षावै । परिया बुन्द न पानी ॥
चिउटी के पग हस्ती बांधो । छेरी बीग रखावै ॥
उदधिमांह ते निकरी छांछरी । चौडे ग्रहे करावै ॥
मेडुक सर्प रहत एक संगे । बिलैया श्वान बियाई ॥
नित उठि सिंह स्यार पै डरपै । अदबुद कथो न जाई ॥
कोने संशय मृगा बन घेरे । पारथ बाणा मेले ॥
उदधि भूपत तरिवर डाहै । मच्छ अहेरा खेले ॥

कहहिं कबीर यह अद्बुद ज्ञाना । को यह ज्ञानहि बूझै ॥
बिन पंखै उडि जाइ अकाशै । जीवहि मरण न सूझै ॥ ५२ ॥

टीका गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि बूझ लीजै जो ब्रह्माका ज्ञान, गुरुवा लोग कल्पित कल्पि उपदेश कर करके दृढाते हैं । ये अर्थ । बुंद कहिये केवल, केवल कहिये ब्रह्म, सो ब्रह्म कहीं नहीं है पानी कहिये बानी, सो बानीभर है औ कछु नहीं । चिंउटी कहिये बानी, चिंउटी कहिये स्थूल, स्थूल कहिये स्त्री, हाथी कहिये मन, मन कहिये कल्पना, कल्पना कहिये सूक्ष्म, सो मननै कल्पना किया तहां चित्त चला सोई बुद्धिने निश्चय किया बोध । सोई, बोध में बोधोहं ये अहंकार मैं कहि के बानी में बंध हुवा। ये अर्थ । औ छेरी कहिये जीव जीव कहिये जो सकल कल्पना करने वाला, बीग कहिये माया, माया कहिये स्त्री, माया कहिये गुरुवा, सोसब जीवन की रखवारी करने लगे जो यह जीव चौरासी के बाहर न जाय । ये अर्थ । उदधी कहिये संसार, संसार कहिये स्त्री, स्त्री कहिये भग, संसार कहिये पुत्र दारा आदिक छांछरी कहिये जीव, चौडा कहिये मैदान, चौडा कहिये जंगल, चौडा कहिये ब्रह्म, ब्रह्म कहिये भ्रम, सो गुरुवा लोगों की बातें सुनि के जीव भग भोगादि संसार छोड के भ्रम में घर किया बनवास किया, परमहंस हुवा, धोखे में परा । ये अर्थ । मेंडुक कहिये जीव, जो संसार सागरमें रहै । सर्प कहिये मन, मन कहिये कल्पना, सो जीव के संग सदा रहती है । ये अर्थ । बिलैया कहिये स्त्री, बिलैया कहिये गुरुवा, बिलैया कहिये काया, श्वान कहिये वेद, वेद कहिये ॐकार, सो ॐकार देहसे उठा तो जीवकी कल्पना से बानी उठी ॥

ॐकार चौपदी कबित्त—प्रथम भँवर गुफा में शून्य । अर्धमात्रा नाभी जान । मकार अर्ध पर्व अनुमान । हृदय स्थान जाहिये ॥ उकार

कंठ में कहि दीन्ह। भर अंगुष्ठ वाकी चीन्ह। अकार त्रिकुटी,में मौलीन। ऐसी बानी मानिये ॥ ऐसी बानी है ॐकार। सारा कल्पनाका थार। काहु कियो न विचार। सब अनुमान जीव ही को ॥ पहिली कल्पना ॐकार। भौ सब जगत को भरतार। आपु हो गयो है नार। जो भरतार सबहीन को ॥ भौ अब बानी को बिस्तार। काहु लह्यो नाहिं पार। खोजत थके हैं अपार। तब बिचार एक कियो है ॥ स्थूल त्यागिये अकार। सूक्ष्म बासना उकार। कारण अज्ञान है मकार। मैं तो साक्षी तीनों का ॥ मैं तू द्वैत जहां मिटि जाय। सोई बिंदु पंचम आय। सोहं आत्मा कहलाय। टीका रह्यो सबहीन को ॥ पूरन परख सुखकी खान। गुरु बिनु देई को पहिचान। सकलोभ्रम-जाला मान। परख माहिं थिर होय रहो ॥ १ ॥

गुरु कहते हैं कि, इस प्रकार से नाना कल्पना जीव में उठी कच्चे चोले के तरफ से। फिर जीव उस कल्पना में खराब होता है। ये अर्थ। सिंघ कहिये जीव, स्यार कहिये माया, माया कहिये बानी, बानी कहिये वेद, सो वेद जीव की कल्पना। सो अपनी कल्पना से अपने-को डर भया। जामें नित्यानित्य लरता रहता है, विचारकरता है।ये बड़ा आश्चर्य। कछु कहा नहीं जाता जो अपनी कल्पना में आप बिचार करके गोता खाता है। ये अर्थ। कौने संशय कहिये जो नाना प्रकार का कवित्व कान में फूंका जावै सो कौने संशय। संशय काव्य, ज्ञान भक्ति और योग। ये अर्थ। मृगा कहिये मन, मन कहिये कल्पना, बन कहिये बानी, बन कहिये संसार; सो संशय की काव्यने मन को बानी में बांधि के संसार में घेरा ब्रह्मास्मि कहाये। ये अर्थ। पारथ कहिये ब्रह्म, जाने परा का अर्थ बताया। परार्थ कहिये ज्ञान, सब एक अनेक हढाने लगे। सायर कहिये बानी को सो जराने लगी। सकल बन सकल संसार सो सब उस

ी के धोखे में जरने लगे । अरे ये बडा आश्चर्य है जो मच्छ भी शिकार खेलने लगे । मच्छ कहिये जीव, सो जीव भी गुरुवाई करके एक अनेक को फँसाने लगे । ये अर्थ । गुरू कहते हैं कि, इस जीवने बेबुध ज्ञान कथा जहां मन बुद्धी पहुँचती नहीं। अब इस जीव की कल्पना में जीव ही परा, अब कौन ये कल्पना को बूझै औ कौन बुझावै पारख बिना अरे बिना पंख अकाश को उडता है। पंख कहिये पक्ष, सो पक्षापक्ष छोड के बोला कि मैं निर्पक्ष आकाशवत्। जीव कहिये जो कभी मरे नहीं मरण कहिये जो धोखा है जहां जीव नहीं । सो जीव धोखा हुवा ब्रह्म हुवा, कछु सूझा नहीं। ये अर्थ ॥ ५२ ॥

शब्द ५३.

वे बिरवा चीन्हे जो कोय । जरा मरण रहित तन होय ॥
बिरवा एक सकल संसारा । पेड एक फूटल तीनि डारा ॥
मध्यकीडारिचारीफललागा । शाखा पत्र गिन को वाका ॥
बेलि एक त्रिभुवन लपटानी । बांधे ते छूटे नहिं ज्ञानी ॥
कहहिं कबीरहम जात पुकारा । पंडित होय सो लेइबिचारा५३

टीका मायामुख–माया कहती है कि उस परमात्मा को जो कोई चीन्हें सो जरा मरण से रहित होय । जरा कहिये वृध, मरण कहिये मृत्यु सो जन्म मरण से रहित होवैगा । ये अर्थ । कैसा जानना कि, बिरवा एक सकल संसार, जगत सब एक आत्मा, जल तरंग न्याय, दूसरा कोई नहीं । ये अर्थ । पेड एक ब्रह्म, तीन डार कहिये ब्रह्मा विष्णु महेश, तामें मध्य की डार विष्णु चार फल के मालिक चार फल अर्थ धर्म काम मोक्ष, जो कोई विष्णुका भक्त होय ताको प्राप्ति होते हैं । सारवा कहिये अवतार औ पत्र कहिये वेद श्रुती, सो

जाके अगनित अवतार अगनित श्रुती कछु गिनती नहीं । ये अर्थ गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि, इस प्रकार की बानी तीनि लोक में लपटाई । बेली कहिये बानी, एक कहिये जीव, सो बानी जीव से बनी औ तीनि लोक में बंधन किया । ये अर्थ । गुरु कहते हैं कि हे जीव, जो अहं ब्रह्म कहते हो सो कहां है मिथ्या कल्पना । ये अर्थ । अहं ब्रह्म कहते कहते सब चौरासी को प्राप्त भये । गर्भ बास में गये जो बडे बडे पंडित भये ते सब । हे संतो, बिना पारख उनकी स्थिति कहां होयगी ये बिचार लेव । ये अर्थ ॥ ५३ ॥

शब्द ५४:

सांई के संग सासुर आई ।

संग न सूती स्वाद न मानी । गयो जोबन सपनेकी नांई ॥
जना चारि मिलि लगन सोधाये। जना पांच मिलि मांडो छाये
सखी सहेलरि मंगल गावैं । दुख सुख माथे हलदि चढावैं॥
नाना रूप परी मन भांवरि। गांठि जोरि भाई पतियाई ॥
अर्घ दै ले चली सुवासिनी। चौके रांड भई संग सांई ॥
भयो विवाह चली बिनु दुलहा । बाट जात समधी समुझाई ॥
कहैं कबीर हम गौने जैबे । तरब कंथ लै तूर बजैबे॥५४॥

टीका गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि सांई कहिये गोसांई, गोसांई कहिये ब्रह्म, ब्रह्म कहिये भ्रम सो भ्रम के संग सासुर आई, गुरुवा लोग-के पास आई । ये अर्थ । न कदहीं सांई के संग सोई औ उसका कछु स्वाद भी नहीं, नाहक धोखेकी मानके मानुष जन्म स्वप्नवत् गया । ये अर्थ । औ सांई कहिये झांई, सासुर कहिये जगत, सोई जीव झांई के संग चौरासी को प्राप्त भया, चौरासी कहिये भग । औ फिर झांईका आश्रित हुवा, परंतु न संगई हुवा न स्वादही मिला ये संसार नाहक

धोखे के भरोसे स्वप्नवत् चला जाता है। ये अर्थ । जना चारि कहिये अंतःकरण चतुष्टय, सो जो कल्पना किया मन ने कि कोई दूसरा कर्ता है तहां चित्त चला । निश्चय किया बुद्धी ने कि सच है। सो माना कि जगत कर्ता ब्रह्म ये अहंकार लगन सोधी । ये अर्थ । और कल्पना किया मन ने कि मेरे सरीखा दूसरा रूप होना, सो चित्त चला तासे विषय पैदा हुवा । निश्चय किया बुद्धी ने कि सो स्त्री पैदा भई । उस स्त्री को माना सो हंकार स्त्री पुरुष का संयोग हुवा ।ये अर्थ । जना पांच कहिके पंचकोश, मांडो कहिये बानी, सो पंचकोश कल्पिके नाना प्रकार की बानी छाई । ये अर्थ।और पांच जना पांच तत्व, जब, मिले स्त्रीके संयोग समय सोई मँडवा चोला तैयार भया। ये अर्थ। सखी कहिये भक्त, सहेली कहिये योगी, सो सब ने एक खाविंद थापन करके मंगल गावने लगे आनंद भये। ये अर्थ । औ सखी कहिये प्रकृति-सहेली कहिये दश इंद्री, सो इंद्री अपना अपना विषय लेने लगी । औ प्रकृति सब अपने अपने भावसे चलने लगी। ये अर्थ । दुख सुख नानाप्रकारके सो जीव पर चढाने लगी हलदी विषय । ये अर्थ । औ दुख सुख बिसरि गया भगवत भजन में। जैसे शरीर में हलदी लगाई औ रगरके निकार डारी ऐसा नाना प्रकारका दुख सुख जो लगा था जीवको सो मैल, उसके ऊपर हेतु भगवत प्राप्ती का, सो हलदी लगाय के दुख सुख दूर किया । ये अर्थ। नाना रूप परी मन भांवरी। नाना रूप कहिये योगी जंगम सेवडा संन्यासी दरवेश ब्राह्मण ये नाना रूप इनकी अनेक उपासना देख के मन भ्रम भया आवागवनके चक्कर में परा। ये अर्थ। और नानारूपकी स्त्री सो देखके मन भ्रमा भगचक्रमें परा । ये अर्थ । जो नाना रूप ने उपदेश किया धोखा सो उसकी गांठी जोर के प्रतीत किया, सुरति ठहरायके ध्यानस्थ हुवा । ये अर्थ।औ जब भगचक्र में मन परा है

तब चित्त चला, बुद्धि ने निश्चय किया, ताका आया सो अहंकार इसप्रकारसे अहंकारकी गांठी परी,ताते जीव दूसरी देह को प्राप्त हुवा।ये अर्थ।अर्घा दै ले चली सुवासिनी संसारसे पानी छोडके भेष अपने संग ले चले विरक्त बनायके। ये अर्थ । कि जब स्त्रीका संकल्प किया तब काम उपजा तब शरीर को लेके सुरति चली स्त्रीसंग करने को। ये अर्थ । कि जब भेष संसार से विरक्त करके ले चले तब एक चौके में बैठाय के ध्यान लखाया कि देख ये तेरा खाविन्द है । तू पतिव्रता-न्याय कि चंद्र चकोर न्याय ध्यान लगाव तब ये जीव रांड भया ध-गड धोखेसे ध्यान लगाया। ये अर्थ । और आप खाविंद था सो स्त्री का संग करके भग द्वारमें प्रीति लगाया विषय से सो आप ही स्त्री हुवा । ये अर्थ।इसप्रकारसे दीक्षाहुई,गुरुवा लोगन के शरणमें जीव गया परंतु जो खाविंदके ऊपर रांड बना सो खाविन्द ना मिला।बाट कहिये भक्ती, सो प्रेम लक्षणा से चलने लगा । तब समधी कहिये ब्रह्मज्ञानी,सो ब्रह्मज्ञा-नी ने समुझाया ब्रह्मज्ञान । ये अर्थ ।कि बाट कहिये भग,सो भग में जाते विषय करते करते,समधी कहिये स्त्री, सो स्त्रीने अपने में सम कर लिया ।जब चोला छूटा तब गर्भवासमें गया फिर पैदा भया। ये अर्थ। जीवमुख--जीव फिर कहताहै कि,हम गौने जैबे।जो सतलोक, जनलो-क,तपोलोक, भूर्लोक, महरलोक भुवरलोक को जायँगे ।अपने खसम का नाम लेके तरेंगे । मुक्ती के नौबत बजावेंगे। ये अर्थ ॥५४॥

शब्द ५५.

नर को ढाढस देखो आई । कछु अकथकथ्या है भाई ॥
सिंघ शार्दूल एक हर जोतिनि । सीकस बोइनि धाने ॥
बनकी भुलइया चाखुर फेरे । छागर भये किसाने ॥
छेरी बाघे ब्याह होत है। मंगल गावै गाई ॥

बनके रोझ धरिदायज दीन्हो । गोहलो कन्धे जाई ॥
कागा कापर धोवन लागे । बकुला कीर्पहि दांते ॥
माखी मूंड मुडावन लागी । हमहूं जाब बराते ॥
कहहिं कबीर सुनो हो सन्तो । जो यह पद अर्थावै ॥
सोइ पंडित सोइ ज्ञाता । सोई भक्त कहावै ॥ ६९ ॥

टीका गुरुमुख—नर कहिये रूप मानुष,रूप मानुष कहिये जगत,सो गुरु कहते हैं कि जगत की ढाढ़स देखो आई।ढाढ़स कहिये दिढापन दिढापन कहिये जहां बंध होय, जहां बंधा होय सो स्त्री औ बानी, सो बानी से जो अकथ कछु कथने में न आवै सो कथा ब्रह्म। ये अर्थ।औ सिंघ कहिये जीव, शार्दूल कहिये माया, माया कहिये काया, सो जीव रूपको एक हरीकी भक्ती में लगाया। हरि कहिये कल्पना। ये अर्थ।सीकस बोइनि धाने । सीकस कहिये सिखापन, सो जो सिखापन जो गुरुवा लोगोंने दिया सोई धान बोया मन अनुमान का बीज बोया। ये अर्थ। बन कहिये बानी, बन कहिये संसार, भुलइया कहिये स्त्री, बन की भुलइया कहिये पंडित, चाखुर कहिये बेद,सो नाना प्रकार की कल्पना करके चार वेद बनाये सो पंडित लोग संसार में दृढ़ावते फिरते हैं। ये अर्थ। छागर कहिये गद-हा, गदहा कहिये ब्रह्मज्ञानी सो जीव सब वेदबानी सुनकर ब्रह्मज्ञानी भये । किसान कहिये जीव। ये अर्थ। छेरी कहिये जीव,बाघ कहिये ब्रह्म,ब्रह्म कहिये भ्रम,सो जीव का ब्रह्मसे व्याह होता है लगन लगता है गुरुवा लोग उपदेश करते हैं । ये अर्थ । मंगल कहिये कीर्तन, सो सर्व भेष भक्तलोग गावते हैं। ये अर्थ । औ बन का रोझ कहिये ॐ कार सो जीव को धरिके दायज दीन्हा उपदेश दीन्हा।येअर्थ। गोह कहिये गुरुवालोग,सो छिपकर कानपर कपड़ा डारकर उपदेश किया। कागा कहिये गुरुवा लोग,कापर कहिये जीव, सो गुरुवा लोग नाना

प्रकार के कर्म लगाय के जीवको धोवने लगे शुद्ध करने लगे। ये अर्थ। बकुला कहिये पंडित, सो पंडित दांत कीर्पने लगे, नाना प्रकार की फलश्रुती कर्मश्रुती दृढावने लगे। ये अर्थ। माखी कहिये संसारके जीव, माखी कहिये बानी सो नाना प्रकार की बानी सुनि सुनि संसार के जीव सब मूंड मुंडावने लगे। ये अर्थ। कोई योगी भये, कोई बैरागी भये, कोई संन्यासी भये, इस प्रकारसे विरक्ति लिया, कि हम भी स्वर्गादि भोग ब्रह्मादि भोग ईश्वरादि भोग करने जायँगे। गुरु कहते हैं कि यह जो सब कल्पना की सो कहां है मिथ्या धोखा है। हे संतो सुनो, जो अनुमान ब्रह्मा ने किया, सोई महादेव ने कहा, सोई विष्णु ने कहा, सो अनुमान सब जगत कहते हैं ताते कल्पि कल्पि गर्भ बासमें जाते हैं। जो ये सब को परखता है सो पारख में रहता है। ये अर्थ ॥ ५५ ॥

शब्द ५६.

नरको नहिं परतीत हमारी।

झूठा बनिज कियो झूठे सो। पूंजी सबन मिलि हारी ॥
षट दर्शन मिलि पंथ चलायो। तिरदेवा अधिकारी ॥
राजा देश बडो परपंची। रैयत रहत उजारी ॥
इतते उत उतते इत रहहू। यम की सांड संवारी ॥
ज्यों कपि डोर बांधु बाजीगर। अपनी खुशी परारी ॥
इहै पेड उत्पति परलय का। विषया सबै विकारी ॥
जैसे श्वान अपावन राजी। त्यों लागी संसारी ॥
कहहिं कबीर यह अदभुत ज्ञाना। को मानै बात हमारी ॥
अजहूं लेहु छुडाय कालसों। जो करै सुरति संभारी ॥ ५६ ॥

टीका गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि नर को नहिं परतीत हमारी। झूठा बनिज कहिये जो जीव का अनुमान, अनुमान, कहिये आत्मा,

अनुमान कहिये ब्रह्म, सो बैपार किया झूठे के संग गुरुवा लोगन के संग झूठे सौदागर कहिये गुरुवा लोग । पूजी कहिये जीव, सो सबन मिलि अपना जीव हारा गुरुवा लोगों के सतसंग में भ्रम में परे । ये अर्थ । ब्रह्मादि गुरुवन की बातें सुनिके जीव सब ब्याकुल भये कि दूसरा ईश्वर है । उसकी प्राप्ती बिना जीव चौरासी में रहता है। ऐसा भ्रम जब जीव में पैठा तब जीव उदास भया। तब घर छोडके जंगल में चला कोई योग धारण करने लगा, कोई कल्पि कल्पि नाना प्रकार का ज्ञान करने लगा, कोई नाना प्रकार के कर्म आचरने लगा, कोई नाना उपासना करने लगा, कोई मैंही ब्रह्म कहने लगा, कोई कर्ता न्यारा कहने लगा, कोई मैं तू छोड के आत्मा बना, इस प्रकार से छौ दर्शन बने औ कल्पि कल्पि नाना मत बनाये जामें संसार को बैराग्य होय । सो उनकी मति देख देखके सब जीव बौराये औ पंथ चले । ब्रह्मा विष्णु महादेव सब पंथ के अधिकारी ठहरे मान्य ठहरे । ये अर्थ । इस प्रकारसे छौ दर्शन की कल्पना, बढी औ त्रिदेवनकी कल्पना बढी तब पंचकोश परपंच रचा तत्त्वमसिका निर्णय किया आखिर जीव सब जहां कछु नहीं तहां उजार में बसने लगे ब्रह्म धोखे में बसने लगे आत्मा ब्रह्म कहाये । ये अर्थ ।इतते उत, जब इधर जगत से स्थूल सूक्ष्म कारण औ महाकारणका निर्णय किया तबब्रह्म हुवा।प्रथम श्रवण किया फिर मननकिया विचार किया अपने मन में,फिर निदिध्यास किया उसपर ध्यासबैठा निश्चय हुवा, फिर साक्षात्कार जो जाना अपने अनुभव से कि सर्व आत्मा अद्वैत है । इस प्रकार से जब अद्वैत आत्मा हुवा तो फिर स्थूल हुवा औ चौरासी सब आपही हुवा जो वो आत्मा हुवा तो चौरासी क्या उससे न्यारी है । इस प्रकार से इतते उत उतते इत रहाही । जो सर्वही में रहते हैं फिर साक्षी कहात हैं। जड का साक्षी चैतन्य। ये अर्थ ।

कोई योग करके इत पिंडांड, उत ब्रह्मांडसो पिंडांडसे प्राण ब्रह्मांडमें रखते हैं और फिर समाधी जागी तब पिंडांड में आतेहैं रहट घट न्याय। कोई गर्भवास से बाहर आया औ फिर गर्भवास में जाताहै। भग से निकरा फिर भग में चला । ये अर्थ । यम की सांड सँवारी । यम गुरुवा, यम स्त्री, सांड संवारी जीव, सो गुरुवा लोगोंकी बातैं सुनि के कहता है । कि मैं चार देह नहीं औ चित मन बुद्धि अहंकार का साक्षी आकाश वत् । तब जैसे आकाशसे चार तत्त्व पैदा भये औ चारों आकाशमें समाये इस प्रकारसे शुद्ध ब्रह्मसे जो स्फूर्णहुवा सो सबल ब्रह्म औसबल ब्रह्मसे तीन गुण पैदा भये स्थूल सूक्ष्म कारण आदि। फिर जब नाश हुये तब एक में एक समाये, मिलिके केवल आकाशवत हुये । फिर जैसे आकाश से पृथिवी तैसा ब्रह्म से जगत, इस प्रकार से जीव गुरुवा लोगोंकी सांड सवारी हुवा आवागमन में पडा। ये अर्थ। औ जब स्त्री के,भगसे निकरा फिर जब स्त्री को देखा तब नाना प्रकार के ब्यौपार करके फिर स्त्री के गर्भ में गया । जैसे बंदर के गरे में रस्सी बांध के बाजीगर नचावै तैसा ये जीव गुरुवन के फंद में फँस के अपनी खुशी नाचता है औ स्त्री के फंदे में विषयन में फँस के नाना योनि में नाचता है। ये अर्थ । इहै बानी से जो गुरुवा लोगों ने झांई बताई सो धोखा उत्पत्ति प्रलय का पेड है। प्रथमारंभ में झांईसे भूला सो ये हाल हुये औ अब फिर झांई में ही माना तब ये जीव पदभ्रष्ट हुवा ।ये अर्थ । उत्पत्ति प्रलय का पेड स्त्री जो पैदा करती है औ फिर अपने गर्भ में छिपाय लेती है समाय लेती है । ये अर्थ। इस वास्ते विषय ज्ञान, विषय योग, विषय विज्ञान, विषय स्त्री आदि जेतिक विषय हैं सो सबही विकार हैं । विषय आनंद। ये अर्थ अरे जैसे श्वान हाड चोखता है सो उसी के दांतसे लोहू निकरता है

औ उसीके जीभको लोहू लगताहै सो वो जानता है कि हाडमें से लोहू निकरता है परन्तु लोहू तो उसके दांतका है । इस प्रकार से जीवमें से आनंद पैदा होता है औ उसमें कल्पना पैदा होती है औ नाना विषय सो जीव मान लेता है कि कहीं बाहर से आता है आनंद । परंतु आनंद जीवसेही होता है औ काम अपना ही झडता है मूर्च्छा अपने हीको आती है; नाहक स्त्री को पकडता ह श्वान हाड न्याय । ये अर्थ । और ध्यान अपने ही अनुमानसे होता है फिर उसमें आपही आनन्द पाता है । औ उपासना आपही से होती है यही जीवके निश्चय से जैसी भावना करता है तैसा रूप खडा होती है इसकी दृढताई से सो ये जानता है कि अपना खाविंद कोइ और जगह से आवता है श्वान हाड न्याय अपनी कल्पना में आपही भूला । ये अर्थ । गुरु कहते हैं कि यावत् कल्पना औ अनुमान औ कर्तव्य सो सब नाशवंत मिथ्या है । जेता ये ब्रह्मादि गुरुवा लोगोंने, अदबुद ज्ञान कथा सो कहां है । गुरु कहते हैं कि सब ससार कल्पना में बौराया अब कौन हमारी बात मानता है । परंतु अब भी कालचक्र ब्रह्मज्ञानादि धोखे से छुडाय लेऊँ परखाय के पारखपर थीर करूँ ये जीव अपने को संभारिके सुरति करे तो, प्रीति से मेरे तरफ देखे । ये अर्थ ॥ ५६ ॥

शब्द ५७.

नाहारि भजसि न आदति छूटी ।
शब्दहि समुझि सुधारत नाहीं । आंधर भये हियेहुकी फूटी ॥
पानी मांहि पषानको रेखा । ठोंकत उठै भभूका ॥
सहस्र घडा नित उठि जलढारै । फिर सूखेका सूखा ॥
सेतहि सेत सितग भौ । सैन बाढु अधिकाई ॥

जो सन्निपात रोगियन मारै। सो साधुन सिद्धि पाई ॥
अनहद कहत कहत जगबिनसै। अनहद सृष्टि समानी ॥
निकट पयाना यमपुर धावै। बोलै एकै बानी ॥
सतगुरु मिले बहुत सुख लहिये। सतगुरु शब्द सुधारै ॥
कहहिं कबीर ते सदा सुखी हैं। जो यह पदहिं विचारै ८७ ॥

टीका गुरुमुख–गुरु कहते हैं कि, नाहरी कहिये बाघिन, नाहरी कहिये माया, माया कहिये काया, काया कहिये स्त्री, सो ना तो स्त्रीसे तूं कदही भागा ना तेरी आने जाने की आदत छूटी । ये अर्थ । कि नाहरी कहिये बानी, सो बानी तेरे परखने में कदहीं आई नहीं औ तेरी आदत जो कल्पना सो कदहीं भी छूटती नहीं ताते आवागमन में परा। ये अर्थ। औ शब्द ॐकार सोई समुझके धोखेमें परा । ये नहीं जानता है दिवाना कि ॐकार का आदि कौन है जो सब का खसम बना है। सो सब जीव की कल्पना है बिना जीव शब्द कौन अनुमान करेगा। ॐकार की आदि जो ॐकार को लिखै औ मेटि डारै सोई है ऐसा समुझिके सुधारता नहीं नाहक धोखा खाता है । ये अर्थ । प्रत्यक्ष देखता है कि नाना कल्पना जीव करताहै औ नाना बानी मानुषही बोलता है फिर सब वेदका प्रमाण करताहै औ कर्ता कोई दूसरा मानता है ऐसा अंधा हुवा । औ हियेकी फूटी बुद्धि नाश हुई । ये अर्थ। पानी कहिये बानी, पषान कहिये मन, रेखा कहिये बुद्धी, सो नाना प्रकार की बानीमें मानुष ने अपने बुद्धिसे निश्चय किया। अब जराई जीवको ठोंको, कहीं तो आगि का भभूका होता है क्रोधित होता है । ये अर्थ । सहस्त्र घडा कहिये जो हजारों चोले धरि धरिके जीव ने छोडे । जैसा रात दिन, दिन रात, फिर सूखे का सूखा हुवा, फिर आत्माका आत्मा बना। ये अर्थ। सेत

कहिये शून्य, सेत कहिये मिथ्या,सो झूँठ धोके को अनुमान करके आप भी झूठा हुवा, ब्रह्म अनुमान करके ब्रह्म हुवा । ये अर्थ। सैन कहिये अनुभव सो बहुत बढा अनुमान बहुत बढा । ये अर्थ । सन्निपात रोग कहिये ज्ञान दशा, मूक बाल पिशाच उन्मत्त जड़वत इस प्रकारसे जीवको हुवा । सो जीवको पारख कैसा मिलेगा क्योंकि उन्मत्त भया ये अर्थ । अनहद कहिये जाकी हद नहीं, जाकी हद नहीं सो अनुमान सो अनुमानकी कछु हद तो है नहीं जहां लों बढा तहां लों आगेई बढताहै।इस वास्ते सब जग अनहद ब्रह्म अनहद ब्रह्म कहिके नाश हुवा फिर सृष्टी में समाया ब्रह्म बनके । ये अर्थ । अरे मौत नो नजीक आई औ गर्भमें जाता है विना स्थिति औ नाहक अनुमान करता है बोलै एकै बानी एक आत्मा बोलताहै । ये अर्थ । जीवमुख–सतगुरु मिले बहुत सुख लहिये । सत कहिये ॐकार, गुरु कहिये सोहँ सो चित सोहं सोहं में मिले तो बहुत सुख लहिये आनंद लहिये, सच्चिदानंद । इस प्रकारसे सतगुरुमें ऐसा जो शब्द ताका निरुवार किया, सतगुरु शब्द को सुधारे विचारै। ये अर्थ । गुरुमुख–हे जीव जो ये सच्चिदानंद भये सुखी भये सो कहां है कहां रहे जिन्ह यह पदका बिचार किया सो कहां हैं । अनुमानमें मग्न होयके गर्भवास को गये । ये अर्थ ॥ ५७ ॥

शब्द ५८.

नरहरि लागि दौं बिकार बिनु इंधन । मिलै न बुझावनहारा ॥
मैं जानों तोही से व्यापै । जरत सकल संसारा ॥
पानी मांहि अग्नि को अंकुर । जरत बुझावै पानी ॥
एक न जरे जरें नौ नारी । युक्ति न काहू जानी ॥
शहर जरे पहरू सुख सोवै । कहै कुशल घर मेरा ॥
पुरिया जरै वस्तु निज उबरै । बिकल राम रंग तेरा ॥

कुबजा पुरुष गले एक लागा । पूजि न मन के सरधा ॥
करत विचार जन्म गौ खीसे । ई तन रहत असाधा ॥
जानि बूझि जो कपट करतु है । तेहि अस मंद न कोई ॥
कहहिं कबीर तेहि मूढ को । भला कौन बिधि होई ॥९८॥

टीका गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि नरहरी कहिये बानी, नरहरी कहिये स्त्री, नरहरी कहिये कल्पना जो नरको हर लेइ सो नरहरी सो बानी की आग बिकार कल्पना लगी। सो कहीं इन्धन नहीं, इन्धन कहिये ब्रह्म सो ब्रह्म तो कहीं है नहीं औ उसके बिरहसे ये संसार सब जरता है । ये अर्थ । अरे ये आगी को बुझाने वाला परखावनेवाला न मिला । अब पारख मैं जानता हौं कि यह आगी तेरेई से लगी । अरे बिना जीव कल्पना कहां से उठेगी । कल्पना निर्जीव, इस वास्ते सब कल्पना तेरेई से उठी । अब, सब संसार जर रहा है। ये अर्थ । पानी कहिये बानी, अग्नी को अंकुर ब्रह्म, सो बानी सुनि के जीव को अनुमान हुवा औ जीव सब जरने लगे । जब बानी सुना तब कहा कि कोई कर्ता है तब कर्ता की प्राप्ति के वास्ते नाना कर्म करने लगे घर घर दुनिया में वैराग्य उठा । ये अर्थ ।

कवित्त—अब कोई त्यागी औ कोई बैरागी, कोई अभागी पंच अगनि में जरि रहे । कोई संन्यासी कोई जटाधारी, कोई करकर-तपस्या कोई बनहीं में मरि रहे ॥ खैंचि कोई श्वासा अर्ध की ऊर्ध चलाये, करिके बहु योग कोई गुहन में परि रहे । कोई सखी भाव धार नीर झरन लागे नैनन से, कोई अन्न बस्त्र छांडि दूब जंगल की चरिरहे । कोई ठाढेश्वरी कोई ऊर्धबाहु कोई मौनी बने कोई के नेत्र उलटे तने खेचरीसी धरिरहे। कोई बाल कोई पिशाच मूक जड उन्मत्त भये, सबै बातैं छांडि पूरण आत्मा से बनि रहे ॥ १ ॥

इस प्रकार बानी में अग्निका अंकुर निकरा औ सब जरने लगे तो बानीसेई बुझावने लगे समुझावने लगे कौन प्रकार से सो सुनो । एक न जेर जरें नौ नारी । एक आत्मा नहीं जरता अजर । ये अर्थ । जरेंनौ नारी, जगत नास्ति,नौ व्याकरण नास्ति,शब्दनास्ति आत्मा निःशब्द ये युक्ती काहु नहीं जानी।युक्ती कहिये विचार सो विचार आत्माको काहु नहीं जाना । ये अर्थ । शहर, संसार,शहर शरीर, सो नाना प्रकारके बिरहमें औ नाना प्रकार के दुख में जरता है औ पाहरू कहिये जीव, सो धोखामें मग्न होय रहा है गाफिल हो रहा है । सुख सोहँ तामें समाधी भई सोया। ये अर्थ। जीवमुख--तब जीव क्या कहता है ।कहै कुशल घर मेरा ।कहै मेराआनद घर । ये अर्थ । मायामुख--पुरिया बानी, पुरिया देह, सो नाम रूप नास्ति आत्मा सत्य । ये अर्थ।गुरु-मुख--गुरु कहते हैं कि बिकल राम रंग तेरा। राम रंग कहियेज्ञानरंग ज्ञान समाधी, सो सब देह रहेगा तब लग है।जोकहता है कि मैं आत्मा सो भी जब देह छूटेगा तब सब बिकल होयगा बिना पारख सब नाश होयगा । ये अर्थ । जैसे कोई तरुण स्त्री के गले नपुंसक पुरुष लगा तो उससे कछु स्त्रीके मन की श्रद्धा पूरी नहीं भई । स्त्री तरुण औ पुरुष नपुंसक श्रद्धा पूरण कैसे होयगी । इस प्रकार से एक ब्रह्म इस जीव के गले लगा गुरुवा लोगों के उपदेश के प्रमाणसे। सो अनु-मान मिथ्या औ जीव तो तरुण चैतन्य । अब अनुमान का प्रमाण करके आपने नारी भाव लिया, उसको पुरुष बनाया औ कल्पना बढी तरुण हुई, सो इसकी कल्पना कुछ अनुमानसे बूझी नहीं । क्योंकि जीव की कल्पना निर्जीव से कैसे बूझेगी । तब नाना बिचार किया बिचार करते करते जन्म खीस गया, आयुर्बल संपूर्ण भया, तब ये तन रहिगया असाध्या । अब कहा कि कछु नहीं सर्व मिथ्या जैसे का

तैसा। ये अर्थ । अपार, आनंद रूप, अथाह, अभेद । जब पार नहीं पाया तब कहा अपार, जब थाह नहीं पाया तब कहा अथाह, जब भेद नहीं पाया तब कहा अभेद, जब चित्त मन बुद्धी सब थकी तब कहा आनंद, इस प्रकार से जानि बूझि जो कपट करतु है । समुझ बूझि के जो धोखा में परते हैं। तेहि सम मंद न कोई । अरे जो जानता है औ देखता है, कि बिना जीव कछु नहीं होता और फिर कल्पना करता है तेहि अस मूर्ख और कोई नहीं । गुरु कहते हैं कि तेहि मूढको भला कौन बिधि होय, आवागवन से कैसे रहित होय बिना पारख। ये अर्थ ॥ ५८ ॥

शब्द ५९.

माया महा ठगिनी हम जानी ।
त्रिगुणी फांस लिये कर डोले । बोले मधुरी बानी ॥
केशवके कमला है बैठी । शिव के भवन भवानी ॥
पंडा क मूरति है बैठी । तीरथहू में पानी ॥
योगी के योगिनि है बैठी। राजा के घर रानी ॥
काहू के हीरा है बैठी । काहूके कौडी कानी ॥
भक्ता के भक्तिन है बैठी । ब्रह्माके ब्रह्मानी ॥
कहहिं कबीर सुनो हो संतो । ई सब अकथ कहानी॥५९॥

टीका गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि माया कहिये गुरुवा, माया कहिके स्त्री, सो दोनों महा ठगिनी, जो सब को ठगे सो ठगिनी सो देखो ये जीवको कैसे ठगा। कहीं ब्रह्म बनाया, कहीं आत्मा बनाया, कहीं ईश्वर बनाया, और कहीं न कछु ठहराया ये गुरुवा लोगों ने। जैसा कोई सपना देखे अरु तैसा ही बोले, इस प्रकार से एकही जीव जैसी कल्पना देखने लगा। तैसेई बोलने लगा। ये अर्थ । कि जैसी माया

कहिये स्त्री । सो देखो ये जीव को कैसे ठगा । कहीं ब्राह्मण बनाया, कहीं क्षत्री बनाया, कहीं वैश्य, कहीं शूद्र, कहीं यवन, कहीं अतिशूद्र बनाया । औ गुरुवा लोगोंने कहीं योगी, कहीं जंगम, कहीं सेवडा, कहीं संन्यासी, कहीं दर्वेस, कहीं ब्रह्मचारी, औ कहीं वैरागी बनाया । इस तरह से मानुषको ठगाया । ताते महा ठगिनी हम जानी । ये अर्थ । त्रिगुणी फांस कहिये बानी वेद, त्रिगुण कहिये भक्ती ज्ञान योग, सो तीन प्रकार की बानी लेके गुरुवा लोग फिरने लगे । मीठी मीठी बातन से जीवनको दृढाने लगे । ये अर्थ । औ त्रिगुण कहिये काम क्रोध मोह, सो त्रिगुण फांस लेके स्त्री सब जीवनको फँसाती है ॥

छप्पै—प्रथम देखते देय उठाय के काम को ।
जब जीव कामी भयो तजो धन धाम को ॥
अब निशदिन देखत फिरै नारिनके चाम को ।
तब ज्ञान बुद्धि सब गई भयो बेकाम को ॥
ये प्रकार की फांस त्रिया अपने कह लीन्हि सु आज ।
कहहिं पूरण फंद जाहुगे नहिं तो नर ताहि तज ॥ १ ॥
जा त्रिया से यही रत्यो ताही से और जो राते ।
तब ऊठै क्रोध मनमांहिं करन चाहे जिव घाते ॥
कोई कहै लाख समुझाय मानै नहिं एको बाते ।
कहै मरौं मारौं मैं ताहि याहि नारी के साथ ॥
तें देखु फांस यह नारिकी नाहक मैं नर मरि रह्यो ।
कहहिं पूरण यह अधम नर गुरु पारख नाहीं लह्यो ॥ २ ॥
जब लग्यो नारिको मोह तब ये हिये बहुत फंदानो ।
धन सुत गृहके काज आपनो हित नहिं जानो ॥
भय भय धावत फिरै चाहि खर्चनको नानो ।
त्रिया को वस्त्र चाही और कछु चाहै सोनो ॥

ऐसेहि करत करत एक दिन मरिगो निलज ।
त्रिगुणी फांस यह नारि की ताते पूरण कहत तज ॥ ३ ॥

माया दो प्रकार की मोटी औ झीनी । सो झीनी कहिये गुरुवा लोगों का उपदेश, उपदेश कहिये ज्ञान भक्ती औ योग, मोटी माया कहिये स्त्री घर धन आदि। ये अर्थ। अब माया केशव के कमला होय बैठी। केशव कहिये जो जल के ऊपर शयन करे सो केशव,के कहिये जल, शव कहिये सोना, जल कहिये क्षीर सागर; तापर शयन करने वाला जो नारायण तिनके संग कमला होय बैठी । कमला कहिये जो कमल से पैदा होय,जो कमल से पैदा भई सो लक्ष्मी, तो लक्ष्मी होय बैठी। ये अर्थ। केशव कहिये ज्ञानी, केवल कहिये झांई, के कहिये पानी, पानी कहिये बानी, शव कहिये सोना; सो जो बानी में सोया, सुनिके विचार के निश्चय ठहराय के जाना कि आत्मा। तहां केवल होय बैठी। ये अर्थ। शिव के भवन भवानी। शिव कहिये जो सदा समाधी में मग्न रहै। सो शिव का भवन कैलास तामें भवानी पार्वती होय बैठी। औ शिव कहिये आनंद, आनंद में अहं शक्ती भई। ये अर्थ। पंडाके मूर्ति होय बैठी। पंडा कहिये पुजारी तिन के यहां मूर्ति प्रतिमा भई। तीर्थ गंगादि पुष्करादिकनमें पानी होय रही और सबन को अरुझाया। ये अथ। योगी कहिये जो योग करे। योग कहिये जो पांच कर्म इंद्रिय औ पांच ज्ञान इंद्रिय, पचीस प्रकृति सहित मन लय करे सो योगी। तिन के यहां अणिमा, लघिमा, गरिमा, महिमा आदि सिद्धि होय बैठी। ये अर्थ। राजा के घर रानी बनी। राजा कहिये मानुष सो मानुष के यहां स्त्री बनी। ये अर्थ। काहू के हीरा होय बैठी। काहू के हीरा की प्रीति औ काहू को कौड़ी प्यारी भई। ये अर्थ।

भक्त लोगों के यहां नौधा भक्ती औ भक्तीन बनी । ब्रह्मा के यहाँ ब्रह्मानी बनी सावित्री बनी । ये अर्थ । गुरु कहते हैं कि कहां है ई सब अकथ कहानी । जो ये माया की बात अकथ है कथने में नहीं आवती, मिथ्या अनुमान । ये अर्थ । नाना प्रकार की माया पैदा भई औ नाश हुई । जो जीव मान लेइ सो माया औ न माने तो ब्रह्म ये दोनों मिथ्या पारख सत्य । ये अर्थ ।

कवित्त—माया बडी बलवंड, कियो सबहिन को खंड, व्यापि रही ब्रह्मंड, तीनों देव जेर किये । त्रिगुणी फांस लीन्ही हाथ, किये बहुते अनाथ, काटे बहुतन के माथ, भई न संग काहु के । तब तो मिथ्या यह बात, जीव माने चली जात, उलट जीव ही को खात, घात देखो जीव की । पूरन पखर दियो छांड, गह्यो तत्वन की मांड, ताते फाटत है गांड, त्राहि त्राहि करतु है ॥ ५९ ॥

शब्द ६०.

माया मोह मोहित कीन्हा । ताते ज्ञानरतन हरिलीन्हा ॥
जीवन ऐसो सपना जैसो । जीवन सपन समाना ॥
शब्द गुरु उपदेश दीन्हो । तैं छाड परम निधाना ॥
ज्योति देखि पतंग हुलसै । पशू न पेखै आगि ॥
कालफांसनर मुग्ध न चेतहु । कनककामिनी लागि ॥
शेख सय्यद किताब नीरखै । सुमृति शास्त्र बिचार ॥
सतगुरुके उपदेश बिनु तैं । जानीके जीव मारे ॥
कर बिचार बिकार परिहर । तरण तारण सोय ॥
कहहिं कबीर भगवंत भजुनर । दुतिया औरन कोय ॥ ६० ॥

टीका गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि माया मोह मोहित कीन्हा माया कहिये गुरुवा, माया कहिये स्त्री सो नाना प्रकार की बानी

सुना सुना के जीव सब मोहित किये । ताते ज्ञान रतन हरि लीन्हा जीव सब अज्ञान दशा को प्राप्त भये अचेत भये । ये अर्थ । अब जीव को जीना मरणा कैसा भया जैसे स्वप्न जैसे जागृतिसे स्वप्न औ स्वप्न से जागृती इस प्रकार जीव स्वप्न में समाया अनुमान में समाया । ये अर्थ । जो शब्द ब्रह्माने उपदेश किया ॐ सो तू छोड, हे परम निधान हे जीव । ये अर्थ । ज्योति देखि के जैसा पतंग का मन हुलास होता है औ फिर उस ज्योती में गिरता है इस प्रकार से संसार पशू नहीं देखता कि, ये बानी औ स्त्री आगि है जामें सब जरता है । जैसा पतंग ज्योती देखा औ हुलास हुवा इस प्रकार से इस पशू ने जब स्त्री देखा तब इसका मन हुलास हुवा । जब मन हुलास हुवा तब ये स्त्री से रता, गर्भाग्नी में जरा । ये अर्थ । परंतु ये नहीं देखा कि मैं आज तक ब्रह्माग्नी में औ गर्भाग्नी में जरता हौं । अरे ऐसा नर मूर्ख भया जो इसको काल की फांस नहीं मालुम भई । काल कहिये कल्पना, सो कल्पना की फांसी परी जीव ने प्रेम लगाया कनक कामिनी में ।

चौपदी-कनक औ कामिनी दोऊ आपुहि कल्पि ठाढिकियो। ताही के बश भयो, ताते बहु दीन है ॥ कोई कारि रहे ज्ञान; कोई बैठि धरे ध्यान कोई नाटक चाटक पुराण कथि, ताही में लीन है॥ कोई करत बहु उदीम,कोई धौंकत पषान कोई करत प्रयोग धन के, नर याही में छीन है॥ पूरन कहते अनाथ, कनक औ कामिनी की बात । मोपै कही नहीं जात, जैसी इन्ह कीन्ह है ॥ १ ॥

शेख सय्यद कितेब निरखें। कोई हिंदु स्मृति शास्त्र का विचार करते हैं। परंतु मुसलमानके सतगुरु जो महम्मद भये उनभी नहीं उपदेश

दिया कि जीव हिंसा करना औ हिंदू का सतगुरु ब्रह्मा इन्ह भी नहीं जीव हिंसा करने का हुकुम दिया। देखो ये जानते हैं कि जीव है औ फिर मारते हैं। ये अर्थ । इसवास्ते गुरु कहते हैं कि विचार करके जेता मन वच कर्मसे विकार पैंदा हुवा है सो सब छोड देव अरे जिन विचार करके सब परख के विकार त्याग दिया सोई पारखी पारखी कहिये जो पारख भूमी पर रहे, तद्वत् होय सोई गुरु, सोई तरन तारन । ये अर्थ । हे जीव जिसे तुम भगवान कहते हो सो कहां है मिथ्या धोखा तेरी कल्पना सो। तुम तज देव परखके पारखपर थीर रहो। ये अर्थ ॥ ६० ॥

शब्द ६१.

मरिहो रे तनका ले करि हो। प्राण छुटे बाहर ले डरिहो ॥
काया बिगुर्चन अबननिभाँती। कोइ जारे कोइ गाडे माटी ॥
हिंदु ले जारे तुरुकले गाडे। यहि बिधि अंत दुनों घर छाडे॥
कर्मफाँस यम जाल पसारा। जस धीमरे मछरी गहि मारा ॥
राम बिना नर होइ है कैसा। बाट मांझ गोबरौरा जैसा ॥
कहहिं कबीर पाछे पछतैहो। या घर से जब वा घर जैहो६१

टीका गुरुमुख-गुरु कहते हैं कि हे जीव भला जो तनका अभिमान करके मानते हो। कि मैं ब्राह्मण, मैं क्षत्रिय, मैं वैश्य, मैं शूद्र, मैं सुन्दर, मैं कुरूप, मेरी देह, मेरा घर, मेरी स्त्री, मेरा पुत्र, ऐसी देहमें मानके देह सम्बन्धी सब व्योहार मान करते हो ताके पीछे नाना प्रकार के सुख औ दुख भोगते हो, सो जब मरोगे तब तुम्हारे संग कछु नहीं रहेगा। अरे जब देह छूट जायगा तब व्योहार औ जाती बर्ण कुल सबही रहि जायगा, तेरे काम कोई आनेका नहीं । जाको तू मेरी देह कहता है सो भी तेरे काम नहीं आने की प्राण छुटे

उपरांत सब बाहर डार देयेंगे । और जो काया को लोग अनेक तरह से मान रहे हैं सोई सब माटी में मिलाय देयेंगे । हिंदू जराते हैं औ तुरुक गाडते हैं इस प्रकार से अंत में दोनों घर छाड़ते हैं फिर जाती कुल वर्ण कहां रहता है । तो नाहक मिथ्या धोखे में पचि पचि क्यों मरते हो परख के छोड़ देवा।ये अर्थ।जो तू नहीं छोडेगा तो फिर ये सब अंत में आपही छूट जायेंगे । फिर उस के अध्यास से तेरे को नाना प्रकार के दुःख औ जन्म प्राप्त होयगा जन्म का कारण अध्यास है सो तुम परख के छोड देव । ये अर्थ । कर्मफांस जो गुरुवा लोगोंने दृढ़ाई है सो सब जाल है, तामें जीव सब फँसे हैं तासे जन्म मरण को प्राप्त होते हैं । जैसा धीमर मच्छ पकड़ने के हेत जाल बनाता है, तामें माटी की आसा लगाता है औ जब पानी में डारता है तब आवाज होता है । सो सुनि के मच्छ सब मिलते हैं कि कछु चारा आया फिर जाल में आय के फँसते हैं । तेहि प्रकार से ब्रह्मादि गुरुवा लोगोंने कल्पना कर करके कर्मफांस का जाल पसारा है कि संध्यादि योगादि उपासनादि कर्म किये बिना जीव का कल्याण नहीं । इसवास्ते चारों वर्णने अपने अपने कर्म आचरण करके देवतन की उपासना करना देवता प्रसन्न होय तब जीव का परम कल्याण होयगा । धन धान्य मान सन्मान आदि सिद्धि प्राप्त होयगी अन्त समय में देव लोक प्राप्त होयगा।और योग साधना करके भगवान जो सर्वव्यापी है तिनके स्वरूप में एक होना तासे जीव का कल्याण है । औ मन की सदा एकाग्रताई होने से वाचा सिद्धि औ मनसा सिद्धि औ त्रिकाल ज्ञान होता है ऐसी आशा लगाई । तब जीव सब जाय के कर्मजाल में फँसे औ आशा में बंध होयके मरे तासे फिर जन्म को प्राप्त भये । इस वास्ते गुरु कहते हैं कि, राम बिना नर होइ है कैसा कि, जैसे बाट में गोबरौरा कीडा गोबर की गोली बांध के फिर उसके पीछे ढनगता

फिरता है फिर उसी छंद में मरता है कीट की स्थिति कहीं होती नहीं। इसी तरह यह जीव राम राम कहते कहते कल्पना में पडके मरता है फिर अध्यास बश नाना जन्म प्राप्त होता बिना पारख। अरे जिसका नामस्मरण करते हो सो वस्तु क्या है औ कहां है। जब तुम्हारा नाश होयगा तब तुम्हारा अनुमान कहां रहेगा। ये देह छोड के फिर गर्भवास में जोवोगे तब पीछे पछतावोगे। ये अर्थ ॥ ६१ ॥

शब्द ६२.

माई मैं दूनों कुल उजियारी।

सासु ननद पटिया मिलि बंधलों। भसुरहि परलों गारी ॥
जारो माँग मैं तासु नारि का। जिन सरवर रचल धमारी
जना पांच कोखिया मिलि रखलों। और दुई औ चारी ॥
पार परोसिनि करों कलेवा। संगहिं बुधि महतारी ॥
सहजे बपुरे सेज बिछावल। सुतलिउं मैं पांव पसारी॥
आवों न जावों मरों नहिं जीवों। साहेब मेंट लगाई ॥
एक नाम मैं निजुके गहिलों। ते छूटल संसारी ॥
एक नाम मैं वदिके लेखों। कहहिं कबीर पुकारी ६२

टीका जीवमुख—माई कहिये माया, माया कहिये काया, काया कहिये जगत, सो जगत में जीव बोलता है कि, मैं दोनों कुल में प्रकाश हौं, दोनों कुल कहिये ब्रह्म औ जगत। सो मैं ब्रह्म का प्रकाशी औ जगत का प्रकाशी क्षरका प्रकाशी औ अक्षरका प्रकाशी, जीव का प्रकाशी औ ब्रह्म का प्रकाशी, निवृत्ति का प्रकाशी, औ प्रवृत्तिका प्रकाशी, चर अचरका प्रकाशी, स्त्री पुरुष का प्रकाशी, सो सर्व आत्मा। ये अर्थ। सासु गुरु औ ननद चेला दोनों बानीमें बंधे हैं इस

वास्ते पारब्रह्ममें लौ लगाये हैं । ब्रह्म और जगत दोनों उपाधी मैं दोनों का प्रकाशी अनिर्वाच्य । ये अर्थ । उस बानी का रस्ता है सो सब जाला है जिस बानी से संसारमें धूम मची । सो बानी बोधमें सब बंध हैं मैं निअक्षर । ये अर्थ । पांच तत्त्व भी मेरे पेट में हैं औ पांच देह भी मेरे पेटमें हैं । जगत औ ब्रह्म ये दोनों मेरे पेटमें हैं औ चारिउ अंतःकरण मेरे गर्भमें हैं, मैं सर्वका अधिष्ठान । ये अर्थ ।पराकी बानी मैं भक्षण करता हौं । मेरी बुद्धि माया सदा मेरे संग है जासे ये जगत चेष्टा देखती है, मैं सदा आनंद ।ये अर्थ । सहजही अनुभव रूपी सेज बिछी है जापर मैं मग्न हौं शयन करता हौं । जैसा घट मठ मैं बाहर भीतर एक आकाश भरा है । ये अर्थ । ना मैं आवों, ना मैं जावों, ना मैं मरों ना मैं जीवों, जैसे घट मठका नाश आकाश का नाश नहीं । ये अर्थ । जो पारब्रह्मकी लगार थी सो भी मेरे में नहीं एक आत्मा ये निश्चय और सब मिथ्या । इस प्रकार से जो मेरे को जानता है सो संसार से छूटै । जो एक आत्मा नहीं जानता सो सर्व बंध, जानै सो मुक्त । ये अर्थ । गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि एक आत्मा जो कहते हो सो सदा बंध है कबहीं मुक्त नहीं । भला जो आत्मा को मुक्त मानिये तो बंध किसको मानिये । आत्मा तो एक-देशी नहीं मुक्त तो एकदेशी होताहै । सर्व देश में तो नाना प्रकारके कष्ट भोगता है औ अनेक बंधन में है । जो बंधनमें नहीं होता तो नाना प्रकारका दुखसुख का पुकारा क्यों होता है औ नाना प्रकार का उपदेश किस को होता है । इसवास्ते जिस बात का अनुमान तुमने रक्खा सो कहां है । जिससे, सब अनुमान छूटै सो गुरुपद जाको पारख कहते हैं । ये अर्थ ॥ ६२ ॥

शब्द ६३.

मैं कासो कहौं को सुनेको पतिआय। फुलवाके छुवत भँवर मरि जाय ॥ जोतिये न बोइये सींचियन सोय। बिनु डार बिनु पात फूल एक होय ॥ गगन मंडल बिच फुल एक फूला। तर भौ डार ऊपर भौ मूला ॥ फुल भल फुलल मलिनि भल गांथल । फुलवा बिनशि गौ भँवर निरासल ॥ कहहिं कबीर सुनो संतो भाई। पंडितजन फुल रहल लोभाई ॥ ६३ ॥

टीका गुरुमुख–गुरु कहते हैं कि हे संतो मैं कासो कहौं। इस संसार में नाना प्रकारकी बानी दृढ होय रही है, जाकी आशा में जीव सब बंध होय रहे हैं, अब निर्णय कौन सुनता है । जबलग प्रीति-पूर्वक श्रवण करके बिचार नहीं करने का तब लग प्रतीत कैसे होयगी। इसवास्ते संपूर्ण बानी का पक्ष छोड के बिचार करैं तो उसे कहना । ये अर्थ । फुलवा के छुवत भँवर मरि जाय। फुलवा कहिये काया, फुलवा कहिये अनुमान, भँवर कहिये मन, भँवर कहिये सनकादि आदि भेष जो अनुमानमें मग्न हुये औ जीयत मरे। ये अर्थ।जोतिये न बोइये सींचिये न सोय । ना जोता। नाबोया। ना सींचा, अपने अनुमान से एक सहस्र दलका कमल बनाया, गगन मंडल ब्रह्मांड बीच ना उसका डारहै ना उसका पातहै, एक अनुमान का गलबा खडा हुवा सो अनुमानके गलबे को खोज करने लगा श्वास में सुरति लगाया।तब जैसी जैसी श्वास में सुरति लै होने लगी तैसा तैसा देह का अभावहोनें लगा। जैसे जैसे देह का अभाव होने लगा तैसे तैसे श्वास बैठने लगी। जैसी जैसी श्वास बैठने लगी तैसे तैसे इंद्रिन का अभाव होने लगा। जब नाभी में जाय के श्वास सुरति एक भई तब एक प्रकाश स्फुरण

हुवा, ताका मल ऊपर ब्रह्मांड में औ डार तले पिंडांड में। ये अर्थ। फूल भल फूलल मलिनि भल गांथल जब खूब मूर्ती लगी तब देह जागी औ कमल सहस्रदल खुला तब अंतःकरण विषय परम आनंद की घटा उठी औ महाद्वार का परदा फूटा । तब भक्त तारकी डोरी लगी मेरु डंड पर से । हँस सोहँ एक हुवा ब्रह्मांड में जाय के समाधिस्थ हुवा । ये अर्थ । भला जब देह रही तबलग समाधी का आश्रित भया औ सहस्र दल का आश्रित भया जब देह छूटी औ कमल बिनसि गया तब ये जीव निरास भया पूर्व अध्यासवस फिर गर्भवास में देह पाया । ये अर्थ । देह छूटे उपरांत समाधी कहां रहेगी । हे संतो तुम सुनो औ परखो । पंडित लोग फूल में लोभाय रहे हैं अहं अनुमान में भुलाय रहे हैं । ये अर्थ । फुलवा ब्रह्म, भँवर मन, डार श्वास, मूल सोहँ शब्द, पंडितजन सनकादि ब्रह्मादि । ये अर्थ ।

रह अर्थ—गुरु कहते हैं कि हे जीव मैं देह ऐसी मान के नाना प्रकार के विषय रस में खराब होता है । अरे जहां से पैदा हुवा फिर तहां जाय के शिर नवावता है । मैं कासो कहौं को सुने को पतिआय । ये ब्रह्मा विष्णु महेश सबहीं भूले । ये अर्थ । फुलवा कहिये भग, भँवर मन, सो मन से काम संकल्प हुवा तब ब्रह्मांड में काम कमल खुला। तब चित्तसे अनुसंधान किया इच्छारूपी नारी औतरी । बुद्धि से दूसरा भाव निश्चय हुवा औ अहंकारने चलाया तब स्त्रीके पास गया । स्त्री के मन ने भी प्रेरना किया औ काम जागा । तब स्त्री के काम कमल का मुख अर्थ सो खुला तब उस कमल में लिंग प्रवेश हुवा औ छतेही एकाग्रता होय के बिंदु पतन हुवा औ मन मरा । बिंदुपतन हुवा तब कमल मूंद गया । तब कमलके भीतर भाय के रुधिर औ पिता का बिंदु एक भया । सो नर बिंद भारी औ नारी बिंद हलका सो नारी

बिन्द में नर बिंद बंधि गया ताते हाड़ नाड़ी गुद पैदा भया, माय के रुधिर से मांस रक्त त्वचा पैदा हुवा, रोम दोनों के संधीसे हुवा। इस प्रकार से सप्तधातुका देह जीवके संयोग से पैदा भया। जब पहिले नारी के काम उतरा तो नारीरूप औ पुरुष के काम प्रथम उतरा तो पुरुष रूप। फिर वह रूप में बिना जोतै बिना बोये एक कमल पैदा हुवा बिना डार बिना पात का, स्त्रीरूप को भग कमल प्राप्त भया औ पुरुषरूपको लिंग कमल प्राप्त भया। फिर गगन में काम का कमल फूला औ तरे से झरने लगा परंतु काम का मूल ऊपर है। ये अर्थ। फुल फल फुलल मलिनि भल गांथल। फूल काम, मलिनी मनसा, जो रात दिन कामवश होय के मलीन होय रही है। ये अर्थ। जब जब काम फूला तब तब मनसा प्रबल भई औ जब काम नाश हुवा तब मन निरास भया। ये अर्थ। ताते गुरु कहते हैं, कि संपूर्ण विषय नाशवंत ऐसा न जानिके ब्रह्मादि पंडित जन सब उसमें लोभाय रहे हैं। ताते जब यह चोला छूटेगा तब विषय अध्यास से फिर गर्भवास को प्राप्त होय के नाना प्रकारके सुख दुख भोगेंगे। ये अर्थ ॥ ६३ ॥

शब्द ६४.

जोलहा बिनहू हो हरिनामा। जाके सुर नर मुनि धरें ध्याना॥
ताना तने को अहुठा लीन्हा। चरखी चारिउ बेदा॥
सरकुंडी एक राम नरायण। पूरण प्रगटे कामा॥
भव सागर एक कठवत कीन्हा। तामें मांडी साना॥
मांडी का तन मांडि रहा है। मांडी बिरले जाना॥
चांद सूर्य दुइ गोडा कीन्हा। मांझदीप कियो मांझा॥
त्रिभुवननाथ जो मांजन नागे। श्याम मुररियां दीन्हा॥
पाई के जब भरना लीन्हा। वै बांधन को रामा॥

वै भग तिहुं लोकहि बांधे । कोई न रहत उबाना ॥
तीन लोक एक करिगह कीन्हा । दिगमग कीन्हो ताना ॥
आदि पुरुष बैठावन बैठे ।कबीरा ज्योति समाना॥६४॥

टीका मायामुख–जोलहा कहिये जीव को,सो माया कहती है कि हे जीव,हरिनाम जो सोहँ है ताको बिनो । जैसा जोहला तारपर चित्त लगाय के बीनता है नरी फेंकता है, इस प्रकार से श्वासा से चित्त लगाय के मनको एकाग्र करिके सोहं शब्द नाभी नासा में जपते रहना । जाका सुर नर मुनी ध्यान धरते हैं सोहं शब्द सबके ऊपर । ये अर्थ। ताना तने को अहुठा लीन्हा । गुरुमुख–गुरुकहते हैं कि देखो, अहुठा कहिये देहको सो गुरुवा लोगों ने देह धारण करके नाना प्रकार के ताना तना।जाके अध्यास ते आवागवन जीव को लगा । ये अर्थ । चार वेद यही एक चरखा किया, तामें राम नरायण ये सरकुंडी लगाया जामें जीव सूत लपटा गया । ये अर्थ । भौसागर कहिये संसार सोई एक कठवत,तामें माडी साना। माडी कहिये बानी, सो बानी नाना प्रकार की जगत में गुरुवा लोगों ने दृढाय दिया । ये अर्थ । अब वह बानी का ताना कहिये ब्रह्म सो सब देश में मंड रहा है । परंतु यह मांडी बिरले जाना । यह बानी बिरले को जान परी कि मानुष देह की कल्पना है ।ये अर्थ । चांद सूर्य दुइ गोड कीन्हा चांद कहिये बांया सुर,सूर्य कहिये दहिना सुर,ये दोनों गोड़ा कीन्हा गोडा कहिये जामें ताना तना रहता है सोई इंगला पिंगला जामें देह तनी है। मांझ दीप कहिये ताना सोई सुषुमना,त्रिभुवन नाथ कहिये मन, सो मांजने लगे रेचक पूरक करने लगे । ये अर्थ । श्यामसुररिया कहिये कुंभक सो कुंभक करके श्वासा थम्भन कर के फेरा मेरुदंड से। ये अर्थ। पाई के जब भरना लीन्हा । रेचक पूरक कुंभक करके श्वासा ब्रह्मांड में शनै शनै चढ़ी। वै बांधन को रामा। वै कहि-

ये नाडी इंगला पिंगला, तामें राम ऐसे दो अक्षर बांधे। फिर वो नाडी भरि के तीनों लोक बांधे। तीन लोक कहिये त्रिकुटी हृदय औ नाभी। करिगह कहिये माग, दिगमग कहिये दशों दिशा, दशों दिशा कहिये दशों इंद्री,, सो तहांसे मन खैंचिके श्वासा में संयम किया। ये अर्थ। आदि पुरुष कहिये सोहं. सो ताको बैठावते उठावते, कबीरा कहिये जीव सो स्थूल सूक्ष्म औ कारण तीनों देह छोड के नाद बिन्दु कलातीत होय के ज्योतिमें समाया। ये अर्थ ॥ ६४ ॥

शब्द ६५.

योगिया फिरि गौ नगर मंझारी। जाय समान पांच जहँनारी॥
गयेउ देशांतर कोइ न बतावे। योगियाबहुरिगुफानहिंआवे॥
जरि गयो कथा ध्वजागईटूटी। भजिगयोडंडखपरगयोफूटी॥
कहहिं कबीर यहकलिहै खोटी। जोरहेकरवासोनिकरेटोटी६५

टीका गुरुमुख--गुरु कहते हैं कि, योगिया फिर गौ नगर मंझारी नगर कहिये ब्रह्मांड, सो ब्रह्मांड में श्वासा फेर के योगी लोग बैठे। योगी कहिये मन सो ब्रह्मांड में लय हुवा। ये अर्थ। पांच नाडी कहिये धनजंय, कूर्म, नाग, कृकल औ देवदत्त ये पांच नाडी ब्रह्मांड की ता में जाय समाया। ये अर्थ। गुरु कहते हैं कि भला जबलग चोला रहा तबलग ब्रह्मांडमें रहेगा औ चोला छोडेगा तब कहां जायगा यह तो कोई बताताई नहीं सब भ्रम में भूले। ये अर्थ। योगिया बहुरि गुफा नहीं आवै। जो ब्रह्मांड तो फूटि गया फिर ब्रह्मांड में तो आसक्का नहीं भ्रम में पडा। ये अर्थ। कंथा कहिये देह सो जर के माटी में मिल गया। ध्वजा काहिये श्वास सो निकर गया। डंड कहिये योग सो भजि गया खपर कहिये खोपर सो फूट गई। गुरु कहते हैं कि तब जीव कहां रहेगा अरे जब देह नाशवंत ठहरी तब देह से

जो कर्म हुआ सो भी नाशवंत । योग समाधी मुद्रा का अधिष्ठान देह कछु देह बिना योग होता नहीं । जब देह नास्ति ठहरी तो योग सहजही नास्ति । करवा कहिये देह, सो छोडा जब जीव ने तब योग स्थिति तो नास्ति भई औ पूर्व अध्यास वश गर्भवासको प्राप्त भया। ये अर्थ । बिरह अर्थ नगर कहिये गर्भवास; सो जो ये गर्भ से आया सो गर्भमें फिर गया । जो भगद्वारे से पैदा भया फिर भगद्वार से गर्भ में समाया । जहां पांच नाडी प्राण, अपान, समान, व्यान औ उदान सो तहां समाया । ये अर्थ । गयेउ देश तर कोई न बतावै । जब यह जीव चोला छोडके गया तब कोई भी न बताया जो मैं फलानी जगह रहूंगा । और कहते हैं कि आवागवन से रहित भया सो कहां है । समाधी तो देह में रही विषय में रही । ये अर्थ । जब देह छूटी तब पुनि देह को प्राप्त भया । औ नाना प्रकार के कर्म धर्म देहके संग रहे । तो गुरु कहते हैं कि जो कोई कहेगा कि स्वर्ग में गया सो झूठा औ जो कोई कहेगा कि, यमलोक को गया सो भी झूठा औ जो कोई कहेगा कि,परमात्मा के स्वरूप में मिला सो भी झूठा। काहेते कि यह कछु वस्तुता नहीं इससे जीव फिर फिर गर्भवास को प्राप्तहोता है । अथवा कोई कहेगा कि गर्भवास में नहीं जाता तो पैदा कहांसे होता है । जो गर्भवास में रहता है सोई भगद्वारे से बाहर निकरता है । ये अर्थ ॥ ६

शब्द ६६.

योगिया के नगर बसो मति कोई । जोरे बसे सो योगिया होई ॥
ये योगिया की उलटा ज्ञान । कारा चोला नहिं वाके म्यान ॥
प्रगट सो कंथा गुप्ताधारी । तामें मूल सजीवन भारी ॥
वो योगियाकी युक्ति जो बूझै । राम रमै तेहि त्रिभुवन सूझै ॥
अमृतबेली छिन छिन पीवै । कहैं कबीर जोगी युग युग जीवै

टीका गुरुमुख—इसवास्ते गुरू कहतेहैं,कि योगिया के नगर बसो मति कोई । योगिया के नगर कहिये ब्रह्मांड, सो ब्रह्मांड में कोई मत बसो नाहक शून्य में क्यों समाते हो जो ब्रह्मांड में बसे सो योगी । ये अर्थ । ये योगियाको उलटा ज्ञान । जो श्वासा उलटके ब्रह्मांड में ब्रह्म जानना तो क्या पिंडांड में और कछु है औ ब्रह्मांड में और कछु है । जो पिंडांड में सोई ब्रह्मांडमें है तो योग करने का कारण क्या नाहक शून्य में समाय के अपनी चैतन्यता क्यों मूंदना । ये अर्थ । कारा चोला नहिं वाके म्यान । योगी लोगोंने शून्य स्वरूप निराकार सही किया । ये अर्थ । प्रगट सो कंथा गुप्ताधारी । प्रगट जो स्थूल देह है तामें निर्गुण निराकार ऐसा गुप्त आधार धारण किया । ये अर्थ । तामें मूल सजीवन भारी । मूल सजीवन कहिये जीव जाकी सत्ता पाय के समस्त जीवंत होते हैं सो जीव को शून्य में भरा । आप निर्गुण निराकार कहि के शून्य हुवा । ये अर्थ ।

मायामुख—वो योगिया की युक्ती जो बूझ । गुरुवा लोग बोलते हैं कि, जेहि युक्ति से योगी लोग मग्न रहते हैं सो युक्ति के राममें रमे राम कहिये आत्मा, जो सर्व का अधिष्ठान है तामें रमे । आत्म-स्थिति होय । तब तीन भुवन सूझै तीन भुवन कहिये त्रिकुटी, श्रीहट औ गोल्हाट इनका साक्षी होय तब जीव ईश्वर की एकता होय । ये अर्थ । अमृत बेली छिन छिन पीवै । अमृत बेली कहिये श्वासा, सो श्वासाको कुंडली मुख से जो छिन छिन पीवता है सो योगी युग युग अमर हुवा आवागवन से रहित हुवा । ये अर्थ ॥ ६६ ॥

शब्द ६७.

जोपै बीजरूप भगवान । तो पंडितका पूछो आन ॥
कहां मन कहां बुद्धि कहां हंकार । सत रज तम गुण तीन प्रकार ॥

विष अमृत फल फले अनेका । बहुधा वेद कहै तरबेका ॥
कहहिं कबीर तैं मैं क्या जान । कोधौं छूटल को अरुझान ॥ ६७

टीका गुरुमुख—जो पै बीजरूप भगवानतो पंडितका पूछो आन गुरू कहते हैं कि आत्मा में जगत कंचन मोहर प्रकार है तो नाना प्रकार का उपदेश किस को होता है । आपही अपने को तो कोई उपदेश करता नहीं और जीवन को जीव उपदेश करते हैं तो ये आश्चर्य है । जो बीजरूपी भगवान औ वृक्षरूपी जगह ठहरा । तो बीज में वृक्ष आ वृक्ष में बीज, फिर परस्पर भाव करके जोई बीज सोई वृक्ष ऐसा अधिष्ठान असी सिद्ध हुवा । तो संपूर्ण विकार रूपही हुवा तो फिर और विकार क्या पूछते हो । ये अर्थ । फिर मन कहां, चित्त कहां, बुद्धि कहां औ अहंकार कहां ये तो संपूर्ण आपही हुवा । तो अंतःकरण नाम किसने रक्खा औ किस को भास हुआ । फिर भास भासिक एक हो गया ये आश्चर्य । रजोगुण, सतोगुण औ तमोगुण ये त्रिगुण आत्मा में सम्भवते नहीं फिर त्रिगुण आत्मा में सिद्ध होय रहे हैं ये आश्चर्य । आत्मा तो एक सर्वदेशी, फिर संपूर्ण एक के समुझे सब को समुझना कि, नहीं । तो नाना प्रकार के विष अमृत फल माना है । कहीं कहता है कि मैं सर्वज्ञ, कहीं कहता है कि मैं किंचिज्ज्ञ, कहीं कहता है कि मैं इश्वर कहीं कहता है कि मैं जीव, कहीं कहता है कि मैं ब्रह्म, कहीं कहता है कि मैं आत्मा ऐसा नाना प्रकार से खराब होय रहा है । अखंडरूप कैसे मानिये । ये अर्थ । बहुधा वेद कहै तरबेका । नाना प्रकार से तरने का उपाय वेद किस को कहता है औ कौन तरता है । अद्वैत उपदेश तो सबने किया परन्तु द्वैत सबन को भासा । जो द्वैत नहीं भासा तो किस से अद्वैत उपदेश किया । फिर द्वैताद्वैत एक करके बीजवृक्षन्याय ठहराया । तब गुरू कहते हैं कि देखो इनका निर्णय

कहां रहा औ पारख कछु इनको प्राप्त भया नहीं । ये अर्थ । कहहिं कबीर तैं मैं क्या जान । जब विज्ञान मैं जाना तब ज्ञान अज्ञान दोनों सम भाव हुवा तैं मैं कछु रहा नहीं । तब बंधा कौन, औ छूटा कौन, सारा दिन पिसान पीसा, चलनी में उठाया, हलाय देखा तब खाली का खाली । ये अर्थ । साखी-मृगतृष्णाका तोय अरु, बांझपुत्रको व्याय । अस विचार वेदांत का, अंत कछु न लखाय ॥ १ ॥६७॥

शब्द ६८.

जो चरखा जरि जाय बढैया ना मरे ।
मैं कातौं सूत हजार । चरखुला जिन जरे ॥
बाबा मोर ब्याह कराव । अच्छा वरहि तकाय ॥
ज्यों लों अच्छा बर ना मिले । तौ लों तुमहि बिहाय ॥
प्रथमें नगर पहूंचते । परि गौ सोग संताप ॥
एक अचंभ हम देखा । जोबिटियाब्याहिल बाप ॥
समधीके घर समधी आये । आये बहुके भाय ॥
गोडे चूल्हा दै दै । चरखा दियो दृढाय ॥
देवलोक मरि जायेंगे । एक न मरे बढाय ॥
यह मन रंजन कारणे । चरखादियो दृढाय ॥
कहहि कबीर सुनोहो संतो। चरखा लखे जो कोय ॥
जो यह चरखा लखि परे । ताको आवागवन न होय ६८

टीका जीवमुख-जीव बोलता है कि,जो चरखा जरि जाय बढैया ना मरे । ब्रह्म सत्य औ जगत् मिथ्या । चरखा कहिये देह,सो देह तो नाश होय जायगा औ बढैया जो देह का बनाने वाला है भगवान सो रहेगा । तो हे देह तू जल्दी नाश मत होय, मेरेको भगवान की भक्ती सहस्र प्रकार से करने दे । ये अर्थ । बाबा मोर ब्याह

कराव । बाबा कहिये गुरुवा लोगों को, सो जीव गुरुवा लोगों के पास जाय के बोलता है कि हे स्वामी, परमात्मा से मेरी लगन लगावो । जामें मेरे को भगवत प्राप्ति होय अच्छा बर भगवान । ये अर्थ । जब लग अच्छा बर मेरे को ना मिले तबलक मैं तुमही खाविंद हो । तुम्हारे बिन मेरा कोई नहीं भगवत प्राप्ती के हेतु। ये अर्थ। गुरुमुख— गुरु कहते हैं कि प्रथममें नगर पहूंचते परिगौ सोग संताप। तब गुरुवा लोगोंने उपदेस किया कि परमात्मा प्रभुजी का भजन करना औ तनमन धनका अभाव करना, नहीं तो यमलोककी शासत महा कठिन है । ऐसा उपदेश देह में पहुंचते नाना प्रकार का सोग संताप उपज्या । कि कौन प्रकार से किस तरह से प्रभु जीकी प्राप्ती होयगी औ यम यातना चूकेगी । घट में बानी पहुंचते इस प्रकार से सोग संताप पडा। ये अर्थ। एक अचम्भव हम देखा जो बिटिया ब्याहिल बाप । सो ये बडा आश्चर्य है कि बिटिया कहिये जीव औ बाप कहिये ईश्वर, सो ईश्वर से जीव की लगन लगी । ये अर्थ । समधी के घर लमधी आये । समधी कहिये गुरुवा लोगोंको कि जिनकी बुद्धी शास्त्र में सम हुई । लमधी कहिये जीव को कि जाकी बुद्धी बानी में आलंभ भई । सो गुरुलोगों के घर में जीव आया भ्रम में आया । ये अर्थ । आये बहू के भाय । बहु कहिये बानी को, भाय कहिये पंडित को, सो बहु बानी के वक्ता आयके नाना प्रकार की बानी कान में फूकी, ब्रह्म रहटा दृढ किया । ये अर्थ । देवलोक मरि जायेंगे एक न मरे बढाय । जब महाप्रलय होयगा तब देवलोक मानुष लोक सब नाश हो जांयगे एक परमात्मा सच्चिदानंद रहेगा । और कछु रहने का नहीं, इस प्रकारसे जीवकी मनरंजन करने के वास्ते चरखा बाजी दृढ कर दिया । ये अर्थ । सो गुरु कहते हैं कि हे संतो सुनो, जो चरखा ब्रह्म जीव को दृढाया सो कहां है ।

मिथ्या धोखे में जीव फँसा है । ये तत्त्वमसि औ सच्चिदानंद जीव का अध्यास है । इस अध्यासको जो परखै औ जिसके परखने में आवे सो पारख में ठहर के आवागवन से रहित होय । ये अर्थ ॥ ६८ ॥

शब्द ६९.

यंत्री यंत्र अनूपम बाजे । वाके अष्ट गगन मुख गाजे ॥
तूही बाजे तूही गाजे । तूही लिये कर डोले ॥
एक शब्द मों राग छतीसो । अनहद बानी बोले ॥
मुखके नाल श्रवण के तुंबा । सतगुरु साज बनाया ॥
जिभ्याके तार नासिका चरई । माया का मोम लगाया ॥
गगन मंडिलमें भया उजियारा । उलटा फेर लगाया ॥
कहैं कबीर जन भये विवेकी । जिन्ह यंत्री सो मन लाया ॥

टीका गुरुमुख—यंत्री कहिये जीव को, यंत्र कहिये देह को, सो गुरू कहते हैं कि सर्व उपाधी का मूल देह, सो देहसे अनेक कल्पना भई जामें तू बंधा है । ये अर्थ । अनूपम कहिये ब्रह्म, सो देह से संकल्प भया औ सात स्वर्ग आठवां अपवर्ग निश्चय किया सो संपूर्ण कल्पना देह से उठी । अरे देह छोड के संकल्प कछु होता नहीं । निर्गुण निराकार अद्वैत आत्मा देह बिना कछु भी सिद्ध हो सक्ता नहीं । ये अर्थ । सो तूही कल्पना करता है औ तू ही निश्चय करता है तेरी कल्पना तू ही हाथ में लिये हुए फिरता है । एक ॐ कार शब्द तूही अनुमान किया फिर छत्तीस प्रकार से उस ॐ कार को गाया, आखिर को अनहद बोला । ये अर्थ । जीवमुख—मुख के नाल श्रवण के तुंबा, सतगुरु साज बनाया । जीव बोलता है कि मैं किंचिज्ज्ञ मेरे से क्या होता है । ये यंत्र सतगुरु ने बनाया ब्रह्माने बनाया। ये अर्थ ।मुख सोई नाल, श्रवन सोई तुंबा जीभ सोई तार

औ नाक है सोई खूंटी, इस प्रकार से बीन बाजा बनाया । ता ऊपर माया का मोम लगाया, चाम मास से मढा है । ये अर्थ । अब जो लक्ष बाहर फैल रहा है सो एकाग्र करके फिर श्वासा को मेरुदंड के तरफ से फेर के उलटा लक्ष लगाया । तब गगनमंडलको भीन मार्गसे उलटा लक्ष चढा औ भँवरगुफा में ठहरा, तब महा प्रकाश हुवा सोई ब्रह्म । इस प्रकारसे जो यंत्रीसों मन लगावै औ सक्षात्कार होवै सोई जन विवेकी मोक्ष आरूढ ऐसा जीव बोलते हैं । ये अर्थ ॥ ६९

शब्द ७०.

जस मासु पशुकी तस मासु नरकी । रुधिर रुधिर एक साराजी ॥
पशुकी मास भखे सब कोई । नरहिं न भखे सियाराजी ॥
ब्रह्म कुलाल मेदिनी भइया । उपजि विनशि कित गइयाजी ॥
मास मछरिया तैं पै खैया । ज्यों खेतन मों बोइयाजी ॥
माटी के करि देवी देवा । काटि काटि जिव देइयाजी ॥
जो तोहरा है सांचा देवा । खेत चरत क्यों ना लेइयाजी ॥
कहहिं कबीर सुनो हो संतो । राम नाम नित लेइयाजी ॥
जो कछु कियेउ जीभ्याके स्वारथ । बदल पराया देइयाजी ॥

टीका गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि जैसा नर का मांस वैसाही पशु का मांस औ रुधिर भी एक सरीखा है । सो पशु के मांस को राक्षस गण जीव श्वान स्यार समान भक्षण करतेहैं औ बोलते हैं कि अहं ब्रह्म हमारे को विधि निषेध नहीं । एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म । ये संपूर्ण एक ब्रह्म ही है मारने को मरने को कोई दूसरा नहीं ऐसा बोलते हैं तो ये अपने पुत्रको औ अपनी स्त्रीको क्यों नहीं मार खाते । जैसा सियार ढोर मुरदा खाताहै औ अपनी जाति को नहीं खाता तद्वत् ऊपर ऊपर सब अद्वैत कहते हैं औ भीतर भीतर सब को द्वैत भासता

है । जो द्वैत नहीं भासा तो खाते किसको हैं । ये अर्थ । कुलाल मेदिनी भइया, उपजि विनशि कित गइयाजी । ब्रह्म कुम्हारा पृथ्वीपर पैदा होके नाना प्रकार की बानी बनाया औ सृष्टि रचना किया ऐसा वेद बोलता है । सो ब्रह्म निरवयव कि सावयव । अगर कोई कहेगा कि ब्रह्म भी कहीं सावयव होता है । तो निरावयव से कहीं सृष्टी रचना होती है । सावयव बिना स्फुरण भी नहीं होता औ इच्छा भी नहीं हो सक्ती। जो सावयव हुवा तो उपजि बिनशि कित गइयाजी । ऐसा ब्रह्म कुलाल पृथ्वी पर पैदा भया फिर उपजि बिनशि कित गया । अरे जासे तुम आरंभ औ परिमाण माना है सो तो जीवकी कल्पना । सो कल्पना में समरस होयके ब्रह्म कहलाते हो औ मास मछरिया खाते हो । जैसा किसान खेत में तरकारी बोवता है औ चाहे तब उखारके खाता है । इस प्रकारसे ये काल जीव जब चाहते हैं तब मांस मछरिया खाते हैं । भला कोई कहेगा कि शास्त्रका प्रमाण है सो प्रमाण से हम देवता निमित्त उपासना करके खाते हैं । तो तुम्हारा देवता जो खाता है औ उसके बिना देवता की तृप्ती नहीं होती । तो जब बकरी खेत में चरती है तब तुम्हारा देवता क्यों नहीं खाता । क्या देवताको किसीका धाक है कि किसी ने रोका है कि कोई मारता है तो खेत चरते क्यों नहीं खाता । तो देवता मिथ्या औ पुजारी सच्चा जिसने अपनी कल्पना से देवता भी माटीका बनाया । अरे तुम अपनी कल्पनासे देव देवी बनाते हो सो निर्जीव मिथ्याभूत । और उसके आगे सजीव काट के रखते हो ये कैसी गाफिली तुम्हारे को घेरी है । गुरु कहते हैं हे जीव देवता कहां है तेरी कल्पना । ये अर्थ । भला जो तुम राम नाम नित लेते हो, तो वेदका प्रमाण है कि जो सब में रमा सो राम । तो भला जिसकी भक्ती करना उसका

कहीं गरा काटना । अगर कोई आपही आप कहेगा तो भी गरा काटना संभौता नहीं । कोई अपना गरा आप काट के अपने को आप खाते देखा भी नहीं औ सुना भी नहीं । तब तुम्हारा करतव्य मिथ्याभूत । ये अर्थ । ये जो जिभ्या के स्वाद के हेतु औ नाना प्रकार के विषय स्वार्थ के हेतु तुम जीवहिंसा करते हो सो पराया बदला देना परेगा कछु छूटनेका नहीं । जीवहिंसा विषयके अभ्याससे फिर जन्म होयके तुम्हारी भी वैसी हिंसा होयगी । ये अर्थ ॥ ७० ॥

शब्द ७१.

चातृक कहां पुकारो दूरी । सो जल जगत रहा भरपूरी ॥
जेहि जल नाद बिंद को भेदा । षट कर्म सहित उपानेउ बेदा ॥
जेहि जल जीव सीवको बासा । सो जलधरणिअमरपरकासा ॥
जेहि जल उपजलसकलशरीरा । सो जलभेदन जानु कबीरा ७१

टीका गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि चातृक कहां पुकारो दूरी । चातृक कहिये जीवको, जल कहिये अज्ञान, जल कहिये बानी, जल कहिये काम, जल कहिये कल्पना, सो हे जीव कल्पना संपूर्ण संसार में भरि रही है ताते तूं दूर आसा लगाया के पुकारताहै । सो जाके हेत तुम पुकारते हो सो कछु है नहीं तेरी कल्पना । ये अर्थ । जेहि जल नाद बिंदको भेदा । नाद कहिये सूक्ष्म, बिंद कहिये स्थूल, यह दोनों का भेद कहिये कला, कला कहिये अज्ञान, अज्ञान कहिये जामें जीव आवृत हो रहा है अंधाधुंध हो रहा है । अंधाधुंध कहिये असि आनंद जहां ज्ञान अज्ञान कछु नहीं सूझे ताको अंधाधुंध कहिये ये अर्थ । सोई अनुमान से षट् कर्म उपजे औ सोई अनुमान से चारों वेद पैदा भये सोई अनुमानका अधिष्ठान बना । ये अर्थ । जीव कहिये आप औ सीव कहिये ईश्वर सो आपहीने ईश्वर अनुमान किया औ आ-

यही ने आत्मा अनुमान किया फिर आपही ब्रह्म होयके आत्मा निश्चय किया। ये अर्थ। सो जल धरणी अमर प्रकासा। सोई आत्मा संपूर्ण प्रकाश हुवा। सो आत्मा में ये स्थित भया ताही से सब शरीर औ संपूर्ण बिकार उपजा औ सब बिकारका अधिष्ठान भया। इस प्रकार से जीवको भेद नहीं मालूम भया कि जो बिकार से नाना दुख की प्राप्ती भई सोई बिकाररूपी मैं कैसा होताहूं। सो तू पारख के न्यारा हो। ये अर्थ॥ ७१॥

शब्द ७२.

चलहु का टेढ़ो टेढ़ो टेढ़ो।

दशहूँ द्वार नर्क भरि बूडे। तू गंधीको बेडो॥
फूटे नैन हृदय नहिं सूझे। मति एकौ नहिं जानी॥
काम क्रोध तृष्णा के माते। बूडि मुये बिनु पानी॥
जो जारे तन होय भस्म धुरि गाडे कृमि मिट्टी खाई॥
सौकर श्वान कागका भोजन। तनकी इहै बडाई॥
चेति न देख मुग्ध नर बौरे। तोहिते काल न दूरी॥
कोटिन यतन करो यह तनकी। अंत अवस्था धूरी॥
बालूके घरवामें बैठे। चेतत नाहिं अयाना॥
कहहिं कबीर एक राम भजे बिनु। बूडे बहुत सयाना॥ ७२॥

टीका गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि चलहु का टेढो टेढो टेढो। प्रथम टेढो त्वंपद, दूसरा टेढो तत्पद, तीसरा टेढो असि पद। इस प्रकारसे चलते चलते पूर्ण आत्मभावको प्राप्त हुवा, तो दशों दिशामें भरपूर कहाया। तब अधिष्ठान रूप हुवा, तो गंधी का बेडा हुवा। ये अर्थ गंधी कहिये संसार को, गंधी कहिये नर्क को, बेडा कहिये जहाज को, सो आत्मा हुवा तब कहा कि, मैं निर्विकार हुवा। परंतु

संपूर्ण विकार का औ जगत का अधिष्ठान हुवा । ये अर्थ । देखो इन की आँखें फूटी औ ऊपरकीभी आँखें फूट गईं । जो जगत विकार देखते हैं औ कहते हैं कि मेरे को जगत दिखता नहीं अस्ति आत्मा दिखता है । औ हृदय नहीं सूझै, हिये में जो ज्ञान था सो भी खोया, कहने लगे कि ज्ञान अज्ञान ये दोउ मेरे विषय नहीं हैं मैं केवल आत्मा तब चारों गईं । ये अर्थ । काम भक्ती, क्रोध योग, तृष्णा ज्ञान, ये तीनों मत में मस्त होय के बिना पानी बूड मुये । अपने ही अनुमान में आप मग्न हुये । ये अर्थ । जो जारे तन भस्म होय धुरि, गाडे कृमि मिट्टी खाई । अरे देह तो नाशवंत ठहरी जारे भस्म होय जायगी औ गाडे कीडे माटी खाय जायेंगे । ऊपर पडी रहेगी तो स्यार कुत्ते कौवे चील आदि खाय जायेंगे तनकी इहै बडाई । ये अर्थ । चेत नहीं देखता है मुग्ध नर दिवाना । तेहिते काल न दूरी । जो तू कल्पता है औ मानता है सोई तेरा काल है । ये तन के वास्ते कोटी यतन करो परंतु अंत अवस्था को धूरमें मिलेगी । जैसा बालू के घर में कोई बैठता है तो रहने को आश्चर्य है परंतु जाने को कछु आश्चर्य नहीं । ऐसी ये देह है सो जानता नहीं अज्ञान । सो गुरु कहते हैं कि, एक राम ऐसा अनुमान जो दृढ किया है सोई बंधन है । सो छूटे बिना बांधा गर्भवास को जायगा । ये अर्थ । ॥ ७२ ॥

शब्द ७३.

फिरहु का फूले फूले फूले ।

जब दश मास ऊर्ध मुख होते । सो दिन काहेक भूले ॥
ज्यों माखी सहते नहिं बिहुरे । सोचि सोचि धन कीन्हा ॥
मुये पीछे लेहु लेहु करें सब । भूत रहनि कस दीन्हा ॥
देहरि ले बर नारि संग है । आगे संग सुहेला ॥

मृतुक थान लों संग खटोला। फिर पुनि हंस अकेला ॥
जारे देह भस्म होय जाई। गाडे माटी खाई ॥
कांचे कुम्भ उदक ज्यों भरिया। तन की इहै बडाई ॥
राम न रमसि मोहके माते। परेहु काल बश कूवा ॥
कहहिं कबीर नर आपु बंधायो। ज्यों नलिनी भ्रम सूवा ७३

टीका गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि कोई भक्ती में फूल गये, कोई योग में फूले औ कोई ज्ञान में फूले इस प्रकार से त्रिबंधन में परे। ये त्रिबंध जबलग परखने में नहीं आवै तबलग गर्भबास छूटता नहीं। ये अर्थ। मध्य अर्थ स्पष्ट है। आगे राम न रमसि मोह के माते। नाना प्रकारके मोह में मस्त हुवा सोई तेरा काल औ एक राम ऐसा अनुमान जो वेद ने सिद्ध किया सो भी तेरा काल। ऐसे ऐसे अध्यास में बंध होय के अंधकूप में परा, अज्ञान में परा, फिर गर्भवास को प्राप्त हुवा। जो तू ब्रह्म औ आत्मा सिद्ध करता है सो कहां है मिथ्या तेरा अध्यास है। तामें तू सुवा नलिनी न्याय बंधमान हुवा। सो तू परखके देख औ थीर हो ये अर्थ ॥ ७३ ॥

शब्द ७४.

ऐसो योगिया बदकर्मी। जाकेगमन अकाश नधरणी॥
हाथ न वाके पांव न वाके। रूप न वाके रेखा ॥
बिना हाट हटवाई लावै। करे बयाई लेखा ॥
कर्म न वाके धर्म न वाके। योग न वाके युक्ती ॥
सींगी पात्र किछउ नहिं वाके। काहेक मांगे मुक्ति ॥
मैं तोहि जाना तैं मोहि जाना। मैं तोहि मांहि समाना ॥
उत्पति परलय एकहुं न होते। तबकाहुकौनब्रह्मको ध्याना॥
योगी आन एक ठाढ कियो है। राम रहा भरपूरी ॥

औषध मूल किछउ नहिं वाके । राम सजीवन मूरी ॥
नटवट बाजा पेखनी पेखे । बाजीगरकी बाजी ॥
कहहिं कबीर सुनो हो संतो । भई सो राज बिराजी ॥७४॥

टीका गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि ऐसी योगिया बदकर्मी । योगिया कहिये मन, योगिया कहिये ब्रह्म, बदकर्मी अकर्मी संसार में सूत्रमणिन्याय होय के नाना कुकर्म करते हैं । ये अर्थ । हाथ पांव रूप रेखा तो उसकी कछु कहतेई नहीं औ उसी का ही संपूर्ण जगत स्वप्ना बोलते हैं औ संपूर्ण उसीका ही कर्तव्य बोलते हैं । तो भला रूप रेखा बिना कहीं स्वप्न होता है औ अवेव बिना कहीं कर्तव्य होता है । तो बेद की कहानी असंभव मिथ्या धोखा । ये अर्थ । बिना हाट हटवाई लावै । बजार तो है नहीं बैपार लगाया । करे बयाई लेखा । बयाई कहिये दलाली, सो ब्रह्मादिक जो बडे बडे दलाल हुये सो सबहीं नाना प्रकारकी कल्पना करके दलाली करने लगे औ नाना तर्क करके अनुमान का लेखा बांधने लगे । कर्म योग ज्ञान का उपदेश करने लगे । ये अर्थ । कर्म धर्म योग युक्ती सगिी पात्र उसके कछु नहीं तो संपूर्ण निराकार । भला ब्रह्म तो निरावेव है फिर भीख क्यों मांगता है औ भोग क्यों भोगता है । भला आप तो सच्चिदानंद स्वरूप पूर्ण है तो ये संसार में बदकर्म जो होता है सो कौन करता है । भला रूप रेखा जिसको नहीं तासो रचना कैसी होयगी, रूप रेखा बिना स्फुर्ण तो भी कहां ते होयगा । भला सच्चिदानंदका निश्चय करनेवाला कौन है ऐसा न जानकर नाहक मिथ्या धोखे में भूले औ नाना प्रकार के मिथ्या गलबे उठाये । ये अर्थ ।

कवित्त—जैसा कोई दलाल आये, गुदरी में ठाढ भये, कहत एक अदबुद बस्तु, बिक्री को आई है ॥ शशा शृंग को कमान, व्रर्णत

को ताहि जान, जो कोई पावत सोई, जानत अधिकाई है ॥ धाय-धाय जीव सब, दलाल से पूछने लागे, बडे हमारे भाग जागे, जो आप ऐसी गाई है ॥ ऐसा ब्रह्म का बिचार, गुरुवन ने कीन्ह पुकार, रूप रेख नहीं तासों, रचना उपजाई है ॥ १ ॥

ब्रह्ममुख—मैं तोहि जाना मैं तोहि जाना मैं तोहि माहिं समाना । मैं कहिये ब्रह्म सब को जानने वाला । औ मेरे को कोई नहीं जान सक्ता जो पै ब्रह्मा विष्णु महेशहू होय । ऐसा सर्व साक्षी मैं तत्पदार्थ । तैं कहिये त्वंपद जीव, जो कछु जानता नहीं महा अविद्या के बस अज्ञान ते । मेरा ज्ञान रूप तेरा अज्ञान रूप, सो मैं ज्ञान जब तेरे हृदय में प्रकाश हुवा तब तैंने मोको जाना कि चराचर संपूर्ण में बाहर भीतर एक ब्रह्म है घट जल न्याय।जो घट जल न्याय हुवा तो घडा जल में जल घडे में।मैं तोहि मांहि समाना।।ये अर्थ।उत्पत्ति परलय एकहू न होते। घट में जो जल बाहर सो जल, तो अब उत्पत्ति प्रलय किस का होगा कछु दो नहीं जो एक का प्रलय होय औ एक की उत्पत्ती होय। तो एक अद्वैत में न उत्पत्ती है ना प्रलयहै एक जाती बिजाती स्वगत भेद रहित। ये अर्थ । तब कौन ब्रह्म को ध्याना । जो घडा पानी में औ पानी घडे में निश्चय हुवा,तो जाती कहिये जो घडेमें का पानी औ बाहरका पानी, बिजाती कहिये घडा, स्वगत भेद कहिये मिलाप । ये त्रिपुटी कहिये।जब पानी निश्चय हुवा तो घट नास्ति औ पानी तो एक। तब ध्याता ध्यान ध्येय ये कहां हैं कौन ब्रह्म को ध्याना । ये अर्थ ।गुरुमुख—योगी आन एक ठाढ कियो है, राम रहा भर पूरी।इस प्रकार से योगी लोगों ने औ ज्ञानी लोगों ने एक अनुमान आनि के ठाढ किया है कि राम जो सब में रमा हैसोई आत्मा पूर्ण है। ये अर्थ ।औषधमूल कि छुउ नहिं वाके, रामसजीवनमूरी । कि सब जीवनका अधिष्ठान एक राम है जल तरंग न्याय। इसमें ना कछु रोग है ना कछु औषध है । गुरु शिष्य ये

संपूर्ण कल्पना एक आतमा सत्य । ये अर्थ । नटवट बाजा पेखनी पेखे । नटवट कहिये चौरासी आसन, बाजा कहिये दश नाद, पेखनी कहिये दश मुद्रा, ये संपूर्ण बाजीगर गुरुवा लोगोंकी बाजी है तामें फँस के राज बिराजी भई । सचेसे झूठा भया, चैतन्य से जड हुवा, जीव से ब्रह्म भया, भूला, मिथ्या भास में मग्न हुवा । तू ये सब को परख के पारख पर थीर हो । ये अर्थ ॥ ७४ ॥

शब्द ७५.

ऐसो भरम बिगुर्चन भारी ।

बेद कितेब दीन औ दोजख । को पुरुषा को नारी ॥
माटी का घट साज बनाया । नादे बिंद समाना ॥
घट बिन से क्या नाम धरहुगे । अहमक खोज भुलाना ॥
एकै त्वचा हाड मल मूत्रा । एक रुधिर एक गूदा ॥
एक बूंद से सृष्टि रची है । को ब्राह्मण को शूद्रा ॥
रजोगुण ब्रह्म तमोगुण शंकर । सतोगुण हरि होई ॥
कहहिं कबीर राम रमि रहिये। हिंदू तुरुक न कोई ॥

टीका गुरुमुख—गुरू कहते हैं कि ऐसा भरम बिगुर्चन भारी । इस प्रकार से नाना भ्रमचक्र में परा । वेद किताब, दीन औ दोजख, माया औ ब्रह्म ऐसी नाना प्रकार की कल्पना में फँसा । ये अर्थ । माटी का घट साज बनाया । नाद सूक्ष्म औ बिंद स्थूल, सो स्थूल में सूक्ष्म समाया सो नाना प्रकार का नाम धराया फिर घट बिनसे क्या नाम धरोगे । अरे अहमक खोज करके देख भूला क्यों फिरता है । एक त्वचा, हाड, मल, मूत्र, एक गुदा, एक रुधिर, एक बूंद से सृष्टी सब रचीहै इसमें कौन ब्राह्मण औ कौन शूद्र मिथ्या सब कल्पना। रजोगुण काम सोई ब्रह्मा, तमोगुण क्रोध सोई शंकर, सतोगुण मोह सोई विष्णु

गुरु कहते हैं कि ये सब मिथ्या धोखा औ एक राम ऐसा जो असिपद अनुमान किया है तासो रमि रहिये । न्यारा हो रहिये पारख पर औ हिंदू तुरुक दोनों कल्पना । ये अर्थ ॥ ७५ ॥

शब्द ७६.

आपन पौ आपही बिसरचो ।
जैसे श्वान कांच मंदिर में । भरमित भूसि मरचो ॥
ज्योंकेहरिवपु निरखि कूप जल । प्रतिमा देखि परचो ॥
वैसेहि गज फटिक शिलामें । दशनन आनि अरचो ॥
मर्कट मूठि स्वाद नहिं बिहुरै । घर घर रटत फिरचो ॥
कहहिं कबीर ललिनी के सुवना । तोहि कौने पकरचो॥७६॥

टीका गुरुमुख--आपन पौ आपुही बिसरचो । ये शब्द का अर्थ स्पष्ट है । काच मंदिर वेद वानी । श्वान पंडित । ये अर्थ ॥ ७६ ॥

शब्द ७७.

आपन आप कीजे बहुतेरा। काहु न मर्म पावल हरिकेरा ॥
इंद्री कहां करे बिश्रामा ।सो कहांगये जोकहतहोतेरामा॥
सो कहाँ गये जो होत सयाना। होय मृतक वह पदहिं समाना॥
रामानंद रामरस माते ।कहहिंकबीर हमकहिकहिथाके।

टीका गुरुमुख--गुरू कहते हैं कि अपने अपने ऐसो तर्क समस्त साध औ भेष सनकादिक ने किया परंतु हरी का मर्म किसी ने नहीं पाया। हरीकहिये जहां चित्त मन बुद्धि आदि समस्त इंद्रियनका हरण होय सो मिथ्या झांई । ऐसी मर्म नहीं पाई ताते धोखा में रहा । ये अर्थ । भला जबलग देह रही तबलग तो इंद्री देह में परम विश्राम को प्राप्त भई परंतु जब देह छूटेगी तब विश्राम कहां होयगा अरे सो कहां गये जो आपही राम कहाये थे औ राजा दशरथ के घर

अवतार लिया था सो जब तन त्यागा तब कहां गये । जो जीयतही मुक्त कहायके असिपद में समाये थे सो मरे उपरांत जगत अधिष्ठाता जगत रूप होय रहे । अरे देख विचार करके कि बडे बडे सयाने ज्ञानी पुरुष जो भये सो कहां गये । सब मर मर के फिर गर्भवासमें आये । ये अर्थ ।रामानंद राम रसमाते ।विषयानंद जगदानंद योगानंद गंधर्वानंद देवानंद त्रिगुणानंद, ये संपूर्ण आनन्द जो आनंद में लय हुये सो रामानंद, सर्व उत्कृष्ट आनंद । ये अर्थ । सो आनंद के रस में माते सब जीव । परंतु ये जाना कि ये आनंद मेरे से हैं औ मैं कैसा आनंद होता हौं । ऐसा न समुझा । सो अध्यास के बश होयके नाना दुख भोगते हैं । मैं कहि कहि थका परंतु संसार का धोखा कछु उठता नहीं । ये अर्थ ॥ ७७ ॥

शब्द ७८.

अब हम जानिया हो हरिबाजी को खेल ।
डंक बजाय देखाय तमाशा । बहुरी लेत सकेल ॥
हरिबाजी सुर नर मुनि जहंडे । माया चाटक लाया ॥
घर में डारि सकल भरमाया । हृदया ज्ञान न आया ॥
बाजी झूठ बाजीगर सांचा । साधुन की मति ऐसी ॥
कहहिं कबीर जिन जैसी समुझी । ताकी गति भई तैसी ॥

टीका गुरुमुख–गुरु कहतेहैं कि हरी कहिये माया, माया कहिये काया बाजी कहिये कल्पना, सो संपूर्ण वेद पुराण शास्त्र हमने जाना कि काया से कल्पना हुई । सो बाजी में सब जीव अरुझे । ये अर्थ । हरी कहिये गुरुवा लोग, बाजी कहिये नाना बानी, जामें सब जीव दृढ होय रहे हैं । सो डंक बजाय देखाय तमाशा, बहुरी लेत सकेल इस कल्पना में सुर नर मुनि सब जहंडे खराब हुये औ भूले । उस

बानीने सब को चाटक लगाया । किसीको स्वर्ग प्राप्ती की चाटक लगाया औ किसीकी सिद्धी प्राप्तीको चाटक लगाया औ किसी को देवता पंचायतन प्राप्तीकी चाटक लगाया औ किसी को जीव ईश्वर एकताकी चाटक लगाया औ किसीको आत्म स्थिति आनंदकी चाटक लगाय के अपने घर में डारके सब को भरगया । परंतु किसीके हृदयमें भी समझ परी नहीं ये कल्पना । ये अर्थ । ता उपरान्त सब संत महंत जो महानुभाव भये तिन्ह निश्चय किया कि बाजी झूठी बाजीगर सांचा । जगत मिथ्या ब्रह्म सत्य । संपूर्ण बोलने में जो बानी आई सो सर्व मिथ्या औ नेति नेति प्रमाण से जो अनिर्वचनीय सिद्ध हुआ सोई ब्रह्म सत्य । जो देखनेमें संसार बाजी आई सो मिथ्या औ अदेख बाजीगर सच्चा । इस प्रकार से हार हार के साधुन की मती ऐसी हुई परंतु गुरु कहते हैं कि देखो मिथ्या धोखे में फँसे । जिन्ह ने जैसा समझा ताकी गति तैसी भई अनुमान कल्पना करके अनुमान कल्पनाही होगये । पुनि गर्भवासको प्राप्त भये । ये अर्थ ॥ ७८ ॥

शब्द ७९.

कहहु हो नर कासो लागा । चेतनहारा चेत सुभागा ॥
अम्बर मध्ये दीसै तारा । एक चेता एक चेतवन हारा ॥
जो खोजो सो उहवां नाहीं । सो तोआहि अमरपद माहीं ॥
कहहिं कबीर पद बूझै सोई । मुख हृदया जाके एकै होई ॥

टीका गुरुमुख--गुरु कहते हैं कि हे अमर हे जीव तू किसते लगा है अरे अपनी चैतन्यता तूने हारि के अचेत होय रहाहै ब्रह्म होय रहा है । अरे सुभागा तेरा धर्म नहीं जो जड होना औ गाफिल होना औ अन्धाधुन्ध में परना औ अपने आपुही को हारना । सो तू परखके सब धोखे को छोड । ये अर्थ ।

अंमर मध्ये दीसे तारा। अंमर कहिये जीवको, तारा कहिये ब्रह्म को ब्रह्म कहिये भ्रम को, सो जीवमें एक भ्रम खडा हुवा कि हमारा कर्ता कोई दूसरा है सोई कल्पना सब को ग्रहण हुई औ ताको खोज करने लगे। जो होय तो पाइये नहीं सो कहां से मिलेगा। खोजने के हेत नाना प्रकार के कर्म किया योग यज्ञ जप तप आदि। जब न देखा तब कल्पना सहित आपही ब्रह्म कहाया। श्रवण मनन निदिध्यासन करके साक्षात्कार जाना कि जो ब्रह्म वेदने ठहराया सो मैंही हूं और दूसरा कोई नहीं। इस प्रकार से एक चेता एक चेतावनहारा। एक चेता आप सह विकल्प समाधीमें ठहरा फिर दूसरा निर्विकल्प समाधी खोज कै चेतनहारके गुमसुम हुवा। परंतु गुरु कहतेहैं कि जो खोजते हो सो उहवां नाहीं। जो ब्रह्म तुम खोजते हो सो कछु वहां सहविकल्प समाधीमें नहीं औ निर्विकल्प समाधीमें भी नहीं सो तो जीवका धोखा जीवमें है। गुरु कहत हैं कि देखो सबने जो ब्रह्मपद निश्चय किया सो कहां है उसको निश्चय करनेवाला जीव तो है। निश्चय कर्ता सो अस्ति औ जो निश्चय होता है सो नास्ति। परंतु यह धोखाका पद तब ही बूझने में आवेगा जो मुख से पारख जैसा कहताहै तैसा जब जीवमें प्रकाश होगा तब। ये अर्थ ॥ ७९ ॥

शब्द ८०.

बंदे करिले आपु निबेरा।
आपु जियत लखु आप ठौर करु। मुये कहां घर तेरा ॥
येह अवसर नहिं चेतहु प्राणी। अंत कोई नहिं तेरा ॥
कहहिं कबीर सुनो हो संतो। कठिन कालको घेरा॥८०॥

टीका गुरुमुख—अर्थ स्पष्ट गुरु कहते हैं कि नाना प्रकार के जालमें जो तू बंधमान होय रहा है, सो परख के अपना निरवार

कर ले । ये अर्थ । आपु जीयत लख और आप ठौर कर नहीं तो मरे उपरांत तेरा घर कहां है ऐसा मानुष तन पायके जो तू नहीं चेतने का तो फिर अंतमें तेरा साथी कोई नहीं । अब तूने ब्रह्म आत्म और ईश्वर जो कल्प कल्पिके रक्खे हैं सो कहां है, ये संपूर्ण नास्ती कल्पना, सोई कालका घेरा ताके वश होय के तूं बहुत दुख भोगेगा । इस वास्ते मिथ्या अध्यास छोडके पारख में थीर हो । ये अर्थ ॥ ८० ॥

शब्द ८१.

ऊतो रहु ररा ममाकी भांती हो । सब संत उधारन चूनरी ॥
बालमीक बन बोइया । चुनि लीन्हा शुकदेव ॥
कर्म बिनौरा होइ रहा हो । सूत काते जैदेव ॥
तीन लोक ताना तनो है । ब्रह्मा विष्णु महेश ॥
नाम लेत मुनि हारिया । सुरपति सकल नरेश ॥
विष्णु जिभ्या गुण गाइया । बिनु बस्ती का देश ॥
सूने घरका पाहुना । तासों लाइनि हेत ॥
चार वेद कैंडा कियो । निराकार कियो राछ ॥
बिने कबीरा चूनरी । मैं नहिं बांध लबारि ॥ ८१ ॥

टीका गुरुमुख—गुरु कहतेहैं कि ऊतो कहिये सनकादि बालमीकादि ररा ममा की भांति में रहे, ररा ममाकी रटनामें रहे । ये अर्थ । सब संत उधारन चूनरी। सब संतन ने संसार के उधारन हेतु एक भक्ति रूपी चूनरी बीनी सो बडे बडे समर्थन ने पहिरी । प्रेम पाट का चोलना पहिर कबीरु नाच । अहो संतो देखो ये जीव ने आपै तो राम ऐसा दो अक्षर कल्पा औ अस्ति भाति प्रियरूप आत्मा ये सिद्ध किया सो तुम परखो कि कल्पना किनने किया औ अस्ति भाति प्रियरूपकहिये आत्मा कौन होता है । ते वही होतेहैं । ये अर्थ । अस्ति कहिये स्थूल

जो नारदऋषीने बालमीक को राम ऐसा दो अक्षर सुनाया और कहा कि जबलग मैं लौटके आऊँ तब लग राम। मारा इस प्रकारसे श्वासा के संग रटा करना । मक तार न्याय । जैसी मकरी तार पर चढती है उतरती है और तार टूटने नहीं पाता, तद्वत तार टूटने नहीं पावै ऐसा उपदेश किया सो अस्ति सत्य जानके बालमीक ने निश्चयकिया औ फिर तार बांधि के रटने लगा । रटते रटते तार जब बंधा स्थूल का अभाव सोई भाति सूक्ष्म। निदिध्यास स्तब्धता,स्थूल सूक्ष्म दोनों का अभाव सोई प्रिय कारण। अस्ति भाति कार्य औ प्रिय कारण दोनों का अभाव औ अपना भाव चिन्मय सोई रूप महा कारण।और जब चिन्मय ज्ञप्तीका लय हुआ औ निर्विकल्प समाधीहुई सोई केवल आत्मा ऐसा जाना। सोई अनुमान लेके नाना प्रकार की बानी कथन किया सोई कपास बोया।औ नाना कथा इतिहास अंकुर निकरि के बृक्ष बढा । ये अर्थ ।

कवित्त—रामनाम बिज औ इतिहास सो अंकुर जामे, जैसे केवल रूप से स्फूर्ण कहत गाई है। कथा सोई शाखा पत्र श्लोकन से मूंद रही, जैसी अविद्या आय स्वयं चेतन पर छाई है। नाना दृष्टांत सोई फूलन सो छाय रही,कारण के बीच जैसी सूक्ष्मता जनाई है। औ दृष्टांत राम कीर्ति सोई फल आये, सगुन औतार सर्व स्थूल को सराही है ॥ १ ॥

इस तरह से बालमीक ने बन बोया । फिर ज्ञान कपास अन्वय व्यतिरेक करिके शुकदेव जू चूनी । श्रवण मनन करके वो बिनोरा रूप हो रहे । ये अर्थ । अब वो ज्ञान कपास का सूत भक्ती सो जय-देवजूने काता। तीन लोक ज्ञान भक्ती औ योग ये ताना तना ब्रह्मा विष्णु महेशने । औ नाम पांजनी करते करते इन्द्रादि समस्त नरेश औ मुनीश सर्व हारे जहां थके तहां विश्वरूप कहा ।लक्ष करते

करते जब लक्ष थका तब चित्त शिर पर चढा और बायू बंद हुवा सोई मूर्छा आई ताका नाम समाधी सोई स्वरूप कहा । अथवा कोई दृष्टीसे देखने लगा मुद्रा किया, तब आंखी पर चित्त चढा। लाल काला पीला हरा सफेत रंग नजर आया औ मग्न हुवा, तब मूर्छा आई तहाँ स्वरूप बनाया औ कोई ज्ञान सुनि मग्न हुआ। ये अर्थ। विष्णुने कहा किन वहां सूर्य, न वहां चंद्र है,न वहां अग्नि है,इंगला पिंगला सुषुमना आदि जगत जहां नहीं सोई परमधाम । तो जहां कछु नहीं सो शून्य । ये अर्थ। सोई बात सुनके सूने घरका पाहुना हुवा। ये जीव शून्यसे नेह लगाया, धोखे से नेह लगाया जहां कछु नहीं। शूने घरका पाहुना कहिये ब्रह्म । ये अर्थ। चार बेद कैंडा किये निराकार किये निराकार कियो राछ। चार बेद सोई कांडी लेके किराकार की टेक देके गुरुवा लोग चूनरी बिनते हैं। धोखे का जाल बिन बिन के सब जीवन को बांधते हैं लबार गुरु कहते हैं कि मैं तो किसी को नहीं बांधता सब को परखायके छुडावता हौं। ये अर्थ ॥ ८१ ॥

शब्द ८२.

तुम यहि विधि समुझो लोई। गोरी मुख मंदिर बाजे ॥
एक सगुण षट चक्रहि बेधे । बिना वृषभ कोल्हू माचा॥
ब्रह्महि पकरि अग्निमा होमै । मच्छ गगन चढि गाजा॥
नित अमावस नित ग्रहण होई। राहु ग्रासों नित दीजे ॥
सुरभी भक्षण करत वेद मुख। धन बसैं तन छीजे ॥
त्रिकुटि कुंडल मध्ये मंदिर बाजे। औ घट अंमर छीजे ॥
पुहुमीका पनिया अंमर भरिया। ई अचरज कोइ बूझे ॥
कहहिं कबीर सुनो हो संतो। योगिन सिद्धि पियारी ॥
सदा रहे सुख संयम अपने । बसुधा आदि कुमारी॥८२॥

टीका गुरुमुख—हे लोगो तुम यही तरहसे समझो जेहि तरह से गोरी मुख मंदिर बाजे । गोरी कहिये भक्त सनकादि नारदादि, मंदिर कहिये ढोल, सो ये गुरुवा लोग के मुख से जैसी बात निकरी तैसी तुने समझी । समझ के एक सगुण भक्ती करने लगे। एक सद चक्र बेध के योग करने लगे। बिना वृषभ कोल्हू माचा बिना बैल चरखा चलने लगा। वृषभ कहिये ब्रह्म को, कोल्हू कहिये बानी को सो ब्रह्म का तो कहूं ठिकानाही नहीं औ उसकी बानी तो चली । ये अर्थ । ब्रह्म हि पकरि अग्नि में होमे, मच्छ गगन चढि गाजा । ब्रह्म कहिये रजोगुण, सो रजोगुण को पकडि के योग अग्नि में होमे औ मच्छ कहिये जीव को, सो ब्रह्मांड में चढि के बोला कि मैं ब्रह्म । ये अर्थ । नित अमावस नित ग्रहण होई, राहु ग्रासै नित दीजै । खेचरी की दृष्टी तीन, पूर्णदृष्टी पूर्णिमा, ऊर्ध्वदृष्टी प्रतिपदा, अन्तर खेचरी अमावस, सो जब खेचरी अन्तर चढी औ काली पूतरी आकाशमें बेधी तब अन्धकार अविद्या ग्रहण होय के चेतन पर छाई । फिर बिजली सी चमकी औ तारागन की पंक्ति मालूम होय के चन्द्रार्क मण्डल प्रकाश के फिर महातेज प्रगटा । ता तेज ने जीव का ग्रास किया समाधी हुई; नेत्र पर पित्त छाया, मूर्छा में मग्न हुवा । राहु कहिये तेज, दीजै कहिये जीव । ये अर्थ । सुरभी भक्षण करत वेदमुख घन बरसै तन छीजै । सुरभी कहिये गैया, गैया कहिये बानी, वेदमुख कहिये ब्राह्मण, ब्राह्मण कहिये ब्रह्म वेत्ता, सो बडे बडे सनकादि याज्ञवल्क्यादि, शुकादि, जो ब्रह्मवेत्ता भये सो सभन को बानी ने भक्षण किया । अस्ति ब्रह्म ऐसी बानी जो उठी ताही ने सब ज्ञानी को खाया । गुरुवा लोग घन बरसने लगे नाना प्रकार से दृढावने लगे तामें सब जीव छीजने लगे । ये अर्थ । त्रिकुटी कुण्डल मध्ये मन्दिर बाजै, औ घट अम्मर छीजै । जो गुरुवा लोगों ने उपदेश किया सो

सब जग में दृढ हुवा। त्रिकुटी कुण्डली के भीतर दृष्टि फेरिके ब्रह्मांड में ध्यान लगाया, तब अनहद नाद दश प्रकार का उठा सो नौ नाद छोड के घंटा नादमें सुरति लगी। औ घटमें अम्मर जीव छीजने लगा लय होने लगा। ये अर्थ। पुहुमी का पनिया अम्मर भरिया, ई अचरज कोई बूझैं। पुहुमी कहिये अर्ध सो अर्ध की श्वासा ऊर्ध में ले जायके भरी औ अचेत होय रहे। कहते हैं कि हम ब्रह्म हुये ये बडा अचरज कोई बूझै। ये अर्थ। गुरु कहते हैं कि सर्व मिथ्या धोखा कहां है ये योगी लोगों की सिद्धि बडी प्यारी हुई इस वास्ते सदा सुख संयम में रहते हैं। बहुत खाते नहीं, बहुत पीते नहीं, बहुत बोलते नहीं, बहुत सोवते नहीं, बहुत चलते नहीं, सदा सर्वकाल नासाग्र अवलोकन करके मन को स्थिर करते हैं। बसुधा अहुटपीट, आदि कुमारी तुरिया, सो तुरिया में सदा रहते हैं योगी लोग, तहां से सब सिद्धी पावते हैं। परंतु देह के संग सब नाश होयगी आगे कछु रहने का नहीं, ताते सब मिथ्या धोखा। ये अर्थ। बिरह अर्थ--गुरुमुख-- गुरु कहते हैं कि तुम यही बिधि समुझो लोई, गोरी मुख मंदिर बाजै। देखो जैसा गोरी कहिये स्त्री, सो स्त्री का मुख देख के औ उस की मीठी बातें सुन के संसार सब भूल रहा लुब्ध होय रहा है। ये अर्थ। सगुण कहिये सुन्दरता, सो कोई सुन्दरताई में मस्त हुये औ खटचक्र में बंधे। खटचक्र कहिये दोनों नेत्र, दोनों स्थान, मुख औ भग. ये खट चक्र में सबै बँध जैसे कमल में भँवरा बँधा इस प्रकार से बन्धन में परे जो बिछुरे तो प्राण जाना चाहता है। इस प्रकार से विना बैलका कोल्हू माचा, मैथुन होने लगा। ये अर्थ। ब्रह्महि पकरि अग्नि में होमे। ब्रह्म कहिये काम, ताको पकड जठर अग्निमें होमे, मच्छ गगन चढि गाजा। जब काम खलित हुवा तब काम के बस होयके जीव अष्ट कमल लग गया। फिर काम खलित हुवा तब ब्रह्मांड पर चढा। नित

अमावस नित ग्रहण होई । इस प्रकार से नित स्त्री के पास आय के अन्धा होता है औ नित काम उमडता है औ विषय ग्रहण नित लगता है। जैसा सूर्य तो अति प्रकाशमान है परंतु जब ग्रहण लगता है तब कारा होय जाता है। इस प्रकार से जीव तो प्रकाशक चैतन्य सही परंतु विषय में लपटा तब अन्धाधुन्ध, मलीन, जडवत नजर आता है राहू काम ग्रासन करता है जीवको औ सुरभी स्त्री भक्षण करती है काम को । औ जैसी जैसी काम की बर्षा होती है तैसा तैसा तन छीजता है । फिर तन छीजते छीजते एक दिन मरा तो वही गर्भबास को जाताहै। त्रिकुटी कुंडल मध्ये मंदिर बाजै। त्रिकुटी कुंडल कहिये भगयंत्र, तामें मंदिर बाजे । जैसा जो जाग्रत विषय देखता है औ सुनता है सोई अध्यास का स्वप्न होता है। फिर स्वप्नको सुषुप्ती खाय लेती है। ता सुषुप्ती में संपूर्ण अध्यास का बीज रहता है तासों जाग्रति होती है। इस प्रकार से जबलग स्थूल देह रहता है तबलग जो कछु विषय आदि अध्यास रहता है,सो जब स्थूल छूटता है तब अध्यासी को अध्यासरूप चोला प्राप्त होता है। कंठ में गतागत भूमिका के ऊपर ताको नाम सूक्ष्म,सो चोला नौतत्त्व का शब्द स्पर्श रूप रस गंध चित्त मन बुद्धि औ अहंकार ये नौतत्त्व कहिये गंध बुद्धि पृथ्वी का अंश, रस मन पानी का अंश, अहंकार रूप अग्नी का अंश, चित्त स्पर्श वायू का अंश, शब्द अंतःकरण आकाश का अंश। पांच ज्ञान इंद्री सहित ये लिंग देह खडा होता है। तो उपरांत अंत समय में सुषुमना चलती है । ता सुषुमनामें सौलेष्टता भूमिका उदय होती है। सो सौलेष्टता लिंग देह सहित गतागत भूमिका को खाती है। फिर सुषुप्ती अवस्था सहित जीव को लेके सुषुमना चली जाती है। औ ता भूमिका में स्थूल सूक्ष्म दोनों का बीज रहता है । सो ताको निगल के सुषुमना अंतराल से ले

चली जैसे गंध को लेके वायू चली जाती है। इस प्रकार से फिर वो गंध पृथिवी में लय होता है । इसी प्रकार जीव स्थूल में समाता है। जैसा उस जीव में बीज होता है तैसी जगा में त्रिकुटी कुंडल अध्य मंदिर बाजता है अर्थ मैथुन होता है तहां जाय के उसकी सुषुमना में ये सुषुमना मिलती है फिर नाद बिंदु संयुक्त होय के कला गर्भ में समाती है। औ घट अम्मर छीजै । गर्भबास में जीव छीजता है। भला ये जीव की जाग्रति स्वप्न दोनों अवस्था लय होतीहैं तब सुषुप्तीमें कछु खबर रहती है । जो खबर नहीं रहती तो जो अध्यास करता है ताही की प्राप्ती कैसी होती है । ये शंका । तो जैसा नाना प्रकार का बीज पृथिवीपर परता है परंतु जा भूमिका का बीज ता भूमिका को उड़ता जाता है तब जामता है नहीं तो लवँग आदि बीज कछु जामता नहीं । तैसा सुषोप्ती विषय जो जाग्रती स्वप्न का बीज रहता है सो कछु मालूम नहीं रहता परंतु जब जामता है तब मालूम होताहै । कि जैसे सूर्य के विषय अंधकार का अभाव परंतु जब रात्री होती है तब मालूम होता है। इस प्रकार से औ घट अम्मर छीजै । ये अर्थ । पुहुमी का पनिया अंमर भरिया, ई अचरज कोई बूझै । पहुमीका पनिया अंमर जीव, सो जीव काम में मिश्रित होय के गर्भ में भरा ये आश्चर्य । जो चैतन्य होय के जड का आश्रित हुवा। ये अर्थ। कहहिं कबीर सुनो हो संतो, योगिन सिद्धि पियारी । हे संतो पारखमें कछु आवागवन नहीं ठहरता तो सर्व मिथ्या । योगिन को सिद्धि पियारी । योगी कहिये जो काम में युक्त हैं तिनको सिद्धि पियारी स्त्री पियारी । ये अर्थ । सदा रहै सुख संयम अपने बसुधा आदि कुमारी । बसुधा स्त्री सो अपने विषय के संयम में सदा रहती है । बहुत जीवन का काम सोसन किया परंतु तृप्ती नहीं भई । कुँवारीकी कुँवारी रही । ये अर्थ ॥ ८२ ॥

शब्द ८३.

भूला वे अहमक नादाना । जिन्ह हरदमरामहिं नाजाना॥
बरबस आनिकेगाय पछारी । गरा काटि जीव आपुलिया॥
जीयम जीव मुर्दा करि डारे। तिसको कहत हलाल हुवा ॥
जाहि मासुको पाक कहत हो। ताकी उत्पति सुन भाई ॥
रज बीर्य से मास उपानी । सो मास नपाकि तुम खाई ॥
अपनीदेखिकहतनहिंअहमक । कहत हमारे बडन किया ॥
उसकी खून तुम्हारी गर्दन । जिन्ह तुमको उपदेश दिया॥
स्याही गई सफेदी आई । दिल सफेद अजहूँ न हुआ॥
रोजा बांग निमाज क्याकीजे। हुजरे भीतर पैठि मुवा ॥
पंडित वेद पुरान पढे सब । मूसलमान कुराना ॥
कहहिं कबीर दोउ गये नर्कमें । जिन्हहरदमरामहिं ना जाना॥

टीका गुरुमुख–गुरु कहते हैं कि भला ये संसारके जीवों की भक्ती देखो जो सभ मिलि राम को खाविंद ठहराते हैं । राम का अर्थ करते हैं कि जो सब में रमा सो राम फिर यज्ञ आदिक जब करते हैं तब वो राम को मुश्किन से मारके चंदा निकारते हैं औ कोई बकरा बकरी मार के ऐसेही काट खाते हैं । तो देखो इनकी अहमकताई औ नादानताई, जो सब में रमा है सो क्या बकरे में नहीं । औ तुर्कन का तरीका तो देखो, जो कहतेहैं कि खालीक खलकमें भरा है फिर जबरदस्ती गाय पछारी तब क्या उसमें खालीक नहीं।सो देखो खालीक का गरा काट के मुर्दा करके खा गये औ मुंह से कहते हैं कि हमने हलाल किया । ये अर्थ । जो कहोगे कि खालीक सब में है तो कोई आपको आप मारता है औ आप को आप खाता है, देखो अहमक की बात । अरे जा मांस को पाक कहते हो ताकी

उत्पत्ति रज औ बीर्यसे होती है। कोई स्त्री रजस्वला होती है ताके छुये स्नान करते हो। औ कुरान में ऐसा बोलता है कि पिसाब का छींटा लगे तो उतनी जगह काट डारना तब पाक होता है। तो उस पिसाबकी देह ताको मांस तुम पीर को कैसे फातिया देतेहो औ कैसे खाते हो। ये अर्थ। अपनी देखी कहते नहीं अहमक, कहते हैं कि, हमारे बडोंने योंही किया। परन्तु जिनने तुम को ऐसा उपदेश दिया, तिनने आप अपना गरा कटाया है ऐसा खून उसके शिरपर चढा। स्याही गई सफेदी आई पर अंतःकरण कछु अबहीं शुद्ध हुवा नहीं ये अर्थ। अरे जो तुम रोजा, बांग, निमाज करते हो सो तो करते करते महम्मद मर गये उनकी स्थिति तो भई नहीं औ तुमको क्या होगी। पंडित वेद पुराण पढते हैं औ मुसलमान कुरान पढते हैं। परंतु ऐसा ऐसा कर्म करते हैं इस वास्ते नर्क को प्राप्त भये। सर्व घटमें अपने जीव सरीखा जीव नहीं जाना घात किया। ये अर्थ ॥ ८३ ॥

शब्द ८४.

काजी तुम कौन कितेब बखानी।

झंखत बकत रहु निसि बासर। मति एकौ नहीं जानी ॥
शक्ति अनुमाने सुन्नति करतु हो। मैं न बदोंगा भाई ॥
जो खुदाय तेरी सुन्नति करतु है। आपुहिकटिक्यों ना आई ॥
सुन्नति कराय तुरुक जो होना। औरत को क्या कहिये ॥
अर्ध शरीरी नारि बखानी। ताते हिंदू रहिये ॥
पहिरि जनेउ जो ब्राह्मण होना। मेहरी क्या पहिराया ॥
वो जन्मकी शूद्रिन परसे। तुम पांडे क्यों खाया ॥
हिंदू तुरुक कहांते आया। किन्ह यह राह चलाया ॥

दिलमें खोजि देखु खोजादे । बिहिस्त कहांते आया
कहहिं कबीर सुनो हो संतो । जोर करतु है भाई ॥
कबीरन ओट राम की पकरी । अंत चले पछताई ॥ ८४ ॥

टीका गुरुमुख—अर्थ स्पष्ट । कहहिं कबीर सुनो हो संतो, जोर करतु है भाई । कबीरन ओट रामकी पकरी, अंत चले पछताई । योग यज्ञ जप तप जाती कुल वर्ण आश्रम सर्व मिथ्या विचारमें कछु ठहरता नहीं । परंतु जोर करतु है भाई जबरदस्ती करके ठहराते हैं बिना बिचार से भाई । कबीरन कहिये जीव, सो जीवोंने आसरा रामका पकडा सो नास्ति धोखा कबहुं अस्ति हुआ है । ये अर्थ ८४

शब्द ८५.

भूला लोग कहै घर मेरा ।
जा घरमें तू भूला डोले । सो घर नाहीं तेरा ॥
हाथी घोडा बैल बाहना । संग्रह कियो घनेरा ॥
बस्तीमासे दियो खदेरा । जंगल कियो बसेरा ॥
गांठि बांधि खर्च नहिं पठवो । बहुरि न कीयो फेरा ॥
बीबी बाहर हरम महल में । बीच मियांका डेरा ॥
नौ मन सूत अरुझि नहिं सरझै । जन्म जन्म उरझेरा ॥
कहहिं कबीर सुनो हो संतो । यह पद का करहु निबेरा ८५

टीका गुरुमुख—गुरु कहत हैं कि भूला लोग कहैं घर मेरा । भूला लोग जो माटी पानी काष्ठ पषान का घर बनाया ताको कहते हैं कि घर मेरा । अरे जा घरमें तू भूला डोलता है सो देह भी तो तेरी है वोभी तो पांच तत्वोंका, उसमें तोभी तेरा क्या है जब देह तेरी ना ठहरी तो देह संबंधी लोग तेरे कब होंगे तो मिथ्या जाल में फँसा । ये अर्थ । हाथी घोडा बैल बाहन रथादि ये सब स्थूलके

योग से संग्रह किया परंतु जब चोला छूटा तब जहां के तहां गये तब जीवको कहां ठिकाना है बहु भ्रम में पडा । सो फिर ये घरकी फिकिर छोडा औ दूसरा घर बनाया । कदही ये घरकी खबर भी नहीं लेता औ गांठीमें बांधके खर्चा भी नहीं भेजता पत्रभी नहीं भेजता ये सब धोखे का जाल है आखिर तू छोड देयगा फिर अध्यासके बश तेरे को बडा दुख होयगा सो तू आगे ये क्यों नहीं छोडता । ये अर्थ । बीबी बाहर हरम महलमें,बीच मियांका डेरा। बीबी कहिये अपनी सुरत,हरम कहिये साहबकी सुरत बानी, सो सब वेद किताबकी बानी घटमें पैठी । तब अपनी सुरत को बाहर निकारा औ ता बानीके बीच घर किया स्थिति की । ये अर्थ। नौ मन सूत अरुझि नहिं सरुझा। नौ मन कहिये लिंग देह नौ तत्वों का, ताकी बासनामें बहुत अरुझा झीनी मायासे कोई छूटने नहीं पाता । तीर्थ व्रत होम हवन यज्ञ दान पुण्य संध्या ये बातन में सूत जीव अरुझा फिर सरुझने नहीं पाया। जब जब जन्म धारण किया तब तब परपंच विषयमें औ गुरुवालोग की बानी विषयमें अरुझ रहा । सो गुरु कहते हैं कि आवागवनका कारण बानी औ विषय अध्यास है। सो ता पद का निबेरा करो औ पारख पर ठहरो। ये अर्थ ॥ ८५ ॥

शब्द ८६.

कबीरा तेरो घर कदला में । यह जग रहत भुलाना ॥
गुरुकी कही करत नहिं कोई । अमहल महल दिवाना ॥
सकल ब्रह्ममों हंस कबीरा । कागन चोंच पसारा ॥
मन्मथकर्म धरे सब देही । नाद बिंद बिस्तारा ॥
सकल कबीरा बोले बानी । पानी में घर छाया ॥
अनंत लूट होत घट भीतर । घटका मर्म न पाया ॥

कामिनिरूपी सकल कबीरा । मृगा चरिंदा होई ॥
बड़ बड़ ज्ञानी मुनिवर थाके । पकरि सके नहिं कोई ॥
ब्रह्म वरुण कुबेर पुरन्दर । पीपा औ प्रह्लादा ॥
हरणाकुश नख बोद्र बिदारा । तिन्हको काल न राखा ॥
गोरख ऐसो दत्त दिगम्बर । नामदेव जैदेव दासा ॥
तिनकी खबर कहत नहिं कोई । उन कहांकियो है बासा ॥
चौपर खेल होत घट भीतर । जन्मका पासा डारा ॥
दमदमकी कोई खबरि न जाने । कोइ के न सके निरुवारा ॥
चारिदृग महि मंडल रच्यो है । रूम शाम बिच डिल्ली ॥
तेहि ऊपर कछु अजब तमाशा । मारो है यम किल्ली ॥
सकल अवतार जाके हि मंडल । अनंत खडा कर जोरे ॥
अदबुद अगम औगाह रच्यो है । ई सभ शोभा तेरे ॥
सकल कबीरा बोले बीरा । अजहूं हो हुशियारा ॥
कहहिं कबीर गुरु सिकली दर्पण । हरदम करहिं पुकारा ॥

टीका गुरुमुख—कबीरा कहिये जीव को, कंदला कहिये गंदला, चहला कीचड, चहला कहिये जड चैतन्य मिलि एक ब्रह्म कीचड कहिये काम, सो हे जीव तेरा घर ब्रह्म में हुवा वेद के प्रमाण से। परंतु ब्रह्म तो देह का अनुमान, सो जब देह छूटेगी तब देह का अनुमान कहां रहेगा वो भी जायगा तब जीव कामकंदला में प्राप्त होयगा। तो हे जीव तेरा घर बानीमें औ बानीके अध्यासमें, काममें स्त्रीमें। ये अर्थ। ये संतो ये संसार मिथ्या धोखे के भरोसे भूला रहता है जो गुरुवा लोगों ने कही सो संसार में निश्चय भई। औ यथार्थ पारख कोइ करता नहीं। असहल महल दिवाना । जो कछु महल नहीं सो असहल मिथ्या धोखा। तामें सब संसार दिवाना हुवा। ये अर्थ । सकल ब्रह्म में हँस कबीरा, कागन चोंच पसारा। सकल जगत ब्रह्म,

में अखंड अद्वैत एक रस । एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म । ऐसा कहि के कागन चोंच पसारा, गुरुवा लोगों ने मुख पसार के कहा । ये अर्थ । मनमथ कर्म धरे सब देही । देही कहिये जीव को जो देह का रहनेवाला, मनमथ कर्म कहिये ब्रह्म को जो मन से कल्पना भई कि कोई एक ब्रह्म है । सोई ब्रह्म सर्व जीव ने धारण किया औ बोलने लगे अहं ब्रह्म । औ नाद बिंद दो प्रकार की रचना चलाई । एक गृहस्थी बिंद से पैदा होने लगे औ एक बिरक्त चेला चाटी नाद से पैदा होने लगे ये दो प्रकार का बिस्तार चलाया । ये अर्थ । सकल कबीरा बोले बानी, पानी में घर छाया । सकल जगत ब्रह्मरूप है ऐसी जो बानी वेदने बोली, सर्वं खल्विदं ब्रह्म सो बानी में उन घर छाया औ अनंत लूट घट भीतर होने लगी । अनंत कहिये जाकी अंत नहीं, सुर नर मुनी किसी को भासी नहीं भई । सो मिथ्या धोखा की घट घट में लूट होने लगी जीवन को भ्रमाया । ये अर्थ । परंतु किसीने घट का मर्म पाया नहीं कि, एक ब्रह्म औ आत्मा औ नाना बानी ये घट से उठी फिर घट बिनस कहां जायगी देह के संग सब नाश होयगी । ये मिथ्या धोखे में मैं क्यों पडा हूं ऐसा न जाना । ये अर्थ । कामिनी रूपी सकल कबीरा, मृगा चारिन्दा होई । सकल कबीरा कहिये जीव को सो सब कामिनी रूप भये औ एक पुरुष अनुमानसे खडा किया सच्चिदानंद ताकी बिरह बढा कि सच्चिदानंदका अनुभव हम को कैसे प्राप्त होयगा सो मृगा चरिन्दा होई । मृगा कहिये मन को, सो अब चारिन्दा हुवा, कि नाना बानी में चरने लगा औ नाना भाव उठाने लगा । परमात्माको एक कहना तो कहां है नजर नहीं आता । औ अनेक कहिये तो नाश होता है ऐसा जानके परम बेहाल भये । कि अब परमात्मा का निश्चय कैसे करना । सो निश्चय के हेतु दिवाने भये सो मन के पीछे लगे । कि किस तरह से यह मन को थीर करना । सो बडे बडे

ज्ञानीमुनिजन थके परन्तु मन को कोई भी पकड़ सका नहीं। ये अर्थ। ब्रह्म वरुण कुबेर इंद्र पीपा प्रहलाद औ नरसिंहभी ऐसे महान भये। परंतु सब मनही के रंग में दिवाने भये मन काहू से न थीर हुवा। जो मन से कल्पना किया ताही में नाना प्रकारसे मन लगाया फिर जब भावना परिपक्व हुई तब उस मन का स्वरूप सह चैतन्य खड़ा हुवा ताही को भगवान करके मानते हुये, फिर उसी के रंग में दिवाने हुये। औ उस रूप से सिद्धांत पाय के संसार को भ्रमाने लगे परंतु ये मन का स्वरूप ऐसा समझने में नहीं आया। तब मन ही की सेवा में नाश भये तो उनकी स्थिति काहेकी। जब स्थिति नहीं भई तो फिर कहां रहेंगे गर्भबास को प्राप्त होयेंगे। प्रहलाद के मन का जो रूप बना सोई नरसिंह, हिरण्यकश्यपुका पेट फारा औ जग में विख्यात हुवा। फिर कहां गया उसका मन उसीमें समाया औ उस को भी मनने रक्खा नहीं नाश किया। ये अर्थ। गोरख ऐसो दत्त दिगम्बर औ नामदेव जयदेव आदि दास हुये। परंतु इनकी खबर कोई कहता नहीं कि इन सबने कहां बास किया। जब चोला छूटा तब ये कहां रहे सो इनकी खबर कोई नहीं कहता। भला जो कोई ऐसा कहै कि ब्रह्म में मिले तो ब्रह्म कहां है वो तो देह सम्बंधी अध्यास देह के संग रह गया। अथवा कोई कहेगा कि ब्रह्म कहीं देह सम्बन्धी होता है वो तो देहातीत है। तो देह छोड के कोई ब्रह्म हुवा भी नहीं औ ब्रह्म कहा भी नहीं। तो देह संयुक्त होय के देहातीत भी बोला तो देह का अध्यास अर्थात् हुवा। भला जो बानी के अनुमान से ब्रह्म माना जाय तो बानी ऐसी बोलती है कि सम्पूर्ण जगत ब्रह्मरूप है। तो भला जगतरूप रहा तो आवागमन में रहा कि नहीं तो गर्भबास में बास भया। ये अर्थ। चौपर खेल होत घट भीतर, जन्मका पासा डारा। चौपर कहिये चित्त मन बुद्धी हंकार।

सो नाना प्रकार की बानी सुन के मन ने संकल्प किया कि आइ भगवत गुणानुवाद सुनते जाना । जैसे जैसे बडे बडे चलते गय तैसे तैसे चलना तब नाना इतिहास पुराण सुना । तामें नाना प्रकार की उपासना का महात्म औ नाना प्रकारके योग का महात्म औ नाना कर्म का महात्म औ ज्ञानका महात्म कहीं कहता है । सो सुनके घट में संकल्प बिकल्प होने लगा ।

चौपदी—कहीं कहत विष्णुसे न, देव कोई और दूजा । जग के उधार हेत लीला जिन धारी है ॥ कोई कहत शंकर से, भोला न और कोई । मुक्ती और संपति को, दाता त्रिपुरारी है ॥ कहीं कहै उत्पत्ति स्थिति, लय को कारण है भान । तीन लोक मांझ जान जाकी उजियारी है ॥ कहीं तो गणेश जी की, महिमा अति देखियत । कहीं शक्ती आगे सब, देवता बिचारी है ॥ पूरण कहत देखो, बानी कृपाण पैनी । छेद जात वार पार, जैसी कटारी है ॥ १ ॥

इस प्रकार से नाना बानी के संकल्प विकल्प भये । फिर जो जिसे प्यारी लगी तहांका अनुसंधान बांधा चितने । फिर बुद्धीसे निश्चयकरके उस कर्तूत का अभिमान किया सो हंकार । फिर देवता का अभिमानी कोई शास्त्रन का अभिमानी कोई देह का अभिमानी कोई ज्ञान का अभिमानी चित्त औ उपासना का अभिमानी बुद्धी औ शास्त्रका अभिमानी मन औ देहका अभिमानी अहंकार । इस प्रकार से चौपर खेल घट भीतर होने लगा ताते जन्म का पासा डारने लगे । जो कछु कर्तव्य करते हैं सो सब बंधन होके जन्म को लाता है । । ये अर्थ । परंतु दम दम की खबर कोई जानता नहीं, कि हम पल पल ध्यान करते हैं औ पल पल स्मरण करते हैं सो किसका ये संपूर्ण हमारा बंधन है । ऐसा निवारा कोई पारख बिना कर नहीं सक्के । ये अर्थ । चारिउद्रिग महि मंडल रचो है,रूपश्यामबिचडिल्ली । चार द्रिग

कहिये चार किल्ला, जीवन के बंधन हेतु ब्रह्मादि गुरुवा लोगोंने रचा, तामें सर्व जीव कैद भये । चार झिग कहिये चार वेद औ चार झिग कहिये त्रिकुटी, श्रीहट, गोल्लाट औट पीट औ चार झिग चार वर्ण चार झिग चार अवस्था औ चार झिग ज्ञान भक्ति योग उपासनाकर्म इस प्रकार से पृथ्वी पर गुरुवा लोगों ने बंदीखाना किया सो ताही बंदीखानामें जीव सब बंध भये । स्वतःप्रकाश प्रथम अनुमाना सो बंधनमें परे औ ब्रह्मज्ञानी भये । दूजे दुतिया मालिक अनुमान करके दास कहाये भक्ती कोट में बंध भये । तीसरा योग बंधन में परे सो योगको साध-के सिद्ध कहाये योगी कहाये । चौथे कर्म के बंदीखाना में परे । होम हवन तीर्थ व्रत नेम आचार करने लगे, लोक वास का विचार किया। ये अर्थ । रूम शाम बिच डिल्ली।रूम कहिये पश्चिम, शाम कहिये पूरब पश्चिम कहिये चंद्र, पूरब कहिये सूर्य,इस प्रकारसे इंगला पिंगला दोनोंके बीच सुषुमना, तेहि सुषुमना के ऊपर कछु अजब तमाशा जो परम आनंद ब्रह्मकी प्राप्ती है,अकह वस्तु कछु कहनेमें नहीं आवती।ऐसा कहि-के जम कहिये बंधन करनेवाले गुरुवालोगोंने किल्ली मारा।कि सकल औतार जाके महिमंडल पर भये राम कृष्णादि सो परमात्मा । शिखा मध्ये व्यवस्थितः।ताहि की स्तुति वेद गावता है औ अनंत ऋषी मुनी ताही के आगे कर जोडे खड़े हैं ऐसा कहिके समस्त जगत फांसे में पडे परंतु ई सभ शोभा तेरे ।गुरु कहते हैं कि हे जीव तेरे बिना कछु हुवा नहीं । अरे इंगला पिंगला एक किया सो तूही । सुषुमना में लीन होय के ब्रह्मांड में गया सो तूही। और कोई परमात्मा है ऐसी कल्पना किया सो तूही । औ सुषुमना में आनंद पैदा किया सो तूही । औ आनंद में मग्न होके ब्रह्म कहाया सो भी तू । धोखा उठाना औ धोखे में मिलना ये सब शोभा तेरे । तेरे ऊपर कोई और मालिक नहीं । ये अर्थ । तू परखके धोखा छोड पारख तेरा

स्वरूप है,सो तू थीर हो सकल कबीरा बोलै बीरा । सकल कबीरा कहिये गुरुवा लोग, जो कछु बोलते हैं सो सब धोखा भाई हे जीव अब भी हुशियार हो, नहीं तो नाहक धोखे में मारा जायगा । ये अर्थ । अरे जो जो तू मानेगा और जो जो तू कहेगा सो सब तेरा अनुमान कहां है मिथ्या धोखा।हे जीव गुरु सिकली दर्पन।गुरु कहिये पारख जासे संपूर्ण धोखा गाफिली परखने में आवै औ संपूर्ण बंधन से जीव छूटै,सुखी होय रहिते होय, सोई रहित पद । ये अर्थ । सो हरदम जा घट में पारख प्राप्ती भया, ता घट में हरदम हर वक्त पुकारा करते हैं जाते जीव को पारख प्राप्त होय । औ पारख तो सदा अविनाश स्थिर पद । युग युग भूल छुडाते हैं ये अर्थ ॥ ८६ ॥

शब्द ८७.

कबीरा तेरो बन कंदला में । मानु अहेरा खेले ॥
बफुवारी आनंद मृगा । रुचि रुचि शर मेले ॥
चेतत रावल पावन खेड़ा । सहजे मूल बांधे ॥
ध्यान धनुष ज्ञान बाण । योगेसर साधे ॥
षट चक्र बेधि कवल बेधि । जाय उजियारी कीन्हा ॥
काम क्रोध लोभ मोह । हांकि सावज दीन्हा ॥
गगन मध्ये रोकिन द्वारा । जहां दिवस नहिं राती ॥
दास कबीरा जांय पहूँचे । बिछुरे संग साथी ॥ ८७ ॥

टीका गुरुमुख—कबीरा कहिये जीव को, बन कहिये बानी को, बन कहिये संसार को सो गुरु कहते हैं कि हे जीव, तेरी बानी सब संसार से पैदा भई है । ब्रह्म आत्मा निअक्षर औ अनेक उपासना, वेद आदिक जेती बानी है सो सब संसारमेंसे पैदा भई जीवकी कल्पनासे । और बानी कछु स्वर्ग से भी नहीं गिरी और बानी का कछु झाड भी नहीं उगा । तो तू देख ये बानी संसारसेई पैदा भई और

संसार मेंई रही । कंगला कहिये संसार। ये अर्थ । परंतु वह बानी के अनुमान से जो माना कि कोई ब्रह्म है कोहं ब्रह्म अथवा मैंही ब्रह्म हौं सोहं ब्रह्म, या कोहं सोहं छोडके । सर्वात्मा समं ब्रह्म सोई अध्यास शिकार खेलता है अनुमान में डारता है । अरे तेरी कल्पना तेरा नाश करती है । जो तू आप अपने को कल्पिके बिसारके ब्रह्म अथवा किसीका गुलाम बनता है ताते तेरी भूमिका तेरेसे छूट जाती है सो तू चौरासी भ्रमता है । ताते संपूर्ण अध्यास को परख औ छोड मिथ्या धोखा पारख तेरी भूमिका है सो ताको छोडा औ बहा । ये अर्थ । बफुवारी आनन्द मृगा बफुवारी संसार, बफुवारी बानी, आनन्द मृगा मन, आनन्द मृगा ब्रह्मज्ञानी, सो जो मन संसार में आनंद हो रहा है बानी में आनंद हो रहा है सो ब्रह्मज्ञानी रुचि रुचि शर मेले रुचि रुचि के बानी में दृढ करने लगे । ये अर्थ । चेतत रावल पावन खेडा । रावल कहिये जीवको, सो सुनि सुनिके जैसा गुरुवा लोग समझाने लगे तैसा ये जीव समझने लगा अपनी देह पावन करने के वास्ते । ये अर्थ । सो सहजै मूलबंध करके ध्यान धनुष, धनुष ध्यान कहिये खेचरी, जैसे कमान के तिल्ला को खेंचते हैं तैसी आंखें ऊपर को खेंचीं ।

चौतुक—भौंहैं कमान बीच, आंखि दोउबान लाय नासिका निशान देखि, ऐंच मेरे भाई ॥ कडकी कमान जैसी, बिजलीसी चमक भई तारन सो टूटै तेज, बाढ़ घटा छाई ॥ तेज में सुतेज, देखो कोटि भान सम प्रकाश, वृत्ती सब थकित भई, सूक नजर आई ॥ ताहि निशान मांझ, लक्ष गांसी जाय लगी पूर्णानंद प्रगट भयो, आपै आप जाई ॥ १ ॥

इस प्रकार से लक्ष गांसी धनुष ध्यान में जब लागी तब मूर्छा आई, यही ब्रह्म ध्यान योगेश्वर साधे । ये अर्थ । षट्चक्र बेधि कमल

बेधिजाय उजियारी कीन्हा। षट चक्र कहिये मूलाधार गुदाचक्र चतुर्दल कमल ताको बेधन किया। प्रथम गणेश क्रिया करके गुदा को साफ किया, ता उपरांत गुदा से पानी खैंचने लगा। जब पानी चढ़ने लगा फिर पीछे छोड़ने लगा ताको बस्ति क्रिया कहिये। तो बस्ति क्रिया जब पूरी भई तब पवन चढ़ाने लगा औ गुदाचक्र बेधा ता उपरांत स्वाधिष्ठान चक्र लिंग भूमी पेड़ु पर, छौ दल कमल ताको बेधने लगा सो गज क्रिया करने लगा द्वादश अंगुलका गज बनाया औ लिंगमें चलाया तासे लिंगद्वार साफ किया। फिर लिंगसे दूध ऐंचने लगा जब शहद ऐंचा तब गज क्रिया सिद्ध हुई। फिर लिंगसे वायू ऐंच के स्वाधिष्ठान चक्र बेधा औ अपानमें समान मिलाया। तब धोती क्रिया करने लगा मनिपूर चक्र बेधने के वास्ते। मनिपूर चक्र नाभि-स्थान में, दश दल कमल, सो दो अंगुल चौड़ी औ नौ हाथ लम्बी धोती लीलना। फिर निकारके मैल धोय डारना औ फिर लीलना ऐसी तीनबार भई। तब धोतीक्रिया सिद्ध भई। तब नाभीसे पवन उठाय के मनिपूरचक्र बेधा। फिर अपान औ समान दोनों प्राण में मिलाना औ अनहदचक्र बेधना। अनहदचक्र हृदय स्थान, द्वादश दल कमल सो कुंजर क्रिया करना। प्रात समय खूब पानी पीना औ निकारना फिर पीना फिर निकार डारना त्रिबार। तदनन्तर एक सवा हाथको दातुन बनाना रस्सी की; ताको चलाना औ पानी पीपी छाड़ते जाना तब कुंजर क्रिया हुई। तब वायू उठाना औ अनहदचक्र बेधना। प्राण अपान समान तीनों को लाके उदान में कंठ में मिलाना। सो कंठमें विशुद्धीचक्र, सोरह दल कमल लम्बी का योग करना। अहार दूध करना बहुत बोलना नहीं। जिभ्या के तरे की रग मसका औ सेंधौ से रगड़ना औ प्रात समय जिभ्या दोहन करना। इस यतन से जिभ्या बढ़ायके ऊर्ध्व द्वार में लगाना औ गजर में अमृत

चूता है ताको पान करना। जब अमृत पान किया तब देह जागी औ लंबिका योग हुवा फिर विशुद्धीचक्र बेधा। तदनंतर त्रिकुटीस्थान में अग्निचक्र, दो दल कमल, तहां नेतिक्रिया करना। नाक में बत्ती चलाय के धोना। फिर उदान वायु को जीतके प्राणायाम करना। कंठ से वायू उठाना औ विशुद्धी चक्र बेध के अग्निचक्र में वायु जब आवे तब जिभ्या को लेजाय के ऊर्ध्व द्वार में लगाय देना। ऊर्ध्व द्वार बंदकरके अग्नीचक्र बेधके जाय उजियारी कीन्हा। ब्रह्मांड में श्वास लय हुवा कुंभक होय के तब देह शून्य होय गया। काम क्रोध लोभ मोह ये सब सावज हांकि देने ब्रह्मांड बास किया। गगन मध्ये श्वास चढायके ऊर्ध्व द्वार रोका जहां दिवस नहिं राती। दिवस सूर्य औ राती चंद्र ये दोनों जहां नहीं तहां सुषमना जाय ब्रह्मांड में भेदी। इसप्रकार से दास कबीरा जाय पहुंचे योगी लोग जाय पहुंचे ब्रह्मांडमें। औ संग साथी चित्त-मन बुद्धि अहँकार आदि जेते संग साथी थे सो सब बिछुरे और निर्वि-कल्प हुवा अंधाधुंधमें परी बानी सुनके। परंतु जब चोला छूटेगा तब योग औ बानी औ समाधी कहां रहेगी सबही नाश होयगी। और जो तूंने माना सोई तेरा काल तेरे को खाता है औ फिर गर्भबास को प्राप्त करता है। सो तू कसर परखके छोडदे औ पारख पर थीर हो। ये समस्त तेरी कल्पना। ये अर्थ ॥ ८७ ॥

शब्द ८८.

सावज न होई भाई सावज न होई। वाकी मासु भखे सब कोई॥
सावज एक सकल संसारा। अविगति वाकी बाता॥
पेट फाडि जो देखिय रे भाई। आहि करेज न आंता॥
ऐसी वाकी मासु रे भाई। पल पल मासु बिकाई॥
हाड़ गोड़ ले धूर पँवारिनि। आगि धुवां नहिं खाई॥

शिर सींगी किछुवो नहिं वाके । पूछ कहां वै पावै ॥
सब पंडित मिलि धंधे परिया ।कबीरा बनौरी गावै॥८८॥

टीका गुरुमुख–सावज न होई भाई सावज न होई । सावज कहिये मुर्दा औ मासु कहिये बानी, औ मुर्दा कहिये ब्रह्म,ब्रह्म कहिये भ्रम, भ्रम कहिये जो वस्तुता कछु नहीं ।

सवैया चौबोला–रूप न रेख अदेख न देख, सबै सब भेख न एकौ जाने। अज्ञान न ज्ञान अथान न थान, अमान न मान जो वेद बखाने । जैस को तैसा रहै भ्रम ऐसा सो ताहि को आतम निश्चय माने । कारण कारज जहां नहीं सोई, पूरण धोखे महा भ्रम साने ॥ १ ॥

इस प्रकार से जो निश्चय करते हैं सो ब्रह्म कछु नहीं जाकी बानी सब कोई पढते हैं औ जाको महावाक्य ऐसा भाखते हैं सो मिथ्या धोखा । ये अर्थ । सावज एक सकल संसारा, अविगति वाकी बाता। ऐसा ब्रह्म एक संसारने निर्मान किया बानी के अनुमान से । परंतु पेट फारि जो देखिये रे भाई उस ब्रह्म को जबलग गुप्त रहने देव तबलग अच्छा औ जो विचरन निर्णय करके देखने जाव तो कछु वस्तु ठहरता नहीं । औ पूछो कि जीव को छोड के ब्रह्म कैसा है उस की उत्पत्ति स्थिति कछु बताव तो दांत निपोर देते हैं कछु कहाही नहीं जाता । ये अर्थ । करेज कहिये जाकर यह सृष्टि सो ईश्वर औ आंता कहिये आत्मा । सो ना कहूं ईश्वर ना कहूं आत्माहै एक जीव है । ये अर्थ । परंतु ऐसी उसकी बानी है जो पल पल संसार में बिक रही है । ब्रह्मार्पण कहि के दानी दान देते हैं औ भिक्षुक तैसा ही कहके लेते हैं । बारम्बार ईश्वर का स्मरण होता है। ये अर्थ । हाड गोड लै घूर पवारिनि, आगि धुवां नहिं खाई ।

हाड कहिये पर्वत आदि अम्बर औ गोड कहिये चर पशु पक्षी मानुष आदि धूर कहिये आत्मा, सो चराचर जगत संपूर्ण लेके आत्मा में डारे । आत्मा को अधिष्ठान बनाया औ ज्ञान अग्नी से सब चराचर कचरा जराया । सो कहीं आगि भी लगी नहीं औ धुवां भी निकला नहीं जैसा का तैसा ही रहा । तो जैसा कोई बावरा गाफिल पहाड़ की सैल करने गया सो महा अरण्य में जाय फँसा औ रास्ता भूल गया । सो बन में घबरा औ नाना बाघ रीछ औ सर्प आदि भय मालूम भया सो भागने लगा । जहां जहां भागा तहां तहां धक्का खाया ठोकर खाया औ झाडी में अरुझा, व्याघ्र आदि जंतुन ने घेरा तब खाविंद राजा राम ऐसा बहुत गोहराया । जब कोई नजर नहीं आया तब अपनी अनुमान से आंख मूंद कर एक अनुमान की बड़ी अ ी पैदा किया । तब अनुमान से मालूम हुवा कि बन जर गया । औ जब आंख खोल के देखा तब न कहूँ आग लगी न कहूं धुवां हुवा ऐसा ब्रह्मज्ञानिन का विचार । जो अपने अनुमान से जगत चराचर का नाश करते हैं एकान्तिक प्रलय बताते हैं । परंतु अनुमान की अग्नी से कहूं पर्वत जरते हैं मिथ्या धोखा । ये अर्थ । अरे शिर सींगी जीवरूप, वह कछु है नहीं ताको तुम सब पूछते फिरते हो तो जो कछु है नहीं सो कहां से पायेगा । अरे ब्रह्मादि सब पंडित धंधे में परिया, कल्पना करके अनुमान में परे, तिनकी बनौरी बानी कबीरा जीव गाता है । मिथ्या धोखा में बंधमान होय रहा बिना पारख । ये अर्थ ॥ ८८ ॥

शब्द ८९.

सुभागे केहि कारण लोभ लागे । रतन जन्म खोयो ॥
पुर्बल जन्म भूमि कारण । बीज काहेक बोयो ॥

बुन्द से जिन्ह पिंड संजायो । अग्नी कुंड रहाया ॥
जब दश मास माता के गर्भे । बहुरी लागल माया ॥
बारहुते पुनि वृद्ध हुवा । होनहार सो हूया ॥
जब यम बेहैं बांधि चले हैं । नैन भरी भरि रोया ॥
जीवनकी जनि आसा राखो । काल धरे हैं श्वासा ॥
बाजी है संसार कबीरा । चित्त चेति डारो फांसा ॥८९॥

टीका गुरुमुख–सुभागे कहिये जीव को, लोभ कहिये धोखा, धोखा कहिये स्वर्ग आदि प्राप्ती, अर्थ धर्म काम मोक्ष आदि, पुण्य आदि द्रव्य आदिक लोभ केही कारण तोहि लागा । अरे जेता तेरा लोभ तेता संपूर्ण तेरे को बंधन है सो बंधन में तू नाहक बंधा औ रत्न जन्म खोया मानुष जन्म खोया । पूर्बल जन्म भूमि कहिये ब्रह्म निर्वि-कल्प अधिष्ठान सोई तो सब संकल्प विकल्प जगत का कारण है सो बीज काहेको बोया जो बीज से तू नानात्व विकार को प्राप्त भया सो ब्रह्म औ आत्मा तू क्यों बनता है । बुंद से जिन पिंड संजायो, अग्नी कुंड रहाया । बुंद कहिये स्फुर्ण, सो जो ऐसा आत्मा है कि जाके स्फुर्ण से जगत निर्माण हुवा सोई संपूर्ण जगत में रहा । जब दशमास माता के गर्भे । दश कहिये चार वेद छौ शास्त्र, मास कहिये बानी, माता कहिये माया; माया कहिये काया, सो काया में होयके चार वेद छौ शास्त्र सब कल्पना किया । वो सब कल्पना इसी को बंधन हुई । ये अर्थ । बारहु ते वृद्ध भया । बार कहिये जीव को औ वृद्ध कहिये ब्रह्म को, सो जीवसे ब्रह्म हुवा । होनीहार सो हुवा जो ब्रह्म होनेकी चाह थी सो नाना प्रकारके बिचार करके जब थका तब वेद श्रुति के प्रमाणसे आपै ब्रह्म बना परंतु जब चोला छूटेगा तब कहां रहेगा । अरे अध्यास में बंधा गर्भबास को चला जायगा तब यम गुरुवा लोग कछु छुडाने को नहीं आने के । जो बंधन देइ सोई यम । ये अर्थ । अरे जीव जो-

वनकी आशा जनि रक्खो, काल धरे हैं श्वासा । जिन्ह जिन्ह श्वास, ब्रह्मांडमें धारण किया सो भी मरगये, तुम जीवने की आशा मत रक्खो नहीं तो गाफिली में मरोगे। औ नैन भरि भरि जो ब्रह्म औ जगत देखते थे सो छूट जायगा पुनि यह गर्भवासको प्राप्त होयगा तब रोवेगा । अरे संपूर्ण संसार में जो गुरुवा लोगों ने रची है सो बानी इन्द्रजाल है। हे जीव चैतन्य है जाननेवाला है। तू जानि के सब फांस डार दे औ पारख तेरा रूप है सो पारख पर तूं थीर हो ब्रह्म जगत औ आत्मा ये संपूर्ण तेरेको फँसाने का फांसा है सो तु जान। जो तू निश्चय करेगा सोई तेरे को फांसा । ये अर्थ। विरह अर्थ–सुभागे तेरे को स्त्री पुत्र घर धनादि लोभ काहे लगा अरे लोभ में तूने रत्न जन्म मानुष जन्म क्यों खोया । औ पूर्वल जन्मभूमि कहिये स्त्री, जो पहले स्त्री से पैदा भया औ पैदाइशका कारण स्त्री है । जो स्त्री न होय तब सब पैदा कहां से होय। ऐसा उत्पत्ति का कारण स्त्री तामें जाय के फिर बीज काहे को बोया। अरे तू ने अपनी मायके पेटमें पैदा होके क्या किया नाना प्रकार के दुःखहीको प्राप्त हुवा अरु बीज बोयके और जीवको दुख क्यों दिया । हे संतो देखो जीवकी बाजी, जो बुंद से पिंड साबुत करता है और अग्नीकुंडमें गर्भवासमें रहता है। जीवही मैथुन करता है औ जीवही गर्भवास करता है। जब दश मास माता के गर्भमें रहता है फिर मूत्रद्वारा होय बाहर आया कछु दिन अज्ञान ताई में रहके गवांया । औ कछु दिन खेल में गवांया फिर स्त्री में जाय लगा सो उसी के मोहमें लडकाई से बुढ्ढा हुवा । विषय इन्द्री सब शिथिल भई । जब मृत्यु आई तो मोहके वश होयके नैन भरि भरि रोवने लगा । तू देख जीवन की आशा मत रक्खो, संपूर्ण विषय तूं आगे ही छोड दे तो देख तेरेको अंतमें बडा सुख होयगा । औ तू जो विषय नहीं छोडेगा तो ये आखिर तेरे को छोड देवेंगे। फिर तू ये विषय

के अध्यास के बश होयके नाना योनीको प्राप्त होयगा औ तेरे को फिर बडा दुख होयगा । ताते स्त्री ने विषय बाजी जीव को फँसाने के वास्ते रची है । सो हे जीव तूं चैतन्य है तो चेति के खलना समझ छोड देना । ये अर्थ ॥ ८९ ॥

शब्द ९०.

संत महंतो सुमिरो सोई । जो काल फांसते बांचा होई॥
दत्तात्रेय मर्म नहिं जाना । मिथ्या साध भुलाना ॥
सलिल मथि घृत कै काढिनि । ताहि समाधि समाना ॥
गोरख पवन राखि नहिं जाना । योग युक्ति अनुमाना ॥
ऋद्धि सिद्धि संयम बहुतेरा । पारब्रह्म नहिं जाना ॥
वशिष्ठ श्रेष्ठ विद्या संपूरण । राम ऐसे शिष्य शाखा ॥
जाहि राम को कर्ता कहिये । तिनहुं को काल न राखा ॥
हिंदू कहैं हमहिं ले जारो । तुरुक कहैं हमारो पीर ॥
दोऊ आय दीन में झगरैं । ठाडे देखैं हंस कबीर ॥

टीका गुरुमुख—हे संतो हे महंतो सोई सुमिरो जो काल फांसते बांचा होय । काल कहिये कल्पना औ काल फांस कहिये तत्त्वमस्यादि बानी, तत्त्वमस्यादि बानी से जो बांचा होय सो पारखी । जब लग काल फांस परखने में नहीं आई तब लग कछु छुटती नहीं । औ जब तत्त्वमस्यादि बानीकी कसर मालूम भई तब उचटी कि मेरी कल्पना औ मेरा अनुमान मेरेको बन्धन हुवा था परंतु बस्तुता मिथ्या औ मैं जीव सत्य । भला आजलग मैं यही फांस में फँसा था औ नाना दुख भोगता था औ अब मेरे को तत्त्वमस्यादि कल्पना मिथ्या औ मैं जीव सत्य ये काहे से मालूम हुवा । तो जबलग पारख नहीं थी तबलग सब सत्य मालूम होता था औ असत्य को सत्य माना था सोई बंधन में नाना दुख भोगता था । अब पारख प्राप्त भई, ता पारख

के प्रताप से संपूर्ण फांसी परखने में आई औ न्यारा हुवा धोखा सब छूटा तब मेरा स्वरूप शुद्ध पारख रहा । अब बानी अनुमान कल्पना ये फांसी कछु मेरे विषय संभवती नहीं, मैं शुद्ध पारख ऐसा जो हुवा सो काल फांसते बचा। तो हे महान जीव ता पारख का सुमिरन करो पारख के तरफ फिर देखो । जाते तुम्हारी फांसी छूटै औ स्थिती होय । ये अर्थ । दत्तात्रेय पारखका मर्म नहीं जाना अगर जो पारख को प्राप्त होते तो मिथ्या धोखे में क्यों परते । तो मिथ्या साध भुला ना.ब्रह्म आत्मा कहायके मिथ्या धोखे में भूले । ये अर्थ सलिल मथि घृतके काढिनि, ताहि समाधि समाना सलिल कहिये पानी, पानी कहिये बानी. बानी कहिये वेद सो वेद मथिके सार ॐ निकारा सो आत्माराम । ताहि समाधि समाना । ताही समाधि में समाये औ ब्रह्म बने । जो पारख पाते तो धोखे में क्यों परते । ये अर्थ । गोरखनाथ को भी पारख नहीं प्राप्त भया, भला जो पारख प्राप्त होता तो पवन को भी पारख नहीं प्राप्त भया, भला जो पारख प्राप्त होता तो पवन ब्रह्मांड में रखने का क्या काम । तो वोभी योग युक्ती करके अनुमान में बंधे । ऋद्धि सिद्धि संयम बहुते पारब्रह्म नहीं जाना । ऋद्धी सिद्धि औ संयम बहुत किया औ पारब्रह्म कहाये बिना पारख पारख न जाना । ये अर्थ । वशिष्ठ श्रेष्ठ विद्या संपूर्ण औ वशिष्ठ कहिये सब ज्ञानिन में श्रेष्ठ, विद्या संपूर्ण जानते थे औ राम ऐसे जाके शिष्य शाखा है । औ जिस राम को सब कहते हैं छि कर्ता हैं सो उन को भी पारख प्राप्ती नहीं भई । देखो जब रामचन्द्र वशिष्ठ मुनी के शरण गये तब वही तत्वमसीका उपदेश रामचंद्र को दिया ताको प्रमाण योग वशिष्ठ कहता है । तो वो भी अनुमान में फँसे अहँब्रह्मास्मि कहाये । ये अर्थ । हिंदू कहैं हमहिं ले जारो, तुरुक कहैं हमारो पीर। ये देखो दोनों दीन बने औ झगरने लगे बिना पारख । औ जो पारख पर ठहरे उसको क्या जलाना और क्या गाडना है। क्या ब्रह्म है औ क्या जगत

है संपूर्ण मिथ्या तमाशा देखा । ये अर्थ । हंस कहिये जो नीरक्षीरका निबेरा करे। औ कबीर कहिये काया बीर जीव,नीर कहिये बानी औ क्षीर कहिये जीव;सो जो जीवने बानी अलगाय दिया औ जीव अलगाय दिया सो हंस । पारख के प्रताप से सब अलगाय के आप पारखरूप भया औ सबको परखने लगा तमाशा देखने लगा।ये अर्थ९०

शब्द ९१.

तन धरि सुखिया काहु न देखा । जो देखा सो दुखिया ॥
उदय अस्त की बात कहत हैं । सब का किया बिबेका ॥
बाटे बाटे सब कोइ दुखिया । क्या गेही बैरागी ॥
शुकाचार्य दुखही के कारण । गर्भहि माया त्यागी ॥
योगी जंगम ते अति दुखिया । तापस के दुख दूना ॥
आशा तृष्णा सब घट व्यापी । कोई महल नहिं सूना ॥
सांच कहों तौ सब जग खीजे । झूठ कहा ना जाई ॥
कहहिं कबीर तेई भो दुखिया।।जिन यह राह चलाई॥९१॥

टीका गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि हे संतो तन धरि कोई सुखिया नहीं देखा, क्योंकि जो संपूर्ण दुख का घर देह है । अरे जो कुछ सुख अथवा दुख होता है सो देह से होता है । और जो देह नहीं तो सुख दुख का क्या कहूं झाड होता है । सुख दुख का झाड तो देह है सो देह धारण करके सुखी कैसे होयगा । याते जो देखा सो दुखिया । ये अर्थ । उदय अस्त की बात कहत हैं, सब का किया बिबेक। अरे जो महा सिद्ध भये व्यासादि बाल्मीकादि सब का बिबेका किया तो अपने अपने देह में सब कोई दुखिया हैं । क्या गेही और क्या बैरागी । बैरागी को बैरागका दुख कि कहीं मेरा बैराग छूटने न पावे अगर मेरा बैराग छुटेगा तो मेरे को ईश्वर की प्राप्ती

नहीं होने की । ऐसा निश्चय करके परम बैराग्यमें रहते हैं कनक कामिनी को देखते नहीं । कहीं अच्छा षट रस भोजन मिला तो खाते नहीं । कडू कसाला रूखा सूखा पाला वाला खाते हैं । अगर कोई अच्छे कपडे पहिरावे तो पहिरते नहीं । फाटी चीटी चींधी अगर धुनी तापते हैं कि मेरा बैराग सिद्ध होय । ऐसी शंका पकड के न कछु बात के वास्ते दुखिया होय रहे हैं। ये अर्थ। औ गृहस्थ कहते हैं कि हमारी हुरमत कैसे निबहैगी । हमारा कुंटुब कैसे पोषण होयगा औ द्रव्य कैसे मिलेगा । और अनेकन देहके दुःख से दुखी। ये अर्थ। ऐसे ऐसे दुःख के कारण शुकाचार्य गर्भ ही माया त्यागी। जो बारह वर्ष गर्भ ही में बास किया परंतु आखिर तन धरके दुख उनको भी न छूटा। ये अर्थ । योगी लोग योग क्रिया के दुखमें परे हैं नाना कष्ट भोगते हैं । औ जंगम को शिवाचार का दुख, जो शिवाचार छोडेंगे तो नर्कमे जायेंगे इस वास्ते अति दुखिया अति दुख में पडे हैं। ये अर्थ । तापस के दुख दूना । गर्मी में पंचअग्नि तापना, शीत समय जलशयन करना, वर्षाॠतुमें आरण्य में रहना, झाडकी पत्ती बीन के खाना, ऐसा दूना दुख हुवा । ये अर्थ । अरे आशातृष्णा सब घट व्यापी । आशा कहिये स्वर्गादि ब्रह्म होनेकी औ तृष्णा कहिये जगत की धन दारा पुत्र घर सिद्धि ऋद्धी भक्ती की,ऐसी आशा तृष्णा सब घट व्यापी कोई घट भी खाली नहीं । कोई घटमें भी पारख नहीं मिली । ये अर्थ । सांच कहीं कि समस्त ये जीव की कल्पना है औ जीव सत्य है तो शब्द खीझते हैं मिथ्या धोखे का पक्ष लेते हैं । भला जो पूछो कि ब्रह्म कहां है औ कैसा है तो फिर दांत निपोर देते हैं और अपने से तो झूठ कहा नहीं जाता। हे संतो जो कछु वस्तु नहीं ताको क्या कहना। अरे जिन्ह ने यह नाना बानी बनाई औ नाना प्रकार

की राह चलाई सोई मनुष्य, ये नाना बानी में औ नाना कल्पना में औ नाना मार्गनमें दुखिया भये दुख पावते हैं । ये अर्थ ॥ ९१ ॥

शब्द ९२.

ता मनको चीन्हो मोरे भाई । तन छूटे मन कहां समाई ॥
सनक सनंदन जयदेव नामा । भक्ति सही मन उनहुं न जाना
अम्बरीष प्रहलाद सुदामा । भक्तिहेतु मन उनहुं न जाना॥
भरथरि गोरख गोपीचंदा।तामन मिलि मिलि कियो आनंदा
जा मनको कोई जानु न भेवा । ता मन मगन भये शुकदेवा ॥
शिव सनकादिक नारद शेषा । तनके भीतर मन उनहु नपेखा
एकल निरंजन सकल शरीरा ।तामहभ्रमिभ्रमिरहलकबीरा९२

टीका गुरुमुख–गुरु कहते हैं कि ता मन कहिये जहां तुम्हारा मन लीन हुवा, जहां मन लीन हुवा सो ब्रह्म, सो उस ब्रह्म को चीन्हो कि मनयें तो उनमन होयके ब्रह्म हुवा औ जब तन छूटेगा तब ब्रह्म कहां समायगा । ये अर्थ । सनक सनंदन जयदेव औ नामदेव ये सब भक्त तो सही हुये परंतु मन उनहूं ने नहीं जाना । अरे मन मन तो सबने पुकारा परंतु मन क्या है औ मनका स्वरूप क्या है ये किसी ने भी नहीं जाना हक नाहक धोखे में परे । अरे मन तो जिसके वो भक्त हुये सोई उनका मन परंतु उनको मालूम नहीं हुवा । कि जिस की हम भक्ति करते हैं सो हमारा मन है अगर मालूम होता तो उस को खाविंद क्यों मानते औ आप दास क्यों बनते, माने सोई मन । ये अर्थ। अम्बरीष प्रहलाद सुदामा, भक्ति हेतु मन उनहु न जाना अम्बरीष प्रहलाद औ सुदामा आदि परम भक्त भये परंतु मन को उनहु नहीं जाना । जासे उन हेत किया औ भक्ती की औ जो

स्वरूप साक्षातकार उनको था सो उनका मन परंतु उनको न मालूम हुवा । ये अर्थ । गोरख भरथरी गोपीचन्दा, ऐसे ये सब योगी भये सो उस मन ही के रंग में मग्न हुये औ उनमन हुये । आनंद किये मन में मिल मिलि के परंतु मन को न पहिचाना । ये अर्थ । शिव सनकादि नारद शेषादि ज्ञानी भये सो सब तनही में मग्न हुये औ जो तन में कल्पना उठी सो कल्पना में दिवाने हुये, मन कहिये तन को । और आठ पसेरी चालीस सेर जहां एकन्दर भये ताको नाम मन, औ पांच तत्व तीन गुण येही आठ पसेरी जहां एकन्दर होय ताको नाम मन, औ रूप माया काया नाम मन, जब आठ पसेरी आठ तरफ जायगी तब मन कहां रहेगा । चालीस सेर का अर्थ। पचीस प्रकृति औ पांच ज्ञान इंद्री सतोगुण की औ पांच कर्मइंद्री रजोगुण की औ विषयपंचक तमोगुण का, ये, चालीस सेर जहां मिले ताके नाम मन कहिये । औ उस मन का रूप ताको तन कहिये । ताके तन मन एकही है तन से मन कछु भिन्न नहीं । जैसे चालीस सेरकी गठरी से मन कछु न्यारा नहीं दिखाता है । चालीस सेर की गठरीकाही नाम मन । ऐसा तनही का नाम मन कहिये । नाम है वाको मन कहिये, रूप ताको माया कहिये। औ तन से जो अनुमान निश्चय होता है ताको भी मन कहिये । एकल निरंजन सकल शरीरा, ता में भ्रमि भ्रमि रहल कबीरा । एकल निरंजन कहिये मन को, सो संपूर्ण शरीर मन का रूप है । तामें भ्रमि भ्रमि रहा कबीरा जीव। देह में जीव भ्रमि रहा है । और जाने आकाशवत् कहा सो आकाश का अनुमान. वायुवत् कहा सो वायु का अनुमान, प्रकाशवत् कहा सो तेज, जलवत् कहा सो जल, मृदुवत्कहा सो मिट्टी और ब्रह्म आत्मा कछु वस्तु नहीं, सब तत्वन का अनुमान भास । ये अर्थ ॥ ९२ ॥

शब्द ९३.

बाबू ऐसो है संसार तिहारो । ई है कलि व्यौहारा ॥
को अब अनुख सहत प्रति दिन को । नाहिन रहनि हमारो ॥
सुमृति सोहाय सबै कोइ जानै । हृदया तत्व न बूझै ॥
निर्जिव आगे सर्जिव थापे । लोचन किछउ न सूझै ॥
तजि अमृत विष काहेक अंचवै । गांठी बांधिनि खोटा ॥
चोरन दीन्हों पाट सिंघासन । साहुन से भौ ओटा ॥
कहहिं कबीर झूठे मिलि झूठा । ठगहीं ठग व्यौहारा ॥
तीनि लोक भरपूरि रहा है । नाहीं है पतियारा ॥

टीका गुरुमुख—बाबू कहिये जीव को. सो गुरु कहते हैं कि हे जीव ऐसो है संसार तिहारो । कली कहिये बानी को, सो सब यह ब्रह्म, आत्मा औ ईश्वर आदि सब उपासना औ कर्म धर्म सब बानी का व्यौहार है सो बानी तेरी कल्पना । ये अर्थ । को अब अनुख सहत प्रति दिन को, नाहिन रहनि हमारो । गुरु कहते हैं कि हे भाई अब दिन प्रति दिन रोज रोज की बुराइ उपाधी कौन सहै अपने को क्या वास्ता । ये संपूर्ण अपनी रहनी गहनी कछु नहीं । सुमृति सोहाय सबै कोइ जानै । सुमृति कहिये बानी, बेद स्मृति सो जो कहता है उसके प्रमाण से सब कोई जानते हैं परंतु अपने हृदय में कोई बूझता नहीं । अरे निर्जीव पाषाण आदिधातु मंत्र यंत्र इत्यादि ताको स्थापन करता कौन, औ वेद स्मृती आदि संपूर्ण निर्जीव बखेडा आगे जो स्थापन किया है सो सजीव ने किया है अरु जड बस्तु कछु स्वतंत्र नहीं है । तो ऐसा अपने कर्त्तव्य के आप गुलाम बने । इनके आंखिन से भी नहीं दिखाता है कि सजीव विना निर्जीव कौन थापता है । तजि अमृत विष काहेको अचवै । अमृत कहिये जीव को, सो

छाडके नाना बानी के विषय क्यों ग्रहण करताहै औ झूँठी गांठी में ब्रह्म अथवा नाना देवता क्यों बांधता है । अरे जो वेद औ बानी की गांठी बांधी है सो सब मिथ्या। ये अर्थ । चोरन दीन्हीं पाट सिंघासन, साहुन से भौ ओटा । चोर प्रतिमा आदिक ता को पाट सिंघासन दिया औ साहू जो कोई भूखा प्यासा जीव आवै तो तासों मुंह छिपाते हैं धमकाय के निकार देते हैं । बधिक गुरुवा लोगोंको पाट सिंघासन पर बैठाते हैं । और जो कोई विचारवान संत आवै तब मुँह पीछे को फेरते हैं । तो पारख कैसे प्राप्त होय । ये अर्थ । कहहिं कबीर झूठे मिलि झूठा । अरे जाको तुम निश्चय करते हो सो कहां है सो गुरु कहतेहैं कि हे संतो झूठे धोखेमें मिलिके ये जीव भी झूठा हुवा औ ठग गुरुवा लोगोंके संग ब्योहार करके जीव भी ठगाय गया औ ठग हुवा । दुनिया में ठगाई ज्ञान योग औ भक्ती फैलाई औ कहा कि तीन लोक आपही आप आत्मा भरि रहा है । परंतु इन्हके बात का कछु इतबार नहीं । छिनमें अद्वैत कहते हैं, कहीं द्वैत, कहीं नास्ति, कहीं सर्व आत्मा, कहीं जैसा का तैसा, इनकी बात की कौन प्रतीत रही । ये अर्थ ॥ ९३ ॥

साखी—जाकी जिभ्या बंध नहीं । हृदया नाहीं सांच ।
ताके संग न लागिये । घाले बटिया मांझ ॥

शब्द ९४.

कहो हो निरंजन कौने बानी ।

हाथ पांव मुख श्रवन जिभ्या नहिं। का कहि जपहु हो प्रानी ॥
ज्योतिहिज्योतिज्योतिजोकहिये। ज्योति कौन सहिदानी ॥
ज्योतिहि ज्योतिज्योति दे मारे । तबकहुज्योतिकहांसमानी ॥

चारि वेद ब्रह्मा जो कहिया । उनहुं न या गति जानी ॥
कहहिं कबीर सुनो हो सन्तो । बूझो पंडित ज्ञानी ॥ ९४ ॥

टीका गुरुमुख–कहो निरंजन क्या बात है ॥ अरे हाथ पांव मुख श्रवण जिभ्या नहीं तब क्या वस्तु है औ क्या कहिके जपते हो हे प्रानी । बिना रूप कहीं नाम नहीं औ नाम बिना कछु जाप नहीं । ये अर्थ । ज्योतिहि ज्योति ज्योति जो कहिये । ज्योतिस्वरूप परमात्मा ऐसा कहिके जो तुमने सुरत जोती बांधी है । तो ज्योती की क्या निशानी । जो ज्योती में तुमने सुरत लगाई सोई तुम्हारी कल्पना तुम्हारा काल, जब दै मारेगा चोला छूट जायगा तब वो ज्योति कहां रहेगी । अरे चार वेद ब्रह्माने जो कहा औ सब सिद्धांत किया । ज्योती तद्योती स्वयंजोती, ज्योती कहिये जो देख ने में आवै औ जाते देखनेमें आवै सो तद्योती औ जाके देखनेमें आवै सो स्वयं ज्योती औ सच्चिदानंद आदि तत्त्वमस्यादि बहुतक सिद्धान्त किये देह धरके । परंतु देह छूटेगी तब असि आनंद, औ ज्योती कहां रहेगी ये गती ब्रह्मा ने भी नहीं जानी । तो आनंद असी औ ज्योती हे संतो कहांहै, ये तो सब देह का बिकार औ तत्वन का स्वभाव तत्व छूटे तब कछु नहीं सब मिथ्या धोखा । पंडित हे ज्ञानी तुम बूझो समझो । पंडित ब्रह्मा औ ज्ञानी शंभू इनकी मती तुम बूझो सब धोखे में परे बिना पारख । ये अर्थ ॥ ९४ ॥

शब्द ९५.

को अस करे नगरकोटवलिया । मासुफैलाय गिद्धरखवरिया ॥
मूस भौ नावमंजार कँडिहरिया । सोवै दादुर सर्प पहरिया ॥
बैलबिआय गाय भइ बांझा । बछरूदुहिये तीनितीनिसांझा ॥
नित उठि सिंघ स्यार सों जूझै । कबिराकापदजनबिरलाबूझै ९५

टीका गुरुमुख—को अस करे नगर कोटवलिया। नगर कहिये संसार, कोटवलिया इनसाफी, सो गुरू कहते हैं कि ऐसे संसारमें कौन इनसाफी करे। जहां मास फैलाय गिद्ध रखवरिया। मास कहिये बानी। गिद्ध कहिये गुरुवा लोग पंडित लोग, सो बानी फैलाय के संसार में गुरुवालोग रखवारी भये। जैसे खेत रखाने को रखवार बैठता है इस तरह से गुरुवा लोगों ने बेद बानी की बाड लगाय के जीवन को अंदर डार के रखवारी करने लगे। जामें जीव बेद बानी के बाहर न जाने पावे मूस भौ नाव मंजार कंडिहरिया। मूस कहिये जीव, मँजार कहिये बानी, मँजार कहिये माया, मँजार कहिये गुरुवा, सो जीव सो संसार सागर में नाव बने, बानी बयार कही औ गुरुवा लोग खेवैया बने। सोवै दादुर सर्प पहरिया। दादुर जीव, सर्प उपदेश अहं ब्रह्म ताके भरोसे जीव गाफिल हुवा। अहं ब्रह्म कहाय के विधि निषेध को छोडा। ये अर्थ। बैल बियाय गाय भई बांझा। बैल कहिये षट दर्शन भेष, गाय कहिये बानी नाना प्रकार का उपदेश मंत्र, सब षट दर्शन भेष से पैदा भया औ बानी से कछु नहीं पैदा भया बानी बांझ जड। ये अर्थ। बछरू दुहिये तीनि तीनि सांझा। बछरू बानी, बानी का सिद्धान्त ब्रह्म, सो त्रिकाल संध्या करते हैं, यही दुहने का अर्थ। नित उठि सिंघ स्यार सो जूझै। सिंघ जीव स्यार बेद बानी, सो बानी से जीव रोज रोज जूझता है। अध्यारोप अपवाद करते हैं, एक पर एक पूर्वपक्ष करते हैं। एक एक के मत को दोष लगावते हैं जूझते हैं बानी का आशरा पकड के नाहक न कछु लेना न देना। ये कबीरा जीव, इनका पद कोई बिरला बूझैगा औ जो जो इनने सिद्धांत किया सो सब इनको बंधन। ये अर्थ। विरह अर्थ—को अस करै नगर कोटवरिया। ऐसा

जगत में कौन इनसाफी करैगा भाई । जहां मास फैलाय गिद्ध रखव-रिया । मास कहिये माया स्त्री पुत्र धन आदिक । ये सब संसार में फैलाया जीवने औ मन रखवारी रक्खा । आठो पहर कबहीं भूलता नहीं । मूस भौ नाव मंजार कंडिहरिया । मूस मन, मंजार माया तो देखे ये मन तो माया का खुराक है । ये मन को स्त्री चलावती है ये अर्थ । दादुर जीव, सर्प, काम, देखो ये जीव काम बश होय के गाफिल हुआ नाना प्रकारके विषय विष चढा तामें मग्न हुआ । बैल वियाय गाय भई बंझा बैल पुरुष, गाय स्त्री, सो पुरुष से संतान उत्पन्न होता है जो पुरुष न होय तो स्त्री बांझ । गाय कहिये गायत्री बांझ उसते कछु नहीं पैदा भया ब्रह्मा से संतान पैदा भया बछरू, कहिये जीव, सो त्रिकाल स्त्री इन को दुहती है । अरु गाय स्त्री, पुरुष बैल। मन बछरू, सो मन को शोषण त्रिकाल स्त्री करती है। नित उठि सिंघ स्यार सो जूझे सिंघ जीव, स्यार स्त्री सो नित जूझता है मैथुन करते करते मरता है । गुरु कहते हैं कि ये देखो जीवका पद स्त्री, जीवका अधिष्ठान स्त्री, सो स्त्री से पैदा होता है फिर स्त्री से रत करता है औ विषय की प्रीति से फिर स्त्री के गर्भबास में लय होता है । जैसे जल की लहर जल से पैदा होती है औ जल ही में स्थित तथा जल ही में लय इस प्रकार से जीव स्त्री से पैदा होते हैं औ स्त्री में आठों पहर स्थित होते हैं औ फिर स्त्री में जाते हैं । ये अर्थ ॥९५॥

शब्द९६.

काको रोवों गैल बहुतेरा । बहुतक मुवल फिरल नहिं फेरा ॥
जब हम रोया तब तुम न संभारा । गर्भवासकी बात विचारा ॥
अब तैं रोया क्या तैं पाया । केहि कारण अब मोहिं रोवाया ॥
कहहिं कबीर सुनो सन्तो भाई । काल के बसि परो मति कोई ॥

टीका गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि हे भाई मैं किसको किसको कहौं । बहुतेरे बानी कल्पना अनुमानमें बंध होय के स्त्रीके गर्भमें गये। मैंने बहुत बहुत कहा फेरने के वास्ते और बहुत बहुत बिचार बताया परंतु कोई फेरनेसे फिरे नहीं।ये अर्थ । भला जब से तू आनंद होय के आपै आप भूला औ गर्भबास की बात स्त्री औ बानीका बिचार किया। इच्छा से नारी पैदा किया औ उसका सङ्ग करके नाना दुःखको प्राप्त भया । तब नाना बानी कल्पिके तामें मग्न होय के बंध होगया । जभी से मैं तेरे को कहा था औ तेरा दुःख देख के रोया था परंतु तूने न सँभारा । सोई बात तूने बिचारा जासे गर्भवास को प्राप्त हुवा । गर्भवास की प्राप्ती होने की बात एक स्त्री औ एक बानी ब्रह्म । सो जैसा तूने किया तैसा गर्भबासको प्राप्त हुवा अब संसार के दुःख देख के बहुत रोता है तो क्या रोने से तेरा दुख छूटेगा । अरे जब लग देह बना है तब लग देह के भोग तो तेरे को भोगना होगा।भला अब तू रोता है तो क्या पाया तूने तो । नाहक धोखे के भरोसे से अब पश्चात्ताप करता है तो देख के मेरे को बहुत दया आती है तो फेर मेरे को क्यों रोवाता है क्यों बकाता है । अरे तूने जो अनुमान किया है औ जो जो माना है सो सब गर्भबास का कारण है । सो अब तो भी सब समझ के परख के छोड औ निराश निरबंध हो । सब स्त्री बानी आदिक कल्पना की फांसी है तो कोई फांसी में पडो मत । हे जीव सब फांसी परखके पारख रूप हो जाव । ये अर्थ ॥ १६ ॥

शब्द १७.

अल्लाह राम जियो तेरी नांई । जिन्हपर मेहर होहु तुम सांई॥
क्या मुंडी भुंई शिर नाये । क्या जल देह नहाये ॥
खून करे मिस्कीन कहाये । औगुण रहे छिपाये ॥

क्या वजू जप मंजन कीये । क्या महजीद शिर नाये ॥
हृदया कपट निमाज गुजारे । क्या हज मक्के जाये ॥
हिंदू बरत एकादशी चौबीस । तीस रोजा मुसलमाना ॥
ग्यारह मासे कहो किन टारे । एक महिना आना ॥
जो खुदाय मजीद बसतु है । और मुलुक केहि केरा ॥
तीरथ मूरत राम निवासी । दुइमा किनहु न हेरा ॥
पूरब दिशा हरीको बासा । पश्चिम अलह मुकामा ॥
दिलमें खोजि दिलहिमा खोजो । इहै करीमा रामा ॥
बेद किताब कहो किन झूठा । झूठा जो न बिचारे ॥
सब घट एक एक के लेखे । भै दूजा के मारे ॥
जेते औरत मर्द उपानी । सो सब रूप तुम्हारा ॥
कबीर पोंगरा अलह रामका । सो गुरु पीर हमारा॥ ९७ ॥

टीका गुरुमुख–अल्लाह राम जियो तेरी नांई । हे जीव तेरी नांई जो कोई जीव भया तिन अल्लाह की भी थापना की औ रामकी भी थापना की । अरे निर्जीव से भी कहीं थापना होतीहै । भला जो ऐसा कहोगे कि अल्लाह रामकी थापना भी कोई करता है । तो राम खुदाय किनने कहा औ किनने थापा । जो ऐसा कहा जाय कि उनने अपनी थापना आप ही की तो वो निराबेव औ बेचून ऐसा बेद कुरान गावता है । तो निराबेव कैसे थापना करेगा। तो जीवही से अल्लाह राम की थापना भई । ये अर्थ । हे जीव जिन- पर मेहर होवो औ रीझो उसी को तुम मालिक करके थाप देव । ये अर्थ । और तुम कहीं भुंई पर शिर नवावते हो निमाज पढ़ते हो तो ये क्या है ये भी कल्पना । नाना तीर्थ नहाते हो तो ये क्या यह भी तेरी कल्पना । अरे फकीर मिसकीन कहिये गरीब को तो देखो ये

मुसल्मान फकीर बकरा मुर्गा मारते हैं, तो काम कसाई का औ बाना फकीर का। तो जैसा ठग होता है अपना औगुण छिपाय रहता है तैसे ये मिसकीन । ये अर्थ । क्या वजू औ जप किये तो भी कल्पना। औ मसजिद में शिर नावते हैं ये भी धोखा । हृदया कपट मत धारन किया निमाज । ये अर्थ । हज मक्के को गया तो क्या ये संपूर्ण धोखा । हिंदू व्रत एकादशी चौबीस । तो हिंदू ने बरस में चौबीस दिन मुक्ती के ठहराये कि एकादशी को मरे सो मोक्ष ऐसा कहा। तो बाकी दिन किनने टारा । और तुरुक तीसो रोजा करते हैं कि फर्ज खुदा का है तो भाई ये ग्यारह महीना किनने दूर किया। अरे खुदा को बेरूप बेचून बोलते हो हुकुम कैसे दिया ये संपूर्ण तुम्हारी कल्पना मिथ्या भला जो खुदा मसजिद में रहता है तो और मुल्क किसका है । और तीर्थ मूर्ती में राम निवास करता है तो सब संसार में कौन रमा है । अरे दूनों में किसी ने भी नहीं तहकीक किया । कोई कहते हैं कि पूर्व दिशा में भगवान का बासा और कोई कहता है कि पश्चिम दिशा में खुदा का बासा अरे सब झूठ कल्पना । तुम अपने दिल में खोजि के देखो औ संसार में खोज के देखो तो तूही करीमा की थापना करता है औ तूही राम की थापन करता है । तो थापना मिथ्या औ कर्ता सच्चा । ये अर्थ। वेद कितेब कहो किन झूठा । अरे वेद किताब किन्ह ने कहा है सो भी झूठा । औ जो विचार नहीं करता है झूठ धोखे में फँसा है सो भी झूठा । देखो वेद सब घट एक एक कर लेखता है कि संपूर्ण ब्रह्म अखंड दुतिया कोई नहीं । फिर जब राम कृष्ण आदि औतार पैदा भये तब वेद ने स्तुति क्यों किया और उनकी विशेषता क्यों बखानी। जो एक अद्वैत है तो विशेषता और स्तुति नहीं संभौती । तो वह वेद औ ब्रह्म झूठा, जो कहा अद्वैत औ भासता तो द्वैत था। ताते कहीं अद्वैत

औ कहीं द्वैत ऐसा कथन करके संसार को भय लगाय के मारा । श्रीकृष्ण भगवान ने अर्जुन को सब घट एक आत्मा समुझाया औ फिर भय लगाय के सब परिवार को मार गिराया । ताते अद्वैत कहने वाले कृष्ण आदि भी सब झूठे औ अर्जुन आदिक जीव भी झूठे जो झूठे में बंधे हैं । ये अर्थ । हे मनुष्य तू समझ देख कि जेते औरत औ मर्द उत्पन्न हुये सो सब रूप तुम्हारा । अरु हे जीव तेरे बिना राम कहां है औ खुदा कहां है सब मिथ्या धोखा । ये अर्थ । जीवमुख– कबीर पोंगरा अलह राम का, सो गुरु पीर हमारा । पोंगरा बेटा, कबीर जीव, सो हिंदू बोलता है कि परमात्माका अंश जो ब्रह्मा है सोई हमारे गुरु उनसे अधिक और कोऊ नहीं । औ तुरुक बोलता है कि पीर महम्मद जो खुदा के नूर हैं सो हमारे पीर उनसे ज्यादे कोऊ नहीं । ऐसा कहि के बधिक फांस में परे । ये अर्थ ॥ ९७ ॥

शब्द ९८.

आव वे आव मुझे हरि को नाम । और सकल तजु कौने काम ॥
कहाँ तब आदम कहाँ तब हव्वा । कहाँ तब पीर पैगम्बर हूवा ॥
कहाँ तब जिमी कहां अस्मान । कहाँ तब वेद कितेब कुरान ॥
जिन्ह दुनिया में रची मसीद । झूठा रोजा झूठी ईद ॥
सांचा यक अलह को नाम । जाको नै नै करहु सलाम ॥
कहु बिहिस्त कहां से आई । किसके कहे तुम छुरी चलाई ॥
कर्ता किरतम बाजी लाई । हिंदू तुरुक की राह चलाई ॥
कहाँ तब दिवस कहाँ तब राती । कहो तब किरतम किन उत्पाती ॥
नहिं वाके जात नहीं वाके पाती । कहहि कबीर वाके दिवस न राती ॥

टीका मायामुख–गुरुवालोग बोलते हैं कि हे जीव आवबे आव मुझ शरण हो अरु जो हम हरी नाम उपदेश करते हैं. ताकी रटना

करा करो । औ सकल तजु कौने काम । सकल संसार माया परपंच मिथ्या परमात्माका नाम सत्य । ये अर्थ । कहां तब आदम कहां तब हव्वा, कहां तब पीर पैगम्बर हुवा । तो जब परमात्मा था तब कछु नहीं रहा पीछे से संपूर्ण माया परपंच पैदा भया । जिन दुनिया में रची मसीद, झूठा रोजा झूठा ईद । ये सब फना नाश होय जायेंगे, एक अल्लाह का नाम सच्चा है उसको नै नै हरवख्त सलाम करो उस के नाम से ज्यादा कछु नहीं। गुरुमुख—अल्लाह मकान बेचून बेनमून रहता है तो तुमने किस के कहेसे छूरी चलाई औ बिहिश्त तो भी कहांसे पैदा हुई । अरे कर्ता मनुष्यने ये कृतिम बाजी बनाई अपनी कल्पनासे बिना पारख । सो हिंदू तुरुक दुई राह चलाई औ धोखेमें परे । कहां तब दिवस कहां तब राती अरे जब रात दिवस यह कछु ना हता तब कृतिम बानी अल्लाह का नामभी कहां था अरे जाके जाती नहीं पाती नहीं औ दिवस नहीं रात्री नहीं ऐसा खुदा कहां है । हे जीव सब तेरा अनु-मान मिथ्या धोखा तुम परख के देखो । ये अर्थ ॥ १८ ॥

शब्द १९.

अब कहां चलेउ अकेले मीता । उठहुन करहू घरहुकी चिंता ॥
खीर खांड़ घृत पिंड संवारा । सो तन ले बाहर कै डारा ॥
जो शिर रचि रचि बांधहु पागा । सो शिर रतन बिडारतकागा ॥
हाड जरे जस जंगल लकड़ी । केश जरे जस घासकी पूली ॥
आवत संग न जात संगाती । काह भये दल बांधल हाथी ॥
मायाके रस लेइ न पाया । अंतर यम बिलारिह्वै धाया ॥
कहहिं कबीर नर अजहुँन जागा । यमकामुगदरमांझशिरलागा ॥

टीका गुरुमुख—अब कहां चलेहु अकेले मीता । अरे हे मित्र तुमने तो बहुत संग किया परंतु चोला छोडके अब अकेले कहां चले ।

अरे जब देह साबुत था तब तो कछु विचार किया नहीं औ पारख पदको भी प्राप्त भया नहीं । कहते थे कि हमारे को घरकी चिंता बडी है औ पुत्र की चिंता बडी है औ धनकी चिंता बडी है सो उठो घरकी चिंता करो अब देह छोडके चले । अरे खीर खांड घृत खाय खाय देह बहुत पुष्ट किया था सो तन सब भाईबंद ने बाहर मसानमें डार दिया । सो आज तलग देहका रक्षण करके मेरी मेरी कहते थे अब कैसी बाहर डारी गई । जो शिरमें रचि रचिके पाग बांधते थे सो शिर जब जंगलमें पडेगा तब काग बिडार डारेंगे, फोर डारेंगे । हाड लकडीके माफिक जर जायेंगे औ बार घास के माफिक जर जायेंगे हे संतो देखो ना तो कछु संग आया है ना तो कछु संग जायगा । दल बादल औ तंबू हाथी घोडा सैना सबही छूट गई मायाके रसलेने नहीं पाया । अंत समय यम बिलार होयकेधाया, जैसे मूसके ऊपर बिलाई झपट करतीहै तैसे इसकी कल्पना यमरूप होयके स्वरूपमें से जीवको खैंचके ले चली गर्भवासको । याते गुरु कहते हैं कि मृत्यु तेरे समीप आय तुलानी । अब भी समझके न जागा भ्रम अजहुँ न छाडा । जब कालको मुगदर मांझ शिर लागेगा, मांझ शिर कहिये ब्रह्म, ब्रह्म कहिये भ्रम, सो भ्रम अभी नहीं छूटा तब कब छूटेगा । ये अर्थ ॥ ९९ ॥

शब्द १००.

देखहु लोगा हरिकेर सगाई । माय धरी पुत्र धियेउ संग जाई ॥
सासुननद मिलि अचलचलाई । मंदरियाके गृह बैठी जाई ॥
हम बहनोई राम मोर सारा । हमहिं बाप हरि पुत्र हमारा ॥
कहहिं कबीर ये हरी के बूता । राम रमें ते कुकुरीके पूता ॥ १०० ॥

टीका गुरुमुख—देखहु लोगा हरिकेर सगाई । हे संतो देखो ये लोगोंकी हरी रससे प्रीत लगी । हरी कहिये माया, हरी कहिये

कल्पना, हरी कहिये बानी रस कहिये अनुमान, जो देहसे कल्पना उठी ता बानी ने जो मालिक बताया सो अनुमान के रसमें मिलके संसार सब गावता है। जैसे बादरकी पुतरी देखके लोग सब कल्पना करते हैं कि याके पुत्र की सुन्दरताई अद्भुत है उसके स्वरूपका हम क्या वर्णन कर सकेंगे। जहां ब्रह्मा विष्णु महेश का चित्त मन बुद्धि पहुंचती नहीं औ बडे बडे की गती थकित भई तहां हमारी कौन चलाई है। परंतु उसके रस को जिन्होंने जाना ताको सब अमृत आदि रस फीके भये। ऐसा कहि कहि के सब वा बानी के रस को गाने लगे मिथ्या धोखे को गाने लगे। ये अर्थ। माय धरी पुत्र धिये संग जाई। माया कहिये बानी, पुत्र कहिये ब्रह्म अल्लाह, सो माय बानी जीवने धरी पुत्र ब्रह्म की चाह भई। सो धिय बुद्धि के संग जीव सब निश्चय करते चले काहू ने निर्गुण कहा काहू ने सगुण कहा काहूने सबमें कहा काहूने न्यारा कहा काहूने एक कहा औ काहूने अनेक कहा। इस प्रकारसे सब बुद्धीके संग निश्चय करते चले थाह काहू ने नहीं पाया ये अर्थ। सासु ननद मिलि अचल चलाई। सासु गुरुवा लोग, ननद चेला लोग, सो आदिसे जेते गुरवा औ जेते चेला भये सो सब मिलि कहा कि एक राम अचल है औ सब जगत चलायमान है ऐसी बानी चलाई। और सासु कहिये वेद औ ननद कहिये वेदांत आदि शास्त्र ताने ब्रह्म अचल ऐसा सिद्धान्त चलाया। जीव मंदरिया के घर जाय बैठा सुनने के वास्ते। मंदरिया कहिये गुरुवा लोग, सो जीव बंदर को ठौर ठौर नचाते हैं। ये अर्थ। हम बहनोई राम मोर सारा। मायामुख—जब जीव गुरुवा लोगों के घर जाय बैठा श्रवण करने के वास्ते। तब गुरुवा लोग बोलते भये कि हम बहनोई हम ज्ञानी और राम जो सब में रमा है सोई हमारा रूप सिद्धांत चार वेद छौ शास्त्रनका सार। ये अर्थ।

हमहिं बाप हरि पुत्र हमारा। हरी कहिये ज्ञान,सो हमारा पुत्र जो हम-से पैदा हुवा । हम तो आत्मा अखंड जैसा का तैसा, न ज्ञान न अज्ञान सर्वाधिष्ठान । ये अर्थ । गुरुमुख—कहहिं कबीर ये हरि के बूता,राम रमे ते कुकुरी के पूता।गुरू कहते हैं कि हे संतो देखो इन ज्ञानी लोगों के ज्ञान का जोर देखो जो एक देश में रमे थे सो सब में रम गये। राम रमे ते कुकुरी के पूता । कुकुरी कहिये बानी, सो बानी के पुत्र ब्रह्म बने । ये अर्थ ॥ १०० ॥

शब्द १०१.

देखि देखि जिय अचरज होई । यह पद बूझै बिरला कोई ॥
धरती उलटि अकाशै जाय ।चिउँटी के मुख हस्ति समाय॥
बिना पवन सो पर्वत उडे । जीव जंतु सब वृक्षा चढे ॥
सूखे सरवर उठे हिलोरा।बिनुजलचकवाकरतकिलोरा॥
बैठा पंडित पढै पुरान । बिनु देखे का करत बखान ॥
कहहिं कबीर यह पद को जान। सोई संत सदा परवान १०१॥

टीका गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि देखि देखि हे जीव बडा आश्चर्य होता है । जो ये जीव में से कल्पना उठी कि हमारा कर्ता कोई बडा है ब्रह्म । ऐसी कल्पना को कर्ता बनाया औ उसके आधीन भया। औ उसी की बानी स्तुति बहुत प्रकारसे गाई औ गाय गाय जब आपुहि थका। तब कल्पना का रूप बना । सो देखि देखि जीव में बडा आश्चर्य होता है । ये अर्थ । यह पद बूझै बिरला कोई । यह पद कहिये जा पदसे सकल ब्रह्म ईश्वर आदि कल्पना उठी औ संपूर्ण बानी उठी सो मानुष पद ऐसा कोई बूझनेवाला बिरला । ये अर्थ । धरती उलटि अकाशै जाय, चिउँटी के मुख हस्ति समाय । सोई बानी सुनि सुनि के धरती के जीव आकाश को चले । कोई योग करके,

कोई नाना कर्म धर्म करके, उपासना करके, आकाश को चले सो ये सब धोखा । औ चिउँटी कहिये बानी, हस्ती कहिये मन, सो बानीके मुख में मन समाया । कहीं दास बना कहीं ब्रह्म बना, उन्मुन हुवा । ये अर्थ । बिना पवन सो पर्वत ऊडे । पर्वत कहिये दूनों दीन, सो बिना पवन से उडने लगे। पवन कहिये विचार सो बिना विचार दूनों दीन कल्पना में उडने लगे । जीव जंतु सब वृक्षा चढे । वृक्षा कहिये ब्रह्म ब्रह्म कहिये अनुमान, सो अनुमान में जीव चढे ब्रह्म बने। सूखे सरवर उठे हिलोरा। सूखा सरवर कहिये शून्य, शून्य कहिये जहां कछु है नहीं, जहां कछु नहीं सो ब्रह्म, सो ब्रह्म होय के हिलोरा अनुभव के उठने लगे अनुमान के स्फुर्ण उठने लगे । ये अर्थ । बिनु जल चकवा करत किलोरा । जल बानी, चकवा जीव, सो जीव जहां बानी नहीं रूप नहीं तहां अनुमान में कलोल करने लगे । सो नाना प्रकार की कलोल कल्पना की बानी बनी। सोई पौरानिक लोग पुरान पढनेलगे औ बिना देखे का बखान करने लगे । स्वर्ग नर्क आदि, लोग परलोक आदि देवतादि, ब्रह्म ईश्वर आदि । ये अर्थ । सो गुरु कहते हैं कि ये सब कहां है जो बिना देखेका बखान करते हैं । यह पद कहिये मानुषपद जासे समस्त सिद्धांत बने । औ समस्त बानी बिचार बना औ कल्पना अनुमान ब्रह्म आदि सब बना । सो सब मिथ्या धोखा औ मनुष्य सत्य ऐसा जिसने जाना ताका धोखा कल्पना सब नाश हुवा औ समस्त बानी का अभाव हुवा । तब परम शांती को प्राप्त हुवा औ अपनी सत्यताई ठहरी । तब सोई संत सदा पारख रूप । जहां कोई भाव तत्वमस्यादि असंभव, सो पारख सदा परमान । ये अर्थ ॥ १०१ ॥

शब्द १०२.

हो दारी के लै देउँ तोहि गारी । तै समुझि सुपंथ विचारी॥
घरहुक नाह जो अपना । तिनहूँ से भेंट न सपना॥

ब्राह्मण क्षत्री बानी । तिनहुं कलह नहिं मानी ॥
योगी जंगम जेते । आपु गहै हैं तेते ॥
कहहिं कबीर एक योगी । वो तो भर्मि भर्मि भौ भोगी॥

टीका गुरुमुख–हो दारीके लै देउं तोहि गारी, तैं समुझि सुपंथ बिचारी । दारी कहिये माया, स्त्री, बानी, सो गुरू कहते हैं जीवको कि हे देही के गुलाम औ हे स्त्री के गुलाम औ बानी के गुलाम । देहुं तोहि गारी । जैसा तूने ये बंधन लिया तैसा सब गारी डारताहौं, गला डारता हौं, धोखा सब परखाय के दूर करता हौं । अरे देह औ स्त्री औ बानी ये सब जड औ तू जीव चैतन्य इनके मिथ्या धोखे में तू क्यों पडता है। अरे ये सब तेरे उपजे हैं औ तूंही इनमें बंधमान हुवा ताते नाना दुख पावता है ये समझ के छोड़दे । और सुपंथ सतसंगको राह से बिचार कर । ये अर्थ । घरहुक नाह जो अपना, तिनहुं से भेट न सपना । अब जो तूने घरका खाविंद एक ईश्वर थापा है सो तासे मिलना भी सपना है क्योंकि मिथ्या है । ये अर्थ । गुरु कहते हैं कि हे भाई, ब्राह्मण क्षत्री वैश्य ये सब गाफिली में पड के मग्न हैं । बहुत प्रकार से कहा परंतु ये कोई नहीं मानते । योग में योगी लोग मग्न हुये औ जंगम शिवाचार में मग्न हुये, अपनी अपनी मती का अभिमान सब ने पकडा अब पारख कहां से प्राप्त होय । सो गुरु कहते हैं कि एक धोखा समाधी जो योगी लोगोंने ठहराई । तो देह जब नास्ति, तो देह की समाधी क्या अस्ती, वो भी नास्ती । ताके अध्याससे भ्रमि भ्रमिके गर्भदुख भोगता है बिना पारख । ये अर्थ ॥ १०२ ॥

शब्द १०३.

लोगा तुमही मतिके भोरा ।
ज्यों पानी पानी मिलि गयउ । त्यों धूरी मिला कबीरा ॥
जो मैथिल को सांचा व्यास । तोहरमरन होय मगहरपास ॥

मगहर मरे मरन नहिं पावे । अंते मरे सो राम लजावे ॥
मगहर मरे सो गदहा होय । भल परतीत रामसो खोय ॥
क्या काशी क्या मगहर ऊसर। जोपै हृदय राम बसे मोसर ॥
जो काशी तन तजे कबीरा । तो रामहि कहु कौन निहोरा॥

टीकामायामुख—हे लोगो तुमही मति के भोरा । जो कबीरा कहिये ज्ञानी सो परमात्मा में कैसे मिले जैसे पानी में पानी मिले औ माटी को घर जैसे माटीमें मिली औ अग्नीका विकार जैसे दीपक सो तो अग्नीही है औ जलका विकार जैसे फेन बुद्बुदा तरंग सो तो जल ही है तद्वत् आत्मा का विकार जगत जो है सो आत्माही है । ये अर्थ । जो मैथिल को सांचा ब्यास,तोहर मरन होय मगहर पास । मैथिल कहिये मैथल देश, सो ब्रह्म में होयके अखंड एक रस रहते हैं । जिनके द्वैत भाव कछु नहीं ज्ञान अग्नि में कर्म सब जलाया औ समदृष्टी हुये । जो ब्राह्मण, गाय, हाथी, कुत्ता औ चंडाल ये सबमें समभाव जानते हैं सो पंडित साचे ज्ञानी उसकी स्थितिमैथल स्थल कहिये अधिष्ठान, अधिष्ठान कहिये आत्मा, सो मैं आत्मा । ये अर्थ । जो तू मैथिल का साचा व्यास है जो तूं ब्रह्म का सच्चा अंश है तो हरमरन होय मगहर पास । मग कहिये रस्ता, हर कहिये ज्ञान, सो मगहर ज्ञान मार्ग, तामें मरन होय लौलीन होय । ये अर्थ। मग हर मरे मरन नहिं पावे । अरे जो ज्ञान मार्ग में मरे सो मरण नहीं पावै अर्थात् जीवनमुक्त होय। ये अर्थ । अंतै मरे तो राम लजावै । अरे जो जीवकी जन्म भूमिका जहां से जीव स्फुर्ण हुआ सो अधिष्ठान छोडके अंतै जो नाना प्रकार की स्वर्ग भोगादि बासना अथवा जगत आदि मोह बासना में जो मरा सो बंधनमेंपरा । राम कहियेजीव औ लज्या कहिये बंधन । ये अर्थ । मगहर मरे सो गदहा होय, भल

परतीतराम से खोय । औ शास्त्र कहता है कि काशी में मरे मुक्त औ मगहर मरे सो गदहा होता है तो ये मिथ्या, वो अविश्वासी लोग अज्ञानी उनको आत्मा की प्रतीति नहीं । अरे क्या काशी क्या मगहर क्या ऊषर जोपै मरे हृदय में आतम प्रतीती है । तो जैसा तीरथ स्थान तैसा सुपच घर अथवा घूरा अथवा क्षेत्र अथवा कहीं क्यों नहीं मरा आत्मा सर्वदेशी सदा मुक्त । अरे जो काशीमें ज्ञानीने चोला छोडा तो मुक्त हुवा तो ज्ञान की क्या अधिकाईअरु भक्तीकी क्या अधिकाई इस वास्ते ज्ञानी कहीं मरे सदामुक्त स्वानुभव से । ये अर्थ ॥ १०३

शब्द १०४.

कैसे तरो नाथ कैसे तरो । अब बहु कुटिल भरो ॥ कैसी तेरी सेवा पूजा कैसो तेरो ध्यान । ऊपर उजल देखो बग अनुमान ॥ भाव तो भुजँग देखो अति बिबिचारी।सुरति सचान तेरी मति तो मँजारी ॥अतिरे विरोधी देखो अतिरे सयाना । छौ दर्शन देखो भेष लपटाना ॥ कहहिं कबीर सुनो नर बंदा । डाइनि डिंभ सकल जग खंदा ॥ १०४ ॥

टीका गुरुमुख--नाथ कहिये गुरुवा लोगोंको, जो आप नाथे गये औ दूसरे जीवनको भी नाथे, बंधन देय सो नाथ । सो गुरु कहतेहैं कि हे नाथ तुम कैसे तरोगे कैसे मुक्त होवोगे अब तो बहुत कुटिल तुम्हारे में भरा है । जो नाना प्रकार का भेष बनावते हो औ नाना तरह का तिलक करते हो औ कोई भभूत लगावते । कोई नागा, कोई निर्बानी ऐसी नाना प्रकारकी कुटिलाई करके जीवनको ठगते हो । अरे नाना प्रकार की कल्पना में औ मान अर्य्यादामें बंधे हो तो पारख कहां से प्राप्त होयगी । ये अर्थ । कैसी तेरी सेवा

पूजा कैसो तेरो ध्यान, ऊपर उजल देखो बध अनुमान। जैसा बगुला मछरियों के पकडने के वास्ते ध्यान लगाता है आंखी मूंदके और उसका स्वरूप भी परम सपेद रहता है। इस प्रकार से हे गुरुवा लोगो तुम जो ज्ञान ध्यान औ पूजा करते हो जो किसी तरह से संसार के जीव आवें औ मेरेको मानें औ कछु द्रव्य देवें औ हमारे शिष्य होयँ और हमारा महात्म जगतमें होय। ऐसे नाना प्रकार के बंधन तो अंतःकरण में बीज होय रहा है तो मुक्त कैसे होवोगे। ये अर्थ। भाव तो भुजंग देखो। भुजंग कहिये सर्प, सो सर्पके ऐसा तो तुम्हारा भावहै कि जिन को डसते हो ताको नाना प्रकार की बानी औ कल्पना का विष चढा औ अति बिबिचार में पडा, वेद का औ तुम्हारे मतिनका आसरा पकडा सो स्वतः विचार करके नहीं देखता। औ कोइ परखावै तो मानते भी नहीं, कहते हैं कि वेद जो कहता है सोई सत्य अपनी समझ झूठ बिबिचार। ये अर्थ। सुरति सचान तेरी मति तो मँजारी। अरे तुम्हारी सुरत तो जैसी चिडिया पर बाजकी सुरति लगती है तैसी ही सब जीवन पर तुम्हारी सुरत लगी है। कितनेई पक्षी बाजने पकडे परंतु तृष्णा कछु बुझती नहीं। जब लग जीता है तब लग सुरति पंछिन पर लगी रहती है। तैसी तुम्हारी सुरत अनेक जीव को पकडे परंतु तृप्त नहीं होती। और तुम्हारी मती जो देखता हौं तो जैसी बिल्लारीकी मती चूहा पकडने के हेतु तैसे संसार के जीव को भुलाय के पकडते हो। ये अर्थ। अरे अति सयाने जो बडे बडे ज्ञानी भये तिनकी परम विरुद्धता देखो। जो मीमांसा शास्त्र के आचार्य जैमिनि कर्म की थापना करते हैं। कहते हैंकि जो कछु है सो कर्मही है, जीवका अधिष्ठान कर्म, जीव कर्म ही से उद्भव होता है औ कर्म ही में रहके बर्तता है औ कर्म ही में लय पावता है। कर्म ही कंगाल कर्ता है औ कर्म ही दुख देता है औ कर्म ही सुख देता है। जो कछु होयगा सो कर्महीसे

होयगा कर्म बिना कछु नहीं। ब्रह्मा विष्णु रुद्र आदि देवता औ सनकादि आदि ऋषी भये परंतु सब कर्म के अधीन रहे। ज्ञान योग सब कर्म के अधीन है। अरे ज्ञानी सब को ज्ञान बताते हैं औ योगी सब को योग बताते हैं औ भक्त सबको भक्ती बताते हैं और उपासक सब को उपासना बताते हैं फिर ये सब स्वतंत्र हैं तो प्रकाश क्यों नहीं होता। कोई को होता है औ कोई को नहीं होता तब सब कर्मके अधीन औ कर्म सबका अधिष्ठान कर्म ही ब्रह्म, कर्म से ज्यादा कछु नहीं ज्ञान योग बैराग्य ये सब कर्म के अधीन बिचारे, जिधर कर्म नचावै उधर नाचते हैं। ये अर्थ। अब वैशेषिक या वैदिक शास्त्र के आचार्य कणाद बोलते हैं कि कर्म तो कछु स्वतंत्र नहीं समय के बश है॥ कधी प्रात समय न हुवा तो प्रात कर्म होयगा औ मध्यान समय न हुवा तो मध्यान कर्म होयगा औ सायंकाल न हुवा तो सायं कर्म होयगा, नहीं होनेका। बाल काल में तरुण कालका कर्म नहीं होता औ तरुण कालमें बाल कालका कर्म नहीं होता औ तरुण कालमें वृद्ध कालका कर्म नहीं होता। तब तो कर्म काल के अधीन, कालही ब्रह्म औ कालसे आगे कछु नहीं। काल पाय के ब्रह्मा विष्णु महेश पैदा होते हैं औ काल पाय के नाश हो जाते हैं। काल पाय के सृष्टि उत्पन्न होती है औ काल पाय के प्रलय होती है। काल पाय के औतार आदि जीव पैदा होते हैं औ काल पाय के सुख दुख भोगते हैं। औ काल पाय के कर्म भी उत्पत्ती प्रलय होते हैं तब कर्म परतंत्र औ काल स्वतंत्र। कर्म जब चाहे तब किये से होता है औ काल कछु किये से होता नहीं तब काल सत्य औ कर्म असत्य जैसे किसान किसानी करता है परंतु काल न होय तो कछु अनाज पकता नहीं, काल न होय तो उसका कर्म सब मिथ्या। तब काल सब का अधिष्ठान काल ही ब्रह्म। ये अर्थ। तब न्याय शास्त्र के आ-

चार्य गौतम बोलते हैं कि काल छिन आता है छिन जाता है औ कर्म घटत घटा जाता है, तो ये काल औ कर्म नास्ति,परमात्मा अस्ति । तीन काल आता जाता है औ काल ईश्वर के आधीन है। ईश्वर चाहे तो वर्षाकाल को धूप काल करे औ धूप काल को वर्षाकाल करे। चाहे तो रंक को राजा औ राजा को रंक करे । काल को अकाल अकाल को काल करे ।

कवित्त–सर्वेश्वर की कृपा विना कछु, ज्ञान अज्ञान सो काम न आवै । चाहे तो ज्ञानी अज्ञानी करे, अज्ञानीको तुरतहि ज्ञानि बनावै। चाहे अकर्मी कुकर्मी मुक्तावै, चाहे सुकर्मिन नर्क भुगावै । चाहे तो सृष्टि रचे पलमांहि जु, चाहे तो सब छिन मांहि मिटावै ।' १ ॥

इस प्रकार से समस्त ईश्वर के आधीन सूत्रधारी ईश्वर जैसा दारुपुतली के माफिक संसार को नचाता है तब ईश्वर अस्ती औ काल कर्म स्वाभाव सब नास्ति। ये अर्थ । तब पातंजल शास्त्रवाले शेष बोलते हैं कि तूने ईश्वर को देखा है कि ईश्वर कैसा होता है जो देखा नहीं तो उसका क्या प्रमाण । अरे ईश्वर क्या है, और कैसा है तूने कछु भी देखा है कि अनुमान से ही मानता है, बिना अनुभव ताको कछु प्रमाण नहीं । औ अनुमान से पीतर पाथर काष्ठ आदि आठ प्रकार की मूर्ति प्रतिमा पूजा स्थापते हो सो सर्व मिथ्या। तीर्थ व्रत आदि जो थापते हो ये सब मिथ्या अनात्मा, सच्चिदानंद सत्य आत्मा । सो हम योगमार्ग से देखते हैं औ तुम्हारे को कछु अनुभव नहीं तुम पाथर पूजते हम ब्रह्मांड का कारखाना सब पिंडांड में देखते हैं सो हमारी बात सच्ची औ तुम्हारी बात सब झूठी ईश्वर का अनुभव हमको है तो योग सत्य और सब मिथ्या, बिना योग कछु अनुभव नहीं होता । ये अर्थ । तब सांख्यशास्त्रवाले कपिल

मुनी बोलते हैं कि, एकदेशी अनुभव औ एकदेशी ज्ञान कछु काम का नहीं । ब्रह्म तो सर्वदेशी, सर्वसाक्षी, अकर्ता, करतूत तो सारी प्रकृती की है; योग समाधी सारी प्रकृती से जानिये । संसार की उत्पत्ती स्थिती लय सब प्रकृती से होती है । सो पांच तत्त्व औ पचीस प्रकृती चार देह के सब तत्त्व नास्ती, इसका जाननेवाला मैं सर्वसाक्षी अस्ती । संपूर्ण अनित्य में नित्य, योग कर्म इत्यादि सर्व अनित्य । ये अर्थ। औ वेदांत शास्त्रवादी व्यास बोलते हैं कि सर्व कल्पित शास्त्र हैं नास्ती । अरे एक ब्रह्म अखंड संपूर्ण सब आपही आप ता में अस्ती नास्ती कहां संभवता है । ध्याता ध्यान ध्येय, ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय, ऐसी त्रिपुटी ब्रह्ममें संभवती नहीं।ब्रह्म तो अखंड अद्वैत एकरस तामें द्वैत नित्यानित्य अथवा समाधी ये संभवती नहीं।सब देखना औ देखनेमें आवना औ देखनेवाला सब ब्रह्म और कछु नहीं सर्व नास्ती । ये अर्थ । इस प्रकार अतिर विरोधी देखो अतिरे सयाना । जो छौ शास्त्रन के आचार्य बडे बडे सयाने भये इन में बडा विरोध मत प्रमाण कैसे होय । और चार वेद में भी विरोध है । ऋग्वेद कहता है कि परमात्मा निराकार निर्लेप अलख अगोचर है । निरालम्ब ब्रह्मेति श्रुति । अथर्वन वेद बोलता है कि ये सब मिथ्या, औ प्रपंच जो दीखता है सोई सत्य औ ब्रह्म निरालम्ब निर्गुण कछु नहीं । जो मरा है सो फिर लौट के नहीं पैदा होता । जैसा वृक्षसे पत्र टूटता फिर वृक्षको नहीं लगता ऐसा जो मरा सो गया । सर्वेवाहंपुरुषेति श्रुति । औ यजुरवेद कहता है कि ये दोनों नास्ती, परमात्मा क्षीरसागर निवासी नारायण अस्ती । सगुणब्रह्मेति श्रुति । औ सामवेद कहता है कि ये सर्व मिथ्या कल्पना है । न सगुण न निर्गुण न दृष्टिगोचर, अध्यारोप अपवाद नहीं । ये संपूर्ण ब्रह्म अखंड अद्वैत । तत्त्वमसीति श्रुति । इस प्रकार से चारों वेद में भी

विरुद्ध है । फिर देखो छौ दर्शन औ छानबे पाखंड सब संसार में न्यारे ही अपना अपना मत दृढावते हैं एक से एक विरुद्ध करते हैं। सो ये जीव सब ऐसेही ऐसे मतन में बंधमान भये औ एक एक मतनका पक्ष लेके एक से एक लडते हैं सो सब कहां हैं । हे जीव तेरी कल्पना तेरा स्वरूप नहीं। सुनो हे नरबंदा, डाइनि डिंभ सकल जग खंदा । डाइनि कहिये बानी आशा तृष्णा औ स्त्री औ डिंभ कहिये गुरुवा लोग भेष षटदर्शन औ नानामत, याहीने सब जग खाया बिना पारख । ये अर्थ ॥ १०४ ॥

शब्द १०५.

ये भ्रम भूत सकल जग खाया । जिन जिन पूजा ते जहँडाया॥
अंड न पिंड न प्राण न देही ।कोटि कोटि जिव कौतुकदेही॥
बकरी मुर्गी कीन्हेउ छेवा ।आगल जन्म उन औसरलेवा॥
कहहिं कबीर सुनो नर लोई।भुतवाके पूज ले भुतवा होई १०५

टीका गुरुमुख—ये भ्रम भूत सकल जग खाया। जिन जिन पूजा ते जहँडाया ।भ्रमभूत कहिये ब्रह्मभूत ताने सकल जग खाया औ जिन जिन पूजा, अनुमान किया मानंदी किया तेहि जहँडाया । अरे न अंड, न पिंड, न प्राण, न देही, मिथ्या धोखा कछु है नहीं । तो कोटि कोटि, कोटिन जीवों को दुख देते हैं मान के आपुही अनुमान रूपी होय जाते हैं जीव । ये अर्थ । बकरी मुर्गी कीन्हेउ छेवा अरे नाना प्रकार की बानी सुनी कि यज्ञ आदिक कर्म करने से स्वर्ग आदिक प्राप्त होता है सो मिथ्या धोखा । ताके भरोसे देवी देवता स्थापना करके बकरी मुर्गी मारने लगे । सो सब अगले जन्म में बखत पाय कर बदला लेयँगे तब कछु देवता का मकदूर नहीं कि बदला न लेने देवेंगे क्योंकि देवता कल्पित औ जीव अकल्पित । अरे रामचंद्र

सरीखे स्वयं देवता जिन्ह बालीको मारा सो औसर पाय के कृष्ण औतार में उन्होंने व्याध का औतार लेके कृष्ण को मारा । इसवास्ते गुरु कहते हैं कि हे नर लोई सुनो, भूत के पूजे आपु ही भूत होने को होता है औ ब्रह्म के माने आपु ही ब्रह्म होने के होता है । ना कहूं ब्रह्म है, ना कहूं देवता है सब मिथ्या धोखा।जो कछु होता है सो ये जीव ही होता है जो कछु कल्पन है सो बंधन में आपुही परता है। ये अर्थ ॥ १०५ ॥

शब्द १०६.

भँवर उडे बग बैठे आई।रैन गई दिवसो चलि जाई ॥
हल हल कांपे बाला जीऊ ।ना जानों का करि है पीऊ ॥
कांचे बासन टिके न पानी ।उडि गै हँसकायाकुम्हिलानी॥
काग उडावत भुजा पिरानी ।कहहिं कबीरयहकथासिरानी॥

टीका गुरुमुख–भँवर उडे बग बैठे आई । भँवर कहिये आशिक जीव बग कहिये गुरुवा लोग, सो गुरुवा लोग जब जीवन के पास आय के बैठे तब नाना प्रकार की बानी दृढावने लगे औ जीव सब बानी के संग उडने लगे । सो नाना प्रकार की बानी,अनुमान सिद्ध हो गया सो ताही अनुमान में रात दिन चला जाता है। हल हल कांपे बाला जीव । यह जीव अज्ञानी हल हल कांपे बालवत् । जैसे बालक को कोई डेरावता है अनेक प्रकार का भय देके, तब बालक डरता है तैसे ये गुरुवालोग जीव को डेरावते हैं औ जीव डरते हैं । ये अर्थ। ना जानो क्या करि है पीऊ । ये जीव हल हल कांपते हैं कि ना जानो ईश्वर क्या करेंगे मेरी क्या गती होयगी। कांचे बासन टिके न पानी। जैसे कांचे बासन में पानी टिक सक्का नहीं रह सक्का नहीं इस प्रकार से ये देह में जीव टिक सक्का नहीं । सो ये दिन रात कल्प

ना करते करते डरते डरते हंस उड गये औ काया कुम्हिलाय गई। देखो काग उड़ावत भुजा पिरानी। काग कहिये गुरुवा लोगोंको, भुजा कहिये जीव, सो गुरुवा लोगोंके उडावते उड़ावते जीव पिसाय गया नाश भया धोखेमें पचिके कहहिं कबीर यह कथा सिरानी । अरे तूं जो मानंदी किया था औ जिनका भय माना था सो सब कहां है वो तो देहका व्यौहार, जब देह छूटा तब सब रहि गया। औ ना गुरुवा लोग भी काममें आये, ना ब्रह्म ही भया, ना कोई देवताही काम आये सब मिथ्या कल्पना मिथ्या के संग गई। ये अर्थ ॥ १०६ ॥

शब्द १०७.

खसम बिनु तेली को बैल भयो।

बैठत नाहिं साधुकी संगत । नाथे जन्म गयो ॥
बहिबहि मरहुपचहु निजस्वारथ। यमको दंड सहो ॥
धन दारा सुत राजकाज हित । माथे भार गह्यो ॥
खसमहि छाडि विषय रंगराते। पापके बीज बोयो ॥
झूठ मुक्ति नर आस जिवनकी। उनप्रेतको जूठ खयो॥
लख चौरासी जीव जंतु में। सायर जात बहो ॥
कहहिं कबीर सुनो हो संतो। उन्ह श्वानकी पूंछ गह्यो॥

टीका गुरुमुख—खसम बिनु तेली को बैल भयो। जो कोई खसम गुरुवा लोगनने बताया ताको बिरह संसार में भया । परंतु देखनेमें तो काहू के नहीं आया । सो जैसे तेली का बैल घुमता है औ आंखिसे तो कछु दिखता नहीं। जबलग तेलीने हकाला तबतक घूमता रहा औ जब छोडा तब जगह का जगही है ना कहुं गया ना कहुं आया । इस प्रकार से गुरुवा लोगोंने जबलग वहकाया चलाया तब-

लग बहकता चला गया, औ फिर चोला छूटा तब ना कछु भया ना कहु गया, गर्भवास से निकरा था सो फिर गर्भवास ही में समाया । अथवा वेदांत विचार करके गुरुवा लोगोंके फंदे से छूटा, तो फिर देखो ना कहूं गया ना कहूं आया, ब्रह्म कहाय के जगत का जगत में रहा । ये अर्थ । बैठत नहीं साधुकी संगत, नाधे जन्म गयो । अब जो साधु पारखी हैं तिनकी संगत में बैठता नहीं पारख कहांसे आवै जो गुरुवा लोगोंने धोखेमें नाथ दिया ज्ञान भक्ती औ योग ताहीमें नाधा रहताहै । जैसा तेली का बल घानी में नाधा रहता है तद्वत् । बहि बहि मरहु पचहु निज स्वारथ । नाना उपाधी मंत्र तंत्र पूजा व्रत इत्यादि करते करते मरतेहैं, अपने स्वार्थके हेतु गुरुवा लोगके दंड सहतेहैं, जैसा बोले तैसा करते हैं । जामें धन धान्य पुत्र दारा औ राज्य प्राप्त होय औ अनेक कारज जो कछु चित में आवै सो सब सिद्धि होय । वे हेतु माथे पर नाना प्रकार के भार धरते हैं पूजा उपासना आदि । ये जीव प्रथम कोई देवता की उपासना करता है औ कहता है कि हम दरिद्री हम को कछु द्रव्य मिले तो अच्छा है । सो कछु दिन में अपनी भावना सिद्ध हुई द्रव्य मिला । तब कहता है कि [illegible] हमको अच्छी स्त्री मिले तब कछ दिन में स्त्री भी मिली । तब कहन लगा कि हे प्रभु एक पुत्र होय वो भी हुवा । तब कहता है कि राज मिलै तो अच्छा है सो भी मिला । तब कहता है कि सब मेरे दुशमन मरें तो अच्छा है औ मैं जो चितू सो सब होय वो भी होने लगा । तब कहने लगा कि मैं सिद्ध, मैं धनवान, मैं राजा, मैं सुखी; मेरे माफिक और कोई नहीं । ऐसा कहिके मदांध हुवा खसमहि छाडि विषय रंग राते, पापके बीज बोयो । सबका खसम जीव सो नाना प्रकारके विषय रंगमें राते औ मदांध होयके चोला छोडा [illegible]दी सब जाती रही । पाप कहिये विषय ताको बीज बोयो

विषय रंग में अपने पद को नहीं प्राप्त भया सो फिर गर्भवास में गया । पाप कहिये गर्भवास, पाप को बीज विषय । ये अर्थ । गुरुवा लोगोंने जो मुक्ति की आशा लगाई जीवन को सो मिथ्या । अरे उन गुरुवा लोगों ने प्रेतको जूंठ खायो । अरे आगे जो होय के बानी कथ के ब्रह्मादि मर गये तिनकी जूंठी बानी ये सब ग्रहण किया सोई सायर चौरासी लक्ष जीव जन्तू में बह चला, सायर कहिये अनुमान अनुमान कहिये ब्रह्म । सो गुरु कहते हैं कि हे जीव कहां है ब्रह्म, सुनो हे संतो उन श्वान की पूंछ गही श्वान कहिये ॐकार । सो उन ॐकार की पूंछ गही । औ श्वान कहिये बेद सो जीवन सब बेदकी बतकही पूछने लगे । बेद ही की पूंछ गहके धोखे में परे । ये अर्थ ॥ १०७ ॥

शब्द १०८.

अब हम भैलि बहुरि जल मीना । पूर्बल जन्म तपका मद कीना-
तरि [illegible] अछलोउँमनबैरागी । तजलेउँमैंलोगकुटुमरामलागी
[illegible] काशी मति भई भोरी। प्राणनाथ कहु का गति मोरी
[illegible] क कितुमहिं अयाना। दुइमा दोष काहि भगवाना
हम [illegible]ालऐलि तुम्हारे शरणा। कितहुं न देखों हरिजीके चरणा
हम चलि ऐलि तुम्हारे पासा । दास कबीर भल केलि निरासा

टीका जीवमुख—अब हम भैलि बहुरि जल मीना । अब हम [illegible]हुर के योगी भये, तो पूर्व जन्म के भी हम योगभ्रष्टथे। जल कहिये श्वासा, मीन कहिये जीव, सो जीव बोलता है कि पूर्व जन्म में हम योगाभ्यासी थे सो अभ्यास करते करते सिद्धि नहीं हुई बीच ही में चोला छूट गया। ताते अब उत्तम मानुष जन्ममें आयके फिर श्वासाके मीन भये औ उलट के ब्रह्मांड में चढे कृतकृत्त भये । ये अर्थ । तहिया मैं अछलेउँ [illegible]

बैरागी, तजलेउं मैं लोग कुटुंब राम लागी । तहिया पूर्व जन्म में अपने मन से बैरागी था, राम प्राप्ती के हेतु लोग कुटुंब सब त्याग किया था, परंतु समाधी स्थिती न भई औ राम की प्राप्ती नहीं भई । मत हमारी भोरी हो गई तामें काशी काया छूटी अब फिर ये देह प्राप्त भई सो हे प्राणनाथ हे गुरुनाथ क्या गति मोरी, अब मेरी क्या गती होवेगी । हमहिं कुसेवक तुमहिं अयाना, दुइमा दोष काहि भगवाना । हे भगवान क्या हमही कुसेवक हैं जो कछु सेवा न बनी आईकि तुमही अज्ञानहो कि कछु समझाते न बनाँ ताते हम फिर गर्भवास में आये औ इस जगत में देह पाई । हे भगवान हे गुरुनाथ दोनों में किसका दोष होयगा । अब हम तुम्हारे शरण आये परंतु जो हरी का तुमने नाम बताया था सो हरी-जीके चरण कहूं देखे भी नहीं ताते फिर हम देह में आये भला अब हम देह में आय के तुम्हारे पास आये प्रारब्ध योग से औ बडे हमारे भाग्य जो आप हम को मिले सो अबके वख्त दास को परमात्मा ने भला निराश किया, संपूर्ण मेरा स्वरूप मैं आत्मा अद्वैत अखंड ये निश्चय करवाया । ये अर्थ ॥ १०८॥

शब्द १०९.

लोग बोले दुरि गये कबीर । ये मति कोइ कोइ जानेगा धीर॥
दशरथ सुत तिहुं लोकहि जाना। राम नाम का मर्म है आना ॥
जेहिं जिवजानि परा जस लेखा। रजु का कहै उरग सम पेखा॥
यद्यपि फल उत्तम गुण जाना । हरी छोडमन मुक्ति न माना॥
हरि अधार जन मीनहि नीरा । औरि यतनकछुकहै कबीरा ॥

टीका गुरुमुख—कबीर कहिये जाकी सत्ता से काया चलती है जड काया जाकी सत्ता पाय चैतन्य सी मालूम परे सो कबीर, काया बीर ... ता चैतन्य को अज्ञानी लोग बोलते हैं कि, दूर गये कोई

जीव स्वर्ग को गये औ कोई जीव नर्कको गये औ कोई जीव नानायोनी को गये, ऐसी त्रिपुटी त्रिभाग चैतन्यके विषय करते हैं सो अज्ञानी अरे चैतन्य क्या कहीं खंड है जो एक स्वर्गको जायगा औ एक नर्कको जायगा औ एक नाना योनी को भ्रमेगा। चैतन्य तो अखंड निरंतर, अंतर कहीं नहीं एकरस, तो आना जाना मिथ्या । जैसी समुद्रकी लहर बुद-बुदा औ तरंग क्या समुद्रसे न्यारे रहते हैं, क्या वो जल नहीं। तद्वत, जीव सब आत्मा के बीच स्वाभाविक उठते हैं औ स्वाभाविक रहते हैं और स्वाभाविक लय होते हैं तो जीव ही आत्मा । तब उत्पत्ती स्थिति औ लय ये तीनों मिथ्या एक आत्मा सत्य । ये मत कोई कोई जानेगा धीर, ज्ञानी जानेगा । ये अर्थ । दशरथ सुत तिहुं लोकहि जाना, रामनामका मर्म है आना । दशरथ के पुत्र को तीनों लोकने जाना कि राम परंतु राम नामका मर्म और ही है। अरे जो सब का अधिष्ठान सब में रमता है सो राम । औ अखंडन जो अधिष्ठान में दशरथ पुत्र खड़े भये औ फिर लय भये सो आत्माराम ये अर्थ । यद्यपि फल उत्तम गुण जाना । अरे ऐसा आत्मा न जान के फल अर्थ धर्म काम मोक्षादि, जो उत्तम गुण वेद, ताके प्रमाण से जो जाना सो सब मिथ्या कल्पना। अरे प्रत्यक्ष आत्म अनुभव छोड के परोक्ष मुक्ती अनुमान करता है ये सब मनका भ्रम नास्ती, आत्म अनुभव अस्ती । ये अर्थ। हरि अधार जस मीनहि नीरा हरि ईश्वर सब जगतका अधार, जैसा मीन को जल अधार तद्वत, द्वैत बादमें वेदने कहा परन्तु अद्वैत विचारमें समर्थ अनुभाविक लोगों ने औरी यतन कछु कहा, कि त्रिगुण विषय वेद ने कहा सो सब जीव ने माना कि एक कारण ईश्वर औ कारज अनेक जीव सो दोनों मिथ्या कल्पना औ एक आत्मा सत्य, निरद्वंद नित्य

सत्य नियोग ऐसा जो जाने सो आत्मवान् । जग ईश्वर कैसा, जैसा समुद्र औ अनेक नदी नाला कूप तालाब औ दोनों में पानी एक, सो पानी सत्य औ नदी नाला कूप तड़ाग और समुद्र ये उपाधी मिथ्या । ऐसा समुद्र माफिक बडी उपाधी ईश्वर की । औ कूप तालाब माफिक छोटी उपाधी जीव की औ दोनों में पानी एक । ऐसा आत्मा एक नाम रूप उपाधी मिथ्या । आत्मा सत्य, ना जीव ना ईश्वर । ये अर्थ ॥ १०९ ॥

शब्द ११०.

आपन कर्म न मेटो जाई ।
कर्म का लिखा मिटै धौं कैसे । जो युग कोटि सिराई ॥
गुरु वशिष्ठ मिलि लगन सुधायो। सूर्य मंत्र एक दीन्हा ॥
जो सीता रघुनाथ बियाही । पल एक संच न कीन्हा ॥
तीन लोक के कर्ता कहिये । बाली बधो बरियाई ॥
एक समय ऐसी बनि आई । उनहूँ औसर पाई ॥
नारद मुनिको बदन छिपायो । कीन्हो कपिको स्वरूपा ॥
शिशुपाल की भुजा उपारी । आपु भये हरि ठूठा ॥
पारबती को बांझ न कहिये । ईश्वर न कहिये भिकारी ॥
कहहिं कबीर कर्ता की बातें । कर्मकी बात निरारी ११०

टीका गुरुमुख—अरे जासे अपना कर्म नहीं मेटा जाता सो दूसरे की कर्म रेखा कैसे मिटावेगा । जिससे अपना ही कर्म नहीं मेटा गया उससे कोटी युग बीते तो भी दूसरेका कर्म नहीं मेटने का । ये अर्थ। गुरु वशिष्ठ मिलि लगन सुधायो, सूर्य मंत्र एक दीन्हा । जो सीता रघुनाथ बियाही, पल एक संचन कीन्हा । वशिष्ठजी ऐसा बुद्धिवन्त ज्ञानी औ योग में भी सिद्ध तिन्होंने अच्छी लग्न शोधके रामचन्द्र

को सूर्य उपासना दई । औ रामचन्द्र भी ईश्वरही कहाळाते थे परंतु उनसे अपना कर्म नहीं मेटा गया । कहो अब उनके नाम स्मरण करे से औ उसकी भक्ती करेसे दूसरेका कर्म कैसे नाश होयेगा। अब दुनि-या सब कहती है कि भाई शुभ मुहूर्त शुभ लग्न विचार के कोई काम करना। तो क्या वशिष्ठने कुमुहूर्त विचारा था । जो सीता को रघु-नाथसे विवाह हुवा ॥ सो सीताको एक पल भर भी सुख हुवा नहीं भला जो आपही भगवान थे औ लग्न मुहूर्त भी सच्चा हता तो ये क्यों नाना दुख भोगे; तो लग्न मुहूर्त मिथ्या धोखा। ये अर्थ। अरे तीन लोकके कर्ता कहाते थे औ बाली को जबरदस्ती से मारा परंतु एक समय ऐसी बनि आई कि बाली तो व्याध हुवा औ रामचन्द्र कृष्ण हुये तब उन भी औसर पाय के कृष्ण को मारा। शिशुपालकी भुजा श्रीकृष्ण ने उखाडी तो मृत समय कृष्ण के भी हाथ कटे औ जगन्नाथ आप ठूठे भये। अरे पार्वती को क्या बांझ न कहना औ महादेव को क्या भिखारी कहना। ब्रह्मा का शिर पारवती के विवाह के समय महादेवने दक्षप्रजापतीके होममें उडाय दिया सो ब्रह्महत्या महा-देव के पीछे लगी तब बहुत दुखी भये महादेव । भला जो आपही मालिक थे महादेव तो ब्रह्महत्या क्यों न दूर की । तो हत्याके मारे शिव बहुत बेजार भये, गीली हाथी की छाल गलेमें पहिरे औ बाघ का चमडा ओढे औ नरकी खोपडी में भीख मांगके खाने लगे औ चिताभस्म लगाय के श्मशान में रहने लगे औ नरमुंड पहिरे, ऐसी गति उनकी भई । अब जीव सब उनके नाम औ उनके मंत्रके भरोसे जीव हिंसा करते हैं । शिवशक्ती उपासक बकरा औ पशू मारते हैं कहते हैं कि, हम उपासक हैं। तो इनके देवतों को तो जीव हिंसा का दुख छूटा नहीं बदला देना परा औ इन भक्तन को कैसे छूटेगा।

गुरु कहते हैं कि कर्ता की बातें देखो ये मनुष्यकी बातें । अपने विषय भोगके वास्ते औ अपने जीभ स्वाद के वास्ते मंत्र औ शास्त्र बनाया औ उसमें नाना प्रकार का दृष्टांत मिलाया औ महा अकर्म की बातें जगमें चलाया । परंतु नाना योनी की प्राप्ती होके सब जीवन का बदला देना होवेगा कछु छूटने का नहीं । ये अर्थ ॥ ११० ॥

शब्द १११.

है कोई गुरुज्ञानी जगत । उलटि बेद बूझै ॥
पानी में पावक बरे । अंधहि आंखि न सूझै ॥
गाई तो नाहर खायो । हरिन खायो चीता ॥
काग लंगर फांदि के । बटेर बाज जीता ॥
मूस तो मंजार खायो । स्यार खायो श्वाना ॥
आदि कोऊ उदेश जाने । तासु बेश बाना ॥
एकहि दादुरि खायो । पांच खाया भुवंगा ॥
कहहिं कबीर पुकारि के । हैं दोउ एकै संगा ॥ १११ ॥

टीका मायामुख–है कोई गुरुज्ञानी, जगत उलटि बेद बूझै । महाज्ञानी अनुभाविक जो कोई जगत में हैं सो श्वासा उलट के स्वरूप को बूझै । राजयोग विधीसे अथवा हठयोग विधी से अथवा ज्ञान योग विधीसे अथवा सांख्ययोग विधीसे बूझै कि एक आत्मा । ये चार विधी बिना कछू आत्मस्थिति होती नहीं औ जीव मुक्त होता नहीं बंधन में रहता है । ये अर्थ । पानीमें पावक बरे अन्धहि आंखिन सूझै । पानी कहिये बानीकोबानीमें नाना तौर से अग्नी बार दियागुरुवा लोगोंने, सो ये जीव अंधे अज्ञान हैं जिनको कछु सूझ नहीं परता । मारे विरहके धाय धाय धोखेमें परते हैं । ये अर्थ । गाई तो नाहर खायो, हरिन खायो चीता । गाई कहिये बानी को नाहर कहिये

मन को । हरिन कहिये परमात्मा, परमात्मा कहिये जो सब मिलि एक, चीता कहिये चैतन्य सो जब बानी सुना कि कोई अपना कर्ता है तब मन उस बानी में लीन हुवा । औ कहूं श्रवण मनन करके अथवा कहूं योग करके तत्त्व में तत्त्व, देह में देह, अवस्था में अवस्था लय करके एक गोलाकार किया ताको परमात्मा कहिये, ताने जीव चैतन्य को खाया काग लँगर फांदिके बटेर बाज जीता । काग कहिये गुरुवा लोगों को, सो गुरुवा लोगोंने जीवको नाना प्रकार से फंदा औ बटेर बानी तामें जीव बाज को जीता जीव बानी के बश हुवा । ये अर्थ । मूस तो मँजार खायो । मूस जीव, मंजार माया सो माया को जीव ने खाय लिया औ ब्रह्म हुवा । स्यार खायो श्वाना । स्यार कहिये व्यासादि पंडित ताको श्वान वेदने खाय लिया भरमाय दिया। ये अर्थ । आदि कोऊ देश जाने, तासु बेश माना । आदि कोऊ देश ब्रह्म, ताको जो जाने सो ब्राह्मण ऐसा माया का उपदेश भया । गुरुमुख—सो एकहि दादुर खायो, पांचहि भुवंगा एकहि दादुर कहिये ब्रह्म, ब्रह्म कहिये ॐकार, सो ॐकार ने पांच अभिमान को खाया औ दूनों एक संग भया जीव ब्रह्म एक भया । सो गुरु कहते हैं कि बिचार करके देखो कहां है । अरे मिथ्या धोखा अनुमान में सब जीव मरे बिना पारख । ये अर्थ ॥ १११ ॥

शब्द ११२.

झगरा एक बढो राजा राम । जो निरुवारै सो निर्बान॥
ब्रह्म बड़ा कि जहाँसे आया । बेद बडा कि जिन उपजाया॥
ई मन बड़ा कि जेहि मन माना। राम बडाकि रामहि जाना॥
भ्रमि भ्रमि कबिरा फिरे उदास ।तीर्थबडाकीतीर्थका दास११२

टीका गुरुमुख—झगरा एक बड़ो राजा राम। गुरु कहते हैं कि प्रथम आचरण में जब ये कच्चे तत्त्वनकी देह प्राप्त भई नारी के संयुक्त करके अनेक जीव उत्पन्न भये तब त्रिविध ताप में बहुत तप्त भये दुखित भये। त्रिविध ताप कहिये दैहिक दैविक भौतिक। ये त्रिविध ताप विवरण।

कवित्त—अंतः करण अध्यात्म जहां, विष्णु आदि देव तहां। आधि भूत निर्विकल्प, ताहि को बताइये॥ मन अध्यात्म जहां, चंद्र आधि देव तहां। संकल्प बिकल्प आधि, भूतहूं रताइये॥ चित अध्यात्म जहां नारायण आधिदेव। अनुसंधान आधिभूत, जहां तहां जाइये॥ बुद्धि अध्यात्म जहां, ब्रह्मा आधि देव तहां। निश्चयता आदिभूत, जडता लखाइये॥ हँकार अध्यात्म जहां; शंकर आधिदेव तहां। अहंकृति आधिभूत,ताहिको बताइये॥ कान अध्यात्म जहां, दिसा आधिदेव तहां। आधिभूत शब्द को, सुनन लखि पाइये॥ नासिका अध्यात्म जहां अश्विनी आधि देव तहां। गंध औ सुगंध सोई, आधिभूत गाइये॥ जिभ्या अध्यात्म जहां वरुण कहिये आधिदेव। रस औ सुरस लेन आधिभूत लखाइये॥ नेत्र अध्यात्म जहां, सूर्य आधि देव तहां। रूपको देखाय सोइ, आधिभूत पाइये॥ त्वचा अध्यात्म जहां, वायू कहिये आधिदेव। स्पर्श आधिभूत तहां परतक्ष लखाइये॥ हस्त है अध्यात्म जहां, इन्द्र कहिये अधिदेव। लेन देन आधिभूत, बहुत मन भाइये॥ पांव है अध्यात्म जहां, अग्नी कहिये अधिदेव। अधिभूत चलावो है, जहां तहाँ जाइये॥ गुदा है अध्यात्म जहां,यम कहिये आधिदेव। मैलको बिसर्ग अधि, भूतहू रताइये॥ लिंग अध्यात्म जहां, अधिदेव प्रजापति। मैथुन को करब येही, आधिभूत ल्याइये॥ बानी अध्यात्म जहां, उपेन्द्र आधिदेव तहां। बोलत सोइ आधिभूत

जक्त में बताइये ॥ ऐसे त्रिविधि ताप मांहि, जीव सब हैरान भये संतगुरु कृपाल होय, ताहिको छोडाइये ॥ १ ॥

दैविक कहिये जो देहमें से उत्पन्न होता है ज्वरादि रोग । औ दैविक कहिये अनाचित शिरपर पत्थर पडे कि घर में बैठेहैं सो घर ऊपर गिर पडा कि झाड के तर खडे हैं सो झाड टूट के शिर पर गिरा, अनाचित बेकारण दुख भया सो दैविक । औ बाघ ने मारा, सर्पने काटा, चोरने मारा,राजदंड भया,ऐसा दूसरे जीव के तरफ से जो दुख होय ताको आधिभौतिक कहिये । इस प्रकार से नाना प्रकारका दुख जीवनको हुआ तब जीव सब व्याकुल भये औ झगरे में परे सबन मिलि मनसुबा किया कि अपना सुख दुख का दाता कोई ईश्वर है जाका ऐश्वर्य जगतमें बिदित है सो ईश्वर हम रैयत कछु लाचार औ बहुत दूखी तेरी मायाके वश हैं । तुम राजा हमारे मालिक, तू जो चाह सो करै तू सब ऐश्वर्यका मालिक है ताते हम तेरे दास । ऐसा कहिके नाना प्रकार से ईश्वरका सिद्धान्त करने लगे किसीने शक्तिको ईश्वर माना औ किसीने महादेवको ईश्वर माना औ किसीने विष्णुको ईश्वर माना औ किसी ने सूर्य को ईश्वर माना औ किसीने गणेशको ईश्वर माना औ किसीने संपूर्ण ब्रह्मांड व्यापी है ताको ईश्वर मान । इस प्रकार से नाना प्रकार के सिद्धांत औ उपासनाका झगरा बढा औ एक को एक दोषने लगे । सो झगरे में जीव परे नाना बन्धन में परे सोई झगरा बढा । राजा कहिये ईश्वर औ राम कहिये आत्मा जब निरुवारा किया कि ब्रह्मांड में जो व्यापक है सो भी चैतन्य औ पिंडांड में जो व्यापक है सो भी चैतन्य । तो चैतन्य तो एक औ नामरूप न्यारे न्यारे सो उपाधी मिथ्या औ चैतन्य सत्य । जैसा समुद्र औ कूप तालाब, तैसा जीव औ ईश्वर, परंतु पानी दुहुन में एक नदी नाला कूप तालाब समुद्र ये सब नाम रूप उपाधी मिथ्य

इस प्रकारसे आत्मा सत्य औ नाम रूप उपाधी मिथ्या ऐसा जो निरुवारा किया सो निर्बान आत्मा बना । झगरा कहिये जगत जीव त्वं पदार्थ, एक राजा ईश्वर, राम एकता, आत्मा निर्बान । ये अर्थ । ब्रह्म बड़ा कि जहां से आया अरे ब्रह्म बड़ा कि ऐसी भावना जासे उठी सो जगा बड़ा कि ब्रह्म बड़ा अरे आनन्द आनन्द सब कहते हैं परंतु जहां से आनन्द उपजा सो ठौर कौन ताको नहीं परखते आ आनन्द में लीन होय रहे हैं अरे पृथिवी तत्त्व की दो कला, गंध छोडना औ गंध आकर्षण करना औ दो इंद्री पृथ्वी की नाक औ गुदा, सो गुदा से गन्ध छोड देते हैं औ नाक की कला से गन्ध खैंच लेते हैं परंतु गंध ऐसा जानना ये स्वभाव तेरा है । पानी की इंद्री दो, लिंग औ जिभ्या, ताकी दो कला, रस उपजावना औ रस खैंच लेना सो रसको जाननेवाला चैतन्य बिना कौन है । अग्नी की इंद्री आंख औ पांव, ताकी कला दो, रूप देखना औ पांव में तेज रखना, परंतु तेज का जाननेवाला तूही । वायू की इंद्री दो हाथ औ त्वचा, ताकी कला दो, स्पर्श करना औ स्पर्श को आकर्षण करना, परंतु स्पर्श को जाननेवाला तूही । आकाश की दो इंद्री वाक औ कान, ताकी दो कला, बोलना औ शब्द आकर्षण करना, परंतु इनका जाननेवाला तूही । तेरे बिना ये पांचो जड इन में क्या सत्ता है जो सबन के रस स्वभाव को जाने । अरे पांच तत्व भी जड औ इन के विषय भी जड इन में कछु सत्ता नहीं तेरे बिना इन के गुण दोष जाननेवाला कौन है । भला पांच तत्वन की दश इंद्रि औ दश कला इनका जाननेवाला जीव, अब देवता कहांहै तो चतुर्दश देवता मिथ्या तेरी कल्पना । अब ऐसा कोई कल्पना करेगा कि इंद्रिय भी हैं औ तत्व भी है परंतु अंधा बहिरा पंगुला क्यों न होता है जो देवता नहीं तो । ये शंका । तो एक आंखी अन्धा औ

एक कान बहिरा औ आधा अंग शून्य औ एक पांव पँगुला होता है तो आधा देवता जाता रहता है क्या, देवता जाता है औ आधा देवता रहता है ये बात नहीं संभवती तो तत्व की आधी कला शून्य होय जाती है। भला अंतःकरण आकाश का स्वभाव, जो ब्रह्म को बडा आनंद निर्विकल्प मानिये तो अन्तःकरण की कला, आकाश का स्वभाव, जीव सहित अनुभव में आता है परंतु वो निर्विकल्प में जीव सामिल ना रहे तो निर्विकल्प कछु माल नहीं जड शून्य मिथ्या धोखा। जो ब्रह्म सविकल्प मानिये तो चित्तका स्वभाव, वायु की ।, जीव सहित एकत्व मालूम होती है, उस में जीव सामिल ना रहे तो सविकल्प कछु माल नहीं। तो जैसा का तैसा, ना निर्विकल्प ना सविकल्प ऐसा मानिये तो बुद्धीका स्वरूप; बुद्धी पृथ्वी की कला जड जीव सहित अनुभव में आती है, अगर जीव न होय तो वो भी कछु नहीं। जो ईश्वर दुसरा ब्रह्मांड औ स्वर्ग आदिक में मानिये तो संकल्प विकल्प मनका स्वभाव, मन पानी की कला, जीव संयुक्त दूसरा परमात्मा ऐसा मालूम होताहै औ जीव संकल्प विकल्प में सामिल ना रहै तो दूसरा परमात्मा मिथ्याभूत। भला प्रत्यक्ष आँख से देखना सोई परमात्मा ऐसा मानिये तो अग्नी की कला, जाग्रत अवस्था, हंकारका स्वभाव, जीव संयुक्त मालूम होता है अगर जीव देह अभिमान में सामिल न होय तो प्रत्यक्ष जेता देखने में आता है सो सब जड औ नास्ती। जीव जाग्रत में सामिल न होय तो प्रत्यक्ष कछु माल नहीं मिथ्याभूत । तो ब्रह्म का सिद्धांत अब कैसा मानिये। ब्रह्म मिथ्या जीव का अनुमान, जीव बिना कछु सिद्ध होता नहीं। तो जीव सत्य औ ब्रह्म आदि अनुमान मिथ्या। भला तो जीव बडा ठहरा। औ वेदं श्रुती कहती है कि ब्रह्म बडा सब का अधिष्ठान औ जीव ना कछु अज्ञान बश। ये शंका। तो गुरू कहते

है कि वेद बडा की जिन उपजाया। अरे वेद तो कछु आकाश से गिर नहीं परे । और निर्जीवसे कहीं वेद औ बानी पैदा होती है । तो तू विचार करके देख कि वेद औ नाना बानी कहां से पैदा भई औ किनने बनाई सो तुम जानो कि बानी बनाना ये कछु निर्जीवका धर्म नहीं । जीव ही से बानी बनी औ जीव ही बानी बांचता है औ जीवही बानी का विचार कहता है औ ब्रह्म को मानता है अपरोक्ष वा परोक्ष बानी के अधार से सो बानी जीव की कल्पना, तो जीव सत्य औ कल्पना असत्य नास्ती । भला बानी तो जीव की कल्पना परंतु सब बडे बडे समर्थ सनकादिकनने माना, जो आप न मानना तो दोष तो नहीं होने का । ये शंका । ये मन बडा कि जेहि मन माना ये मनुष्य सब ते बडा, जिसने सब को माना ब्रह्म आत्मा ईश्वर आदि । जो जीव न माने तो मानंदी ब्रह्म आत्मा ईश्वर कछु माल नहीं, तो मानंदी मिथ्या कल्पना औ माननेवाला सच्चा । ये अर्थ । भला ! राम सर्व हर्ता, कर्ता, सर्वाधिष्ठान, ऐसा सब का प्रमाण है बडे बडे अनुभाविक लोगों का इसको कैसे न मानना । ये शंका । तो राम सच्चिदानद बडा कि जाने सच्चिदानंद ऐसा जाना सो जीव बडा । अरे जो सच्चिदानदका जाननेवाला जीव न होय तो सच्चिदानंद औ राम कछु वस्तु नहीं । ये अर्थ । भ्रमि भ्रमि कबिरा फिरे उदास तीर्थ बडा की तीर्थ का दास । अरे भ्रमिभ्रमि जीव उदास, होय के गंगादि तीर्थन की स्थापना करता फिरता है औ आप दास बनता है । परंतु तीर्थ का दास होय न होय तो तीर्थ कछु माल नहीं, जिस नदी को सब जीव मिल के स्थापना करैं औ जाय सोई महातीर्थ । औ गंगादिक कोई नहीं माने औ कोई न जाय तो जैसे सबनदी तैसी गंगा । ये अर्थ ॥ ११३॥

शब्द ११३.

झूठेहि जनि पतियाउ हो । सुनु संत सुजाना ॥
तेरे घटहीमें ठगपूर है । मति खोवहु अपाना ॥
झूठेकी मंडान है । धरती असमाना ॥
दशहुँ दिशा वाकी फंद है । जीव घेरे आना ॥
योग जप तप संयमा । तीरथ व्रत दाना ॥
नौधा वेद कितेब है । झूठेका बाना ॥
काहू के बचनहि फुरे । काहु करमाती ॥
मान बडाई ले रहे । हिंदू तुरक जाती ॥
बात बंवते अस्मानकी । मूरति निथरानी ॥
बहुत खुदी दिल राखते । बूडे बिनु पानी ॥
कहहिंकबीर कासों कहौं । सकलो जग अंधा ॥
सांचेसे भागा फिरे । झूटेका बंदा ॥ ११३ ॥

टीका गुरुमुख—झूठे जनि पतियाउ हो,सुनु संत सुजाना । हे सुजान, हे संत,झूठा बास कल्पना ताको मत पतियाव । जो कछु बानी का भास है औ लक्ष का भास है ब्रह्म ताको मत प्रतीत करो, वो झूठा धोखा जग को कारण । हे जीव तुम सुनो, सुज्ञान को प्राप्त होके पारख में शांत हो सुज्ञान कहिये शुद्ध ज्ञान, जाके जाननेमें कछु कसर न ठहरे सो शुद्ध ज्ञान औ सब तत्वमसी आदि कसर परखके पारखमें शांत भया फिर कधी उस में कल्पना औ अनुमान उदगार ना होय सो संत । ये अर्थ । सो गुरु जीव से कहते हैं कि तेरे घटहीमें ठगपूर है । जा को ब्रह्म औ आत्मा औ ईश्वर ऐसा वेद गावता है सो त्रिविध धोखा । ता धोखे में तुम अपने को मत खोवो तुम सुजानशुद्ध चैतन्य हो ताते शुद्ध पारख को प्राप्त हो के शांत हो । ये अर्थ । झूठे

की मंडान है धरती असमाना । धरती कहिये अर्ध तरे औ असमान कहिये ऊर्ध ऊपर, सो कोई कहते हैं योगी कि ब्रह्म तरे सबमें भरा है औ कोई कहतेहैं कर्मिक उपासक नैयायिक कि परमात्मा ऊपर सब से न्यारा है। औ कोई बेदांती कहते हैं कि संपूर्ण जगत आतमारूप है अर्ध ऊर्द्ध भेद शून्य नहीं । जैसा पृथिवी का बिकार घट कुंभादिक पृथिवी ही है औ आकाश का रूप घट मठ पटाकाशादि सब आकाश ही है तद्वत जगत औ ब्रह्मांड सम्पूर्ण ब्रह्म ही है, नाम रूप उपाधी मिथ्या भ्रम । इस प्रकार से ज्ञानी बिज्ञानिन का सिद्धांत है सो भी जीव का धोखा, तू अच्छा परखके देख । भला जो जीव न होय तो ये सिद्धांत कौन करे । सो तू देख कि जो जो जीव को भास हुवा सो सो सब जीवने निश्चय किया औ उसी की अधिकाई बर्ण की । अपने को भूला बिना पारख सो पारख को तू प्राप्त हो औ भास अध्यासादि बन्धन जान के तोर डार, पारख तेरा रूप है पारख के ऊपर कछु नहीं । औ दशों दिशा बाकी फँद है जीव घेरे आना । दशों दिशा कहिये चार वेद छौ शास्त्र सो सम्पूर्ण धोखे की फंद है जा धोखेसे आप अपन को भूला । औ कहा कि, मैं आत्मा दशों दिशा चराचर पूर्ण हों, इस प्रकार से जीव भ्रमचक्र में परके गाफील हुवा ।जो गाफिली आदि में खडी हुई सोई गाफिली अंतमें स्थिति ठहरी।येअर्थ। योग जप तप संयम तीरथ ब्रत दाना, नौधा बेद किताब है झूठे का बाना कैसे भ्रमचक्र में परा सो सुनो, प्रथम तो कोई कर्ता दूसरा है ऐसी कल्पना की । नैयायिक मत फिर उस कर्ता की प्राप्ती की इच्छा की ताते नाना कर्मन की कल्पना बढी । कहीं कहा कि योग किये बिना ईश्वर की प्राप्ति नहीं ताते नाना हठयोग राजयोग पातंजल मत कल्पित किया औ उस पर आरूढ हुवा और किसी ने उपासना कल्पित की ईश्वर का नाम ध्यान आराधने लगा, नाना प्रकार के

यज्ञ करने लगा अश्वमधे नरमेध गोमेध आदिक यज्ञ करने लगे औ कोई नाना प्रकार के मंत्रन का जाप करने लगे औ कोई तपस्या करने लगे पंचाग्नी साधने लगे । दूध अहार, फल अहार, तृण अहार, चान्द्रायणादि व्रत आचरण करने लगे । औ कोई संयम प्राणायाम प्रत्याहारादिक कर्म आचरण करने लगे । औ कोई गंगादिक तीर्थ आचरण करने लगे । औ व्रत चान्द्रायणादि औ दान गोदानादि औ नौधा भक्ति, येतिक कल्पना औ बेद किताब आदि बानी ये सब, झूठे का बाना, कल्पना के हेतु उठाय लिया ये सब धोखेका बाना । ये जीव तो स्वतः आप ही है तो इस को योग जप तप आदिक कर्म काहेको चाहिये तो भ्रमवश मिथ्या धोखे के हेत । ये अर्थ । काहू के बचनहि फुरे, काहू करामाती । जो ऐसा कोई कहेगा कि योग क्रियादि करे से काहू को बचन सिद्धि औ काहूको करामात मंत्र सिद्धी होती है सो मानना कैसा नहीं । तो बहुत दिन मनको एकाग्रताई किया उन्मनी आदि ध्यान, ताते बचन सिद्धि औ करामात हुई ताते जगत में मान बड़ाई हुई परन्तु जब चोला छूटा तब सबहीं नाश हो गई कछु पारख स्थिति नहीं प्राप्त भई तो सब मिथ्या धोखा । ये अर्थ, अरे बात बेबतें आसमान की मुदति । नियरानी बातें तो बहुत बहुत अस्मान की करते हैं कि हम सिद्ध, हम करामाती, हम कर्मिष्ठ, हम धनपात्र, जो चाहैं सो करैं । परंतु इनके ऐश्वर्य की मुदत नजदीक आई मौत आई जब मरेंगे तब सबही छूट जायगा आखिर चौरासी को प्राप्त होवेंगे । बहुत खुदी दिल राखते बूड़े बिनु पानी । खुदी कहिये बासना आशा बहुत प्रकार की बासना करके आशा करते थे सो बिनु पानी धोखे में बूड़े । पानी कहिये बानी, सो नाना प्रकारकी बानी औ सिद्धांत किया परंतु आखिर सब मिथ्या कहके अनिर्वाच्य धोखे में बूडे औ अनेक योनी गर्भबास में आया बिना पारख ।

ये अर्थ । कहिहिं कबीर कासो कहौं,सकलो जग अन्धा । गुरू कहते हैं कि ये सब संसार बिनु पारख अन्धा है इनको कछु सूझ परता नहीं । अरे कहो तुमको जीव से और कोई नजर आता है जो नजर नहीं आता तो खाविंद ब्रह्म कासो कहो। अरे सच्चा,जो जीव है तासे भागते फिरते हो औ झूठा धोखा जो वेदने औ गुरुवा लोगोंने बांधा है सो उनके बश होयके झूठ धोखे के बंधुवा हो रहे हो बिना पारख बोलते हैं कि हम राम के बंदे खुदा के बंदे ऐसा आसक्त हो रहे हो । ये अर्थ ॥ ११३ ॥

शब्द ११४.

सार शब्द से बांचि हो । मानहु इतबारा हो ॥
आदि पुरुष एक वृक्ष है । निरंजन डारा हो ॥
त्रिदेवा शाखा भये । पत्र संसारा हो ॥
ब्रह्मा वेद सही किया । शिव योग पसारा हो ॥
विष्णु माया उत्पत किया । ईउरले व्यौहारा हो ॥
तीनि लोक दशहूँ दिशा । यम रोकिन द्वारा हो ॥
कीर भये सब जीयरा । लिये विष का चारा हो ॥
ज्योति स्वरूपी हाकिमा । जिन अमल पसारा हो ॥
कर्मकी बंसी लाय के । पकरयो जग सारा हो ॥
अमल मिटावो तासु का । पठवों भव पारा हो ॥
कहहिं कबीर निर्भय करों । परखो टकसारा हो ॥ ११४॥

टीका गुरुमुख—सार शब्दसे बांचिहो,मानहु इतबारा हो । गुरु कहते हैं कि हे जीव सार शब्दसे बांचिहो, सार शब्दका बिचार करे से भ्रम धोखकी फांससे बचोगे।भ्रम धोखा कहिये तत्त्वमसी,जा धोके के प्रताप से जीव जगदाकार आत्मा बन रहे हैं सो त्वं पद कहिये काल

तत्पद कहिये संधी असिपद कहिये झांई ये त्रिविधी जाल, अज्ञान ज्ञान औ विज्ञान, सो तीनों जाल जाते निरुवारा होय औ पारख की प्राप्तीहोय ताको सार शब्द कहिये । सो सार शब्द से जीव का निरुवारा होता है स्थिति होती है । ये अर्थ। आदि पुरुष एक वृक्ष है, निरंजन डारा हो । अब गुरु आरंभ बताते हैं। आदि में जो पुरुष था सोई आदि पुरुष पक्केतत्व धीरज आदि तत्व की देह सोई वृक्ष औ एक कहिये जीव सो जीवने अपने पक्के रूप को देखा औ बहुत खुशी हुवा ताते पक्के देह में से आनंद उठा । जाको वेद ने सर्वोत्कृष्ट आनंद सच्चिदानंद असि पदार्थ निरं-जन ऐसा गाया सो पक्के देह से फूटा ताको डार कहिये । औ देव त्रय ता डार से पैदा भये ताते शाखा भये । वृक्ष पक्का तासे आनंद उठा सो आनंद से जीव भूला औ आप आनंद रूपी हो गया तब पक्की देह की बिस्मृति भई औ आनंद में से स्फुर्ण हुवा तब सब तत्व प्रकृती पलट गई औ कची देह हो गई तब विस्मृती आई औ अपनी देह देखी । तो जैसी थी वैसी अबेव सहित देखी तब इच्छा पैदा भई सो ता इच्छा का रूप बना सोई नारी । ता नारी से पुत्र तीन ब्रह्मा विष्णु महेश पैदा भये फिर उन से नाना बानी नाना कल्पना सहित ये जगत पैदा भया । इस प्रकार से पेड़ पक्का औ आनंद डार औ त्रिदेवा शाखा औ पत्र संसार । ये अर्थ । अब परिणाम अर्थ सुनो कि आदि पुरुष कहिये मनुष्य सो मनुष्य से अनुमान खड़ा भया ब्रह्म निरंजन, और मनुष्य बिना निरंजन ब्रह्म ऐसा कल्पनेवाला कौन है। सो मनुष्यही ने ब्रह्म कल्पा औ तासे ब्रह्मा विष्णु महेश की उत्पत्ती बताई औ ब्रह्मा विष्णु महेश से जगत की उत्पत्ती स्थिति लय बताई सो तुम विचार करो कि ब्रह्म है, ना कोऊ, सब मनुष्यकी कल्पना, आपही ने कल्पि कल्पि सब बानी बनाई। अब जिनने वेद सही किया सोई मनुष्य का नाम ब्रह्मा, औ जिनने योग पसारा सोई मनुष्य का नाम

शिव, औ जिनने नाना प्रकार की उपासना भक्ती उत्पत्ति की सोई मानुष का नाम विष्णु सो ये सब उरला व्यौहार है । उरला व्यौहार कहिये ऐली तरफ का व्यौहार कछु पक्की देह से नहीं । ये अर्थ । तीन लोक दशहूं दिशा, यम रोकिन द्वारा हो । तीन लोक कहिये त्रिकुटी ब्रह्मा का लोक, कंठ विष्णु का लोक औ हृदय शिव का लोक ये तीन लोक; दश दिशा दश इंद्री, यम कहिये साधन, सो साधन करने लगे ।जो त्रिकुटी औ श्रीहाट औ गोलहाट ये तीन लोक में पवन रोकी औ दशों द्वार से काया कसी याको नाम यम । कीर भये सब जीयरा लिये बिष का चारा हो कीर कहिये तोते को, जो जीव सब तोता बने औ नलिका यंत्र न्याय फंदे । स्वर्ग आदिक मानी विषय औ धन धान्यादि पुत्र पौत्रादि विषय औ अणिमादि सिद्धि मुक्ती आदि विषय की लालच लगाई सो लालच के मारे जीव सब बंधन में परे। जैसे चारेके लालच से आय के तोता नलिका पर बैठता है औ मज-बूत पकडा कि पांव ऊपर शिर तरे भया औ फँसा । तद्वत् जीव सब फल आशा देख के बहु बानिनमें फसे । ये अर्थ । औ ज्योति स्वरूपी हाकिमा, जिन्ह अमल पसारा हो । ज्योति स्वरूपी कहिये माया, माया स्वरूपी गुरुवा सोई हाकिम बने, संसार में हुकुम इटावने लगे । औ नाना प्रकार का सब अमल पसारा बेदादिक बानी सब कपल्ना पसारी । औ नाना प्रकार के कर्मन की फांसी लगाय के सब जग बंध किया । ताते गुरु कहते हैं कि बेद औ बानी आदि जेता गुरुवा लोगन का अमल है सो सब जीवको बंधन है सो ताको परख के मेटो।औ तुम्हारे को भव पार करता हौं, भौ कहिये आत्मा महाप्रलय कालके समुद्र सरीखा, जैसे का तैसे असि पदार्थ, ताके पार कहिये पारख भूमिका जापर ठहरने से तीनों परखने में आते हैं जगत भाव, ब्रह्मभाव, आत्मभाव । सो पारख पर तेरे को पठावत,

हों प्राप्त कराता हों । ये अर्थ । कहहिं कबीर तोहि निरभय करों, परखो टकसारा हो । गुरु कहते हैं कि देखो सब मिथ्या धोखे को परखो , तेरे को पारखरूप निर्भय करों । परखो टकसारा, टक - सारा कहिये जहां सब बानी औ अनिर्वचनी औ जैसे का तैसा सब की कसर परखने में आवै, जहां सब की पारख होय सो टकसार बीजक । बीजक का बिचार अक्षर अक्षर का करे तब पारख भूमिका को जीव प्राप्त होता है, रहित होता है, ऐसा गुरु बोलते हैं॥ ११४॥

शब्द ११५.

संतो ऐसी भूल जगमांही । जाते जीव मिथ्या में जाही ॥
पहिले भूले ब्रह्म अखंडित । झाँई आपुहि मानी ॥
झाँई में भूलत इच्छा कीन्हीं । इच्छाते अभिमानी ॥
अभिमानी कर्ता है बैठे । नाना ग्रंथ चलाया ॥
वोहि भूल में सब जग भूला । भूलका मर्म न पाया ॥
लख चौरासी भूलते कहिये । भूलते जग बिट लाया ॥
जो है सनातन सोई भूला । अब सो भूलहि खाया ॥
भूल मिटै गुरु मिलै पारखी । पारख देहिं लखाई ॥
कहहिं कबीर भूलकीऔषद । पारख सबकीभाई ॥ ११५ ॥

टीका गुरुमुख—संतो ऐसी भूल जगमांही, जाते जीव मिथ्यामें जाही । गुरु कहते हैं कि हे संतो जैसी भूल जगत में परी ताको प्रभाव सुनो । प्रथमारंभ में जीव पक्के रूप में था, पक्के तरर, पक्की भूमिका तब अपने रूप को देखा औ बहुत प्रसन्न हुवा। ता प्रसन्नताई में आ- नंद उठा सो हंस को आनंद में अपनी देह की विस्मृती हुई औ परम आनंद होय के आनंदी आनंद रूप होगया. ता आनंद को सबने ब्रह्म अधिष्ठान कहा । भला ताहि आनंद में हंसा मिलत ही तत्व प्रकृती

तब पलटी स्फुर्ती हुई तब पक्के का कच्चा हुवा। परंतु हंस को कछु खबर नहीं जो मैं पहिले पक्का था औ अब कच्चा हुआ ऐसी फहम न रही जैसा अकार था तैसा अकार हुवा। तब कच्चे तत्वन के सुभावसे मूर्च्छा अनेक प्रकार की हुई। ताते अनेक प्रकार के रूप धारण करके आप ही खडा हो गया जाको वेद ने कहा एकोहं बहुस्याम्। भला जब पक्के का कच्चा हुवा औ आपको तो खबर नहीं फिर किनने जाना कि पक्के का कच्चा हुवा। शंका। तो पारख ने जाना। भला पारख क्या निरुपाधी, कि सहउपाधी, उपाधीबिना जाना नहीं जाता। ये शंका। तो पारख निरुपाधी भूमिका सही, परंतु कछु जड नहीं औ जानना ऐसी उपाधी भी नहीं परंतु जो कोई जीव उसपर आया ताको संपूर्ण कल्पना आदि गाफिली अनुमान परखाय देना ये उस भूमिका स्वभावही है। ताते जो कोई जीव पारख पर आया ताने सब जाना औ सब बताया। जाते सब परखने में आवै सो पारख। सो जगत में जब नाना प्रकार का दुख पाया जीव ने तब कहता है कि मेरे को सुख होना औ नहीं होता दुखही होता है। जीव चाहता है कि मेरे को धन हो, धान्य हो, पुत्र हो, अच्छी स्त्री हो, देह सुखी रहै औ कदहीं मरना न हो, परंतु ये सब उलटा होता है जो जीव चाहता है सो होता नहीं ताते दुखित हुवा। औ घबराया कि आपन लाचार, अपने से कछु हो सक्ता नहीं, अपना कर्ता कोई दूसरा है जिनने अपनेको पैदा किया, वह चाहे सो करे। ता कर्ता के हत नानाप्रकार की कल्पना बढी औ छौ शास्त्र पैदा भये सो उनका मत न्यारा न्यारा पीछे वर्णन किया है। औ अब चारबाक का मत निराकरण होता है सो सुनो। कोई आचार्य बोलते हैं कि बिंद ब्रह्म। बिंद से काया उत्पन्न होती है औ बिंद के आधार से काया चलती है ताते वीर्य ब्रह्मादि व्यजानात्। तब दूसरा वाक्य बोलता है कि वीर्य

तो देह से पैदा होताहै, देह बिना वीर्यको अधिष्ठान क्या है । अरे आदिमें भी नहीं, अंतमें भी नहीं, जब देह तरुण भया तब देहका रस जमा भया औ देह वृद्ध भया तब वीर्य सूख गया । ताते बीचमें पैदा भया औ बीच में गया वो कछु मालिक नहीं सब का मालिक देह है । देखो देहसे ज्ञान होता है औ देह से बानी बनतीहै औ देहसे देह पैदा होतीहै औ देहसे ब्रह्म ईश्वर जीव तीन प्रकारकी कल्पना पैदा होती है, तो ब्रह्म ईश्वर औ जीव ये मिथ्या औ देह सत्य । तीर्थ व्रत पूजा योग कर्म सब देहसे पैदा होतेहैं औ देह देखनेमें आती है औ कछु देखने में नहीं आता ताते देह सत्य और सब मिथ्या धोखा । देहके गये फिर कछु देह होती नहीं, जैसे वृक्ष से पत्ता झड परा फिर वृक्ष को नहीं लगता तद्वत देहके गयेते फिर देह नहीं सब सिद्धांत मिथ्या । तो भला सब सिद्धांत मिथ्या परंतु जब चैतन्य देह छोड देता है तब ये देह तो बना रहताहै फिर नाना प्रकारकी चतुराई औ बानी क्यों नहीं बोलता । जो देह सत्य है तो नाश क्यों होती है । भला तू कहेगा कि जीव क्या वस्तुहै औ देह छोडके गया सो किसने देखा, जो किसीने देखा नहीं तो जराया गाडा क्यों और सब कुटुंब बाहर क्यों डार आये । तो जीव तुमने देखा था परंतु अज्ञान दशा से मैं देह ऐसा मानते हो तो ये देह के अध्यास से और देह पावोगे, जो जानके नहीं जानता ऐसा बोलै ताको अज्ञान कहिये तब तीसरा वाक्य बोलता है कि काहे का जीव औ कौन देह पाता है, अरे ये तो पांच तत्व की मोट है । जहां पांच तत्व इकट्ठे भये तहां जीव नाम पाया औ पांच तत्व छूटे फिर कहां जीव है औ काहे का जीव है कहीं पांच तत्व से न्यारा जीव देखने में भी नहीं आया औ मालुमभी नहीं होताहै ताते सब के मालिक पांच तत्व, देह पांच तत्वन की ।

पांच तत्व मिले तामें नाना रूप मालूम भये औ पांच तत्व न्यारे न्यारे भये फिर ना देह है न जीव है। तो पांच तत्व अनादि हैं। संयोग पाय के बहुत रूप पैदा होते हैं औ बियोग पाय के नाश होते हैं, ना कोई आता है ना कोई जाता है सब मिथ्या। बानी बोधसे संशय होताहै उसके पीछे भ्रमना नहीं, शब्द का काम इतना है जो कहना सुनना औ शब्द से कछु नहीं सब मिथ्या। भला ये तत्व तो अनादि हुये परंतु तत्व क्या जड हैं कि चैतन्य हैं। जो कहोगे कि तत्व चैतन्य हैं तो मौत न होना औ जब मारताहै तब तत्व तो पांचो नजर आतेहैं परंतु चैतन्य नहीं दिखाता तब कहतेहैं कि मरगया। जो कहोगे कि पांच तत्व कौन सो सुनो। मांस पृथिवी तत्व औ पानी जो देह में रहताहै सो जल तत्व, पित्त अग्नी तत्व, जासे मुरदा फूलताहै सो वायू तत्व, औ शून्य आकाश तत्व, ये पांच तत्व हैं परंतु चैतन्य यहां नहीं ताते पांच तत्व जड कछु चैतन्य नहीं चैतन्य कोई और है जो पांच तत्व चैतन्य होते तो झाड पहाड चलते फिरते औ दुख सुख मानते। ताते पांचो तत्व जड,तो इनमें क्या सत्ता है जो संयोग करना औ नाना विचित्र अनेक तरह के रूप जड सो कैसे पैदा हो गये, जडमें येतिक चतुराई काहे की ताते चैतन्य कोई और है जो पांच तत्व, पचीस प्रकृती, दश इंद्री, बिषय पंचक, अंतःकरण पंचक ये सबको जानता है ताको चैतन्य कहिये। जो देह सहित तत्व को जानता है सो कछु देह औ तत्व नहीं। जैसा घर औ घर के सरंजामको जाननेवाला कछु घर सरंजाम नहीं तद्वत्। ये अर्थ। तब चौथा चारवाक बोलता है अरे ये सब मिथ्या कल्पना। अरे तत्व औ चैतन्य दोनोंका अधिष्ठान तो किसीने जानाही नहीं तो तत्व औ चैतन्य दोनोंका अधिष्ठान शून्य है। देखो जब नींद लगती है तब तत्व औ चैतन्य कहां हैं सब शून्य में समाय गये औ फिर शून्य से ही प्रगट

होते हैं, ताते सब का अधिष्ठान शून्य है,शून्य बिना कछु और नहीं नेति नेति करके श्रुति रह गई सो भी शून्य और श्रवण मनन निदि-ध्यास साक्षात्कार करके रहि गया सो भी शून्य । चोला छूटा बाकी रहा सो भी शून्य । औ योगधारना करके लय हुवा सो भी शून्य । नित्यानित्य करके रहिगया सो भी शून्य । बोलते बोलते चुप हो गया सो भी शून्य । रहित भया सो भी शून्य जानिये ।शून्य ते न अधिक और न आनिये चौपाई—शून्य आवै शून्यै जाई । शून्य शून्य में रहा समाई ॥ ताते सर्व शून्यै जान । शून्य बिना नहीं दूसर मान॥ ॥ १ ॥ इस प्रकार से जीव मिथ्या में जाई । और शून्य शून्य कहता है सो कौन है, शून्यका जाननेवाला कछु शून्य नहीं । देखो जब सुषोप्ती होती है औ शून्य हो जाता है तब हाक मारे जवाब देता है जो चैतन्य शून्य हो जाता तो जवाब न देता । ताते शून्य मिथ्या जड औ जनइया जीव सच्चा परंतु ये जीव को शून्यहि बंधन है । जबलग शून्य को परखके न्यारा न होयगा तबलग आवागवन से रहित नहीं होने का । ये अर्थ । पहिले भूले ब्रह्म अखंडित, झांई आपुही मानी । जो हंसने अपने रूप को देखा औ खुशी हुवा सोई भूला औ झांई खडी हुई आनंद खडा हुवा । ता आनंद में गरगाफ हुवा हंस, फिर वो स्फुर्ती हुई औ ब्रह्मरूप होय गया। ता झांई के प्रताप ते ब्रह्म रूप में हंस आया तब इच्छा खडी भई ता इच्छा से जगत सब निर्माण भया।जैसी जैसी इच्छा उठी तैसी तैसी खानी पैदा हुई ताते आप जगत अभिमानी हुवा। औ नाना प्रकार की कल्पना करके बहुत बानी ग्रंथ बनाया वेद शास्त्र बनाया; वही भूल झांई तामें सब जगत भूला सो कोई जीव कहाया, कोई ब्रह्म कहाया, औ कोई आत्मा कहाया, परंतु भूलका भेद काहू नहीं पाया । जो बिंद कहाते हैं सो भी भूल

औ कोई देह कहते हैं सो भी भूल औ कोई तत्व कहते हैं सो भी भूल औ शून्य कहते हैं सो भी भूल औ ब्रह्म कहते हैं सो भी भूल औ आत्मा कहते हैं सो भी भूल सोई भूल से चौरासी खडी भई बिटंबना सब जगत की भूलही से भई । अरे जो सनातन जीव था सोई भूला अब सोई भूल सब को खाती है, ऐसी भूल कैसे मिटेगी । भूल मिटै गुरु मिलै पारखी । जो पारखी गुरु मिले तो भूल सब मिट जाय । जासे सब भूल मिटै ताहि को पारख कहिये । सो पारखी गुरू मिलै तो पारख भूमिका बताय देवै, तब जीव भी पारखरूप, औ गुरू भी पारखरूप, जगत ब्रह्म औ कल्पना अनुमान कछु रहा नहीं । ताते सब भूल की औषध पारख है । जा भूमिका लेके गुरू सब परखावते हैं सोई भूमिका लेके शिष्य सब परखते हैं तब दो भाव जाके शुद्ध पारख रहता है । ये अर्थ ॥ ११५ ॥

इति शब्द बुझारथ टीका सहित गुरुकी दयासे संपूर्ण ।

वक्तव्य।

दया गुरुकी–प्रथमारंभ में गुरु रमैनी बोले। रमैनी का अर्थ– ऐनी कहिये जीव, जाकी ऐन सब बेद औ नाना प्रकार की बानी बनी, तामें नाना प्रकार के सिद्धांत अनुमान अध्यासादि खडे भये, ता ऐनमें ऐनी रम गया सोई रमैनी; ऐसा शब्द कहिके गुरुने परखाया। ऐन कहिये जीवकी कल्पना, अनुमान, अध्यास, चारा बेद, छौ शास्त्र, तत्वमसी आदि; तामें जीव ऐनी बँध हुवा ताको गुरुने परखाया। प्रथम पंच वस्तु, अंतर ज्योति शब्द एक नारी। अंतर मन जो कुछ मानंदी हुवा देहका बजन सोई मन। मन कहिये, नाम कहिये, ब्रह्म कहिये जो चालिस प्रकृति एकठी भई औ परम उत्कृष्ट आनंद भया तासे जो स्फुर्ती भई सो माया औ मनका आकार आया सो माया। माया कहिये, काया कहिये, रूप कहिये। तिसरी वस्तु शब्द, जो मन माया संयुक्त ॐकार आदि चौंतिस अक्षर उठे सो शब्द। चौथी बस्तु नारी, जो वो अक्षर लेके और नाना प्रकार की बानी बनी जासे कल्पना अध्यास सब सिद्ध भये। नारी कहिये, बानी कहिये, स्त्री कहिये, जो मन माया करके इच्छा उठी विषय भोग के हेत तासे निर्मान भई सो स्त्री। पंचई वस्तु एक कहिये जीव को, जो ये चार पदार्थ का जाननेवाला है जासे चारों पदार्थ फुरे औ भासे सोई जीव ऐनी, औ चारों वस्तु उसकी ऐन तामें आपु रमगया सो रमैनी ये अर्थ। अन्तर औ ज्योती अनन्यभाव, जोअन्तर नाम औ ज्योतीरूप येही समिष्टी कहिये औ शब्द नारी एक भाव, जो शब्द कहिये नाम नारी कहिये रूप या शब्द कहिये कोई दूसरा ब्रह्म औ नारी कहिये जो देखनेमें आया जगत। शब्द कहिये जो देखनेमें न आवै श्रवण गोचर

होय सोई ब्रह्म औ नारी कहिये जो देखने में आवै नेत्रगोचर होय सोई जगत । तैसा अन्तर कहिये जासे जीवका पद अन्तर गया । अन्तर कहिये मन औ अन्तर कहिये ब्रह्म जो देखने में न आवै । औ ज्योती कहिये माया ज्योति कहिये काया, जो देखने में आवै । अन्तर कहिये जो देखने में न आवै औ जामें जीव भूले औ माया ज्योती कहिये जो देखनेमें आवै औ जामें जीव आसक्त होय । सो ये चार वस्तु जीव को बंधन हुई याहीमें जीव भूला ताते आवागवन में नाना दुख पावता है ताते गुरु चारों मुखसे चारों वस्तु परखाते हैं । सो प्रथम रमैनी में अन्तरज्योती परखाई औ शब्द नारी रही सो शब्दमें परखाई अब आगे पंचम वस्तु को परखावेंगे । शब्द कहिये अब्द कहिये, आवाज कहिये शून्य । सो शून्य से जो आवाज उठे सो शब्द । शब्द कहिये, शून्य कहिये, आकाश कहिये, ब्रह्म कहिये।अब्द कहिये कल्पना कहिये, बानी कहिये, माया कहिये ये छा वस्तु में जीव बन्ध है ताते गुरु परखायके छुडाते हैं सोई शब्द संतो भक्ति सतोगुर आनी । संतो कहिये जीवको सो जीवसे गुरु कहतेहैं कि भक्ति सतोगुरु आनी । भक्ति कहिये, कल्पना कहिये, बानी कहिये सो ब्रह्मने आनी कहां से आनी, आकाश में शून्य होके मन उन्मुन करके ब्रह्म अनुभव सिद्ध किया । तासे संपूर्ण कल्पना आनी सोई सब जीवने मानी औ धोखेमें परे । ये अर्थ । सब अन्तर ज्योतीका जाल रमैनी में परखाया औ शब्द नारीका जाल शब्द में परखाया अब आगे अक्षर जाल परखनेके वास्ते ज्ञान चौतीसा बोलतेहैं ।

सोरठा—सुख निधान सुख रूप, साहेब सत्त कबीर जो ।
झांई संधी को रूप, परखावत निज परखते ॥ १ ॥

इति रमैनी तथाशब्दका वक्तव्य गुरुकी दयासे संपूर्ण ।

वक्तव्य संपूर्ण ।

दया गुरुकी।

॥अथ ज्ञान चौंतीसा लिख्यते॥
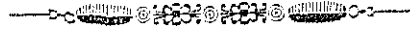
ॐकार आदि जो जाने। लिखके मेटै ताहि सो मानै॥
ॐकार कहैं सब कोई। जिन्हयहलखासोबिरला होई॥

टीका गुरुमुख-जो ॐकार को जान ने वाला सोई ॐकार की आदि। तो जानने वाला अस्ती औ जानने में आया सो नास्ती। जो ॐकार को जानने वाला सो हंस अस्ती औ जो जानने में आया ॐकार ब्रह्म सो नास्ती। जोॐकार को लिखैं औ फिर मेट डारै ताही को सांच जीव ऐसा मानैं। ये अर्थ। ॐकार कहिये पिंडांड औ ॐकार कहिये ब्रह्मांड, केहि तरह से सो सुनो। मस्तक सोई बिंदु निर्बिकार, नाभी सोई बिकार अर्धमात्रा, हृदय सोई मकार कुण्डली, कंठ सोई उकार दंडक, त्रिकुटी सोई अकार तारक। इस प्रकार से पंच मात्रा ॐकार जीवन ने अनुमान किया पिंडांड में, ये संपूर्ण नाश मान मिथ्या औ जीव सत्य। ये स्थूल मात्रा हुई अब सूक्ष्म मात्रा पिंड की सुनो। प्रथम जब शून्य स्वभाव रहता है तब शब्द बिंदुरूप स्थान ब्रह्मांड; ताको निर्बिकल्प निरामय ब्रह्म बोलते हैं। फिर वहां से स्फुर्ति होती है सोई सहबिकल्प अर्धमात्रा तुरिया, ताको अव्यक्त सब ल ब्रह्म कहते हैं। तब शब्द नाभी स्थान में विकार रूप रहता है तब चित्त चतुष्टय उदय होता है। सो चित से अनुसंधान उठता है औ बुद्धि निश्चय करती है तब बुद्धि बोधव्य स्वरूप महातत्व कहलाता है वही कोई कूटस्थ कहता है। तब शब्द कुंडली शून्य स्वरूप मकार होके हृदय में आता है तब मन उद्वेग से संकल्प होता है। शब्द

कंठ स्थान में उकार रूप रहता है दंडक होता है। तहां पांच कला निर्मान होतीहैं शब्द स्पर्श रूप रस गंध, याका सूक्ष्म देह बनता है। औ नाना संकल्प बिकल्प होता है औ फिर त्रिकुटी पर आय के अकार रूपी शब्द होता है। ऐसा पंच मात्रा मिल के स्थूल ॐकार बनता है फिर अहंकार लेके फूटता है सो बैखरी में आकार चौतीसा कला धरता है। ॐकार सोई ब्रह्म औ चौतीस अक्षर सोई माया, ॐकार कारण औ चौतीस अक्षर कार्य जीव कर्ता। ये अर्थ। अब अक्षर की उत्पत्ती सुनो। कंठ अक्षर छै क ख ग घ ङ य। तालू अक्षर छै ट ठ ड ढ ण क्ष। दंताली अक्षर आठ च छ ज झ र ळ स श। दांती अक्षर छै त थ द ध न ब। शून्य अक्षर तीन ज ह य। ओंठ अक्षर पांच प फ ब भ म। इस प्रकारसे एक ॐकारसे चौतीस भये, तामें पांच मात्रा मिली याते एक एक के बारह बारह अक्षर भये।इस प्रकार से चार से आठ अक्षर भये तामें पंच मात्रा मिली सोई जगत जाल ॐकार ब्रह्मरूपी खडा भया अकार सम्बन्धी ६८, उकार सम्बन्धी ६८, मकार सम्बन्धी १३६, इकार सम्बन्धी ६८, बिंदु सम्बन्धी ६८, ऐसे चार सौ आठ मात्रा भई। फिर ठौर ठौर की मात्रा मिलाय के नाना बानी बनी और जो जो कल्पना भीतर थी सो सब लिखी गई। तामें तीन लिंग बने स्त्री लिंग पुरुष लिंग औ नपुंसक लिंग। अकार बिंदु युक्त लिंग पुरुष लिंग उकार मकार युक्त लिंग नपुंसक लिंग इकार युक्त लिंग स्त्री लिंग, ऐसे तीन लिंग बनाय के फिर नाना अर्थ औ मंत्र बने। सब में पंच मात्रा मिली औ कामना बडी जगत की। अकार रजोगुण पीत रंग उकार सतोगुण स्वेत रंग, मकार तमोगुण रक्त वर्ण, इकार शुद्ध सतोगुण सुनील रंग, बिंदु श्याम वर्ण निर्गुण ब्रह्म आकाशवत् ये अर्थ

अब ब्रह्मांड का स्वरूप सुनो। पृथिवी सोई अकार, जल सोई उकार, अग्नि सोई मकार, वायु सोई इकार, औ आकाश सोई यंकार अकार तारक सोई ब्रह्मा, उकार दंडक सोई बिष्णु, मकार कुण्डली सोई शिव, अर्धचन्द्र सोई ईश्वर औ बिंदु सोई ब्रह्म। ऐसा समष्टी व्यष्टी सम्पूर्ण प्रणवरूप एक आत्मा ॐकार ब्रह्म परमात्मा ऐसा कहि के सब कोई याही में अरुझे । परंतु जिन यह लखा सो बिरला होई। कि जिनने यह उकार को लख के त्यागा औ पारखी पारख पर थीरहुवा सो बिरला कोई । ॐकार मिथ्या औ पारखी सच्चा । ये अर्थ ।

कका कँवल किर्ण में पावै । शशि बिगसित संपुट नहिं आवै॥
तहां कुसुम रंग जो पावै । औगह गहि के गगन रहावै ॥१॥

टीका मायामुख—क कहिये केवल ब्रह्म और का कहिये जीव, जो क से उत्पत्ती होय सो का सो माया उपदेश करती है जगत में, कि हे जीव तू ब्रह्म का अंश है, अधिष्ठान भूत ब्रह्म कैसा सो तू सुनके निश्चय कर। क शब्द कर्दमो भवति । स सच्चिदानंदः। का शब्द तदंशः जीवः इत्यर्थः । क शब्द कीचड औ का शब्द गोला,तो कीचड कहिये सत चित मिला आनंद, ताका अंश जीव गुण उपाधी युक्त।ता जीवको माया उपदेश करती है, कि कँवल किरण में सच्चिदानन्दकी प्राप्ती होयगी । कमल कहिये नाभी कमल दशदल तो जब उन्मनीअमनस्क योग करके सुरति निरति इकट्ठी होय तब कमल खुलै । ता कमल की किरण में जब लक्ष लगे तो सहज हीसहज सत चित एक होय के आनंद की प्राप्ती होय । तब जीव की स्थिति होय औ जीव ब्रह्म होय। परंतु सब चन्द्र नाडी चलै तब नित्य पद्मासुन उत्तराभिमुख करके सोहँ-श्वासा में सुरत लगावै । मन की एकाग्रता करे,सवा पहर का नियम करे,तो कमलका संपुट खुलै।औ ता कमलका रंग सुनीलतहां परम आंनद कुसुम रंग ता रंग को जो पावै वो आनंद अवगाहा की

गहने में न आवै । बुद्धिसे गहने में नहिंआवै औ चित से गहने में नहीं आवै अहंकार से गहने में नहीं आवै मन से गहने में नहीं आवै औ दशों इन्द्री से गहने में नहीं आवै, ताको अवगाह कहिये । ऐसा अवगाह ब्रह्म अनुभाव, ताको लक्ष से गहिके गगन रहाई । कहिये ता आनंद में लय होके ब्रह्मांड में रहना । ये अर्थ ॥ १ ॥

खखा चाहे खौरि मनावै । खसमहि छाडि दुहूदिस धावै ॥
खसमहि छाडि छिमा हो रहिये।होय न खीन अक्षै पद लहिये

टीका मायामुख—ख कहियेआकाश,आकाश कहिये ब्रह्मांड, औ खा कहिये वायू कहिये श्वासा, सो योगी लोगों का उपदेश ऐसा है कि जो कोई ब्रह्मांड में श्वासा चढाना चाहै सो खोरी मनावै। खोरी कहिये इंद्री, सो इंद्रिन को मनावै कहीं चलने न दे । ये इंद्रिन के संग खसम छाड के दशो दिश धावता है । खसम कहिये ब्रह्म, सो ताको छोड के मन इंद्रीके संग दशो दिश विषय बासना में धावता है ताते जीव को चौराशी लक्ष योनी भोगनी होती हैं । तो चौरासी का भोग औ आवागमन का कारण इंद्री की विषय बासना । सो पहिले इंद्री को संयम करना अल्प अहार करके अंग जड होने देना नहीं और जब मिले तब रूखा सूखा, भाजी पाला,लोना अलोना पाय के संतोषसे रहना। काहू बात की तृष्णा न रखना औ जिभ्या के स्वाद में लंपट: न होना औ दूसरे बहुत बिहार न करना आसन दृढ रखना कहीं राग रंग देखने न जाना औ स्त्री को नेत्रभर न देखना । औ नाना प्रकार के तमाशे चरित्र संसार के बिहार देखना नहीं । देखना रूप बिषय सो छोड के आसन दृढ करना । तीसरे निद्रा भी बहुत न करना औ कान से बहुत बानी शास्त्र पुराना आदिक सुनना भी नहीं और जगत की नाना बानी भी न सुनना । बहुत नरम बिछौने पर सोयना

भी नहीं और बहुत स्त्रियन से अंग मिलावना भी नहीं और किसी से मिलने की चाह भी न रखना। और बहुत गंध सुगंध में भी लंपट न होना औ किसी को देने लेने की भी चाह न रखना। एकांत में स्वच्छ स्थान देख ऐसा खोरी मनावै संयम करै और श्वासा में सुरति लगावै भक्र तार न्याय, फिर श्वासा आकास में लय करके जीव ब्रह्म होय रहै समाधिस्थ होय रहै। ये अर्थ। भला इंद्रियन का स्वभाव कैसे छूटै। तो जब नेत्र को रूप बिषय होय तब नेत्रन से मुद्रा देखै सन्मुखी खेचरी अगोचरी अलक्षादि। अथवा श्रवण विषय कान को होय तो अनहद नाद सुनै। स्पर्श विषय हो तो चौरासी आसन करै। नाक को गंध बिषय हो तो रेचक पूरक कुंभक करै। रस विषय जीभ को होय तो लंबिका करके उर्ध द्वारा अमृत पान करै। इस प्रकार से इंद्रि जीतै सो योगी जीवनमुक्त, आपै खसम आपै ब्रह्म। परंतु सब इंद्रिन को जीत के और संपूर्ण बिषय छोड़के क्षिमा होय रहै समाधिस्थ होय रहै। कबहीं इंद्रिन के बश होयके क्षीण न होय तब योगी अमर होय अक्षय पद को प्राप्तहोय। ये अर्थ ॥ २ ॥

गगा गुरु के बचनहि मान। दूसर शब्द करो नहिं कान ॥
तहां बिहंगम कबहुँ न जाई। औगह गहि के गगन रहाई ३॥

टीका मायामुख– ग शब्देन ज्ञान महाचैतन्य तत्पद वाच्य ईश्वरः। गाशब्देन तदंशः त्वंपदवाच्यो जीवः। गुरुशब्देन अचल असिपद वाच्योभयो रेकवाक्यत्वादित्यर्थः। यथा घटाकाश मठाकाश महदाकाश। तथा तत्वमसी सिद्धांत लक्षौ गृहित्वा, वाच्यांशं त्यक्त्वा, सोयं देवदत्तः इत्यर्थः। अब ब्रह्मज्ञान का उपदेश माया जीव को करती है, कि गगा गुरु के बचनहि मान। ग शब्द का अर्थ ग्यान महा चैतन्य ईश्वर तत्पद वाच्य, और गा शब्द का अर्थ अज्ञान-विशिष्ट चैतन्य जीव त्वं पदार्थ, औ गुरु कहिये अचल तत् त्वंकी

एकता असि पदार्थ,गुरु का वचन कहिये तत्वमसी महावाक्य,सो ये जीव ने पहिले साधन चतुष्टय संपन्न होना योग समाधी करना।फिर गुरु के पास जाय के तत्वमसी सिद्धांत सुनना और उसका वाच्यांश छोड देना और लक्ष्यांश ग्रहण करना । कि तत्पद सोई त्वंपद और त्वंपद सोई असिपद है जैसा कोई देवदत्त नाम महा भाग्यवान काशी में रहता था औ जो कोई उसके पास जाता था सो जो कछु याचना करता था सो देवदत्त देता था सो उसकी कीर्ती चौतरफ फैली थी । फिर कछु दिन उपरांत ऐसा काल आया कि उसका ऐश्वर्य और उसकी संपत्ती सब जाती रही।फिर वह देवदत्त संन्यासी होके घर घर भिक्षा मांगने लगा । और कोई दूसरे देश में दूसरे काल में आया सो उससे लोग पूछने लगे कि तू कौन है तब वह बोलता है कि मैं देवदत्त, तो सब लोग उसकी मसखरी करेन लगे । तामें कोई ने उसके रूप को देखा और वो काल वो देश छोडा औ तब की संपत्ती छोडी अबकी बिपत्ती छोडी, देह पर जब लक्ष किया तब वही देवदत्त निश्चय हुवा। इस प्रकार इसकी ईशता छोडै और जीवन जीवनकी किंचिज्ज्ञता छोडै औ स्वरूप लक्ष करै तो वही है । जैसा सोनेका विकार सब सोना माटी का बिकार सब माटी ऐसा ब्रह्म का विकार सर्व जगत ब्रह्म, नाम रूप उपाधी मिथ्या, संपूर्ण ब्रह्म ये सत्य, ऐसा निश्चय करै दूसरे द्वैत शब्द कान ना करै माने ना,फिर योग भी ना करै । औ तहां बिहं-गम कबहुं न जाय, ब्रह्मांड में बिहंगम मन कबहुं न जाय, क्योंकि क्या ब्रह्मांड और क्या पिंडांड एक आत्मा स्वजाती बिजाती स्वगत भेद रहित।ताको योग वियोग मिलना बिछुडना कछु संभवता नहीं । योग समाधी क्रिया ये सब मन के धर्म मिथ्या । आत्मा एक निरंतर अखंड अनिर्वाच्य वाच्य कछु, है नहीं । एक दो, जगत ब्रह्म, कछु कहते बने नहीं । ऐसा अवगाह ज्ञान अनुभव ताको गहिके रहि जावै

थीर हो जाय। ये अर्थ। ये मायाका उपदेश ऐसा हुवा, कि गुरु ब्रह्मा ताका वचन वेद सो वेद का सिद्धांत मानना औ वेदबाह्य जो मत होय सो नहीं मानना औ तामें मन कबहीं ना लगावना वेदके प्रमान से जो अवगाह ज्ञान ब्रह्मज्ञान हैं तामें रहै। ता ऊपर औ कछु कल्पना न करै और कल्पना कोई करै सो वितंड मिथ्या। ये अर्थ ३॥

घघा घट विनशै घट होई। घटहीमें घट राखु समोई॥
जो घट घटै घटहि फिरि आवै। घटहीमें फिर घटहि समावै४॥

टीका मायामुख—घ कहिये घनवत् चैतन्य जो कहीं संधी नहीं जैसा आकाश असंधी भरा है कहूं संधी नहीं। घट मठ पटमें बाहर भीतर जैसा एक आकाश भरा है तैसा चैतन्य पिंड ब्रह्मांड में भराहै ताते घनवत। ये अर्थ। चैतन्य का भया। अब घातदंश जीव प्रति-बिंब ताको गुरुवा लोग उपदेश करते हैं। कि घघा हे ब्रह्मांश जीव, तू तो चैतन्य है आकाशवत। परंतु घट उपाधी से अपने को जीव मानताहै औ कहता है कि मैं सुखी मैं दुखी मैं मरता हौं, मैं जीता हौं तो ये मिथ्या भ्रांति छोड दे तू तो चैतन्य शुद्ध अखंड एकरस तेरा नाश कभी नहीं। जैसा घट विनशता है औ फिर घट उत्पन्न होता है तो क्या घट के संग कहूं आकाश बिनशता है औ घट उत्पन्न भया तो कहूं आकाश उत्पन्न होताहै तैसा आत्मा न उपजै न नाश होय माया उपाधी ते घट उपजते हैं औ नाश होते हैं। घटही में घट राख समोई। कि घटकी वासना औ घटका अभिमान तू छोडदे। घट के अध्याससे घट होताहै सो अध्यास तू मत रखे; घट का अध्यास घट ही में समाय दे लय कर दे औ तू अपने को आत्मा आकाश-वत् जान। जो घट घटै घटहि फिर आवै। अर्थ कि जो घट नाश होता है सो घटहि फिर पैदा होताहै आत्मा न मरता है। न पैदा होताहै। घटहीमें फिर घटहि समावै। कि जैसा घट मृत्तिका का

बनता है फिर बनते ही उसमें आकाश व्यापताहै औ जब घट फूटा तो आकाश अपनी जगह पर जैसे का तैसा है । तैसा तू आत्मा जैसे का तैसा सदा एक रस, देह अध्यास छोड दे । ये अर्थ ॥४॥

ङङा निरखत निशि दिन जाई । निरखत नैन रहे रतनाई ॥
निमिष एक जो निरखै पावै । ताहि निमिष में नैन छिपावै॥

टीका जीवमुख—ङ कहिये शास्त्र मुद्रा देखना, ङा कहिये देखने वाला जीव, सो बोलता जीव है गुरुवा लोगोंसे कि;हे गुरु, शास्त्र औ मुद्रा देखते देखते रात दिन चले जाते हैं औ आँखी भी रतनाय रहीहैं लाल हो रही हैं परंतु कल्पना कछु छूटती नहीं औ ब्रह्म दशा कछु आती नहीं । तो गुरु बोलतेहैं कि हमारी कछु चूक नहीं । निमिष एक जो निरखै पावै, ताहि निमिषमें नैन छिपावै । मुद्रा की धारना लगा-वताहै तो जब प्रकाश होनेका वख्त आता है तब नैन छिपाय लेताहै पलक लगाय लेता है मुद्रा कैसे प्रकाश होय । औ शास्त्र देखता है तो श्रवन मनन में आलस करता है तब ब्रह्मदशा औ निर्विकल्प दशा कैसे होय । ज्ञान अभ्यास वा योग अभ्यास वैराग्य युक्त करै तो सहजही परमात्मा की प्राप्ती होय । ये अर्थ ॥ ५ ॥

चचा चित्र रचो बड भारी । चित्र छोडि तै चेतु चित्रकारी॥
जिन्हयहचित्र विचित्रहैखेला। चित्र छोडि तै चेतु चितेलाद॥

टीका गुरुमुख—च कहिये जीव औ चा कहिये जीवकी कल्पना नाना बानी औ चा कहिये स्त्री । सो गुरु कहते हैं कि हे जीव तेरी कल्पना ने जो चित्र रचा है सोई तेरे को भारी बंधन हुवा । जो नाना शास्त्र पुरान वेद ने बताया सोई तू निश्चय करने लगा, ताही से नाना जाल औ नाना चक्र औ नाना योनी तेरे को भोगना प्राप्त

भई । परंतु स्वतंत्र पारख तेरे को प्राप्त न भई ताही ते तू बहुत दुःख पावता है। औ तेरी इच्छा से नारी पैदा भई सो तेरे परखने में नहीं आई सो उसने तेरे को नाना विषय में फँसाया औ अपना मोह लगाय के तेरा ज्ञान हर लिया । तेरे को अपने बश करके भारी चित्र जगत जाल रचा । सो तू अब तो भी कल्पना औ स्त्री परख के छोड । हे चित्रकारी संपूर्ण ब्रह्म जगत आदि चित्र तू ने बनाया औ तू ये चित्र रूपी कैसा होगया चित्र में कैसा बंध गया। जिन्ह यह चित्र विचित्र हो खेला सो तूही, तेरे बिना कछु एकहू हुवा नहीं परंतु तेरा बंधन तेरी करतूत ही है । सो संपूर्ण करतूत चित्र छोड के तें चेतु चितेरा । हे चितेरा, भास अध्यासादि संपूर्ण चित्र तूने बनाया औ सबका जनैया तूही सब को न्यारा न्यारा जानता है औ, ताही में फिर तू समा जाता है । कहीं ब्रह्म बना, कहीं देह बना, कहीं दास बना, सो संपूर्ण धोखा छोड के तू स्थिर हो सब परखके बंधन छोड औ पारख रूप हो रहो । ये अर्थ ॥ ६ ॥

छछा आहि छत्रपति पासा ।छकि किन रहहु मेटि सब आसा॥
मैंतोहीछिनछिनसमुझावा ।खसमहिछांडिकसआपुबँधावा।७।

टीका गुरुमुख—छ कहिये छर, पांच तत्व छठवा मन । छा कहिये पांच तत्व औ छठवे मनसे जो उत्पन्न होय सो छा । देहसे अनुमान अध्यास कल्पना भास ब्रह्म आत्मा आदि जो पैदा हुवा सोई छा । ये अर्थ । देह से कल्पना उठी कि कोई एक ब्रह्म है सोई अनुमान किया, फिर वोही मैं ऐसा कहा सो अध्यास भास भासिक एक माया सोई ब्रह्म औ सोई आत्मा । तो छा का अर्थ ब्रह्म हुआ अब छ नास्ती औ छा महा नास्ती । सो गुरु जीव को समुझाते हैं कि छ देह औ छा ब्रह्म, छत्रपती जीव के पास दो बंधन हैं छछा, देह औ ब्रह्म । कल्पना सोई त्वंपद, अनुमान सोई तत्पद, अध्यास

सोई अस्ति पद ये सम्पूर्ण देह से जीको भास भया सोई जीवको बंधन हुवा अब छकि किन रहहु मेटि सब आसा । संपूर्ण ब्रह्म जगत आदि आसा परखके मेटि डारो औ पारखमें छकि रहो स्थिर हो रहो जाते तुम्हारा आवागवन छूटै । मैं तोहीं छिनछिन समुझावा । छिनछिन में तेरे को येही परखाया सो तू आपही सब बिसार के औ घबराय के दूसरा खसम बनाय के कैसा बंधन में परा सो तूं अब तो भी परखके सब अध्यास छोड औ थीर हो । ये अर्थ ॥ ७ ॥

जजा ईतन जियत न जारो । योबन जारि युक्ति तन पारो ॥
जो कछु युक्ति जानि तन जरै। ई घट ज्योति उजियारीकरै।८॥

टीका गुरुमुख—ज कहिये माया औ जा कहिये त्रिगुण, सो गुरु कहते हैं कि ये माया ब्रह्मादिक गुरुवालोग तिन की बानी सुन के तुम त्रिगुण फंद में परे। औ कहीं योग करने लगे, पंच क्रिया करके पवन लघन करके देह को कष्ट देने लगे । औ कहीं तपस्या करके देह जराने लगे; पंचाग्नी, जलशयन, अन्नत्याग, वस्त्रत्याग करने लगे । दूध अहारी,फल मूल अहारी बने । औ कहीं वैराग्य करके घर छोड जंगल में भगने लगे । इस प्रकार से जीते तन को क्यों जरावते हो औ जीव को क्यों दुख देते हो मुये पर सभी जर जायगा ताते सब परख के थीर रहो । ये माया की बानी सुनके नाहक जीते जीव जारो मत यामें कछु फायदा नहीं, मिथ्या धोखे के वश मत होओ । माया का धर्म ऐसाहै कि जीते भी दुख देना औ मरे भी चौरासी भुगाना । भला जो तुम ब्रह्म प्राप्ती के वास्ते तन जराते हो तो वेद वचन ऐसा है कि ब्रह्म तो कछु जग से न्यारा नहीं संपूर्ण चराचररूप ब्रह्म ही है, मृत्तिकाकुंभन्याय, सुवर्णभूषणन्याय जो तुम तन जरा-वते हो तो याका फायदा कौन । अगर स्वर्ग आदि प्राप्ती के वास्ते जरावते होगे तो स्वर्ग के लोग नाहक गर्भवास में आते हैं ऐसा

वेद बोलता है फिर नाहक भ्रम के भरोसे जीते तन क्यों जरावते हो। ब्रह्म भी भ्रम औ योग तपस्या वैराग्यभी भ्रम मिथ्या भूत, परख के छोडो औ पारख होयरहो। ये अर्थ। **मायामुख**—योबन जारि युक्ति तन पारो। अब मायाका उपदेश ऐसा है, कि योबन ज्वानी औ संपूर्ण इंद्रिन को जराना औ नाना साधना करना शम दमादि औ आगे जैसा खखा के अर्थ में युक्ती बोली तैसी युक्तीसे तन छिजा वना, औ सतगुरुके पाससे योग की युक्ती समझना फिर वो योग साधना करके जो कोई तन जरावेगा तो येही घटमें ज्योति उजियारा करेगा ज्ञान प्रकाश होयगा, योग सिद्धी होयगी। जैसी पवन थीर होती है तब दियेकी ज्योती थीर होय के जरती है वैसी इंद्री रूपी पवन थीर होय तब ई घट ज्योती उजियारी करै। जीवन मुक्त दशा को प्राप्त होय। ये अर्थ ॥ ८ ॥

झझा अरुझि सरुझि कित जान। अरुझनि हींडतजाय परान
कोटि सुमेरु ढूँढि फिरि आवै। जो गढ गढै गढैया सोपावै॥

टीका गुरुमुख—झ कहिये संसार प्रपंच औ झा कहिये नाना बानी नाना मत जो संसार में उत्पन्न भई। सो गुरु कहते हैं कि नाना प्रकार की बानी में औ नाना प्रकार के मतन में औ नाना प्रकार के विचित्र जगतमें, घर दारा पुत्रादिकमें, हे जीव तू अरुझि के कहांजायगा येही अरुझे से चार खानीमें परा रहेगा ताते तू समुझ कि या फन्देको अच्छी तरह से परखके छोड दे। अरे बानी जाल औ स्त्री जालमें अरुझेसे नाना योनी में हिंडते ही फिरते ही प्राण जाता है। परन्तु ना तुझे पारख मिलता है न तेरा भ्रम छूटता है। जो गढ गढै गढैया सो पावै अरे चाहे तूं कोटि सुमेरु बानी के प्रमाण से ढूँढि फिर आवै परन्तु जो कछु अनुमान करके अध्यासरूपी गढ गढा है गढैया जीवने, ताको सोई प्राप्त होयगा। जहां आशा तहां बासा होय अब कोई स्वर्ग

आदिक औ कोई ब्रह्मादिक आशा करते हैं तो प्राप्ती होय कि नहीं ये शंका । तो ब्रह्म औ स्वर्ग कछु वस्तु होय तो प्राप्त होय औ जो वस्तुनहींहै सो प्राप्ती कहांसे होय । अरे ससाशृंगका धनुष और बांझ पुत्रका मिलाप और गंधर्व नगर का महल रहनेको कहां मिले । तद्वत् ब्रह्म स्वर्गादिक भोग मिथ्या कल्पना कहांसे प्राप्त होय । तो जो कोई सर्व साक्षिनी तुरिया अवस्था के अध्यास में चोला छोड़ै सो उत्तम मानुष देह को प्राप्त होय ज्ञानी होयगा औ तुरियातीत अवस्था में चोला छोडै तो जड अजगरादि योनियों को प्राप्त होयगा सुषुप्ती अवस्था में चोला छोडैतो कृमी कीट की योनी में जायगा । स्वप्न अवस्था में चोला छोडै तो पक्षी योनी को प्राप्त होयगा।जागृती अवस्था विषय मोह में चोला छोडै तो पशू योनिको प्राप्त होयगा बिनु पारख चौरासी छूटै नहीं। जो गढको गढै सोई गढैया को प्राप्त होय । ये अर्थ ॥ ९ ॥

अआनिग्रह सनेहू । करु निरुवार संदेहू ॥ नहिं देखे नहिं भाजिया। परम सयान पयेहू ॥ जहां न देखि तहां आप भजाऊ । जहां नहीं तहां तन मन लाऊ ॥ जहां नहिं तहां सब कछु जानी । जहांहै तहां ले पहिचानी ॥ १० ॥

टीका गुरुमुख—अकहिये अनुमान नपुंसक ब्रह्म,आ कहिये बानी, सो बानी का सनेह सब जगत में बिशेष भया । ताते ये जीव में संदेह बढा ब्रह्म ईश्वर आदि, सो संदेह का तूं निरुवारा कर नहीं तो संदेह तेरे को बंधन है अरे जो बिचार में नहीं नजर आता तहां भागे नहीं सब परखके पारख पर थीर रहै कहीं आसक्त न रहै । परम सयाना उसीको कहिये पारखी कहिये । औ जहां न देखी तहां आपु भजाऊ । कि जहां बिचार से भी कछु नहीं देखाता है औ आंखिन से भी कछु स्वर्ग आदिक नहीं दिखाते तहां नाहक

अनुमान करके जीव भागते चले जाते हैं अपने अनुमान से भेडिन की नांई । औ यहां कछु है नहीं पत्थर है या पानी है तहां जीव सब तन मन लगाते हैं । फिर जहां मन बुद्धि कछु चलती नहीं तहां सब कछु जानते हैं कहते हैं कि वही ब्रह्म जहां कछु नहीं । ताही के पेट में यह जगत सब है वो सब का अधिष्ठान है । परंतु जो तूं न होय तो ब्रह्म ईश्वर आत्मा ये क्या माल है कछु नहीं । याते तेरे ही से सब कछु है । तू अपने को पहिचान ले । ये अर्थ ॥ १० ॥

**टटा बिकट बाट मन मांही । खोलि कपाट महल मों जाही ॥
रही लटापटि जुटि तेहि मांही होहि अटल तब कतहुँ नजाही ॥**

टीका मायामुख–टटा कहिये ब्रह्मरंध्र का रस्ता सो बडा बिकट है । परंतु कपाट ब्रह्मरंध्र का खोलके ब्रह्मांड महल में जाना, हठयोग मार्गसे या राजयोग मार्ग से । जैसा पीछे शब्दन में हठयोग मार्ग या राजयोग मार्ग बोले हैं तेही तरह से ब्रह्मांड बास करना । फिर रही लटापट जुटि तेहि मांही । पांचो तत्व एक में एक लटापट होय के ब्रह्मांड में जुटि रहैं, आकाश में लय भये तब मन उन्मन हो गया । तब अचल समाधी भई जीवनमुक्त हुवा । ये अर्थ ॥ ११ ॥

**ठठा ठौर दूर ठग नियरे । नितके निठुर कीन्ह मन घेरे ॥
जे ठग ठगे सब लोग सयाना । सो ठग चीन्हि ठौरपहिचाना ॥**

टीका गुरुमुख–ठग कहिये गुरुवा लोग इनका संग करे से हे जीव तेरा ठौर दूर होजाता है गाफिली से पारख बहुत दूर । अरे जो गुरुवा लोगों के भरोसे औ वेदके भरोसे रहते हो सो वेद ने औ गुरुवा लोगों ने तेरा ठट्ठा मचाया है । कि कहीं तुझे गुलाम बनाते हैं कहीं राजा बातते हैं, कहीं सबका अधिष्ठान बनाते हैं, औ कहीं पापी बनाते हैं, कहीं स्वर्ग बताते हैं, औ कहीं नरक बताते हैं, औ कहीं भक्ति बताते हैं, औ कहीं योग बताते हैं, औ कहीं ज्ञान करके

सब उडाते हैं, फिर जगत ब्रह्म कहते हैं। हे जीव ऐसे ठद्दा से तेरा ठौर दूर रहा स्थिति दूर रही । औ नितके निठुर कीन्ह मन घेरे। औ नित वेद बानी दढाय दढाय तेरे मनको घेर लिया। अब कहीं निकलने को जगह मिलती नहीं तू घेर घार चौरासी में रहता है, चौरासी कहिये देह । जे ठग ठगे सब लोग सयाना । अरे ये ब्रह्मा विष्णु महेशादि ठग कैसे हैं जो बडे बडे सयाने लोगोंको इन्होंने ठगा है, सो तू इन ठगन को पहिचान इनकी बानी को परख के छोड औ अपने ठौर को पहिचान, जा ठौर से तत्त्वमस्यादि सब ठौर परखने में आवै सोई तेरा ठौर। ये अर्थ । बिरह अर्थ गुरु कहते हैं कि हे जीव तेरे पीछे दो ठग लगे हैं सो तू दोनों ठगों को चीन्ह औ अपना ठौर सतसंग में पहिचान। एक सूक्ष्म माया गुरुवा औ बानी औ दूसरा ठग स्त्री, जाके संग किये से तेरा ठौर दूर हुवा औ चौरासी विषय नगीच हुवा नित इस स्त्रीने तेरे को निठुर कर दिया जो अपने हित का औ पद का तू स्मरण भी नहीं करता। अरे स्त्रीके कटाक्ष बाण तेरे मन को लगे सो तेरा मन जेर हो गया । औ इस स्त्री ने नाना हाव भाव बताय के तेरे मन को घेर लिया सो तूने सुखका हंस पद छाड के दुख की चौरासी शिर पर उठाय लिया सो पाप । अरे इस स्त्री ने बडे बडे सयाने ब्रह्मादि नारदादि पराशरादि सब को ठगा सो स्त्री के बश तू होय रहा है अब तेरी चौरासी कैसे छूटेगी । सो स्त्री को केवल बंधन रूपी चीन्ह औ अपने ठौर को पहिचान। जो ये स्त्री औ कल्पना दोनों न होती तो ये जीव स्वतः ही मुक्त था। ये अर्थ ॥ १२ ॥

डडा डर उपजे डरे होई। डरही में डर राखु समोई ॥
जो डरडरे डरहि फिरि आवै ।डरही में फिरि डरहि समावै १३

टीका गुरुमुख—डडा कहिये जीव को। सो कहते हैं कि हे जीव जो डर तेरे पास से पैदा होता है सोई तेरा काल है और दूसरा

तेरा काल कोई नहीं । जो कछु कल्पना अनुमान तेरे देह से उठता है सोई तेरे को बंधन है सोई तू पकड लेता है ताते फिर फिर तेरे को देह प्राप्त होता है । डर कहिये देह, सो देह से जो कछु पैदा होय सो सब डर तेरे को देह प्राप्त होने का कारण है। ब्रह्म आत्मा आदि संपूर्ण कल्पना खडी भई । सो संपूर्ण तेरे को देह होने का कारण है । सो डरही में डर राखु समोई । देह की कल्पना समस्त देह में जराय दे परख के तू न्यारा हो। जो डर डरै डरहि फिर आवै।अगर तू परख के सब डर नहीं छोडेगा तो ये देह छूटेगा फिर डर देह तेरे को प्राप्त होगा । डरही में फिर डरहि समावै । वो देहमें फिरडर धोखा समायगा सोई बार बार देह धरता है फिर वो देह में नाना डर उत्पन्न होते हैं ताते ब्रह्म बनता है अगर ईश्वर का आसरा करता है ताही ते बार बार देह धरना पडता है सो तू मिथ्या धोखा परखके छोडो । ये अर्थ । विरह अर्थ—डडा कहिये इच्छा कर्ता, इच्छा कर्ता कहिये जीव, तो हे जीव तेरी इच्छा से डर उत्पन्न भया, स्त्री उत्पन्न भई। ता स्त्रीके संग तू भूला ताते स्त्री की इच्छा मत करे, देह की इच्छा देह में समाय रख । जो तू स्त्रीका अध्यास रखेगा तो फिर चोला छूटेगा तो स्त्री के गर्भ में आवेगा।और वो चोले में फिर स्त्री बासना समावेगी फिर वाही में तू बंध रहेगा । तेरा आवागवन का कारण स्त्री औ कल्पना दोनों छोड के पारख स्थिति पावै तो आवागवन से रहित होय । ये अर्थ ॥ १३ ॥

सवैया—डरहि ते योग औ यज्ञहूं करते नर। डरहि ते दान पुण्य ध्यान को धरतु है ॥ डरहि ते राज छाडि भूप बन खंड गये । डरहि ते तपस्या करि डरहि में मरतु है ॥ डरहि ते भक्ति औ ज्ञान को अध्यास करे । डरहि ते अन्न छाडि दूब को चरतु है ॥ डरहि व्यापक तिहुं लोकको बंधन भयो । पूरन परख बिनु डर न सरतु है॥ १॥

ढढा हींडतही कित जान । हींडत ढूंढत जाय परान ॥
कोटि सुमेर ढूंढि फिर आवै । जेहि ढूंढ़ा सो कतहुं न पावै १४

टीका गुरुमुख—ढ कहिये भ्रमिक औ ढा कहिये भ्रम, सो गुरु कहते हैं कि हे जीव तू भ्रम में कहां कहां मारा मारा फिरता है अरे हींडते ढूंडते तेरा प्राण जायगा । चाहे तूं कोटि सुमेरु ढूंढता फिर इसी चोले को आवेगा परंतु जेहि गोसैयां को तूं ढूंढता है सो कहीं मिलने का नहीं । अरे जो वस्तु है नहीं सो कहां से मिलेगी ये अर्थ ॥ १४ ॥

णणा दुई बसाये गांऊ । रेणा ढूंढे तेरी नांऊ ॥
मूये एक जाय तजि धना । मरे इत्यादिक केतेको गना ॥ १५ ॥

टीका गुरुमुख—ण कहिये पिंड औ णा कहिये ब्रह्मांड, सो गुरु कहते हैं कि हे जीव तू ने पिंड ब्रह्मांड, स्वर्ग, नर्क, दुइ गांव बसाये सो पिंड में जीव का अनुमान किया औ ब्रह्मांड में ब्रह्म का अनुमान किया । फिर रेणा ढूंढे तेरी नांऊ । तेरी कल्पना को तूही ढूंढने लगा । कल्पना तो कछु वस्तु नहीं प्राप्त कहां से होय । ब्रह्मांड में तूही ब्रह्म होता है औ पिंडांड में तू ही जीव होता है । स्वर्गवासी तूही होता है औ तूही नर्कबासी होता है । मूये एक जाय तजि धना, मरे इत्या-दिक केते को गना । ताते तेरे से दूसरा कोई नहीं । नाहक कल्पना का धन काहे को जोडता है । अरे पहिले जो बडे बडे भये सो सभन मिलि नाना कल्पना कर कर के, नाना प्रकार की बानी शास्त्र पुराणादि रख के मर मर गये । अब जो कोई पैदा होते हैं सो सब वही बानी पढि पढि येही नाना कल्पना बना बना के मरते हैं बिन पारख केते को गना । ये अर्थ ॥ १५ ॥

तता अति त्रियो नहिं जाई । तन त्रिभुवन में राखु छिपाई ॥
जो तन त्रिभुवन मांहि छिपावै । तत्त्वहिमिलि तत्त्व सोपावै १६

टीका मायामुख—त कहिये तत्पद ईश्वर,ता कहिये त्वंपद जीव अति कहिये असिपद दूनों को एकता, ये त्रिपदको समझ लेना और कहीं तीर्थ ब्रत उपासना में नहीं जाना । तन यही त्रिभुवन यामें श्वास को छिपाना कि योग साधना करके पवन ब्रह्मांड में लय करना । जागृति अवस्था सहित पृथिवी जलमें लय करना औ स्वप्न अवस्था सहित जल अग्नी में लय करना औ सुषुप्ती अवस्था सहित अग्नी वायू में लय करना औ तुरिया अवस्था सहित वायु आकाश में लय करना याको लय योग संधान कहिये ।

सवैया—प्रथमै मन लाय एकाग्रता करे फिर आँखिया लगायके ध्यान धर ॥ जहां ऊठत नाद अनाहधरे । सगरे ब्रह्मांडमें शब्द भरे॥ रकार अकार उठे झनकर । अनेक प्रकार सो शब्द चरे ॥ सगरे जब नाद बिलास गये।दश नाद रहे सगरे तबरे॥सोई भिन्नहि भिन्न विचार करे । नहिं टारे टरे मन धीर धरे ॥ दश नाद बिलाय सुभावि करे। फिर नाद रहैं घंटाइ करे ॥ धरति के नाद को आप गहै। फिर आप के नादको अग्नि दहै ॥ औ अग्निके नाद समीर लये । सोई जाय रहै आकाश मये ॥ सोई घंटा नाद प्रकाशि करे । सब पिंड ब्रह्मांड के बासि करे,तिहुं लोक को ईश्वर भासि करे तहँ जीव मिले अविनाशि करे,तहां उठत तरंग अनंदितरे । मन जाय भयो लय तेहि भितरै । पूर्णानंद रूप बेदोदितरे । सोई लय योग सदोदितरे॥ १ ॥

इस प्रकार से जो तन त्रिभुवन माहि छिपावै । अर्थ कि जो कोई इस तनमें लययोग संधान करके मनको लय करै । सोई तत्वनमें मिलके ब्रह्मको पावै अन्तमें ब्रह्मरूप होजाय । ये अर्थ ॥ १६ ॥

थथा अति अथाह थाहो नहिं जाई।ई थीर ऊ थीर नाहिं रहाई॥ थोरे थोरे थिर होउ भाई । बिन थंभ जसमंदिर थँभाई १७॥

टीका मायामुख—थ कहिये ब्रह्म और था कहिये वेद, सो वेद बोलता है कि ब्रह्म अति अथाह बेअंत थाहो नहिं जाई। उसका अंत किसीको नहीं मिलता जो कोई थाह लेने जाता ह सो तद्वत हो जाता है। ताते हे मुमुक्षु लोगो थोरे थोरे थीर हो, श्रवण मनन करते करते हलु हलु उन्मुनी होवो जैसे बिना आधार मंदिर थंभता है तद्वत। ये अर्थ॥ १७॥

ददा देखहुँ बिनशनहारा। जस देखहु तस करहु बिचारा॥
दशहूँ द्वारे तारी लावै। तब दयाल के दर्शन पावै॥ १८॥

टीका गुरुमुख—द का अर्थ दयाल और दाका अर्थ दाता, तो जो दया करके पारख जीवको दे सोई ददा गुरु। सो गुरु कहतेहैं कि हे संतो देखहु बिनशनहारा ये दे । तो जो कछु ये देहके अनुमानसे बना है औ देह की क्रिया से बनाहै सिद्धांत वा बानी सो भी बिनशन हारा। जब स्थूल ही नाश होगया तब सूक्ष्म कारण महाकारण केवल कहां रहेगा। तो जैसे देखो तैसे बिचार करो, सब पक्ष छोडके तब पारख प्राप्त होयगा। परंतु माया क्या दृढावती है सो सुनो।

मायामुख—दशहूं द्वारा तारी लावै, तब दयालके दर्शन पावै। प्रथम बज्रासन करना, बांये पांव की एडी गुदा में लगाना बांये पांवके मूल पर दाहिना पांव राखना, दहिने पांव की एडी से लिंगको दबाना दाढ़ी कंठको लगाना दोनों अंगूठोंसे कान मजबूत मूंदना औ दोनों तर्जनी अँगुरी से आंखि बन्द करना औ दोनों बीच की अँगुरीसे नाक बंद करना। इस प्रकार से सन्मुखी मुद्रा तारक योग करना तब दयाल का दर्शन मिलता है॥

छप्पै—प्रथमै है अन्धकार ताहि, तम गुण करि जानो। दूसर अरुअ प्रकाश रक्त, रजगुण पहिचानो॥ बिजलीसी जो चमक, सोई

है माया रानी। दिखे रंग कर्पूर वही,सतगुण की खानी ॥ शुद्ध सतो गुण भान चंद्र मंडल, तारागण लय करे। फिर रहे सुनीलानंद लक्ष, लक्षि मिलि के सर्वस भरे ॥ १ ॥

दशहूं द्वारा तारी लावै। तब इस प्रकार से दयाल के दर्शन पावै। ये अर्थ ॥ १८ ॥

धधा अर्ध मोहीं अन्धियारी। अर्ध छांडि उर्ध मन तारी ॥
अर्ध छोड़ि उर्ध मन लावै।आपा मेटिके प्रेम बढावै॥१९॥

टीका मायामुख—ध कहिये ब्रह्म औ धा कहिये माया, सो अर्ध कहिये पिंड तामें महा अविद्या की अन्धियारी है। सो हे जीव तू अर्ध छोड ऊर्ध मन तारी लगाव। अर्ध कहिये नाभी औ उर्ध कहिये त्रिकुटी सो त्रिकुटी छोड तारक योग मत करै उर्ध ब्रह्मांड में तारी लगाव अमनस्क योग कर। अर्ध छोडि उर्ध मन लावै, आपा मेटि के प्रेम बढावै। ब्रह्मांडसे जो स्फूर्ण होता है सो सोहँरूप होके नाभीमें रहताहै तामें सुर्त मिलाना। जो श्वासा नाभी से उठता है सो तीन धार होके चलता है इंगला पिंगला सुषुमना, सो इंगला पिंगला का मुख नीचे अर्धको औ सुषुमनाका मुँह ऊपर ऊर्ध को,सो त्रिबंध बाँध के सुषुमना लाता फिर श्वासोच्छ्वास में सुर्त लगाना। सोहं करके श्वास उठाना हंसा करके श्वास बैठाना। इस प्रकार से अर्ध कहिये इंगला पिंगला ताको छोडके ऊर्ध सुषुमना तामें मन लगावै। औ आपा मेटै देह की विस्मृति करके नाम में मन बढावै। तब मन उन्मनी सिद्ध होय। ब्रह्म प्राप्त होय औ सकल सिद्धि प्राप्त होय, वाचा सिद्धि मनसा सिद्धि प्राप्त होय। ये अर्थ ॥ १९ ॥

चौथे वो नामहुँ जाई। रामका गदहा होय खर खाइ॥२०॥

टीका गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि कोई इस प्रकार से लय योग करते हैं औ कोई तारक योग करते हैं औ कोई अमनस्क योग करते

हैं चौथे शून्य में जाके लय होते हैं फिर राम के गदहा बनते हैं योगी बनते हैं। रामके गदहा कहिये। रमेति रामः। सब में रमे आपी राम कहाये तब जगत का बोझा सब उठाया अधिष्ठान रूपी हुये तब सब भोक्ताबने। अगर कोई रामवियोगी होके गदेह माफिक खाक लगाय जहां तहां अन्न छोड के घास पत्ती कंद मूल खाने लगे। ये अर्थ ॥ २० ॥

पपा पाप करे सब कोई। पाप के घरें धर्म नहिं होई ॥
पपा कहै सुनहु रे भाई । हमरे से इन किछुवो न पाई॥ २१ ॥

टीका मायामुख—पपा कहिये परपंची जीव, सो पंडित लोगोंका बोलना ऐसा है कि संसार में पाप सब कोई आचरण करते हैं अपना अपना धर्म सब कोई छोडा। कोई ब्राह्मण को पैसा नहीं देते औ कोई ब्राह्मण को भोजन नहीं देते, कोई कपडा देते नहीं, तो चारों वर्णने अपना धर्म छोडा औ पाप करने लगे। जो ब्राह्मण होके संध्या त्रिकाल औ पंच महायज्ञ; गायत्री पुरश्चरण औ ब्राह्मण को अन्न देना, औ यजन याजनादि कर्म यथा बिधी करना, शूद्र का अन्न नहीं खानाऔ त्रिकाल स्नान करना शूद्रादिक का स्पर्श नहीं करना सिलोञ्छना वृत्ति करना या झाड के तरे झरे पत्र फलको भक्षण करना। या ब्राह्मण के घरसे भिक्षा लाना कोरा अन्न औ उदर पोषण करना। या कछु निकट प्रयोजन लगे तो क्षत्री के यहां जाय कर द्रव्य लाना औ अपना प्रयोजन करना। औ नित्य नैमित्तिक कर्म यथाविधि करना, कर्म लोप कभी न होना। ऐसा धर्म छोड के अनाचार करते हैं सो सब पाप करते हैं औ क्षत्रियने भी धर्म छोडा। जो गऊ दान, अश्वदान, गजदान पृथिवीदान कन्यादान आदिक कर्म नहीं करते औ राजसूय यज्ञ, अश्वमेध यज्ञ, सोम यज्ञ, ब्रह्म यज्ञ, शास्त्र यज्ञादि यज्ञ भी कोई नहीं करते औ ब्राह्मण भूखे मरते हैं उन को द्रव्य भी नहीं देते।

औ प्रजा पालन करना, परिचर्या कर्म ना करना जो इतना न हो सके तो क्षत्री बन को जाय तपस्या करे । तो क्षत्रिय धर्म छोड के सब पाप करते हैं जो अपना धर्म छोड औ आन धर्म आचरण करते हैं सो सब पाप । अब वैश्य का धर्म ब्राह्मण की सेवा औ राजा की आज्ञा औ विष्णू की भक्ती कायिक वाचिक मानसिक रखना औ कृषी गऊ-रक्षा वाणिज्य कर्म करके उदर पोषण करना । ये धर्म छोड के वैश्य आन धर्म आचरण करे तो सब पाप । औ शूद्र का धर्म तीनों वर्ण की सेवा करना, परिचर्या कर्म करना, राम राम स्मरण करना और कछु न करना । ये छोड और कर्म जो करे सो सब पाप; इस वास्ते सब पाप आचरण करते हैं। पाप के अधिष्ठाता चारों वर्ण भये । तो भला ब्राह्मण को दान तो भी देना सो भी नहीं देते ताते सब नर्क को जायेंगे । ये अर्थ । जीवमुख–पपा कहे सुन रे भाई । जीव कहता है कि सुनो रे भाई, जैसा धर्म पंडित लोग बोलते हैं सोई धर्म सत्य है परंतु अपने से इन गुरु लोगों को कुछ पैसा कौडी प्राप्त नहीं भई, यथार्थ धर्म आचरण नहीं हुवा ना जाने अपनी कौन गती होवेगी । ये अर्थ ॥ २१ ॥

फफा फल लागे बड दूरी। चाखै सतगुरु देई न तूरी ॥
फफा कहै सुनहुँ रे भाई । स्वर्ग पताल कि खबर न पाई॥२२॥

टीका मायामुख–फफा कहिये पुष्पित वाच रोचक बानी सो माया पुष्पित बानी जीव को उपदेश करती है कि अर्थ धर्म काम मोक्षादि फल संपूर्ण मंत्र उपदेशन में हैं परंतु कोई सतगुरु हाथ से तोरि के नहीं देते । गुरु जैसी क्रिया बतावै औ शास्त्र जैसी क्रिया बतावै तैसी विधि चले तो फल प्राप्त होय। गुरुमुख–फफा कहै सुनहु रे भाई, स्वर्ग पताल कि खबर न पाई । गुरु कहते हैं कि जैसी गुरुवा लोगों ने बानी बताई तैसी तुम लोगों ने मान लई । परंतु हे भाई हे

जीव, अर्थ धर्म काम मोक्षादि फल क्या स्वर्ग में कि पाताल में है ये खबर न तुम्हारे गुरुवा लोगों ने पाई न तुमने पाई । तो नाहक वेद बानी के भरोसे धोखे में परे बिना पारख। ये अर्थ ॥ २२ ॥

बबा बरबर करे सब कोई । बरबर करे काज नहिं होई ॥
बबा बात कहैं अर्थाई । फलका मर्म न जानहु भाई ॥२३॥

टीका गुरुमुख—ब कहिये बानी और बा कहिये पंडित, सो सब ब्रह्मादि पंडित बरबर करते करते मरि मरि गये । और अब जो कोई पंडित हैं सब बरबर बकवाद करते हैं परन्तु बकवाद किये काम नहीं होने का ।

सवैया—कोई द्वैत औ कोई अद्वैत कहै, कोई विशिष्टाद्वैत सिद्धांत कर जाना है ॥ कोई कर्ता औ कोई कर्म काल कहै, कोई पातंजलि योग निश्चय करि माना है ॥ कोई सांख्यवादि नित्यानित्य का बिबेक करै, कोई बेदांती ब्रह्म सकलो कहि साना है। पूरन प्रकाश जब लों पारखकी प्राप्ति नहीं, तौलों बकवाद सकल भ्रमही में ताना है ॥ १ ॥

ताते बकवाद सब करते हैं, परंतु कछु फायदा नहीं । बाबा गुरुवा लोग जो बातें करते हैं कि अस्ती ब्रह्म सो ताको अर्थाय के देखो कि ब्रह्म क्या है तो कहते हैं कि तू और मैं ये छोड जगत सब ब्रह्मरूपी है । तो पहिले जगत नाम धरा था अब एक अनुमान करके ब्रह्म नाम धरा, तो क्या हुवा कौन फल इनके विचार का । और कहते हैं कि पाप पुण्य माने से होता है औ बंध मोक्ष माने से होता है, न मानै तो कुछ नहीं आत्मा जैसा का तैसा । तो भला अग्नीको पानी करके माने तो हाथ जरे कि नहीं । औ पानी को अग्नी करके माने तो अंग जरे कि नहीं । औ पानी को पानी

करके न माने पृथिवी करके माने तो बूड कि नहीं । जो सूर्य को अंधकार करके माने तो अंधकार होय कि नहीं । औ अंधेरे को सूर्य करके माने तो प्रकाश होय कि नहीं । याते जो होय सोई सही, माने से कछु नहीं होता । ये सब मिथ्या धोखा । ये अर्थ ॥

कवित्त—कोई जन्म अंध ताको नैनसुख नाम भयो । इतने में फूल्यो पर नेत्र नहिं आयोहै ॥ कोई जन्म रोगी ताको देहसुखी नाम धरयो । नामहि को महातम कछु सुख नहिं पायो है । कानन को बहिरा ताको बहु श्रोता कहैं लोग, बानी को रस ताको स्वमेहु नहिं भायो है । मूका को बक्ता कहि नाम धरा पुरानन में । ऐसोई ही गुरुवन ने जगत ब्रह्म गायो है ।

गुरुवा लोगन की बात का अर्थ देखो तो कछु फल नहीं । ये अर्थ ॥ २३ ॥

भभा भभरि रहा भरपूरी । भभरे ते है नियरे दूरी ॥
भभा कहै सुनहु रे भाई । भभरे आवै भभरे जाई ॥ २४ ॥

टीका गुरुमुख—भभा कहिये भ्रम सो भ्रमहि ब्रह्म होयके भरपूर हो रहा । प्रथम बेद की कल्पना कि कोई ब्रह्म है सो बात जब जीव ने सुनी तब ब्रह्मको खोजने लगा । जहांलग जीवकी अकिल चली तहांलग खोजा फिर जब अकिल थकी तब कहा कि आपुहि ब्रह्म, घबराय के कहा कि मैं ही ब्रह्म सर्वत्र पूरण हूं। यही बातका सिद्धांत घबराय के सब करने लगे । फिर कोई नगीच ठहराने लगे औ कोई कहने लगे कि दूर है । ऐसा भ्रम के अनेक सिद्धांत करने लगे औ भ्रमहीसे संपूर्ण हमी भरे हैं । ऐसा कहते हैं जो नगीच कहना ये भी भ्रम औ दूर कहना ये भी भ्रम, संपूर्ण आपही आप कहना ये भी भ्रम भ्रम ही से सब बात करतेहैं । हे भाई जीव तुम सुनो भ्रमही में सब आते

हैं औ भ्रम ही में सब जातेहैं । भ्रम है सोई जन्म मरणका कारण है परख के ताको निरुवारा करो । ये अर्थ ॥ २४ ॥

ममा के सेये मर्म नहिं पाई । हमरे से इन मूल गमाई ॥
माया मोह रहा जग पूरी । माया मोहहिलखहुविचारी॥२५॥

टीका गुरुमुख--म कहिये अंधकार, अंधकार कहिये जहां कछु सूझै नहीं औ जीव भ्रमि जाय सोई मकार माया । अथवा मकार शब्द मोहनबीज है जाके मोहसे जीव मोहित हो जाय औ आगे कछु सूझै नहीं सोई मकार कहिये माया औ माया कहिये काया, काया कहिये जामें जीव आसक्त होय । सो जीव सब देहमें आसक्त होके मकारका सेवन करने लगे । मकार दश, तामें मुख्य पांच औ पांच गौण, पंच मकार मिलके माया का स्वरूप, मंत्र मुद्रा मद्य मांस मैथुन ये पंच मकार गौण, स्त्री पुत्र धन बाजी औ घर ये पंच मुख्य मकार । अब माया दस प्रकारकी स्थूल सूक्ष्म कारण महाकारण केवल, कर्म उपासना ज्ञान भक्ती बिज्ञान, ये दशप्रकारकी माया औ याही को सेवन सब करने लगे याहीमें आसक्त भये । ताते मर्म न पाया पारख नहीं पाया ये अर्थ । हमरे से इन मूल गमाई । याको अर्थ ऐसाहै कि यह बीस द्रव्यका अभिमान माना दश मायाकृत दश मकार कृत । ताते ये जीवने अपना मूल हंस देह ताको गवांया औ मायाके मोहमें परा सो ये मायाका मोह जगमें पूरि रहा है सो तुम बिचारके परखो औ उसकी आसक्ती छोडो तब पारख स्थिति प्राप्त होयगी । ये अर्थ ॥ २५ ॥

यया जगत रहा भर पूरी । जगतहु ते है जाना दूरी ॥
यया कहै सुनहुरे भाई । हमहींते इन जैजै पाई ॥ २६ ॥

टीका मायामुख--य कहिये ब्रह्म औ या कहिये माया, सो गुरुवा लोग बोलते हैं कि जो जगत है तामें ब्रह्म भरपूरि रहा है, कनक कुंडल

न्याय, घटमृत्तिकान्याय, परंतु जगत से अलिप्त है। जैसा घट मठ पट में आकाश भरा है औ घट मठ पटसे दूर है अलिप्त है तद्वत। ये अर्थ। परंतु इन जीवन ने हमही से जै जै पाई ऐसा गुरुवा लोग बोलते हैं कि जीवन ने ब्रह्म स्थिति हमही से पाई। ये अर्थ ॥ २६ ॥

ररा रारि रहा अरुझाई। राम कहे दुख दारिद्र जाई ॥
रग कहै सुनहुरे भाई। सतगुरु पूछिके सेवहु आई ॥२७॥

टीका गुरुमुख—र कहिये ज्ञान, रा कहिये ज्ञानी, सो गुरु बोलते हैं कि ज्ञानी लोग सब ब्रह्म की राररमें अरुझाय रहे हैं और अज्ञानी बोलते हैं कि राम कहे दुख दारिद्र जाई। परंतु ज्ञानी लोग बोलते हैं कि राम कहे दुख दारिद्र जायगा सही परंतु सतगुरु को पूछि के सेवन करो कि राम क्या है। तब सतगुरु आत्मा राम को बतावेंगे तब दुख दरिद्र सब जायगा। दुख आवागवन औ दरिद्र जीव, सो जीवपना उड जायगा। जब आत्मापन आयगा तब दुख सब जायगा इस प्रकार से गुरुवा लोग बोलते हैं। ये अर्थ ॥ २७ ॥

लला तुतुरे बात जनाई। तुतुरे आय तुतुरे परचाई ॥
आप तुतुरे औरकी कहई। एकै खेत दूनों निर्बहई ॥२८॥

टीका गुरुमुख—लला ऐसी प्रीत संबोधना है औ तुतुरे कहिये भ्रमिक, सो गुरु बोलते हैं कि हे जीव जो गुरुवा लोगों ने बात जनाई है बानी तुम्हारे को उपदेश किया है, सो सब मिथ्या भ्रम है। और गुरुवा आपहि भ्रमिक हैं, भ्रमिक कहिये ब्रह्म, जामें से संपूर्ण जगतादि भ्रम खडा हुवा और फिर उसी में हैं। सोई तुतुरे ब्रह्मज्ञानिनने आयके ब्रह्मज्ञान की बानी संसार में परचाय दी औरे वै आप ही तुतुरे बने हैं भ्रमिक बने हैं; ब्रह्म अधिष्ठान बने हैं। सोई ब्रह्मज्ञान औरनको कहेत हैं और ब्रह्म बनाते हैं। फिर एकहि अधिष्ठान में दूनों गुरु

शिष्य निरबाह करते हैं, जैसा जलतरंगन्याय । तो ब्रह्म आपहि भ्रमिक है और दूसरे का भ्रम क्या छुडावेगा । गुरु शिष्य दोनों भ्रमही में रहे । ये अर्थ ॥ २८ ॥

ववा वह वह कहै सब कोई । वह वह कहै काज नहिं होई ॥
वह तो कहै सुनै जो कोई । स्वर्ग पताल न देखे जोई ॥२९॥

टीका मायामुख–व कहिये बानी औ वा कहिये वेद औ वह कहिये ब्रह्म परमात्मा, वह शब्द परोक्ष दूसरा वेद बानी, सो गुरुवा लोग बोलते हैं कि वेद बानी के प्रमाण से परोक्ष परमात्मा वा स्वर्गादिक में परमात्मा, सब कोई कहते हैं सो मूर्ख, परोक्ष कहे से कार्य नहीं होने का और वह वेद तो सत्य कहता है परंतु कोई सुनता नहीं कि स्वर्ग कहिये ब्रह्मांड औ पताल कहिये पिंडांड सो वह ईश्वर ब्रह्मांड में और यह जीव पिंडांड में सो दोनों का वाच्यांश, छोड देना औ लक्ष्यांश ग्रहण करना तो संपूर्ण ब्रह्म एकही है इस प्रकार की वेद की आज्ञा है । परंतु करै नहीं कोई तो परोक्ष बात से मुक्ती नहीं। जब वाच्यांश छोडै औ शुद्ध लक्ष्यांश ग्रहण करै तब अपरोक्ष अनुभव होय और जीव ब्रह्म की एकता होय । ये अर्थ ॥ २९ ॥

शशा सर नहिं देखै कोई । सर शीतलता एकै होई ॥
शशा कहै सुनहुरे भाई । शून्य समान चला जग जाई ३०

टीका मायामुख–श कहिये, शून्य कहिये, आनंद कहिये, ब्रह्म कहिये। शा कहिये, आकार कहिये, जगत कहिये, जीव कहिये, तो नाम रूप उपाधी मिथ्या औ वस्तुता सत्य आकार बिनु शून्य नहीं शून्य बिनु आकार नहीं उभय सम्बन्ध है, दूनोंका अधिष्ठान आत्मा, जल बुदबुदा न्याय । बुदबुदा सोई आकार, बीच में पोल सोई शून्य, वस्तु पानी सोई सत्य, नाम रूप मिथ्या जगत बिनु आनंद नहीं आनंद बिनु जगत नहीं उभय संबन्ध है, दोनों का अधिष्ठान

आत्मा, घटाकाश न्याय। घट सोई जगत औ घटाकाश सोई आनन्द महदाकाश सोई सत्य, नाम रूप उपाधी मिथ्या। जीव बिनु ब्रह्म नहीं ब्रह्म बिनु जीव नहीं उभय संबन्ध है, दोनों का अधिष्ठान आत्मा घट मृत्तिका न्याय। ब्रह्म मृत्तिका, जीव घट, नाम रूप उपाधी मिथ्या पृथिवी सत्य तद्वत जगत सब आत्मा। शशाका ये अर्थ। तो गुरुवा लोगों का उपदेश ऐसा है कि सर नहिं देखें कोई, सर शीतलता एक, होई। तो देखो जड देह का अभिमान करके जीव सब भ्रमि गये नाना कर्म उपासना करते हैं औ ब्रह्म कोई नहीं देखाता कि जगत औ ब्रह्म एक है शर शीतलता एक है। तद्वत शर पानी, शीतलता थंडाई। ये अर्थ। गुरुमुख—शशा कहै सुनहु रे भाई, शून्यसमान चला जग जाई। हे भाई जीव तुम सुनो ये गुरुवा लोग जगत ब्रह्म कहते हैं। तोसब ने जगत नाम धरा था औ गुरुवा लोगों ने ब्रह्म नाम धरा तो क्या इनकी अधिकाई। जैसा कोई दिवाना हो गया तब अपना शिरअपने हाथ से फोर लिया सो बडा घाव पडा और उस में अनेक कीडे परे। लोगोंने उस को रोगी नाम धरा और आपभी रोगी कहै। तामें कोई एक और उसे अच्छा करने को आया सो ताने उसका नाम दिवाना रक्खा। इसमें क्या उसका रोग गया क्या दिवाना पना गया। तद्वत ये गुरुवा लोगों का मिथ्या उपदेश सुनि के शून्य समान चला जग जाई। सकल जग गर्भबासमें औ भगमें समाया चलाजाता है ताते तूं परख के छोड़। ये अर्थ ॥ ३० ॥

षषा खरा करे सब कोई। खर खर करे काज नहिं होई।
षषा कहै सुनहु रे भाई। राम नाम ले जाहु पराई ॥ ३१ ॥

टीका गुरुमुख—ष ब्रह्म औ षा जगत, सो जगत सब ब्रह्म खरा और सब झूठा ऐसा कहते हैं औ गुरुवा लोगों के पास खरा करते हैं

परंतु खरा ब्रह्म और खोटा जगत ऐसा कहे कछु काम नहीं होने का क्यों कि ब्रह्म तो जगत ही का नाम है इस में क्या कार्य होवेगा । षषा कहै सुनहु रे भाई । अब गुरुवा लोगों के दो सिद्धांत हैं सो सुनो रे भाई । एक सिद्धांत ऐसा है कि जगत सब ब्रह्म रूप है दूसरा सिद्धांत ऐसा है कि राम नाम लेके जगत से भाग जाव जंगलमें औ राम नाम की रटना लगाव तो राम रूप हो जावोगे । तो रमेति रामः । राम हुवा तो भी चौरासी में रमा औ ब्रह्म हुवा तो भी चौरासी रूप हुवा । ये अर्थ ॥ ३१ ॥

ससा सरा रचो बरियाई । सर बेधे सब लोक तवाई ॥
ससा के घर सुन गुण होई । इतनी बात न जाने कोई ॥ ३२॥

टीका गुरुमुख—स कहिये ब्रह्म और सा कहिये ब्रह्मवेत्ता, सरा कहिये बानी, सो गुरु कहते हैं कि देखो हे संतो, ये गुरुवा लोग जो बडे बडे ब्रह्मवेत्ता बशिष्ठ आदि पैदा भये । उन्होंने भी ब्रह्म ज्ञान बहुत कथा तामें कहा कि द्वैत उपासना कर्म कछु आत्मा में संभवता नहीं । फिर नाना प्रकारके कर्म उपासना की बानी जबरदस्ती रचना की और सब को दृढ़ाया कि उपासना और कर्म करे बिनाजीव की मुक्ती नहीं । तामें सब जीव अरझे और वो कर्म उपासना की बानी सब संसार में बेधी, ताते संसार पर तवाई आई, बासना में अरुझ के आवागमन में परे । भला उनका तो भी अद्वैत सिद्धांत कैसा मानना, जो उनको अद्वैत अनुभव यथार्थ हुवा था तो ये कर्म उपासना द्वैत काहे को कहा । जो इस बात की पारख करो तो ऐसा मालूम होता है कि उनको भी दुगदुग रही कि अद्वैत है कि द्वैत है ताते द्वैत अद्वैत दूनो सिद्धांत किया। सोई दुगदुगी सब में बेधी है ताते जगत पर तवाई आई। अरे गुरुवा लोगों के घर में सुन गुण है मिथ्या धोखा है । आखिर बिचार करके देखो तो ना कछु ब्रह्म ही है ना कछु कर्म उपासनाही है

सब मिथ्या जीव का धोखा। इतनी बात न जाने कोई । इतनी बात किसी के परख में न आई, ताते बंधा बैल की नांई धोकेमें परे, सो तू परख के छोड देव । ये अर्थ ॥ ३२ ॥

हहा हाय हाय में सब जग जाई। हर्ष सोग सब मांहि समाई॥
हकरि हकरि सब बड़ बड़ गयऊ।हाहा मर्म न काहू पयेऊ ३३॥

टीका गुरुमुख—ह शब्द का अर्थ हंकार,हा कहिये हंकार जनित जो कछु कार्य हो, ताही की हाय हाय में सब जग जाई । प्रथम स्थूल का अभिमान तज्जनित स्थूल विषय-स्त्रीपुत्र घर धन,परिवार राग रंग, अच्छे अच्छे षटरस भोजन; देखने को अच्छे अच्छे रूप, सूंघने को अच्छी अच्छी सुगंध, स्पर्श करने को अच्छी अच्छी स्त्रियां एती वस्तु की प्राप्ति के वास्ते सब हाय कब मिलेगी हाय कब मिलेगी, ऐसा कहि कहि के सब संसार मरता है । फिर एतिक वस्तु जो मिले तो बडा सुख होता है हर्ष होता है औ न मिले जाता रहे तो बडा सोग दुख होता है । फिर सोचहि में मरते हैं औ नाना योनी में जाते हैं ताते आगे ही परख के छोड तो तेरे को बडा सुख होवेगा । दूसरा सूक्ष्म का अभिमान तज्जनित सूक्ष्म विषय—स्वर्गादिक प्राप्ती, देवादिक प्राप्ती,लोक परलोकादिक प्राप्ती, मंत्र तंत्र यंत्र सिद्धीकी प्राप्ती, राज्य-प्राप्ती, इंद्रासन प्राप्ती, विद्यादिक प्राप्ती ये मिले तो परम हर्ष सुख होता है औ फिर बियोग होय अथवा ना मिले तो बडा सोग दुःख होता है ताही में हाय हाय करते करते मरते हैं फिर नाना योनीमें जाते हैं ताते संपूर्ण परख के छोड तब तेरी स्थिति होवेगी आवागमन से रहित होवेगा । तीसरा कारण हंकार तज्जनित कारण विषय-योग प्राप्ती, समाधी प्राप्ती, सिद्धी प्राप्ती, वाचा सिद्धी, काया सिद्धी, मनसा सिद्धी, प्राणायाम, प्रत्याहार, भूत भविष्य वर्तमान सिद्धी परकाया प्रवेश

होना, गुप्त होना, प्रगट होना, आसन उडाना, जहां इच्छा करना तहां जाना, तांबे पर मूतना सोना होना, एक से अनेक हो जाना, अनेक से एक होना, दश मुद्रा, उन्मनी, हठयोग आदिक संपूर्ण प्राप्ती होय तो बडा खुशी औ नाश हो जाय या न होय तो महा दुःख । फिर वही साधना करके हाय हाय करते करते मरते हैं फिर गर्भवास को आते हैं ताते तूं परख के छोड तो पारख स्थिति होयगी । अब चौथा महाकारण अभिमान तज्जनित विषय । नित्यानित्य विवेक औ इहामुत्र फल भोग बिराग, शमादि षटक, शम, दम, उपरती, तितिक्षा, श्रद्धा औ समाधान मुमुक्षु दशा, ज्ञान की प्राप्ती में सर्व साक्षी ब्रह्म, मैं ज्ञानी मैं मुक्त औ सब बंध, ऐसी दशा जब प्राप्त हो तब बडा सुख न प्राप्त भई तो महा दुख; फिर हाय हाय करते करते मरते हैं औ गर्भबास को आते हैं । अगर ज्ञान को प्राप्त हो तो ब्रह्म बन के सब में व्यापते हैं फिर नाना सुख दुख भोगते हैं ताते तू सब परख के छोड । पांचवां हंकार कैवल्य तज्जनित विषय, मैं अद्वैत, मैंआत्मा, मैं अधिष्ठान, जगत स्थावर जंगम आदि सब मेरा रूप, जड चैतन्य सब मैंही घट मृत्तिका न्याय; जल गारा न्याय, सुवर्ण भूषण न्याय, बसन पुतरी-न्याय, मैं आत्मा । औ जो अनुभव प्राप्त हो तो बडा सुख और वही आत्मा जगतरूप भया तो बडा दुख, फिर उसी की हाय हाय में सब जग जाई औ हर्ष सोग सब माहि समाई । ताते तू परख के देख कि हकरि हकरि सब बडे बडे ज्ञानी ब्रह्मादिक गये । परंतु हाहाका मर्म कोई को प्राप्त भया नहीं । ये पांचो हंकार का मर्म कोई ने भी परखा नहीं कि एही पांचों हंकार जीव को बन्धन हैं, याहीसे जीव नाना दुख में परा औ बिडंबना भई । जो हंकार भास हुवा सोई हंकार रूपी जीव भया फिर उसी की बानी कथने लगा और उसी का पक्ष मजबूत हुवा । सो तूं परख के देख औ पांचों हंकार छोड इन में तदाकार

मत हो । ये मिथ्या भ्रम है पारख में थीर हो, जाते संपूर्ण ये भ्रम पर-
खने में आया सोई तेरी स्थित । ये अर्थ ॥ ३३ ॥

क्षक्षा छिनमें परलय सब मिटि जाई।छेव परे को तब समुझाई
छेव परे काहु अंत न पाया।कहैं कबीर अगमन गोहराया॥३४

टीकागुरुमुख--श कहिये क्षर, क्षर कहिये देह, क्षा कहिये देहकी
करतूत तो गुरु कहते हैं कि जेतिक देह औ देहसे संपूर्ण बानी, अनु-
मान सिद्धांत बना है सो सब छिन में नाश हो जायगा । कि देह
नाशवंत तो फिर देहसे जो कुछु बना है सौ कहां रहेगा, सभी नाश
छिन में होवेगा, उनके अध्यास से तेरे को चौरासी भोगना होवेगी ।
फिर छेव परे तब को समुझाई । अरे ये मानुष जन्म छूट जायगा
फिरे तेरेको कौन समुझावेगा । अरे ये मानुष तन छोड के फिर काहु
अंत न पाया । ताते गुरु कहतेहैं कि मैंने तेरेको आगे ही गोहरायके
कहदिया कि जो तूने मानुष देह पाया है अब वह मानुष जन्म अका
रथ मत खोवो । सबको परखके पारख रूप हो जाव नहीं तो फिर
चौरासीमें जा पडोगे फिर कछु तेरे को पारख मिलने का नहीं । औ
जबलग पारख नहीं मिलता तबलग कछु कसर मालूम होती नहीं।औ
जबलग सब कसर मालूम नहीं भई तबलग भूल छूटती नहीं। औ जब
लग भूल छुटती नहीं तबलग आवागवनसे रहित होता नहीं। भूल कहिये
ब्रह्म,भूल कहिये आत्मा, भूल कहिये ईश्वर,भूल कहिये करता,भूलकहिये
जगत,ऐसी संपूर्ण भूल जाते परखने में आवै सोई पारख गुरुपद।ताकी
प्राप्ती के हेतु गुरु की शरण में जाना, साधु सेवा करना औ पारखमें
थीर होना तब आवागवन से रहित होय। ताते आगे तेरेको मैंने
गोहराया कि गाफिलीमें मानुष तन मत छोड। ये अर्थ ॥ ३४ ॥

चौतीस अक्षरकी जाल तामें जीवन को सब बंधन हुवा । सो गुरुने चौतीसा ज्ञान कहिके सब परखाया।अब आगे ब्राह्मणकी मति वेद प्रमाण से बताते हैं सो सब विचार मान सुनो आगे मत औ कर्म सब बताय के औ फिर उसकी कसर सब बतायके गुरु पदकी स्थिति करेंगे ।

दोहा—स्थिरपद परख प्रकाश, गुरु सुख स्वरूप कबीर ।
पूरण चेरो चरण को, शरण आये की भीर ॥ १ ॥
त्राहि त्राहि साहेब शरण, हौं कछु जानत नाहिं ।
बीजक की टीका करी, आप पैठि जियमाहिं ॥२॥

इति ज्ञान चौतीसा टीका सहित गुरुकी दयासे संपूर्ण ।
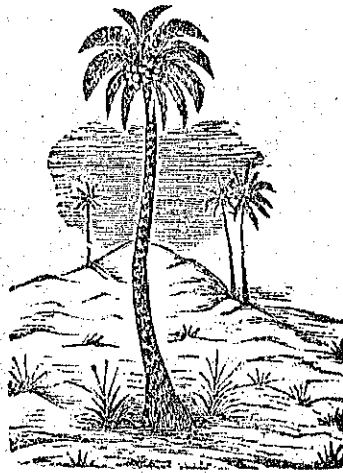
दया गुरुकी ।

॥ अथ विप्रमतीसी लिख्यते ॥

विप्रमतीसी ।

सुनहु सभन मिलि विप्रमतीसी । हरि बिनु बूड़ी नाव भरीसी ॥ ब्राह्मण होयके ब्रह्म न जानें । घरका यज्ञ प्रति ग्रह आनें ॥ जेहि सिरजा तेहि ना पहिचानें । कर्म धर्म मति बैठि बखानें ॥ ग्रहण अमावस और दुईजा । शांती पांति प्रयोजन पूजा । प्रेत कनक मुख अंतर बासा॥ आहुति सत्य होम की आसा ॥ कुल उत्तम जग मांहि कहावै । फिर फिर मध्यम कर्म करावै ॥ सुत दारा मिलि जूठो खाई । हरिभक्तांके छूति लगाई ॥ कर्म अशौच उच्छिष्टा खाई । मतिभ्रष्ट यमलोक सिधाई ॥ नहाय खोरी उत्तम होय आये । विष्णुभक्त देख दुख पाये॥ स्वारथ लागि रहे बेकाजा । नाम लेत पावक जिमि डाजा ॥ राम कृष्ण की छोड़िनि आशा । पढ़ि गुनि भये कृतम के दासा ॥ कर्म पढै औ कर्मको धावै । जेहि पूछा तेहि कर्म दृढावै ॥ निष्कर्मी की निंदा कीजे । कर्म करे ताही चित दीजे ॥ भक्ती भगवंत की हृदया लावै । हरणाकुश को पंथ चलावै ॥ देखहु कुमति केर परकाशा । बिनु अभ्यंतर भये कृतम के दासा ॥ जाके पूजे पाप न ऊड़े । नाम स्मरनी भवमा बूडे ॥ पाप पुण्य के हाथहि पासा । मारि जगत का कीन्ह बिनाशा ॥ ई बहैनी कुल बहनि कहावै । ई गृह जारे ऊ गृह मारे॥ बैठे ते घर साहु कहावै । भीतर भेद मन मुखहि लगावै ॥ ऐसी विधि सुर विप्र भनीजे । नाम लेत पीचासन दीजे ॥ बूडि गये

नहिं आपु संभारा। ऊँच नीच कहु काहि जो हारा ॥ ऊँच नीच है मध्य की बानी। एकै पवन एक है पानी ॥ एकै मटिया एक कुम्हारा। एक सबनका सिरजनहारा ॥ एक चाक सब चित्र बनाई । नाद बिंदके मध्य समाई ॥ व्यापिक एक सकल की ज्योती। नाम धरे का कहिये भौती ॥ राक्षस करनी देव कहावै। बाद करे गोपाल न भावै॥ हंस देह त्यजि न्यारा होई। ताकर जाति कहै धौ को कोई ।। श्याह सपेद कि राता पियरा। अवर्ण वर्ण कि ताता सियरा ॥ हिंदू तुरुक कि बूढो बारा। नारि पुरुष का करहु विचारा ॥ कहिये काहि कहा नहिं माना। दास कबीर सोईपे जाना ॥

साखी–बहा है बहि जात है। कर गहै चहुं ओर ॥
जो कहा नहिं माने तो। दे धक्का दुइ ओर ॥ १ ॥

टीका गुरुमुख–गुरू बोलते हैं कि वेद ने जो ब्राह्मणों की मती कही है सो सुनो औ इनका आचरण देखो। हरी कहिये ज्ञान सो ज्ञान बिना इनका ब्राह्मणपन डूबा । वेद बचन ऐसा है कि ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः । ब्रह्मविद् ब्राह्मणो भवति । ब्राह्मण काहे से कहिये, क्या जीव को ब्राह्मण कहना तो जीव सबका एकसा । जो देह को ब्राह्मण कहिये तो देह सबका एकसा पंच भौतिक। औ कर्म मार्ग से भी देह को ब्राह्मण कहा जाय तो पिता मरता है ताके देह-को पुत्र आदिक जराय देते हैं तो ब्रह्महत्या होना सो कछु होती नहीं तो देह ब्राह्मण नहीं। जो पंडित ब्राह्मण कहा जाय तो और और जाती में भी बडे बडे बुद्धिमान होते हैं कि जिनकी बात बडी बडी सभा में भी मंजूर होती है । यस्य बुद्धिः पंडा स पंडितः । ये शास्त्रकार ने कहा कि जाकी बुद्धी बडी पुष्ट सो पंडित, ताते पंडित भी ब्राह्मण नहीं। अब कर्म ब्राह्मण कहा जाय तो छत्री

को भी तीन कर्म का अधिकार है सो छत्री भी बडे बडे कर्मी औ दानी होते हैं। पृथिवी दान, गज दान, कन्या दान, गौदान हिरण्य दानादिक कर्म करते हैं तस्मात् कर्म भी ब्राह्मण नहीं। अब ब्राह्मण श्वेत वर्ण, क्षत्री रक्त वर्ण, वैश्य पीत वर्ण, शूद्र कृष्ण वर्ण, जो ऐसा कहा जाय तो चारों वर्ण सबही के दिखाते हैं तस्मात् वर्ण भी ब्राह्मण नहा। अब कोई ऐसा कहै कि ब्राह्मण मुख से पैदा होते हैं, क्षत्री भुजा से पैदा भये, वैश्य जंघा से पैदा भये, औ शूद्र पांव से पैदा भये, तो सबही भग से पैदा होते हैं। न कोई मुखसे पैदा होता है, न कोई भुजा से न कोई जंघा से, न कोई पांव से पैदा होता है, सब स्त्री के भग से पैदा होते हैं ताते ये भी कछु प्रमाण नहीं तस्मात् ये भी ब्राह्मण नहीं। कोई कहते हैं कि आयुष्य ब्राह्मण, तो ब्राह्मण सौ वर्ष जीते हैं औ क्षत्री पचास वर्ष, वैश्य पचीस वर्ष औ शूद्र बारह वर्ष जीते हैं तो ये भी कछु प्रमाण नहीं तस्मात् आयुष्य कछु ब्राह्मण नहीं। अब कोई कहेगा कि जाती ब्राह्मण, तो आन आन जाती में भी ब्राह्मण बडे बडे भये हैं सो सुनो। वशिष्ठ गनिका पुत्र, व्यासकी धीमर की कन्या से उत्पत्ती, छत्री पुत्र विश्वामित्र, हरिण पुत्र शृंग ऋषी, घडे से उत्पन्न अगस्ती, कमल से उत्पन्न ब्रह्मा पासी के पुत्र वाल्मीक ऋषी, गौतन से गौतम ऋषी, नारद दासी पुत्र, अनुचर ऋषी हस्तिनी के पुत्र द्रोण से द्रोणाचार्य, शूद्रिन से भारद्वाज ऋषी, मातंग ऋषी मातगी पुत्र, मांडुक ऋषी मेंडकी के गर्भ से उत्पन्न ऐसे ऐसे अनेक जाती में भी बडे बडे श्रेष्ठ ब्राह्मण भये हैं जिनको वेद ने भी मानाहै। तस्मात् जाती भी ब्राह्मण नहीं। तो ब्राह्मण किसे बोलता है वेद कि ब्रह्मविद् ब्राह्मणो भवति। जो समष्टि व्यष्टि एक करके अनुभव ब्रह्म जाने सो ब्राह्मण। सुवर्ण भूषण न्याय, घट मृत्तिका न्याय, तो ब्रह्मज्ञान जाको अपरोक्ष होय ताको ब्राह्मण कहिये ये वेद वचन। सो

ब्राह्मण होके ब्रह्म न जाने । जो ये सब ब्राह्मण कहलाते हैं परंतु ब्रह्म नहीं जानते । ब्रह्ममें भेद करते हैं, कुल अभिमान करते हैं, ताते वेद का वचन भी मानंदी इनको नहीं, औ गुरुका विचार भी नहीं, तो ये ब्राह्मण ऊंट का पाद ठहरे न जमीनके न आसमान के । अब ब्रह्म विचारको छोडा अब यज्ञ प्रतिग्रह में परे उसके पीछे लगे।जो कहीं यज्ञ होय तो हम को दक्षिणा मिले,जाते हमारा कुटुम्ब पोषण होय,तो ब्रह्म बिचार छोडा औ नाना प्रकार के मोह विषय में पडे ताते तृष्णा इनकी बढी अब इनको ब्राह्मण कैसे मानिये । अरे ब्राह्मण तो कछु वस्तु नहीं परंतु वेद के प्रमाण से जो ब्राह्मण मानिये; तो वेद का प्रमाण कछु ऐसा नहा, कि घर में यज्ञ में प्रतिग्रह में आसक्त होना । साधन चतुष्टय संपन्न होके ब्रह्म जाने सो ब्राह्मण ये वेद बचन । अरे जाने संपूण बेद शास्त्रादि चार खानी चार बानी पैदा की सो मानुष रूप ताको नहीं पहिचानता । औ कल्पना की बानी जो गाफिली से बनी है ताको लेके नाना प्रकार के कर्म औ नाना प्रकार के धर्म मिथ्या भूत ताको बखान करता है । औ सब जीवनको नाहक बाधताहै औ आपभी बन्धा है बंधेने नाना बंधन बनाया कि ग्रहण अमावस दुइजको दान करे औ नाना प्रकार के ब्राह्मण भोजन देय औ नाना प्रकार के ब्राह्मण को द्रव्य देय तो महा पुण्य होय स्वर्ग आदिक प्राप्त होय । इस प्रकार के बंधन जीवन पर परे ताते जीव का स्वतः पद बूडा।गृह शांती औ नाना प्रकार के प्रयोजन करना, श्राद्ध पक्ष विवाह जनेऊ आदि तिहवार नाना हव्य कव्य करना, जो ना हो सके तो महापाप नर्क को जावै । औ पूजा देव ब्राह्मण की यथा विधी करे तो महापुण्य होय स्वर्ग को जावै । जब ऐसे ऐसे बंधन जीवन पर पडे तो जीव मुक्त कैसा होय बिनु पारख ये बंधन कैसे छूटै । और भी इन यम लोगों के बंधन सुनो, ये कैसी आशा में बंधे हैं जो कोई भला आदिमी दौलत

वंत मरे तो हम को शय्यादान द्रव्य मिले,येही मुँहसेभी बोले और येही अंतर में भी बसे कि कहीं आहुती होय कहीं होम होय, तहां जीव हिंसा करवाना औ द्रव्य लेना। अरे उत्तम कुछ तो जगत में कहलाते हैं औ फिर फिर मध्यम कर्म करवाते हैं सो सुनो।शक्तीकी उपासना करके बाम मार्ग चलाते हैं,भैरवी चक्र करते हैं तहां चारो वर्ण बैठ के मीनमांस मद्य अन्न सब एकका जूठा एक खाते हैं स्त्री पुत्र सब मिल के। अरे उत्तम कहिये ज्ञान सो तो परखते नहीं औ मद्य मांसादि एकका जूठा एक खाते हैं। ये तो श्वानका राक्षस का कर्म करते हैं तो इनको उत्तम कैसे कहना जो विचार मान सो उत्तम अरे अपना कर्म तो ऐसा नीच औ शुद्ध हरिभक्त ज्ञानी भक्त जो संतन का महाप्रसाद लेते हैं तिनको छूति लगाते हैं। अरे आप तो अशौच कर्म करते हैं मद्य मांसादि खाते हैं एक का एक-जूठा औ ऊपर बडा आचार स्नान संध्यादि दिखाते हैं औ हरिभक्त शुद्ध ज्ञानी भक्त जो संतन का महाप्रसाद लेते हैं तिन को देखके नाम धरते हैं दुख पाते हैं। ताते ये ब्राह्मण मतिभ्रष्ट दुष्ट यमलोक को जाते हैं नानाप्रकार की नर्क योनी भोगते हैं। और अपने स्वार्थके वास्ते जगतकी खुशामद करते हैं औ यथार्थ इनका कार्य कोई बतावै तो अग्नि के माफक जरते हैं ऐसे विषई बावरे नर्क भोगते हैं। अरे भला वेद ने राम कृष्णादिक नामका स्मरण बताया सोभी शुद्ध सात्विक दशा धारण करके करते नहीं। राम कृष्ण की भी आशा छोडिन औ पढि गुनि के कर्मन के दास बने, आप भी कर्म पढते हैं औ संसार को भी कर्म दृढाते हैं। कहते हैं कि कर्म वर्णाश्रम के करना कोई कर्म लोप होवो मत, कर्मही में मुक्ति है, औ कर्म भ्रष्ट भया तो नर्क को जाते हैं। इस प्रकार से जेहि पूछै तेहि कर्म दृढावते हैं और निष्कर्मी की निंदा करते हैं। औ कहते हैं कि जो कर्मिष्ठ ब्राह्मण है ताकी सेवा पूजा करना औ निष्कर्मी को छुवो तो सचैल

स्नान करना इस प्रकार से ज्ञानलोप जीव कर्म के गदहे बने, सोई कर्म के बश नाना योनी में दुख भोगते हैं । औ उपासिकनकी बातें सुनो कि भक्ती भगवान की हृदय में लावते हैं, कहते हैं कि हम बैष्णव औ हरणाकुशका पंथ चलाते हैं । जो ऊपर तो स्वांग बैष्णव का औ अंतर में राक्षस शाक्त बने हैं जो मद्य मीन मांस भक्षण करैं सोई राक्षस तो इस प्रकार से दया का बना रखते हैं औ निर्दई होके राक्षसी पंथ चलाते हैं । देखो हे संतो इन ब्राह्मणन की सुमति-का प्रकाश भया। अरे बिना विचार कर्मनके गुलाम हो रहे हैं। अरे इनके पूजे कैसे पाप उडेगा कहीं स्याही के धोये स्याही जाती है। जो इनका नाम लेवेगा और जो इन ब्राह्मणन की आशा करेगा सो निश्चय भव में डूबेगा। ये ब्राह्मण जो हैं सोई भव का रूप हैं औ यही यम हैं औ यही काल हैं । पाप पुण्य की फांसी इन के हाथ में है जाते मारि जगत का कीन्ह बिनाशा। औ ई ब्राह्मण कुल संसार के तारक गुरू कहलाते हैं औ संसार को नाना प्रकार की कल्पना लगाय के गर्भाग्नीमें जराते हैं।औ ऊगृह कहिये जो जीव का ज्ञान घर है ताको मारि के लोप करते हैं। ऐसे जो ठग जीव के दुखदाई तेई बैठे इन जीवन के घर साहु कहाते हैं गुरु कहावते हैं। औ भीतर घर में बैठ के नाना प्रकार के भ्रम जीव को दृढ़ावते हैं, वही बात बाहर कहो तो मन में बुरा मानते हैं । ऐसी बुद्धि संसार में दृढ़ावते हैं कि ब्राह्मण को देवता के माफिक जानना औ उनका नाम स्मरण करना, ब्राह्मण को आवते देखना तो उनके पांव पड़ना, औ पीढ़ा बैठने को देना, ऐसी ऐसी बातें दृढ़ाय के अभिमान में बूड़ि गये अपने को संभारा नहीं, ऊँच नीच कहि कहिके मान बडाई में अपनपौ हारा। औ बेद बचन का प्रमाण तो ऐसा है कि ऊँच नीच बर्णाश्रम उपासना कर्म ये सब मध्य की बानी है बीच की बानी है अज्ञान दशा की, ये कछु

प्रमाण नहीं अनुभव जन्य वेद की अंत की जो बात है सो वेदांत प्रमाण एक आत्मा स्वजातीय विजातीय स्वगत भेद रहित, सर्वाधिष्ठान सर्वरूप। वही पवन, वही पानी, वही मिट्टी, वही कुम्हार, वही सभन का सिरजनहार। एक भ्रांति के चक्र पर संपूर्ण जगत् चित्र बनाया औ आप पटरूपी रहा नाद बिंदु में आपुही समाया, जीव भी आपही कहलाया। ब्यापिक एक सकलकी ज्योती। एक आत्मा स्वयं प्रकाशी संपूर्ण भरा है जैसा एक सुवर्ण ताके न्यारे न्यारे नाम धरे। इस प्रकार से नाम धरे क्या कहिये, बहुत नाम धरे क्या जगत कहिये संपूर्ण आत्मा है। वेद ने तो इस प्रकार जाने ताको ब्राह्मण कहा परंतु ये भी भ्रम है क्योंकि ये सब मनुष्य देहका अनुमान। अरे जाको एक आत्मा ऐसा भासा सो कछु एक आत्मा भी नहीं औ अनेक जगत भी नहीं वो हंस दोनोंसे न्यारा। परंतु बिना पारख एक अनेकमें अरुझा है सो तू परख के देख। वो हंस देह छोड के न्यारा होताहै तब कहो उसकी जाती क्या है। क्या ब्रह्म कहिये कि आत्मा कहिये ये तो सब देह का अनुमान देह छूटे मिट जायगा फिर उस हंसको क्या कहना। स्वेत कहिये कि स्याम कहिये, लाल कहिये कि पीला कहिये, अवर्ण कहिये कि वर्ण कहिये, गरम कहिये कि ठंडा कहिये, हिंदू कहिये किं तुरुक कहिये, बूढा कहिये कि बार कहिये, नारी कहिये कि पुरुष कहिये, ये विचार करो नाहक धोकेमें क्यों परे हो जो येती बातका द्रष्टा सो येते संकल्प भी नहीं वो तो शुद्ध ज्ञानमात्र है पारख पाय सबते न्यारा होताहै तब पारखरूप होके पारख भूमिका पर रहता। पर हे संतो कहिये काहि सब अनुमान कल्पना में अरुझे। मैंने तो बहुत कहा परंतु काहुके समझमें आई नहीं, ये जीव वेद ब्राह्मण के गुलाम बने, जो वेद कहै ब्राह्मण कहै सोई इनको प्रमाण।

स्वतंत्र होयके कछु परखते नहीं अब कहना तो भी किस को ये अर्थ ॥ १ ॥

ये विप्रमतीसी वेदं प्रमाण गुरूने कही कि ब्रह्मज्ञानी को ब्राह्मण कहिये। काहे के वास्ते ब्रह्मज्ञान सर्वत्र खंडन किया सो इहां कहनेका क्या काम। तो ये जीव सब नाना कर्म उपासना के फन्दे में परे औ नाना तरह का अभिमान ब्राह्मणोंने माना ताको खंडन करनेके वास्ते उनके वेदके मत से उनमें कसर बताई। कि ये अपनी मत छोडके अनाचार करते हैं तो ये ब्रह्ममत चीन्ह के अनाचार छोडे कर्म उपासना पक्ष छोडे औ ब्रह्म बने। फिर ब्रह्म का भी पक्ष छुडायके गुरुने पारख हंसपद स्थिर किया। ये अर्थ।

सोरठा—हे गुरू दीन दयाल। कहर भयो बड जीव पर ॥
परखायो सब जाल। कहरा निर्णय कहो मोहि ॥ १ ॥

इति विप्रमतीसी टीका गुरुकी दयासे संपूर्ण।

॥ दया गुरुकी ॥

॥ अथ कहरा लिख्यते ॥

कहरा १.

सहज ध्यान रहु सहज ध्यान रहु। गुरुके बचन समाई हो ॥
मेली सृष्टि चरा चित राखहु। रहहु दृष्टि लौलाई हो ॥
जस दुख देखि रहहु यह औसर। अस सुख होइ है पाये हो ॥
जो खुटकार बेगि नहिं लागे। हृदय निवारहु कोहू हो ॥
मुक्तिकी डोरि गाढि जनि खैंचहु। तब बझिहैं बडरोहू हो ॥
मनु वहि कहहु रहहु मन मारे। खिजुवा खीजि न बोले हो ॥
मान मीत मितैयो न छोडे। कमरू गांठि न खोले हो ॥
भोगउ भोग भुक्ति जनि भूलहु। योग युक्ति तन साधहु हो ॥
जो यह भांति करो मतवलिया। ता मत को चित बांधहु हो ॥
नहिं तो ठाकुर है अति दारुण। करिहैं चाल कुचाली हो ॥
बांधि मारि डण्ड सब लेहीं। छूटहिं तब मतवाली हो ॥
जबहीं सावत आनि पहूँचे। पीठ सांटि भल टूटिहैं हो ॥
ठाढे लोग कुटुँब सब देखे। कहै काहुके न छूटिहै हो ॥
एक तो निहुरि पांव परि बिनवै। बिनति किये नहिं माने हो ॥
अनचीन्हे रहेउन कियेहु चिन्हारी। सो कैसे पहिचनबेउ हो ॥
लीन्ह बुलाय बात नहिं पूछी। केवट गर्भ तन बोले हो ॥
जाकर गांठि समर कछु नाहीं। सो निर्धनिया ह्वै डोले हो ॥
जिनसम युक्ति अगमनकैराखिन। धरिन मच्छ भरि डेहरि हो ॥
जे कर हाथ पांव कछु नाहीं। धरन लाग तेहिसो हारि हो ॥
पेलना अछत पेलि चलु बौरे। तीर तीर का टोवहु हो ॥

उथले रहउ परहु जनि गहिरे । मति हाथहु की खोवहु हो ॥
तरके घाम ऊपरके भुंभुरी । छांह कतहुं नहिं पायहु हो ॥
ऐसेनि जानि पसीझेहु सीझेहु । कसन छतुरिया छायहु हो ॥
जो कछु खेड कियेहु सो कियहु । बहुरिखेड कस होई हो ॥
सासु ननद दोउ देत उलाटन । रहहु लाज मुख गोई हो ॥
गुरुभौ ढील गोमी भई लचपच । कहा न मानेहु मोरा हो ॥
ताजी तुर्की कबहु न साधेहु । चढेहु काठ के घोरा हो ॥
ताल झांझ भल बाजत आवै । कहरा सब कोइ नाचै हो ॥
जेहि रंग दुलहा ब्याहन आये । दुलहिनि तेहि रंग राचै हो ॥
नौका अछत खेवै नहिं जानै । कैसेकै लगबेहु तीरा हो ॥
कहहिं कबीर रामरस माते । जोलहा दास कबीराहो ॥ १ ॥

टीका मायामुख—सहज ध्यान कहिये सहज समाधी, सो माया का उपदेश ऐसा है कि हठयोग तारकयोग सब छोडके सहज समाधी अमनस्क योग करना । गुरुका वचन कहिये सोहं, सो सोहं शब्द घट घटका प्रकाशी है तामें सुरति समाय देना । प्रात समय उठना, पद्मासन या वज्रासन या सिद्धासन तीनोंमें कोई एक आसन लगाना औ सब सृष्टी का विषय व्यवहार विष प्रमाण जानके छोडना । शब्द स्पर्श रूप रस गंध, घर स्त्री पुत्र धन आदिक जो विषय सो सब त्यागके आठों पहर श्वासामें चित्त रक्खो । चलते फिरते सोते बैठते सदा श्वास शब्दमें लक्ष लय लगा के रहना लक्ष को बाहर निकारना नहीं । जो समय पायके बाहर निकला तो फिर बाहरकी विस्मृती करके लक्ष भीतर करना । प्रथमारंभ में जब साधन करेगा तब दुःख मालूम होवैगा परंतु जैसा दुख देखके इस वख्त में तू सहज समाधीमें रहेगा तैसा आगे सुख प्राप्त होवेगा । परंतु जब परमात्मा की एकता होवेगी

सहविकल्प समाधी तुर्या अवस्था पावेगी तब संपूर्ण ऋद्धी सिद्धिसहित सुख तेरे को होवेगा । औ ये स्वरूप प्राप्ती का मन में बडा खुटका रखना जो कब मेरी निर्विकल्प दशा होवेगी औ मेरी स्थिती कब होवेगी ऐसा खुटका जो जीव को जल्दी ना लगे तो हृदय की मोह ग्रन्थी छूटने की नहीं।जबलग हृदय की मोहग्रन्थी छूटती नहीं तबलग कछु वैराग्य होता नहीं । औ जबलग वैराग्य नहीं तबलग कछु योग सिद्धि ज्ञानसिद्धि होती नहीं। खुटका कहिये पश्चात्ताप, सो पश्चात्ताप होय बिना हृदय की मोहग्रन्थी छूटे नहीं औ मोहग्रन्थी छूटे बिना वैराग्य नहीं। जबलग वैराग्य नहीं तबलग ज्ञानसिद्धि न योगसिद्धि ताते वैराग्य पश्चात्ताप सहित मुक्तीकी डोरी गाडे । श्वासोच्छ्वास सोहं सोहं याही शब्द में सुरति डोरी लगी रहे उसते अलग होने पावे नहीं।तब बझि हैं बडरोहूहो । जब शब्द सुरति एक होवेगी तब बडरोहू मन उन्मन हो जायगा।मनु बहि कहहु रहहु मन मारोसदा अपने मन को प्रबोधकरत रहना सोहं करके संकल्प उठाना हंसो करके विकल्प करते जाना । इस प्रकार मन कह के मनको मारना बाहर जाने नहीं पावै । औ खिजुवा खीजि न बोलै । जो कोई संसारमें उपहास करै या निंदा करै उस से खीजि के नहीं बोलना मानू मीत तितैया न छोडै । औ जो शब्द रूपी परमात्मा को माना है ताकी मिताई न छोडै आठों पहर नाम धुनि लगी रहै। चाहे तन मन धन सब जाय पर हरि नाम माला छूटै नहीं । औ कमऊ कहिये मन, सो मन पवनकी गांठी डार देना जामें छूटने न पावै । भोगउ भोग भुक्ति जनि भूलहु, योग युक्ति तन साधहू हो। भोगउ कहिये जीवको, सो योगी लोग जीव को उपदेश करते हैं कि परपंच के भोग भुक्ती मत भूलो नर्क बास होयगा चौरासी में जावोगे ताते योग युक्ति करके तन को साधो ब्रह्म प्राप्ती होवेगी। जो

यहि भांति सदा उन्मनी में मग्न हुआ चाहो तो तमत योगमतको चित्तमें बांधो। नहीं तो ठाकुर है अति दारुन, करि है चाल कुचाली हो। योगी लोगों के मत के प्रमाण से जो आठों पहर साधना न करेगा तो ठाकुर मन अति दारुण है चाल कुचाली करेगा अर्थके विषयन में चलाय देवेगा। इंद्रिन के विषय में बासना बांधके तुम्हारेको मार लेवेगा समाधी सिद्धि होने देने का नहीं नाना योनी में डार के नाना दुख तुम्हारे को देवेगा तब सब तुम्हारी विषय मतवाली छूट जायगी। नहीं तो ये मनको वैराग्य योग अभ्यास करके जीतो बन्धमुक्ती का कारण मनही है।अरे अंत समय में जब यमके दूत आवेंगे औ तुम्हारा प्राण खैंचेंगे, तब तुम्हारे पीठ पर कोडे मारेंगे औ नाना प्रकार की तुम्हारी यातना होवेगी। तब लोग कुटुम्ब सब ठाढे देखेंगे कोई तुम्हारे को छुडाय नहीं सकने के और किसी के कहे तुम छूट भी नहीं सकने के।जब यमदूत आय के फांसी डार के जीव को पकडते हैं औ मुस्क बांध के यम लोकको ले जाते हैं, तब जीव बहुत करुणा करता है औ पांव पडता है नाना प्रकार की बिनती करता है। कहता है कि मेरे को देह में से मत निकारो मैं तुम्हारे पांव पडता हौं। मेरी मेहरी से बोल लेने देव, मेरे पुत्र को देखने देव मेरे भाईबंधुमा बाप से मिल लेने देव, मेरा पैसा टका तपास लेने देव।परन्तु यमदूत नहीं मानते बांध के ले जाते हैं। तो अनचीहें रहेउ न कियहु चिन्हारी, सो कैसे पहिचनबउहो। अरे जबलग इंद्री ज्ञान में प्रकाश है औ उमर छीन नहीं भई तरुण अवस्था है, तबलग योग करके मन जीत के परमात्मा को चीन्ह लेना तो आवागमन से रहित होय, यम की यातना से बचे, अंतमें ब्रह्मरूप हो जाय।औ तरुण अवस्था में योग किया नहीं परमात्मा को चीन्हा नहीं, जब अंतमें चोला छूटेगा तब कैसे पहिचानेगा। लीन्ह बुलाये बात नहि पूछी, केवट

गर्भ तन बोलै हो । केवट जो योगी है तिनकी शरण में आये नहीं ; तनके अभिमान औ माया में भूला। ताते इन जीवन को यमने बांधके बुलाय लिया औ कुछ बात नहीं पूछी नाना प्रकार का दुख दिया। ये अर्थ । जाकी गांठि समर कछु नाहीं, सो निर्धनिया होय डोल हो । गुरुमुख—अब गुरू कहते हैं कि जाके पास कछु बिचार धन नहीं सो जीव निर्धनिया, निगुरे अज्ञानी होकर फिरते हैं । समर कहिये धन, सो विचार रूपी धन जाके पास नहीं सो निर्धनिया कहिये बिचारहीन होके गुरुवा लोगों के फंद में मारा मारा फिरता है । जिन गुरुवा लोगन ने आगे ही जीवन को धरने के वास्ते नाना युक्ती औ बानी कर करके धरी है सोई बानी अब गुरुवा लोग लेके सब जीवन को पकड़ा बंधन दिया। कहा कि कर्म कांड, उपासना कांड, योग कांड, फिर ज्ञान कांड, ये ब्रह्मादिक बडे बडे अचारिन का प्रमाण है औ वेद का प्रमाण है। सो ये चारों कांड का सब जीव यथाविधि आचरण करैं तो जीव की मुक्ति होती है । अगर कोई जीव आचरण न करेगा ये चार कांड से बाहर परेगा,सो ईश्वर का द्रोही, वेद का द्रोही,उसको यम ले जाके नाना प्रकार के दुख देवेंगे फिर नर्क में डोलैंगे । ऐसा डर बताय के धरिन मच्छ भरि हो । मच्छ कहिये जीव , देहरि कहिये संसार सो संसार भरे के जीव को गुरुवा लोगों ने मुक्ती का लोभ औ नर्क का डर बताय के सब को बंधन दिया । अब जीव जाके हाथ पांव कछु नहीं सो हरी, सो परमात्मा को कर्म उपासना योग ज्ञान करके धरने लगे।तो ये आश्चर्य।कि जाके अवेव सहित कछु नहीं सो परमात्मा काहे का संपूर्ण जीव की कल्पना, अपनी कल्पना के जाल में जीव आपुहि बंध हुवा। पलना कहिये देह ,सो गुरु कहते हैं कि जब लग ये देह है तब लग सब कल्पना औ अनुमान ब्रह्म आदि जेते हैं सो सब

को परख के पेल दे छोड दे औ पारख गुरुपद पर चल। हे बौरे दि-वाने तीर तीर क्या टोवता है अरे ये गुरुवालोगोंके तीर नजदीक क्या ढूंढता है इनके पास संपूर्ण भ्रम है औ कछु नहीं। अरे कहां यम और कहां परमात्मा है ये सब मन का धोखा।तू परखके देख औ उथलेई रहो बिचार करके स्थूल में ही रहो, गहिरे सूक्ष्म कारण महाकारण कैवल्य में मत परो । अरे हाथ का मानुष देह मत खोवो, नाहक जड उ-न्मत्त पिशाच मत होवो ,योग तपस्या मत करो काहे के वास्ते शून्य में समाय के जड होते हो औ अपना मानुष देह काहे को खोते हो। सतसंगमें विचार करके सब भ्रम परख के छोड देव औ पारखरूप हो रहो। सब तत्वमस्यादि पद नीचे छोड के सर्वोपर हो रहो। तरकै घाम उपर के भुंभुरी, छांह कतहुं नहिं पायहु हो । हे जीव तेरा संसार में गुरुवा लोगन का बिरह घाम बहुत बढा ताते जीव त्रिविध ताप में जरने लगे ।सो गुरुवालोगों की बानी के प्रमाण से भुंभुरी जीव यनो ऊपर स्वर्गादिक आशा औ ब्रह्मांड में जाने की आशा औ ब्रह्म में मिलने की आशा लगाई । सो कोई योग औ कोई कर्म करने लगा परंतु आसरा कहीं भी न मिला त्रिविध तापमें जरताही रहा जीव। त्रिविध ताप कहिये, एक ताप स्त्री पुत्र धन, दूसरा ताप देह के रोग ज्वरादिक, तीसरा ताप काम क्रोध लोभ मोह हंकार ये तीन ताप तर के, अब ऊपर के ताप सुनो, बिरह वैराग तपस्या । ये छै बिधि ताप में जीव सब जरते हैं, कहीं छांह पावते नहीं। तो हे जीव तुम्हारे को स्वतःपारख कछु भई नहीं ताते जैसा गुरुवा लोगों ने औ वेद पुराणों ने बताया ऐसेही निश्चय जान के पसीझेउ मोहित भयेउ औ बिधिताप में सीझेउ जरिउ । तो कसन छतुरिया छायहु हो। कसन कहिये बंधन, छतुरिया कहिये देह, सो तू छै विधि ताप में जरखे आखिर गर्भ-बास में आय के चोला पांच तत्व का धारण किया । तो ये चोले

में क्या गुरु पारख बिना तेरे ताप चुकते हैं । गर्भ में भी तीन ताप होते हैं, एक तो मल मूत्र नर्कमें से बजबजाता रहता है सो भी जीव को महा दुख होता है । दूसरा हाथ पांव बँधे हुये गर्भ में रहता है, तहाँ जठराग्नी का बड़ा तडाका लगता है, जैसा लोहे की भट्टी पर जीव को बैठाया और तरे से भांथी फूका तो ऊपर तलमलाता है तैसा गर्भ में जीव दुख पाता है । तीसरा पैदा होता है तब पवन लगता है तो जैसे तीर लगते हैं वैसे दुख होता है । ये त्रिविध ताप में गर्भ में भी जीव जरता है औ बाहर आया तो वही ताप बने हैं। जो कछु खेड कियेहु अरे जो कर्म तू आगे अनेक जन्म में करता आया है सोई कर्म अब इस जन्म में भी करता है अब आगे तेरे कर्म क्या होवेंगे, फिर तू गर्भवास को जायगा औ ताप में जरेगा, खेड कहिये कर्म, सासु कहिये संशय औ ननद कहिये नेह सो विषयन का औ स्त्री का नेह औ बानी का संशय, ये दोऊ तुझे उलटाय पलटाय छै विधी ताप में जराते हैं औ तू भी इनको छोडता नहीं जो कहीं विचार सुना तो भी उस वक्त तो लजाता है, कहता है कि स्त्री पुत्र धन ये संपूर्ण जीव को बंधन हैं येही बंधन से जीव दुख नर्क भोगता है । ऐसा विचार जबलग सुनता है तबलग अपने कर्म न से लजाता है फिर विचारसे उठता हैऔ स्त्री पुत्र धन का मुँह देखता है तो फिर मोहित होता है औ विचार की तरफ से मुंह छिपा के फिर प्रपंच विषय में आंखी मूंद कर पडा रहता है कहता है कि, हम गेही हमको विचार काहे को चाहिये, बिचार बडा कठिन है। ऐसा मूढ दुखहु को सुख कर मानता है औ सुख छिपाय के रहता है । येही रीति से बानी में जो जीव बंधे हैं तेहू सुनते हैं कि योग कर्म उपासना संपूर्ण जीव को बन्धन है परन्तु छोडा नहीं जाता, विचार की तरफ से मुँह छिपाते हैं औ कर्म उपासना योग करते हैं तो देखो ये लोगन

को बंधन का मोह भारी पडा अब मुक्ती कैसे होय औ आवागवन से रहित कैसे होय । गुरु भौ ढील गोनि भई लचपच । अब गुरु ब्रह्मादिक शिवादिक सब ढीले पर गये; कि स्वरूप का सिद्धांत करते करते थके तब कहा कि परमात्मा निर्गुण निराकार अनिर्वाच्य निअक्षर । तो जहां से निराकार निर्गुण निअक्षर ऐसा जाको भासता है तो क्या है ये पारख न आई । तब थक के बोले कि मैं ही ब्रह्म,मैं ही निराकार मैं ही निअक्षर, मैं आत्मा मैं अधिष्ठान, औ जगत सब मेरा स्वरूप आत्मा ही है । थक के ऐसा सिद्धांत करके उनकी गोनी लचपच हो गई मर गये । उनके सिद्धांत से तोबो जगत रूप हो रहे, अब हे जीव तुम्हारी कौन दशा होवेगी। कहा न मोहहु मोरा हो । अरे आगे भी जो कोई बडे बडे भये तिनको भी हमने बहुत समझाया परन्तु बानी औ स्त्री का मोह उनसे भी नहीं छूटा, उन्होंने भी, बिचार की तरफ से मुंह छुपाया हमारा कहा नहीं माना । औ अब उनके बानी का औ स्त्री का मोह तुम से भी नहीं छूटता, बिचार की तरफ से मुंह छिपाते हो औ मेरा कहा नहीं मानते, अरे तो तुम्हारी कौन दशा होवेगी । ताजी कहिये माया, माया कहिये काया, सो तूने काया को स्त्री की तरफ से कधी साधे नहीं, अरे तुम स्त्री के बीच में आसक्त हो गये । मास चाम का कीडा जैसा चाम में आसक्त रहता है, जो मास चाम छूटे तो प्राण देता है तैसे तुम मास चामके कीडे बने । तुर्की कहिये मन को, मन कहिये नाम कहिये, ब्रह्म कहिये,शब्द कहिये,भ्रम कहिये सो जोजो नाम औ जो जो शब्द औ जोजो सिद्धांत औ जोजो भ्रम तुम्हारे मन में उठा ताही में तुम आसक्त भये बंध भये; साधे नहीं बिचारके छूटे नहीं ।ताजी तुर्की दोनों एक घोडा औ मन माया दोनों एक देही, मन नाम औ माया रूप, तो स्थूल सूक्ष्म कारण महाकारण औ कैवल्य ये संपूर्ण रूप माया औ नाम मन, याको साधे नहीं परख के छोडे

नहीं।औ काठके घोडा चढेउ।काठका घोडा कहिये कि जो अपने चला- येसे चले उसमें स्वतंत्र चलन शक्ती न होय सो काठ का घोडा तो का- ठका घोडा कहिये योग, काठ का घोडा भक्ती काठ का घोडा कर्म काठ का घोडा उपासना येते जीव के चलाये बिना चलते नहीं सो ऐसे जड घोडनपर तू चढा तो पारख कैसे होयगी। अरे जबलग तू चलायेगा तब- लग ये चलेंगे औ जब तुम्हारा चोला छूटेगा तब ये सब ही रह जायेंगे तुझे ये कैसे पार करेंगे। तो देखो हे संतो काठके घोडेपर चढके सब कोई नाचते हैं, कीर्तन करते हैं, झांझ मँजीरा बजाते हैं। औ जा रंग से दुलहा गुरुवा लोग बिवाहने आते हैं ताही रंग से दुलहिनी जीव राचते हैं धोखे में पडते हैं,अरे सब कोई कहर बिरह में नाच रहे हैं औ नौका कहिये देह; सो जबलग मानुष देह साबुत है तबलग खेबै नहीं जानेहु परखे नहीं जानेहु। कैसे के लग बहु तीरा हो। कैसे आवागवन से बचोगे। गुरू कहते हैं कि रामरस याते माते जो- लहा दास कबीरा हो। दास कबीरा कहिये जीव, जोलहा कहिये गुरुवालोग,सो दोनों कर्म योग उपासना भक्ती ज्ञान करके राम रसमें माते मिथ्या धोखेमें भूले। राम कहिये जो सबमें रमा है ताके रस अनेक विषय, अनेक कल्पना, अनेक अनुमान, तामें राते जीव सब। मालिक दूसरा बनाय के उसके आप दास बने औ उसी के प्रेम में माते। ये अर्थ ॥ १ ॥

कहरा २.

मत सुनु मानिक मत सुनु मानिक। ह्रदया बंद निबारहु हो ॥
अटपट कुम्हरा करै कुम्हरया। चमरा गांव न बांचे हो ॥
नित उठि कोरिया पेट भरतु है। छिपिया आंगन नाचे हो ॥
नित उठि नौवा नाव चढतु है। बरही बेरा बोरे हो ॥

राउर की कछु खबरि न जानेहु । कैसेके झगरा निबारे हो ॥
एक गांव में पांच तरुणि बसे । तेहिमा जेठ जेठानी हो ॥
आपन आपन झगरा प्रकासिनि । पियासोंप्रीतिनसाइनि हो ॥
भैंसिन माहि रहत नित बकुला । तिकुला ताकिन लीन्हा हो ॥
गाइन माहि बसेउ नहिं कबहूं । कैसेक पद पहिचनबेउ हो ॥
पंथीपंथ बूझ नहिं लीन्हा । मूढहि मूढ गवांरा हो ॥
घाट छोडि कस औघट रेंगहू । कैसेकै लगबेहु तीरा हो ॥
जतइत केधन हेरिन ललचिन । को दइतके मन दौरा हो ॥
दुइ चकरी जनि दरर पसारहु । तब पैहो ठीक ठौ राहो ॥
प्रेमबाण एक सतगुरु दीन्हो । गाढो तीर कमाना हो ॥
दास कबीर कीन्ह यह कहरा । महरा मांहि समाना हो॥२॥

टीका गुरुमुख–मानिक कहिये जो मानी हुई वस्तु, मानी हुई वस्तु ब्रह्म मानी हुई वस्तु अनेक देवता औ मानी हुई वस्तु कर्म उपासना भक्ती ज्ञान योग, जो मानंदी सोई बंधन, सो तू बंधन की बात मत सुने । हृदयाबंद निवारहु हो।नाना बानी, नाना कल्पना औ नाना अनुमान जो गुरुवा लोगों ने दृढाये हैं औ तूने जो जो हृदय में बंधन माना है स्त्री पुत्र धन विषय आदिक, सो सब परख के निवारण करो, नहीं तो बंधन में बंधे गर्भयोनी में जावोगे । अट-पट कुम्हरा कहिये मन, सो नानाप्रकार की कल्पना करता है औ नाना बासना में बंध होता है, नाना कर्म करता है तैसे चोले जीवको प्राप्त होते हैं । जैसी इच्छा कुम्हार की होय औ जैसा चित्त लगाय के क्रिया करै तैसी हँडिया बने।तद्वत मन जैसी कल्पना करै औ कल्पना में आसक्त होके जैसी किया करै तैसी देह जीव को प्राप्त होय । परन्तु चमरा गांव न बांचे हो । अरे कुम्हार नाना प्रकार की हँडिया बनाता है परन्तु वह बनाता ही जाता है यह फूटती ही जाती है ॥ तद्वत मन

नाना चोले उत्पन्न करता है परन्तु चमरा गांव न बांचै हो । चमरा गांव कहिये जो चर्म मांस हाड नाडी मल मूत्र का गांव देह,सो अनेक प्रकारकी देह जीवको होती है राजदेही दरिद्रदेही औ सब नाश हो जाती है ताते संपूर्ण मिथ्याभूत जानके आसक्ती छोड । नित उठि कोरिया पेट भरतु है,छिपिया आंगन नाचेहो । कोरिया कहिये गुरुवा लोग, जिन्होंने नाना प्रकार के कपडे बिने; नाना बानी ग्रंथ बनाये सो गुरुवा लोग रोज बाजार भरते हैं नाना बानी नाना ऋषिन का सिद्धांत बताते हैं नाना ग्रंथ बानी बाचते हैं, सो सुनि सुनि छिपिया आंगन नाचे हो । छिपिया कहिये जो कोरीके पास से कपडा लेकरके औ जीवन को बेंचे सो छिपिया,छिपाया कहिये भक्त, सो जा बानी औ जा सिद्धांत की जाकी भक्ती है सोई बात गुरुवा लोगन से पूछी सोई बात गुरुवा लोगोंने उपदेश दिया सो उपदेश पायके भक्ती सहित गुरुवा लोगोंके सामने नाचने लगे । नित उठि नौवा नाव चढतु है, बेरही बेरा बौरे हो । अब नित उठि जीवन को गुरुवालोग की दुकान पर उपदेश होनेलगा । नौवा कहिये संसारी जीव, ताको भक्तलोग नित नाम नौकापर चढातेहैं औ बारम्बार तत्त्वमसी कहिये डुबाते हैं जग चौरासी में जीव को डुबाते हैं।कोरिया ब्रह्मादिक व्यासादिक वाल्मीकादिक,छिपिया सनकादिक शुकादिक नारदादिकऔनौवा सब संसार, कि शास्त्राचारी वेदाचारी सोई कोरिया औ वैदिक शास्त्रिक पुराणिक ये छिपिया, नौवा सब संसार,तो ये सब मिलिके जीवको भ्रममें डुबाते हैं । राउर कहिये आप जीव, सो अपनी तो खबर है नहीं। तो ये झगरा कैसे निबेरोगे । अरे सबही झगरा तुम्हारी गाफिलीसे खडा हुवा है, जो परखके अपने को चीन्हो तो गाफिली भी उडजाय औ झगरा भी टूट जाय । एक गांव देह, पांच तरुणी पांच तत्व, औ पांच तरुणी क्रियाशक्ती द्रव्यशक्ती ज्ञानशक्ती इच्छा

शक्ती आनंदशक्ती औ जेठ जेठानी बानी, सो इन आपन आपन झगरा प्रकाशा । औ इनका पिया जीव, सो जीव से प्रीति नसाय के अपने अपने विषयन में लगी दूसरा बंधन बनाया । ये अर्थ । भैसिन मांहि रहत नित बकुला तिकुला ताकी न लीन्हाहो—मायामुख याको अर्थ आगे कहेंगे—अब गुरुमुखका बिरह अर्थ सुनो—गुरु कहते हैं कि जैसा सर्प मणिका आशिक रहता है छिनभर मणीको भूलता नहीं । जो मणीको लेने व्याध आते हैं सो लोहेका पींजरा चारों तरफ छूरी लगाय के ले आवते हैं औ कहीं झाड देखके उसके ऊपर बैठते हैं । फिर सर्प जब रातको चरने निकरता है तब मणी रख देताहै ताके उजियारे में चरता है ।सो व्याध उस मणी के ऊपर पिंजरा धर देताहै फिर सर्प दौडताहै मणी लेने के बास्ते सो मणी मिलती नहीं तब छूरिन पर मूंड दैदै मारता है फिर शिरच्छेद होके सर्प मरता है जो वह सर्प पहले ही मणीका मोह छोडता तो काहे को शिरच्छेद होता । तैसा तूने स्त्री माणीक माना है, सो ता स्त्री के विषय में मरा जाता है । एक स्त्री दूसरी बानी ये दो बंधन जीवको न होय तो जीव सदामुक्त है । सो तू स्त्री के वचन औ शृंगार मत सुने । तेरे हृदय में पैठके बंधन होवेगा तुझे जकड डारेंगे। सो तूं स्त्री की बात औ गुरुवा लोगोंकी बात मत सुने परख के बंधन का निरुवारा करडार । अट पट कुम्हारा मन सो सदा विषयन के संकल्प उठाता रहता है औ विषयन में आसक्त रहता है,केतेउ विषय भोग रात दिन करो परंतु मनकी तृप्ती नहीं होती । फिर चमरा गावँ इंद्री सब नाश हो जाती हैं औ विषय बासना तो दूनी होती है । फिर वही बासना में जीव का चोला छूटताहै फिर विषयन का कीडा होताहै । नौवा जीव, रोज मनरूपी नौकापर चढता है। विषय बयार उडाय के स्त्रीके पास ले जातीहै तब स्त्री नौका सहित जीव को पकड के भगचक्र में डुबाय

देती है। जब श्रृङ्गार बा स्त्री की बात जीव ने सुनी कि मनका संकल्प उठा औ विषयन का ध्यान बैठा। तब ऐसा मनमें आने लगा कि स्त्रियन के पास बैठना, उनको देखना,उनसे बात करना फिर विषय बयार उडाय के स्त्री के पास ले चली। जब स्त्रियन के पास एकांत लोकांत बैठने लगा औ उनकी मुँहकी बातें सुनने लगा तब काम उठने लगा जैसे गाढी अग्नीको पवन लगे तद्वत्, तब कोई विवेकी वर्जने लगे तो क्रोध आने लगा। औ फिर नाना प्रकार से लोग हँसने लगे नसीहत करने लगे तब मोह भया। मोह से अकिल में भ्रमहुवा औ भ्रम से ज्ञान बुद्धी सब नाश हुई फिर चौरासी का कीडा जीव हुवा। नित उठि कोरिया पेट भरतु है। कोरिया कहिये स्त्री, जाने संसार पट बिन डारा सब जीवन को चौरासी में गूथा। सो स्त्री नित उठिके नाना श्रृङ्गार करती है औ नाना मोहरूपी बानी बोल के जीवन को भगमुख से खाती है, सब जीवन का रेत आकर्षण करके अपना पेट भरती है। ये स्त्री नित नित पुरुषनका पुरुषार्थ हरती है परन्तु कधी तृप्ति नहीं होती। ये जीव सब स्त्रियन के संगमें कामी भये सो जैसी स्त्रियां पुरुषन को नचाती हैं तैसे तैसे नाचते हैं कामातुर होके पाँव परते हैं, उठो कहो तो उठते हैं, बैठो कहो तो बैठते हैं, सोवो कहो तो सोते हैं, ऐसा जो जो कहती है सोई सोई करते हैं। राउर की कछु खबरि न जाने हु। राउर कहिये स्त्री, इनकी खबर तो जानी नहीं कि सकल भाँति से बंधन रूप है अब आवागवन का झगरा कैसे छुटेगा। एक गांव एक देह में पांच तरुणि बसे। पांच तरुणी कहिये पांच इंद्री, कान इंद्री स्त्री के शब्द सुने में खुशी है, आंखि इंद्री स्त्री के रूप देखने में खुशी है, नाक इंद्री स्त्री का सुगन्धी सूँघने चाहती है, जीभ इंद्री स्त्री का अधररस चाहती है, त्वचा इंद्री स्त्री का स्पर्श चाहती है, सब में जेठ जेठानी लिंग इंद्री

सो तो स्त्री के विषयमें बंध करना चाहती है भगरस लेना चाहती है। सो अपने अपने बिषय के हेत देह में रार मचाई है । इनका पिया जो जीव ताके कल्यान की प्रीती तो काहू को नहीं औ जीव को नाश करने के हेत विषयन से प्रीत लगाई । ये अर्थ । माया— मुख—भैंसिन मांहि रहत नित बकुला तिकुला ताकिन लीन्हा हो। अब माया ने गुरु का वैराग्य अर्थ सुनि के जीवन को मिलित उपदेश करती है सो हे संतो तुम परखो। भैंसी कहिये इंद्री, बकुला कहिये मन, सो माया बोलती है कि ये संसार का मन तो इंद्री बिषय में नित रहता है। तिकुला कहिये टीका सो तारक योग संधान करके चां-चरी मुद्रा में मन लीन भया नहीं, परमपद की प्राप्ती कैसे होयगी। चांचरी मुद्रा कहिये त्रिकुटी के ऊपर टिके, ऊपर नजर लगावै दृष्टी से आकाश देखे तब मोतिन की झरलगे औ परम शुभ्र ज्योति पर-मात्मा ताके दर्शन पावे तामें मन लय करे। औ गाइन मांहि बसउ नहिं कबहूं, कैसेक पद पहिचनबेउ हो। गाई कहिये नाडी, सो इंगला पिंगला एक करके सुषमना नाडी में उनमन ध्यान करके कबहूं बसे नहीं। ये जीव ब्रह्मपद को कैसे प्राप्त होंगे कैसे पहचानेंगे। पंथी पंथ बूझ नहिं लीन्हा, मूढहि मूढ गवारा हो। पंथी कहिये जीव को, सो जीवने योगी लोगों की शरण में जायके ब्रह्मांड का मार्ग बूझ नहीं लिया ताते ये संपूर्ण जीव मूढहि मूढ गंवार हैं, इनको ब्रह्म अनुभव कैसे होयगा औ ये कैसे कालसे बचेंगे। जबलग हठयोग राजयोग का मार्ग जीव को नहीं प्राप्त होयगा तबलग जीव की मुक्ति नहीं। घाट छोडि कस औघट रेंगहु । घाट कहिये रास्ता, औघट कहिये रा-स्ता, सो रास्ता पाँच प्रकार का, पपीलमार्ग, कर्ममार्ग, विहंगमार्ग, तारक योग, कपी मार्ग हठयोग, मीन मार्ग अमनस्क उन्मनी योग, शेष मार्ग ज्ञान सांख्य योग, ये पांच मार्ग छोड़ के और सब औघट,

सो ऐसे मार्ग जो जीव को मालूम नहीं औघट इंद्री के संग जो रहेगा सो कैसे भौसागर से पार होवेगा। इस प्रकार से गुरुवा लोगोंने जीव को हढाया। ये अर्थ। गुरुमुख—जतइत के धन हेरिन ललचिन, कोदइत के मन दौरा हो। गुरु कहते हैं जतइत कहिये ब्रह्मादि गुरुवा लोग उनके योग ध्यान भक्ती ज्ञानरूपी बानी हेरिन खोजिन, पढ के ललचाइन अर्थ धर्म काम के वास्ते, सो कोदइत कहिये जीव याहू को मन दौरा। काहेते कि गुरुवा लोगन की बानी में योग, भक्ती ज्ञान का महात्म बहुत सुना ताही ते। सो हे भाई दुइ चकरी जनि दरर पसारहु। एक चकरी संसार के नाना विषय भोग यामें जनि ददर पसारहु। ददर कहिये बासना तृष्णा चाहना सो संसार के विषय भोगन में मत पसारो ये बंधनरूप है। औ दूसरी चकरी बानी ताके बिषय भोग स्वर्गादिक योगादिक ब्रह्मादिक ऋद्धि सिद्धि आदिक चकरी जीव को बंधन रूप है ताते इनमें भी बासना तृष्णा चाहना मत पसारो मत करो। ये सब जीवको बंधन है ताते इनको भी परख के छोडो! तब पइहो ठीक ठौरा पारख ठौरा॥ ये अर्थ। प्रेमबाण जो सतगुरु ब्रह्मादिक गुरुवा लोगों ने दिढाया है संसार में, सोई गाढो दृढ अनुमान, तीर लक्ष, कमान देहसे उठा, ता बानी अनुमान से दृढ लक्ष लगा। सो जीव उस अनुमान का दास बना औ इस प्रकार से कहर किया। संसारमें नाना उपासना, नाना कर्म, नाना तपस्या, नाना मत, नाना योग, नाना प्रकार की भक्ती, नाना सिद्धांत दृढाय के ससार को परम दुःख में डारा। आखिर आप भी बहुत विचार साधना वैराग्य करके महरा माहि समाना हो। महरा कहिये ब्रह्म सो ब्रह्म में समाया औ जगत रुप हो रहा। तो नाहक नाना बानी दृढाय के जग को दुख दिया आखिर आप भी जगत रूप हो रहा। ये अर्थ॥ २॥

कहरा ३.

राम नाम का सेवहु बीरा। दूरि नहीं दुरि आशा हो ॥
और देव का सेवहु बौरे। ई सब झूठी आशा हो ॥
ऊपर ऊजर कहा भौ बौरे। भीतर अजहूँ कारो हो ॥
तनके बृद्ध कहा भौ बौरे। मनुवा अजहूँ बारो हो ॥
मुख के दांतगै कहा भौ बौरे। भीतर दांत लोहे के हो ॥
फिर फिर चना चबा विषयके। काम क्रोध मद लोभके हो ॥
तन की सकल संज्ञा घटि गयऊ। मनहिं दिलासा दूनी हो ॥
कहहिं कबीर सुनो हो संतो। सकल सयाना पहुँना हो॥ ३।

टीका गुरुमुख--गुरु कहते हैं कि हे भाई राम नाम का सेवन सब तुम करते हो तो राम नाम क्या बस्तु है।अरे हे जीव तेरे से ज्यादा कछु वस्तु नहीं, न कछु तेरे बिना नजदीक है न दूर है। तो सब राम ब्रह्म आदि तेरी आशा मात्र है औ बिचार करके देखो तो कछु तेरेसे न्यारी बस्तु नजर नहीं आती। ये पांच तत्व तेरे से न्यारे हैं तो जड हैं इनकी क्या गिनती क्योंकि तेरे बिना इनसे कछु करतूत हो सकती नहीं इस वास्ते तेरे से ज्यादा कोई नहीं। तो पांच तत्वऔ पांचतत्वको जानने वाला जीव येतिक जामा औ सब मिथ्या-धोखा। तो हे जीव तूं नाहक गुरुवा लोगोंकी बानी सुनि सुनिके दिवाना हुवा औ दूसरा देव अपना कर्ता है ऐसा अनुमान करके सेवन करने लगे पर ये सब झूठी आशा। अरे तेरे बिना दूसरा कछु नहीं परंतु तेरे भीतर नाना बानी, नाना कल्पना, नाना अनुमान भरे हैं ताते तूं भीतर कारा है, ऊपर उजर भया तो क्या भया। अरे दिवाने तन बूढा हुआ पर मन बूढा नहीं हुआ, आशा तृष्णा ज्वान होती जातीहैं। अरे मुखके दांत गिर परे प भीतर बासना रूपी दांत लोहे के बने हैं ताते बारंबार गर्भमें पचते हो औ बिषय रूपी चना चबाते हो वही आशा वही बासना वही तृष्णा तेरे को संसार

में ले आती है। अरे तनकी सकल शक्ती घट गई परंतु मनहि दिलासा दूना ऐसा ऐसा मैल तेरे पास भीतर भरा है सो ये सकल भ्रम परख छोडके औ शुद्ध पारखरूप हो तब आवागवन से बचै।नहीं तो जब-लग ये आशा तृष्णा औ बहुत विषय के पीछे लगा है औ दूसरा ब्रह्म वा आत्मा होने की चाह बनी है तबलग सकल सयानी में बैठा है। गुरु कहते हैं कि हे संतो सुनो, जो सकल सयानी याके पास भई औ एक पद पारख नहीं तो सब सयानी कछु काम आसक्तीही नहीं देह नासै सब नास पावती है। ये अर्थ ॥ ३ ॥

कहरा ४.

ओहम मोरा राम नाम । मैं रामहिका बनजारा हो ॥
राम नाम का करहु बनिजिया । हरि मोरा हटवाई हो ॥
सहस्र नाम का करो पसारा । दिन दिन होत सवाई हो ॥
जाके देव वेद पछ राखा । ताके होत हटवाई हो ॥
कानि तराजू सेर तीनि पौवा । तुकिनी ढोल बजाई हो ॥
सेर पसेरी पूरा केले । पासंग कतहुं न जाई हो ॥
कहहिं कबीर सुनो हो संतो । जोर चला जहंडाई हो ॥ ४ ॥

टीका गुरुमुख—जीव बानी ऐसीहै कि ओहम कहिये आसरा सो राम नाम मेरा आसरा है और सब मिथ्या,मैं राम नामका बैपारीहौं। हरी कहिये ज्ञानी सो मैंने हटवाई पसारी है उनकी कृपासे मैं पावता हौं बैपार करता हौं राम नाम का भेद सब संसार में सुनाता हौं। सहस्र नाम का पसारा भक्ती करता हौं जामें प्रेम दिन दिन सवाईहोता है औ देखा देखी सब संसार की भक्ती भी बढती हैये अर्थ।गुरुमुख— गुरु कहते हैं कि देखो इनकी भक्ती कि जाका देवने वेदने पक्ष राखा तो राम नाम की सब बिक्री होती है। पैसे के हेत करके कोई

पुराण बांचते हैं, कोई कथा कहते हैं, कोई पुरश्चरण करते हैं कोई गुरुवाई करते हैं, इस प्रकार से राम नाम की बिक्री होती है। कौन प्रकार से गुरुवा लोग राम नाम बेचते हैं सो सुनो। कान है सोई तराजू औ मन यही तिन पौवा सेर, तीन पाव कहिये रजोगुण तमोगुण सतोगुण ये तीन पाव मिले तहां मन।सो तुकनी ढोल बजाई हो। ढोल नगारा मृदंग ताल आदि नाना बाजा बजाने लगे औ शिष्य बैपार के गाहक तन मन धन कीमत लेके आये। औ ब्यौपारी गुरुवा लोगों के आगे हाथ जोर के खड़े भये कि हे प्रभु रामनाम हम को देव तब गुरुवा लोगों ने पीढे पर बैठाया औ मूड़ पर कपडा ढांके कान में फूँका। ॐ रामाय नमः। औ कहा कि खूब मन लगाय के तोला। ये अर्थ। सेर पसेरी पूरा कै ले सेर मन औ पसेरी तत्व, सो तत्वन में मन लय करके राम नाम स्मरण करना स्वांसा को कुम्भक करके राम नाम स्मरण करना जो पासंग कतहुं न जाय मन कहीं नीचे ऊँचे चलायमान न होय। परन्तु कहा है। हे जीव जो तुम्हरे को गुरुवा लोगों ने राम नाम सुनाया सो कहा है। अरे राम नाम तो जीव की कल्पना, ता कल्पना को देवन ने वेदनने सिद्ध किया। कैसा कि राम कहिये जो सब में रमा, रमा कहिये आत्मा, आत्मा कहिये जगत, तो एकता करके आखिर बेकार में रमा। हे संतो देखो जबरदती जहंडाय चला जीव, भ्रम चक्र में परा। ये अर्थ ॥ ४ ॥

कहरा ५.

राम नाम भजु राम नाम भजु । चेति देखु मन मांही हो ॥
लक्ष करोरि जोरि धरा गाड़ें । चलत डोलावत बांही हो ॥
दादा बाबा औ परपाजा । जिनके यह भुंइ भांडे हो ॥

आंधर भये हियो की फूटी । तिन काहे सब छाडे हो ॥
ई संसार असार को धंधा । अंतकाल कोइ नाहीं हो ॥
उपजत बिनशत बार न लागे । ज्यों बादर की छाहीं हो ॥
नाता गोता कुल कुटुंब सब । इनकर कौन बड़ाई हो ॥
कहहिं कबीर एक राम भजे बिनु । बूडी सब चतुराई हो ॥ ९ ॥

टीका गुरुमुख–जीवको बंधन दो एक राम नाम आदि सकल बानी यामें जीव बंध हुवा है सो गुरु कहते हैं कि राम नाम आदि संपूर्ण कल्पना को परख के भाग छोडके मुक्त हो । औ दूसरी मोटी माया लक्ष, करोरी द्रव्य जोरीके जिमिमें गाडा औ उसका अभिमान करके बांह डुलावते फिरतेहैं ये भी जीवको महा बंधन परखके छोडना । जो दादा बाबा परपाजा भये जिन नाना द्रव्य जागीर रुपैया जमा किये औ जिमीमें भी बहुत गाड़े औ दिया लियाभी बहुत आखिर मर गये सब जहांका तहां परा रहा । वो सब छोडके चलगये औ तुम्हारी ऊपर की भी आंखी गई औ भीतरहूकी फूटी जो तुमको मालूम नहीं होता कि हम भी छोडके जायेंगे । ये नाशवंत द्रव्यहै याकी आसक्ताईसे नाना सर्पादिक दुष्ट योनी भोगेंगे । अरे ये संसार सब असार का धंधा है अन्तकाल में कोई साथी नहीं औ उपजते बिनशते कछु बार नहीं जैसी बादर की छाहीं छिनमें आई औ छिनमें गई तद्वत धन दारा पुत्रादि नाता गोता कछु कुटुम्ब इनकी कौन बढाई । अरे बादर के पुतरिनकी क्या बडाई करना छिनमेंहै औ छिनमें नहीं । औ इनके संग में नाहक बंधन होता है । तो बंधन जानके ये भी छोडा औ एक राम नाम समाधी भी लगी रही तो भी जीव को बन्धनहै।ताते गुरु कहतेहैं कि संपूर्ण त्यागहुवा औ बडा निर्णय किया परंतु आत्मा अनुभव औ एक राम येता धोखा जो छूटा नहीं धोखसे भागा नहीं तो संपूर्ण चतुराई बूडी । ये अर्थ ॥९॥

कहरा ६.

राम नाम विनु राम नाम बिनु । मिथ्या जन्म गमाये हो ॥
सेमर सेई सुवा ज्यों जहंडे । ऊन परे पछताई हो ॥
जैसी मदपी गांठि अर्थ दै । घरहु की अकिल गमाईहो ॥
स्वादे वोद्र भरे धौ कैसे । ओसै प्यास न जाई हो ॥
द्रव्यहीन जैसे पुरुषारथ । मनही मांहि तवाई हो ॥
गांठी रतन मर्म नहिं जाने । पारख लीन्हा छोरी हो ॥
कहहिं कबीर ये औसर बीते । रतन न मिले बहोरी हो ॥ ६ ॥

टीका गुरुमुख–एक राम नाम जाने बिना भौ बूडी सुवा संसार कि राम नाम एक जीवका अनुमान मिथ्या कल्पना ऐसा जाने बिना मिथ्या धोखेमें जन्म गमाये हो।हे जीव तुम्हारे बिना राम नाम कौन कल्पेगा । ये अर्थ । अरे जैसा सेमर का फूल अच्छा देखकर सुवेने सेवन किया फलकी आशा से औ जब फल फूटा तब उसमेंसे रुई उडी तब महा पश्चात्ताप हुवा । तद्वत अर्थ धर्म काम मोक्ष इन फल की आशा करके राम नाम का सेवन किया बडी भक्ती का महात्म देखके, परंतु जब राम की आखिरी देखी तो जगतही राम हुवा तब जीव को भ्रांति हुई औ बडे पश्चात्ताप में पडा । जैसा मदपी अपनी गांठि का पैसा देके घर की भी अकिल गवांताहै तैसा गुरुवा लोगों को तन मन धन देके राम की भक्ती करने लगा जगत आत्मा बना श्रुति शास्त्र के प्रमाण से। तो घरहु की अकिल जो साक्षी दशाथी सो भी गवांई।अरे स्वाद से कहू पेट भरता है ब्रह्म तो जगतका स्वाद है जीवके स्वादमें जीव तदाकार हुवा तो आवागवनसे कैसे रहित होयगा ओसके चाटे कैसे प्यास जायगी । तो योग समाधी औ कर्म इनके करे जगत का दुख छूटनेका नहीं । ये अर्थ । जैसा द्रव्यहीन मनुष्य

पुरुषार्थ बहुत बताते हैं औ जब काम परा तब घबराय के मनहीं में नवां खाते । तद्वत बिना पारखु ये जीव पुरुषार्थ तो बहुत बताता है, कि मैं ब्रह्म, मैं साक्षी, मैं सिद्ध, मैं आत्मा, परंतु जब पूछो कि ब्रह्म साक्षी सिद्ध आत्मा कहां है तब सब जगत ही कहिके मनमें तनाई खायके रहिं जाता है । ये अर्थ । रतन कहिये जीव, सो ताको नाना प्रकारकी गांठी पर गई । कर्मकी धर्मकी विषयकी ज्ञान की औ विज्ञान की सो इन पंच गांठिनसे कछु छूटने नहीं पाता । ज्यों ज्यों कल्पना अनुमान करता है त्यों त्यों अधिक अधिक अरुझा-ता जाता है औ बहुत दुख पावता है । सो ऐसे दुखिया जीवको पारखने संपूर्ण गांठी छुडाके अपना स्वपद कर लिया जब पारख प्राप्त भया तब सब पांचों गांठी परखके छोडा औ पारख रूप हुआ आवागमन से रहित हुवा, ब्रह्म जगतसे न्यारा हुवा; स्थिर हुवा तो गुरु कहते हैं कि भाई पारख पानेकी औसर अबहीं है । जो ये अवसर मानुष जन्म चुक जायगा बीत जायगा, तो फिर ये जीव पारख से नहीं मिलने का । ये अर्थ ॥ ६ ॥

कहरा ७.

रहहु सम्हारे राम बिचारे । कहता हौं जे पुकारे हो ॥
मूंड मुडाय फूलिके बैठे । मुद्रा पहिर मंजूसा हो ॥
तेहि ऊपर कछु छार लपेटी । भितर भितर घर मूसा हो ॥
गांव वस्तु हैं गर्भभारती । बाम काम हंकारा हो ॥
मोहन जहां तहांले जैहैं । नहि पत रहल तुम्हारा हो ॥
मांझ मंझरिया बसे जो जाने । जन होइ हैं सो थीरा हो ॥
निर्भय भये तहं गुरुकि नगरिया । सुख सोवै दास कबीरा हो ७

टीका गुरुमुख—गुरु बोलते हैं कि हे भाई योगी लोगो, मैं पुकार

के कहता हैं कि जो तुम राम बिचारे हो समाधी रूप ताको सम्हारे रहो जब देह छूटेगी तब समाधी कहां रहेगी। ये अर्थ। अरे मूड मुडायके मुद्रा पहिरके मंजूषामें गुफा में कुंभक करके फूल के बैठे कि हम ब्रह्मरूप हो गये। भीतर कहिये सूक्ष्मरूप, फिर भीतर कहिये कारण, घर कहिये महाकारण, सो लूटके लय करके कैवल्य हो बैठे। ये अर्थ। ऊपर ऊपर राख लपेटी, पर भीतर भीतर बीज रहगया, कि मैं ब्रह्म, मैं आत्मा। तो जब ब्रह्म आत्मा बना तब जगतका अधिष्ठान बना तो जग चौरासीका बीज बना। ये अर्थ। गांव बस्तु है गर्भभारती, बाम काम हंकारा हो। गांव कहिये संसार सो संसार में गर्भभारती ब्रह्मज्ञानी योगी बसतेहैं। बाम कहिके ब्रह्मज्ञान सो ब्रह्म ज्ञानका काम करते हैं विधि निषेध कछु रखते नहीं, संपूर्ण सुकर्म कुकर्म भक्ष अभक्ष करते हैं औ हंकार करते हैं कि हम ब्रह्म सच्चिदानंद हमको कछु विधि निषेध नहीं जो खुशी में आवै सो करना, संपूर्ण हमारा खेल है, हम से कछु न्यारा नहीं हम किसीसे न्यारे नहीं, इस प्रकारका हंकार ब्रह्मज्ञानी करते हैं। परंतु मोहन कहिये बानी, औ मोहन कहिये स्त्री, सो जहां तहां चौरासी में तुम्हें फसायके गर्भवासमें ले जायगी। फिर तुम्हारा हंकार भूल जायगा औ नानाप्रकारके योनी में बहुत लात मुक्का खावोगे फिर तेरी पत नहीं रहनेकी। तासे अभी चेतके बानी स्त्री दोनों का फन्द छोडो। ये अर्थ। मायासुख—मांझ मंझरिया बसै जो जानैं जन होई हैं सो थोराहो। मांझ कहिये भीतर मंझरिया कहिये नाभिस्थान, सो जाका लक्ष त्रिकुटी श्रीहट गोलहाट स्थान छोडके अहुटपीट स्थानके भीतर सदा जाका लक्ष राजयोग संधान से बसै कदहीं उत्थापन होने न पावै सोई सच्चिदानंद स्वरूपको जानै, सोई योगी स्थिर होयगा

आवागवन से रहित होयगा । ये अर्थ । गुरुमुख—निर्भय भये तहाँ गुरुकि नगरिया, सुख सोवैं दास कबीरा हो दासकबीरा भक्त, सो योगी लोगों की भक्ती करके उन्मन समाधी में निर्भय हुवा तहां गुरुकी नगरिया । जहां चांद सूर्य भासते नहीं औ अग्नी भी भासती नहीं इंगला पिंगला सुषुमना जहां नहीं, तहां गुरुकी नगरिया परमधाम भ्रमरगुंफा में । सुख सोवैं दास कबीरा । दास कबीर जीवने परम गाफिली सुखसे मानी । ये अर्थ ॥ ७ ॥

कहरा ८.

क्षेम कुशल औ सही सलामत । कहहु कौनको दीन्हा हो ॥
आवत जात दोऊ विधि लूटे । सर्व तंग हरि लीन्हा हो ॥
सुर नर मुनि-यति पीर औलिया । मीरा पैदा कीन्हा हो ॥
कहां लों गनों अनंत कोटिलो । सकल पयाना कीन्हा हो ॥
पानी पवन अकाश जायेंगे । चंद्र जायेंगे सूरा हो ॥
येभि जायेंगे वोभि जायेंगे । परत न काहुके पूरा हो ॥
कुशल कहत कहत जग बिनसे । कुशल कालकी फांसी हो ॥
कहैं कबीर सारी दुनिया बिनसे । रहैराम अविनाशी हो॥८॥

टीका गुरुमुख—गुरू कहते हैं कि हिंदूकी क्षेम कुशल औ तुरुक की सही सलामत सो गुरुवा लोगोंने औ वेद कुरान ने कहा परंतु कौ की क्षेम कुशल भई । ये वेद औ गुरुवालोगों के कहे औ कुरान के कहे से किसी की न भई । औ इस स्त्री के तरफ से किस किसकी कुशल भई । येही तो चौरासी का मूल है इसकी तरफ से किसका भला होयगा किसीका भी नहीं । ये अर्थ । ताते तीनों पारख के छोड़ो । आवत जात दोउ विधि लूटे, सर्व तंग हरि लीन्हा हो।आवत कहिये जो गुरुवा लोग पैदा भये हैं औ जात कहिये जो

गुरुवालोग नाना बानी बनाय के मर मर गये हैं सो दोनों बिधि जीव लूटा गया । मर गये उन्होंने भी नाना कल्पना, कर्म उपासना ज्ञान योगादिक दृढाय के जीव की हंस दशा औ सांचत्व हर लीन्हा और अब जो गुरुवा लोग हैं सो भी उनके प्रमाण से संपूर्ण जीवन का सांचत्व हरके मिथ्या कर्म उपासना लोक परलोक दृढावते हैं । और स्त्री भी आवत जात दोउ विधि लूटती है । जब लडका पैदा भया तबहीं से मातानें मोह लगाया, नाता गोता हित बंधूका मोह दृढावने लगी । औ जीवकी सांचताई हरने लगी सोई जीवने दृढ किया । आगे शनै शनै जब बढा तब लिखने डारा और जनेउ कर, तब नाना प्रकार के प्रपंच उद्दिम कर्म मोह लोभ औ तृष्णा बढी औ कर्म विशेष दृढाये,फिर नाना उद्योग जीव करने लगा। फिर विवाह किये तब नाना विषय जागे औ जीव विषयासक्त हुवा । तब आदि माया का रूप जो माता ताको मोह घटा औ अंत माया कालिका मेहरी ताका मोह बढा तब स्त्री का गुलाम भया औ नाना जंजाल करने लगा । कष्ट कर करके दाम कमाने लगा सो सब विषय के फंद में उडावते हैं परंतु तृप्ती नहीं होती अतृप्ती में ही देह छूटती है । आखिर कमाते कमाते औ विषय करते करते बूढे होते हैं फिर इंद्री तो सब सिथिल हो जाती हैं परंतु चाह बनी रहती है औ चोला छूटा तो फिर गर्भवास को जीव प्राप्त हुआ । इस प्रकार से ये स्त्री ने औ बानी ने आवन जात दोउ विधि लूटा औ जीव का सर्व तंग सांचता हरि लीन्हा । ये अर्थ । सुर नर मुनि यती पीर औलिया मीरा पैदा कीन्हा हो । हे संतो देखो ये कल्पना ने औ बानी ने औ गुरुवा लोगों ने क्या आश्चर्य किया । जो काहू को देव बनाया, काहूको नर बनाया, काहूको मुनी बनाया ,काहूको

यती बनाया, काहू को पीर बनाया, काहू को औलिया बनाया, काहूको पीरजादा औ काहू को भट्टाचार्य बनाया । परन्तु कहां लौं गनौं अनंत कोटि महात्मा कल्पना से पैदा भये औ कल्पना में मर मर गये । बानी यहां ही पडी है जो कोई जीव पैदा होते हैं तिनको भी फँसानेके वास्ते, पर काहूको बानी छोडके स्थिति भई नहीं । और इस स्त्री से सुर नर मुनी यती पीर औलिया गुरुवा लोग सब पैदा भये औ स्त्रीके गर्भमें गये सब अनंत कोटि औ बिना पारख । ये अर्थ। पानी पवन आकाश जायेंगे; चन्द्र जायेंगे सूरा हो । पानी ब्राह्मण, पवन योगी, आकाश जंगम, चंद्र सेवडा, सूर्य सन्यासी, ये भी भक्त और वोभी दरवेश, संपूर्ण गर्भवास में जायेंगे बिना पारख जीव की स्थिति नहीं । बिना पारख काहूका पूरा नहीं परता याते सब परखके पारख रूप होना । ये अर्थ । कुशल कहत कहत जग बिनशै, कुशल कालकी फांसी हो । कोई कहते हैं कि शादी भई लडके भये, दौलत भई तो जीवकी कुशल भई । परंतु गुरु कहते हैं कि जेतिक वृद्धी ज्यादे होती है तेता विषय औ मोह तृष्णा जीवको ज्याद होतीहै, औ जीव आसक्त होयके बंध में परता है ताते चौरासी भोगताहै, तो ये कुशल नहीं कालकी फांसी है, और कोई कहते हैं, कि स्त्री पुत्र धन सब छोडके गुरुवा लोगनके शरण में जाना औ नाना योग वैराग्यकरके मुक्ति गति को प्राप्त होना तो ये मुक्ति भी कालकी फांसी है । अरे मुक्त होके जीव कहां जायेंगे बिना पारख सब कुशल कालकी फांसी । अब गुरुवा लोगन का उपदेश ऐसा है कि सारी दुनिया विनाश हो जायगी औ एक राम अविनाशी रहेगा । तो सारी दुनिया विनाश होयके कहां जायगी औ राम अविनाशी कहां रहेगा ये सब मिथ्या धोखा । ये अर्थ ॥ ८ ॥

ऐसनि देह निरालप बौरे। मुवले छुवै नहिं कोई हो ॥
डँडवाकी डोरिया तोरि लराइनि। जो कोटिन धन होई हो ॥
ऊर्ध निश्वासा उपजि तरासा। हकराइनि परिवारा हो ॥
जो कोइ आवै बेगि चलावै। पल एक रहन न पाई हो ॥
चंदन चीर चतुर सब लेपैं। गरे गजमुक्ता के हारा हो॥
चौसठ गीध मुये तन लूटै। जंबुकन वोद्र बिदारा हो॥
कहहिं कबीर सुनौ हो संतो। ज्ञान हीन,मति हीना हो ॥
एक एक दिना याहि गति सबकी। कहां राव कहां दीना हो ॥

टीका गुरुमुख–गुरु बोलते हैं जीवको कि हे दिवाने बावरे, ये एसी मानुष की देह संतसंग करने योग सो तू • हकनाहक विषयनमें खोता है मनुष्य की उमर थोरी या अल्प आयु याको पायके, सकल फांस परखके छोड देना।नहिं तो जो कुटुंब परिवार पुत्र स्त्री जिनके पीछे तू अपना जन्म खोताहै सो मुये पर कोई तेरे को छूने का भी नहीं। जो तेरे पास कोटिन धन होयगा तबभी कमर का करधना सहित तोर के फेंक देवेंगे तेरे संग कौडी नहीं आनेकी।ये अर्थ।हे संतो जब चोला छूटनेका समय आताहै तब ऊर्द्ध श्वास जीवको चलने लगी औ नाडी छूटने लगी सो घबराया। अरे मेरी स्त्री को बुलावो,मेरे पुत्रको मेरे सामने लावो,मेरे भाई बंधको बोलावो,भाई बंदो मेरी मेहरी को संभालो इसकी लाज तुम्हारेको है,मेरा बेटा बेटी तुम्हारे जिम्मेहै,मेरा धन दौलत सब संभाललो,मेरा नाम मत डुबाना,दौलत खानामत,मैं मरता हों। अब मेरी मेहरी का लाड और हठ कौन पुरावेंगे औ मेरी मेहरी मेरी नजर नहीं आनेकी। ऐसा शोक करतेकरते नाडी आकर्षण हुई सो हाथकी नाडी कंठमें औ पांव की नाडी पेडूमें आई तब कंठ रुका तो आंख का इशारा करने लगा फिर आंख की नाडी जब आकर्षण होने लगी तब तारे टूटने लगे। चांद सूर्य अग्नी बिजलीसी

चमक होने लगी आंख के सामने और ब्रह्मांड में नाना प्रकार के नाद उठे । तब जीव घबराया तब नाना प्रकार का अध्यास उठा तैसी अवस्था भई । उपरांत सब नाडी हृदय स्थान में आई सोई नाडीकी ग्रंथी खुली औ सुषुप्ती अवस्था भई फिर चोला छूटा, सुषुमना नाडी जीवको ले उडी सो जहां आसा तहां पासा पाया । अब जो कोई आवते हैं सो कहते हैं कि जल्दी मसान में ले चलो । सो छिन भर भी रहने न पाया जलदी ले जाय के जराय दिया । ये अर्थ।जो बडी चतुराई करते थे औ अंग में चंदन चरचते थ और नाना प्रकारके सुगंध लगावते थे और ऊँचे ऊँचे कपडा पहिरते थे , गरेमें गजमोतिन के हार पहिरते थे,सो तन जब जंगलमें जाय के छूटा तब न कुटुंब काम आया , न दाम काम आया, चील गीध तनको खाने लगे औ जंबु-कनने पेट को फार डारा ।या अग्नी में जराय दिया या माटीमें गाड दिया या गीध चील खाय गये । देह धन कुटुंब के कछु काम में पडा नहीं । याते गुरु कहते हैं कि हे संतो जो ज्ञान हीन मति हीन जीव हैं तिनको या गति भई कछु अपनी स्थिति न भई। औ जो हैं तिनकी एक एक दिन याही गति सब की होयगी क्या राजा औ क्या दरिद्री। आखिर सब की एक दिन ये ही गति होयगी। ताते संपूर्ण नाशवान पदार्थ हैं । तामें चित्त नहीं देना सब परख के पारख रूप हो रहना । ये अर्थ ॥९ ॥

कहरा १०.

हौं सबहिनमें हौं मैं नाहीं । मोहिं बिलग बिलग बिलगाइलहो॥
ओढ़न मोरा एक पिछौरा । लोग बोले एकताई हो ॥
एक निरंतर अंतर नाहीं । ज्यों शशिघट जल झाईहो॥
एक समान कोइ समुझत नाहीं । जाते जरा मरण भ्रम जाईहो॥

रैन दिवस ये तहवां नाहीं । नारि पुरुष समताई हो ॥
हौं मैं बालक बूढो नाहीं । ना मोरे चिलकाई हो ।
त्रिविधि रहौं सभनिमा बरतों । नाम मोर रमुराई हो ॥
पठये नजाऊं आने नहिं आवों । सहज रहौं दुनियाई हो ॥
जोलहा तान बान नहिंजाने । फाटि बिने दश ठाई हो ॥
गुरुप्रताप जिन्हें जैसा भाख्यो । जन बिरले सो पाई हो ॥
अनंत कोटि मन हीरा बेधा । फिटकी मोल न पाई हो ॥
सुर नर मुनि जाके खोज परे हैं।कछु कछु कबीरन पाई हो१०

टीका ब्रह्ममुख—अरे ये आश्चर्य जो मैं ब्रह्म सब चराचरमें बाहर भीतर भरा हौं परंतु ना हौं, अहं शब्दसे सर्वत्र मेरी प्रतीति है परंतु मैं अहंकार से न्यारा । मोहि बिलग बिलग बिलगाइल हो।मेरे को नेति नेति श्रुती बोलती हैं मैं तो पांच तत्व नहीं , दश इंद्री नहीं, अंतःकरण पंचक नहीं, अवस्था चार नहीं, वायु पंचक नहीं, विषय पंचक नहीं प्रकृति पच्चीस नहीं,देह चतुष्टय नहीं, निर्गुण सगुण नहीं,द्वैताद्वैत नहीं। मैं एक स्वजातीय विजातीय स्वगत भेद रहित निरंतर,जो कंहू अंतर नहीं घनरूप असंधी। जैसा एक चंद्र झांई अनेक घट में प्रतिबिंब नजर आता है तैसा मैं एक आत्मा अनेक देह में नजर आता हौं । जहां जल चंचल तहां प्रतिबिम्ब भी चंचल नजर आता है औ जहां जल स्थिर तहां प्रतिबिंब भी स्थिर नजर आता है परंतु जल घटकी उपाधी कछु चंद्र को नहीं ।तैसा ओढन मोरा एक पिछौरा लोग बोले एक ताई हो। अरे मेरी माया बडी दुर्धर जाने मेरे को ढांक लिया।सोई माया एक पिछौरा ताते एक ताई में अनेक रूप भास भये, जैसा घट बना तैसा आकाश भास भया तद्वत्। कि जैसा एक चंद्र अनेक घट में भासा तैसा मैं एक आत्मा निरंतर आकाशवत् । ये अर्थ । अरे एक आत्मा सब घट में समाया सो भ्रमवश कोई,समुझता नहीं जाते जरा

मरण संपूर्ण भ्रम छूट जाय। अरे एक आत्मा में प्रकृती पुरुष औ ज्ञान अज्ञान कछु संभवे नहीं। जैसा जल का विकार फेन तरंग बुदबुदा संपूर्ण जलही है औ मट्टी का बिकार सब मिट्टी, तैसा ब्रह्म का बिकार प्रकती पुरुष आदि संपूर्ण जगत् ब्रह्म ही है। ये अर्थ। न मैं बालक, न मैं तरुण, न मैं बूढा, औ संपूर्ण त्रिविध स्वरूप में हीहीं। मैं त्रिविधि सच्चिदानंद एकरस होय के सबनमा बरतता हौं। जो तीन काल में भासै सोई सत औ जाको भासै सोई चित, दोनों की एकता अधिष्ठान सोई आनंद,इस प्रकारसे सबन में बर्तता हौं। औ नाम मोर रघुराई हौ, सर्वव्यापी आत्माराम। ये अर्थ। मैं किसी के निकारे निकरता नहीं औ किसी के आने आवता भी नहीं, सहजही आकाशवत दुनिया में रहता हौं अखंड एकरस। ये अर्थ। जोलहा तान बान नहिं जाने फाटि बिने दश ठाई हो। जोलहा ब्रह्मादिक सनकादिक व्यासादिक या जोलहा मन, सो ताना बाना नहीं जानता कि एकतत्वही है। तैसा एकआत्मा सब जगत है परंतु मनने नहीं जाना ताते नाना कल्पना कर करके फाटि बिने दश ठाई। चार बेद छै शास्त्र ये दश टुकरे करके संसार में दृढाता है ये सब मनकी कल्पना मिथ्या भ्रांती आत्मा सत्य। ये अर्थ। **मायामुख**—गुरु प्रताप जिन्हें ये महावाक्य का विचार जैसा वेदान्त के प्रमाण से भाखा सो जो कोइ साधन चतुष्टय संपन्न जीव होते हैं सो अनुभव पावते हैं। ये अर्थ। **गुरुमुख**—अनंत कोटि मन हीरा बेधा, फिटकी मोल नपाई हो। अरे अनंत कोटि ऋषी औ अनंत कोटि वेदन का सिद्धांत ताको मानके हीरा जीव बेधा सो ऐसा उतर गया जीव यह, कि फिटकी का मोल भी न पाया। जैसा पत्थर शालिग्राम आदिक का महातम है वह महात्म भी इस जीवका नहीं हुआ। ये अर्थ। **मायामुख**—सुर नर मुनी जा अनुभव

के खोज परे हैं सो कछु कछु कबीरन मुमुक्षु जीवने पाया । ब्रह्म विद् ब्रह्मैव भवति । ये अर्थ ॥ १० ॥

कहरा ११.

ननदीगे तैं विषम सोहागिनि । तैं नींदले संसारा गे ॥
आवत देखि मैं एक संग सूती । मैं औ खसम हमारा गे ॥
मोरे बापके दुई मेहरुवा । मैं अरु मोर जेठानी गे ॥
जब हम रहलि रसिक के जगमें। तबहिं बात जग जानी गे॥
माई मोरि मुवलि पिता के संगे । सगरचि मुवल संघातीगे ॥
आपुहि मुवलि और लै मुवली । लोग कुटुम्ब संग साथीगे ॥
जौ लौं श्वास रहै घट भीतर। तौलौं कुशल परी हैगे ॥
कहहिंकबीर जबश्वासनिकरिगो। मंदिर अनल जरी हैगे॥ ११ ॥

टीका जीवमुख—ननदी कहिये जाका प्रेम परमात्मा में दृढ होय, सो योगी जन के पास जाय के जीव प्रशंसा करनेलगे, कि हे योगी जन तुम बडे विषम वैराग तितिक्षायुक्त पिय परमात्माके प्यारे हो। सो अपने खाविन्द के संगही संसार में सोते हो । संसार सब परन दुखी है, तुम परमात्मा के संग बडा सुख भोगते हो समाधिस्थ रहते हो । आवत देखि मैं एक संग सूती, तैं अरु खसम हमारागे । हे योगेश्वर महाराज जब जब हम आप के दर्शन को आये तब तब परमात्मा हमारा खसम उन में आप को मिले ही देखा कबहूं न्यारा नहीं देखा सदा समाधिस्थ देखा । ये अर्थ। मोरे बापके दुई मेहरुवा, मैं अरु मोर जेठानी गे । अब जीव पहिले योगेश्वर की प्रशंसा करके फिर अपनी प्रशंसा करता है, कि मोरे बाप परमात्मा ताकी हम दुइ मेहररुआ मैं अरु मोरे गुरु, हम दोऊ परमात्मा के भक्त। ये अर्थ। भला ये तो सही जीवने परमात्मा को पिता कहा और अपने अंश

भाव लिया औ खसम कहा तो भक्तीभाव लिया, पर जेठानी गुरुको कहा कौन भावसे ये शंका। तो अपने खाविन्दका बडा भाई ताकी स्त्री जेठानी तो ब्रह्मा बडा भाई औ विष्णु छोटा भाई, सो हमारे गुरु ब्रह्माके भक्त वेदांती ब्रह्मा कहिये जेठा। औ हम विष्णुके भक्त ताते हमारे खाविन्द विष्णु हम विष्णुकी स्त्री औ हमारा गुरु ब्रह्मा का भक्त ब्रह्माकी स्त्री ताते जेठानी। परंतु वह ब्रह्माकी आज्ञा प्रमाण ब्रह्महीमें लीन औ हम विष्णुकी आज्ञा प्रमाण ब्रह्म ही में लीन। तो दोनों पारब्रह्म की कला हुई मैं औ मेरे गुरु। ये अर्थ। जब हम रहलि रसिकके जग में, तबहिं बात जग जानी गे। येही योगेश्वर रसिक कहिये जो कि सब रसका लेनेवाला सोई परमात्मा ताहीसे सब जग उत्पन्न भया। सो जब हम जगत में थे संसार में तब बात जगत ने जानी कि भाई ये भगवत भक्त बडे हैं सो अब तो तुम्हारी कृपा से परमात्मा में लीन हैं जगत नहीं भासता सदा परमात्मा भासता है औ भाई मोर मुवलि पिताके संगे सरा रचि मुवल संघाती गे। अब हमारी माया मर गई हम निर्मोह हो गये जो हमारी अंह वृत्ति थी सो ब्रह्ममें लीन हो गई योगी लोगन के संग सरा रची यम नियम संयम प्राणायाम प्रत्याहार, अनेक प्रकारके आसन, अनेक प्रकार के मुद्रा, इनका सरारचा औ ब्रह्माग्नी उदगार करके ब्रह्मके संग विषय वृत्ति जर के भस्म हो गई आपहि माया मरी औ जेते मायाके संग साथी थे काम क्रोध मोह आदिक सबको लेके वृत्ति योगाग्नीमें भस्म भई। संग साथी चौदह देवता, पंच विषय, अंतःकरण पंचक औ चार शक्ती, चार अभिमान, चार अवस्था, दश इन्द्रिय आदि सब लोग कुटुम्ब संग साथिन सहित योगाग्नी में वृत्ति जर के भस्म भई। ये अर्थ। अब पूर्ण सच्चिदानंद अनुभव भरा है दूसरा कछु नहीं। इस प्रकार से गुरुवा लोगोंके पास जीवने अपना

अनुभव कहा तब योगी लोग परस्पर बहुत खुशी भये । ये अर्थ । परन्तु अब गुरु क्या कहते हैं सो सुनो।गुरुमुख—जौ लों श्वास इहै घट भीतर , तौ लों कुशल परी है गे।जबलग श्वास घट भीतर है, तब लग इन के योगकी कुशल है पर जब श्वास घट छोडके निकर जायगा तब देह तो अग्नी में जर जायगी औ इनका योग समाधी कहां रहेगा । अरे देह बिना योग की स्थिति कहां है औ ऋद्धि सिद्धि कहां रहेगी सब नाश हो जायगी फिर जीव की कौन दशा होयगी, तो इनका योग समाधी सब नास्ती । ये अर्थ ॥ ११ ॥

कहरा १२.

ई माया रघुनाथकि बौरी । खेलन चली अहेरा हो ॥
चतुर चिकनिया चुनिचुनि मारे । कोई न राखेउ न्यारा हो ॥
मौनी बीर दिगंबर मारे । ध्यान धरंते योगी हो ॥
जंगल में के जंगम मारे । माया किनहु न भोगी हो ॥
बेद पढंते बेदुवा मारे । पुजा करंते स्वामी हो ॥
अर्थ बिचारत पंडित मारे । बांधेउ सकल लगामी हो ॥
शृङ्गिऋषी बन भीतर मारे । शिर ब्रह्मा का फोरी हो ॥
नाथ मछंदर चले पीठि दे । सिंगलहू में बोरी हो ॥
साकठ के घर करता धरता । हरि भक्तांके चेरी हो ॥
कहहि कबीर सुनो हो संतो । ज्यों आवै त्यों फेरी हो ॥

टीका गुरुमुख—ई माया कल्पना, ईमाया बानी,ई माया भक्ती ज्ञान औ योग, ई माया गुरुवालोग, ई माया स्त्री, ई माया काया, रघु कहिये इन्द्री तिनका नाथ मन सो रघुनाथ, ता मनका स्वरूप माया काया बौरी सो खेलन चली अहेरा । सो अहेर खेलने

चली शिकार खेलने चली जीवनपर । ये अर्थ । सो चतुर चिकनियां ज्ञानी योगी सबन को कल्पना ने, बानी ने, गुरुवा लोगोंने, स्त्रीने, चुनि चुनि मारे कोई बचने नहीं पाया ई माया से। ये अर्थ । कोई कहेगा कि देहकी विस्मृती की फिर माया क्या करती है । तो बडे बडे देहकी विस्मृती करणेवालेको छला माया ने सो सुनो । बडे बडे मौनी शिवादि नारदादि औ बडे बडे वीर अर्जुनादि रामचंद्रादि औ दिगम्बर शुकादि दत्तात्रेय आदि, ध्यानी योगी गोरख से जंगल में तपस्या करनेवाले विश्वामित्र कर्दम से, पर मायाके बश होके जहँडाये। तिनको पारख की प्राप्ती माया ने होने न दी औ मायाका भोग भी करने नहीं पाये । ये अर्थ । ब्रह्मा ऐसे बेडुवा मारे औ बडे बडे पूजा करनेवाले स्वामी मारे गये औ बडे बडे अर्थ विचारने वाले पंडित मारे गये सबको संशय की लगाम बांधी । ये अर्थ । शृंगीऋषी ऐसे देहकी विस्मृती करनेवाले औ अरण्य में रहते थे, कबहूँ मानुष जातिका दर्शन भी जिनको नहीं एक पिता छोडके, तिनको माया बांधिके दशरथ के यज्ञमें ले आई । साठ हजार वर्ष विश्वामित्र ने लोहेके चनेके अधारपर तपस्या किया तिनको कुत्तेके माफिक इंद्रलोकको ले गई । औ दक्षप्रजापती के यहां जब शिव का विवाह भया तब ब्रह्माका शिर फोरवाया मायाने।तो देखो ये अनादि सिद्ध योगी क्या काया की विस्मृती न कर सक्के थे पर इनको भी मायाने भरमाया। अरे देखो माया की कैसी फांसी है एक भग, दूसरा बोला, तीसर देखब, चौथे चलब,पांचवा आलिंगन देब । अब झीनी माया की फां-सी एक भक्ती दूसर योग तीसर ज्ञान चौथे उपासना पांचवा कर्म । माया के रूप दो एक गुरुवा दूसर स्त्री तब ये दशविधी फांससे जीव कैसे बचे । भला कोई देहमें वृत्ति लय किया चाहै तो झांई रूप होके

मारे । ये अर्थ । कोई साकट शाक्त आदि प्रपंची के यहां हर्ता कर्ता औ हरिभक्त ज्ञानी योगी के यहां चेरी लोडी होके माया जीव को फसावती है ताते गुरू कहते हैं कि सदा पारख पर आरूढ रहना और कवनेउ भाव माया की आवै तौ ताको परख के पाछे फिराना कबहूं गाफिल न होना । ये अर्थ ॥ १२ ॥

ककार केवल ब्रह्म ऐसी जीव में कल्पना उठी सो कहरामें जीव परा । सो कहर को हरने के वास्ते गुरु कहरा बोले, कहर को हरे सो कहरा । ये अर्थ । अब आगे योगी जनका भ्रम बतावेंगे ।

इति कहरा टीकासहित गुरुकी दयासे संपूर्ण ।

॥ दया गुरुकी ॥

॥ अथ वसन्त लिख्यते ॥

वसंत १.

जाके बारह मास वसंत होय।ताके परमारथ बूझै बिरला कोय॥
बरसै अगिन अखंड धार । हरियर भौ बन अठारह भार ॥
पनिया आदर धरनि लोय । पवन गहै कस मलिन धोय ॥
बिनु तरिवर फूले आकाश । शिव बिरंचि तहां लेइ बास ॥
सनकादिक भूले भँवरबोय ।लख चौरासी जोइन जोय ॥
जो तोहि सतगुरुसतलखाव । ताते न छूटे चरण भाव ॥
अमर लोक फल लावै चाव । कहहिं कबीर बूझै सो पाव॥ १॥

टीका गुरुमुख—जाके बारह मास बसंत होय, ताके परमार्थ बूझै बिरला कोय। बसंत कहिये पुरानी छाल पुराने पत्र बृक्षनके झर जाय औ नविन छाल नविन पत्र बृक्षनको प्राप्त होय औ बृक्ष प्रफुल्लित होय औ बृक्षमें नविनता पैदा होय सो वसंत ऋतु। ऐसी वसंत ऋतु बृक्षन की वर्ष में एक बार होती है औ जीवनकी वसंत ऋतु बारह मास होती है। बारह मास पुराने चोले छोडते हैं औ बारह मास नवीन चोले उत्पन्न होतेहैं औ बारह मास पुराने ब्यौहार झरतेहैं औ बारह मास नवीन ब्यौहार होते हैं। औ बारह मास युवा अवस्था आयके काम कमल प्रफुल्लित होतेहैं तो तरुण अवस्था सोई वसंत। ये अर्थ। अब जीवका प्रपंचरूपी बसंत तो हुआ। किसीने प्रपंच छोडके परमार्थ अनुमान किया सो बसंत बूझो। एक अनुमान खडा किया कि कोई

एक अहह सो अखंड धार विरह बरसने लगा औ जीव परम ताप में तपा। औ हरियर भौ बन अठारह भार । चार वर्ण, चार आश्रम, छौ दर्शन, चार संप्रदाय ये अठारह भाव सबको हरीकी यारी भई, भगवत प्राप्ती की इच्छा भई । ये अर्थ । ताहि हरि के चरित्र अठा- रह पुराण भये । कोई एक गुसैंया है ऐसी बानी सभनने अंतःकरण में धारण की, पनिया कहिये बानी । ये अर्थ । पवन गहै कस मलिन धोय। कसमलिन नाना विषय वासना छोडके पवन गहने लगे, योग धारणा करने लगे तब बसंत ऋतु आई । रेचक पूरक कुंभक करके त्रिबिध पवन चलने लगी शीतल, मंद, सुगंध । शीतल चंद्र, मंद सूर्य, सुगंध सुषुमना, तब उन्मुनी नारी में ध्यान लगा औ बिना तरुवर आकाश में नाना रंग के फल मालूम होने लगे जा फुलवारीमें शिव बिरंची का मन अटका औ जा फूलनकी बास में सनकादिक भूले । जैसा कमलकी बासमें भौंरा मस्त हुवा और वहीं रहा जैसे सनकादिक वह सहस्र दलमें लुब्ध होके वहीं रहे देहकी विस्मृति किये । तहां ये जीव भी ध्यान लगायके लुब्ध हुये सन्मुखी मुद्रा सब इंद्री मूंद के लगाई ।

कवित्त—फूले गुलाब टेसू आमहू के मौर फूले,चंपा चमेली बेली नानाकार छाई है ॥ कामराज झूलत सोई होत लहर घटमें कोकिला कलोल शब्द विविधि विधि सुनाई है ॥ उठन लागे छवो राग नाना कार रंग जाग किंगरी सितार बीन श्रवनन में आई है ॥ पूरण बसंत आय कंतहूके दरश पाय बारह मास याही भाय योगिन जो गाई है१

ये परमार्थ जीवनको हढाया जामें बडे बडे परमार्थी जीव फंसे सो दोनों बसंत जीवको भरमाने वाले गाफिल करनेवाले जीवका धोखा ये बूझके कोई बिरला न्यारा होयगा । अब माया क्या कहती है सो सुनो। **मायामुख**—जो तोहि सतगुरु सत लखाव, ताते छूटे चरण

भाव। जो तेरेको सतगुरु योगीजनने लखाया योग मुद्रा सोई परमात्माका रूप सत्य है ताके चरणारबिन्द से भाव न छूटे जासे अमरलोक फल तेरे को प्राप्त होय। अरे अमरलोक में ब्रह्मरस के फल हैं सुर नर मुनी जाकी चाह करते हैं सो कोई योगीजन सिद्ध उनकी कृपा से बूझता है सोई पावता है ब्रह्म स्थिति। इस प्रकार गुरुवा लोग दृढ़ावते हैं और जीव दृढ़ होते हैं ताते यथार्थ पारख इबको नहीं मिलती। ये अर्थ॥ १॥

बसंत २.

रसना पढिलेहु श्रीबसंत। बहुरि जाय परिहेहु यमके फन्द॥
मेरु डंडपर डंक दीन्ह। अष्ट कँवल परचारि लीन्ह॥
ब्रह्म अगिन कियो परकाश। अर्ध ऊर्ध तहां बहे बतास॥
नौ नारी परिमल सोगांव। सखी पांच तहाँ देखन धाव॥
अनहद बाजा रहल पूर। तहाँ पुरुष बहत्तर खेलैं धूर॥
माया देखि कस रह्यो है भूलि। जस वनस्पति रहि है फूलि॥
कहहिं कबीर यह हरि के दास। फगुवा मांगै बैकुण्ठ बास॥ २॥

टीका मायामुख—श्री बसन्त कहिये सच्चिदानन्द आत्मा, ताको अनुभव योगशास्त्र से पढ़िके साध लेवे नहीं तो यम के फंद में फिर जाय के परोगे, अरे सब इंद्रिन को साधो नहीं तो नरकमें जावोगे। इस प्रकार से भय बताय के श्री बसन्त योग दृढ़ कर दिया। तब जीव योगी लोगों के शरण में गये तब योगी लोगोंने शांभवी मुद्रा का उपदेश दिया। मेरुडंड पर डंक दीन्ह। मेरुडंड कहिये नासिकाग्र तहां बद्ध पद्मासन युक्त दृष्टि लगाई पहिले एकांत जगह में उत्तराभिमुख सवा हथ का आसन लगाया, ता ऊपर बैठ के पहिले बांये पांव पर सीधा पांव और सीधे पांवपर बायां पांव, पीछे से हाथ लाय के सीधे हाथ से बायें पांव का अगूँठा पकडना औ बायें हाथ से सीधे पांव का अगूंठा

पकड़ना, डाढ़ी कंठ में लगाना श्वासा के संग, या योग को अमनस्क योग कहिये । सो करते करते अष्ट कमल परचार द्वादश कमल में लीन हुआ अग्निने कियो परकाश । ये अर्थ । ब्रह्म अर्ध ऊर्ध तहां बहै बतास । प्रथम आहार करके ब्रह्म अग्नी प्रकाश किया ता पाछे धारना लगाया । सो अर्ध से ऊर्ध करके मनके नमेसे पवत बहने लगी । नौ नारी परिमल सो गांव । नौ नाड़ी आय के सुषुमना के घर में मिली । परिमल गांव कहिये सुषुमना । औ सखी पांच कहिये प्राण अपान समान व्यान उदान ये संपूर्ण नाभिस्थान में मिल के ब्रह्मांड में परब्रह्म पुरुष को देखने चले । तब अनहद बाजा रहल पूर । औ बहत्तर कोठा से वायू सब इकठी होके ब्रह्मांड में चली तब नाना प्रकार का अनहद नाद उठने लगा औ जीव ब्रह्मानंद में मग्न हुवा तो आवागमन से रहित हुवा ऐसा योग सुख छोड़ के संसार के जीव माया देख के कैसे भूल रहे हैं जैसी बनस्पती फूल रही है । माया का उपदेश अरे तुम विषय, धर स्त्री के स्वाद में भूले हो परंतु ये सब बनस्पती के माफिक झर जायंगे फिर तुम बहुत दुख पावोगे । तो तुम भोग छोड के योग करो तबहीं तुम्हारी कुशल होवेगी नहीं तो मनुष्य जन्म पाय के नरकमें जावोगे। अरे देखो ये विषय भोगन में कुशल होता तो गोपीचन्द भरथरी संपूर्ण राज स्त्री छोड छोड योग क्यों लेते । ताते तुम माया देख के भूलो मत औ बनस्पती के ऐसे फूलो मत योग साधो । ये अर्थ । जीवमुख—तब जीव सब संसारसे त्रासके भगवान की स्तुती करने लगे कि हे दासन के दास भक्तवत्सल भगवान हम तेरी शरण में आये । अब हम को शरण में आने का फल देना । वैकुण्ठ बास परमधाम को वास देना जहां चन्द्र नहीं, सूर्य नहीं, अग्नि नहीं, जहां जायके ये जीव फिर संसार में नहीं आता सो वैकुंठवास देना । ये अर्थ ॥ २ ॥

वसंत ३.

मैं आयों मेस्तर मिलन तोहि। ऋतु वसंत पहिरावहु मोहि॥
लंबी पुरिया पाई छीन। सूत पुराना खूटा तीन॥
शर लागे तेहि तीनसे साठ। कसनि बहत्तर लागु गांठ॥
खुर खुर खुर खुर चलै नारि। बैठि जौलाहिन पलथि मारि॥
ऊपर नचनियां करत कोड। करिगहमा दुइ चलत गोड़॥
पांच पचीसों दशहुँ द्वार। सखी पांच तहां रची धमार॥
रंगि बिरंगी पहिरे चीर। हरिके चरणधै गावै कबीर३॥

टीका जीवमुख—जीव बोलता है योगी लोगों की शरण में जाके कि हे मेसतर हे गुरु मैं तेरे चरणारबिंद में मिलनेके वास्ते आया सो ऋतु वसंत पहिराव मेरे को। ऐसी कृपा करो कि तुम्हारे चरणार बिंद का प्रेम लगे औ योग मार्ग मेरे को उपदेश करो ऋतु वसन्त कहिये योगमार्ग। ये अर्थ। गुरुमुख—लम्बी पुरिया कहिये लम्बी बासना सातस्वर्ग अपवर्ग आदिक की सो बासना बंध होके ये जीव की पाई भई, पाई कहिये पांजनी, पांजनी कहिये आवागवन, तामें जीव छीन हुवा। स्वर्ग आदिक की बासना करके नाना यज्ञादिक कर्म आचरणादिक भक्ती करते हैं फिर स्वर्ग को जाते हैं औ पुण्य छीन हुवा तब संसार में आते हैं फिर नाना कर्म कर के जाते आते हैं यह पाई में जीवछीन ज्ञानहीन होते हैं। और जीवके बीचमें एक लम्बी कल्पना बढी कि हम ब्रह्म में मिलैं। तब गुरुवा लोगोंकी शरण में गया तब गुरुवा लोगोंने ब्रह्मसमाधी उपदेश किया। कि वृद्ध पद्मासन लगाय के श्वास में सुरति पूर्वोक्त लगाना, श्वासोच्छ्वास सोहं हंसो यह जाप करना, तब शिष्य सब मिलिके पाई करने लगे पांजनी करने लगे। श्वासोच्छ्वास करते करते पवन छीन भई स्तब्ध भई तब सूत पुराना जीव सो तीन खुटे में अरुझा रजोगुण

त्रिकुटी स्थान छोडा औ सतोगुण तमोगुण शुद्ध सतोगुण ये तीन खूटे में अरुझा लपटा कंठसे नाभीतक पांजनी होने लगी। ये अर्थ। औ सूत पुराना कहिये जीव सो तीन खूटे में बंधा भक्ती, ज्ञान औ योग तत् त्वं अशी रजोगुण के खूटे में भक्त अरुझा, तामो गुण के खूटे ये योगी अरुझा, सतो गुण के खूटे में ज्ञानी अरुझा, बिज्ञानी तत्वमसी के खूटेमें अरुझा। शर लागे तेहि तीनसै साठ। तेहि तीन खूटा अहु-पीठ गोल्हाट श्रीहट येही तीन से खूटे का तीनसै साठ शर लागे तीन सै साठ हाड लगे ताते तीन खूटा खडा भया। औ बहत्तर कसनी लगी सो बहत्तर हजार नाडी में सब हाड कसे गये औ बहत्तर गांठी लगी तामें सब नाडिनका मुख एक गांठ नाभी में लगी। तहांते इंगला पिंगला सुषुमना तीन नाडी भई सो खुरखुर खुरखुर तीनों नाडीचलने लगी तब बैठि जोलाहिन पलथि मारि। जोलाहिन कहिये सुषुमना सो श्रीहट औ गोल्हाट दोनों खूटा छोडके अहुटपीठमें सुषुमना नाडी बैठ गई। तब ऊपर नचनियां करत कोड। ऊपर ब्रह्मांड में नचनियां आंखि चढी औ करिगह नाभी तामें सोहं ये दोनों गोड चलने लगे तब पांच तत्व औ पचीस प्रकृती दशों द्वार से पवन एकट्ठा हुआ। तब सखी पांच तहां रची धमार। पांच सखी कहिये पांच इन्द्री, सो कानमें से अनहद शब्द उठा औ नाकमें से त्रिवेणी धारा बही त्वचामेंसे आनंद उठा, जिभ्या में से रस उठा, आंखमें से नाना रंग रूप उठा। औ संपूर्ण लय होके मन उन्मन हुआ। सो नाना प्रकारके भेष जीव बनाने लगे, रंगी बिरंगी चीर पहरने लगे। रंगी नाम जीवकासो बिरंगी भये, कहूं योगी भये, कहूं जंगम भये, कहूं संन्यासी भये, कहूं सेव-डा भये, कहूं दरवेश भये, कहूं ब्राह्मण भये औ भगवे वस्त्र पहिरने लगे, कोई कारे कपडे पहिरने लगे, कोई कंथा गुदरी पहिरने लगे कोई हरे कपडे पहिरने लगे, कोई कम्मल सोहले पहिरने लगे। औ

हरी कहिये गुरुवालोग सो तिनके चरण धरके कहैं कबीर कबीर कहिये, जीवको, सो गुरुवा लोगोंके चरण धरके नाना भेष धारण करके भक्ती ज्ञान योग कर्म उपासना एकको एक कहने लगे। ये अर्थ। विरह अर्थ—अब जीव जा प्रकार से झीनी मायामें अरुझे सो सुनो परखाया गुरुने अब मोटी मायाको परखाते हैं सो सुनो। मैं आयों मेस्तर मिलन तोहि। ये जीव काम के बश होके उन्मत्त भये तब स्त्री की चाह की। फिर स्त्रीके नगीच जायके क्या कहतेहैं, कि हे मेस्तर हे प्रिये, मैं तेरे मिलने के वास्ते भोग करनेके वास्ते आया। अब ऋतु बसंत कहिये ज्वानी ऋतु, सो मेरेको प्रीतीसे सब बिलासी बचन औ मेरा बिलास पहिरावनी दे जाते मेरा मन प्रसन्न होय। तब लंबी पुरिया विषय वासना बढी औ नाना प्रकार कामके लहरी चुंबन आसनादि करने लगे नारी विषय में जीव तल्लीन भये चौरासीके तानीमें अरुझे ताते पाई करने लगे; आवागमनमें परे औ छीन भये। अपना ऐश्वर्य तेज पराक्रम औ सत्ता संपूर्ण छीन हुई। अरे देखो येही जीव जाने इच्छामात्र से संपूर्ण सृष्टी रचना की ताको खाने पीनेकी कपडे की विपत्ति होतीहै ऐसा ये स्त्री के संगमें छीन हुवा औ पाई करने लगा मैथुन करने लगा आवागवन में परा। ये अर्थ। सूत पुराना। खूटा तीन। सो देखो ये जीव पुरान पुरुष सो तीन खूटेमें बँधा पशुवत स्त्री पुत्र धन ये तीन खूटामें अरुझा ताहीते बारबार देह धरता है औ बार बार स्त्री के फंदे में रहता है चाहे कोई योनी में जाय अरे जा स्त्रीके फंदेमें तू परा है औ महा नरक गर्भबासका दुख सहता है सो स्त्री तो कौन अति उत्तम है तूं बूझ। शर लागे तोहि तीनसै साठ। तीनसै साठ हाडों की झोपडी औ बहत्तर हजार बंद से कसी गई जो बहत्तर गांठी परी सोई बहत्तर कोठे औ बंद नाडी ताके भीतर खुरखुर खुरखुर पवन चलती है औ हाडनपर रक्त मांस से लीपी है, ताऊपर

चामसे मढी है,ऊपर घास से रोवां भुरभुर करते हैं; भीतर लार मूत गू पित्त कफ भरा है।अरे नारी है,कि डाकिनी,कि जीव का बिजुका, कि पारधी,कि फांसी,कि खुशीका कैदखाना, तूं कौन अति उत्तम वस्तु देख के रीझा सो बिचार के देख भाई। अरे पलथी मारके बैठती है, ऊपर आंखिन की सैन चलावती है,तरे ठमक पांव डारती है मनसे संकल्प विकल्प करती है।भीतर एक पुरुष वश किया है दूसरेपर नजर रखती है। एकसे बातें करती है दूसरेपर चित्त चलावती है । एककी नारी कहावती है दूसरा अच्छा नजर में आया उसे धावती है। मैथुन द्रव्य दोऊ चाहती है । परंतु पांच तत्व पचीस प्रकृति सहित ये नारि बलाय जीवन को फाँसने खडी भई । अरे काम भक्षिनी या नारीका नाम है तू हुशियार रहना नहीं तो मुख की वाघिन तेरे को खा लेगी ऊपर के मुंहसे रिझायके तरे के मुख से खा लेगी । अरे दशहूं द्वारमें नर्क भरा है परंतु बिषइन बावरे को अमृत ऐसा मालूम परता है।तामें एक महाधार बडा बांका है तहां मूत्र बार बार बहता है औ ताधारमें जो गया सो फिर लौटा नहीं । बडे बडे वा धारमें गर्द भये बांचे सोई सूर । और जहां पांचो इंद्री धमार रची है । जा धमार में ज्ञानिन का ज्ञान औ ध्यानिनका ध्यान औ योगिन का योग भूल जाता है।

कवित्त—नेत्रन के कटाक्ष सोतो तीर ऐसे लागत आये, बेसरकी मोड जैसे नागिनिसि धाई है। कानन के झोक सोतो डारत धोख-जीव को त्वचा की शोभा तडित आंखिनपर छाई है ॥ जीभनकी बातें करन चाहत जिवघातें, देखी सुरनर मुनिमाते सो जीवन को भाई है।भांति भांति वस्त्र धारे काहु टरत नाहिं टारे, सकल जीव जाहि मारे पूर्ण घटा उरमाई है ॥ १ ॥

हरि के चरण धै गावैं कबीर। हरी कहिये स्त्री को जाने सभन का मन हर लिया, जीव कामवश होके ताही के चरणन में परे औ

नानाप्रकार के सिंगार वही स्त्री की बड़ाई गावने लगे परन्तु ये सिंगार संपूर्ण जीवनको बन्धन यथार्थ परख के छोडो । ये अभिप्राय॥ ३ ॥

बसंत ४.

बुढियाहँसि बोलिमैं नितहिं बार। मोसे तरुणि कहोकवनिनार
दांत गये मोर पान खात । केश गये मोर गंगा नहात॥
नैन गये मोर कजरा देत । बैस गई पर पुरुष लेत ॥
जान पुरुषवा मोरं अहार । अनजाने का करौं सिंगार॥
कहहिं कबीरबुढिया आनंदगाय। पूत भतारहि बैठी खाय ॥

टीका मायामुख--बुढ़िया कहिये मायाको, सो माया दो प्रकार की झीनी औ मोटी झीनी माया गुरुवा औ वेद औ मोटी माया स्त्री ताका हांस बचन गुरु बताते हैं यह तृष्णा देखो नितही बारी। जो अनेकन देह जीवने धारण किया औ अनेक बुढाय के छूट गई परन्तु जब जब चोला पैदा हुवा तब तब तृष्णा नितही बारी। देह बुढाय जाती है तृष्णा नहीं बुढाती ताते तृष्णा कहती है कि मोसे तरुनि कहु कौनि नारी। जो संपूर्ण स्त्रियां ज्वान से बूढी होती हैं कहती हैं कि मैं नहीं बुढाती। ये अर्थ। अरे भाई गुरुवा लोग तृष्णा के मारे जीवन को बांधते हैं, कि जामें हमारी प्रतिष्ठा होय औ हमारा नाम बढे पंथ चले, चेला चाटी बहुत होयँ, द्रव्य बहुत मिले, ताके हेत मारे मारे फिरते हैं औ नाना बानी विद्या मंत्र तंत्र दृढावते हैं । देह बुढाय गई पर तृष्णा तरुण ललकारी मारती है। तैसे स्त्री तो बुढाय जाती है औ इन्द्री भी थक जाती हैं पर तृष्णा विषय की ललकारी मारती है, ये अर्थ। दांत गये मोर पान खात । अब गुरुवालोग बोलते हैं कि हम नित्य ब्रह्म हैं औ जगत सब अनित्य है। हम पुराण पुरुष औ हमसे तरुण ज्ञानी जग को तारने वाले और कौन भक्त हैं। ये अर्थ। अरे पान

कहिये वेद सो वेद पढते पढते हमारे दांत गये संकल्प सब छूटगये। और केश कहिये पाप सो गंगादिक तीर्थ नहाते नहाते सब पाप गये और नयन गये मोरे मुद्रा करते करते औ बैस ज्वानी में साधन समाधी साधी सो पर पुरुष कहिये जो पराके पार है तामें लीन होके निर्विकल्प दशा में बैस गई। जिन्ह सत पुरुष परब्रह्म को अपरोक्ष करके जाना सो पुरुष मेरा स्वरूप है औ अनजाने जो जीवहैं तिन को ब्रह्म अनुभव अपरोक्ष जाननेको नानाप्रकार के भेष शृंगार करतेहैं। ये अर्थ। गुरुमुख—कहहिं कबीर बुढिया गुरुवालोग सच्चिदानन्द को गावतेहैं औ नाना भेष धारण करते हैं। पूत भतारको बैठे खाते हैं भतार कहिये ब्रह्म, पूत कहिये जीव, सो जीव था सो ब्रह्म हुवा और ब्रह्म था सो जीव हुवा तब पूत भतार कहिये जीवको सो गुरुवालोग जीवको बैठे खातेहैं भरमाते हैं। ये अर्थ। विरह अर्थ—ये माया स्त्री जाने ब्रह्मा विष्णु आदि सबको पैदा किया ऐसी बुढिया सो बोलतीहै कि मैं नितहि बारी। जा स्त्रीसे पूछो सो कहतीहै कि मोसे तरुणी और कोई नारी नहीं। दांत गये मोरे पान खात। पान कहिये ज्वानी, दांत कहिये इंद्री, सो इंद्री शांत हो गई ज्वानी खाते खाते। औ केश कहिये काम सो काम गये ब्रह्मांडमें गंगा नहात शृंगार करत। अरे जो हमारे शृंगार रस को जानेगा सो तो हमारे आहारमें आया बश भया परंतु हमारे कामकी तृप्ती भई नहीं। ताते अजान पुरुष जीव तिनके वास्ते शृंगार करते हैं अपने कामकी तृप्ती करनेके वास्ते। जान पुरुषवा कहिये ब्रह्मादिक मुनी तिनका तो अहार किया और अब संसारके जीवनकी मति हरनेके वास्ते स्त्रीरूप होके पैदा भई। सो गुरु कहतेहैं कि माया विषय शृंगार गावती है औ पूत भतार जीवको खातीहै भरमाती है। ये अर्थ ॥ ४ ॥

वसंत ९.

तुम बुझ बुझ पंडित कौनि नारि। काहुन ब्याहलि है कुमारी ॥
सब देवन मिलि हरही दीन्ह । चारिउ युग हरि संग लीन्ह ॥
प्रथम पदमिनी रूप आहि । है सांपिनि जग खेदिखाहि ॥
ई बर जोवत उबर नाहिं । अतिरे तेज त्रिया रैनि ताहिं ॥
कहहिं कबीर ये जगपियारि । अपने बलकवहि रहलमारि ॥

टीका गुरुमुख—हे पंडित बुद्धिमान तुम बूझो कि यह कौन नारी है जाने काहुको ब्याहा नहीं ताते अनेक पुरुषनको भी दिखाया पर अभी कुमारी है । ये अर्थ । सब देवने मिलिके विष्णु हि दीन्ह तहां लक्ष्मी होके बैठी । चारीउ युग विष्णुने संग लिया सो प्रथम पद्मि-नीरूप नाम लक्ष्मी होके विष्णुको छला, फिर नागिनी स्त्री रूप होके सब जगत को चौरासी में खेदा औ जगको खानेलगी । चार रूप धारण किया मायानै, पद्मिनी चित्रिणी हस्तिनी शंखिनी औ दो रूप मिलित हैं नागिनी औ डंकिनी। जामें पद्मिनी औ चित्रिणी दो रूप मिलित लक्षण होय सोई नागिनी, औ हस्तिनी औ शंखिनी दोनों के मिलित लक्षण जामें होय सोई डंकिनी । इसप्रकारसे छै रूप मायाने धारण किये सो ताका बिस्तार कोकशास्त्र में बहुत कहनेवालेने कहा है, यहां कछु विस्तार किया नहीं कि उसमें कछु हासिल नहीं नाहक टीका क्यों बढाना । स्त्री छे प्रकारकी इनके पुरुष छै, पद्मिनीका पुरुष शशा, चित्रिणीका पुरुष मृगा, हस्तिनीका पुरुष बैल, शंखिनी का पुरुष गदहा, नागिनी का पुरुष तुरंग, डंकिनीका पुरुष भैंसा, इस प्रकारसे छै स्त्री औ छै पुरुष सो अपने अपने पुरुषों को ढूंढती हैं स्त्री । जा स्त्रीका पुरुष ताको मिला तो काम पूरा भया अगर वियोग मिला तो अतिरे तेज त्रिया रैन ताहि। काम त्रियाको अति उग्र होता है फिर

वो स्त्री का मन खाविन्द पर लगता नहीं। ई बर जीवत ऊ बर नाहीं। ई अपना पुरुष ढूंढती है वो तो इसका पुरुष नहीं। तब महा तेज होके त्रिया व्यभिचार करती है, काममें उन्मत्त हो जाती है। जबलग उसका पुरुष न मिले तबलग उसका काम नहीं शांत होता। सो गुरू कहते हैं कि देखो ये जग पियारी नारी जो अपने बालक सब पुरुष तिनको मार रही है। अरे इस जीवने दो रूप धारण किया एक नारी एक पुरुष औ दोउ विधि माया में अरुझा। माया कहिये काया, सो हे संतो बुद्धिमान तुम परख के मत अरझो। ये अभिप्राय। विरह अर्थ -तुम बुझ बुझ पंडित कौनि नारि। हे बुद्धिमान तुम बूझो ये कौन बानी है जाने काहूको ब्याहा नहीं जैसी पैदा हुई तैसी कुँवारी संसार में बनीहै अरे इस बानी ने बहुतेक जीवन की लगन धोखे से लगाई। पर वैसे ही बनी है वेद बानी कल्पित बानी। ये अर्थ। सब ब्रह्मादिक देव-तन ने विष्णुको दिया वेद, सो चारों युग परयंत विष्णुने वेद का बि-चार किया। प्रथम भक्ति रूपी बानी पद्मिनी, दूसरी योगरूपी, तीसरी ज्ञानरूपी ये तीनों देवनने संसारमें दृढाई। भक्तिरूपी विष्णुने दृढाई, योगरूपी महादेव ने दृढाई, ज्ञानरूपी ब्रह्माने दृढाई। इसप्रकार से ये बानी सर्पिनी होके सब जगत को भ्रममें खेदने लगी औ भरमाने लगी। ता बानीका आसरा करके संसार के जीव सब कोई एक पुरुष है ऐसा अनुमान करते हैं, पर ऊ बर नहीं, वो पुरुष कछु नहीं, औ अति तेज बिरह तो ये जीवको हुआ ताते दूसरा पुरुष अनुमान किया औ उसके बिरह में जरने लगे, महा भ्रम अँधियारी छाई जीवन पर। ऐसे भक्तलोग संसार में बडे प्यारे श्रेष्ठ कहलाये, इनके शिष्य शाखा संसार में होने लगे। सो ये आपही भ्रममें परे औ शिष्य शाखाको भी भरमाया। ये अर्थ ॥ ५ ॥

वसंत ६.

माई मोर मनसा अति सुजान । धंधं कुटिकुटिकरत बिहान ॥
बड़ी भोर उठि आंगन बाढु । बड़े खांच ले गोबर काढु ॥
बासी भात मनुसे लिहल खाय । बडा घैललिये पानीको जाय ॥
अपने सैयां की मैं बांधुगिपाट । ले बेचूंगी हाट हाट ॥
कहहिं कबीर ये हरिके काज ।जोइया केढिगरहिकीनिलाज ॥

टीका मायामुख--मनसा कहिबे मन या मनसा कहिये जो कुछ मानने में आवै, सो जो इष्ट देव या ब्रह्म जिसके मानने में आया सोई तिसका खाविंद भया, आप उसका भक्त नारीरूप बनके प्रशंसा करने लगा । ये अर्थ । धन्ध कूटि कूटि करत बिहान जैसा कोई धान कूटि कूटिके शुद्ध चावल निकाल लेता है तैसा भगवान अपने भक्तन को दरिद्रताई औ नाना क्लेशन के मूसल से कूटि कूटि शुद्ध ज्ञानरूप आप रूप कर लेता है कि अनेक जन्म नित्य नैमित्तिक कर्म करके ईश्वर को अर्पन करता है जीव, सो उस जीव का ईश्वर ऋणी रहता है । सो उस जीव का ऋण उतारने के वास्ते गुरुरूप होंके औतार लेता है औ जीव को ज्ञान बताता है । औ कूटि कूटि योग साधना में जीव का अज्ञान भूसा उडाय के शुद्ध ज्ञानरूपी करता है ताते बडे सुजान ये प्रशंसा । बडी भोर उठि आंगन बाढु, बडे खांच ले गोबर काढु । बडे खांच कहिये ब्रह्मरंध्र भ्रमरगुफा को लेके समाधी करी औ गोबर कहिये विषय सो सब काढ़ि डारा तब बडा ज्ञान उठा सच्चिदानंद अनुभव ताते आगन बाढु । संपूर्ण कर्म झारके उडाय दिया शम दम संपन्न हुये । ये अर्थ । बासी भात मनुसे लिहल खाय । बासी भात कहिये जगत, सो जगत सब खाय के लै करके आप ही ब्रह्म हुये । ये अभिप्राय । बडा घैल लिये पानी को जाय । बडा घैल कहिये ब्रह्मांड

सो सब ब्रह्मांड अपने पेट में लिये । ऐसे ईश्वर जीव का ऋण फेरने के वास्ते गुरुरूप होके चौरासी हीन जीवन को कृतार्थ किया औ दुष्टन को नाश करके फिर क्षीर सागर में जाय के निवास किया पानी को जाय । ये अर्थ। अपने सैयां की मैं बांधुगी पाट,लेबेचूंगी हाटे हाट । जीव बोलता है कि अपना सैयां ईश्वर ताको अपने प्रेम भक्ती के जोर से बांधूंगा औ उसकी कीर्ती नाम सब बजार में हाट में गुरुलोग साधु लोगोंकी संगति में बेचूंगा, या कोई शिष्य गाहक होयगा उसे देउंगा ये अर्थ । **गुरुमुख**--कहहिं कबीर यह हरि के काज, जोइयाके ढिग रहि कौन लाज । गुरू कहते हैं कि हे संतो देखो ये गुरुवा लोगों की बातें कि जो अपना खाविंद बनाया ताको प्रेम से अनुमान बांधा फिर हाटो हाट कथाकी कीर्तन पोथी पुराण बेंचते फिरते हैं । अब इन के भक्ती की कौन लाज । ये अर्थ ॥ ६ ॥

वसंत ७.

घरहि में बाबुलबाढलीरारि। उठिउठि लागलि चपल नारि ॥
एक बडी जाके पांच हाथ। पांचोंके पचीस साथ ॥
पचीस बतावैं और और। और बतावैं कईक ठौर ॥
अंतर मध्ये अंत लेइ। झकझोरि झोरा जीयहित देइ॥
आपन आपन चाहैं भोग। कहु कैसे कुशल परि है योग॥
बिबेक बिचार न करे कोय। सब खलक तमाशा देखे लोय॥
मुख फारि हँसे सब राव रंक। ताते धरे न पावे एको अंक॥
नियरे न खोजे बतावैं दूर। चहुँ दिश बागुलि रहलि पूर॥
लक्ष अहेरी एक जीव। ताते पुकारे पीव पीव ॥
अब की वार जो होय चुकाव।कहहि कबीर ताको पूरि दाव७

टीका गुरुमुख--हे बाबू जीव तुम्हारे घट हीमें रार बढी जो हमें-

शा उठ उठ के चपल माया तेरे पीछे लगी है माया कहिये, बानी कहिये, कल्पना कहिये, गुरुवा कहिये, आशा कहिये, तृष्णा कहिये, लोभ कहिये, मोह कहिये, काया कहिये, येतिक प्रकार की माया और याके रूप अनेक हैं सो महा परम चपल तेरे पीछे लगती है। मैं मुख्य सब ते बडी एक काया जाके पांच हाथ पांच तत्व और पांचोंके पचीस साथ। आकाश पंचक अंतःकरण चित्त मन बुद्धी अहंकार औ बायू पंचक प्राण अपान समान व्यान उदान, अग्नी पंचक आंखि कान नाक जीभ त्वचा, जल पंचक शब्द स्पर्श रूप रस गंध, पृथिवी पंचक हाथ पांव मुख गुदा लिंग ये पांचों के पचीस साथ। अब इनके पचीस बिषय अंतःकरणका बिषय निर्विकल्प, मनका बिषय संकल्प बिकल्प, चित्तका बिषय अनुसंधान, बुद्धीका बिषय निश्चय, अहंकार का बिषय करतूत, प्राणका बिषय चलब, अपानका बिषय छोडब, समानका बिषय बैठब, उदान का बिषय उठब, व्यान का बिषय पौढब, कानका बिषय शब्द सुनब, आंखि का बिषय देखब, नाक का बिषय सूंघब, जीभ का बिषय बोलब, त्वचाका बिषय स्पर्श ये अग्निपंचक, अब जल पंचक, शब्दका बिषय राग सुर अर्थ, स्पर्शका बिषय मृदुत्व शीतलत्व उष्णत्व, रूप का बिषय सुन्दरत्व, रसका बिषय स्वाद, गंधका बिषय सुप्रसन्नत्व। ये पचीस बतावैं और और। येही पच्चीस बिषय में जीव बन्ध गया। ताते ये बिषय और कई एक ठौर कहिये चौरासी लक्ष योनी जीवको बताते हैं। ये बिषय कैसे हैं कि अंतर में गड जाते हैं फिर अंतमें जीवको अपने में मिलायके चौरासी में डारते हैं। औ झक झोरा जीवही देय। ये बिषय आवागमन का झोरा धोखा जीवको देते हैं। ये अर्थ। ये सब पचीस कला आपन आपन चाहैं भोग तब कैसे करके जीव कल्याण पदके योग्य होयगा। इन बंधनका बिवेकविचार कोई करता नहीं कि सत्य क्या है औ झूठ क्या है सब खलक बानी

विषयन का तमाशा देखता है अरुझ रहा है । ये अर्थ । मुख फारि के सब ईश्वरादिक जीव एक का एक उपहास करते हैं ताते एकौ जीव स्थिति धरने न पाया एकौ अंक जीवका निर्णय न भय। । नियरे सत्सङ्ग में जीव खोजते नहीं औ दूरि योग उपासना वाले बताते हैं सोई बानी चहुं दिस पूर हो रही है । लक्ष अहेरी गुरुवा लोग फांदनेवाले याने लाख तरहके फांसे बनाये एक जीव को फांसनेके वास्ते ताते जीव सब पीव पीव पुकार रहे हैं।ये अर्थ । अबकी बार जो सब फंदन को परख लेय औ चुकाव छुटकाव हो जाय पारख स्थिति होजाय, गुरू कहते हैं कि ताहि नरको पूरो दाव । ये अर्थ ॥ ७ ॥

वसंत ८.

करपल्लव केवल खेले नारि । पण्डित होय सो लेय विचारि ॥
कपरा न पहिरै रहै उघारि । निर्जिव से धनि अति पियारि ॥
उलटी पलटी बाजू तार । काहू मारे काहू उबार ॥
कहहिं कबीर दासनके दास । काहू सुखदे काहू निरास॥८॥

टीका गुरुमुख—केवल नारी कहिये केवल आत्मा परमहंस. सो मूक दशा धारण करके करपल्लव खेलते हैं । कछु बात कहना भई तो अंगुरी के इशारा से बताते हैं कि जो कोई चतुर पंडित होवेंगे सो बिचार लेवेंगे । कपरा पहिरते नहीं नंगे फिरते हैं औ निर्जीव नाथ निरंजन तामें अती प्रिय, मिल गये । पतिव्रता जैसे अपना खाविन्द मरा तो प्रीतिके मारे अपनी भी देह छोडती है । तद्वत ये जीवनने सुना कि अपना खाविन्द बे रूप है तो अपनी भी देहकी विस्मृती करना ऐसा निश्चय करके बाल उन्मत्त पिशाचवत मूक होके घूमने लगे जड़ होनेके लिये । ये अर्थ । उलटी पलटी बाजू तार; काहू मारे काहू

उबार । गुरु कहते हैं कि उलटि पलटि ये केवल माया ने अनेक औतार धारण किये और अपना हुकुम सब जीवन पर चलाया । जाने हुकुम नहीं माना रावण दुर्योधन आदि तिनको मारा और जाने हुकुम माना पाण्डव बिभीषण आदिक तिनको बचाया। ताते गुरुवा लोग बोलते हैं कि भगवान् दासनका दासत्व करतेहैं औ अपने भक्तनको सुख देते हैं औ अभक्तनको निरास करतेहैं अर्थात् पापिके विनाश करते हैं। ये अभिप्राय॥ ८ ॥

वसंत ९.

ऐसो दुर्लभ जात शरीर । राम नाम भजु लागु तीर ॥
गये बेनु बलि गये कंस । दुर्योधन के बूडो बंश ॥
पृथु गये पृथिवीके राव । त्रिविक्रम गये रहे न काव ॥
छौ चकवै मंडली के झारि । अजहुं हो नर देखु बिचारि ॥
हनुमन्त कश्यप जनक बालि। ई सब छेंकल यमके द्वारि ॥
गोपिचंद भल कीन्ह योग । जस रावण मार्यो करत भोग॥
ऐसीजात देखि नरसबहींजान। कहहिं कबीर भजु रामनाम ९

टीका गुरुमुख—ऐसो दुर्लभ मानुष शरीर नाहक में जाता है सो हे जीव तुम संपूर्ण धोखेको परखो औ राम कहिये सगुण औ नाम कहिये निर्गुण सो दोनों मिथ्या धोखा। यथार्थ परखके छोडो औ पारखिन के संगमें लगो जाते पारख स्थिति प्राप्त होय । ये अर्थ । अरे बडे बडे सामर्थवान भये सो सब मरि गये मानुष जन्म धोखे में खोया । राजा बेनु, राजा बली ,औ राजा कंस,राजा दुर्योधनका बंश बूडा पर काहू जीवने विचार किया नहीं परपंचमें उन्मत्त होके मरे ।राजा पृथु सरीके जिन संपूर्ण भूमि वश किया परंतु जीवकी स्थिति नहीं की। औ त्रिविक्रम औतार हुवा। बलीको छला संपूर्ण पृथिवी तीन पैर

किया और बलिहरण करके इंद्रको राज दिया पर अपनी स्थिति न किया तो पुरुषार्थ सब मिथ्या।तो ऐसे ऐसे बडे बडे मरगये काहूकी स्थिति भई नहीं।अरे छौ चक्रवर्ती बडे समर्थ भये पर सब सामर्थ धूलमें मिलि एक पारख बिना। हे नर तूं अब तो भी विचार करके देख कि तेरा स्वरूप क्या है अरे हनुमान, कश्यप, जनक,बली ये सब गर्भ-बास में छेके गये एक पारख बिना । तूं देख सबकी बानी औ बेद बानी. बिदित है जो प्रथम भास हुवा इसको सोई भास में सब जीव अरुझे, स्थिति काहूकीभी भई नहीं। गोपीचंदने राज छोडके योग साधन बडा किया औ ब्रह्ममें मिले, सो ब्रह्मको बेदांत शास्त्र बोलता है कि संपूर्ण जगत ब्रह्मरूपीहै तब ये योग,बैराग्य, किया तभी ब्रह्म और नहीं किया तो भी ब्रह्म, तो हकनाहक राज छोडा। भला जो राज न छोडता औ योग न करता तो जगतरूप ब्रह्म था कि नहीं। औ रावण लंकाको भोग करता था सो कल्पना उठी कि रामके हाथसे मरना औ मोक्ष होना,ताते भोग करते करते मारा गया औ राम होके जगमें मरा , नाना प्रकारके सुख दुख भोगने लगा धोखेमें मारा गया । याहीसे गुरु कहते हैं कि हे नर ये सबही को बिना पारख गर्भवास में जाते देखा सो तूं निर्गुण सगुण दोनों धरि दे औ पारख पर ठहर। ये अर्थ ॥ ९ ॥

बसंत १०.

सबहीं मद माते कोइ न जाग ।संगहि चोर घर मूसन लाग॥
योगी माते योग ध्यान । पंडित माते पढि पुराण ॥
तपसी माते तपके भेव । संन्यासी माते करि हंमेव ॥
मोलना माते पढि मुसाफ। काजी माते दै निसाफ ॥
संसारी माते मायाकी धार । राजा माते करि हंकार ॥

माते सुखदेव उधव अक्रूर । हनुमन्त माते ले लँगूर ॥
शिव माते हरि चरण सेव । कलि माते नामा जैदेव ॥
सत्य सत्य कहैं सुमृति वेद । जस रावण मारे घरके भेद ॥
चंचल मन के अधम काम । कहहिं कबीर भजु राम नाम ॥

टीका गुरुमुख—मद कहिये जामें जीव मस्त होजाय औ कछु सूझे नहीं । जासे मस्त होय तामें असक्ती बनी रहै औ गाफिली होय सोई मद । ये अर्थ । सब संसार आठ मदमें माता गाफिल हुवा कोई जागा नहीं चेता नहीं । औ चोर मन जीवके संग लगाहै सो जीव का घर सांच विचार धीरता दया शील आदि सम्पूर्ण लूटताहै । ये अर्थ । अब कौन कौन मदमें कौन कौन किस तरह से माते सो सुनो । पहिले योग मद, उन्मनी आदि ध्यान करते करते औ कल्प किया आसन समाधी करते करते सिद्ध हुये महादेव गोरख आदि संपूर्ण ध्यान में माते गाफिल हुये कछु पारख पदकी प्राप्ती हुई नहीं । इनकी बानी प्रत्यक्षहै जो पिंडांडनमेंसे जीव ब्रह्मांड में योग धारण करके लेजाना औ ब्रह्ममें मिल रहना तो ब्रह्मांड फूट जायगा औ आनन्द विनाश जायगा । जब चोला छूटा तब चोले का कर्तव्य योग समाधी सब नाश हो जायगी फिर ये हँस गर्भबासमें समायगा ताते ये भी मिथ्या गाफिली । ये अर्थ । विद्यामद, जो व्यास शुक आदि पुराण पढके माते कि हम ईश्वरकी कीर्ती गायी परन्तु इनके पुराण औ कीर्ती जब चोला छूटेगा तब सब भूल जायगी आखिर जीव नाना कल्पनाके बश होके चौरासीमें जायगा पारख बिना । तपस्वी विश्वामित्र आदि तपस्याके मदमें माते, गाफिल होके अन्न पान वस्त्र छोडा औ जंगल में रहने लगे जैसे बनके खग मृग गज हरिन रीछ आदिक, तद्वत फल फूल मूल पत्र तृण पवन अहार करने लगे तो चोला छूटे जङ्गलके पशु होवेंगे । औ ब्रह्मांड में बासा रखते हैं सो नभबासी पक्षी होवेंगे

औ पुराणिक स्यार होवेंगे । औ संन्यासी ज्ञान मद में माते कि हम ब्रह्म औ जगत सब इंद्रजालवत,तो ये ब्रह्म होके जगतमें रहे अंतमें इनकी स्थिति कहांहै नाहक भ्रममें पडे औ जगत आत्मा पारखबिना कहिके जगतमें आये नाना योनी ब्रह्म होके भोगतेहै। ये आठ मदमें सब संसार माता औ गाफिल होके बंधन में परा । ये अर्थ । मौलना लोग मुसाफ पढिके माते पर जब इनका चोला छूटेगा तब मुसाफ भूल जायगा औ मुरगेकी योनीमें जाके बांग पुकारा करेंगे । औ काजी नाना सरीयत की बानी पढि पढि माते पर अंत में सब भूल जायगी बिना पारख जीवकी स्थिति कहां होवेगी ताते गाफिल बकरे की योनीमें जायेंगे । ये अर्थ । और संसारी पुत्र स्त्री धन जाति पांति कुल गोत आदि विषय में माते परन्तु देह छूटे पर सब रह जायगा औ श्वान शूकर आदि योनी को प्राप्त होवेंगे। औ राजा राजमदमें माते तो जब देह नाश होयगी तब राजपदवी छूट जायगी औ हाथी की अथवा अनेक पाप योनीमें जायेंगे । अरे सबही गाफिल हुये कोई पारख स्थिति को पाया नहीं । देखो सभनकी बानी प्रत्यक्षहै शुकदेव ऊधव अक्रूर आदि जो ज्ञानी भये सो सभनकी मत प्रथम भास लगतहै आगे कोई पार पाया नहीं सब गाफिलीमें रहे ताते आवागवनमें परे । ये अर्थ । हनुमान अपने दुम के बल से औ भक्ती के बलसे गाफिल हुये आखिर वो भी जगत जालमें रहे, बिना पारख। ये अर्थ । शिव माते भक्ती विषयमें परन्तु मिथ्या धोखा उनके परखने में न आया तो अंतमें स्थिति कहां होयेगी आखिर जगत जालमें आये, बिना पारख। औ कलियुग में नामा औ जयदेव भये सो सब भक्ती में दिवाने भये परन्तु कल्पना उनके भी परखनेमें न आई ताते फिर फिर योनी संकट भोगतेहैं । ये अर्थ। अरे सब नाना प्रकार का धोखा स्मृति वेद सत्य सत्य कहिये जीव को दृढाता

है औ वेद के भरोसे सब जीव भ्रम में परे हैं कोई निज पारख स्व-तंत्र निरपक्ष होके करते नहीं । औ कोई अधिक शंका करने चा-हता है तो वेद औ गुरुवालोग उसे रोकते हैं, कहते हैं कि वेदबाह्य शंका मत करो । इस प्रकार से गुरुवा लोगनके भेद से जीव मारे जाते हैं जैसा घरके भाई बिभीषण के भेद से रावण मारा गया तैसे जीव की कल्पना से जीव मारा गया । ये अर्थ । हे संतो ये सब चंचल मन के अधम काम हैं सब धोखा । सो तू सगुण राम औ निर्गुण नाम दोनों परख के छोड़ औ पारख पर स्थिर हो । ये अर्थ ॥ १० ॥

वसंत ११.

शिव काशी कैसी भई तुम्हारि अजहू हो शिवलेहु विचारि ॥
चोवा चन्दन अगर पान । घर घर सुमृति होत पुराण ॥
बहु बिधि भवने लागू भोग । ऐसे नग्र कोलाहल करत लोग
बहु बिधि परजा लोग तोर । तेहि कारण चित ढीठ मोर ॥
हमरे बालकवाके इहै ज्ञान । तोहराके समुझावै आन ॥
जो जेहि मन से रहल आय । जीवका मरण कहूँकहाँ समाय ॥
ताकर जो कछु होय अकाज । ताहि दोष नहिं साहेब लाज ॥
हर हर्षित सो कहल भेव । जहाँ हम तहाँ दूसरा न केव ॥
दिना चारि मन धरहु धीर । जस देखै तस कहैं कबीर ११

टीका गुरुमुख—शिव कहिये, आनंद कहिये, ब्रह्म कहिये, परमहंस कहिये । जो साधन चतुष्टय संपन्न होके फिर वेदान्त श्रवण मनन करके देहकी विस्मृति किये औ बाल पिशाच उन्मत्तमूक जडवत दशा-को प्राप्त भये, षड उर्मी रहित भये सो शिव सो परमहंस औ परमहंस कहिये आत्मवित् ब्रह्मवित् ॥ तिनसे गुरु कहत हैं कि हे शिव तुम

सच्चिदानन्द स्वरूप,तुम्हारे में असत जडदुःख ये देह कैसे पैदा भई। काशी कहिये काया सो काया बिना तुम अवर्ण स्फुर्ण होके तुम्हरे में काया कैसी निर्माण भई औ फिर तुम सच्चिदानन्द बने तो असत जड दुःख कहां गया हे शिव तुम अजहूं बिचार करो जो पहिले असत सतसे उत्पन्न भया औ चैतन्य से जड उत्पन्न भया औ आनन्द से दुख उत्पन्न भया औ अब चैतन्य में जड समाया अजहूँ हो शिव लेहु बिचारि। देखो अब तुम्हारी सेवा संसार सब करते हैं कोई चोवा कोई चन्दन कोई अर्गजा तुम्हारे अंग में लगाते हैं, नाना प्रकार के पक्के पान के बीडे पवाते हैं औ घर घर पंडित श्रुति स्मृति पुराणन में तुम्हारा महात्म बडा करते हैं और अपने अपने घर के लोग ले जाय के नानाप्रकार के पक्वान व्यंजन बनवाय के आप को भोग लगवाते हैं, ऐसे नगर संसार में कोलाहल लोग करते हैं कि परमहंस परमात्मा इनसे कोई अधिक नहीं। औ आप के प्रजा लोग शिष्यशाखा बहु बिधी विशेषता आपकी वर्णन करते हैं तेहि कारण चित हमारा भी दृढ भया कि परमहंस लोग आपही परमात्मा। ताते मैं पूछता हौं कि तुम निर्विकार होके फिर तुम्हारे में जगत देह विकार कैसे पैदा भया सब विकारके अधिष्ठान होके फिर निर्विकार कैसे कहलाते हो। अरे हमारे बलकवा के ईहै ज्ञान, कि हमारा जीव लोगों का यही ज्ञान है। औ आप तो सर्वाधिष्ठान सर्वरूप तो भला संपूर्ण तो तुम आपही हो अखंड एक रस। तो तोहरा के समुझावै आन। तुम कहोगे कि कोई नहीं तो बेद औ मुनि किसीको उपदेश करते हैं। ये अर्थ। जो जाके मनमें आया सो बोलता है ऐसी अनेक बानी है, तो जीव का मरण कहो कहां समाता है जब जीव देह छोडता है तब कहां समाता है। जो कहोगे कि ब्रह्मसे उत्पन्न होताहै औ ब्रह्ममें समाता है तो ब्रह्ममें उत्पत्ती प्रलयलगी तो जीव का अकाज भया। जो बडी मेहनत किया औ ब्रह्म में समाया तो ब्रह्ममें

उत्पत्ती प्रलय लगी तो उत्पत्तीप्रलय जीवकी कैसी छूटै अब जीवका तो अकाज हुवा गुरुवा लोगोंकी बानी सुनके, तो उसको कछु दोष नहीं संपूर्ण गुरुवा लोगों का दोष । औ बडी शरमकी बात है जो सब गुरुवा लोगों के भरोसे हैं सो गुरुवालोग आपही धोखे में परे हैं, कोई पारख नहीं करते बिचार नहीं करते । ये अर्थ । गुरुमुख—अब गुरुवा ब्रह्मज्ञानी बोलते हैं अपना अनुभव कि जहां हम विचार किया तो जहां हम ब्रह्म हैं तहां दूसरा कोई नहीं अखंड अद्वैत एकरस एक आत्मा तहां न उपजना न बिनसना, नलाज न शरम, न कर्म न क्रिया, न पाप न पुण्य, मैं एक ब्रह्म । ये अर्थ । गुरुमुख—तब गुरु बोलते है कि दिना चारि मन धरहु धीर । अरे जबलग ये देह तबलग मैं आत्मा मैं ब्रह्म ऐसा कहिके धीर पकडो पर जब देह छूटेगी तब तुम्हारा धीरज औ ब्रह्म औ आत्मा कहां रहेगा सब नाश होजायगा, जो कछु देहसे भास हुवा है सो सब देहके संग नाश हो जायगा । जब देह छूट जायगी तब फिर गर्भबासको प्राप्त होगा जीव । अरे ये जीव जैसा देखते हैं तैसाही अपना स्वरूप कहते हैं । इस जीवने स्थूल देखा तब कहा कि येही मेरा रूप औ जब सूक्ष्म देखा तब कहा कि येही मेरा रूप, जब कारण भासा तब कहा कि येही मेरा रूप, जब महाकारण भासा तब कहा कि येही मेरा रूप, जब केवल आत्मा भासा तब कहा कि येही मेरा रूप । परन्तु आप सब का भासिक ये न जाना औ अपना स्वरूप पारख ताकी प्राप्ति न भई ताते भ्रम में परा औ दुख सुख भोगता है । ये अर्थ॥ ११॥

वसन्त १२,

हमरे कहलक नहिं पतियार । आपु बुडे नर सलिल धार॥
अंधा कहै अंधा पतिआय । जस विश्वाके लगन धराय॥

सो तो कहिये ऐसो अबूझ । खसम ठाढ ढिग नाहिं सूझ॥
आपन आपन चाहैं मान । झूठ प्रपंच सांच करि जान॥
झूठा कबहु न करि हैं काज । हौं बरजों तोहि सुन निलाज॥
छाडहु पाखंड मानो बात । नहिं तो परबेहु यमके हात ॥
कहहिं कबीर नर कियोन खोज। भटकि मुवा जस बनका रोझ॥

टीका गुरुमुख—ये संसारकी कल्पना के हेत अनेक प्रकार से समुझाया परन्तु गुरू कहते हैं कि हमारे कहने की प्रतीत इस नरको बिना पारख नहीं आती,ताते आपही कल्पना कर करके नाना वेद आदिक बानी बनाई और आपही नर वह बानी के धार में डूबे अंधा कहै अंधा पतियाय।प्रथम अंधा ब्रह्मा सो वह नाना वेद बानी बोला दूसरे अंधे सनकादि अट्ठासी हजार ऋषी तिनने माना औ प्रतीतकि-या, आगे उनको कछु समझ न परा ताते अन्ध औ अंधे संसार के गुरुवा लोग जो नाना प्रकार के उपदेश करते हैं औ जीव सब मानते हैं औ गुरुवा लोगों की बानी को सब कोइ पतियाते हैं । जैसे विश्वाकी लगन धरी जाती है नित नये खसम आते हैं औ नित जाते हैं तैसे जीवको गुरुवा लोगन की बानी ने लगन लगाई अनेक खसम बनाये । राम कृष्ण नरसिंह बराह शिव शक्ती सूर्य गणपती विष्णु भैरव और अनेक देवता जीवके खसम हुये जैसे वेश्याके बहुत खसम।येअर्थ। सो जीव तो ऐसा अबूझ है कि खसम ठाड ढिग नाहीं सूझ। गुरुवा लोग नजदीक बैठ के दूसरा खसम खडा करते हैं औ इसकी आंखि से सूझ तो परता नहीं औ मान तो लेता है ऐसा अबूझ । आपन आपन इष्ट सब माना औ चाह बढी सो झूठ प्रपंचको सांच करके काज जीवने माना। तो गुरू कहते हैं कि झूठा धोखा तेरा काज कधीनहीं करनेका ताते मैं बरजता हौं कि नाहक धोखेमें क्यों बँधा जाताहै। हे

निर्लज्ज बेशरम तू बहुत दिन से धोखे में पडके खराब हुवा तो अब तोभी सुन । अरे आचार, पूजा, इष्ट उपासना, जाति पांति, सब पाखंड छोड औ बात मान । विचार करके पारख पदको प्राप्त हो नहीं तो गुरुवा लोगन की बातनमें बन्ध रहेगा तो फिर गर्भवासमें जायगा औ मायाके हाथ परेगा फिर बहुत दुख तेरेको होवेगा । अरे ब्रह्म औ आत्मा जो जो सिद्धांत तुमने माना है सो सब कहां है हे जीव संपूर्ण तेरा भास है । परंतु तुमने खोज किया नहिं सो बिना पारख तू इस भास से छूटने नहीं पाता औ हकनाहक वेद बानीमें भटक के मरता है जैसे बनका रोझ । बन बानी, बन संसार, रोझ पंडित औ रोझ विषयी जीव, सो बन्धनमें मस्त होके संसार में बारम्बार देह धरके भटक भटक के मरते हैं पारख बिना । ये अर्थ ॥ १२ ॥

जेहि कारण बारंबार वसंत होता था सो कारण कसर गुरुने बताई । वसंत कहिये उत्पत्ती प्रळय, सो उत्पत्ती प्रळयका कारण ब्रह्म बानी औ स्त्री, सो ज्ञान भक्ती योग विषय तिनकी कसर बताई । अब आगे मायाका खेल जामें जीव परम मोहित भये सो फांसी चाचर में गुरु समुझाते हैं ।

इति वसन्त टीका सहित गुरुकी दयासे सम्पूर्ण ।

॥ दया गुरुकी ॥

॥ अथ चाचर लिख्यते ॥

चाचर १.

खेलति माया मोहनी जिन्ह । जर कियो संसार ॥
रचेउ रंगते चूनरी कोइ । सुंदरि पहिरे आय ॥
शोभा अदभुत रूप वाकी । महिमा बरणि न जाय ॥
चन्द्रबदनि मृगलोचनी माया । बुन्द का दियो उघार ॥
यती सती सब मोहिया । गजगति ऐसि जाकी चाल ॥
नारद को मुख मांडिके । लीन्हों बसन छोडाय ॥
गर्भ गहेली गर्भ ते । उलटि चली मुसकाय ॥
शिवसन ब्रह्मा दौरि के । दूनौ पकरे धाय ॥
फगुवा लीन्ह छुडाय के । बहुरि दियो छिटकाय ॥
अनहद धुनि बाजा बजै । श्रवण सुनत भौ चाव ॥
खेलनहारा खेलि है । जैसी वाकी दाव ॥
ज्ञान ढाल आगे दियो । टारे टरै न पांव ॥
खेलनहारा खेलि है । बहुरि न वाकी दाव ॥
सुर नर मुनि औ देवता । गोरख दत्त औ व्यास ॥
सनक सनंदन हारिया । और की केतिक बात ॥
छिलकत थोथे प्रेमसों । मारे पिचकारी गात ॥
कै लीन्हो बसि आपने । फिर फिर चितवत जात ॥
ज्ञान डांग ले रोपिया । त्रिगुण दियो है साथ ॥
शिवसन ब्रह्मा लेन कह्यो हैं । और की केतिक बात ॥

एक ओर सुर नर मुनि ठाडे । एक अकेलों आप ॥
दृष्टि परे उन काहु न छाडे । के लीन्हो एके धाप ॥
जेते थे तेते लिये । घुंघुट मांहि समाय ॥
कज्जल वाकी रेख है । अदग गया नहिं कोय ॥
इंद्र कृष्ण द्वारे खडे । लोचन ललचि लजाय ॥
कहहिं कबीर ते ऊबरे । जाहि न मोह समाय ॥ १ ॥

टीका गुरुमुख–माया का रूप अनेक तामें मुख्य रूप दो एक गुरुवा लोग औ दूसरी स्त्री, सो अनेक रूपसे माया मोहनी खेलती है जिसने सब संसारको जेर किया औ अपने विषय रङ्गसे दो देह रची जीवनको अरुझानेके वास्ते कि कोई सुन्दरि विचारमान जीव होय सो आयके पहिरे अङ्गीकार करे। ये अर्थ । ऐसी अदभुत शोभा उस मायाके रूपकी बनी कि काहूकी गती चलती नहीं सब देखते ही भूले औ कामवश हुये । फिर उसकी तारीफ सब जीव करने लगे, तो कोकशास्त्र बनाया औ नाना शृंगार शास्त्र बनाये औ नाटक अलंकार बनाये तहां मायाका रूप वर्णन किया । सो माया कैसी जाका मुख चन्द्रके माफिक, औ अधरमें मधुर रस, औ मृगके ऐसे जाके नेत्र मस्तकमें बुंदका लगायके उघार दिया । सो सम्पूर्ण शोभा देखके यती सती सब मोहि डारा । औ गजगति ऐसी जाकी चाल । अरे देखो ये जीवने अपने विषयके वास्ते क्या रूप पैदा किया जामें बन्ध भया एक दिन श्रीनगरमें नारद गये सो वहां राजकन्या का स्वयम्बर होता था सो राजकन्या को देखके नारद मोहित भये । तब विष्णुके पास जायके नारदने अर्ज किया कि हे भगवान हम तेरी निरंतर भक्ती करतेहैं और तू हमारा मालिक है ताते हमारी विनती मानो औ हमारे को अपना रूप देव ।तब विष्णुने कहा कि हे ऋषी तुम

केहि कारण रूप मांगते हो ऋषी कहते हैंकि महाराज अब मेरी इच्छा ऐसी है कि गृहस्थाश्रम करना। तब विष्णुने अपना रूप नारदको दिया पर मुँह बन्दरका बनाया तब नारद स्वयम्बर में आयके खडे भये औ रूप देखिके हर्षित भये तहां विष्णुने आयके राजकन्यासे विवाह किया तब नारदका मुख कारा भया सब योग तपस्या का तेज जाता रहा औ खिसियाने भये। तब विष्णुको शाप दिया कि मेरी स्त्री तूने हरलिया तेरी राक्षस हर ले जायगा। तब यहां शिव दूत खडे थे सो नारदकी दशा देखके हँसे, कि देखो नारद ज्ञानी औ महासात्व की औ जितेंद्रिय तो इनकी क्या गती भई मायाको देखके भूले औ खिसियाने होके विष्णुको शाप दिया परंतु अपना मुख नहीं देखते जो बन्दरका मुख बनायके खडे भये हैं । शिवके दूतनकी बातें सुनके नारद कोपायमान भये औ शिवदूतनको शाप दिया कि अरे दुष्ट हो तुम मेरी हँसी करते हो तो राक्षस होके उत्पन्न होवो । तब अपना मुँह पानीमें देखा सो बन्दरका फिर नारद बहुत खिसियाने भये तब विष्णुने अपनी माया खैंच लिया औ विष्णु वैकुण्ठको गये । वहां नारदके मुँहमें कलंक लगायके माया गुप्त भई मुसकायके। ये अर्थ । अरे माया बडी गर्भ गहेली संसारको जेर करके उलटके जीवमें समाय गइ औ सबको बन्धन दिया। येअर्थ । अरे प्रथम आरम्भमें इस स्त्रीने रूप धारण किया सो ब्रह्मा शिव दोनोंको दौरके पकडा औ काम बुद्धी सब हर लिया औ संसार में फैलाय दिया । यह मायाको सब कोई अनिर्वचनीय अनहद कहतेहैं सो श्रवण मायाका शृङ्गार भया, तब जीवको चाह बढा औ खेलनेवाले गुरुवा लोग ब्रह्मा विष्णु महेश आदि सब खेल रहे हैं । जैसे वह माया दाव बताती है तैसे खेलते हैं अरे इस मायाने बडे बडे ज्ञानिन को भरमाया। इस जीव ने ज्ञान ढाल लेके मायाको आड किया परन्तु वह रुकी नहीं

अरे किसी के टारे माया का पांव टरा नहीं सब माया के संग खेल ने वाले हार गये पर किसी का दाव माया पर लगा नहीं। सुर नर मुनी देवता गोरख दत्तात्रेय व्यास सनक सनंदनादि सब हार गये अब और की केतिक बात। अरे माया ख़ाली प्रेम से छिलक रही है औ काम की पिचकारी सब नर के अंतःकरण में मारी औ बडे बडे ब्रह्मादिकन को अपने बश कर लिया। अब फिर फिर चितवत जात। अरे या माया ने ज्ञान बानी लेके अपना विषय रोपा औ त्रिगुण काम क्रोध मोह सब जीवन को साथ दिया। शिवसन ब्रह्मा लेने कहतीहै तो और जीब की केतिक बात। एक ओर सुर नर मुनी खडे औरएक तरफ आय अकेली माया,जो जो उसकी दृष्टी में आया सो सब का एकै कौर कर लिया। अरे जेते बडे बडे थे तेते सब अपने गर्भ में समाय लिये। अरे भाइ ये माया काजर की रेख है यासे कोई अदाग गया नहीं बडे बडेन को दाग लगाया। ये अर्थ। इंद्र कृष्ण आदिक सब माया के द्वार में खडे हैं नेत्र जिनके ललचार्य रहे हैं। गुरु कहते हैं कि तेई ऊबरे जाने संपूर्ण माया, फांसी परख लिया है औ स्त्रीका मोह जामें नहीं समाया;जाको स्त्रीका निरंतर तिरस्कार हो सोई बचे ये अर्थ। विरह अर्थ—माया मोहनी कहिये गुरुवालोग सो सब संसार में खेलते हैं, नाना प्रकार की बानी लेके सब संसार को जेर किया औ नानाप्रकार की कल्पना दृढाई। प्रथमारंभ में जब सब त्रिविधी तापमें दुखित भये औ अकुलाय के नाना भेष धारण किया कि कोई हमारा कर्ता है सो कैसहू हमको मिलै। फिर वह भेषन ने नाना प्रकार की बानी वैराग रूपी औ बिरहरूपी कथन की जामें जीव सब सुन सुन के भेष पहिर औ शिष्य होय। ऐसा वर्णन किया कि भगवान की शोभा अद्भुत है जहां बेद नेति नेति कहते हैं जाके एक एक रोम में कोटि कोटि सूर्य उदय होते हैं वाकी महिमा बेदहू से बरणी न

जाय । चंद्रबदन मृगलोचनी माया कहिये गुरुवा लोग चंद्र कहिये चिदाकाश, अपनी आंखि कान मूंद के सन्मुखी मुद्रा लगाई तब चंद्रबिंब प्रकाश भया ताका नाम चिदाकाश धरा गुरुवा लोगों ने अपने बदनसें । ताते गुरू कहते हैं कि चंद्रबदनी माया औ मृगलोचनी कहिये जो गुरुवा लोग आपहि कहते हैं कि जगत मृग जल वत् औ फिर जगतको लोचते हैं उपदेश करते फिरते हैं ताते मृगलोचनी । ये अर्थ । फिर संसार में नाना प्रकार का उपदेश किया औ बुंदका उधार दिया । बुंदका आत्मा सो आखिरको बेदांतमें कहि दिया कि सब आत्मा है और दूसरा कछु नहीं। ता आत्मसिद्धांत में बद्रीनारायण, भीषमपितामह, हनुमंत आदि सब यती मोहे औ हरिश्चन्द्र आदि मयूरध्वज आदि सती सब मोहित भये। गजगती कहिये उन्मत्त दशा सो दशा लेके गुरुवा लोग संसारमें रमतेहैं । ये अर्थ । नारदादि भक्तनके मुख में मारके बसन छुडायके लंगोट पहिराये अरे बडे बडे गुरुवा लोग जो भये सो सब महा गर्भ के मांहि रहे औ नाना धोखा पकड के उलट के गर्भबास में बंधे हुवे चले गये। शिव ब्रह्मा ये पहिले पुरुष भये सो दोनों कल्पना में दौरके परे । फिर इनहिनसे सब ऋषी मुनी मिलके उपदेश लिया औ संसारमें फिर वही कल्पना नाना ग्रन्थ बनायके छिटकाय दिया औ अनहद नादका उपदेश दिया सो जीवने सुना औ प्रीति बढी।सो खलन कहिये जीवको सो हारा अनहद नादमें लय हुवा । ये अर्थ । जैसी जैसी युक्ति गुरुवा लोग बताने लगे तैसी तैसी जीव सब करने लगे । कर्म उपासना योग ज्ञान ये संपूर्ण कल्पना लेके रोपंत किया औ एक से एक झगरने लगे । कोई किसी के टारे टरते नहीं, कहते हैं कि योग ध्यान करेसे कृतार्थ होवैगा नहीं तो बहुरि न वाको दाव मिलेगा । सुर नर मुनी औ देवता गोरख दत्तात्रेय व्यास इत्यादिक सबकल्पना

के वश होके धोखे में परे। सनक सनंदन आदि सब वेद बानी के भरोसे खोजते २ हारे आखिर सर्व आत्मा कहिके रहे। तो और जीव की केतिक अकिल है जो उनसे पार जायेंगे। खाली बातका प्रेम करके संसार में जीव सब नाचते हैं और एकको एक प्रेमकी पिचकारी मारते हैं। ऐसा करके संसार को कल्पनाने वश कर लिया औ फिर रहे रहाये जीवन को वश करती है। ज्ञान डांग ले रोपिया। कर्म बानी उपासना बानी दोनों छोडके ज्ञान बानी वेदांत लेके जीवन को रोपिया औ त्रिगुण तत्वमसीका जीवको उपदेश किया। शिव आदिक संन्यासी औ ब्रह्मा आदिक ब्राह्मण सबने लेने की श्रद्धा किया औ लेके यहि तत्त्वमसी सिद्धांतपर सब ठहरे तब और जीवन की केतिक बात है। अब एक ओर सुर नर मुनी खडे सुर कहिये सात्विकी जीव भगवतके उपासक औ नर कहिये राजसी जीव कर्मी राज उपासक, द्रव्य उपासक स्त्री उपासक, पुत्र उपासक, मुनी कहिये योगी सो सब हारके असीपद आत्मारूपी हुये, एक अकेली आप आत्मा। ये अर्थ। ये गुरुवालोगोंकी बानी जाके हृष्टी में परी तिनको एक ब्रह्म कहिके खाय लिया। जेते ज्ञानी थे तिनको वेद बानी ने वश करके तत्वमसी घुंघुट में समाय लिया। इंद्र कृष्ण आदि संपूर्ण द्वारे में खडे हैं तुरिया अवस्था में खडे रहि के आशा कैवल्य की करते हैं औ सब बंध हो रहे हैं। गुरु कहते हैं कि ये धोखे से वही बचे जिसको माया बानी का मोह नहीं समाया। ये अर्थ ॥ १ ॥

चाचर २.

जारो जगका नेहरा मन बौरा हो।
जामें सोग संताप समुझि मन बौरा हो॥
तन धन ते क्या गर्भसी मन बौरा हो।

भस्म कीन्ह जाके साज समुझि मन बौरा हो॥
बिना नेवका देवघरा मन बौरा हो ।
बिनु कहलगिलकी ईंट समुझि मन बौरा हो ॥
कालबूतकी हस्तिनी मन बौरा हो ।
चित्र रचो जगदीश समुझि मन बौरा हो ॥
कामअंध गज बशि परे मन बौरा हो ।
अंकुश सहियो शीश समुझि मन बौरा हो ॥
मर्कट मूठी स्वाद की मन बौरा हो ।
लीन्हों भुजा पसारि समुझि मन बौरा हो ॥
छूटनकी संशय परी मन बौरा हो ।
घर घर नाचेउ द्वार समुझि मन बौरा हो ॥
ऊंच नीच समुझेउ नहीं मन बौरा हो ।
घर घर खायेउ डांग समुझि मन बौरा हो ॥
ज्यों सुवना नलिनी गह्यो मन बौरा हो ।
ऐसो भर्म विचार समुझि मन बौरा हो ॥
पढे गुने क्या कीजिये मन बौरा हो ।
अंत बिलैया खाय समुझि मन बौरा हो ॥
सूने घरका पाहुना मन बौरा हो ।
ज्यों आवै त्यों जाय समुझि मन बौरा हो ॥
नहाने को तीरथ घना मन बौरा हो ।
पुजबे को बहु देव समुझि मन बौरा हो ॥
बिनु पानी नर बूडही मन बौरा हो ।
तुम टेकहु राम जहाज समुझि मनबौरा हो ॥
कहहि कबीर जग भामया मन बौरा हो ।
तुम छाडहु हरीकी सेव समुझि मन बौरा हो ॥ २ ॥

टीका गुरुमुख--स्त्री पुत्र कुटुंब आदि सम्पूर्ण जगत का नेह जो मान के करता है सो सम्पूर्ण जगत का नेह तेरे फसने का जारा है। सो ताही में मेरा धन, मेरा पुत्र, मेरी स्त्री, मेरी जाति, मेरी पांति, ऐसा मानके तू अपनेको भूला औ दिवाना हुवा सो जारा तोर डार। अरे जामें अनेक सोग संताप हैं सो समझ के छोड। ये अर्थ। अरे तन धनका क्या गर्व करता है ये संपूर्ण भस्म हो जायगा। इस तन धनको मानके नाहक क्यों दिवाना हो रहा है सो संपूर्ण नाशवंत है अब तो भी समझि के इसका अध्यास छोड। अरे ई तन बिना नेंवका देवघरा है औ बिना कीचड की ईट बिनासेगी तो तुम समझो। ये हाड चामकी देह छिनभंगुर है ये देह नाहक मानके तुम दिवाने भये। कालबूत की हस्तिनी मन बौरा हो। कालबूत की हस्तिनी कहिये स्त्री, सो चित्र जगदीश पुरुष ने रचा अपनी इच्छा से सो तू समझ। और आपही वो स्त्रीकी देखके काम अंध गजके सरीखा बशिपरा ताते नाना अंकुश रूपी दुख सहन किया। परंतु जैसा मर्कट मूठी पकडता है फिर लालच के मारे छोड नहीं सक्ता तैसा ये जीवने स्त्री विषय के लालचेस मूठी मोहकी पकडी।अरे स्त्री पुत्र धन आदिक माया भुजा पसार के इनने पकडा पर ताही ते नाना योनी में भ्रमता है औ अनेक दुख भोगता है औ ये दशा हो रही है जो कछु नहीं हो सक्ता बडा लाचार भया सो हे दिवाने तू समझ। नाहक मानके तू दिवाना क्यों हो रहा है। ये अर्थ। अरे हे दिवाने तूने स्त्री आदि प्रपंच पकडा है औ अब छूटने की संशय पडी,जो तू छोडे तो तेरा पकडनेवाला कोई नहीं तूनेही पकडा है ताहीते घर घर नाना योनीमें नाचता फिरता है। हे दिवाने अब तू ऊंच नीच बर्ण विचार करता है परंतु ऊंच नीच एक नहीं समझा। चींटी से हस्ती तलग सब योनिन में ऊंच नीचमें भरमा औ मान के बौरा हुआ सो घरघर डांग खाता फिरा पशु आदि योनीमें।ये अर्थ।

जैसा सुवा आपही नलिनी पकड के फंद जाता है तैसे नाना प्रकार की बानी औ कल्पना औ विषय है तू फंदा ये खूब समझ के देख । अरे बहुत बेद शास्त्र पढा और उसका गुनाव न किया तो क्यामुक्ती होती है आखिर तो कल्पना और स्त्री खाती है । जैसा सूने घर पाहुना जाताहै तो वहां कोई आदर करनेवाला नहीं जैसे जाता है वैसेही फिर पूर्व स्थल को आताहै, तद्वत हे जीव शून्य में जाता है ब्रह्मांड में जाता है तो जैसे जाते हैं वैसे उलट के गर्भवास में चले आते हैं । तुम समझ देखो औ छोडो नाहक मानके दिवाने मत होवो । अरे तूने ही कल्पना कर करके नहाने को तीर्थ बनाये औ पूजने को बहुत वेद बनाये सो नाहक जीव सब धोखे में परे । अब जैसे जाते हैं तैसेही बाहर निकरते हैं । ये अर्थ । अरे बिना पानी संसार सब डूबता है एक अनुमानका भवसागर बनायके अरे भवसागर कछु पानी नहीं एक अनुमान है औ राम नाम जहाज जो तुमने टेकाहै सो कछु जहाज नहीं सो भी कल्पना । मिथ्यासागर मिथ्या नाव मिथ्या पूजा मिथ्या देव, मिथ्या तीर्थ मिथ्या भाव कर्णधार मिथ्या समुदाय । तो ये जग मिथ्या धोखा मानि के भरमा औ दिवाना हुवा सो तुम परख के हरीकी सेवा छोडो हरी कहिये, गुरुवा कहिये, माया कहिये, बानी कहिये, काया कहिये, कल्पना कहिये, येती बात मान के बौराय रहे हो सो परख के छोडो औ पारख पर थीर होवो । ये अर्थ ॥ २ ॥

इति चाचर टीकासहित गुरुकी दयासे संपूर्ण ।

॥ दया गुरुकी ॥

॥ अथ बेलि लिख्यते ॥

बेलि १

हंसा सरवर शरीरमें रमैयाराम ।
जागत चोर घर मूसहि हो रमैयाराम ॥
जो जागल सो भागल हो रमैयाराम ।
सोवत गैल बिगोय हो रमैयाराम ॥
आजु बसेरा नियरे हो रमैयाराम ।
काल बसेरा बडि दूर हो रमैयाराम ॥
जै हो बिराने देश हो रमैयाराम ।
नैन भरोगे दूर हो रमैयाराम ॥
त्रासमथन दधिमथन कियोहो रमैयाराम।
भवन मथेउ भरपूरी हो रमैयाराम॥
फिरिके हंसा पाहुन भयो हो रमैयाराम ।
बेधिन पद निर्वान हो रमैयाराम ॥
तुम हंसा मन मानिक हो रमैयाराम ।
हटको न मानेहु मोर हो रमैयाराम ॥
जसरे कियहु तस पायेउ हो रमैयाराम ।
हमरे दोष का देहु हो रमैयाराम ॥
अगम काटि गम कियेहु हो रमैयाराम ।
सहज कियेहु विश्वास हो रमैयाराम ॥
रामनाम धनबनिज कियोहो रमैयाराम।

लादेउ बस्तु अमोल हो रमैयाराम ॥
पांच लदनुवां लादि चलेहो रमैयाराम ।
नौ बहियां दश गोनि हो रमैयाराम ॥
पांच लदनुवां खागि परे हो रमैयाराम ।
खाखर डारिनि फोरि हो रमैयाराम ॥
शिर धुनि हंसा उडि चले हो रमैयाराम।
सरवर मीत जोहारि हो रमैयाराम ॥
आगि जो लागी सरवरमें हो रमैयाराम ।
सरवर जरि औ धूरि हो रमैयाराम ॥
कहहिं कबीर सुनो संतो हो रमैयाराम ।
परखि लेहु खरा खोट हो रमैयाराम ॥ १ ॥

टीका गुरुमुख—हे हंसा हे जीव तेरा सरवर शरीरमें है । हे रमैया तू सब में रमा है ताते तेरे बिना कोई देह खाली नहीं औ देह छोडके तेरी स्थिति हो सक्की नहीं । सो उपाधी तेरे पीछे लगतीहै । अरे तू जागृतिरूप चैतन्य होके चोर तेरा घर लूटते हैं । चोर कहिये काम क्रोध लोभ मोह, पंचविषय, स्त्री पुत्र औ गुरुवा लोग ये संपूर्ण चोर; तेरा घर जानमिनी हरतेहैं गाफिल करते हैं । तू तो इन चोरनमें रमि गया ताते हे राम तेरी स्थिति कैसे होवेगी तू चोरन में सोय रहा है । औ जो कोई जागा चोरन को परख लिया सो सभी चोरनमें से भागा औ पारख भूमिकापर आया बैठा जहां किसी चोरका लाग नहीं । औ जो यह चोरन के मोहसे इन में गाफिल भया सो चाहे ज्ञानी होय चाहे वैरागी होय सब लूटा गया औ चौरासी योनी में गर्भवास में कैद भया । सो देखो इन चोरोंके लक्षण मोहित करके ज्ञान बुद्धी विवेक विचार सांच धैर्य प्रताप संपूर्ण हरलेते हैं

फिर चौरासी लक्ष योनी यही अंधेरी कोठरी तामें जीव को कैद करते हैं। उपरांत फिर कैदखाने से अवधी पाय के जीव छूटता है बाहर आता है तो फिर भी सब मोहित करके जो कछु कमाई किया सो लूटके फिर कैद करते हैं, ताते सोया बिगोया। ये अर्थ। आजु बसेरा नियेरे हो आजु मानुष तन में हो तो तुम सत्संग में विचार करके देखो तुम्हारा पद नजदीक है औ काल दूर हो जायगा फिर दूसरी योनी में जावोगे तब तुम्हारा पद बडी दूर हो जावेगा हे रमैया तूं सब में क्यों रमि रहा है सब जग दुःख रूप है ताको परख के छोड। हे रमैया तू अपनी मनुष्य योनी छाडि के जब दूसरी योनी में जायगा तब वहां बहुत कष्ट गर्भवासका होयगा। जठराग्नीका तडाका लगेगा औ अंग अंग में जब जरेगा तब रोय रोय तेरे नैन भरेंगे तब वहां कोई दुख छुडाने को नहीं आनेका। तो हे संतो देखो ये जीवने गर्भवास छूटने के वास्ते बहुत त्रास करके सब बेद शास्त्र मथन किया औ संसारमें सब कर्ताको खोजने लगे। आखिर कर्ता का तो ठिकाना भी न लगा औ उमर तो आखिर भई तब चोला छूटा औ हंसा पाहुन भये फिर गर्भवास को गये। हे रमैयाराम ऐसी अनेक जन्म तेरी गति भई, अरे हे रमैया निर्बान पदमें तुम बेधे सुन्नमें बेधे ताते गर्भवास की प्राप्ती भई। ये अर्थ। तुम तो हंस औ निर्वान ब्रह्म आत्मा ईश्वर ये सब तुम्हारे मन के माने हुये धोखे, तिन के भरोसे तुम रहि गये औ नाना योनी भोगे। हमने बहुत तुम्हारे को हटका परंतु हटका न माना ताते हे रमैया तुम सब संसारमें रमे। तो जैसा तुमने किया तैसा तुमने पाया अरे तुम गाफिली न करते तो ऐसी दशा दुखरूपी न पाते औ हमने बहुत कहा पर तेरे को सूझा नहीं अब हमारे को क्या दोष देता है, तेरे को अनेक प्रकार से मैंने परखाया पर तुमने परखा नहीं जो तूही न परखै तो पारखको क्या दोष।

अरे तूतो नाना कल्पना में दृढ हुवा, आखिर को परमात्मा अगम है ऐसा कहा फिर अगम भी काटि के गम किया । तू ब्रह्म बना औ सहज ही विश्वास किया कि जो वेदने ब्रह्म कहा था सो हमहीं हैं ऐसा विश्वास किया परंतु धोखा तेरे को न सूझा । राम नाम धन समझ के गुरुवा लोगों के संग बनिज किया, शरण में जाय के सत्सङ्ग किया औ नाना बानी में रमि गया । औ सब बानिन का विश्वास किया औ बानी के प्रमाण से राम नाम अमोल वस्तू जानके भजन भक्ती करने लगा । पांच लदनुवां अंतःकरण पांचों सो लादि चले। कि भाई राम सबका मालिक सर्वज्ञ दूसरा है ये संकल्प मनने माना। अब रामकी नानामूर्त्ति बनाना औ रामकी नाना पूजा करना, औ रामकी कथा सुन-ना औ रामका कीर्तन स्मरण करना, राम का भेष माला कंठी तिलक लगाना औ राम के हेत नाना पुरान सुनना, नाना चरित्र करना, राम छोड और कछु नहीं ऐसा माना ये हंकारने लादा करतूत। रमेति रामः। जो सब में रमा है चैतन्य, सूत्र मणि न्याय, सोई राम ये लादा चित्तने। राम निर्विकल्प सच्चिदानंद अखंड एकरस ये लादा अंतःकरण ने । संपूर्ण राम जैसे का तैसा जल तरंग न्याय, सुवर्ण भूषण न्याय, मृत्तिका विकार न्याय, निश्चय किया बुद्धी ने इस प्रकार पांच लदनुवां लादि चले। नौ बहिया दश गोनी, नौ बहिया नौ व्याकरण, दश गोनी चार वेद छौ शास्त्र, ये संपूर्ण बानी अंतःकरण पंचक लादि ले चले। हे रमैया तुम सब में रमे । ये अर्थ। पांचो अंतःकरण जब खागि परे थकि गये तब श्वासा आखिर भई औ चोला छूट गया खांखर मुरदा रहि गया । सो सब लोगन मिलिके मसान में जराय दिया औ हंडिया फोर डारी शिर धुनि के हंसा उडि चले । देह के विषय में शिर मार मार आखिर चोला छोड के सुषुम्ना नाडी के संग हंसा उडि गर्भ-बास को चले । जा देह गेहसों मिताई किया था सो विषयन में मनु-

ष्य तन हारा औ चौरासी में रमें। तब आग लगी सरवर में देह में सो देह जरके धूर हो गई न कोई सङ्ग भया न कोई काम आया। अब ब्रह्म आत्मा कर्ता तो भी दूसरा कहां है, हे सन्तो सब खरा औ खोटा परख लेहु। जो देह गेह आदि, कर्ता ब्रह्म आत्मा, तत्व प्रकृति अनुमान कल्पना भास प्रत्यक्ष ये सब मिथ्या औ भासिक जीव सत्य। सो जासे भास भासिक सब परखनेमें आवै सो पारख पद ताही पर स्थिर होवो। ये अर्थ ॥ १ ॥

बेली २.

भल सुमृति जहडायेउ हो रमैयाराम।
धोखे कियेउ विश्वास हो रमैयाराम॥
सो तो है बन्सी कसी हो रमैयाराम।
सोरे कियेहु विश्वास हो रमैयाराम॥
ईतो है वेद शास्त्र हो रमैयाराम।
गुरु दीहल मोहि थापि हो रमैयाराम॥
गोबर कोट उठायउ हो रमैयाराम।
परिहरि जैबहु खेत हो रमैयाराम।
मन बुद्धि जहँवां ना पहूँचे हो रमैयाराम।
तहां खोज कैसे होय हो रमैयाराम॥
यहसुनिके मन धीरज धरहुहो रमैयाराम।
मन बढ़िरहल लजाय हो रमैयाराम॥
फिर पीछे जनि हेरहु हो रमैयाराम।
कालबूत सब आहि हो रमैयाराम॥
कहहिं कबीर सुनो संतो हो रमैयाराम।
मन बुद्धि ढिग फलायउ हो रमैयाराम॥ २॥

टीका गुरुमुख—गुरू कहते हैं कि हे सुमति, हे पंडित, हे ज्ञानी तुमन भला खराब किया रमैयारामको,औ रमैयाराम ऐसी सम्बोधना जीवको है । सो गुरू कहते हैं कि हे जीव तुम वेद बानी में खूब जहँडाये खराब हुये औ धोखेका विश्वास किया कि मैं. ब्रह्म मैं आत्मा अथवा दूजा कर्ता ऐसा विश्वास किया औ नाना कर्म उपासना ज्ञान करने लगे सो तो गुरुवा लोगोंने बन्सी लगाई है । जैसा मच्छ पकडनेके वास्ते धीमर बन्सी लगाते हैं तद्वत गुरुवा लोगोंने नाना बानी जीवको पकडनेके वास्ते लगाई । तामें ब्रह्म प्राप्ति,स्वर्ग प्राप्ति, सिद्धि प्राप्ति ये आशा लालच लगाई,सो लालच देखके तुमने विश्वास किया औ ब्रह्म बना, सबमें रमा, आपहि राम कहलाया । ये अर्थ । जीवमुख—ई तो है वेद शास्त्रका प्रमाण औ गुरु ब्रह्मादिक का उपदेश, कि जो सर्वव्यापी सब में रमा है घटाकाश न्याय सो ब्रह्म । ताके रूप एक सगुण जो क्षीरसागर निवासी जाकी अनन्त कला, अनन्त अवतार औ एक निर्गुण जो जीव मात्रमें चींटी से ब्रह्मा परियन्त भरा है और एक संपूर्ण आत्मा अधिष्ठान रूप।सो भक्ती ज्ञान योग ये तीन मार्ग से तीनों रूपकी प्राप्ती होती है येही निश्चय गुरु दीहल मोहि थापि। गुरुमुख—गोबर कोट उठायेहु हो रमैया राम । गो कहिये इन्द्री, बर कहिये श्रेष्ठ, सो इंद्रिनका विषय श्रेष्ठ ताको कोट बनायेहु ताको नाम ब्रह्म कहेहु । अरे निर्विकल्प अंतःकरण का विषय, सविकल्प चित्तका विषय, ज्यों का त्यों बुद्धिका विषय, द्वैत कर्ता मन का विषय, प्रत्यक्ष देह तत्व अहंकार का विषय, शब्द सिद्ध करेगा तो आकाश का विषय, स्पर्श आनन्दादि सिद्ध करेगा तो वायूका विषय, रूप प्रकाशादि सिद्ध करेगा तो अग्नी का विषय, रस प्रेम आदि सिद्ध करेगा तो जल का विषय, गंध सर्वदेशी सिद्ध करेगा तो पृथिवी का विषय, अगर ये सबही सिद्ध

करेगा तो गोबर कोट घुरा ठहरा यामें कछु अस्तित्व नहीं। ये देह छूटेगा तब येते सिद्धांत सब छोडके औ खेत गर्भवास में जायगा। ये अर्थ। ये हो रमैया जहां मन बुद्धी कछु पहुँचती नहीं तहां तुम ब्रह्म खोज करते हो तो तहां खोज कैसे होगा। इतना निर्णय सुनके विचार करके धीरज धरो, अरे न कहूँ ब्रह्म, न कहूं ईश्वर, सब तुम्हारे मन की कल्पना, सो जैसा तुम्हारा मन बढा तैसे तैसे तुम मानेत चले जहां मन थका तहां स्वरूप ब्रह्म निश्चय किया औ जगतका कारण रूप बने सो कारण औ देह चतुष्टय आदि जगत सब कार्य औ हंस कर्ता ये तीनों जब उडे तब पारख पदकी प्राप्ति होय। जबलग कार्य कारण कर्ता त्रिपुटी है तबलग पारख पदकी प्राप्ती नहीं। अब वेदांत शास्त्र-वाला बोलताहै कि त्रिपुटी नाश होय तब ब्रह्म प्राप्ती होय। सो इनकी त्रिपुटी भी देखो औ गुरु जो त्रिपुटी छुडातेहैं सो त्रिपुटी भी देखो। वेदांतकी त्रिपुटी ध्याता ध्यान ध्येय ये जीवकी त्रिपुटी, अब ध्याता कहिये स्थूल औ ध्यान कहिये सूक्ष्म, ध्येय कहिये कारण, तो अद्वैत एकत्व भावमें ये त्रिपुटी उडी औ जीव ईश्वरकी एकता भई तब तुरिया अवस्था मह कारणरूप हुआ। तो तहां ईश्वर की त्रिपुटी उडाना ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय, ज्ञाता कहिये ईश्वर, ज्ञान कहिये मूल प्रकृती तुरिया, ज्ञेय कहिये अव्याकृत कारण औ हिरण्य गर्भ सूक्ष्म औ विराट स्थूल ये संपूर्ण ज्ञेय, इस प्रकारसे छे पुटि छोडै तब एक ब्रह्म एक आत्मा अखंड दशाको प्राप्त होय। तो भला ये त्रिपुटी छोडी औ एकता ब्रह्म भावको प्राप्त हुआ तो सब जगत औ ईश्वरका कारण हुवा। ब्रह्म ईश्वर जगतका अधिष्ठान, ब्रह्मविना जगत ईश्वर दोनों नहीं औ दोनोंमें ब्रह्मही व्यापा। ब्रह्म, जड चैतन्यका अधिष्ठान, औ ब्रह्म ज्ञान अज्ञानका अधिष्ठान, ये छे कार्य यामें कारण ब्रह्म भराहै ये वेद वचन बृहदारण्य शारीरका प्रमाण

तब सबका कारण ब्रह्म औ ईश्वर आदि जगत सब कार्य, इनका कर्ता हंस, ये तीनों त्रिपुटी नासै तब पारख पदकी प्राप्ती होय । तो वेदांत की अधिकाई कया जो वेदांतकी छै पुटी उड़ी तब ब्रह्म हुवा । तो एक पुटी उडी कार्य उडा, कारण कर्ता दो उनके परखनेमें न आये ताते वारंवार देह धरेंगे । तू त्रिपुटी परखके छोड औ फिर पाछे मत देखहु हो हे रमैयाराम।ये त्रिपुटी सब कालबूत धोखे की टाटी नाशमान। ये अर्थ । गुरु कहतेहैं कि ये त्रिपुटी छै पुटी सब मन की बाडहै सोई संसार में फैली है । हे संतो तुम चीन्हो औ परख के छोडो, स्वच्छ पारख में ठहरो औ कछु मानो मत । ये अर्थ ॥ २ ॥

इति बोलि टीकासहित गुरुकी दयासे सम्पूर्ण ।

॥ दया गुरुकी ॥

॥ अथ बिरहुली लिख्यते ॥

बिरहुली १.

आदि अंत नहिं होते बिरहुली । नहिं जर पल्लव डार बिरहुली
निशि बासर नहिं होते बिरहुली। पौन पानी नहिं मूल बिरहुली
ब्रह्मादिक सनकादिक बिरहुली।कथिगयेयोगअपारबिरहुली॥
मास असारै शीतल बिरहुली ।बोइनि सातो बीज बिरहुली॥
नित गोडै नित सींचै बिरहुली।नित नव पल्लव डारबिरहुली॥

छिछिलि बिरहुली छिछिलि बिरहुली ।
छिछिलि रहल तिहु लोक बिरहुली ॥

फूल एक भल फुलल बिरहुली ।फूलि रहल संसारबिरहुली॥
सो फुल लोढे संतजना बिरहुली।बंदिके राउर जाय बिरहुली॥
सो फल बंदे भक्तजनाबिरहुली । डासिगौवै तल सांप बिरहुली
विषहर मंत्र न मानै बिरहुली ।गारुड बोले अपार बिरहुली॥
विषकीक्यारीतुमबोयहुबिरहुली।अबलोढतकापछिताहुबिरहुली
जन्म जन्मअँतरे बिरहुली । फल एक कनयर डार बिरहुली
कहैं कबीर सच पाय बिरहुली।जोफल चाखहु मोर बिरहुली॥

टीका गुरुमुख—आत्मा का आदि अंत कछु नहीं औ जर पल्लव डार कछु नहीं, जर कहिये निर्गुण औ डार कहिये सगुण औ पल्लव कहिये वेद बानी,सो आदि अंत रहित अखंड एक रस आत्मा । न सगुण,न निर्गुण,न आत्मा, न बेद,न बानी, न ज्ञान,न अज्ञान तो

जैसे का तैसा । नेति नेति श्रुति । तो न दिन राति, न पवन, न पानी; न आकाश आदि तत्व, तो आत्मा निरावेव निराकार निरंजन । ये अर्थ । सनकादिक ब्रह्मादिक येही योग कथि गये येही सिद्धांत कथि गये ताते संसार में बिरह बढा औ जीव सब बिरही हुये । ताते बिरही जीवन को बिरहुली संबोधना देके गुरु कहते हैं कि सब बिरह की जड एक धोखा गाफिली जाके मारे जीव सब अथीर भये । मास असारे शीतल बिरहुली । मास कहिये बानी, असार कहिये मिथ्या,असार कहिये विष, असार कहिये आसा सो आसारूपी बानी जो गुरुवा लोगों ने उपदेश किया सो मिथ्या बानी का विष जीवन पर चढा औ जीव गाफिल भये शांत भये शीतल भये । ये अर्थ । अब सात प्रकारकी आशा रोपंत किया सोई आवागवन का बीज,सो अब ता बीज में डार पल्लव कौन कौन निकरा सो सुनौ । ॐ श्रीं रँ सों एँ ह्रीं क्लीं ये सात बीज बोये सो सात अंकुर निकरे, कर्म उपासना योग ज्ञान उत्पत्ती स्थिति लय । सो सातों अंकुरों को चितरूपी कुदार से नित गोडने लगे औ बुद्धिरूपी जल से सींचने लगे, अहंकार का अलवाल बांधा,मन रूपी खाद डारा, अंतःकरण रूपी भूमिका में बीज बोया, सो सात अंकुर निकरे औ नित नव पल्लव डार फूटने लगे । डार कहिये अनेक प्रकार के कर्म औ अनेक प्रकार की उपासना औ अनेक प्रकार के योग औ अनेक प्रकारके ज्ञान औ अनेकप्रकार के उत्पत्ती औ स्थिति औ लय येही डार, औ अनेकप्रकार की सातों की बानी सोई पल्लव । ये सात बीज जो कबीर साहेब बोले हैं सो इनका फूट करके जो अर्थ बोलना चहता हौं तो सारी पृथिवी की बानी औ सब ऋषी मुनी बेद शास्त्रन का सिद्धांत आना चाहता है तो टीका बहुत बढती है कछु सुमार नहीं रहता ताते नाम संज्ञा जनाया । अब दूसरा अर्थ कहता हौं

गुरुवा लोग बोईन सातों बीज । अब प्रथम कर्म का बीजॐ तामें कर्म अंकुर निकरा । ताको मंथका आलबाल बांधा, लोभ जलसे सींचा सो तामें सात डार फूटी, यजन याजन अध्ययन अध्यापन दान प्रतिग्रह मैथुन, औ सातों कर्मकी नाना बानी बनी सोई पल्लव आया, वासना फूल फूला औ पाप पुण्य दो फल आये । दूसरा उपासना का बीज श्रीं, तामें उपासना अंकुर निकरा ताको मर्य्यादा अलवाल बांधा भाव जलसे सींचा, तामें सात शाखा फूटीं, शिव विष्णु गणपती सूर्य शक्ती राम कृष्ण, औ सप्त कोटि महामंत्र ये पल्लव आया, लोकादिक फूल फूले औ जारण मारण उच्चाटन आकर्षण वशीकारण स्तंभन मोहन ये फल लगे। तीसरा योगका बीज रँ तासे योग अंकुर निकरा । ताको क्रिया रूपी अलवाल बांधा, साधन जलसे सींचा, तामें सात शाखा फूटीं । हठयोग, लययोग, कुंडली योग, लंबिका योग, तारक योग, अमनस्क योग औ सांख्ययोग। पातंजली शास्त्र पल्लव आया औ समाधी फूल फूला, अणिमादिकसिद्धि फल आये । चौथा ज्ञानका बीज सों तासे ज्ञान अंकुर निकरा, ताको भक्तीका अलवाल बनाया, प्रेमरूपी जलसे सींचा, तामें सात शाखा फूटीं । शुभइच्छा सुविचारणा तनुमानसा सत्वापत्ति असंशक्ती पदार्थाभावनी औ तुर्या । औ सातोंकी बहुत बानी बनी सोई पल्लव आया परोक्ष ज्ञान सोई फूल फूला औ अपरोक्ष ज्ञान सोई फल लगे । पांचवाँ एँ उत्पत्तीका बीज तासे उत्पत्ती अंकुर निकरा विषयरूपी अलवाल बनाया औ वासना जलसे सींचा, सात प्रकार की उत्पत्ती सोई डार फूटी । शब्दसे मेघके कीडे औ मेघा मेंडकी आदि की उत्पत्ती, स्पर्शसे मैथुनी योनीकी उत्पत्ती, रूपसे अण्डज पक्षी आदि योनीकी उत्पत्ती, जेते दृष्टिभावसे रति करे सो रूपकी उत्पत्ती, रससे जलचर औ फल वृक्षनके कीटनकी उत्पत्ती, गन्धसे उष्मज योनीकी

उत्पत्ती,वासना से भूतयोनी औ देवयोनीकी उत्पत्ती औ इच्छासे सिद्धयोनी की उत्पत्ती । शब्द स्पर्श रूप रस गंध वासना औ इच्छा ये सात उत्पत्ती बीजका अंकुर औ इनकी उत्पत्ती सोई पल्लव नारी फल औ पुरुष फल । छठवां स्थितिका बीज हीं तासे स्थिति अंकुर निकरा । तामें मायारूपी अलबाल बनाया मोह जलसे सींचा,तब सात डार फूटीं । अन्न जल तृण पत्र फूल फल औ पृथिवी । मनुष्यकी स्थिति अन्न, जलचरकी स्थिति जल, तृणचरकी स्थिति तृण, पत्रचर की स्थिति पत्र,पुष्पचरकी स्थिति पुष्प, फलचरकी स्थिति फल औ मैलसे पृथिवीसे जो पैदा भये तिनकी स्थिति मैल पृथिवी । इनका बहुत विस्तार भयउ सोई पल्लव, अनेक खानेके पदार्थ बने सोई फूल औ सदाकाल शरीर पोषण सोई स्थिति फल । सातवां प्रलयका बीज क्रौं तासे प्रलय अंकुर निकरा तामें कठोरता अलबाल बनाया, क्रोध जलसे सींचा, तब सात डार फूटीं, पृथिवि पानी अग्नी पवन लात हाथ दांत, नाश करने के अनेक द्रव्य सोई पल्लव, भय फूल औ मृतु फल ये अर्थ । छिछिलि बिरहुली छिछिलि बिरहुली छिछिलि रहल तिहुं लोक बिरहुली । सो शाखा पल्लव बानी बढी औ तीन लोक में छाय गई । ता बानी का फूल जो फूला तामें संसार सब फूल रहा, फूल कहिये तुर्या औ फूल कहिये समाधी सो फूल संतजन अंगीकार करते हैं औ बंदी गुरुवा लोग तिन की शरण में राउर जीव जाते हैं जा फूल का बंदन भक्तजन करते हैं । सो डसि गौ बेतल सांप । गुरुवा लोगों का उपदेश । ये अर्थ।औ नानाप्रकार के विष सो जीवपर विष चढा और जीव विषहर मंत्र नहीं मानता तो विष कैसे उतरे जाके मारे गाफिल हो रहे हैं । विषहर मंत्र कहिये जासे सब विष हर जाय नाश हो जाय सो पारख ये नहीं मानता । औ गारुड पारखी अनेक तरह से

परखाते हैं औ अपार शब्द बहुत बोलते हैं पर अभीलग समझ न परी। ये अर्थ।बिषकी क्यारी तुम बोयेहु बिरहुली तुम्हारे अंतःकरण में बिष ब्रह्म अध्यास, जगत अध्यास, नाना बिषय अध्यास. येही चौरासी का बीज तुमने अंतःकरण में बोया सो तुम को चौरासी देह प्राप्त भई सो तुम अब भोगनेको क्या पछताते हो। अरे इसी प्रकार से जन्म जन्म गुरुवा लोगों ने औ ब्रियन ने जन्म जन्म धोखा दिया। फल एक कनयर डार बिरहुली। फल एक बासना धोखा कान में फूका ताहिते बिरह लगा औ जन्म जन्म धोखा पडा। ये अर्थ। मायामुख—कहैं कबीर सच पाव बिरहुली, जो फल चाखहु मोर बिरहुली। माया का उपदेश ऐसा है कि बेद वाक्य औ गुरु प्रतीत करेगा तो अर्थ धर्म काम मोक्षादिक फल प्राप्त होगा ऐसी आशा लगाई। ये अर्थ। जो बिरह भया था सो बिरहुली शब्द कहके गुरुने निवृत्ती किया अब जीव सब भ्रम औ आवागवन में झूलते हैं सो गुरु परखाय के छुडाते हैं सो सुनो ॥ १ ॥

सोरठा—हे गुरु दीन दयाल । बिरह ब्यालते जीव दुखित ।
मेटउ फंदा काल । अब हिंडोल निर्णयकरहु॥ १॥

इति बिरहुली टीकासहित गुरुकी दयासे संपूर्ण ।

॥ दया गुरुकी ॥

॥ अथ हिंडोला लिख्यते ॥

हिंडोला १.

भरम हिंडोला झूले सब जग आय ।
पाप पुण्य के खंभा दोऊ । मेरु माया माँहि ॥
लोभ भँवरा बिषय मरुवा । काम कीला ठानि ॥
शुभ अशुभ बनाये डांडी । गहे दूनों पानी ॥
कर्म पटरिया बैठि के । को को न झूले आनि ॥
झूलत गण गंधर्व मुनिवर । झूलत सुरपति इंद्र ॥
झूलत नारद शारदा । झूलत व्यास फणींद्र ॥
झूलतबिरंचिमहेशशुकमुनि । झूलत सूरज चंद्र ॥
आप निर्गुण सगुण होय । झूलिया गोविन्द ॥
छौ चारि चौदह सातएकइस । तीनिउ लोक बनाय ॥
खानी बानी खोजि देखहु । स्थिर न कोई रहाय ॥
खंड ब्रह्मांड खोजि देखहु । छूटत कतहूँ नाहिं ॥
साधु संगति खोजि देखहु । जीव निस्तरिकित जाहिं ॥
शशि सूर रैनि शारदी । तहां तत्व परलय नाहिं ॥
काल अकाल परलय नाहिं । तहां संत बिरले जाहिं ॥
तहांके बिछुरे बहु कलपबीते । भूमि परे भुलाय ॥
साधु संगति खोजि देखहु । बहुरी न उलटि समाय ॥
ये झुलबे की भय नहीं । जो होय सन्त सुजान ॥
कहहिं कबीर सत सुकृत मिलै । तोबहुरि न झूले आन ॥

टीका गुरुमुख–भ्रमरूपी हिंडोला सब जग झूलते हैं, भ्रम कहिये ब्रह्म तामें जीव झूलते हैं। ब्रह्म से पुरुष, पुरुष से प्रकर्ता, प्रकृतीसे महा-तत्व, महातत्वसे अहंकार, अहंकारसे त्रिगुण, त्रिगुणसे संसार, सतो-गुण से देवता, रजोगुणसे दश इंद्री औ तमोगुणसे विषय पंचक । सो विषय तमो गुण में लय किये, तमोगुण इंद्रिमें लय हुवा, इंद्रि रजोगुणमें लय हुई, रजोगुण देवतनमें लय हुवा, देवतनको सतोगुणमें लय किया, सतोगुणजगतसहित अहंकारमें लय हुवा, अहंकारको महातत्वमें लय किया, महातत्त्वको प्रकृती खाय गई प्रकृती पुरुष में जाय समाई, पुरुष ब्रह्म में लय हुवा फिर पूर्ववत् ब्रह्म से पुरुष, पुरुषसे माया, मायासे त्रिगुण आदि जगत सब बना । औ ब्रह्म कछु वस्तु नहीं जहां जीव की स्थिति होय ताते आवागवन में परा, ब्रह्म कहिये भ्रम । सो गुरु कहतेहैं कि बारंबार भ्रम हिंडोले में जीव झूलते हैं सब जगत, ब्रह्मसे जगत जगतसे ब्रह्म होते हैं । ये अर्थ । पाप पुण्यके खंभा दोऊ । पाप कहिये जगत जीव, पुण्य कहिये ईश्वर ये दोनों खंभा और ऊपर की डांडी सो माया तुर्या, ब्रह्म प्राप्ती का लोभ सोई भँवरा, मुमुक्षु सोई भँवरा औ समाधी विषय सोई सुगन्ध, मरुवा तामें योगी भँवरा लुब्ध हो रहेहैं औ चाह सोई किल्ला, सिद्धीका किल्ला ठोंका । शुभ अशुभ बनाये डांडी । शुभ कहिये ज्ञानइच्छा औ अशुभ कहिये भोगइच्छा सोई सव्य अपसव्य दोनों डांडी की रस्सी औ नाना कर्म सोई पटरिया, योग कर्म ज्ञान कर्म, उपासनाकर्म, विषयकर्म वर्णाश्रम कर्म, ये पटरिया पर सब आरूढ हो बैठ सो सब कोई आवागवनमें झूले आवागवनका झूला महा कठिन है । जो शुभ कर्म किया तो शुभ लोकको प्राप्त भया फिर। क्षीणे पुण्ये मृत्युलोके वसंति । ऐसा स्मृतीका प्रमाण है । औ अकर्म किया तो नर्क आदि लोकको गया फिर मृतलोक को आया भूत की उपासना किया महादेवकी उपासना किया तो गणों की देह प्राप्त

भई, भूत योनी धारण करके महादेवके पास रहा फिर हजार वर्ष या दश हजार वर्ष भूतयोनीमें रहा फिर गर्भवासमें आया। कीर्तन भक्ती किया तो गन्धर्व योनी धारण करके देवतनके पास जबलग मर्यादा तबलग रहा फिर क्षीणे पुण्ये गर्भवासमें आतेहैं । ऐसेही मुनिवर महा तपस्या करते करते मरे औ तपोलोक को गये अथवा देव इंद्र भये तो भी क्षीणे पुण्ये मृतलोकमें आते हैं।अब औरकी केतिक तपस्या नारद शारदादि व्यास शेषादि पुनः पुनः प्रलय होते हैं औ गर्भवासमें आते हैं ऐसा वेद बोलताहै ।.तो उनकी बानीके भरोसे जो ब्रह्म बन बैठते हैं तिनकी स्थिति कैसे होवेगी ये तो बिना पारख बारम्बार गर्भवास में आवेंगे । ये अर्थ । झूलत विरंचि महेश शुकमुनी । अनेक बार अनेक ब्रह्मा भये औ अनेक महादेव भये औ अनेक शुक्राचार्य भये ऐसा वेद बोलताहै, कि जब प्रलय होतीहै तब तब सूर्य चंद्रादि सब नाश होतेहैं औ उत्पत्ती समय सब उत्पन्न होते हैं ताते आवागमन में त्रिदेव आदिसूर्य चंद्र सब झूलते हैं । ये अर्थ । अरे जो आप निर्गुण ब्रह्म सगुण अवतार धारण कर बारम्बार झूले । ये अर्थ । छै चारि चौदह सात एकइस । छौ कनभक्ष जैमिनी कणाद गौतम शेष कपिल औ व्यास चारि सनक सनंदन सनतकुमार सनकादि,चौदह मनु, सत स्वर्ग,सात ऋषी, एकइस ब्रह्मांड, एकइस गणपती, तीनलोक, तीनदेव,ये संपूर्ण प्रलयमें नाश होतेहैं औ उत्पत्ती समय उपजतेहैं ऐसा वेद गावताहै । आवागवनमें सब झूलते हैंचार खानी औ चार बानी याहीमें तुम खोजि देखो सब झूलते हैं पर स्थिर कोई भये नहीं । अरे नौ खंड पृथिवी औ ब्रह्मांड सब जीवन को बन्धन है छुटका कहीं नहीं । ये अर्थ । हे साधु हे जीव तुम सत्संग में खोजि देखो जो जीव निस्तर के कहां जायगा । ये अर्थ मायामुख--शशि सुर रैनी शारदी

तहाँ तत्व परलय नाहिं । नहीं तहां चन्द्र, नहीं तहां सूर्य औ नहीं तहां सुषुमना, न तहां पांच तत्व, न तहां त्रिगुण, न तहां काल, न अकाल न प्रलय, सोई ब्रह्म । तहां संत बिरले जाहीं । योगी ज्ञानी तहां कोई जाय । ये अर्थ । ये जीव तहां ब्रह्म से बिछुरे बहुत कल्प बीते औ स्थूल देह धारण करके भूमिमें माया के बश भूलि परे, सो फिर वो ब्रह्म को प्राप्त होय तो ये जीव का निस्तार होय ये माया अभिप्राय । गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि हे साधु तुम सत्संगत में टकसार में खोजि देखो कि ये ब्रह्म जगत का कारण; जो ब्रह्म से जगत औ जगत से ब्रह्म बारम्बार होता है । ब्रह्म में मिला सोई जगत का अधिकारी है ताते परखके देखो जामें बहुरि न ब्रह्म में उ-लटि समाय । अनेक जन्म से जो झूले जगत से ब्रह्म औ ब्रह्म से जगत अनेक दाँई भये सो कछु भये नहीं, परन्तु जो कोई सुज्ञानी विचारमान होय सब तत्वमसी आदि परख के पारख पर शांत होय तो ये झूलने को भय नहीं । गुरु कहते हैं कि सच्चा पारख को जो जीव जाय मिले, तो बहुरि न झूले आन । फिर आवागवन में नहीं झूलनेका।ये अर्थ।विरह अर्थ—भर्म हिंडोला झूले सब जग आया गुरू कहते हैं कि जामें प्रथम भ्रम खड़ा हुआ सोई हंस संसार में जीव कहाय के झूला । ये अर्थ । पाप पुण्य के खंभा दोऊ । पाप कहिये पर स्त्री औ पुण्य कहिये अपनी बिवाह की स्त्री येही दोनों खंभा, अब ये दोनों प्रकारकी नारी ताका रूप औ शृंगार सोई माया खंभा के ऊपर की डांडी, औ विषय सोई मरुवादिक फूल, तामें विषय बा-सना सोई सुगन्ध, बिषय लोभी सोई भौंरा होके विषय बासना में लुब्ध भये औ काम सोई किल्ला मारा । तामें शुभ घरकी स्त्री से लुब्ध होना औ अशुभ परस्त्री से गमन करना ये दोनों डोरी, संकल्प विक-ल्पात्मक कर्मी अकर्मी दोनोंने गही औ कर्म मैथुनादिक सोई पटरिया

तापर बैठके को को न झूले आन।तो।विषय झूले में सब जो कोई लुब्ध हुये सो झूले। ये अर्थ।गण गन्धर्व मुनिवर देव इंद्र,नारद शारदा व्यास फणींद्र ब्रह्मा महेश शुकदेव सूर्य चंद्र विष्णु छौ शास्त्री,चार वेदी, चौदह मनु,सप्त ऋषी, एकइस गणपती,तीन लोग आदि जेते खानीबा-नी हैं सो सब खोजि देखो कोई स्थिर नहीं गुरुने जेते पीछे बताये सोसब स्त्री भोग औ विषयनमेंआसक्त भये ताते परम बेहाल हैं। औ आवागवन में झूलते हैं गर्भबास में जाते हैं फिर बाहर निकरते हैं भीतर से बाहर बाहर से भीतर जाते आवे हैं। सो सतसंग में पारख पदको खोजि देखो जाते जीव बहुरि गर्भवास में न उलटी समाय तो ये झूलबे की भय नहीं। परंतु जो पारख पायके शांत भये ऐसा जो सुज्ञान होय यथार्थ सत्त पारख मिले मुक्त जीवको तो बहुरि न झूले आन। जो जीवको पारख प्राप्त होय तो फिर गर्भविषय में आसक्त नहोय तो आवागमन काहे का सब मिथ्या भूत। ये अर्थ॥ १॥

हिंडोला २.

बहु बिधि चित्र बनाय के। हरी रचिन क्रीडा रास॥
नाहि न इच्छा झूलबेकी। ऐसी बुधि के पास॥
झूलत झूलत बहु कल्प बीते। मन नहिं छाडे आस॥
रच्यो रहस हिंडोरवा। निशि चारिउ युगचौमास॥
कबहुंक ऊंचे कबहुंक नीचे। स्वर्ग भूत ले जाय॥
अति भरमित भरम हिंडोरवा। नेकु नहिं ठहराय॥
डरपत हौं यह झूलबेको। राखु यादवराय॥
कहैं कबीर गोपाल विनती। शरण हरि तुव आय॥२॥

टीका गुरुमुख–तीर्थ मूर्तिदेव देवहरा कथा पुरान पोथी ग्रंथ मंत्र यंत्र तंत्र औ नाना भेष, योगी संन्यासी जंगम बैरागी, काहू खाक

लपेटी, कोऊ भगवे वस्त्र पहिरे, कोई कान फारे, कोई बाल उन्मत्त पिशाच हुये ऐसे बहु विधि चित्र बनाय के हरी कहिये गुरुवा माया सो ताने क्रीडारास खेल रचा। अब हरी कहिये माया, माया कहिये स्त्री, सो ताने नाना प्रकार के सिंगार किया।

कवित्त—नाक में बेसर रचि अंगहूं केसर जामें, भौंहकी कमान बिच अंजन रेख लाई है ॥ कचमें फुलेल टीका बेंदी काहुजामें मेल, मोतिन के झेल सारी जरतारी भाई है ॥ सोभत बिसाल भाल ताहूपर रेख लाल, कर्ण भूषण कंठमाल डोलत छबि छाई है ॥ चंपकली पंचकली दुलरि तिलरि मोहन माल, रत्नमालमुक्तमाल भूषित अधिकाई है। कंकन किंकिनि मुद्रिका चमक चुरी, पांवोंके नूपुर दे कामको जगाइ है ॥ १ ॥

इस प्रकार से बहुविधि चित्र स्त्री माया ने बनाया औ आप क्रीडा करने के वास्ते रास मंडल विषय मंडल संसार रचा। ये अर्थ। अब स्त्री माया औ गुरुवा माया ये दोनों के रास क्रीडा भक्ती विषय में न झूलना ऐसी बुद्धी कहि पास। झूलने की आसा बंद सब कोई हैं। ये अर्थ। झूलत झूलत बहु कल्प बीते। अनेक बार जगत जाके ब्रह्म हुवा औ ब्रह्म जाके जगत हुवा पर अबहीं किसकी आशा छूटती नहीं। इस गुरुवा माया के रहस में अनेक दांव जीव राजा हुये औ अनेक दांव दरिद्री हुये औ अनेक दांव भागवंत हुये। औ स्त्री मायाके रहस में अनेक दांवकुत्ता आदि विषय योनिन को प्राप्त भये पर मन अभी आशा छोडता नहीं रच्यो रहस हिंडोरवा निशि चारिउ युग चौमास। ये रहस रूपी हिंडोला माया ने रचा। निशि कहिये गाफिली भूल, सो चारिउ युग भूलहीमें उपजते हैं औ भूलही में जाते हैं। चौमासा चार वेद, सोई अंधियारी में बानी बरसते

है जामें जीव सब भीजते जाते हैं औ झूलत जाते हैं । ये अर्थ ।औ चार युग कहिये आठ प्रकार के मैथुन येही महा गाफिली अंधियारी, भग मुख दोनों कुच येही चार मास में सब झूल रहे हैं। कबहुंक ऊंचे कबहुंक नीचे स्वर्ग भूतले जाय, अति भ्रमित भ्रम हिंडोरवा नेकु नहिं ठहराय । अति भ्रमित भ्रम हिंडोरवा जामें संपूर्ण जीव झूलते हैं ये गुरुवा माया औ स्त्री माया दोनों के रास वश हुये और कबहूं ऊंचे घर ऊंचे योनी में पैदा भय कबहूं नीचे घर नीचे योनी में पैदा भये औ नाना दुख भोगे । कबहूं स्वर्गादि योनिनमें गये कबहूं पताल में अधो योनिन में परे । ऐसा अति भ्रमित बानी गुरुवाई और स्त्री का भ्रम हिंडोला है जामें जीव सब झूल रहे हैं जिन की अनुमात्र स्थिति नहीं । ये अर्थ । जीवमुख--ये जगत का महा दुख औ गर्भ यातना का दुख औ नाना बानी का त्रास देखके जीव तप्त होके बोलते हैं । डरपते हैं यह झूलबेको राखु यादवराय कहैं कबीर गोपाल बिनती शरण हरी तुव आय । जीव त्रिविधि ताप में तप्त होके दूसरा कर्ता निश्चय किया औ बोलने लगे कि हे भगवंत हमारी विनती सुनो,हम दीन लाचार तुम्हारी शरण आये । ये प्रपंच झूले से हम बहुत डरते हैं हमारे को रक्ष रक्ष हम तुम्हारे शरण हैं । हमारे को आवागवन से बचाव । ये अर्थ ॥ २ ॥

हिंडोरा ३.

लोभ मोह के खंभा दोऊ । मन से रच्चो है हिंडोर ॥
झूलहिं जीव जहान जहाँलग । कितहुं न देखों थित ठौर ॥
चतुर झूलहिं चतुराइया । झूलहिं राजा शेष ॥
चांद सूर्य दोउ झूलहीं । उनहुं न आज्ञा भेष ॥
लख चौरासी जीव झूलहीं । रविसुत धरिया ध्यान ॥

कोटि कल्प युग बीतिया । अजहुँ न माने हारि ॥
धरती अकाश दोऊ झूलहीं । झूलहीं पवना नीर ॥
देह धरे हरि झूलहीं । ठाढे देखहिं हंस कबीर ॥३॥

टीका गुरुमुख—लोभ स्वर्गादिक बासना औ मोह स्त्री पुत्र घर धन आदिक विषय ये दोनों खंभा, औ मन की कल्पना बानी निवृत्ती औ प्रवृत्ती ये दो रस्सी, ताका अपने मन में हिंडोला रचा जीवने तामें आपही झूलने लगा । ये अर्थ । झूलहिं जीव जहान जहांलग। अब जेते जहान के जीव हैं सो सब भरम कर्म में झूलते हैं कहीं स्थिति ठौर दीखती नहीं । जो बडे बडे महात्मा सब पैदा भये तिनकी सब की बानी औ वेद बानी हाजिर है;तुम विचार करके देखो पारख ठौर कहीं प्राप्त भई नहीं । कि कोई वेदादिक बानीमें पारख स्थिति दिखाती नहीं । ये अर्थ । चतुर ब्रह्मादि ज्ञानी चतुराई ज्ञान में झूलते हैं, कहते हैं कि हम ब्रह्म हमारे ऊपर कोई नहीं । झूलहिं राजा शेष । योग समाधी में शेष झूलते हैं कहते हैं कि हम मुक्त, हम सिद्ध । चांद सूर्य दोऊ झूलहीं । चाँद कहिये कर्मयोगी, सूर्य कहिये कर्म संन्यासी, ये दोनों वेद आज्ञा प्रमाण भेष धारण करके नाना कल्पना में झूलते हैं । लख चौरासी जीव झूल हीं । चौरासी कहिये देह, सो देह अभिमान युक्त सब जीव होके स्त्री देह पर लक्ष लगाये । रविसुत कहिये यम, यम कहिये स्त्री सो जीवको स्त्रीका ध्यान लगा, सो कोटी कल्प हो गये आज परयंत जीव झूलते जाते हैं कोई हार नहीं मानता । स्त्रियन के पांव सोई खंभा, बिषय झूले पर बैठ के भग में जाते हैं बाहर निकरते हैं फिर गर्भ में जाते हैं । ये अर्थ । धरती आकाश दोऊ झूल ही, झूलही पवना नीर । जब स्त्री का निदिध्यास लगा तब कामअग्नी प्रचंड हुवा औ धनंजय वायू ने रेत हलाय दिया । तब धरती देह औ अकाश काम ये दोनों

में युक्त होके जीव विषय झूले पर बैठ औ भगद्वारे में झूलते हैं। इसी प्रकार से हरी माया देह धारण करके जीव सब आवागवन में, स्वर्ग नर्क में, ब्रह्म जगत में, स्त्री पुरुष में झूलते हैं। औ हंस कबीर कहिये पारखी जीव सो सदा पारख पर आरूढ होके सब का तमाशा देखते हैं औ जा पर कृपा करते हैं ताहू को परखाय देते हैं। ये अभिप्राय। तो याको तात्पर्य अर्थ ऐसा है कि जो कोई पारख पर आरूढ़ भये सो पारखरूप होके आवागवन, जगत ब्रह्म, स्वर्ग नर्क, पिंड ब्रह्मांड, ये चार प्रकार के झूले से सोई बचे औ ज्ञानी भक्त योगी सब झूले में झूलते हैं। ये अर्थ। धरती कहिये स्थूल, नीर कहिये सूक्ष्म, सूर कहिये कारण, पवन कहिये महाकारण, आकाश कहिये कैवल्य ये पांच देह वेद के प्रमाण से जीवन ने मानी सोई झूला रचा। सूक्ष्म स्थूल दोनों खंभा औ कैवल्य सोई डांडी, महाकारण सोई रस्सी औ कारण सोई पटरिया, झूलने वाला जीव। अथवा मा बाप दोऊ खंभा, द्रव्य संपत्ती डांडी, पुत्र कुटुंब आदि डोरी औ स्त्री पटरिया। झूलनेवाला जीव। अथवा जीव शिव दोऊ खंभा औ पारब्रह्म डांडी, ईश्वर डोरी, माया पटरिया, झूलनेवाला जीव। अथवा स्थूल बैराट दोऊ खंभा औ आत्मा डांडी, तुर्या मूल माया डोरी, अविद्या कारण पटरिया, झूलनेवाला जीव। अथवा ब्रह्मा विष्णू दोनों खंभा, ब्रह्म डांडी औ माया डोरी, अज्ञान पटरिया, झूलनेवाला जीव। अथवा इंगला पिंगला दोनों खंभा, सोहँ डोरी औ निर्विकल्प डांडी, सुषुमना पटरिया, झूलनेवाला जीव। अथवा हंकार मन दोनों खंभा, अंतःकरण डांडी, चित डोरी, बुद्धी पटरिया, झूलनेवाला जीव। अथवा निर्गुण सगुण दोनों खंभा, वेद डांडी श्रुति डोरी, स्मृती पटरिया, झूलनेवाला जीव। अथवा कर्म उपासना दोनों खंभा, ज्ञान डांडी, योग डोरी, भक्ति पटरिया, झूलनेवाला

जीव। अथवा अकार उकार दोनों खम्भा, बिन्दु डांडी, अर्धमात्रा डोरी, मकार पटरिया, झूलनेवाला जीव अथवा शुभ अशुभ आशा सोई खम्भा, देवता डांडी सप्त कोटी महामन्त्र डोरी औ यंत्र तंत्र क्रिया पटरिया झूलनेवाला जीव। अथवा धरती जल दोनों खम्भा, आकाश डांडी, वायू डोरी, अग्नि पटरिया, झूलनेवाला जीव अथवा जागृती स्वप्न दोनों खंभा, उन्मनी डांडी, तुर्या डोरी, सुषोप्ती पटरिया झूलनेवाला जीव। ये अर्थ। इस प्रकारका हिंडोला गुरुने बताया जामें सब जीव झूलतेहैं सो हे सन्तो ये झूल छोडो ये अभिप्राय। तो गुरुने झूला तो परखाया परन्तु बिना भूमिका कछु झूला खडा होता नहीं। ये शंका। तो छठई तेरी देह सोई झूले की भूमिका। सो तू झूला छोड औ भूमिका पर ठहर। ये अभिप्राय। तो ये पांच पांच पचीस प्रकृती सम्पूर्ण झूले बने औ जीव सब अनेक प्रकारसे झूलने लगे। औ जो उतर परा झूलेसे सो भूमिकापर ठहरा परन्तु ये झूला तो कछु नाश हुवा नहीं औ नाश करे नाश होता भी नहीं। जो झूला सब जीव मात्रको प्रिय लगा सो कोई डोरीमें ही लगे हैं, कोई डांडीमें ही लगे हैं, कोई खम्भन में ही लगे हैं कोई पटरियामें ही लगे हैं कोई बैठे हैं ऐसा झूला सबको प्रिय है। भला जो झूलेसे उतर परा जीव आ झूला तो उसके सामने बनाहै, तो फिर कधी झूलेपर जीव चढे तो क्या करना क्योंकि झूला भी वही मकान पर है औ जीव भी वही मकानपर है दोनोंकी भूमिका एक। ये शंका। अरे जाने झूलेका हवाल सब समुझा औ दुख रूपी जानके छोडा सो फिर काहेको चढेगा। जैसा सर्प बिच्छूको जो जानताहै सो कछु छूता नहीं। ये दृष्टांत। भला झूलाके पूर्वारंभ में ये जीव कैसा था औ कौन तरह कौन भूमिकापर था। औ स्वतंत्र था कि इसपर कोई दूसरा मालिक था। औ झूला किससे खडा

हुवा कि स्वतंत्र है औ जीव झूले पर कबसे चढा कि निरंतर झूलेसे पर है । औ झूलेका कारण कौन है या कोई नहीं । याका भेद हे गुरु दीनदयाल बतलाइये ऐसी शंका सन्तन को भई । तब गुरु साखी कहिये सम्पूर्ण शंका निराकरण करते हैं सो सुनके मनन करेगा ताको अपरोक्ष पारख स्थिति प्राप्त होयगी । ये निश्चय ॥ ३ ॥

इति हिंडोला टीकासहित गुरुकी दयासे सम्पूर्ण ।

॥ दया गुरुकी ॥

अथ साखी लिख्यते ।

प्रथम अनुसार.

साखी—जहिया जन्म मुक्ता हता । तहिया हता न कोय ॥
छठी तुम्हारी हौं जगा । तू कहां चला बिगोय ।२।

टीका गुरुमुख—गुरु कहतेहैं कि जब पृथिवी जल तेज वायू आकाश आदि त्रिगुण अवस्था प्रकृती औ स्त्री आदि, चार खानी औ दूसरा मानुष जातभी कोई न हता, तब ये जीव आप मुक्त था कौन प्रकार से । ये शंका । तो दूसरा बिजातीय बंधन तो कछु थाही नहीं तो मुक्त सहजही था । ये अभिप्राय । जो बंधन मूलमें न था सो बीच में कैसे पैदा भया औ पांच तत्त्व न थे तब ये जीव कहां था । ये शंका । तो जब पृथिवी न हती तब सांच भूमिका हती औ जल न हता तब विचाररुपी जल था औ अग्नी न हती तब शीलका प्रकाश था औ वायू न हता तब दया का पसार था औ आकाश न हता तब धीरजका आकाश था । ये जीवके पांचों अनादि तत्त्व,याही को ब्रह्मांड औ याही तत्वनकी देह हंसाकी हती । पक्के तत्वन के आधारसे पक्का देह हंसाका हता;तामें हंस एक औ रूप एक, दूसरा भाव कछु न हता, जीव आपही स्वतः सिद्ध याको कर्ता कोई दूसरा नहीं । ये निश्चय । हे संतो सोई तुम्हारी छठी देह ताको छोडके तुम पंच देहन के हिंडोलामें बैठे । ये अभिप्राय । तो कौन प्रकारसे पंच देह पैदा भई औ कौन प्रकार छठी देह छूटी औ कौन प्रकार जीव हिंडोले में परा । ये शंका । तो छठई देहमें जब हंस था तब बहुत चैनमें सुखी

था, सो एक समय हंसने अपना देह औ अपना ब्रह्मांड देखके परम हर्षायमान हुवा । तब इंद्री गोलक औ इंद्रियनके विषय थे कि नहीं। ये शंका। तो न कचे इंद्री गोलक न कचे इंद्रिनके व्योहार थे, तो कैसे थे औ कैसा देखा सो सुनो । विचार रूपी नेत्र औ शीलका प्रकाश औ सत्त सोई भास सो विचाररूपी नेत्रसे देखा । ये अभिप्राय । अब छठई देह प्रथम वर्णन करताहौं सो सुनो। सांचकी प्रकृती निर्णय नाडी, निर्बिंदु निर्मल मास प्रकाश त्वचा, स्थिर हाड, छिमा रोम । विचारकी प्रकृती अस्ति नास्ति पद विलगान सोई पसीना, शुद्ध सोई बिंदु, हेतु सोई रक्त अमल सोई रार, निर्मल सोई मूत्र । शीलकी प्रकृती अक्षुधा, अतृषा निर्मैथुन निरालस, अनिद्रा । दयाकी प्रकृती अलोल, अचल, अपसर असंकोच, अधावन अब धीरजकी प्रकृती अकाम, अक्रोध, निर्लोभ निर्मोह निर्भय । ये पांचकी पचीस प्रकृती । अब दश इंद्री सुनो, शीलकी इंद्री नेत्र पांव, धीरजकी इंद्री कान वाक, सांचकी इंद्री गुदा नाक, दयाकी इंद्री त्वचा हाथ, विचारकी इंद्री लिंग औ जीभ । ये दश इंद्री । अब तीन गुण सुनो, विवेक वैराग्य औ बोधभाव । इसप्रकार की तेरी छठई देह, सो ताही देहको हंसने देखा औ खुशी हुवा सोई हौं जागा आनंद जागा जो सर्वोत्कृष्ट आनंद, तहां हंसकी तत्व प्रकृती आनंद में लय हो गई औ देहकी विस्मृती सुषुप्तिवत भई । सो हंस देह छूटी औ कैवल्य देह हंसको प्राप्त भई । तहां अभाव भूमिका, विज्ञान जल, ब्रह्माग्नी अग्नी निरांत बात, निजाकाश आकाश, तत्वमस्यादि त्रिगुण औ प्रकृतीतीत प्रकृती । तहां हंस कछु काल रहे फिर चैतन्य स्फुर्ती हुई सो कैवल्य देह हंसकी छूटी जाको सब आत्मा अधिष्ठान ब्रह्म बोलतेहैं फिर हंसको महाकारण देह प्राप्त भई । तहां सुलीन भूमिका जानीव जल, प्रकाश, अग्नी वडवाग्नी, चिन्मय बात, चिदाकाश

आकाश, तुर्या अवस्था, साक्षी बोध ज्ञान ये त्रिगुण, सकल संपत्ति सहित प्राप्त भई । फिर तहां ते प्रत्यज्ञात्मा अभिमान से प्राज्ञ अभिमान उत्पन्न भया तब सुषुप्तिअवस्था भई तब हंसको कारण देह प्राप्त भई । तहां सौलेष्टता भूमिका, आवर्ण जल, मंदाग्नी अग्नी, थिर पवन, महदाकाश आकाश, जड जाढ मूढ ये त्रिगुण । तहां हंस कछु काल रहे फिर प्राज्ञ अभिमान से तैजस उपजा तब हंसको लिंगदेह प्राप्त भई। तहां स्वप्न अवस्था, गतागत भूमिका, चंचल जल, कामाग्नी, अग्नी गुल्फ वायू, मठाकाश आकाश, रेचक पूरक कुंभक ये त्रिगुण । इस प्रकारका लिंग देह तहांते तैजस अभिमान से विश्व अभिमान पैदा हुवा सो स्थूल देह हंस को प्राप्त भई।तहां जाग्रत अवस्था,क्षिप्रा भूमिका काम जल, जठराग्नी अग्नि,श्वास वायू शून्य घटाकाश रज तम सत्व ये त्रिगुण,दश इंद्री आदि बिकार गोलक विषय सब पैदा भये । औ हंसको स्मृति आई हंकार खडा हुवा । तब पांच पंचक पैदा भये। अंतःकरण चित्त मन बुद्धि हंकार । आकाश पंचक-अर्धशून्य उर्द्धशून्य मध्यशून्य सर्वशून्य महाशून्य। वायू पंचक-प्राण अपान समान व्यान उदान । अग्नि पंचक-कान नाक आंखि जीभ त्वचा । जलंपचक-शब्द स्पर्श रूप रस गंध । पृथिवी पंचक-हाथ पांव मुख गुदा लिंग,एवं पंच पंचक निर्माण भये औ पचीस प्रकृती निर्माण भई । हंसका पक्का देह जायके कच्चा देह हुवा औ पक्का ब्रह्मांड जायकेकच्चा ब्रह्मांड हुवा। धीरजते आकाश, दयाते वायू, शीतते तेज, बिचारते जल,सत्तते पृथिवी; गुणनमें गुण औ प्रकृती की प्रकृती, इस प्रकार से तेरी छठई देहसे हौं भाव आनंद जागा ताते पक्केका कच्चा हुवा । तब हंकार आया औ इच्छा किया ताते नारी आदि चौरासी योनी पैदा भई औ सबमें आय समाया । फिर कल्पित दूसरा कर्ता खडा किया । औ कल्पि कल्पि नाना बानी वेद शास्त्र पुराण स्मृती छंद प्रबंध मंत्र

तंत्र यंत्र बनाया औ इन के पीछे तू कहां चला बिगोय । हे गुरु, बिगोने का अधिष्ठान मेरी छठी देह, सो सब भास अध्यास छोडके जो मैं छठी भूमिका पर ठहरा तो फिर येही दशाको प्राप्त होउँगा । क्यों कि जब कछु न हता औ जीव स्वतंत्र मुक्त था तो उसे क्या खुशीथी कि मेरी पक्की देह जाय औ कच्ची देह होय औ ऐसी दरिद्र दशा होय ये कछु उसको इच्छा न होके ये दशा प्राप्त भई । तो अब वो देह को प्राप्त भया औ फिर ऐसी दशा न होवेगी याको प्रमाण क्या । ये संपूर्ण कच्चा मसाला पंच देह सहित छठी देह में था अगर न होता तो कहां से निकरता । ये शंका । तो छठी देह तो हौं भाव औ सब विकार का मूल ठहरा । अब तेरा छठयां देह कहां है औ पंच देह कहां हैं तू यथार्थ परखके देख । तो हे गुरु, अब तो मेरे को पक्का देह आदि चारों देह कच्चे स्थूल देह में मालूम होते हैं तो हंस तुम बिचार करो कि प्रथमप्रारम्भ में स्थूल देह आदि पांचों देह एक पक्के देहमें थे औ अब पक्का आदि पंच देह स्थूल में है । तो सोई पक्का कच्चा होगया अब पक्का क्या कहीं न्यारा बैठा है । नाहक मिथ्या कल्पना काहे को करता है । ये पांच देह तेरे को पारख के छुडाने के वास्ते छठी देह सिद्ध किया सो तू छवो देह परख के पारख भूमिका पर ठहर पारखी को न पक्की से काम न कच्ची से काम । जो छवों भूमिका परखै सो पारखी ताका स्वरूप पारख तो पारखी पारख रूप एक पारख जीव की भूमिका और सब नास्ती धोखा । पारखीमें कच्ची पक्की कछु संभवती नहीं जब कच्ची नासी तब पक्की भी गई । जबलग पक्की तबलग कच्ची जबलग कच्ची तबलग पक्की की रहनी लेना । और पक्की कच्ची से कछु काम नहीं यथार्थ पारख पर स्थिर होना ये अर्थ ॥ १ ॥

साखी–शब्द हमारा तू शब्दका । सुन मात जाहु सरक॥
जो चाहो निज तत्व की । तो शब्दहि लेहु परख॥२॥

टीका मायामुख–शब्द कहिये, आवाज कहिये, निराकार कहिये, निअक्षर कहिये, ब्रह्म कहिये, सो ब्रह्मसे जगत की उत्पत्ती भई। शब्द ब्रह्मेति श्रुति। हे जीव तू शब्द का माया जीव को उपदेश करती है कि तू ब्रह्मका अंश कौन तरह से सो सुनो। परन्तु सुनके धोखे में सरक मत जाना। मैं तुम्हें परखानेके वास्ते कहता हौं जो तुम्हारे को पारख पद मिले ऐसा गुरू कहते हैं गुरुमुख- जो चाहो निज तत्व को, तो शब्दहि लेहु परख। शब्दका आकार सोहं अवाज का आकार ॐ, निराकार का आकार अनहद, अनहद कहिये ररा, निअक्षर का आकार आकाशवत् समाधी अथवा श्वांस सो निअक्षर, सो निअक्षर ते अक्षर कूटस्थ आदि सब जीव पैदा भये ऐसा सब सामर्थन का औ वेदका प्रमाण है। औ श्वासा से सों ॐ रं ये तीन अक्षर पैदा भये ये योगिन का प्रमाण। तब आदि शब्द निअक्षर ताते तीन शब्द अक्षररूपी पैदा भये तो येहू निअक्षर जैसा मट्टी का बिकार मट्टी, जलका का बिकार जल तद्वत। ये निश्चय जीवन को कैसा हुवा सो सुनो। प्रथमारम्भ में जीव पक्के से कच्चा भया तब नाना प्रकार के सुख दुख जन्म मरण आदि प्राप्त भये। तब अनुमान जीव में खडा भया कि हमारा कर्ता कोई दूसरा है तब अस्ति ब्रह्मेति। ऐसी बानी बोला। ताही से वेद पैदा भये औ कर्ता का खोज बाहर करने लगे। तब कर्म कांड, उपासना कांड ये दोनों कांड वेद बना परन्तु संशय कछु छूटी नहीं। तब घट में सुरत लगायके खोज करता भया। तो श्वासमें सोहं शब्द मालूम हुवा, नाभी से श्वास सकार लेके उठा औ त्रिकुटी के ऊर्ध कुंभ पास आया

तब हं शब्द हुवा सो सोहं सोहं में सुरत लगी । तब सोहं हंसा लोम विलोम चार अक्षर ध्यान में आये औ लक्ष थीर हुवा तब श्वासा त्रिकुटी से कंठ में आया औ तेजसे अभिमान खडा हुवा ताते स्वप्न अवस्था भई तब नाना प्रकार के पशु पक्षी खानी पैदा भई । हिरण्यगर्भ का अनुभव लेके श्वास हृदय में आया सो वहां से प्राज्ञ अभिमान खडा हुवा औ तैजस लय हो गया तब स्थावर खानी नाना प्रकारके अंकुरादि पैदा भये औ गाफिली भई गाढ़ निद्रा लगी । अव्याकृत का अनुभव लेके आगे नाभीस्थानमें श्वास लय भया औ प्रत्यज्ञात्मा अभिमान सहित चिन्मय वृत्ती होके तुर्या अवस्था भई । तब अष्ट सिद्धी नौ निधी आदि षडगुण ऐश्वर्य उत्पन्न भया । औ मूलमाया का अनुभव लेके निरंजन अभिमान पैदा भया तब निर्विकल्प समाधी भई । औ तुर्यातीत अवस्था, भावातीत भाव, कलातीत कला, भ्रमर गुफा में श्वास लय भया, सो पूर्णानन्द स्वरूप को अनुभव हुवा, तब समाधी खुली ब्रह्म निश्चय हुवा तब सोहं ब्रह्मास्मि । वाक्य सिद्ध हुवा । इस प्रकार से सोहं शब्द बनाया । फिर पांच जगा की पांच मात्रा लेके ॐ कार शब्द बनाया । तब श्रवण द्वारे से ब्रह्मांड में लक्ष लगाया तो रारा शब्द मालूम भया तहां से लय योग बनाया । इस प्रकार से तीन शब्द सोहँ ॐ ररंकार निर्माण भया तब योगकांड वेद में बना । फिर तीनों शब्द का अर्थ विचारने लगा सोई ज्ञान कांड । इस प्रकार से संपूर्ण चारों वेद पैदा भये । सोहंका अर्थ कि सो कोई ब्रह्म है सो मैंही, वोहंका अर्थ कि वो कोई ब्रह्म है सो मैंही, ररंका अर्थ कि सब प्रकाश औ तेज मैंही । इस प्रकार से एक अद्वैत चैतन्य ब्रह्म ऐसा जो शब्द है सोई हमारा स्वरूप ऐसी मानंदी जीवको हुई । सो संसार में ईश्वर

औ गुरु कहलाये औ दूसरे जीवन को उपदेश किया कि तू ईश्वर का अंश है औ शब्द तेरा मालिक है। तो शब्द हमारा उपदेश औ तू शब्द का चेला, ऐसा उपदेश जगत में गुरुवा लोग करते हैं सो तू सुन के सरके मत भ्रमे मत ऐसा गुरु जीव को समझाते हैं । कि हे जीव सोहं ॐ ररं औ चार बेद छौ शास्त्र संपूर्ण जीवकी कल्पना औ जेतिक आनंदी द्वैत अद्वैत निर्विकल्प सविकल्प सो सब जीव का अनुमान अध्यास भास बंधन है कछु निज स्वरूप नहीं। जो तू निज स्वरूप चाहता है तो भास अध्यास कछु माने मत । शब्द तो तेरे से होता है और तुरतही नाश होता है सो बंधन में तू मत परे शब्द को परख ले। जासे शब्द परखने में आवै सोई तेरा निज स्वरूप । ये अर्थ॥ २॥

साखी-शब्द हमारा आदिका । शब्दै पैठा जीव ॥
फूल रहन की टोकरी । घोरे खाया घीव॥ ३॥

टीका गुरुमुख-शब्द हमारा आदिका ये मायाका उपदेश भया तब जीव सबमें पैठे । किसी ने सोहं शब्द में सुरत लगाई, किसी ने अनहद शब्द में सुरत लगाई, किसी ने बेद में सुरत लगाई इस प्रकार से शब्द में जीव पैठे औ शब्द रूपी होके मगन भये सो शब्द की रहनी में फूल के ब्रह्म बने, कोई दास बने, कोई साधक कर्मी बने इस प्रकार से घोरे खाया घीव । घोरा कहिये,माठा कहिये, ब्रह्म कहिये, शब्द कहिये, बानी कहिये, कल्पना कहिये, भास कहिये, अनुमान कहिये, ताने जीव को खाय लिया अपने में समाय लिया। दूध कहिये जीव रूप, छांछ कहिये कल्पना, घीव कहिये जीव। ये अर्थ।

कवित्त-कोई ब्रह्म बने कोई ईश बने, कोई दास कहाय गुलाम घने ॥ कोई देहको आपन रूप बने, बिविचार विशेषन कौन गने ॥ कोई विषय मोहमें रहत सने, जिन सत्त विचार सदाहि मने । ताते

पूरण पारख दूरि रह्यो, भमि जीव अनेकन धार बह्यो ॥ नाना मत कल्पिके लत्त गह्यो, तब धोख अनेकन भांति बह्यो ॥ १ ॥

भला शब्द तो जीवका अनुमान ठहरा औ शब्द से माना सो अनुमान ठहरा । तो शब्द मानना येही जीव को बंधन ठहरा औ शब्द अंतःकरण से उठाना ये जीवकी कल्पना ठहरी।तो शब्द उठाना भी नहीं औ मानना भी नहीं तो क्या गुमसुम हो रहना ये शंका । तो गुरू कहते हैं कि गुमसुम होना औ शब्द उठाना औ मानना ये सब जीवका अनुमान मिथ्या धोखा । अरे जाहीते संपूर्ण शब्द अनुमान भास प्रत्यक्ष ये चारों धोखा परखने में आवै सो पारख पर थीर होना औ सबको परखते रहना, शब्द धोखेमें क्यों परना ये अभिप्राय । तो जो शब्दकी माननी न हुई तो बेद बानी औ गुरुवाई सिखाई सब मिथ्या।ये शंका । भला गुरुवाइ मिथ्या भई तब सिखाई सहजही मिथ्या भई । परंतु जासे सब गुरुवाई सिखाई परखनेमें आई सो पारख गुरु तो सत्य है कौन तरहसे सो सुनो।जाते सब गुरु-वाई सिखाई वेद बानी मिथ्या मालूम भई सो पारख कधी मिथ्या मालूम होती नहीं क्योंकि पारख बिना मिथ्या वस्तु औ सत्य वस्तु काहे से मालूम होवेगी । तो जाते सब सत्य मिथ्या परखने में आवै सो पारख आस्ती औ सब नास्ती।तोजब गुरु आस्ती तब शिष्य सहजही आस्ती । ये अर्थ ।याको एकदेशी दृष्टांत कहता हौं, कि जैसा एकड गाली पर बैठके सब डगाली काटी औ जिस पर बैठा सो डगाली कछु काटी नहीं अगर वो डगाली काटी तो आप ही नाश हुवा ये अर्थ। तद्वत गुरुसे सब मिथ्या फांसी कट गई औ गुरु कछु मिथ्या कल्पनासे कट सकते नहीं अगर कोई कहेगा अपनी गाफिली से तो नाश हुवा धोखे में परा । ये अर्थ । भला शब्द धोखा औ पारख गुरु सत्य परंतु आपने भी शब्दही बोला याको मानिये कि न मानिये।ये शंका॥ २॥

साखी—शब्द बिना श्रुति आंधरी । कहो कहांको जाय ॥
द्वार न पावै शब्दका । फिर फिर भटका खाय ॥४॥

टीका मायामुख—अरे शब्द बिना जीव की सुरत अंधी है कहो जो मैं शब्द न बोलता तो सुरत कहांको जाती। औ सुरत शब्द द्वारे चलती है ताते मैंने भी शब्द कहा परंतु सब शब्दनको परखानेके वास्ते कछु गहनी बंधनके वास्ते नहीं । जैसे कांटासे कांटा निकारना या बज्रसे बज्र काटना तद्वत् । ये अर्थ । शब्दके द्वारे चार, तत् त्वं असी औ सार । तो जौलों चार द्वारेका भेद न पावेगा, तौलों धोखे में परा रहेगा औ फिर चौरासीमें भटका खायगा ये अभिप्राय । द्वारेका अर्थ कि महलका द्वारा बिना महल कछु द्वारा नहीं, परंतु महलमें पैठने वास्तेके द्वारा कछु द्वारेमें पैठनेके वास्ते द्वारा नहीं । तो द्वारा कहिये चारों मुख जीवमुख मायामुख ब्रह्ममुख गुरुमुख ये चार द्वारा औ चार पद जाने तब भय मिटे । ये अर्थ ॥४ ॥

साखी—शब्द शब्द बहु अंतरे । सार शब्द मथि लीजे ॥
कहहिं कबीर जहां सार शब्द नहीं । धृग जीवन सो जीजे॥५॥

टीका गुरुमुख—जेते जेते महा पुरुष भये सो सब ने अपने अपने अनुमान करके शब्द बोले, सोई सुन के जीवन पर बडा परदा परा औ जीव भूले, ताते सार शब्द मथि लीजे । सार शब्द कहिये जासे सब शब्दन का निर्णय होय औ सब शब्दन की कसर जा शब्द से मालूम होय । औ जा शब्द में कछु कसर पक्ष अपक्ष अनुमान कल्पना दृश्य अदृश्य भावना न होय । औ जा शब्द से जीव पारख पद को प्राप्ती होय सो सार शब्द । सब शब्दनमें से मथि के काढि लेना । तो पारख पद प्राप्त होय । नहिं तो जहां सार शब्द की प्राप्ती नहिं, ता जीवका जीवना धृग पशुवत् चौरासी का जीव । ये अर्थ ॥ ५ ॥

टीका गुरुमुख—हे जीव तुम अपना पद जानो तो सब जीव असार देह हो रहे हैं इनका सार पारख करो औ थीर करो। क्योंकि जीव तुम्हारेको नरदेहमें कैसे मिले हैं जैसे पाहुना फिर दूसरी बार तुम्हैं मिलनेके नहीं नरतन छोडके चौरासीमें जाय परैंगे। ये अर्थ ॥ १० ॥

साखी—जो जानहु जग जीवना। जो जानहु सो जीव ॥
पानी पचावहु आपना। तो पानी मांगिन पीव। ११।

टीका गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि हे जीव जो तुम जमा जानो सो आपही को जानो तुम से परे कोई नहीं। न ब्रह्म न आत्मा न परमात्मा, न देह, न सत्य, न झूँठ, न शब्द, ये सब तुम्हारे से होताहै औ तुरतही नाश होता है, ताते जो कुछ जानो सो ये जीव हैं। औ पानी पचावहु आपना। पानी कहिये बानी, सब वेद शास्त्र वेदांत सिद्धांत तुम्हारी कल्पनासे भई सो कल्पना को पचावो सब पारखके देहमें जरावो औ तुम पारख पर दृढ होवो। जब देह नाशमान तब देहका भास अध्यास आनंदादि सब नाशमान। एक जीव सत्य जमा और सब खर्च। ताते और बानी औ उपदेश गुरुवा लोगन से मत मांगो तेरे पर दूसरा पीव कोई नहीं। ये अर्थ ॥ ११ ॥

साखी—पानी पियावत क्या फिरो। घर घर सायर बारी॥
तृषावंत जो होयगा। पीवेगा झक मारि ॥ १२ ॥

टीका गुरुमुख—अरे घरघर उपदेश करते क्या फिरते हो, घरघर तो नाना प्रकारकी कल्पना कलोल कर रहीहै औ नाना प्रकार की सायर बानी भर रही है ताते जीवनको कछु होश नहीं। ब्रह्मा विष्णु शिवादि सब बेहोश हैं इनके पीछे हे संतो तुम कहां लों बेजार होवोगे औ उपाधी में पडोगे। ताते संसारकी आशा छोडके निरुपाधी हो रहो। जाको अपनी स्थिति को चाह होवेगी

सो आपही झख मारके तुम्हारी शरणमें आयके विचार करके स्थिर होवैगा पारख पदको प्राप्त होवेगा। ये अर्थ ॥ १२ ॥

साखी–हंसा मोती बिकानिया। कंचन थार भराय ॥
जो जाको मर्म न जानै। सो ताको काह कराय १३

टीका गुरुमुख–हंसनका चारा मोती सो अपने चारेके वास्ते हंसा बिक गये जीव विषयमें बिक गये। धन धान्य पुत्र पौत्र ऋद्धि सिद्धि अणिमादि विषयके वास्ते औ स्त्री विषयके वास्ते एकके एक गुलाम हो रहे हैं। कोई देवतनके गुलाम, कोई मंत्र यन्त्रनके गुलाम, कोई राजनके गुलाम, कोई मनुष्यनके गुलाम, कोई स्त्रियन के गुलाम, कोई देहके गुलाम बने।

चौबोला–कोई देवके गुलाम कोई मंत्रके गुलाम, कोई यंत्रके गुलाम, कोई तंत्रके गुलाम हैं ॥ राजके गुलाम कोई काजके गुलाम कोई, नाजके गुलाम महाराजके गुलाम हैं। रानीके गुलाम महारानीके गुलाम, वेद बानीके गुलाम दिलजानीके गुलाम हैं। योगके गुलाम कोई भोगके गुलाम, महारोगके गुलाम पूर्ण पर्ख आठों जामहैं ॥ १ ॥

मोती कहिये मुक्ती, सो चार प्रकारकी वेदने वर्णन किया है, सालोक्य सामीप्य सारूप्य सायुज्य। सालोक्य कहिये जो स्वर्ग में निवास पावै देवयोनीमें बिलास करे। सामीप्य कहिये जो मालिक के नजदीक रहै हजूरी दास। सारूप्य कहिये कीट भृङ्ग न्याय जैसा मालिकका स्वरूप तैसा अपना स्वरूप होय। सायुज्य कहिये मालिक का औ अपना स्वरूप एक होजाय जल तरङ्ग न्याय। ये चार मुक्ती वेदने बताया ताके वास्ते जीवनको अनुराग भया औ कञ्चन की थारी भर भरके गुरुवा लोगनके पास तन मन धन सहित बिकाय गये। परन्तु जो गुरुवाई करते हैं उनहू को मालिकका मर्म

मालूम नहीं सो ये जीवोंको मुक्ती क्या करेंगे । गुरुवा लोग भी मुक्ती के भरोसे बैठे हैं ताते अन्ध हैं मालिक तो जीवही है और दूसरा मालिक कोई नहीं, तब चार प्रकारकी मुक्ती मिथ्या धोखा । परन्तु जो आपही मर्म नहीं जानता सो दूसरे को क्या करेगा। ये अभिप्राय। कोई ज्ञानी महान कहावते हैं । सो तो अपने अध्यासमें अहंब्रह्मास्मि ब्रह्मैवाहमस्मि मैं आत्मा पूर्ण जैसेका तैसा, ऐसा कहायके बन्ध भये ताते आगे इनका लक्ष चलता नहीं । सो गुरु तो कहाये परन्तु गुरुपदका मर्म कछु जाना नहीं तो दूसरेको क्या बतावेंगे न कछु भरमायेंगे । ये अभिप्राय । औ महान योगी जो हैं सो भी अपने२ भासमें बन्ध भये, जो कछु भास भयो अभ्यासते ताहीको ब्रह्म माना औ नाना सिद्धि ऋद्धिमें भूले ताते गुरुपदका मर्म इनहूं नहीं जाना सो दूसरे को क्या करेंगे नाहक भटकायेंगे । ये अभिप्राय । तिसरी गुरुवाई उपासक की सो तो मिथ्या अनुमानमें लुब्ध हुये नाना प्रकारकी कल्पनामें बँधे । रुद्रयामल ब्रह्मयामल बिष्णुयाल आदि यन्त्र मन्त्र तन्त्रनमें आसक्त रहते हैं । ये गुरुपदका मर्म क्या जाने जो अपनेही परखनेमें नहीं आया सो शिष्यको क्या परखावेगा । औ चौथे कर्मी, प्रत्यक्ष कर्म के बन्धमें परे ये गुरुपदका मर्म क्या जाने । प्रत्यक्ष कहिये जो आंखि सो जान परे तामें बँधे देह अभिमानी । जो ऐसेही ऐसे बन्धनमें आपही परे हैं सो दूसरे को क्या मुक्त करेंगे धोखा मिथ्या । ताते गुरु आगे हंसको उपदेश करते हैं प्रशंसा कर करके सो सुनो ॥ १३ ॥

साखी-- हंसा तू सुबर्ण बर्ण । क्या वर्णौं मैं तोहि ॥
　　तरिवर पाय पहेलि हो । तबै सराहौं तोहि ॥१४॥

टीका गुरुमुख-गुरू कहतेहैं कि हंसा तू सुवर्ण कि सब वर्णन का निर्णय कर्ता सुवर्ण कहिये शुद्ध ज्ञानवर्ण । औ वर्ण कहिये ज्ञानता

वर्णन का निर्णय कर्ता सो हंसा तूही है औ कुवर्ण कहिये चक्षुगो-चर, श्रवणगोचर, त्वचागोचर, घ्राण गोचर, जीभगोचर, चित्त मन बुद्धी हंकार अंतःकरण गोचर ये सब कुवर्ण औ इनका जानने वाला सुवर्ण सो ता सुवर्ण का निर्णय कर्ता वर्ण तू है सुवर्ण । ताते समस्त वर्णका वर्णन करनेवाला तू हंस वर्ण, और तेरा वर्णन करने-वाला कोई नहीं जो कछु जमा है सो तूही है । ये अभिप्राय । तरि-वर कहिये मनुष्य देह औ तरिवर कहिये शब्द औ तरिवर कहिये वृक्ष, तरिवर कहिये जो नाना बानीका वृक्ष जहां मन पक्षी विश्राम पावै सो तरिवर । ये अर्थ । तो ऐसा मनुष्य तन पाय के सकल बानी पहिलीहो बूझिहो । देह आदिक बानी बन्धन बूझके पारख पदको प्राप्त होई हो । तबै सराहों तोहि अरे मनुष्य तन पायके जीवकी स्थिति भई तो तारीफ है नहीं तो जैसा पशू तैसा नर । ये अर्थ । ताते फिर हंसको गुरु उपदेश करते हैं सो सुनो ॥ १४ ॥

साखी—हँसा तूतो सबेल था । हलकी आपन चाल॥
रंगकुरंगेरंगिया । तैं किया और लगवार ॥ १५ ॥

टीका गुरुमुख—गुरू कहतेहैं कि हे हंसा तू सबल सर्व शक्तिमान था । जो तेरी सत्तामात्रसे संपूर्ण जगत चार खानी चौरासी लक्षयोनी पैदा भई नाना विचित्र । सोई देख के तू अपने को भूला औ देहको मान के विषयन में आसक्त भया येही अपनी चाल हलकी जो अपनी कल्पना से देह गृह पुत्र आदि सृष्टि पैदा की औ ताही के वश भया । संपूर्ण बल सत्ता जायके निर्बल आसक्त भया ताते अनेक दुखकी प्राप्ती भई । जैसा राजा अपने मंत्रिनके वश भया ताते मन्त्री प्रबल भये औ राजाकी आज्ञा नहीं मानते सब रैयत बहकाय दिये तब राजाका हुकुम सब अदूल किया तब राजा बेकाम हुवा, तब आपही

सब रैयत की खुशामद करने लगा दीनवत् । तद्वत ये जीव अपने कर्तव्य के वश होके निर्बल लाचार हुवा इंद्रिनकी आज्ञामें रहने लगा, येही हलकी चाल से नाना दुख प्राप्त भये । तब दूसरा कर्ता कोई है ऐसी कल्पना खडी भई औ नाना कर्म उपासना खडे भये औ ज्ञान विज्ञान खडा भया सोई रंग कुरंगमें तू रंगा औ दूसरा लगवार कोई है ऐसा अनुमान करके माना सोई बंधन में परा । सो हे हंसा अपनी चालसे दुख पावता है ताते इंद्रिनके वश हो रहाहै औ नाना अनुमान कल्पनाके वश होरहाहै सो हलकी चाल छोडदे औ अपने को समझ नहीं तो जैसी गति होतीहै तैसा गुरु बयान करतेहैं ॥ १५ ॥

साखी–हंसा सरवर तजि चले । देही परि गौ सून ॥
कहहिं कबीर पुकारिके । तेही दर तेहि थून ॥ १६ ॥

टीका गुरुमुख–हंसा कहिये जीव औ सरवर कहिये जीवकी मानंदी ब्रह्म ईश्वरादि नाना कल्पना, द्वैत अद्वैत विशिष्टाद्वैत, ऐसी नाना मत की मानंदी सोई हंसका मान सरोवर, स्त्री विषयादि नाना विषय सोई मानसरोवर, जो हंसका सुखका धाम सोई मान सरोवर । ये अर्थ । जबलग देह साबुत है तबलग नाना सुख नाना समाधी नाना भोग, नाना कर्मोंका विलास हंस करताहै । फिर जब देह छूटतीहै, तब संपूर्ण विषय विलास छूट जाताहै, न समाधी रहतीहै, न कर्म, न ज्ञान, न योग, न विषय रहतेहैं सब नाश होतेहैं । पर उनका अध्यास हंसके भीतर बीजरूपी रहताहै औ देह शून्य हो जातीहै तब सुषोप्ती अवस्था जीव को होतीहै । सो मानंदी सरवर छोडके मानंदी का बीज लेके हंस सुषुमना नाडीके संग चले औ देह शून्य पड गई लोग कहने लगे कि मर गया । सो जीव कहां है सब वाचासे पुकारते हो कि कोई

बिचार भी करके देखते हो । और तेही दर तेहि थून । अपने स्वरूप की प्राती विना फिर जठर योनीमें गया । जैसा कर्मका दर बनाया तैसा थून होके अध्यास हो गडि रहा । दर कहिये, दरार कहिये, भग कहिये; ताते जहांसे सब पैदा हुये फिर वोही भगमें आसक्त हो रहे।ताते जब देह त्याग भई औ हंस जगत तजि चले सुषोप्तीरूप होके सुषुमना पवनमें मिले; सो सुषुमना जाय मैथुन समय पुरुषकी सुषुमनामें मिली। पुरुषकी सुषुमना जड रेतमें मिली, ताते सुषुमनाने हंसको रेतमें मिलाय दिया. तब हंसा रेत रूपी होके तेही दर भगदरमें चले।थूल कहिये, थूनी कहिये लिंग कहिये मैथुन कहिये, समय मैथुन सो लिंगद्वारसे भगद्वारे होके गर्भवास प्राप्त। तो चाहे कर्म करे, चाहे योग करे चाहे उपासना करे, चाहे ज्ञान अनुभव होय; चाहे जगतकी विस्मृती करके सदा समाधिस्थ रहै, परंतु गर्भवास छूटता नहीं पारखकी प्राप्ती होयबिना तो कर्म अध्यास, उपासना अध्यास, योग अध्यास, समाधी अध्यास येही गर्भवासमें जाने का बीज है । ये अभिप्राय। ताते सम्पूर्ण बीज पारखसे त्याग होताहै, औ बिना पारख हंस बकु एक रंग ब्रह्म हो रहे हैं, ताते गुरु परखातेहैं ॥ १६ ॥

साखी—हंस बगु देखा एकरंग। चरें हरियारे ताल ॥
हंसा क्षीरते जानिये । बगुहि धरेंगे काल ॥ १७ ॥

टीका गुरुमुख—हंस कहिये जो नीर क्षीरका निर्णय करे । तो क्षीर कहिये जीव और नीर कहिये देह, देह कहिये पांच तत्व तीनगुण मिलके समुदाय, तामें जीव मिल रहाहै ताका निरुबारा करके जीवको देह अध्यास से निकारके अपने पदपर थीर करे ताको हंस कहिये पारखी कहिये । औ जो संपूर्ण चराचर, ज्ञानी अज्ञानी, साधू असाधू-

विवेकी अविवेकी,गदहा संत,एक रंग देखते हैं कहते हैं कि,सर्वं खल्विदं ब्रह्म अखंड अद्वैत एक आत्मा, ऐसा सिद्धांत करके कहतेहैं सो बकुले बेपारखी । ये अर्थ । तो हरियारा ताल कहिये संसार केहि प्रकार सो सो सुनो । हरी कहिये जो सबका हरण करै औ आप रहे सोई मूलमाया, येर कहिये प्रेरणा, सो मायाकी प्रेरणा सोई जगत तामें हंस बगु देखा एकरंग । कि हंसाभी श्वेत औ बकुलाभी श्वेत । तद्वत विज्ञानी ब्रह्मज्ञानी इनका बोलना औ भेष औ निर्णय कर्ता पारखी इनका बोलना औ भेष अज्ञानीको एकही रंग मालूम होताहै औ दोनों जग तमें विचरतेहैं परन्तु हंस क्षीरमें जानिये । जो दूध औ पानी मिलाहै ताको न्यारा करै दूधको ग्रहण औ पानीको त्याग करै सोई हंस जानिये तैसा जीव नाना भास नाना अध्यास नाना कल्पना नाना अनुमानमें मिल रहाहै ताको न्यारा न्यारा करै औ जीवको ग्रहण करै देह आदि संपूर्ण भर्म त्याग करे ताको पारखी हंस कहिये । सोई पारख में थीरहै औ दूसरेको भी सकल भ्रमसे छुडायेगा । औ जो बे पारखी बकुलेहैं तिनको काल खाय जायगा । काल कहिये अनुमान, काल कहिये कल्पना,काल भास औ काल अध्यास,काल ज्ञान विज्ञान विलास सो बिना पारख जीवको खाय खाय उगिलता है । ऐसा कालका रूप तामें जो जीव मिल रहे हैं सो भी काल, जो सब जीवन की धोखेमें डारके बांधतेहैं । ये अर्थ । तो पारखमेंभी त्याग ग्रहण रहताहै ये शंका अरे त्याग ग्रहण तो हंसमें है कछु स्वच्छ पारख में नहीं । क्योंकि त्याग ग्रहण कछु उपाधी विना होता नहीं औ पारख भूमिका तो निरूपाधी तहां त्याग ग्रहण कैसा संभवे । ये अभिप्राय । तो हंसको औ ब्रह्मको केता अंतर है जो हंस तो अपनेको आप यथार्थ जान

के पारखस्थिति को प्राप्त भया ताते आवागवनसे रहित है। औ ब्रह्म तो अपने को आप न जान के मैं अद्वैत संपूर्ण जगत मेरा रूप ऐसा मान के अपने बास में स्थिति है आनंद में रहता है पारख भूमिका प्राप्त भया नहीं ताते गाफिल है तो आवागवन में है। ब्रह्म से जगत औ जगत से ब्रह्म होता है कछु पारख से जगत औ जगतसे पारख होता नहीं येता अंतर है। तो ब्रह्म मिथ्या धोखा कि जासे जगत मिथ्या धोखा पैदा होता है। जाका भूषण खोटा तो सुवर्ण क्या सच्चा है। तो पारख भी सत्य, और हंस भी सत्य, जगत मिथ्या ब्रह्म भी मिथ्या हंस को औ पारख को केता अंतर है। ये शंका। हंस को औ पारख को कछु अंतर नहीं देह खडी है ताते हंस नाम है औ देह गिरी तो वही पारख। ये अर्थ। हंस उपदेश की साखी संपूर्ण ॥ १७॥

साखी—काहे हरिनी दूबरी। यहि हरियरे ताल ॥
लक्ष अहेरी येक मृग। मैं केतिक टारों भाल॥१८॥

टीका गुरुमुख—हे संतो ये जीव जगत में दूबरा कंगाल हो रहा है सो काहेते कि आप भूलि के ब्रह्मानन्द बना यहिते। हरनी कहिये जीव को, क्योंकि दूसरा हर अनुमान किया औ कहा कि हरी पुरुष मैं हरीकी स्त्री ऐसा कहि के भक्ती करने लगा ताते हरी की स्त्री हरनी। ये अर्थ। सो हरी के प्राप्ती के वास्ते दुबरा कंगाल हो रहा है तापर लाखों शिकारी गुरुवा लोग बाण चलाते हैं।

कवित्त—कोई कहै तप करो कोई कहै जप करो कोई नानाकर्म करो कहत समुझाय के ॥ कोई कहै मूर्तिधरि पूजा बहु कीजिये, कोई कहै प्रेम मांझ रहिये बैलाय के॥ कोई योगध्यान कोई नित्यानित्य कहै सांख्य, कोई षट चक्र बेधि श्वासा तरकाय के ॥ कोई नाना मत भेद कहत बतलाये वेद, कोई कहै पूर्ण ब्रह्म आपै आप गायके॥ १ ॥

ऐसे लाखों तरह के लक्ष गुरुवा लोग जीवन को मारते हैं ताते सब जीव बेहाल हैं मैं केतिक भाल टारों । ये अर्थ । जैसा घायल हरिना ताको लाखों शिकारी तीर मारते हैं उस हरिनाका बचाव कहीं नहीं । ताते हरिण को अनेक तीर लगे हैं तो केतिक तीर निकारना । जो निकारा चाहो तो हरिणा बहुत व्याकुल होताहै तो केतिक निकारना । जो न निकारना तो हरिणाका अकाज होता है हरिना उसी में मरता है । ये शंका । तो चुम्बक पारख ताका स्पर्श जब होयगा तब सम्पूर्ण भाल गांसी निकर जायगी औ जीव सुखी होगा । ये अर्थ ॥ १८ ॥

साखी—तीन लोक भौ पींजरा । पाप पुण्य भो जाल ॥
सकल जीव सावज भये । एक अहेरी काल ॥ १९ ॥

टीका गुरुमुख—हे संतो ये तीन लोक तो ये जीवन को रोकनेके वास्ते पींजरा बना औ सम्पूर्ण जीवन को पींजरे में डार के माया ने अपने हाथ लिया । तीन लोक कहिये त्रिकुटी श्रीहट गोल्हाट ये तीन लोक, तीन अवस्था, तीन पन तीन गुण, तीन स्थान, यामें सकल जीवपरे । औ चौथी तुर्या मूलमाया चतुर्थीका ताके हाथ में पींजरा, सो तुर्या अपनी इच्छा से पींजरे में जीवनको खिलाती है औ अंतमें तुर्यातीत काल ताके मुखमें डार देती है । और पांच तत्व यही भवसागर, नाना कल्पना बानी सोई सागर औ अनेक प्रकार का पाप पुण्य का गाथा सोई जाला, तामें सकल जीव सावज मीन मच्छ रूपी होके फसे औ सब जीवन का अहेरी काल एकब्रह्म जाने सबन को फसाया । ये अभिप्राय ॥ १९ ॥

साखी—लोभे जन्म गवाँइया । मापै खाया पून ॥
साधी सो आधी कहैं । तापर मेरा खून ॥ २० ॥

टीका गुरुमुख—जो जो लोग ब्रह्मादि गुरुवालोगोंने औ श्रुति स्मृती ने बताया फल आशा अर्थ धर्म काम मोक्षादि तामें जीव आसक्त भये औ नाना कर्म धर्म क्रिया आचरने लगे ताते लोभही में जन्म गवांया । तो सर्व पाप का मूल लोभ, ता लोभ ने संपूर्ण पुण्य खाय लिया । पुण्य कहिये ज्ञान सो लोभ में ज्ञान का नाश हुवा । ये अभिप्राय । साधी कहिये जीव को, तासों आधी कहिये अर्धमात्रा सो गुरुवा लोगन ने जीवन को उपासना कही औ नाना प्रकार के मंत्र यंत्र तंत्र कल्पना में बांधा सो मिथ्या भ्रम । औ अर्धमात्रा कहिये तुर्या, सो ज्ञानिन ने जीव को तुर्या अवस्था कही । कि तीनों अवस्था अज्ञान जनित ताको बिवेक करके त्याग करना औ जो तीनों अवस्था की जाननेवाली तुर्या अवस्था ज्ञान स्वरूप ताको अनुभव लेके निर्विकल्प ब्रह्म होना । भाव अभाव छोडना सब औ आपी होके रहना ऐसी साधी से आधी कहत हैं सो मिथ्या भ्रम छोड तो मेरा शब्द ताहू के ऊपर पारख बताता है तू पारख पद को प्राप्त हो औ मिथ्या भ्रम छोड । पारख के काहू में आसक्त मत करे येही मेरा खून । खून कहिये, निशानी कहिये, पता कहिये, याद कहिये, इशारा कहिये । ये अर्थ । पारख पद सर्वोपरि । ये अभिप्राय ॥ २० ॥

साखी—आधी साखी शिर खडी । जो निरुवारी जाय ॥
क्या पंडितकी पोथिया । जोरात दिवस मिलिगाय २१

टीका गुरुमुख—आधी साखी कहिये अर्धमात्रा, अर्धमात्रा कहिये माया, सो तीनों देह, तीनों मात्रा, तीनों लोक के शिर पर खडी है सोई जीव को धोखे में डार देती है । तो जो संधी जीवसे निरुवारी जाय औ अन्वय करके सब ब्रह्म बनता है सो न बनै तो जीवकी

यथार्थ स्थिति होय । परंतु पारख बिना तत्वमसीका अध्यास कछु छूटने का नहीं औ जीव कछु अपनी भूमिका को प्राप्त होने का नहीं । तो क्या पंडित की पोथिया, जो राति दिवस मिलि गाय । पारख कछु पंडित की पोथी वेद नहीं जो रात दिन कंठ करके गाने लगे । पारख पद सब से न्यारा सो कछु कागद में लिखा नहीं जाता औ कर्तव्य से नहीं आता । केवल पारखिनके संगतसे ही पारख पद की प्राप्ती होती है । ये अर्थ । सो पारख की प्राप्ती होय तो अर्धमात्रादि मायाजाल जीवका सब छुटै । ये अभिप्राय ॥ २१ ॥

साखी—पांच तत्वका पूतरा । युक्ती रची मैं कीव ॥
मैं तोहि पूछौं पंडिता । शब्द बडा की जीव ॥२२॥

टीका मायामुख—पांच तत्व का पूतरा युक्ती से रचि के मैंने पैदा किया,ब्रह्मादि संपूर्ण जीव पुतले मैंने पैदा किये इस प्रकार वेदमें माया ने कहा सोई सब पंडित लोग भी कहते हैं । गुरुमुख—ताते गुरु पूछते हैं कि हे पंडित तुमने वेदका शब्द माना औ कहने लगे कि ब्रह्म बडा कि ईश्वर बडा जाने सब संसार पैदा किया परंतु अपने हृदय में बिचार करके देखो ।शब्द बडा कि जीव अरे जो जीवन होता तो वेद आदिक नाना शब्द कौन पैदा करता औ ब्रह्म ईश्वरादि अध्यारोप कौन करता ताते जीवही सबते बडा जाने सबहीको थापा । तो शब्द ब्रह्म आदि उपाधी सब मिथ्या जीवकी कर्तूत जीव सबका करनेवाला आदि । ये अभिप्राय ॥ २२ ॥

साखी—पांच तत्व का पूतरा । मानुष धरिया नांव ॥
एक कला के बीछुरे । बिकल होत सब ठांव ॥ २३ ॥

टीका गुरुमुख—पांच तत्व का पूतरा वाको जीवने मान के अपना नाम मानुष धरा औ नाना कल्पना विषय में भूला ताते ठाम ठाम

चौरासी लक्ष योनिन में विकल होता फिरता है । तो भला पांच तत्व का पूतरा तो सही याको माननेवाला जीवभी सही जाने याका नाम मानुष धरा परंतु ठाम ठाम चौरासी में व्याकुल होनेका क्या काम कछु खुसी तो न थी। ये शंका । खुसी तो न थी परंतु एक कला के बिछुरे, बिकल होत सब ठांव । सब सामग्री तो इसके पास थी पर एक पारख स्थिति न थी तो एक पारख के बिछुरे सब ठांव व्याकुल भया दुख पाया । ये अभिप्राय ॥ २३ ॥

साखी—रँगही से रँग ऊपजे । सब रँग देखा एक ॥
कौन रंग है जीवका । ताका करहु विवेक॥ २४ ॥

टीका गुरुमुख—हाथी से हाथी घोडे से घोड़ा, पशु से पशु, पंछी से पंछी, मानुष से मानुष इस प्रकार रंगहीते रंग ऊपजै । औ सब रंग विचार करके देखो एक पांच तत्वकेही हैं। पांच तत्वभी नहीं परंतु कौन रंग है जीवका ता का विवेक करो क्योंकि बिना विवेक कछु जीव पदार्थ समझने का नहीं । ये अभिप्राय । जो पदार्थ जाद्वारे देखने को होता है सो वही द्वारे देखना । जैसा शब्द पदार्थ श्रवण द्वारे देखना आन द्वारे दिखाने का नहीं । रूप पदार्थ नेत्रद्वारे देखना आन द्वारे दिखाने का नहीं । रस पदार्थ जिभ्याद्वारे देखना आनद्वारे दिखाने का नहीं । स्पर्श पदार्थ त्वचाद्वारे दिखने को होता है आन द्वारे दिखाता नहीं । गंध पदार्थ नाकद्वारे देखनेको होता है आन द्वारे कछु दिखाता नहीं । तैसा जीव पदार्थ विवेक द्वारे दिखता है आन-द्वारे कछु दिखता नहीं । ये अभिप्राय । ताते गुरु कहते हैं ॥ २४ ॥

साखी—जाग्रतरूपी जीव है । शब्द सोहागा सेत ॥
जर्द बुंद जल कुकुही । कहहिं कबीर कोई देख।२५।

टीका गुरुमुख—जागृति रूपी कहिये चैतन्यरूपी, जो तत्व प्रकृती देह आदि अवस्था आदि दुख सुखका जाननेवाला सोई जीव सोई

जान । ये अर्थ । औ शब्द कहिये जो प्रथमारंभ में जब पक्केका कच्चा देह भया तब, अहं अयं देहः। ऐसा माना सोई शब्द । तब दूसरी इच्छा औ देहमें से उठी कि मेरे सरीखा दूसरा कोई होता तो अच्छा था । सोई इच्छा का स्वरूप खड़ा भया स्त्रीरूप माया; सोई जीव को दाग विषय वासनाका लगा, जैसा सोने को सोहागा लगता है तद्वत् । ये अर्थ । जैसा सोहागे के डारे से सोना पिघलता है तैसा वो नारी रूपको देख के पुरुषरूप पिघला, दोनोंका संयोग हुवा, तब स्त्रीका बिंदु पीला औ पुरुष का स्वेत, ये दोनों गर्भवास में मिले ताते आगे देहकी रचना भई तैसी अब भी होती है और दूसरा कर्ता कोई नहीं ऐसा विचार करके देखो । औ प्रथमारंभमें आनंदरूप हंस भया था तब कछु स्फूर्ती न हती निर्विकल्प रूप था तहांसे अपनी स्फूर्ती उठी कि एकोहँ ताही को शब्द कहिये, ज्ञान कहिये ताही को महाकारण कहिये ता ज्ञानसे अपने को माना औ दूसरा इच्छा विषय खडा भया ताही को सोहागा कहिये, अज्ञान कहिये, कारण कहिये । ता कारण से इच्छा रूप नारी और आनके जगत चौरासी लक्ष चिन्ह खडा भया सूक्ष्मरूप । ताही को कल्पना कहिये, स्वेत कहिये, सूक्ष्मकहिये याका दृष्टांत, कि जैसा एक जीव स्वप्नमें सूक्ष्म देह धारण करता है औ जेतिक कल्पना उठती है तेते रूप आपही धारण करता है, अपना तमासा आपही देखता है । परंतु उस जीवको कछु मालुम नहीं कि सब रचना तमासा मैंही बनाया औ मैं स्वप्न देखता हौं । तद्वत स्वेत कहिये सूक्ष्म देह, सो इच्छामात्र में अनेक योनी अनेक रूप उत्पन्न भये फिर स्त्री भाव पुरुष ने माना औ पुरुष भाव स्त्री ने माना औ परस्पर विषय बढा ताते सूक्ष्म देह निजकै माना तब सूक्ष्महीसे स्थूल पैदा भया । तब सूक्ष्म भीतर भया औ स्थूल दृढ भया । कैसा कि स्वेत सूक्ष्म जल-रंग ताते मैथुन भया, सोई जर्द बुंद पृथिवी ताका स्वरूप जमा सोई

स्थूल, जल कुकुही कहिये जलका बुदबुदा देह । इस प्रकार एक जीवसे सब विस्तार पैदा भया सोई जीव सबका जाननेवाला जाग्रतरूपी ऐसा देखो। ये अर्थ ॥ २५ ॥

साखी–पांच तत्व लेई तन कीन्हा। सो तन ले काहिले दीन्हा ॥
कर्महिके वश जीव कहत हैं । कर्महिका जिव दीन्हा ॥ २६ ॥

टीका गुरुमुख–हे हंसा तूने पक्के पांच तत्व लेके एक कर्म स्थूल कीन्हा सो तन तूने विषय कर्मनमें दीन्हा । तो वेद शास्त्र सब कहते हैं कि कर्महीके वश जीव हैं औ कर्मही जीवको बन्धन है । त्रैलोक्य कर्मबन्धनात् । इति स्मृति। फिर ये नाना प्रकार के कर्मकाण्डका बन्धन वेदने जीवनको क्यों दिया औ ये संसारने भी कर्म में जीव क्यों दिया । जैसा कोई जहर जनाय के जहर देवै औ जहर जानके जहर खावै । तद्वत कर्मही के वश जीवको वेद कहत हैं औ कर्मही को जीव दीन्हा । ताते कर्म उठाय के माया योगका उपदेश करती है ॥ २६ ॥

साखी–पांच तत्व के भीतरे । गुप्त वस्तु अस्थान ॥
बिरला मर्म कोई पाइ है। गुरुके शब्द प्रमान ॥ २७ ॥

टीका मायामुख–अरे बाहिर कर्म उपासना सम्पूर्ण निरर्थक मिथ्या है यामें कछु फायदा नहीं । तो पांच तत्वके भीतर गुप्त वस्तु परमात्मा ताको स्थान है भ्रमरगुफा शिखा मध्ये । सो मर्म कोई बिरला पावेगा, गुरु वेद ताके शब्द प्रमाण । वेदका शब्द कहिये सोऽहं ब्रह्मास्मि । ताको प्रमाण गुरुमुख से सुनके मनन निदिध्यास करेगा तब साक्षात्कार होवेगा । अथवा ॐकार के प्रमाण से परमात्माका प्रमाण मर्म बिरला कोई पावेगा । ये अर्थ ॥ २७ ॥

साखी–असुन्न तखत अडि आसना। पिंड झरोखे नूर ॥
जाके दिलमें हौं बसों । सैना लिये हजूर ॥ २८ ॥

टीका ब्रह्ममुख–तो प्रणव शब्द के प्रमाणसे जो किसीने अनुभवका मर्म पाया था सो ब्रह्मज्ञानी बोलते हैं, कि मेरा असुन्न तखत, असुन्न तखत कहिये चैतन्य तखत, जो शून्यका भी साक्षी सबका जाननेवाला सर्वसाक्षी तखत।औ अडि आसन कहिये सिद्धासन,सिद्धासन कहिये जापर सम्पूर्ण सिद्ध ब्रह्मवेत्ता स्थित भये सोई अधिष्ठान आत्मा ताका नूर पिंड झरोखे दीखता है सोई देखके आत्म निश्चय करना । पिंड झरोखा कहिये आंखि, सो आंखि में लाल सपेद काला पीला हरा ताके बिन्दुके मध्य मेरा नूर प्रकाश देखो नजर आता है सोई सर्व साक्षी परमात्मा । अरे मैं सर्वाधिष्ठान हजूर ब्रह्म संपूर्ण ज्ञान भक्ती योग आदि सर्व शक्ती मेरी सैना, सो लेके जाके दिलमें बसता हौं सो जीव मेरेको नहीं जानता याहीको माया कहिये । जो आपको आप जानै सो ब्रह्म औ न जानै सो जीव मायावश। ये अर्थ ॥ २८ ॥

साखी–हृदया भीतर आरसी । मुख देखा नहिं जाय ॥
मुखतो तबहीं देखिहौं ।जब दिलकी दुबिधा जाय२९

टीका मायामुख–अरे सबके हृदयमें आरसी है । आरसी कहिये ज्ञान सो सबके हृदयस्थ है परन्तु अज्ञान ने ढाक लिया है ताते मुख अपना स्वरूप देखा नहीं जाता । जैसा दर्पणको मैल ढांक लेता है फिर उसमें कछु मुँह नजर नहीं आता । तद्वत अज्ञानने ज्ञानको ढांक लिया है ताते चैतन्य स्वरूप मालूम नहीं देता। मुख चैतन्य आत्माको तबहीं देखोगे जब दिलकी दुविधा द्वैत भेद छूट जायगा । जब द्वैत उपाधी छूटै तब अद्वैत ब्रह्म मालूम होय । ये मायाका अभिप्राय ॥ २९ ॥

साखी–गांव ऊंचे पहाड पर । औ मोठाकी बांह ॥
कबीर अस ठाकुर सेइये ।उबरिये जाकी छांह ॥ ३० ॥

टीका मायामुख—ऊंचा पहाड कहिये महामेरु, चौरासीलक्ष योजन ऊंचा तापर गांव कहिये इंद्रपुर बरुणपुर कुबेरपुर मध्यभाग वैकुंठपुर शिवपुर ब्रह्मपुर ऐसे ये गांव, सो मोटाकी बांह गहेसे संसारसे उबरोगे। मोटा कहिये बडा, बडा कहिये बेद, बडा कहिये शास्त्र; बडा कहिये देव ऋषी, ब्रह्मऋषी राजऋषी शास्त्राचारी इनकी बांह आश्रित होके इनके बचन प्रमाणसे संसार में विचरना सो उत्तम लोककी प्राप्ती परम सुख होताहै । नहीं तो यमपुरमें जीव जाता है वहां महा दुखकी प्राप्ती होतीहै तो हे जीव ब्रह्मा विष्णू महेश ऐसा ठाकुर सेवना कि जाकी कृपासे यमलोककी त्रास छूटे औ उत्तम लोककी प्राप्ती होय। ये अर्थ ३०

साखी—जेहि मारग गये पंडिता । तेई गई बहीर ॥
ऊंची घाटी रामकी । तेहि चढि रहे कबीर॥ ३१ ॥

टीका गुरुमुख—कर्ममार्ग उपासनामार्ग से जो व्यासादि बशिष्ठादि पंडित चले औ स्वर्ग लोकको गये ताही मार्गसे संसार सब चलने लगा औ स्वर्गादिक लोक बासना खडी भई । सो बासना आवागवन का कारण औ जीवका बंधन ऐसा जानके पातांजली योगी लोग बासना त्याग करनेके वास्ते योग कर्म करने लगे । ऊँची घाटी रामकी, रामकी ऊँची घाटी कहिये भ्रमरगुफा ताके ऊपर चढके योगीलोग आनंदमें मिल रहे । ऐसा मायाका अभिप्राय गुरुने संतनको समुझाया आगे येही योग सिद्धांतमें कसर दिखातेहैं ॥ ३१ ॥

साखी—ये कबीर तै उतरि रहू। तेरो संमल परोहन साथ॥
संमल घटै औपगु थकै । जीव बिराने हाथ ॥३२॥

टीका गुरुमुख—अरे योग अध्यास कर्म अध्यास दोनों जीव को बंधन हैं ताते दोनों बंधन परख के पारख पर उतर रहो । संमल कहिये लोभ औ परोहन कहिये मन; तो न लोभ छूटता है न मन

थकता है तो जब लग लोभ नहीं घटनेका तबलग बासना औ मन तेरे साथ है । भास अध्यासादि जेती मानंदी होवै सो मन तेरे आवागवनका मूल है । सो अध्यासवश होके जीव बिराने हाथ चौरासी में पडता है । ये अर्थ ॥ ३२ ॥

साखी—कबीरका घर शिखरपर । जहां सिलहली गैल ॥
पांव न टीके पील का । तहां खलकन लादे बैल ॥ ३३ ॥

टीका मायामुख--पांताजलि बोलतेहैं कि जीवका घर शिखर ब्रह्मांड पर, जहां परम बारीक मक तारवत रास्ता है । अरे जहां चींटी का पांव तो टिकाताही नहीं तहां संसारने बैल भरभर कर्मकांड उपासनाकांड लादाहै तो ये कहां ले जायेंगे । तो जबलग ब्रह्मांडमें जीव जायके ब्रह्ममें नहीं मिलता तबलग सब संसार पुस्तक पढे, चाहे पूजा नाना विधि करे परंतु सब नर्कमें पडतेहैं । ये पांताजली मायाका अभिप्राय ॥ ३३ ॥

साखी—बिन देखे वह देशकी । बात कहै सो कूर ॥
आपुहि खारी खातहैं । बेचत फिरे कपूर ॥ ३४ ॥

टीका मायामुख--वह देश परमात्मा ब्रह्मांडका देश, जहां बिनासूर्य उजियारा औ बिना चंद्र शीतलता, बिना करताल पखावज आदि नाना बाजा बजताहै औ बिना बादर अमृतकी वर्षा होतीहै औ हंसको परम आनंदकी प्राप्ती होती है । वह देश योग समाधी मुद्रा करके जबलक देखा नहीं तबलग वेद शास्त्र पुराणादि नाना बानी पढते हैं औ ब्रह्म निरूपन करतेहैं सो सब कूर मूढ बिना अनुभविक हैं । अरे आप तो खारी खाते हैं इन्द्रियनका रस लेते हैं औ इन्द्रियनके भोग में आसक्त हैं औ संसार में ब्रह्मरस वर्णन करते हैं । सच्चिदानन्द सुख का रस वर्णन करके इंद्री पोषण के वास्ते द्रव्य जमा

करते हैं । इंद्रियन का सुख सोई खारी सों खाते हैं औ ब्रह्म सुख सोई कपूर संसार में बेचते फिरते हैं मिथ्या भूत । जो आपही को प्राप्त नहीं सो दूसरे को क्या देवेंगे । ये अभिप्राय ॥ ३४ ॥

साखी–शब्द शब्द सब कोई कहैं । वो तो शब्द विदेह ॥
जिभ्या पर आवै नहीं । निरखि परखि करि लेह॥३५॥

टीका मायामुख–अरे वेद शास्त्र पुराण सब शब्द हीं शब्द कहते हैं परंतु अनुभव बिना शब्द से कार्य होने का नहीं । अरे वो शब्द ब्रह्म तो विदेह देहातीत है कछु जीभ पर आता नहीं उससे लक्षसे समझ ले अनुभव ले । ये अभिप्राय ॥ ३५ ॥

साखी–पर्बत ऊपर हर बहै । घोड़ाचढि बसे गांव ॥
बिन फूल भौंरा रस चाहै । कहु बिरवा को नांव३६॥

टीका गुरुमुख–पर्वत कहिये ब्रह्मांड पर, हर परमात्मा, ऐसा वेद शास्त्रादि माया ने उपदेश किया । अगर पर्वत कहिये स्वर्ग तापर परमात्माका लोक है ऐसा मायाने उपदेश किया । सो बानी सुनते ही जीव सब बहे भ्रम चक्रमें परे । ये अभिप्राय । अब सब जीवनें संकल्प रूपी घोडा तापर चढि के गांव को जाने की तैयारी किया ब्रह्मांड में वा स्वर्ग आदिक में जाने की तैयारी किया कि उस गांव में हम बसेंगे किस तरह से । कि योग करके, तप करके, उपासना करके, नाना प्रकारके दान पुण्य आदिक कर्म करके, लोकादिक में बास पावेंगे, ऐसा कहिके संसार के मनुष्य सब धोखे में बही गये औ चौरासी में परे । क्योंकि बिना फूल भौंरा रस चाहै । अरे फूल होवेगा तो भौंरे को रस मिलेगा जो फूल तो है नहीं औ भौंरा तो रस चाहता है तो कहां से पावेगा । जाके बृक्षही का ठिकाना नहीं तो तिस का फूल कहां मिले औ रस कैसे पावै तो मिथ्या भ्रांती । वृक्ष

कहिये ब्रह्म तो ताका नामभर है रूप का ठिकानाही नहीं औ फू-ल कहिये लोकालोक, तो जाके रूपका ठिकाना नहीं ताका लोक कहां पाइये । औ रस कहिये अनुभव, सो ताका अनुभव सनकादि शुकादि महान जीव लेना चाहते हैं तो कहां पावेंगे । परंतु ब्रह्म ऐसी एक कल्पना प्रथमारंभमें खडी भई सोई सब सनकादि आदि जीव मानि मानि मग्न भये कि मैं ब्रह्म मैं आत्मा ऐसा कहिके अपने में आप गफिलाय के चौरासी में बहि गये । ये अभिप्राय॥ ३६ ॥

साखी--चंदन बास निवारहू । तुझकारण बन काटिया ॥
जीवत जीव जनि मारहू। मूये सबै निपातिया॥ ३७॥

टीका गुरुमुख–चंदन कहिये जीवको सो गुरु कहते हैं कि हे जीव संपूर्ण बासना दूर कर ब्रह्मवासना, लोक बासना, ऋद्धि सिद्धि बासना, जगत बासना, स्त्री पुत्र धनादि विषय बासना, केवल मुक्ती-मात्र ज्ञान बासना ये तेरेको सब बंधन हैं ताते तू परखके सब निरु-वार डार । तेरे वास्ते संपूर्ण वेद शास्त्रादि बानीका बन काटा जो बनमें तू भूला था । सो बन काट के मैदान किया बिचार मार्ग तेरेको मिले औ पारख स्थिति तेरेको यथार्थ प्राप्त होय । ये अर्थ । जीयत जीव जनि मारहू, मूये सबै निपातिया । अरे जीव नाना प्रकार की तपस्या औ योग औ बैराग करके जीते जीव क्यों दुख पावता है । तेरा अभिप्राय कि जीते जीव इंद्रियनको मारना औ जीते जीव देहको जरावना तो मुक्ती होती है । जो इंद्रि औ देहके निपात किये से मुक्ति होय तो मेर पर सब देह औ इंद्रि निपात होती हैं औ सब जीव समाधिवत् होजाते हैं तो संपूर्ण जीव मुक्त हो जाय, फिर जीते जीव नाना योग तपस्या करके क्यों मारते हो । तो हे संतो ऐसे नास्तिक ज्ञानसे कहीं मुक्ति होती है

नाहक बानीके धोखेमें क्यों परे हो जबलग यथार्थ पारख नहीं होने की तबलग जीव रहित नहीं होनेका। ये अभिप्राय ॥ ३७ ॥

साखी—चंदन सर्प लपेटिया । चंदन काह कराय ॥
रोम रोम विष भीनिया ।अमृत कहां समाय॥३८॥

टीका गुरुमुख—चंदन कहिये जीवको औ सर्प कहिये मायाको सो मायाने जीवको लपेट लिया अब जीवने क्या करना। रोम रोम में मायाका विषय विष बेध रहाहै अब अमृत बिचार कहां समाय। सर्प कहिये, माया कहिये, काया कहिये, स्त्री कहिये, गुरुया कहिये, जाने जीवनको लपेटा बांध डारा सो माया । ये पांच नाम लेके माया तामें जीव आसक्त भया अब बिचार क्या करेगा। अब विष कहिये, विषय कहिये, कल्पना कहिये, बानी कहिये, आनंद कहिये; ये पांच प्रकारका विष जीवको रोमरोममें बेध गया अब अमृत जीव पारखमें कहां समाय सकताहै तो धोखेमें गफिलाय गया । ये अभिप्राय। या साखीमें जीवकी प्रशंसा करके गुरु बताते हैं कि जो जीव को मायासर्प डस गया ताते नाना विषय बिष चढा । ब्रह्म विषय, जगत विषय, स्त्री विषय, बानी विषय ऐसा बिष चढा ता विषयमें जीव गफिलाय गया। अब जो ये विष उतरे तो जीवं पारख स्थिति को प्राप्त होय। तो विष उतरने को कौन सुख साधना । ये शंका। सतसंग द्वारे बिचार अमृत सुख साधना। ये अभिप्राय। आगे जीव कैसा भूला सो दृष्टांत सहित गुरु बतातेहैं ॥ ३८ ॥

साखी—ज्यों मोदाद समसान सिल । सबै रूप समसान ॥
कहहिं कबीर वह सावजकी गती।तबकी देखि भूकान३९

टीका गुरुमुख—मोदाद कहिये प्रमाण,समसान सिल एक पत्थर होताहै ताको प्रमाण ऐसाहै कि जो कोई रंग उस पत्थरपर धारो सो

रंग उस पत्थरके मुताबिक मालूम होताहै । उस पत्थरका रंग हरा है ताको दृष्टांत देके ब्रह्म स्थिति की केसर बतातेहैं । जो समसान सिल का प्रमाण है तैसा अंतःकरणका प्रमाण है, कि जो जीव अंतःकरणमें मिलताहै सो अंतःकरण निर्विकल्परूप हो जाताहै औ कहता है कि ब्रह्म साक्षात्कार मेरे को हुवा सो ब्रह्म कैसा है कि समसान सिलावत जो कोई उसे परसे सो सब जगत् ब्रह्मरूप मालूम होताहै।परंतु जबलग अंतःकरणमें जीव समरस होके रहता है तबलग द्वैत मालूम होता नहीं औ जब अंतःकरणका वियोग हुवा तब द्वैत बना है जीवरूपका जीव रूप बना है । ऐसेही जबलग समसान सिल पर बस्तु धरो तबलग समसान सिला माफिक मालूम होतीहै औ जब समसान सिल परसे वस्तु निकार लेव तब जिसका रंग उसको बनाही है । तो बिजातीय रंग अंतःकरण आदि संपूर्ण नाशमान ऐसा न जानके जीव सब भ्रममें पडे । ये अभिप्राय । काया छूटे उपरांत द्वैत अद्वैत स्थिति कहां है। हे जीव ये संपूर्ण तेरी समरससाईसे देहमें प्रतिभास होताहै देह नासै सब नाश होतीहै। परंतु वह सावज की गती, तबकी देखि भूकान । अरे वह सावज कहिये आदि पुरुष जाने सब सृष्टिको पैदा किया सो वही सावज ये जीव है।परंतु तबकी प्रथमारंभकी गती विचित्र अदभुत देखके भूकने लगा। जैसा कुत्ता कांचके मंदिरमें पडा सो अनेक भास मालूम भये तब भूंकते भूकते प्राण छूटे औ फिर श्वान योनि में गया तद्वत् ये जीवको आनंद तो समसान शिलावत् भया औ देह तो सब शिला स्फटिक शिला अथवा कांचके अथवा कांचके महलवत् भया ताते जीवको अनेक भास भये । ताहिसे चार वेद छै शास्त्र अठराह पुरान सब भूकि भूकि मरगये औ जैसा अध्यास तैसा बास प्राप्त भया। ये अर्थ ॥ ३९ ॥

साखी--गही टेक छोडै नहीं। जीभ चोंच जरि जाय॥
ऐसो तप्त अंगार है। ताहि चकोर चबाय॥४०

टीका मायामुख-मायाका उपदेश ऐसा है कि जो टेक गहना सो छोडना नहीं जैसे चकोर की टेक है कि कधी मैं चन्द्रको पाऊँ तो हृदयमें रख लेऊँ। तो जो कोई चकोरके आगे तप्त खैरके अंगार डार देवे तो चन्द्रके भरोसे निगल जाता है परंतु अपनी टेक नहीं छोडता ऐसे परमात्माकी भक्तीकी टेक रखना कधी प्राण जाय,तबभी छोडना नहीं। ये अभिप्राय। परन्तु वो चकोर का मुख तो जरता होगा। ये शंका॥ ४० ॥

साखी--चकोर भरोसे चंद्रके। निगलै तप्त अंगार॥
कहै कबीर डाहै नहीं। ऐसी वस्तु लगार ॥४१॥

टीका मायामुख--ये मायाका उपदेश ऐसा है कि चकोरका दृढ विश्वास चन्द्रपर है ताते डाहै नहीं। चन्द्रके भरोसे निगल जाता है ताते अङ्गार शीतल होजाता है इस प्रकारसे लगार वस्तु बडी है। लगार कहिये, पक्ष कहिये, भक्ती कहिये, प्रीति कहिये, सो जगतमें ईश्वर की भक्ती पक्ष पूर्वक प्रीति रखना ताते प्रपंच अग्नी सब शीतल मालूम होवेगी औ त्रिविध ताप सब शीतल मालूम होवेंगे। परन्तु सदा प्रेममें मग्न गलतान हो रहना। ये अभिप्राय॥ ४१ ॥

साखी--झिलमिल झगरा झूलते। बाकी छूटि न काहु॥
गोरख अटके कालपुर। कौन कहावै साहु॥४२

टीका गुरुमुख--झिलमिल झगरा कहिये तारक योग तामें संसार सब झूलने लगा। कोई सन्मुखी, कोई खेचरी, कोई चाचरी, कोई शांभवी, कोई उन्मीलनी, कोई अगोचरी, कोई आत्मभावनी, कोई पूर्णबोधिनी, कोई सर्वसाक्षिनी आदि मुद्रा करने लगे, जीवसे ब्रह्म

ब्रह्मसे जीव होने लगे। झिलमिल कहिये ज्योति स्वरूप परमात्मा ताका झगरा वेद, वेदके प्रमाण से संशारमें ब्रह्मादि ऋषी सब झूलने लगे कोई बाकी छूटा नहीं । ये अभिप्राय । अरे गोरखनाथ सरीखे ज्ञानी योगी जिनको एक इस ब्रह्मांडका गम था सो भी काल पुरमें अटके । कालपुर कहिये जगत सोई जगतमें अटके कछु पारख पदकी प्राप्ती भई नहीं । ताते चोर जो योगी भ्रमरगुफामें कालके डरके मारे छिपे परंतु काल कछु उनके परखनेमें आया नहीं, वो तो भ्रमरगुफामें गये परन्तु काल उनके सङ्गही रहा। अरे जाको उन ब्रह्म आत्मा निर्विकल्प ऐसा माना सोई उनका काल ब्रह्म बनके जगतरूप आपही बनके रहे । हे संतो काल कछु रूप नहीं भास अध्यास कल्पना मानंदी सोई जीवका काल । गोरख सरीखे बडे बडे कालपुरमें अटके अब बिना पारख कौन कहावैं साहू, तो पारख बिना सब चोर । क्योंकि तत्वन का अध्यास, तत्वनका भास, तत्वनका अनुमान, तत्वनकी बासना, तत्वनकी देह, तत्वनकी समाधी, ताको मेरी या मैं ऐसा मानै सो चोर । ये अर्थ ॥ ४२ ॥

साखी--गोरख रसिया योग के । मुये न जारी देह ॥
मास गली माटी मिली । कोरा मांजी देह ॥४३॥

टीका गुरुमुख--गोरख सरीखे योगके रसिया जिन संपूर्ण हठयोग राजयोगका रस लिया । त्रीहाट कुण्डली लंबिका तारक अमनस्क सांख्य आदि योग करके सिद्ध हुए औ चौरासी कल्प करके देह वज्र किया । मांस सब गलिके माटीमें मिलि गया औ हाड नाडी गुदा सब गलके एक हो जम गया औ हीरा ऐसी देह चमकने लगी । ऐसी साधना किया कि न देह कधी जरै न गलै ऐसा योगका रस लिया औ सिद्ध भये परन्तु पारख बिना वो भी नाश भये धोखेमें परे । ये अर्थ ॥ ४३ ॥

साखी—बनते भागि बेहडे परा। करहा अपनी बान॥
बेदन करहा कासो कहै। को करहा को जान॥४४॥

टीका गुरुमुख— बन कहिये, बानी कहिये, संसार कहिये, करहा कहिये, खरहा कहिये, ससा कहिये, जीव कहिये, बेहडा कहिये, खांच कहिये, ब्रह्मरंध्र कहिये, भ्रमर गुफा कहिये। सो संसारी जीव संसारमें महा दुख जानके भेषमें आये बैरागी गुसांई भये तब वहां नाना बंधन नाना ब्यौहार में बंध भया। वहां गृहस्थनकी टहल करके पेट भरता था यहां भेष की टहल करके पेट भरने लगा। वहां पेट भरने निमित्त नाना उद्यम मनकी फीकिर यहां भीख मिलने को फीकिर, वहां घरकी फिकिर यहां मठकी फिकीर, वहां बेटी बेटा का मोह यहां चेली चेलाका मोह, वहां जगत विषय की उपाधी यहां भेष विषय की उपाधी तो जैसा ससा बनमें था तो मोकला था, बन सावजनके डरके मारे भागा सो बेहडे खांचमें परा अब खांचमेंसे तो कहूं निकर सकता नहीं तो बंध में कैद हुवा। औ वहां बहुत दुख मालूम होने लगा तो वो ससा अपना दुख कासों कहै औ उसके दुखको कौन जानता है। अगर बाहर के ससनसे उनने अपना दुख कहा तो दुख कछु छूटता नहीं और अहमकता अज्ञानता ठहरती है ताते ससा अपने मनही में सुसुकि सुसुकि भरता है। तद्वत संसारी जीव काम क्रोध लोभ मोहादि सावजन के डरके मारे भेषमें आये औ जात वर्ण सब छोडा औ भेष सोई बडी खांच तामें परा। पर काम क्रोध लोभ मोहादि सावज कछु छूटे नहीं ताते दूना दुख प्राप्त भया पर अपनी बेदना अब कासो कहै। औ कहे से दुख छूटता नहीं औ अहमका ताई पल्लेमें आती है लोकहँसी होती है। ताते शरमा शर्मी पचि पचि मरते हैं औ सच्चा निर्णय चित्तमें नहीं धरते। अब उनको जो दुख होता है सो किसी से कहते तो हैं नहीं औ उनकी तपस्या का

दुख कौन जाने । अरे भेष सब तीर्थाटन करते हैं औ पंचाग्नी तापते हैं, शीत समय जलशयन करते हैं । कोई धूम्रपान करते हैं कोई अन्नत्याग करके दूध अहारी, फल अहारी, कंद अहारी, दूब अहारी पत्र अहारी, ऐसा कर्म करते हैं बानीके खांचमें परके, उनके सो उनका दुख कौन जानै वही जानै । जो दुसरे से कहै तो अपने कर्त्तव्य की हँसी अप्रतिष्ठा होती है ताते कोई कोई बानी के बनते भागे औ योग खांच में परे औ बंध भये। सिद्धि पैदा करके जगत में अपनी प्रतिष्ठा बढाई पर भीतर की भ्रांती दुगदुगी कछु छूटी नहीं सो वो अपनी भ्रांती दूसरेसे कहते नहीं कि अपनी प्रतिष्ठा हलकी हो जायगी औ उनका भ्रांति कौन जाने पारख बिना । भला बनमें जो सब सावजनसे बचके रहते तो खांचमें गिरनेका क्या काम है औ खांचमें गिरे तो क्या सब सावज से बचतेहैं खांचमें जानेको सावजन की क्या मुशकिल है खांच तो सावजनका घरही है । भला जंगलमें तो भी भागनेको जगा थी औ बेहडेमें तो सहजही घर खाया काम क्रोध लोभ मोहादिक सावजने । ये अभिप्राय । औ करहा कहिये हाथीको सो केहरी सिंघ आदिकके भयसे जायके कंदरामें पडा सो वहांहीपकड के सिंघ खा गया । तद्वत विषयनके डरके मारे योगी लोग भ्रमरगुफा में छिपे तो वहांही महा आनंद सिंह खाय गया । अब ये योगी अपना भेद कासो कहैं इनको कछु सूझता नहीं औ इनको कौन जानता है जो मिथ्या भ्रममें पडेहै । ये अर्थ ॥ ४४ ॥

साखी—बहुत दिवसते हींडिया । शून्य समाधि लगाय ॥
करहा पडा गाड में । दूरि परा पछिताय ॥ ४५ ॥

टीका गुरुमुख—बहुत दिनसे चौरासीमें फिरे फिर चौरासीका दुख मालूम भया तब योगी लोगोंके शरण में जायके ब्रह्म प्राप्तीके

वास्ते समाधी लगाई औ शून्यरूपी हो रहे । अपने मनमें तो ऐसा जाना कि हम ब्रह्मरूप में मिल रहे आवागवन से रहित भये । परंतु जब चोला छूटेगा तब बहुत मनमें पछितायेंगे । क्योंकि ब्रह्मांड फूट जायगा, समाधी उड जायगी औ ब्रह्म अनुभव कछु रहने का नहीं, तो फिर चौरासी में जायेंगे फिर पछितायेंगे । जैसा हाथी खांच में गिरा फिर बाहर तो निकर सकता नहीं औ बनकी याद करके पछिताता है कि जो बनमें से और कहीं भागता तो भला होता अब कहां गाड में आय परे, तद्वत अध्यास वश जीव गर्भबास में जाता है । और गर्भबासमें देह साबूत होती है तब गर्भ का दुख मालूम होता है, जठराग्नीका तडाका लगता है औ रक्त मांस मूत्रमें गजबजाता है, दुर्गंध विशाल उठतीहै। तब पिछले जन्मकी याद होती है कि मैं कहां था औ कहां आय के फँसा । जो वहीं से कहूं भाग जाता तो अच्छा था ऐसा दूर परा पछिताता है। परंतु क्या करे बेवश कहू निकरने सक्का नहीं। ये अर्थ ॥ ४५ ॥

साखी—कबीर भर्म न भाजिया । बहुविधि धरिया भेष ॥
साईं के परचावते । अंतर रहिगइ रेष ॥ ४६ ॥

टीका गुरुमुख—कबीर कहिये कायाबीर, कायाबीर कहिये जीव, सो हे जीव तूने नाना तरह का भेष धारण किया औ नाना क्रिया औ नाना योग औ नाना उपासना औ वेदांत आदिक बहुत विचार किया परंतु भ्रम न भागा अरे तू भ्रमरूपी हो रहा है । सोई कोई ब्रह्म है ऐसा एक भ्रम हुवा सो उस का परचाव नाम परिचय करा । कहीं सविकल्प, कहीं निर्विकल्प, कहीं जैसा का तैसा, कहीं दूसरा संकल्प, कहीं अहं देह औ कर्तूत, ऐसा सांई ब्रह्म का परिचय किया, सोई अंतर में सब भ्रम का बीज रह गया ।

सो केवल ब्रह्म अध्यास मात्र अध्यास सब मिटै तब यथार्थ पारख की प्राप्ती होय । ये अर्थ ॥ ४६ ॥

साखी--बिनु डांडे जग डांडिया । सोरठ परिया डांड़॥
बाटनि हारे लोभिया । गुरते मीठी खांड ॥ ४७ ॥

टीका गुरुमुख—बिनु डँाडे जग डांडिया कहिये जो किसीने जबरदस्ती जगत को डाँड तो किया नहीं औ जगत को डांड तो होगया है तो कैसे हुवा सो सुनो । सोरठ परिया डांड । सोरठ अंगरेजी में जूवे को कहते हैं । जो किसी माल के ऊपर बाटनी करके चिट्ठी डारते हैं फिर जाके नामकी चिट्ठी निकरै सो सोरठ जूवा जीतै औ जाके नाम की चिट्ठी न निकरै सो बांटनीभी हारा औ सोरठ भी गई। तद्वत इस जगत में धर्म अर्थ काम मोक्ष ये चार पदार्थपर सोरठ परी, कि भाई जाको चार पदार्थ चाहिये ताने यथानुशक्ती कर्मयोग उपासना करना औ नरजन्म बांटनी में लगाना । फिर जाका कर्म उदय होवेगा ताको ज्ञान ते अद्वैत मोक्ष मिलेगा । ऐसा मनसुवा वेदने बताया तब संसारमें लोभ बढा औ सबने सोरठ डारी । सो लोभके मारे सब जीव सोरठ हार गये नरजन्म हार गये तब चौरासी भोगना ये डांड परा । सो किसीने इनको डांडा नहीं अपने खुशीसे लोभ में आय के डांड देना परा । ये अभिप्राय । बाटनी नर जन्म लोभिया जीवनेहारा क्योंकि गुरते मीठी खांड । गुर कहिये जीव को औ खांड कहिये ब्रह्म को,सो जीव से ब्रह्म बडा है ऐसा अनुमान जगत में खडा भया। क्योंकि जीव मैला अविद्या वेष्टित औ माया के वश, औ ब्रह्म शुद्ध सर्वाधिष्ठान मायाधीश ऐसा अनुमान जगत में खडा भया । तब जीव को लोभ लगा औ लोभिया बनके बाटनी नरजन्म हार गया।या गुर कहिये जगतसुख सो अनित्य नाशमान जान के औ खांड कहिये

ब्रह्मसुख नित्य अविनाशी ऐसा जानके लोभिया चाटनी हार गये । ये अर्थ ॥ ४७ ॥

साखी—मलयागिर के बासमें । वृक्ष रहा सब गोय ॥
कहवे को चन्दन भया । मलयागिर ना होय ॥ ४८ ॥

टीका गुरुमुख—मलयागिर कहिये हंसको ता हंसका बास कहिये ब्रह्म, सो ब्रह्ममें संसार सब गोय रहा मिल रहा । तो कहने मात्र ब्रह्म बना जीव परंतु कछु हंस न बना । बास छोड जो गिरिको वृक्ष पहुंचे सो सुवासके मारे गलि जाय औ मलयागिरिही हो जाय । परंतु बासही में वृक्ष गोय रहता है ताते मलयागिर नहीं होता वृक्षका वृक्षही रहता है तद्वत ये जीव हंसपदको नहीं पहुंचता ब्रह्मानंद निर्विकल्प ताहीमें रहि जाताहै ताते कहबेमात्र ब्रह्म बनताहै । जो सत्य विचारादि भूमिका पर ठहरे तो ब्रह्म जगत धोखा गलि जाय औ यथार्थ हंसही जीव हो जाय । मलयागिर जीव वृक्ष देह, सो अनेक देह जीवकी बास चैतन्यता तामें मिल रही है । ताते देह भी चैतन्य सरीखी मालूम होतीहै परंतु देह कछु चैतन्य होती नहीं । ताते देह भिन्न औ चैतन्य भिन्न ऐसा पारखके जानके पारख पर रहना । ये अभिप्राय ॥ ४८ ॥

साखी—मलयागिर की बासमें । बेधा ढाक पलास ॥
बेना कबहूँ बेधिया । युग युग रहिया पास ॥ ४९ ॥

टीका गुरुमुख—मलयागिर कहिये हंसपदकी भूमिका, सो जो निराभिमानी जीव पक्ष छोडके सतसंग किया सो जीव ब्रह्मको बेध के पार हुये पक्के तत्वको प्राप्त भये हंस हुये । औ पक्ष अभिमानी जीव सो युग युग सतसंगके पास रहै तोभी ब्रह्मपदको बेधि नहीं सकते

बे पारखी अरे कच्ची देहमेंही पक्के तत्व हैं परंतु ब्रह्म अभिमानी, आत्म अभिमानी, देह अभिमानी कर्म अभिमानी बानीके अभिमानी देवता के अभिमानी ये अपना अपना पक्ष करके बाद करतेहैं औ पोल बांसके माफिक रहतेहैं ये ब्रह्मपदको बेधके पक्के तत्वनको नहीं पावते । औ निरपक्ष निराभिमानी जीव ढाक पलासके माफिक गरीब कंगाल कुल हीन वर्णहीन आश्रमहीन ते सब विचार करके हंस होतेहैं पक्की भूमिका-को पायके सबको परखके ब्रह्मपद बेधके न्यारे होतेहैं । ये अर्थ॥ ४९

साखी--चलते चलते पगु थका । नग्र रहा नौ कोस ॥
बीचही में डेरा परा । कहहु कौनको दोस ॥५०॥

टीका गुरुमुख--गुरु कहतेहैं कि, जब मायाने तीर्थ व्रत क्षेत्रा-दिक का महात्म बताया तब जीव सब वानप्रस्थ तीर्थबासी होके चले । तो चलते चलते तीर्थ करते करते पांव थक गये तब बाकी तीर्थनकी औ स्वर्गादिकनकी बासना रही औ वृद्ध भये पांव थके । तब एक जगह कहूं तीर्थ धाममें परे औ चोला भी छूट गया तब बासनारूपी नौ तत्वका चोला जीवको बना सोई नौ कोस कहिये । चित्त मन बुद्धी अंहकार शब्द स्पर्श रूप रस गंध । ये नौ कोशकी देह जीवको प्राप्त भई तब भूत होके पछिताने लगा औ स्वर्गभी दूर रहा औ गुसैयांभी दूर रहा । ऐसी बासनासे बीचही में डेरा पडा भूत योनिनमें; अब कहो यामें किसको दोष देवोगे वहां तुम्हारे सङ्ग कोई नहीं । अरे तेरी कल्पनाकी तूही खोजने लगा औ नाना बेद शास्त्र सब बनाये।आखिर जहांलों लक्ष चला तहांलों शब्द कहा औ जहांलों शब्द चला तहांलों लक्ष चला जब लक्ष थका तब शब्दभी रहिगया फिर नेतिनेति कहिके बीचहीमें डेरा परा पारख

स्थितिको प्राप्त न भया। तो फिर गर्भबास में आया काहेते कि पारख नौ कोस के पार है। नौ कोसकहिये अन्नमय शब्दमय प्राणमय आनंदमय मनोमय प्रकाशमय ज्ञानमय आकाशमय विज्ञानमय ये नौ कोश। अन्नसे उत्पन्न होय औ अन्नमें आसक्त होय सो अन्नमय १। शब्द से उत्पन्न होय औ शब्दमें आसक्त होय सो शब्दमय २। प्राण से उत्पन्न होय औ प्राण में आसक्त होय सो प्राणमय ३। आनंद से उत्पन्न होय औ आनंद में आसक्त होय सो आनंदमय ४। मनसे उत्पन्न होय औ मनमें आसक्त होय सो मनोमय ५। तेज से प्रकाशसे उत्पन्नहोय औ प्रकाश में आसक्त होय सो प्रकाशमय ६। ज्ञान से उत्पन्न औ ज्ञानमें आसक्त होय सो ज्ञानमय ७। आकाश से उत्पन्न होय औ आकाशमें मिल रहै सो आकाशमय ८। विज्ञानसे उत्पन्न होय औ विज्ञान में मिल रहै सो विज्ञानमय ९। ये नौ कोसते पार पारख पद सो खोजते खोजते नौ कोस में रहि गये ताते नर्थ कहिये चोला सो छूटे उपरांत फिर गर्भबास पाये। अब कहो किसे दोष देवोगे, अरे जिसे दोष देना चाहोगे सो तो सब तुम्हारी कल्पना। सो नौ कोस यथार्थ परखने में आवै औ छूटै तब पारख पदकी प्राप्ती होय। ये अभिप्राय। अन्नमय प्राणमयकी संधी शब्दमय कोश प्राणमय मनोमय की संधी आनंदमय कोश मनोमय ज्ञानमयकी संधी प्रकाशमय कोश ज्ञानमय विज्ञानमयकी संधी आकाशमय कोश। अन्नमय की देही स्थूल शब्दमयकी देही बिराट, प्राणमयकी देही सूक्ष्म, आनंदमय की देही हिरण्यगर्भ, मनोमय की देही कारण, प्रकाशमय की देही अव्याकृत, ज्ञानमयकी देही महाकारण, आकाशमय की देही मूल प्रकृती, विज्ञानमयेकी दही कैवल्य ब्रह्म। ये अभिप्राय। अन्नमय कोश स्थूल देह, अवस्था जागृती, क्षिप्रा भूमिका, पपीलमार्ग, तत्व पृथिवी रजोगुण, मुद्रा खेचरी, त्रिकुटी स्थान जठराग्नी, घटाकाश, अपान

वायु, काम जल, प्रध्वंसा भाव ॥ १ ॥ शब्दमय कोश, विराट देह अवस्था सांगसंधी तत्व महद पृथीवी, गुण ब्रह्मा, मुद्रा सन्मुखी-कंठस्थान बुद्धि भूमिका, नरमार्ग, महदग्नी, घटजल प्रतिबिंबाकाश, किंकिरादि महद बायू, सतलोक स्थान, महा प्रध्वंसा भाव, महाजल देह छोड के बाहर योगी दूसरी देह धारण करते हैं सो शब्दमय कोश ॥ २ ॥ प्राणमय कोश सूक्ष्म देह श्रीहटस्थान स्वप्न अवस्था, सूक्ष्म जल तत्व, मुद्रा भूचरी, कामाग्नी, मठाकाश, उदान बायू, गतागत भूमिका, प्राज्ञ भाव, बिहंगम मार्ग, लिंग देह ॥३॥ आनंदमय कोश हिरण्यगर्भ देह, गोल्हाट स्थान, विष्णू लोक ,मन भूमिका,निशा अवस्था, स्वप्नसुषोप्ती संधी,योगाग्नी, रेचक वायू, जल मार्ग, विशिष्टाद्वैत भाव,चाचरी मुद्रा, विष्णु गुण,अभ्राकाश ॥४॥ मनोमय कोश कारण देह, हृदय स्थान, सुषोप्ती अवस्था सौलेष्टता भूमिका, मंदाग्नी, महदाकाश, अनन्य भाव, कपिल मार्ग, मुद्रा उन्मीलनी, अग्नी तत्व ,तमोगुण बायू ॥ ५ ॥ प्रकाशमय कोश अब्याकृत देह, अहुठ पीर स्थान शिव लोक, शिवगुण, चित्त भूमिका प्रातःसंधी अवस्था, ज्ञानाग्नी, अहंभाव,पूरक बायू, सूर्य मार्ग, शांभवी मुद्रा, चिद्चिद् विशिष्टाकाश, अणिमादि अष्ट सिद्धनका रूप ॥ ६॥ ज्ञानमय कोश महाकारण देह ,नाभीस्थान ,शुद्ध सतोगुण,तुर्या अवस्था, सुलीन भूमिका, अत्यंताभाव, बडवाग्नी, समान वायु, मीन मार्ग,अगोचरी मुद्रा, चिदाकाश, सविकल्प समाधी ॥ ७ ॥ अकाशमय कोश, मूल प्रकृती देह, पुण्यगिरी स्थान, निराश्रय लोक, ईश्वर गुण ,अहं भूमिका ,मध्याह्न अवस्था,कुंभक बायू ,बायू मार्ग, आत्मभावनी मुद्रा, आनंदाकाश,निज भाव,भ्रमरगुफा, तुर्याकी संधी ॥ ८ ॥ बिज्ञानमय कोश-कैवल्य, देह भ्रमरगुफा, स्थान, तुर्यातीत अवस्था, अंतःकरण भूमिका, सर्वाधिष्ठान, कलातीत,कला, भावातीत

भाव, पूर्णबोधनी मुद्रा, निजाश्री, निजाकाश, स्फुर्ति वायु जैसेका तैसा आत्मा गुण, निर्गुण ब्रह्म ॥ ९ ॥ इस प्रकार नौ कोश सूक्ष्म भावसे वर्णन भये। कहते हैं कि जहां नौ कोश पंच कोश आचार्यने वर्णन किया है तहां बहुत बिस्तार किया है वह बिस्तार सब यहां लावना तो नाहक टीका बहुत बढेगी ताते सूचनार्थ लाया।कि चलते चलते, खोजते खोजते, बिचार करते करते, देखते देखते लक्ष औ पगु थकि गया। परंतु या नौकोश लांघि के कोई पार पाया नहीं ताते चोला छूटा औ गर्भबास के बीचहीमें डेरा परा अब दोष किसे देवोगे। अपनी गाफिली में आपही पडा औ अपनी भूलने अपने को खाया ताते नौ कोश के पार पारख पद। सो पारख पद की प्राप्ती होय औ नौ कोश मिथ्या भास सब छूटै तब जीव रहित हो। ये अर्थ ॥ ५० ॥

साखी--झालि परे दिन आथये। अंतर परगई सांझ ॥
बहुत रसिकके लागते। बिश्वा रहिगई बांझ॥५१॥

टीका गुरुमुख—बुढापा आया प्रपंच करते करते औ विषय रस लेते लेते औ बेद शास्त्र पुराण नाना बानी पढते पढते औ कर्म उपासना तपस्या योग बैराग करते करते थके आखिर गुरुपद पारख की प्राप्ती भई नहीं। एक दिन मौत आन पहुँची सो आंखिन परी झाली परी अंधेरी परी। औ दिन कहिये ज्ञान सो गाफिली में डूब गया। अंतरकी इंद्री चित्त मन बुद्धी अंहकारादि इनमें अंधेरा परा।अब बुद्धी कहीं निश्चय कर सक्की नहीं औ चित्त कहीं चल सक्का नहीं, मन में कछु दृढत्व आता नहीं, अहंकारका उपाय थका, अब कछु पारख की प्राप्ती होने माफिक अवस्था रही नहीं।काहेते कि बहुत रसिक गुरुवालोग इनकी संगत में लगेते बिस्वा कहिये बिस्वासी जीव बांझ

रहि गये कछु फल प्राप्त न भया औ एक दिन मर गये तब चौरासी को प्राप्त भये । ये अर्थ ॥ ५१ ॥

साखी–मन कहै कब जाइये । चित्त कहै कब जाव ॥
छौ मास के हींडते । आध कोस पर गांव ॥५२॥

टीका गुरुमुख–अब गुरुवालोगों की बातें सुन सुन जीवको अनुराग हुवा तब मनमें नाना संकल्प उठने लगे कि किस वख्त स्वर्गादिककी प्राप्ती होय औ कब ब्रह्मांडका सुख मिले । ताते मन कहै कब जाइये । अब चित्त अनुसंधान बांधने लगा छौ शास्त्रकी बानी देखने लगा।तब सोधने लगा कि अर्धमात्रा सोई आधाकोस तामें जीव की स्थिति है ज्ञान भया तो कैवल्य की प्राप्ती होती है। ये अर्थ ॥५२॥

साखी–गृह तजिके उदासी । बनखंड तपको जाय ॥
चोली थाकी मारिया । बेरई चुनि चुनि खाय॥५३॥

टीका गुरुमुख–जब अर्धमात्रा में जीव की स्थिति है ऐसा मालूम हुवा तब घर छोडके उदासी भये । गृहस्थाश्रम से उदास भये औ त्याग करके बन में तपस्या करने लगे तब भूख के मारे प्राण बिकल होने लगा औ हाथ पांव की शक्ती घट गई चोला थका । तब जंगल की बेरई चुनि चुनि खाने लगे । कंद मूल फल फूल पत्र चुनि चुनि खाने लगे । ये अर्थ । अब माया उपदेश करती है जीव को कि महा तपस्या करके चोले को जराना ॥ ५३ ॥

साखी–राम नाम जिन चीन्हिया । झीना पिंजर तासु ॥
नैन न आवै नींदरी । अंग न जामै मासु ॥ ५४॥

टीका मायामुख–अरे जाने राम नाम चीन्हा ताकी गती ऐसी होना कि शरीर तो दुर्बल होना औ मारे बिरह के आंख में नींद न आवना, सदा सर्व काल लौ परमात्मा में लगी रहै । जैसी तरुण स्त्री

है ताका पिया परदेश गयाहै सो कामकी ज्वाला शरीरमें उठती है औ आठों पहर पियाकी याद आती है। औ तापर सङ्गकी सखी तब शृङ्गार की बानी सुनाती हैं, नाना प्रकार क्रीडारस वर्णन करती हैं सो सुनि सुनिके विशेष विरह बढता है। औ आँखिनमें आंसू चलती हैं, मुँह पर पीरी छाय रही है, सेजपर नींद नहीं आती, भोजन भूषण वस्त्रादि कुछ सोहाते नहीं।तद्वत जाका प्रेम परमात्मामें लगा है ताको परमात्मा मिलनेके कामकी ज्वाला बारम्बार अंतःकरणसे उठाना औ जगतके विषय अग्नीके मालिक मालूम होना। सदा संसार औ विषय भोगका तिरस्कार मनमें लाते रहना औ विरह वैराग्य प्रेम लक्षण बानी सुनते रहना औ वही बानी मनन करके प्रेम लक्षणाका निदिध्यास करना प्रेम लक्षणा वर्णन मुँहपर छाय रही, पीरी श्वास आती है। श्री त्यागी उजीरी अमीरी बेफिकिरी फिकिर नामकी ।

कवित्त--छिन छिन भरे नैना नीर मनुवा धरे नहीं धीर, कबधौं मिलै प्रीतम पीर शुष्क शरीर डोलत हैं ॥ छिनमें हँसे छिनमें रोय छिनमें रहे मौनी होय, छिनमें उमगिके नाचै गावै छिनहीमें पछतावै॥ मद्यपीछके जैसे मतवारे न कबहुँ देह संभारे, ऐसी प्रेमकी है रीत ताको मिलै प्रीतम प्रीत ॥ ५४ ॥

साखी--जो जन भीजे रामरस। बिगसित कबहुं न रूख ॥
अनुभव भाव न दरसै । ते नर सुख न दूख ॥५५॥

टीका मायामुख--राम रस कहिये प्रेमरस, सो जो जन प्रेमरसमें भीजि रहे हैं सो सदा उदास रहतेहैं प्रफुल्लि त कबहूं होते नहीं अनुभव उनकी भावनाका रूप उनको सदा दर्शाता है ताते उनको जगतका कछु सुख दुख मालूम होता नहीं। जैसा मद्यपी मद्यपान करके समस्त

बेफहम हो जाता है फिर उनपर चाहे कोई फूल डारो, चाहे विष्ठा डारो, चाहे निंदा करो, चाहे पांवन परो, वह कछु समझते नहीं । तद्वत प्रेममें गरकाफ भये । ये अर्थ ॥ ५५ ॥

साखी–काटे आम न मौरसी । थाटे जुटे न कान ॥
गोरख पारस परसे बिना । कौनेको नुकसान॥५६॥

टीका गुरुमुख--जैसा आमका वृक्ष काटे पर बौरता नहीं तैसा ब्रह्म अनुमानका वृक्ष परखके काट डारा फिर कधी जुटता नहीं । औ जैसा कान फाटा फिर कधी जुटता नहीं तैसा जीव ब्रह्म अध्यास परखके न्यारा हुवा फिर कधी ब्रह्म अध्यास या जगतमें मिल सकता नहीं । ताते जगत ब्रह्म दोऊ धोखा परखके पारखरूप हो रहना । नहीं तो हे गोरख योगी, पारख कहिये जीव औ लोहा कहिये देह, तो जो देह जीवका स्पर्श न करे तो देहका नुकशान है जीवका क्या नुकसान है । तैसा ये जीव पारखका स्पर्श न करे तो पारखका कछु नुकसान नहीं जीवहीका नुकसान है ताते हे गोरखनाथ हठयोग राजयोगादि अध्यासका पक्ष छोडके सब धोखा परख ले नहीं तो धोखेमें बन्ध होके नाहक मानुष तन खोवेगा औ फिर आवागवनमें परेगा तो फिर किसका नुकसान होयगा । देख हमने तो जीव दया जानके बहुत कहा फिर तुम्हारी मर्जी। ये अभिप्राय ॥ ५६ ॥

साखी--पारस रूपी जीव है । लोह रूप संसार ॥
पारसते पारस भया । परख भया टकसार॥ ५७ ॥

टीका गुरुमुख–पारस चैतन्य रूप जीव है, पारस कहिये ज्ञान सो ज्ञानरूपी जीव है । लोहा जड पांच तत्व अचेतरूपी संसार येही जमा इसपर और कोई मालिक नहीं । ये अभिप्राय ।

तो ये अनेक जीव बिना मालिक पैदा कहां से भये । ये शंका । पारस से पारख भया, अरे ये जीव चतन्य अचेत जड तत्वनमें मिला औ अपनी हंस देह भूला ताते आपही अचेत अजान होके इच्छा किया औ दूसरा नारी स्वरूप बनाया औ ता नारी के वश भया । फिर तैजस अभिमान युत कल्पि कल्पि नाना रूप बनाया औ एकही जीव सब में समाया । तैसा पारसते में अनेक रूप बनाया औ सब में आप समाया । जैसे एक पारस भया। परंतु अब एक से अनेक हो गया ताते सामर्थ सब नाश भई तैजस अभिमान को विश्व अभिमान ने ढांका ताते जीव लाचार भया । अब इस ते कछु हो सकता नहीं ताते आवागवन जीवको सिद्ध भया । ये अभिप्राय । तो आवागवनसे रहित कैसा होय । ये शंका । पारख भया टकसार । टकसार कहिये, बीजक कहिये, जासे सांचा झूठा, भास अध्यास अनुमान, आरंभ परिणाम सब की कसर परखने में आवै ताको टक- सार कहिये । ताते पारस पारख भया बिना पारख और खराब हुवा बहुत दुख पाया । फिर जब गुरु की टकसार सतसंग में आया तब सब कसर धोखा बंधन परखके पारस भूमिका पर पारखरूपी जीव बना तब आवागवन से रहित हुवा । ये अर्थ ॥ ५७ ॥

साखी--प्रेम पाट का चोलना । पहिर कबीरू नाच ॥
पानिप दीन्हो तासुको । जो तन मन बोलै सांच॥५८॥

टीका मायामुख--प्रेमपाट कहिये प्रेम लक्षणा बानी, चोलना कहिये देह, कबीर कहिये कायाबीर जीव, सो माया जीवको उपदेश करती है कि प्रेम लक्षणा चोलना बनाना । और प्रेम लक्षणा बानी का नित अध्यास करना, प्रेम लक्षणा बानी को गाना, प्रेम लक्षणा

बानी पढना, वही सुनना, वही गुनना, जामें चोला सब प्रेमरूपी हो जाय । फिर हे जीव वही चोला पहिर के प्रेम में मगन होके नाचना तो भगवान सदा उनके संग रहेंगे औ अंत में भगवान उस को अपने रूप में मिला लेवेंगे। पानिप दीन्हो तासु को, जो तन मन बोले सांच। अरे ये प्रेम लक्षणा बानी दश विधा भक्ती भगवान ने उसे दी जो तन मन से एक भगवान पुरुष सांच और सकल जीव नारी मिथ्या ऐसा भाव जहां आया निश्चय हुवा; तहां कृपा करके अपनी प्रेम लक्षणा दी गोपिकादिकन को। ये अर्थ ॥ ५८ ॥

साखी--दर्पण केरी गुफामें । स्वनहा पैठा धाय ॥
देखी प्रतिमा आपनी । भूकि भूकि मरि जाय॥५९॥

टीका गुरुमुख--दर्पन की गुफा कहिये प्रेम लक्षणा बानी औ स्वनहा कहिये मन, सो सब भक्तन का मन प्रेम लक्षणा बानी का दृढापन सुनि के प्रेम लक्षणा में पैठा तब प्रेम की मूरत अपनी खडी भई तब उस को देख देख के अधिक प्रेम बढ़ाने लगे औ उस धोखेके पीछे पुकार पुकार के मरे। कुछ पारख स्थितिको प्राप्त भये नहीं तो देह छूटै प्रेम प्रतिमादि संपदा नाश भई औ चौरासी के चक्र में परे। ये अर्थ ॥ ५९ ॥

साखी--ज्यों दर्पण प्रतिबिंब देखिये। आपु दुहुनमा सोय॥
या तत्त से वह तत्त है। याही से वह होय॥६०॥

टीका गुरुमुख--जैसा दर्पण में मुँह देखना तो दूसरा मुख नजर आता है पर जो ये मुंह न हो तो दूसरा मुख कहांसे नजर आवै। तो ये देखनेवाला सत्य औ देखा सो मिथ्या । अंतःकरण पंचग सो दर्पण, देखनेवाला जीव, प्रतिबिंब ब्रह्म आत्मा ईश्वर कर्ता औ पंचतत्वादि जगत । अथवा दर्पण देह औ देखनेवाला जीव, प्रतिबिंब

संपूर्ण योग सिद्धांत अथवा दर्पण बानी औ देखनेवाला जीव, प्रति-बिंब नाना अर्थ भास अध्यासादि । तो येही जीवसे ब्रह्म जगत आत्मादि संपूर्ण कल्पना खडी भई । ये अभिप्राय ॥ ६० ॥

साखी–जोबन सायर मुझते । रसिया लाल कराय ॥
अब कबीर पांजी परे । पंथी आवहि जाय ॥६१॥

टीका गुरुमुख–बन कहिये बानी, सायर कहिये समुद्र मुझते कहिये खोजते, रसिया कहिये ब्रह्मा विष्णू महेशादि नानाऋषी तिन अति प्रीती करके खोजा जो बानीका समुद्र, वेद । तामेंसे पांच रस्ता निकारे, कर्ममार्ग उपासनामार्ग योगमार्ग प्रेममार्ग ज्ञानमार्ग तामें जीव परे औ एक एक पंथका पक्ष पकड के पंथी बने ताते आने जाने लगे पिंडसे ब्रह्मांड ब्रह्मांडसे पिंड, जगत से ब्रह्म, ब्रह्म से जगत, स्वर्ग से नर्क नर्क से स्वर्ग, देवलोकसे मृतुलोक मृतुलोक से देवलोक, गर्भवास से बाहर औ बाहरसे गर्भवास में आने जाने लगे । ये अर्थ । कबीर कहिये जीव, औ पांजी कहिये मार्ग, लाल रसिया त्रिदेवादी महामुनी, तिन जगत में नाना मार्ग कराय सोई मार्ग में जीव परे सो आते जाते हैं । ये अर्थ । बिरह अर्थ–जोवन सायर मुझते । जोवन कहिये ज्वानीका समुद्र, ज्वानीका समुद्र स्त्री, ताने ब्रह्मा विष्णु आदि रसिया लोगों को मोहित किया औ भगचक्र में सबको समेट के डारा । वही रशिया लालन ने सबको विषय कराया, महाऋषिन को अपनी कन्या पैदा करके दई सोई शादी विवाह करके अब जीव सब विषय मार्ग में पडे हैं सो भगपंथी भगमेंसे आते हैं औ भगही में जाते हैं । ये अर्थ ॥ ६१ ॥

साखी–दोहरा तो नौ तन भया । पदहि न चीन्है कोय ॥
जिन्ह यह शब्द विवेकिया । छत्र धनी है सोय ॥६२॥

टीका गुरुमुखे--अरे ये स्त्री पुरुष दोहरा दो तन तो नये पैदा भये । परंतु जा हंस के पाससे ये दोनों स्त्री पुरुष के तन पैदा भये सो हंस पदको कोई चीन्हता नहीं सब भूल में परे । कोई ब्रह्म कोई आत्मा कोई दास कहलाता है । पर जहांसे ये बानी वेद खडे भये औ ब्रह्म आत्मा सिद्धांतनको जाने माना सो जीव को कोई चीन्हता नहीं, तो कैसे छत्र धनी जाना जाय। ये शंका। भाइ जिनने संपूर्ण वेदादिक शब्द का विवेक किया औ सब सिद्धांत माना है सोई छत्रधनी जीव । ये अर्थ । जो शब्दका विवेकी सोई शब्द का मालिक । ये अर्थ ॥ ६२ ॥

साखी—कबीर जात पुकारिया । चढि चंदन की डार॥
बात लगाये ना लगे । पुनि का लेत हमार ॥६३॥

टीका गुरुमुख—गुरु माया का अभिप्राय कहते हैं कि चंदन कहिये जीव, चंदन की डार कहिये ब्रह्म, सो ब्रह्मज्ञान पर चढ के कबीर गुरुवा लोग पुकारते हैं, जात कहिये ब्रह्मका सिद्धांत सोई जीव सब भ्रमचक्रमें पडे केतिक जगत ब्रह्म बने तो इनकी स्थिति कैसे होय । औ स्थिति की बाट मैं लगाता हौं तो ये जीव कोई लगते नहीं फिर हमारा क्या लेवेंगे आपी ये खराब होवेंगे । ये अर्थ ॥ ६३ ॥

साखी—सबही ते सांचा भला । जो सांचा दिल होय॥
सांच बिना सुख नाहिना । कोटि करे जो कोय६४

टीका गुरुमुख—गुरू कहते हैं कि सब ब्रह्म जगत ईश्वरादि सिद्धां-तनसे जीव ये सांचा सिद्धांत और सब झूठा । परंतु जब सांच पारख जीव को प्राप्त होय तब । नहीं तो एक पारख बिना कोटि सिद्धांत, कोटि तपस्या, कोटि योग कोई करे परंतु जीव को सुख नहीं । एक पारख बिना सकल सिद्धांत दुखरूपी । ये अभिप्राय॥ ६४ ॥

साखी—सांचा सौदा कीजिये । अपने मनमें जान ॥
सांचा हीरा पाइये । झूठे मूलहु हान ॥ ६५ ॥

टीका गुरुमुख—ताते हे संतो सांचा विचार करके सांची स्थिति ग्रहण करना । अपने मनमें जानके सत्य विचार का सौदा करना ताते सांचा हीरा सांचा पद मिलता है । अगर अपने मनमें विचार न किया तो गाफिली में गुरुवा लोगन का उपदेश ग्रहण किया ताते मूल जीव ताकी भी हानी होती है, नहीं सो धोखा मानंदी हो जाता है औ जीव का स्वतःभाव भी नाश होता है । ताते सतसङ्ग में जाय के सांचा सौदा सार शब्दका बिचार करना औ जैसा सार शब्द कहता है तैसा अपने भी मानुष देहमें जानना। यथार्थ पारखकी प्राप्ती बिना जीवकी हानी होती है । ये अभिप्राय ॥ ६५ ॥

साखी—सुकृत बचन माने नहीं । आपु न करे बिचार ॥
कहहिं कबीर पुकारके । सपनेहु गया संसार ॥६६॥

टीका गुरुमुख—सुकृत कहिये संत, सो जगत संतन का वचन तो मानता नहीं सदा सर्वकाल राग दंभ में गाफिल होरहा है औ आप विचार करता नहीं । ताते गुरू कहते हैं कि वेद बानीके भरोसे मिथ्या खाविंद को पुकार पुकार के स्वप्नवत् संसार गया कुछ फहम रही नहीं मानुष तन स्वप्नसा जाता रहा । औ सुकृत कहिये निर्णय वचन । ये अर्थ ॥ ६६ ॥

साखी—आगि जो लगी समुद्रमें। धुवां न परगट होय ॥
की जानै जो जरी मुवा । कि जाकी लाई होय॥६७

टीका गुरुमुख—समुद्र कहिये संसार जगत तामें बिरह अग्नी ब्रह्म अग्नी लगी सो धुवां तो कहूं प्रगट होता नहीं औ जीव सब जर रहे हैं तो इनके दुखको कौन जानै । सोई इन का अनुभव जानै कि

जो विरह अग्नी में जरके मर गया अथवा ब्रह्म अग्नीमें जरके निरांत शांत हो गया सो जानै । नहीं तो जिन विरह लगाया औ ब्रह्म अग्नी चेताया सो गुरुवा लोग जानै औ बाहर कोई नहीं जानता । ये अभिप्राय । चिंता ज्वाला संसार में लगी है सो संसार में सब जरा जाता है चिंताका दुख सो जानै जो जो चिंताक्रांत है या जाने चिंता लगाई सो जानै । ये अर्थ ॥ ६७ ॥

साखी–लाई लावनहारकी । जाकी लाई पर जरे ॥
बलिहारी लावनहारकी । छप्पर बांचे घर जरे ।६८।

टीका जीवमुख–ये ब्रह्म अग्नी किन्हे लगाई कि जो आप पहिले ही जरके ब्रह्म रूप हो गये तिनने लगाई सनकादि व्यासादिक-नने । कि जाकी ब्रह्म अग्नी लगायेसे हमारे दोनों पर जर गये कर्म उपासना के औ सगुण निर्गुण दोनों पक्ष रहे नहीं, हमको ज्ञानकांड से संपूर्ण ब्रह्म अनुभव हुवा । ताते बलिहारी उन लावनहार की, जो हम पांच तत्व औ छठवां मन इनके ऊपर निर्विकल्प स्वरूप होके आवा-गवनसे बचे । ये अर्थ । इस जीव ने ब्रह्मज्ञानिन की प्रशंसा की जो आपको ब्रह्मज्ञान की प्राप्ती भई । इसवास्ते गुरु जीवमुख साखी का निराकरण करते हैं ॥ ६८ ॥

साखी– बुंद जो परा समुद्र में । सो जानत सब कोय ॥
समुद्र समाना बुन्दमें । सो जानै बिरला कोय॥६९॥

टीका गुरुमुख–बुंद कहिये ब्रह्मको, ब्रह्म कहिये धोखेको सो कोई एक ब्रह्म है ऐसा धोखा प्रथमारम्भमें जगत में परा । सो उस धोखेको अपने अनुमानसे मालिक करके सबकोई ने जाना । जगत कहिये समुद्र सो उस धोखेमें समाया अपने अनुमानसे औ बेद बानी के प्रमाण से, ताको कोई बिरला पारखी जानता है सो पारखी सब से न्यारा पारख भूमिका पर रहता है । ये अर्थ । अथवा समुद्र ब्रह्म औ बुंद

जीव सो जीव ब्रह्ममें परा अपने अनुमानसे ब्रह्मको अधिष्ठान बनाया सो सब वेद वेदांतने जाना । परंतु वही ब्रह्म जगतमें समाया औ नाना सुख दुख भोगताहै सो काहू बिरले पारखीने जाना। ये अर्थ ॥६९॥

साखी—जहर जिमी दे रोपिया । अमी सींचे सौ बार ॥
कबीर खलक ना तजे । जामें जौन विचार ॥ ७० ॥

टीका गुरुमुख—जहर जिमी कहिये ब्रह्म अधिष्ठान सो गुरुवा लोगोंने उपदेश देके जीवको रोपा औ खलक सब मेरा स्वरूप ऐसा निश्चय करके कबीर जीवने पकड लिया और उस जिमीमें गरकाफ हुवा । सो सौ बार कोई जीवको अमी रूपी पारख से सींचे पर ये खलकने जाने जौन विचार पकडाहै सो छोडता नहीं कसरभी मालूम होतीहै परंतु धोखा कछु त्यागा जाता नहीं मोह दृढ हुवा । ये अर्थ । अमी कहिये अमृत को ,अमृत कहिये जो आप अमर होय नासे न कभी औ जाको प्राप्त होय ताकोभी जरा मरण मेट दे । तो अमृत नाम पारखका है जो तीन कालमें नाश नहीं होता औ जा जीव को प्राप्त होय ताको जरा मरण रहित करता है ये अभिप्राय ॥७०॥

साखी=धौंकी डाही लाकडी । वोभी करे पुकार ॥
अब जो जाय लोहार घर । डाहै दूजी बार ॥७१॥

टीका गुरुमुख—धौं कहिये जठराग्नी ताकी डाही लाकडी कहिये जीव, सो गर्भवासका त्रास करके पुकार करताहै। परंतु ये गुरुवा लोग लोहार तिनके पास जायगा तो वो इसे बंधनमें डार देवेंगे फिर ये जीव और भी गर्भवासमें जायके जठराग्नीमें दूजी बार जरेगा ये अर्थ॥७१॥

साखी—बिरहकी ओदी लाकडी । सपचै औ धुँधुवाय ॥
दुखसे तबही बांचिहो।जब सकलो जरि जाय॥७२॥

टीका गुरुमुख—बिरहके भीजे जो जीव हैं सो राम बियोगी हैं। सो सपच्च सपच्चके ठहर ठहरके धुंधुवाय उठते हैं, रह रह के बिरहकी ज्वाला उठतीहै सो व्याकुल होके रोतेहैं ।इनका दुखं कैसे छूटै जब ब्रह्म जगतादि बिरह जरके नाश हो जाय ज्ञानके प्रतापसे औ पारख पदकी प्राप्ती होय तब दुखसे बचे । ये अर्थ ॥ ७२ ॥

साखी—बिरह बाण जेहि लागिया । औषध लगे न ताहि ॥
सुसुकि सुसुकि मरि मरि जिवै।उठै कराहि कराहि॥७३॥

टीका गुरुमुख--बिरहकी बानी जा मनुष्यको लगी सो उस बिरहमें दिवाना मस्त हुवा । फिर उसे बिचारकी बानी कधी लगती नहीं औ पारख पद कधी उस जीवको प्राप्त होता नहीं ।ताते सुसुकि सुसुकि मरि मरिके जीताहै श्वासा ठंढी चलतीहै ।मुँह पर पीरी छाय रहतीहै आंखि लाल आंसूसे भरी औ देह पतरी रहतीहै औ बारंबार लगबारकी याद करके कराहि कराहि उठताहै। ये अर्थ ॥ ७३ ॥

साखी—सांचा शब्द कबीरका । हृदया देखु विचार ॥
चित्तदै समुझे नहिं।मोहि कहत भैल युग चार॥७४॥

टीका गुरुमुख—अरे जो ब्रह्माका शब्द बेद ताको तूने सांचाकरके माना सो हृदय में विचारकरके देख कि संपूर्ण भय का रूपहै मिथ्या धोखा । परंतु तू चित्त देके समुझता नहीं ताहीते तेरे को धोखा मालूम होता नहीं। सो तू धोखेही में पडा रहताहै और नाना योनी का दुख तेरेको भोगना प्राप्त होता है। सो दुख औ धोखा तेरा छूटा नहीं इसी वास्ते मेरेको कहते कहते चारयुग भये पर तेरे को अभीतलग सूझ परा नहीं । गुरु कहते हैं कि सतयुगमें सतसुकृत नाम धराय के तेरा बंधन छूटनेके वास्ते बहुत शब्द कहा । औ सतयुग गत होताहै तब त्रेतायुग आताहै फिर मुनींद्र नाम धराय के तेरा

धोखा छूटने के वास्ते बहुत शब्द कहा । फिर त्रेतायुग गत भया द्वापरयुग आया तब तेरे वास्ते करुणामय नाम धराया औ बहुत शब्द कहा । फिर द्वापर गत भया कलियुग आया तब कबीर नाम धराया औ तेरे को पारख स्थिति प्राप्त होनेके वास्ते बहुत शब्द कहा । परंतु अभीतलग भी तूने चित्त देके समझा नहीं तो तेरी क्या गती होगी । ये अभिप्राय । अब गुरु को जगत का बंधन छुडाना औ जीव को पारख स्थिति की प्राप्ती करना येती उपाधी काहे को चाहिये ऐसा कोई शंका करेगा ताका उत्तर, कि गुरु तो स्वच्छ पारखरूप हैं उन को कछु उपाधी नहीं । चौपाई--दया सुभाविक परख प्रकाशी ॥ अभय अशंक सदा सुख राशी ॥ ऐसे गुरु हैं । उनका ये स्वाभाविक गुण है कि जीव पर दया करके अपने पदको प्राप्त करना । ये अर्थ॥७४॥

साखी--जो तू सांचा बानिया । सांची हाट लगाव ॥
अन्दर झारू देइ के । कूरा दूरि बहाव ॥ ७५ ॥

टीका गुरुमुख--हे जीव जो तुम सांचे बैपार करने बाले हो तो सांचा बजार सत्सङ्गरूपी लगाव औ भीतर बिचार की झारू देके कल्पना अनुमान भास आदि कचरा कूरा दूर संसार में बहाय देव डार देव । ये अर्थ । बानिया कहिये जाको बानी को बान होय, बानी कहिये, बेसन कहिये, आदत कहिये लत कहिये बिषय कहिये । ये अभिप्राय । तो हे जीव तेरे को बानीका विषय है तो तू सांचा औ वेद शास्त्रादि मिथ्या धोखे की बानी क्यों बोलता है सांच पारख की बानी बोल । औ कर्म उपासना योग ज्ञान विज्ञानादिक कचरा दूर बहाय देव औ तू पारख पर थीर हो रहो । ये अर्थ ॥ ७५ ॥

साखी--कोठी तो है काठकी । ढिग ढिग दीन्ही आग॥
पंडित जरि झोलीभये । साकठ उबरे भाग॥ ७६ ॥

टीका गुरुमुख—काठ की कोठी कहिये नाशमान सोई ब्रह्मांड औ सोई पिंडांड, तामें ठौर ठौर अहंकार की आग लगी। सो पंडित बडे बडे सब जर के भस्म हो गये औ साठक मूरख भी जरके भस्म हो गये। कोई भाग के सत्संग टकसार में आये सो पारख पाय के उबरे बचे। ये अर्थ ॥ ७६ ॥

साखी—सावन केरा सेहरा। बुन्द परा असमान ॥
सारी दुनिया बैष्णव भई।गुरु नहिं लागा कान॥७७॥

टीका गुरुमुख—सावन कहिये बेद,ताको सेहरा यानी बेद मंत्र, सो असमान कहिये अंतःकरण तहां से मंत्र बुंद चुवा औ चेले के कान में परा। इस प्रकार सारी दुनिया बैष्णव भई गुरुवा लोगन के चेले भये। पर ये कछु गुरु नहीं गुरु तो पारखी को कहिये ये तो कनफूके जीवनको भरमानेवाले काल हैं। ये अर्थ ॥ ७७ ॥

साखी—ढिग बूडा उतरा नहीं। यही अँदेशा मोहि॥
सलिल मोहकी धारमें। क्या निंदरी आई तोहि॥७८॥

टीका गुरुमुख—ढिग कहिये नजदीक सो गुरु कहते हैं कि, मेरे सामने नजदीक संसार सब भ्रम में बूडा मैंने बहुत समुझाया पर उतरा नहीं। यही बातका मेरे को बडा अंदेशा होता है कि पारख पद नजदिक होयके ये मेरे तरफ फिरके देखता नहीं औ मेरी बानी बूझता नहीं। ताते मैं इसे फिर बोलता हौं कि भाई सलिल मोहकी धारमें तेरेको क्या नींद आई है। अरे हुशियार होवो नहीं तो तेरेको मोहकी धार संसारमें बहाय लेजायगी। ये अर्थ ॥ ७८ ॥

साखी—साखी कहै गहै नहीं। चाल चली नहिं जाय ॥
सलिल धार नदिया बहै। पांव कहां ठहराय ॥७९॥

टीका गुरुमुख—मैं सर्व साक्षी ऐसा सांख्यवादी वेदांती कहते हैं परंतु पारखपद कछु गहते नहीं । औ पारखीके संग विना कछु वो पद गहा जाता नहीं ताते विना पारख साक्षी कहां रहेगा। साक्षी कहे से कछु टिकने को जगा मिलती नहीं फिर अन्वय करके कहता है कि सब मेरा स्वरूप में पूर्ण आत्मा ।तो बानी की धारा महा प्रबल पांव कछु टिकने नहीं देती औ बहायके भव समुद्र में मिलाय देती है। ये अर्थ । साखी पढते हैं, गावते हैं, परंतु उसका विचार कोई गहते नहीं औ जैसी साखी बताती है वैसी चाल चली नहीं जाती । ये संसार मोहकी धार में बहा चला जाता है विना पारख पांव कछु टिक सकता नहीं । ये अर्थ ॥ ७९ ॥

साखी—कहंता तो बहुते मिला । गहंता मिला न कोय॥
सो कहंता बहि जान दे । जो न गहंता होय॥ ८० ॥

टीका गुरुमुख—साखी शब्द कहनेवाले बहुत मिले परंतु विचार के गहनेवाले कोई मिले नहीं।तो ऐसे कहनेवाले को बहि जानदे जो बिचार न गहेगा तो कहेसे क्या होयगा । ये अर्थ ॥ ८० ॥

साखी—एक एक निरुवारिये । जो निरुवारी जाय ॥
दोय मुखों का बोलना । घना तमाचा खाय॥ ८१ ॥

टीका गुरुमुख—एक नाम जीवका, सो जीव को गुरु उपदेश करते हैं कि हे जीव तेरे ऊपर एक ब्रह्म है ऐसा धोखा जो खडा हुवा है ताको निरुवार डार। जो कछु धोखा है सो निरुवारे से जाता रहेगा औ जाते निरुवारा होयगा सोई गुरुपद तापर रहना। नहीं तो दो मुख के बोलने में बहुतेक तमाचा खाय गये । दो मुख कहिये काल संधी, कर्म ज्ञान, जीवमुख मायामुख, ये दो मुखके बोलने में कई एक जीवको ब्रह्म झांई खाय गई । फिर ठिकाना कहीं

जीवको लगा नहीं गर्भवास में आया । ये अर्थ।तमकी आँच तमाच्च गर्भवास की आंच । ये अर्थ ॥ ८१ ॥

साखी–जिभ्या केरे बंद दे । बहु बोलन निरुवार ॥
पारखीसे संग करु । गुरुमुख शब्द बिचार ॥ ८२ ॥

टीका गुरुमुख–नाना प्रकार की तत्वमस्यादि बहु बानी परखके छोड देव औ जिभ्याको बंद कर ।संत पारखिनका सतसङ्ग कर औ जीवमुख मायामुख ब्रह्ममुख तीनों मुखकी बानीका निरुवार करके डार दे। औ जासे तीनों मुखका निवारा होय सोई सारशब्द गुरुमुख शब्द ताका सदा बिचार कर जाते सदा पारख स्थिति दृढ रहै । ये अभिप्राय ।गुरु ऐसा हुकुम देते हैं कि तीन मुखका शब्द छोडके गुरुमुख शब्दका सदा बिचार करना औ गुरुमुख शब्दही बोलना औ नाहक बहुबानी काहेको बोलना । ये अर्थ ॥ ८२ ॥

साखी–जाके जिभ्या बंध नहीं । हृदया नाहीं सांच ।
ताके संग न लागिये । घाले बटिया मांझ ॥ ८३ ॥

टीका गुरुमुख-जिसके जीभ में बंध नहीं,बहु बानी कर्म उपासना योग ज्ञानादि छौ शास्त्रन की बकवाद करता है ताके हृदय में सांचताकी औ पारख की प्राप्ती कछु भई नहीं।तो ताके संग कधी लगना नहीं वो कछु पूरी मंजिल को पहूँचाने का नहीं बीजही में धोखा देवेगा। जो आपही को गुरुपद का मुकाम मालूम नहीं सो दूसरे को क्या पहुँचावेगा, आपही झूठमें परा है तो दूसरे को सांच क्या बतावेगा। अरे जाके हृदय में सांच आया सो झूठ बकवाद काहेको करेगा । जाको हीरा सांच मिलेगा सो जान बूझके गार काहेको बटोरेगा। ये अर्थ ॥ ८३ ॥

साखी—प्राणी तो जिभ्यां डिगा। छिन छिन बोले कुबोल।
मनके घाले भरमत फिरे । कालहि देत हिंडोल॥८४

टीका गुरुमुख—जो प्राणी जिभ्या डिगावे विविचार बातें करने लगा असत बानी बोलने लगा छिन छिन, ताकी बात कभी सुनना नहीं औ मानना नहीं । वो तो मनके घाले परबश होके अपनेको भूलके फिरता है औ कल्पना उसे हिंडोले दे रही है झूल रहा है । ये अर्थ ॥ ८४ ॥

साखी--हिलगी भाल शरीरमें ।तीर रहाहै टूट ॥
चुम्बक बिना न नीकरे। कोटि पाहन गये छूट८५

टीका गुरुमुख—जैसा शरीरमें तीर लगा औ टूट गया भाल हिलगी रही तबलग जीवको चैन नहीं । औ जबरदस्ती खैंचा चाहो तो बहुत दुख होता है औ न निकारो सो उसीमें मरता है तो चुम्बक बिना निकरनेका नहीं चाहै कोटि उपाय करो । तैसा ये जीवनके हृदयमें बेदादिक नाना बानीकी कल्पना लगी है बिना पारख कछु वो कल्पना निकरने की नहीं । कोटि नर जन्म धरे औ कोटि बार ब्रह्म बने परंतु सब छूट जायगा । एक पारख बिना जीवकी स्थिति कछु होती नहीं औ कल्पना कछु छूटती नहीं । ये अर्थ ॥ ८५ ॥

साखी—आगे सीढी सांकरी । पाछे चकना चूर ॥
परदा तरकी सुन्दरी ।रही धकासे दूर ॥ ८६ ॥

टीका गुरुमुख—आगे ब्रह्मांडमें जानेकी गैल तो अति बारीक बताते हैं मकरीके तार माफिक औ पीछे संसारके तरफ जो जी फिर फिर देखता है तो त्रिविध तापमें चकनाचूर हो रहा है । औ परदा

तरकी सुंदरी कहिये देहवासी जीव सो धकासे दूर रहे भवसागरके बीच रहे धकेको कछु पहुँचे नहीं, भवसागरके पार कछु पहुँचे नहीं औ पारख पदको प्राप्त कछु भये नहीं धका कहते हैं कि जहां समुद्रका अन्त होय औ जहां उतारेवाले जा जा लगें जहाज जा लगे सो घाटको धका कहते हैं, समुद्रका घाट कहिये सोई धका । ये अर्थ। जो ब्रह्मांडमें जाय के ब्रह्ममें मिल न सके औ त्रिविधि तापमें दुखित भये तब एक कोई कर्ता गुसैयां है ऐसा परदा बनाया औ उसके आसरेमें परे उसकी भक्ती नारि कहाये । औ भवसागर भवसागर ऐसा कहि के भवसागरका पार नहीं पाया तब बीचहीमें परे रहे । ये अर्थ॥ ८६ ॥

साखी--संसारी समय विचारी । कोई गेही कोई जोग ॥
औसर मारे जातहैं । तैं चेत बिराने लोग॥८७

टीका गुरुमुख--संसारी जीव पर जब समय परा कष्ट परा तब विचार करने लगे कि कोई दूसरा हमारा ईश्वर है । ये निश्चय करके फिर ईश्वरकी प्राप्तीके वास्ते कोई गेही भक्त बने, कोई नाना प्रकारकी उपासना भक्ती करने लगे औ कोई सम्पूर्ण त्याग करके योगी बने परन्तु दोनों धोखेमें परे । गुरु कहते हैं कि दूसरा ईश्वर ऐसा अनुमान किया सो कछु है नहीं मिथ्या धोखा, ता धोखेके भरोसे हे जीव तेरा अवसर नर जन्म मारा जाता है हे बिराने लोग तैं चेत समझके देख। ये अभिप्राय। बिराने जीवको काहेते कहते हैं कि अपना पद अपने तत्वनको छोडके पराये तत्वनमें बंधमान भया औ आपको आप बिसारके दूसरा ईश्वर अनुमान किया ताहीका गुलाम बना ताहीते बिराना कहिये । औ निगुराहै गुरु पारखको प्राप्त नहीं ताते लोग कहिये । दूसरेका आश्रित होय ताको बिराना कहिये अपना न होय ताको लोग कहिये । ये अर्थ ॥ ८७ ॥

साखी—संशय सब जग खंडिया । संशय खंडे न कोय ॥
संशय खंडे सो जना । जो शब्द विवेकी होय ॥ ८८ ॥

टीका गुरुमुख—संशय कहिये ईश्वर; संशय कहिये ब्रह्म, संशय ऋद्धि सिद्धी आदि अनेक देवता, संशय स्वर्ग का जाना, सो ऐसी ऐसी संशय ने सब जग को खा लिया परंतु संशय किसी से खंडन भई नहीं । संशय का खंडन सोई जन करेगा जो कोई सार शब्द का विवेकी होगा । ये अर्थ ॥ ८८ ॥

साखी—बोलन है बहुभांतिका । तेरे नैनन किछउ न सूझ ॥
कहहिं कबीर विचारिके । तैं घट घट बानी बूझ ॥ ८९ ॥

टीका गुरुमुख—अरे बोलना बहुत प्रकार का है अनेक तरह का शब्द है परंतु बिना पारख तेरे नैनन से कछु सूझता नहीं । सो शब्द के भरोसे तुम मत रहना अनेक शब्द धोखेका है तुम शब्द का पक्ष छोड के विचार करो औ यथार्थ परखके पारख पर ठहर रहो तब तुम घट घट की बानी बूझोगे । ये अर्थ ॥ ८९ ॥

साखी—मूल गहेते काम है । तैं मत भर्म भुलाव ॥
मन सायर मनसा लहरी । बहे कतहूं मत जाव ॥ ९० ॥

टीका गुरुमुख—मूल जीव गहेते पारख पदकी प्राप्ती होती है औ पारख की प्राप्ती होवै तो कार्य होता है आवागमन से रहित होता है ताते नाना प्रकार की बानी का पक्ष करकै हे जीव तैं मत भरम भुलाव । अरे एक जीव छोड के और सब भ्रम है । मन कहिये तन, तन कहिये पांच तत्व सोई समुद्र भवसागर है यामें मनसा नाना प्रकार की कल्पना सोई लहर है ताके संग तू बहिके कहीं धोखे में मत जा । मन कहिये पुरुष औ मनसा कहिये स्त्री, हे समुद्र पुरुष तूं स्त्री लहरिके संग बहिके कतहूं मत जा । ये अर्थ ॥ ९० ॥

साखी—भँवर बिलम्बे बाग में। बहु फूलन की बास ॥
ऐसे जीव बिलम्बे विषयमें। अन्तहु चले निरास॥९१॥

टीका गुरुमुख—जैसा भौंरा बाग में बहुत फूलनकी बास देखके बिलमा औ जब फूल सूख गया तब भौंरा निरास होके दूसरा बाग खोजने चला। तैसे सब जीव विषय बासनामें लुब्ध होके संसारमें बिलमे परंतु जब अत भया चोला छूटा तब निरास होके गर्भवास में गये। ये अभिप्राय। बाग कहिये वेदादिक बानी औ बहुत फूल कहिये बहुत सिद्धांत, औ ब्रह्म आदि बहुत सिद्धांतन की प्राप्ती की बासना सोई बास, तामें सनकादिक शुकादि शौनकादि सम्पूर्ण भौंरे बिलमे औ जब उनका अन्त हुवा तब निरास होके जगत में समाये गर्भवासमें आये। बाग कहिये, पद्मिनी चित्रिनी हस्तिनी शंखिनी डंकिनी नागिनी आदि स्त्रियां सोई बाग; भग कच, नेत्र आदि फूल, विषय बासना सोई बास, कृष्ण इन्द्रादि सम्पूर्ण विषयी जीव सब भौंरे सो स्त्रियन में बिलमे। अन्त में जब इन्द्री थक गई और मर गये तब निरास होके फिर वही स्त्रियन के गर्भमें चले बासना वश होके। ये अर्थ ॥ ९१ ॥

साखी—भँवर जाल बगुजालहै। बूडे बहुत अचेत ॥
कहहिं कबीर ते बांचिहैं। जाके हृदय विवेक॥९२॥

टीका गुरुमुख—भँवर जाल कहिये स्त्री औ बगुजाल कहिये वेदादिक नाना बानी, ये दोनों बन्धन जीवको हैं। ये दोनों बन्धन टूटे तो जीव मुक्त होय परंतु ये दोनों फांसी महा कठिन हैं। बहुतक जीव अचेत गाफिल होके भगकुण्ड में बूडि गये औ बार बार बूडते उतराते हैं, कोई ये दोनों जालन से बचता नहीं, अरे हे भाई संतो बचने का ठिकाना कहीं नहीं। वही बचैंगे दोनों जाल से कि जाके

हृदय में बिवेक होयगा । बिना बिवेक कोई कोटि उपाय करे मुक्ती होती नहीं । ये अर्थ ॥ ९२ ॥

साखी–तीन लोक टीडी भई । उडा जो मनके साथ ॥
हरिजन हरि जाने बिना । परें काल के हाथ ॥९३॥

टीका गुरुमुख–तीन लोक देव दैत्य मनुष्य, सात्विक राजस तामस ये संपूर्ण मनके साथ उड़े । जैसे पवन के साथ टीडी जाती है तैसे जीव विषय बासना के साथ मन के साथ उडने चले, मन कहिये मानंदी सो मानंदीके साथ जीव उडि चले । हरिजन अनुरागी जन, जिन हरीको न जाना कि हमारे मन की मानंदी है ताते कल्पना के औ स्त्रीके हाथ पडे । ये अभिप्राय । तीन लोक सात्विक राजस तामस मनके साथ शुद्ध सतोगुण ईश्वर के साथ उडि चले सो काल निर्गुण ब्रह्मके हाथ परे बिना पारख । ये अर्थ ॥९३॥

साखी–नाना रंग तरंग हैं । मन मकरंद असूझ ॥
कहहिं कबीर बिचारके । तैं अकिल कला ले बूझ ९४

टीका गुरुमुख–नाना रंग का तरंग ये मनुष्यदेहमेंसे उठे हैं सोई नाना प्रकार की बानी बनी है, बानी ताही में बडे बडे ऋषिन के मन लगे हैं भँवरारूप बनके, परंतु मन भँवरा अंध है उसे कछु सूझता नहीं । अरे हे कबीर जीव ! तू बिचार करके देख वो सब महाऋषिन की स्थिति कहां है । नाना प्रकारके सिद्धांत जो बेदने किया सो सब मिथ्या, एक जीव सत्य है; तू अकिल कला पारख लेके बूझ औ पारख पर रहि जाव । अकिल कला कहिये जाकी कला पकडने में न आवै सो अकिल कला पारख केले तू बूझ बिना पारख कछु तेरे को समझ परने का नहीं । ये अभिप्राय ॥ ९४ ॥

साखी–बाजीगर का बांदरा । ऐसा जीव मन के साथ ॥
नाना नाच नचाय के । ले राखे अपने हाथ॥९५॥

टीका गुरुमुख—जैसा बाजीगर का बंदर तैसा जीव मनके साथ मन कहिये तन,तन का वजन सोई अध्यास जीवको अपने साथ रखता है कधी इसे छोडता नहीं, देह में डार के जीव को नाना नाच नचाता है। फिर तन तो छूट जाता है अध्यासरूपी मन रहिजाता है सो जीव को अपने हाथ रखता है कहीं जाने नहीं देता । अपने मनोयमकी अवस्था सुषोमी डारके जीव को आकर्षण कर लेताहै अपने में मिलायके आप सुषुमना में मिलि के जीवको गर्भवासमें डार देता है। ये अर्थ ॥ ९५ ॥

साखी—ई मन चञ्चल ई मन चोर। ई मन शुद्ध ठगहार ॥
मन मन करते सुर नर मुनि।जहँडे मनके लक्ष दुवार९६

टीका गुरुमुख—मनहीं कर्मी,मनहीं योगी,मनहीं ज्ञानी औ मनहीं उपासक,मनहीं स्वर्ग औ मनहीं ब्रह्मांड, मनहीं ईश्वर औ मनहीं ब्रह्म ।

कबित्त--मन देवी देवता मंत्र तंत्र,मन पीर औलिया सिद्ध यंत्र । मन कर्ता सब जग ब्योहार,मन आदि अंतःकरन निर्धार। मन समाधी मन योग ध्यान,मन वेद शास्त्र कथे बहुत ज्ञान । मन नेति नेति कर्ता पुकार,मन पाछे सुर नर मुनिहीं हार। मन काया जीव घेर लीन्ह,मन विषय भूलि अंधियारी दीन्ह । मन का कोई न लखे विचार,मनब्रह्म बनो है लक्ष द्वार ॥ १॥ इतना प्रमाण मनका है आगे स्पष्ट अर्थ सुनो--मन कहिये तन, ई मन चंचल कहिये कर्मी, चोर कहिये योगी, सुद्ध ज्ञानी, ठगहार उपासक औ मन ही मन करते सुर नर मुनी जहंडे । लक्ष द्वार ब्रह्म कहके जहंडे खराब हुये । ये अर्थ ॥ ९६ ॥

साखी—बिरह भुवंगम तन डसो। मंत्र न माने कोय ॥
राम बियोगी ना जिये । जिये तो बाउर होय॥९७॥

टीका गुरुमुख–बिरहरूपी सर्प जाके तन में डसा सो जीव को विषय विष चढा फिर किसीका मंत्र विचार वो जीव मानता नहीं । अरे जो राम वियोगी जीव हैं सो कधी जीने के नहीं अगर जिये तो भी दिवाना हो रहेंगे उन को बिचार क्या बतावोगे । ये अर्थ॥९७॥

साखी–रामबियोगी विकल तन । इन्ह दुखवो मति कोय॥
छूवतहीं मरि जायँगे । तालाबेली होय ॥ ९८ ॥

टीका गुरुमुख–जो रामबियोगी जीव हैं सो अपने तन से बेजार रहते हैं उन्हें कोई दुखावो मत अरे उन का जग कहोगेकि जिस का बियोग तुम्हें लगाहै सो मिथ्या धोखा तो तलमलाय तलम-लाय के प्राण देवेंगे मरि जायेंगे ॥ ९८ ॥

साखी–बिरह भुवंगम पैठि के । कीन्ह करेजा घाव ॥
साधु अंग न मोरि हैं । ज्यों भावै त्यों खाव ॥९९॥

टीका गुरुमुख–देखो हे संतो गुरुवालोगों के अंतःकरण मे बिरह रूपी सर्प महाभुजङ्ग उठा औ चेलन के कानमेंसे पैठि के करेजा में डसा घाव किया ये अर्थ । अब उत्तरार्ध साखी–मायामुख–सो माया क्या कहती है कि साधू वाही का नाम है कि जो बिरह के डर से अंग न मोरै अंग छिपावै नहीं, बिरह सर्पके सामने खडा होय । बिरह सर्प ज्यों भावै त्यों खाय जाय पर सामने से न टरै उसी साधू को भगवत प्राप्ती होती है । ये मायाका अभिप्राय ॥ ९९ ॥

साखी–करक करेजे गडि रही । वचन वृक्षकी फांस ॥
निकसाये निकसे नहीं । रही सो काहू गांस॥१००॥

टीका गुरुमुख–जो गुरुवा लोगन का बचन वृक्ष बेद ताकी फांस नाना मंत्र उपदेश जीवनके करेजेमें गडि रहे हैं अब निकारो तो निक-रते नहीं । काहू कहिये जीव को, सो जीवन को, घेर रही है कहीं

निकरने देती नहीं तब जीव गुरुपद को कैसे प्राप्त होय । पर काहू बेपारखी को गांस रही है पारखीपर किसी का गांस फांस लगता नहीं । ये अर्थ ॥ १०० ॥

साखी– काला सर्प शरीर में । खाइनि सब जग झारि ॥
बिरले तेज न बांचि हैं। जो रामहिं भजै बिचारि १०१

टीका गुरुमुख–काला सर्प कहिये अभिमान, सो अभिमान पांच प्रकार का; स्थूल अभिमान विश्व, सूक्ष्म अभिमान तैजस, कारण अभिमान प्राज्ञ, महाकारण अभिमान प्रत्यगात्मा, कैवल्य अभिमान निरंजन। ये पांच प्रकार का अभिमान सोई पांच फन का बडा सर्प काला सब के शरीर में रहता है औ इनने सब जग को झार के खाय लिया। इस जगत में जाको विचाररूपी अमृत प्राप्त भया येते सर्प के जहर से बचे, एक राम ऐसा जो बेदने अन्वय किया था सो उससेबचे भाग के न्यारे भये विचार रूपी अमृत के प्रतापते सर्प का जहर उतर गया औ पारख भूमिका को प्राप्त भये । केही तरहसे कि मैं पांचौं अहंकार का पारख पांचों ते न्यारा पारख रूप ऐसा अमृतपान करके संपूर्ण अन्वय दूर बहायके बिरले पारखी जन पारख भूमिका पर आय के बचे। ये अर्थ। अगर काला सर्प काम याहू के पांच मुख हैं, पांच कर्म इन्द्री औ पांच उपमुख पांच ज्ञान इन्द्री, सो काम भुजङ्ग सबके शरीरमें रहता है ताने सब जग को खाय लिया। बिरला कोई बिचारमान बचा। जाने स्त्री त्याग किया औ स्त्री से भागा सो । ये अर्थ ॥ १०१ ॥

साखी–काल खडा शिर ऊपरे । तैं जागु बिराने मीत ॥
जाका घर है गैलमें । सो कस सोवै निचिंत १०२॥

टीका गुरुमुख–पंच मुखी सर्प अहंकार सोई काल सबके शिरऊपर खडा है औ हे बिराने मीत जीव तू कालसे मिताई करके सो रहा

है गाफिल हो रहाहै तो कैसे बचेगा काल तेरेको खाय जायगा। हे संतो जाका घर ठगोंके रस्तेमें है उनने निश्चिंत कैसे सोवना औ निश्चिंत ब्रह्म बनके गाफिल होवेगा तो अहंकार ठग लूटके मार डारेगा ताते सदा हुसियार सत्संगमें रहके विचार करते रहना। ये अर्थ। विरुद्ध अर्थ--काम सोई काल सबके शिर पर खडा है औ हे जीव! तू स्त्री का मित्र बना है तो काम सर्पसे कैसे बचेगा। औ काममें गाफिल हो रहाहै स्त्रीके संग सोताहै तो कैसे बचेगा गर्भवाससे। अरे जाका घर आवागवनके रस्तेमें है उनको निश्चिंत कैसे सोना चाहिये। लूटा जायगा, अंधियारी कोठरीमें कैद रहेगा, आखिर चौरासीका बंधुवा होवेगा, ताते सदा विचार करते रहना हुशियार रहना। कधी काठकी स्त्री हो तो उससे भी मिताई न करना, पांच बरषकी लडकी और अस्सी बरसकी बुढिया हो इनसे भी डरते रहना प्रीती विशेष न करना फिर तरुणीके तो ढिग नहीं बैठना यही आवागवनका मार्ग है याहिते सदा हुशियार रहना गाफिल नहीं रहना। ये अर्थ॥ १०२॥

साखी--कलकाठी कालू घना। जतन जतन घुन खाय॥
काया मध्ये काल बसत है। मर्म न काहू पाय॥१०३॥

टीका गुरुमुख--कलकाठी कहिये स्त्री, ताने काल काम बहुत बढाय दिया ताते संपूर्ण जीव जेर भये। हे संतो! इस कायामें काम रहताहै सोई जीवका काल है याका मर्म कोई पावता नहीं। जैसे लकडीको घून लगताहै औ हलू हलू खाताहै लकडीको निकम्मी कर देताहै तैसा ये विषयरूपी घून जीवको लगा है सो हलू हलू जीवको खाताहै निकम्मा ज्ञान हीन जीवको कर देता है। औ काम काल महा प्रबल है जब बहुत बढताहै तब किसीके रोके रुकता नहीं। तप-

स्विनकी तपस्या नाश कर देताहै, योगिनका योग नाश कर देता है, बैरागिनका बैराग्य नाश कर देताहै बिचारमानको बेविचार कर देता है,ज्ञानिनको अज्ञानी कर देताहै, भक्तनको अभक्त करदेताहै । औ जब जीव कामके बश हुवा तब दश चीज नाश होतीहैं सो सुनो तप शौच सत्य लज्जा लक्ष्मी बुद्धी यश कीर्ती बल आयुष ऐसा काल कायामें बसताहै तब ये जीव निजपद को कैसे प्राप्त होवैं । इस कालका मर्म कोई पावता नहीं जबलग कामके बश है तबलग उसका बिबेक विचार सब मिथ्या । यथार्थ पारख की प्राप्ती होय औ सदा पारखमें जीव बना रहै तब काम से बचे । ये अभिप्राय । औ कलकाठी कहिये बानी काल कहिये कल्पना, सो बानीने कल्पना बहुत बढाय दई सो बिरहरूपी घून जीवको हलू हलू खाने लगा परंतु कायामेंही मैं ब्रह्म अथवा दूसरा ब्रह्म ऐसी कल्पना रहतीहै इसका मर्म कोई पावता नहीं, सोई काल होके जीवनको खाता है । काया सोई कलकाठी औ अभिमान सोई पंचमुखी काल औ आनंद मद सोई घून जीवको हलू हलू खाता है औ अभिमान काल कायामें रहता है ताका मर्म कोई पावता नहीं ।तो पांच प्रकार अभिमान परख के छोडे औ पारख पदकी प्राप्ती हो रहे तब आवागवन से रहित होय । ये अर्थ ॥ १०३ ॥

साखी—मन माया की कोठरी । तन संशय का कोट ॥
विषहर मंत्र माने नहीं । कालसर्पकी चोट ॥१०४॥

टीका गुरुमुख—मन माया की कोठरी कहिये देह औ तन संशय कोट ब्रह्म, विषहर ब्रह्मज्ञानी, मंत्र कहिये विचार, काल सर्प कहिये पंच मुखी सर्प अभिमान ताने जीवन को काटा । सो ताही के बिषमें जीव उन्मत्त मूक जड बाल पिशाचवत् हुवा अब यथार्थ विचार

कछु मानता नहीं । अरे इस कायोस संशय पैदा भया कि कोई एक ब्रह्म है सो अपने रहनेका कोट जीवने बनाया, ताहीको अपना अधिष्ठान औ मालिक कहा औ बिभ्रम हुवा कैद हुआ । औ कोई देह अभिमानी देह के विषय में बन्ध भये ताते विचार को नहीं मानते मोह वश भये चौरासी में रहे, कीट नर्क न्याय । जैसा नर्क का कीडा नर्क में पैदा होता है औ नर्कही में मरता है । ये अर्थ ॥ १०४ ॥

साखी--मन माया तो एक है । माया मनहिं समाय ॥
तीन लोक संशय परी । मैं काहि कहौं समुझाय १०५

टीका गुरुमुख--मन कहिये पांच तत्व तीन गुण ये आठ। पसेरी का एकन्दर वजन ताको मन कहिये औ ताहीका स्वरूप जो दृष्टी गोचर सो माया कहिये काया, कायाका वजन सोई मन ब्रह्म,तो नाम, रूप, तन, मन, माया, ब्रह्म, दृष्ट अदृष्ट, सगुण, निर्गुण, पिंड ब्रह्मांड, आत्मा, जगत, इनके नाम दो हैं कुछ रूप दो नहीं वस्तु एकही है । अरे माया का अधिष्ठान मन औ माया बिना कछु मन नहीं । नाम सोई रूप का अधिष्ठान रूप बिना कछु नाम नहीं । तन मन अधिष्ठान तन बिना कछु मन नहीं । ब्रह्म माया का अधिष्ठान माया बिना कछु ब्रह्म नहीं । अदृष्ट दृष्ट का अधिष्ठान पर दृष्ट बिना कछु अदृष्ट नहीं । निर्गुण सगुणका अधिष्ठान पर सगुण बिना कछु निर्गुण नहीं । ब्रह्मांड पिंड का अधिष्ठान पर पिंड बिना ब्रह्मांड नहीं। आत्मा जगत का अधिष्ठान पर जगत बिना कछु आत्मा नहीं । तब मन माया नाम दो, वस्तु रूप एक, परंतु तीन लोक में दूसरा है ऐसी संशय परी है दूसरा कछु है नहीं मैं न्यारा करके क्या समझाऊँ । तन मन एकही है। ये अर्थ ॥ १०५ ॥

साखी--बेढ़ा दीन्ही खेतको । बेढ़ा खेतहि खाय ॥
तीन लोक संशय परी । मैं काहि कहौं समुझाय १०६॥

टीका गुरुमुख--बेढ़ा कहिये, बाड कहिये, बडांग कहिये, सो खेत खेतने के वास्ते बाड लगाई तो बाडई खेतहीको खा गई । तद्वत संसारमें कल्यानकी इच्छा उठी ताते बेदादिक बानी सब बनी औ ता इच्छाने ता बानीने संसारको खाया । अरे बेदके भरोसे संसार निश्चिंत है पर वो बेदही संसारको भरमाय रहा है अब संसार कैसे बचेगा । औ जीव ने अपने कल्याण के वास्ते एक गुसैंया कल्पा सोई गुसैंया जीवको खाता । हे जीव जो कछु उपदेश गुरुवा लोगोंने जीव की रक्षाके वास्ते दिया है सोई जीवका काल जीवको खाता है परंतु यह तीनों लोकमें बडी संशय पडी है सो कोई पारख के देखता नहीं मैं किससे समुझाय के कहौं । जैसा मद्यपी मद्य पीके उसके वश होके अपना घर भूल जाता है औ किसीका कहा मानता भी नहीं तद्वत् यह संसार हो रहाहै मैं काहि कहौं समुझाय । ये अर्थ॥ १०६ ॥

साखी--मन सायर मनसा लहरी । बूडे बहुत अचेत॥
कहहिं कबीर ते बांचि हैं । जाके हृदय विवेक॥ १०७॥

टीका गुरुमुख--मन सोई ब्रह्म समुद्र औ मनसा सोई जगत लहर, या मन सोई जगत समुद्र औ मनसा सोई ब्रह्म लहर, या मन सोई पुरुष समुद्र औ मनसा सोई स्त्री लहर, मानंदी सोई समुद्र औ नाना कल्पना सोई लहरी. या ॐकार सोई मन समुद्र औ नाना बानी मनसा लहरी, तामें बहुतेक जीव अचेत गाफिल होके बूड गये । अचेत कहिये ज्ञानी ब्रह्म समुद्र में बूडे । अचेत कहिये कर्मी जगत समुद्रमें बूडे ।

अचेत कहिये उपासक मानंदी समुद्र में बूडे। अचेत कहिये विषयी काम समुद्र में बूडे। अचेत कहिये योगी ॐकार समुद्र में बूडे। सो गुरु कहते हैं कि वो सब कहां हैं इस जगतमेंही उपजते बिनसते पडे हैं। इस उपजने बिनसने से, औ समुद्र लहरी से जगत ब्रह्म से सोई बचेगा जाके हृदयमें पारख विवेक होयगा। सोई पारख पद को प्राप्त होगा औ बचेगा। ये अर्थ ॥ १०७ ॥

साखी—सायर बुद्धि बनायके। बायें बिचक्षण चोर ॥
सारी दुनिया जहँडे गई। कोई न लागा ठौर १०८ ॥

टीका गुरुमुख—अपने बुद्धिका समुद्र बनाया तामें आपही डूब के मूवा बायें कहिये ब्रह्मा रजोगुण, बिचक्षण कहिये विष्णु सतोगुण चोर कहिये महादेव तमोगुण योगी,ये तीनों सायर बुद्धि नाना वेदादिक बानी बनाय के मर गये। सो कहीं ज्ञान कथा, कहीं कर्म कथा, कहीं योग कथा, कहीं नाना विषय भोग उपासना कथा. ताही में सारी दुनिया जहंडे गई निश्चय कर के भरमाय गई गाफिल हो गई। कोई भी ठौर लगा नहीं पारख पदकी प्राप्ती भयी नहीं। ये अर्थ ॥ १०८ ॥

साखी—मानुष होयके न मुवा। मुवा सो डांगर ढोर ॥
एको जीव ठौर नहिं लागा।भया सो हाथीघोर१०९॥

टीकागुरुमुख—मानुषरूप लेके जीव पैदा भया पर मानुष के तत्व औ लक्षणको चीन्ह के ग्रहण किया नहीं। मानुष कहिये जो दया क्षमा सत धीर बिचार ये तत्वन युक्त होय औ विवेक वैराग्य गुरुभक्ती ये गुणन में युक्त होय औ कच्चे पांच तत्व, तीन गुण दश इन्द्री, विषय पंचक औ अनुमान कल्पना भास अध्यासादि संपूर्ण मिथ्या भ्रम जान के अपने तत्व गुणन में सदा रहै। ये संपूर्ण मनादिम

बंधन से निराश होय इस प्रकार से मानुष होके न मरे। परंतु डांगर होर जैसे मरता है तैसे मनुष्य तन घर के लोग मरते हैं ताते फिर पशु योनी को प्राप्त होते हैं। तो पहिले भी पशु योनी का जीव मानुष योनी स्वप्नवत पाय गया परन्तु पशुवत् पंचमुखी अभिमान में बंध होके मरा। फिर सोई जीव हाथी घोडा की योनिन को प्राप्त भया एक जीव पारख ठौर को न लगा। ये अर्थ॥ १०९॥

साखी–मानुष तैं बड पापिया। अक्षर गुरुहि न मान॥
बार बार बन कुकुही। गर्भ धरे औ ध्यान॥ ११०॥

टीका गुरुमुख–अक्षर कहिये जीव को जाका तीन काल में नाश नहीं, अक्षर गुरु कहिये पारखको जो तीनकाल में अटल औ अविनाश; सो जा मनुष्यने अक्षर गुरु पारखको न माना तो मानुष बड पापिया पशुवत दुखभोगी। बारंबार जन्मना औ नाना बानी का बंदा गुलाम होके मरना औ गर्भबास में जाना, नाना दुख भोगना, ताते पापी कहिये। औ जो पारख गुरुको पाके ऐसे दुखसे छूटै सो पुण्यवान सुकृत जीव। ये अर्थ। बन कहिये, बानी कहिये, संसार कहिये, बन कुकुही कहिये, माया कहिये, गुरुवा कहिये, पंडित कहिये, काया कहिये। सो बारंबार धोखे का ध्यान करते हैं औ नास्ती अध्यास वश होके खोके गर्भमें जाते हैं औ बिना पारख दुखभोगी होते हैं। ये अर्थ॥ ११०॥

साखी–मानुष बिचारा क्या करे। जाके कहे न खुले कपाट॥
स्वनहा चौक बैठाय के। फिर फिर एपन चाट॥ १११॥

टीका गुरुमुख–कहनेवाला मानुष विचार क्या करै जाके कहे संसार का कपाट खुलता नहीं। कपाट कहिये परदा, सो नाना प्रकारका परदा गुरुवा लोगोंने चौका में बैठाय के दढाय दिया कान फूंके। स्वनहा

कहिये ॐकार, स्वनहा कहिये वेद, सो वेद के प्रमाण से नाना प्रकार के सिद्धांतन की चाट लगाई लालच लगाई सो। जाको जो चाट लगी सो अपनी चाट लेके चौरासी में फिरने लगे औ मारे चाटके संसारमें घूमने लगे। कोई को गुसैंया की चाट लगी, कोई को विषयनकी चाट लगी। सो कोई तो गुसैंयाकी चाटवाले योग जप तप ध्यान ज्ञान तीर्थ ब्रत भक्ती करने लगे। औ कोई विषय के चाटवाले नाना मंत्र यंत्र तंत्र, रसायन क्रिया, नाना देवतन की उपासना करने लगे औ नाना विद्या, नाना कर्म, नाना ब्योपार औ प्राण घात जारत्व चौरत्व आदि ठगाई करने लगे। इस प्रकार अपनी चाट से जीव फिरते हैं औ इन की बुद्धि पर नाना प्रकार के परदे परे हैं अब खुल नहीं सकते, तो मानुष बिचारवान ने क्या करना। अरे चाट बुरी फांसी है चाहै गुसैंया की होय चाहे विषयन की होय ये दोनों जीवको बंधनरूप हैं। ये अर्थ। तो मानुष जो बिचारवान हैं इन्हें अपने स्वजाती को हर सूरत से चेताना चाहिये कि नहीं। ये शंका। याको उत्तर ॥ १११ ॥

साखी—मानुष बिचारा क्या करे। जाके शून्य शरीर ॥
जो जिव झांकि न ऊपजे। तो कहा पुकार कबीर ॥११२॥

टीका गुरुमुख—अरे बिचारवान मनुष्यने क्या करना, जो बहुत बिचार बताते हैं परंतु जिन का शरीर शून्य है उन को कछु सूझ पडता नहीं, जरासी झांकी भी जीवमें उठती नहीं। ज्ञान की झलक भी ना उठी तो उसके सामने काह पुकारना, नाहक श्रम काहे को करना पशू जीव के वास्ते। हे कबीर संतो सुनो! जो कोई सुकृत जीव होय ताको यथार्थ बिचार समुझाना। ये अर्थ ॥ ११२ ॥

साखी—मानुष जन्म नर पायके। चूके अबकी घात ॥
जाय परे भवचक्रमें। सहे घनेरी लात ॥ ११३ ॥

टीका गुरुमुख–मानुष जन्म जीव ने पाया औ इनने सतसंग न किया तो फिर क्या पशू योनी को पायगा तब सतसंग करेगा। अरे मनुष्य जन्म पाय के जो चूका पारख पद को प्राप्त न भया तो फिर जाय परे भवचक्र में चौरासी लक्ष योनिन के फेर में परेगा औ बहुत लातें सहेगा दुख सहेगा। ये अर्थ ॥ ११३ ॥

साखी--रतन को यतन करु। मांडीका सिंगार ॥
आया कबीरा फिर गया। झूठा है हंकार ॥ ११४॥

टीका गुरुमुख–रतन मानुष जन्म ताको यतन कर मिथ्या धोखे में मत खो। नाहक मांडी के सिंगार में मत पर, या सिंगार से तेरी स्थिति औ कल्यान कछु होनेका नहीं। मांडीका सिंगार कहिये नाना प्रकार के भेष, नाना संप्रदाय, नाना मत, नाना बानी थाको मांडी कहिये। याका सिंगार नाना भक्ती ज्ञान योग याका अभिमान जो मानता है सो मिथ्या भ्रम है। अरे यामें कछु जीवकी स्थिति नहीं औ पारख पदकी प्राप्ती किसीको भई नहीं। बडे बडे कीर्तिवान जीव नर जन्म में आये औ फिर गर्भवास में गये। गुरुपद पारख स्थिति होय बिना जीव कछु रहित हो सक्ता नहीं। औ अहं ब्रह्म त्वं ब्रह्म आदि भक्ति ज्ञान योगकी बानी में काहू को पारख प्राप्ती होती नहीं औ भई भी नहीं; ताते या बानी का अहंकार मिथ्या है। जैसा नरजन्म में जीव आता है तैसा फिर गर्भ-वासको जाता है कछु स्थिति होती नहीं। ये अर्थ। और रतन कहिये ज्ञान, मांडी का सिंगार स्त्री, सो स्त्री से ज्ञानको बचाय रहना। इस स्त्रीके संग में ज्ञान नष्ट हो जाता है और जीव विषय बुद्धी में आसक्त हो जाता है फिर जा भगमें से

जीव निकरता है ताही भग में जीव जाता है ताते झूठा है हंकार देह औ स्त्रीका हंकार आवागवन का कारण है ताके संग ज्ञानको खोवो मत यतन कर। ये अभिप्राय ॥ ११४ ॥

साखी--मानुष जन्म दुर्लभ है। बहुरि न दूजी बार ॥
पक्का फल जो गिरि परै। बहुरि न लागै डार ॥११५॥

टीका गुरुमुख--इस जीवको मानुष जन्म दुर्लभ है। क्योंकि संपूर्ण विषयनमें पशुवत कर्मनमें सदा आसक्त रहतेहैं ताते मानुष जन्म जीवको दुर्लभ है औ मनुष्य जन्ममें विवेक की प्राप्ती होती है, विचार होता है औ सकल संपति सहित गुरुपद की प्राप्ती होती है, जीव आवागवन से रहित होता है। ताते ऐसा जन्म बडे भाग से प्राप्त होता है, ऐसे जन्म को बानी विषय में औ स्त्री विषय में न खोवना। पारखी संतनका संग करके पक्का चोला धारण करना, कच्चे चोले के पांचों हंकार छोडना। औ पक्का चोला जीवको प्राप्त होय फिर कच्चा चोला छूटै तो बहुरि जन्ममें न आवै। मानुष जन्म पारखकी प्राप्ती होने माफिक। ये अर्थ ॥ ११५ ॥

साखी--बांह मरोरे जातहो। मोहि सोवत लिये जगाय ॥
कहहिं कबीर पुकारिके। ई पिंडे होहु कि जाय ११६

टीका जीवमुख--जीव बोलता है विचारमान कि हे गुरु मैं परम गाफिलीमें सोया था अपनेको आप भूला था, सो नाना प्रकारका विचार परखायके आपने जगाय लिया चैतन्य कर दिया।संपूर्ण जड भावना ब्रह्म आत्मा जगत परमात्मादिक दूर कर दिया। औ अब बोलते हो कि पक्का स्वरूप होके कच्चा चोला गिरा तो आवागवनसे रहित भया। ऐसी स्थिति बतायके आप स्वच्छ पारख जासे पक्की कच्ची

सब मालूम हुई सो आप बांह मरोरके जाते हो । हे कबीर मैं तो तुम्हारी बांह पकडी सो छोडनेकी नहीं । कबीर कहिये जो कविनके भीतर इरना करै सो कबीर,कवी कहिये ज्ञानी,इरना कहिये प्रेरणा सो ज्ञानिनके भीतर प्रेरणा करे ताको पारख कहिये । सो ज्ञानी जीव कहते हैं कि हे पारख गुरु हमारी बांह मरोरे कहां जाते हो तब गुरु उत्तर देते हैं **गुरुमुख**—कहहिं कबीर पुकार के । हे विचारमान जीव तुम यथार्थ पारख करके देखो कि जाको तुम कबीर कहते हो औ गुरु कहते हो सो कहांहै हकनाहक मिथ्या धोखेमें परो मत इस पिंडमें पारख पर स्थिति होवो । जासे तुमने सब परखा सोई पारख औ गुरुपद ताके ऊपर और कछु नहीं । यह जानके तुमहू पारख होहू कि भ्रममें चले जाव मत । हम तो कहीं आय न जाय, सदा एकरस नाहीं नसाय । सो तू कहीं घबरायके पारख छोडके मत जाना । अरे पारख स्थिति बिना कौन कौन चौरासीमें गये सो सुनो ॥ ११६ ॥

साखी—साखि पुरँदर ढहि परे । बिबि अक्षर युग चार॥
कबीर रसना रंभन होतहैं । कोई कै न सके निरुवार॥ ११७॥

टीका गुरुमुख—साखी कहिये जाने नेति नेति प्रमाण से पांचतत्त्व,पच्चीस प्रकृती,तीन गुण, दश इन्द्री,पंच विषय,पंच कर्म चलन बलन छालन भक्षण मैथुन अंतःकरण पंचक तिनके विषय दश बाय चार अवस्था, चार देह, चार अभिमान, चार स्थान, चार मान चार प्रमाण आदि सकल अनित्य संपत्ती जानके मैं सबका साक्षी ब्रह्म ऐसा अपनेको निश्चय किया ताको साखी कहिये । ऐसे ऐसे जो बडे बडे ज्ञानी सर्वसाक्षी कहलाये सो भी पारख स्थिती बिना अन्वय कर के जग चौरासी में गिर परे ढहि परे । जब साक्षीको निज भूमिका न मिली तब साक्षी कहां ठहरे,ताते घबरायके साक्षीने अन्वय किया

कि जगत सब मेरा स्वरूप, मैं जगतसे न्यारा नहीं जगत मेरेसे न्यारा नहीं, ऐसा अन्वय करके ज्ञानका अभिमान छोडा औ निरञ्जन अभिमानके मुखमें ढहि परे औ आत्मा कहाये । तो पहिले जब येता व्यक्तिरेक न किया था तब क्या आत्मा न था, तो सम्पूर्ण ज्ञान औ विचार इनका ढहि गया नाश हो गया । तो साखीकी स्थिति न भई जगतरूप बनके आवागमन सुख दुःखमेंही रहे । औ पुरन्दर कहिये इंद्र सो कर्मिष्ठ,जो कर्म करते करते सौ अश्वमेध यज्ञ किया औ इंद्र बना तो भी जब सम्पूर्ण पुण्य छीन होताहै तब मृतलोकमें आयके जन्म लेताहै यह वेदका भी प्रमाणहै, क्योंकि मृतलोक कर्म भूमिका है । मृतलोक में कर्म करना औ अन्य लोकमें भोगना भोग सरे फिर मृतलोकमें आयके जन्म लेना, तो कर्म करते करते जो इन्द्रभी हुवा तो आखिर चौरासी में ढहि परा । ये अर्थ । बिबि अक्षर योगी, जो दो अक्षरका सिद्धांत करते हैं दो अक्षर कहिये सोहं दो अक्षर कहिये वोहं दो अक्षर कहिये राम, इनको श्वासामें सिद्ध करके सुरत लगाते हैं औ सुरतको श्वासमें लय करते हैं, श्वासा शब्दमें लय करते हैं, शब्द ब्रह्मांडमें लय करते हैं औ निर्विकल्प समाधीको पावते हैं सर्व सिद्धिको पावते हैं औ सर्व जगतमें ईश्वर कहलाते हैं । परन्तु जब चोला छूटा औ मस्तक फूटा तब न शब्दही रहा न श्वासाही रहती है तब वो भी समाधीसे गर्भवास में ढहि परे । ये अर्थ । युग कहिये द्वैतवादी उपासक, सो नाना प्रकारकी उपासना करते करते आखिर देवलोकको जाते हैं फिर वहांका पुण्य आयुष्य सरा तब देवता भी औ दासभी मृतलोकको आयके जन्म लेते हैं ऐसा वेद बोलता है तब वो भी चौरासीमें ढहि परे, लोक औ देवता कछु चौरासीके बाहर नहीं । ये अभिप्राय । चार वेद वो भी जगत चौरासीमें परे हैं औ चार ऋषी सनक सन-

न्दन सनत्कुमार सनातन ये चारोंने अन्वय करके जगत सब अपना रूप माना है औ ब्रह्म बने हैं परन्तु उपजना कछु छूटा नहीं । अरे साखी कहिये ज्ञानी,पुलन्दर कर्मी, विधि अक्षर योगी; गुण द्वैतवादी उपासक, चार वेदी, चार विज्ञानी, ये पञ्चवर्ग सब भ्रममें गिर परे। हे पारखी संतो तुम यथार्थ परख के देखो इनकी स्थिति कहां है । परंतु हे सन्तो ये जगतमें रसना रम्भन मिथ्या बकवाद होती है न कछु लेना न देना पर कोई बानीका पक्ष छोडके निरुवारा कर सकता नहीं जो पक्ष छोडके सतसङ्ग में निरुवारा करे तब पारख स्थितिको प्राप्त होय । ये अर्थ ॥ ११७ ॥

साखी–बेडा बांधिन सर्पका । भवसागरके माहिं ॥
जो छोडे तो बूडे । गहै तो डसे वाहिं ॥ ११८ ॥

टीका गुरुमुख–अहंकार सर्पका बेडा बांधा तापर सब आरूढ हुवा अब जो अहंकार छोडा चाहता है तो देह गिरने चाहती है नाश होती है औ अहंकार को पकडना चाहता है तो वो सर्प काटता है तो याका उपाय पारख औषधी पास रखना, वो औषधी है जाते विष नहीं व्यापने का। पंचमुखी सर्प अहंकार ताके पांच मुखन ते पांच प्रकार की बानी निकरी। प्रथम मुख बिश्व ताते कर्मकांड निकरा । दूसरा मुख तैजस ताते योगकांड निकरा । तीसरा मुख प्राज्ञ ताते उपासना कांड निकरा । चौथा मुख प्रत्यगात्मा ताते ज्ञानकांड निकरा । पांचवां मुख निरंजन ताते अद्वैत कांड निकरा। सो ऐसे सर्प का बेडा बांधा, जहाज बांधा, अपने मनसे कल्पिके भवसागर अनुमान किया औ ताको माना। तब ये नरदेहमेंसे पंचमुखी हंकार उठा सो ता हंकार को पकड के उसपर सब जीव चढे भवसागर पार होनेके वास्ते। अब जो विचार कर के छोडा चाहता है तब भवसागर का भय जो बूड जायेंगे औ पकडे रहते हैं तो वो सर्प डसा करता है धोखे में डारता है

अब जीव क्या उपाय करै । ये शंका । तो विचार करके परखना कि भवसागर भी मेरा अनुमान मिथ्या भूत औ बेडा भी मेरी कल्पना मिथ्याभूत, सर्प भी मेरी मानंदी मिथ्याभूत, मैं सब का पारखी पारखरूप सब से न्यारा । ऐसा बार बार स्मरण करके बेडा सर्प भवसागर सब से न्यारा होना । ये अभिप्राय । शिष्य को स्थिति प्राप्त भई नहीं तातें शंका भई कि ये पांचो हंकार छोडके मेरी स्थिति क्या है ये मालूम न भई औ पांचों हंकार छोडके कहां जाऊँ औ इन को पकडा रहता हौं तो ये सर्प मेरे को खाय जाता है ऐसी शंका भई । तापर स्थिति पीछे से गुरुने बताई कि पारख भूमिका पर आय के स्थिर हो जा । औ भास अध्यासादि अनुमान कल्पना सब परख के छोड दे । ये अर्थ ॥ ११८ ॥

साखी—हाथ कटोरा खोवा भरा । मग जोवत दिन जाय॥
कबीर उतरा चित्तसे । छांड दियो नहिं जाय॥ ११९ ॥

टीका गुरुमुख—प्रीति की रीति ऐसी होती, है कि हाथमें खोवाका कटोरा भरा है औ रस्ता देख रहे हैं जो मेरा मित्र कब आवै औ मेरे से मांगे मैं देऊँ, येही भाव से रात दिन जाता है । तद्वत गुरु साहेब सतशिष्य पर प्रीति रखते हैं कधी मुरसते टारते नहीं । औ सतशिष्य का जो कछु मनोदय हो ताको पुराने वास्ते सदा अभय कर धारण किया है। कि जो कछु सत शिष्य के अंतःकरण में उठै सो पूर्ण करूं। औ दूध कहिये बहु बानी ताको औटके सब कसर विकार जराय के, सार बिचाररूपी खोवा बनाय के, प्रीतिरूपी पात्र में लेके धारण किया, कि कोई मेरा मित्र आवै औ ये बिचार लेके पारखपद को प्राप्त होवै । येही भाव गुरुके विषय सदा रहता है परंतु शिष्य कधी गुरुको चित्त से उतरे नहीं सदा चित्त गुरु के विषय औ सदा मन

गुरुके शब्द विषय औ सदा गुरुके शब्द प्रमाण बिचार करके आच-रण करै, कधी प्राण जाय तो भी गुरुके शब्द बाहर न होय । औ आशा स्वर्गादिक,तृष्णा राजलक्ष्मी विषय प्राप्ती आदिक संपूर्ण त्याग करै, इन बस्तुनको तीन काल में स्फुर्ण होवै देवै नहीं, इनको मिथ्याभूत जाने, इनका अभाव रक्खे । औ स्त्री की प्राप्ती समाय कामके आधीन न होवै । औ अपमान की प्राप्ती समय क्रोध के आधीन न होवै । औ अपने को द्रव्य प्राप्ती समय लोभ के आधीन न होवै । औ सुज्जन मित्र पुत्र पौत्रादि प्राप्ती समय अथवा वियोग समय मोहके आधीन न होवै । औ काल की प्राप्ती समय या दुःखकी प्राप्ती समय भयके आधीन न होवै । अपनी सुरतसे सदा गुरुमें मिला रहै पारख स्थिति के भाव से,ताको सत शिष्य कहिये।ताको संपूर्णता गुरु साहेब करते हैं;वो शिष्यपर गुरु साहेब की प्रीति अत्यंत रहती है। ये प्रीति के लक्षण ।अब बे प्रीतिके लक्षण सुनो । कबीर उतरा चीतते, छांछ दियो नहिं जाय ।जो गुरुके चित्त से जीव उतरा ताको छाँछ तत्वमस्यादि बानी भी नहीं दई जाती।जाको गुरुपद की प्रीतिहै ताको गुरु अपना पद देनेको तैयार हैं सत शिष्य को औ संपूर्ण उसकी मनोदय पूर्ण करते हैं । औ असत् शिष्य ऊपर तो गुरु का शिष्य कहलाता है औ भीतर अनेक कल्पना अनेक भावना अनेक वासना बनी हैं। औ काम क्रोध लोभ मोह में आसक्त है, इनके संग उन्मत भया है, उसे छांछ भी नहीं दिया जाता। जो एक न कछु बानी बाना, कुछ उसका कारज भी नहीं करा जाता । क्योंकि वो गुरुके चित्त से उतरा है; गुरुकी तरफ उसने पीठ फेरी है, बेमुख है । ये अर्थ । आगे दूसरा अर्थ–हाथ कटोरा कहिये हाथ का पात्र सो गुरु कहते हैं कि मनुष्य देह येही बिचार का पात्र, सो जीवने बेद बानी के भरोसे खोया खो दिया औ बानी के प्रमाण से आप

राम बना औ सबमें भरा । औ चित से उतर गया, चैतन्य भावसे उतरा जड दशा धारण की गुरुवा लोगन की बानी के प्रमाणसे । सो इनको गुरुवा लोग गुरुपद तो क्या देवेंगे जो उनको हि प्राप्ती नहीं परंतु छांछ माफिक मनुष्य तन सो भी नहीं दिया जाने का । ये अर्थ ॥ ११९ ॥

साखी--एक कहौं तो है नहीं । दोय कहौं तो गारि ॥
है जैसा का रहै तैसा । कहहिं कबीर बिचारि ॥१२०

टीका गुरुमुख--एक ब्रह्म या एक आत्मा या एक संपूर्ण जैसे का तैसा बाहर भीतर चिउँटीसे ब्रह्म परियंत एक ऐसा कहना तो कुछ है नहीं बिचार में ठहरता नहीं औ जीव पर दूसरा मालिक बताऊँ तो वो भी नहीं मिथ्या गारी है । क्योंकि एक आत्मा ये तो जीव का भास अध्यास है दूसरा कर्ता ये जीव का अनुमान कल्पना, तो दोनों मिथ्या, औ जैसा ये जीव सत्य है तैसा यह यथार्थ विचार करे । जासे विचारादि सब तत्व परखनेमें आवै सो पारखपर रहि जावै रहित होय । ये अर्थ ॥ १२० ॥

साखी--अमृत केरी पूरिया । बहु विधि दीन्ही छोरी ॥
आप सरीखा जो मिलै । ताहि पियावहु घोर ॥ १२१ ॥

टीका गुरुमुख--अमृत कहिये जीव ताकी स्थिति पारख तो बहुत प्रकारसे खोलिके समुझाय दिया । अब हे पारखी हो ! जो कोई तुम्हारे सरीखा सत शिष्य मिलै ताको सकल निरुवारा करके समझाय देव । ये अर्थ ॥ १२१ ॥

साखी--अमृत केरी मोटरी । शिर से धरी उतार ॥
जाहि कहौं मैं एक है । सो मोहिं कहै दुइचार १२२

टीका गुरुमुख--इस संसार ने विचार की मोटरी शिरसे उतार

धरी कोई बिचार करता नहीं । जाको मैं कहता हौं कि एक जीव सत्य है और सब मिथ्या भ्रम है सो मेरे को दुई चार कहता है। एक ईश्वर एक जीव दो, ब्रह्मा विष्णु महेश औ देवी देवता ये बताते हैं औ सत वस्तु नहीं मानता । असत्य देवता असत्य बानीका पक्ष करके मिथ्याबाद करताहै । ये अर्थ । अब गुरुका उपदेश तो होचुका आगे मायाका उपदेश गुरु बताते हैं सुनो ॥ १२२ ॥

साखी–जाको मुनिवर तप करै । वेद थके गुण गाय ॥
सोई देव सिखापना । कोई नहिं पतिआय ॥१२३॥

टीका मायामुख–ये मायाका उपदेश ऐसा है कि जो परमात्माके वास्ते अमित देवता व्यासादि मुनि श्रेष्ठ तपस्या करते हैं औ वेद जाका गुण गाय २ थके नेति नेति कहा । सोई ब्रह्म उपदेश मैं संसारमें करता हौं परंतु ये जीव अज्ञान वश कोई पतियाता नहीं । ये अर्थ । इस प्रकारसे गुरुवालोग संसारमें सूचना हढाने लगे. तब जीवनकी लालच बढी औ ब्रह्म उपदेश लेनेको गुरुवालोगनकी शरणमें गये । तो गुरुवा लोग क्या उपदेश करते हैं सो सुनो ॥ १२३ ॥

साखी–एकते अनन्त भौ । अनन्त एक होय आय ॥
परिचय भई एकते तब । अनन्तो एकै माहिं समाय १२४॥

टीका मायामुख–एक ब्रह्म ताहीते अनन्त जगत पैदा भया, जल तरङ्ग न्याय, सुवर्ण भूषण न्याय, मृत्तिका घट न्याय । ताते जो एक ब्रह्म था सोई अनन्त जगत बनि आया । जगत ब्रह्म अभेद कछु भेद नहीं भ्रांती मात्र भेद त्यागके ब्रह्म परिचय करना । फिर अनन्त जगत एक ब्रह्ममें समाया, जैसा जलका तरङ्ग जलमें मृत्तिकाका घट मृत्तिकामें सुवर्णका भूषण सुवर्णमें, तद्वत अनंत जगत एकमें समाया । औ अभी एक ब्रह्म ही है आदि अन्त मध्य में एक ब्रह्म

द्वैत मिथ्या भ्रांती । जैसा जल तरंग जलही है, मृत्तिकाका घट मृत्तिका ही है, सुवर्ण का भूषण सुवर्ण ही है, तद्वत जगत सब ब्रह्मरूप । ये अर्थ ॥ १२४ ॥

साखी–एक शब्द गुरु देवका । ताका अनंत बिचार ॥
थाके मुनिजन पंडिता । बेद न पावै पार ॥ १२५ ॥

टीका मायामुख–एक शब्द ॐकार गुरुदेव ब्रह्माका ताही ॐकारका अनंत बिचार, चार बेद छौ शास्त्रादि ऋषी मुनी औ ब्रह्मादिक पंडित सब थक गये किसी ने पार पाया नहीं, क्योंकि सम्पूर्ण प्रणव रूप है । प्रणव का निराकरण बहुत प्रकार से पीछे भया है तातें संक्षेपार्थ कहा । ये अर्थ ॥ १२५ ॥

साखी–राउर के पिछवारे । गावै चारिउ सैन ॥
जीव परा बहु लूट में । ना कछु लेन न देन ॥१२६॥

टीका गुरुमुख–राउर ऐसी संबोधना ॐकार को बेद देता है औ ताही प्रणव के पीछे चारिउ सैन चारिउ बेद बताते हैं ऋग्वेद तुर्या स्वरूप, निर्गुण निराकार निर्लेप अगम अगोचर परमात्मा ये अर्धमात्रा की सैन । औ यजुर्वेद उकार की सैन, सगुण ब्रह्मविशिष्टाद्वैत क्षीर सागर बासी नारायण सब शक्तिमान बोलता है । अथर्वन बेद मकार को सैन बोलता है, कि दृष्टिगोचर जगत येही सत्य है और सगुण निर्गुण उपासना सब मिथ्या, जो मरा सो मुक्त हुवा मरे फिर आय के जन्मता नहीं । सामबेद अकारकी सैन, संपूर्ण चराचर ब्रह्म रूप कहता है । ये चारों सैन चारों बेद गाते हैं । पांचवां स्वसंवेद अनुभव बिंदुसही करता है । सो इनका महात्म सुन के जीव बहु लूट में परा, परम आनंदको प्राप्त भया, परन्तु न कछु लेना न देना । जैसे का तैसा आत्मा आदि अंत मध्य रहित परिपूर्ण है इस प्रकार कहिके थका, ब्रह्म भ्रममें परा । ये अर्थ ॥ १२६ ॥

साखी–चौगोडा के देखते । ब्याधा भागा जाय ॥
अचरज एक देखो हे संतो । मूवा ताल हि खाय १२७

टीका गुरुमुख–चौगोडा ॐकार जाके चारों बेद गोड औ स्वयंवेद धड औ शीसका ठिकानाही नहीं । ऐसे ॐकारके सन्मुख जो होता है तो वही ॐकार इस मन को खा जाता है तो हे संतो ये बडा आश्चर्य है कि ॐकार मुरदा सो इस मन को खा जाता है मन सोई काल । ये अर्थ ॥ १२७ ॥

साखी–तीन लोक चोरी भई । सबका सरबस लीन्ह ॥
बिना मूडका चोरवा । परा न काहू चीन्ह ॥१२८॥

टीका गुरुमुख–तीनलोक राजस भक्त, तामस योगी, सात्विक ज्ञानी, इन तीनोंके घर चोरी भई सो इनका जीव समेत सरबस हर लिया । उकार मात्रा नें भक्तन को हरलीन्ह, मकार मात्राने योगिन को हरलीन्ह, अर्धमात्रा ने ज्ञानिन को हरलीन्ह, सबको भरमाय लीन्हा । पर ये बिना मूडका चोर ॐकार काहू के चीन्हनेमें न आया कि मिथ्या कल्पना है ताते सब जगको खा लिया । ये अर्थ । या बिना मूडका चोर कहिये काम जाने तीन लोक में चोरी करी औ देव दैत्य मनुष्य सबका ज्ञान हरलीन्हा । औ अपने बश कर के सबको गर्भबास अँधियारी कोठरी में कैद कीन्ह । इस कामके बँधुवा होके सब कोई नाचते हैं ब्रह्मादि बिष्णवादि शिवादि पर यह काम चोर काहुको चीन्ह परा नहीं । ये अर्थ ॥ १२८ ॥

साखी–चक्की चलते देखके । मेरे नैनन आया रोय ॥
दुइ पाट भीतर आयके । साबुत गया न कोय ॥१२९॥

टीका गुरुमुख–संसार सोई चक्की, धरती आकाश दो पाट, सुमेर

सोई किल्ला, औ कर्मकांड सोई हाथ खूंटा,पीसनेवाली कल्पना नारी तामें सब कर्मी जीव पिसे जाते हैं । औ सगुण निर्गुण दोनों पाट, ईश्वर किल्ला, उपासना हाथ खूंटा, अनुमान पीसनेवाली, तामें सगुण निर्गुण उपासक जीव पिसे जाते हैं । औ पिंड ब्रह्मांड दोऊ पाट सुषुमना किल्ला, योग क्रिया हाथ खूंटा, पीसेनवाली योगशक्ती, तामें योगी लोग पीसे जाते हैं । औ तत् त्वं दोनों पाट, असी किल्ला, वेद श्रुति हाथ खूँटा पीसने वाली आत्मवृत्ती, तामें ज्ञानी जीव सब पिसे जाते हैं । औ नित्यअनित्य दोनों पाट, साथी किल्ला, प्रकृती हाथ खूंटा पीसनेवाली ज्ञानशक्ती, तामें सांख्य योगी पीसे जाते हैं । स्थूल कैवल्य दोनों पाट, तुर्या महाकारण किल्ला सूक्ष्म हाथ खूँटा कारण पीसनेवाली, तामें सकल जीव पिसे जाते हैं । औ स्त्री पुरुष दोऊ पाट, काम किल्ला, विषय हाथ खूंटा, पीसनेवाली वासना, तामें विषयी जीव पीसे जाते हैं । इस प्रकार की चक्की चलती है सो देखके मेरे नैनमें आसू आया कि ये देखो दोनों पाटन में आयके कोई जीव साबुत गया नहीं हंसपदको, सब चनकाचूर बहोश हुये । ये अर्थ ॥ १२९ ॥

साखी—चार चोर चोरी चले । पग पानही उतार ॥
चारिउ दर थूनी लगी । पंडित करहु विचार ॥ १३० ॥

टीका गुरुमुख—चार चोर कहिये चार वेद, सो जीवनके जीवन धन हरण करने चले परंतु यही चोर हमारे घटमें चोरी करते हैं ऐसा कोई जीवको मालूम हुवा नहीं ताते गृही वानप्रस्थ संन्यासी ब्रह्मचारी ये चारों दर पांवकी जूती उतार के वेदन के पीछे लगे । सो वेदने चारो दरमें थूनी गाड दई की कोई एक परमात्मा है । ताके निमित्त अपने अपने आश्रम के कर्म यथाविधि

आचरण करना तब मुक्ति होवेगी, नहीं तो घोर नर्क में जावोगे ऐसी थूनी हनी, तब सब बडे बडे पंडित बुद्धिमान वाही थूनी का बिचार करने लगे । ये अर्थ । या चार चोर चार अभिमान थे चोरीको चले सो अपनी अपनी पनही इन्द्री छोडके जीवनके पीछे पडे औ चारो दर चारों बर्ण में थूनी गाडी । बिश्व अभिमान ने कर्मकांडकी थूनी गाडी, तैजस अभिमान ने उपासना की थूनी गाडी, प्राज्ञ अभिमान ने योगकी थूनी हनी, सो ताहीका प्रत्यज्ञात्मा अभिमान ने ज्ञानकांडकी थूनी हनी बिचार सब पंडित करने लगे । ये अर्थ । चार चोर कहिये चित्त मन बुद्धि अहंकार वे चोरीको चले अपनी इंद्री उतार के जीवन के पीछे पडे, सो चारों दर चार खानी में कोई ब्रह्म है ऐसी थूनी हनी । मनने संकल्प की थूनी गाडी; चित्तने अनुसंधान की थूनी गाडी, बुद्धि ने निश्चयकी थूनी गाडी, हंकार ने करतूतकी थूनी हनी, सो ताहिका बिचार सब पंडित करने लगे । ये अर्थ । औ चार चोर काम क्रोध लोभ मोह, ये चोरी करने चले जीव के इहां जूती उतार के पीछे पडे, सो चारों खानी में थूनी गाड दई । कामने विषय की थूनी गाडी, क्रोध ने बुराई की थूनी गाडी, लोभने द्रव्य की थूनी गाडी, मोहने स्त्री पुत्रादिक कुटुंब की थूनी हनी, औ सब जीवन का ज्ञान हरलीन्ह, जीवनको आसक्त कीन्ह । सो हे बुद्धिमान तुम बिचार करके चोरों-को कैद करो, इन चोरोंको मार निकारो, इनसे कधी गाफिल न रहना, ये लूट डारैंगे । ये अर्थ ॥ १३० ॥

साखी—बलिहारी वह दूधकी । जामें निकरे घीव ॥
आधी साखी कबीरकी । चारि बेदका जीव ॥ १३१ ॥

टीका मायामुख—माया कहतीहै कि बलिहारी वह दूध की,

दूध कहिये बानी, सो ब्रह्म बानीकी प्रशंसा गुरुवालोग करतेहैं कि धन्य वह बेद औ बानी जामेंसे शुद्ध सतोगुण ज्ञान बीव निकरा, सोई हमारे गुरु कबीर ब्रह्मरूपी, जिन्ह हमरेको अर्धमात्रा का उपदेश किया । औ चार बेदका जीव सो सर्वसाक्षी परब्रह्म सो अपरोक्ष अनुभव सहवर्तमान हमको बताया । ऐसा मायाने अपना उपदेश किया प्रशंसा किया । ये अभिप्राय ॥ १३१ ॥

साखी–बलिहारी तेहि पुरुषकी । जो परचित परखनहार ॥
साईं दीन्हों खांडको । खारी बूझै गवांर ॥ १३२ ॥

टीका गुरुमुख–अब मायाने जो अपने उपदेश की प्रशंसा की ताका निराकरण गुरु करतेहैं । अरे उस पुरुषकी बलिहारी जो पारख की प्रतीत करै औ संपूर्ण कसर बिकार निहार के निकार डारै औ आप शुद्ध पारख रूप हो रहै ताहि पुरुष की बलिहारी । औ ब्रह्म स्थिति अन्वय व्यतिरेक सहित खांडका हीरा है ताको सच्चा खरा ऐसा जो बूझताहै सो गँवार ठगाय गया, सो वह पारखी चौरासीमें गोता खायगा । खांड कहिये आकाश, आकाश कहिये ब्रह्म, ब्रह्म कहिये प्रथम अनुमान जीवका, दूसरा अध्यास जीवका, तीसरा भाग जीवका चौथी कल्पना जीवकी । अनुमान चित्त संबंधी, अध्यास अहंकार संबंधी भास, बुद्धि संबंधी, कल्पना मन संबन्धी । अब दूसरा ब्रह्म ये कल्पना, मैं ब्रह्म ये अध्यास, कोई ब्रह्म है कहूं ये अनुमान, संपूर्ण आतमा आपै आप; न सगुण न निर्गुण, न साक्षी न असाक्षी । न एक न दो न सविकल्प न निर्विकल्प तो जैसे का तैसा ये भास अंब अंतःकरण चतुष्टय सोई आकाश, ताका हीरा ब्रह्म सो विजातीय मिथ्या भ्रम ऐसा जाके परखनेमें आवै सो परखके न्यारा होय ताकी बलिहारी । औ ऐसे मिथ्या भ्रमको मानके जो प्रशंसा करै सो मूर्ख गवांर, वो अपने पद से बेमुख । ये अर्थ ॥ १३२ ॥

साखी–विषके बिरवे घर कियां । रहा सर्प लपटाय ॥
तातें जियरहिं डर भया । जागत रैन बिहाय॥१३३॥

टीका गुरुमुख–विषका बिरवा लोगन का उपदेश बेद बानी तानें जीवके अन्तःकरण में घर किया। तामें पंचमुखी सर्प अभिमान लपटाय रहाहै तातें जीवनको डर भया सो जागते ही रात दिन जाता है। कहीं गुरुवा लोगनने उपदेश अनेक देवतन का किया कि कहीं दूसरा ब्रह्म है ऐसा किया, कहीं अहं ब्रह्म, कहीं तत्वमसी कहीं योग समाधि, कहीं कर्म, कहीं उपासना, ऐसे नाना उपदेश किया, ताका अभिमान बढा सो प्राणीकी फिकिर भई तातें रैन बिहाय। ये अर्थ ॥ १३३ ॥

साखी-जो घर हैगा सर्पका । सो घर साधन होय ॥
सकल संपदा लेगये । विष भरिलागा सोय॥१३४॥

टीका गुरुमुख–जो पंचमुखी सर्प का घर है ताहीमें नानाप्रकार के योग साधन कर्म साधन हो रहेहैं। तो जो सर्पके घर में साधन करेगा तो सर्प छोडने का नहीं एक दिन खा जायगा। ये अहंकार सर्प महा विषधर जीवके पीछे लगाहै सो जीवको डस दिया। तब अपना करतूतरूपी जहर जीव पर चढा, तातें सकल सत्त विचार दया शील धीरज आदि संपत्ति जीवको नाश हुई, विषनें खाय लिया। पिंडांड ब्रह्मांड ये सर्पका घर याको परखके न्यारा होना पारख भूमिका पर। ये अर्थ ॥ १३४ ॥

साखी–घुंघुची भरके बोइये। उपजा पसेरी आठ ॥
डेरा परा कालका । सांझ सकारे जात ॥ १३५ ॥

टीका गुरुमुख–सजीव काय जो घुँघुची भर स्त्रीके कमलमें बोय दिया तातें आठ पसेरी मन भरका चोला उपजा सोई कालका डेरा।

परा । ताही का अभिमान जीवने किया ताते सांझ सकारे गर्भ बास में जायगा । ये अर्थ । काल कहिये, गर्भ कहिये हंकार कहिये, सो हंकार का डेरा चोला, आठ पसेरी पांच तत्व तीन गुण, याके माने जीव आवागवन में परा । जैसा दिन निकरा फिर सांझ गई फिर दिन निकला । तद्वत जीव मरा फिर पैदा भया पैदा भया फिर मरा। ये अर्थ । सब का बीज घुंघुची भर महाकारण ज्ञान देही, सो ज्ञानदेही का अध्यारोप किया ताही में आठ पसेरी का स्थूल धारण करके पैदा भया, सोई अज्ञान काल का डेरा परा । ता स्थूल में अज्ञानकी अंधियारी छाय गई सोई सांझ पर गई । तामें दिन ज्ञान सोई डूब गया ताते अहं ब्रह्म ऐसा जो ज्ञानदेही तुर्यस्थ सर्व हुवा, साक्षी सोई काल सब संसार को खाने लगा औ उत्पत्ती करने लगा । ये अर्थ । ये जीव के अध्याससे घुंघुची भर महाकारण सिद्ध हुवा औ इस जीव के सामिलाता से घुघुंची भर काम बोया तोस्थूल पैदा भया । अगर जीव दोनों बंधन को पारखके छोडे औ आप पारख भूमिका पर ठहरे तो न महाकारण ही है न स्थूल ही है । ये जीवकी सत्तासे जगत् ब्रह्म दोनों हैं, जीव न्यारा भया तो कछु नहीं ये अभिप्राय ॥१३५॥

साखी–मन भरके बोइये। घुंघुचीभर नहिं होय॥
कहा हमार माने नहीं। अन्तहु चले बिगोय ॥१३६॥

टीका गुरुमुख–संतो देखो जो निर्जीव बिंद मन भर बोय देव तो वहां से कछु जीव बालक पैदा हो नहीं सक्ता। अगर मनभर को देह चाहै सभी गाड देव इसते कछु पैदा हो सकने का नहीं औ जीव को जहां रोप देवोगे तहां मनभरका चोला पैदा करेगा । औ जीव विना अहं ब्रह्म ऐसा सिद्धांत भी नहीं हो सकने का, ताते ब्रह्म है ना कोऊ, सब मिथ्या धोखा सबका आदि कारण जीव सोई ज्ञानरूप, परंतु बिना पारख भरमता है उसकी स्थिति कछु हो सक्की नहीं । अरे

एक जीवकी सत्तासे स्थूल सूक्ष्म कारणादि मनभर का रूप पैदा भया । परंतु ये तीनों मनके बोयेसे कछु एक ज्ञानरूप उपज सकता नहीं क्योंकि ये जड हैं, ताते एक ज्ञानसे ये तीनों उपज सक्के नहीं क्योंकि ज्ञान चैतन्य है ताते सामर्थ है । सो ज्ञानको दोष गुरुने क्यों लगाया कि सबका आदि कारण है औ अज्ञान क्लेश खानीका बीज है ताते ज्ञानकी कछु स्थिति नहीं यही दोष । ताते ज्ञानने सम्पूर्ण अभिमान छोडके पारखकी शरण होना औ पारख रूप हो रहना पारख सोई ज्ञानकी भूमिका ताबिना ज्ञानकी स्थिति कहीं नहीं इसप्रकारसे हमारा कहा कोई मानता नहीं सब ज्ञान अज्ञान जड धोखेमें बंध हो रहे हैं ताते आखिर को खराब हो चले गर्भवास में जडरूप हो चले । ये अर्थ । अब ज्ञान सोई जीव ये विचारमें ठहरा परंतु ज्ञान एक कि अनेक । ये शंका । अरे ज्ञान कछु एक नहीं, जेते घट तेते ज्ञान, परंतु ज्ञानकी जाती एक, घट उपाधी ऐसे अनेक हो गया सो कधी तीन काल में एक हो सक्का नहीं, एक मानना ये मिथ्या अध्यास है । ये अभिप्राय । तो भला सूर्य एक है औ घट जल उपाधी से अनेक मालूम होता है ताको एक मानिये कि अनेक मानिये । ये शंका । तो सूर्य एक न्यारा ऊपर है ताते ताके प्रतिबिम्ब उपाधी सहित अनेक मालूम होते हैं । बिम्ब प्रतिबिम्ब अनन्य भाव ताको एक मानिये । तैसा जीवके ऊपर कोई दूसरा बिम्ब नहीं जो ताका प्रतिबिम्ब जीव अनन्य भाव मानिये । ये जीव आपही स्वतन्त्र है पर घट उपाधी से अनेक नजर आता है याको एक कैसा मानिये । कोई एक मिथ्यावादी कहते हैं कि ब्रह्म एक बिम्ब है ताका घट बुद्धी सहित जीव प्रति-बिम्ब अनेक मालूम होता है सो मिथ्या भ्रम है । क्योंकि जो प्रतिबिम्ब जीव होता तो इसे कधी ज्ञान न होता क्योंकि प्रतिबिम्ब

को कछु ज्ञान होता नहीं औ जीवको ज्ञान होता है । औ ब्रह्म भी मानिये तो ब्रह्म जीवका प्रतिबिम्ब है क्योंकि प्रतिबिम्ब को कछु बिंब का ज्ञान नहीं औ बिंब को प्रतिबिंब का ज्ञान होता है । ब्रह्म को कछु जीव का ज्ञान नहीं औ जीवको ब्रह्मका ज्ञान है । ब्रह्म कछु जीवको प्रतिपादन करता नहीं औ जीव ब्रह्मको प्रतिपादन करता है । जैसे अपनी देह औ देह की छाया, सो देह से छाया का ज्ञान मालूम होता है कछु छाया से देहका ज्ञान मालूम होता नहीं । तद्वत जीव से ब्रह्मका ज्ञान मालूम होता है कछु ब्रह्म से जीवका ज्ञान नहीं तब ब्रह्म जीव का प्रतिबिंब मिथ्या भास जीव सत्य । परंतु जेते देह तेते जीव सबकी जाती एक है पर पृथक पृथक रहते हैं । जो कभी पारख भूमिका को पाया तो ता भूमिका पर एक हो सक्के हैं औ जो भूमिका छोडते हैं सो सब पृथक पृथक हैं । ये अर्थ ॥ १३६ ॥

साखी–आपा तजै हरि भजै । नख सिख तजै बिकार ॥
सब जीवनसे निर्बैर रहै । साधुमता है सार ॥ १३७ ॥

टीका गुरुमुख–एक तो हंकार छोड दे औ दूसरे हरि भजै, तीसरे नख से शिखा परियंत ये देह बिकाररूपी जान के इसके संपूर्ण विषय बिष प्रायः छोडे औ चौथे सब जीवन से निर्वैर रहै काहू से वैर भाष न रक्खे; पाँचवें साधुमता धारण करे तब सार पारखको प्राप्त होवेगा । अब हरी कहिये, माया कहिये, स्त्री कहिये कल्पना कहिये, बानी कहिये, बेद कहिये, सो एक अहंकार छोडे, सकल सपत्नी सहित हरी भाग जाती है । हंकार छूटा फिर कहां माया औ कहां स्त्री औ कहां काया, कहां कल्पना, कहां बानी कहां बेद येती छै विधि मायाका अधिष्ठान कारण हंकार । सो एक अहंकार का त्याग किये ते सबका त्याग होता है औ सब का त्याग

हुवा तब विषय विकार आपही त्याग होता है औ जब विषय विकार त्याग हुवा तब साधुमता सहजही प्राप्त होती है । औ साधुमता प्राप्त भई तब पारख पद प्राप्त होना कछु मुशकिल नहीं । पर जो भूले बैठे हैं ताको कोई क्या करे । तो ये पारख प्राप्ती की साधना कहता हूँ, कि प्रथम अहंकार का विचार करना जो अहंकार कहांलग है । फिर विश्व तैजस प्राज्ञ प्रत्यज्ञात्मा निरंजन ये पांचों अभिमान छोडे, इनको कधी तीनकाल में उठने देवै नहीं अगर उठै तो वारंवार विचार शास्त्र से खंडन कर । जब ये पांचों अभिमानका निरसन भया तब बाकी हंस के पास जमा रहा विचार सोई तत्व ग्रहण करना । फिर माया स्त्री काया कल्पना वेद बानी का कछु प्रयोजन आसक्तता रही नहीं । क्योंकि मिथ्या नाशमान बिजाती बंधन जान के आसक्तता छूटी तब धीरज सहजकी बाकी रहा सोई तत्व ग्रहण करना । आसक्तता जब छूटी तब नखसे शिखा परियंत स्थूल सूक्ष्म कारण महाकारण कैवल्य आदि विकार त्याग हुवा मिथ्या भ्रम जानेके जब मिथ्या भ्रम का त्याग हुवा तब बाकी जमा सांच रहा सोई तत्व ग्रहण करना । जब मिथ्या विकार का त्याग हुवा तब सांच तत्व ग्रहण हुवा तब बैर भाव सब जीवसे छूटा औ निर्वैर रहने लगा ।औ निर्वैर होके बैर त्यागा तब बाकी जमा रही दया सो तत्व ग्रहण करना । जब दया तत्व ग्रहण हुवा तब कठोरता असहनता छूटीऔ बाकी रहा शील सोई साधुमत ताही तत्वको ग्रहण करना ।जब पांचों तत्व विशेष करके जीवके संगी हुये तब पारखपद का अधिकारीहुवा। तब संपूर्ण कच्चे पक्के पारख के अलगाय देना जासे कच्चे पक्के दोनोंपरख में आवै सोई पारख पर थीर होना पारख सोई सारपद।ये अर्थ १३७

साखी—पछापछीके कारने । सब जग रहा भुलान ॥
निर्पछ होयके हरि भजै । सोई संत सुजान ॥१३८॥

टीका गुरुमुख-पछ कहिये कर्म उपासनादि बानी का वा बेदका वा स्त्री पुत्र कुटुंब धन संपति जाति पांति लोक मर्यादाका औ अपछ ज्ञानका, योगका, ब्रह्म अनुभवका । ये दोनों कारण जीवके पीछे बडे पक्के होके परेहैं ताते पारखका रास्ता सब जीव भूल गये । निर्पछ कहिये जहां पछ अपछ दोनों कारण नहीं सो पछ अपछ दोनों छोडके निर्पछ होय । औ हरी कहिये अनुमान भास अध्यास तासे भागे पारख भूमिका पर आये । सकल पछा पछी छोडके स्थिर होय शांत होय सोई संत सुजान । ये अर्थ । भला बेद शास्त्रादिक बडे बडेका पछ औ ब्रह्म आत्मा ये बडे बडेका अनुभव अपछ सो दोनोंका कैसे छोडना । ये शंका । इसको गुरु निराकरण करतेहैं ॥ १३८ ॥

साखी–बडे गये बडापने । रोम रोम हंकार ॥
सतगुरुके परचय बिना । चारों वर्ण चमार ॥१३९॥

टीका गुरुमुख–बडे कहिये ब्रह्मा विष्णु महेश सनकादि शौन-कादि औ तारादि वेदांती सिद्धांती महासिद्ध ते सब बडपने में भूले पंचमुखी हंकार ने उनको खोय लिया सो उनके रोम रोम में हंकार विष भरा था ताते नाना कर्म, नाना उपासना, नाना सिद्धांत, नाना ग्रंथ नाना पंथ उन्होंने चलाये । चार आश्रम चार बर्ण उन्हें थापे औ बेद मर्यादा थापी औ जगत में सतगुरु बने । अपने अपने हंकार में मस्त हुये अभिमान छोड के सारशब्द का बिचार कछु किया नहीं और पारख पदको प्राप्त कुछ भये नहीं । ताते हंकार में बश होके चौरासी में रहे । औ संसार को ठगाई किया नाना पक्ष लगाय के, आखिर जगतही सब मेरा स्वरूप ये सिद्धांत किया ताते इन गुरुवन के मिथ्या सिद्धांत जब लग पारखमें न आवेंगे तबलग चारों बर्ण चमार । सदा चमडेमें रहेंगे कछु चमडे से छुटनेके नहीं जो चमडेमें आसक्त रहै सोई चमार । ये अर्थ ॥ १३९ ॥

साखी–माया तजे क्या भया । जो मान तजा नहिं जाय ॥
जेहि माने मुनिवर ठगे । सो मान सबनको खाय॥ १४०॥

टीका गुरुमुख–संपूर्ण माया छोड दिया औ जंगलमें जाय बैठे औ परमहंस हो गये; बाल पिशाच मूक उन्मत्त जडवत हो गये तो भी क्या हुवा क्या पारखका अधिकारी होगया । अरे मान तो छूटता नहीं, काहूने ब्रह्म माना, काहूने आत्मा माना, काहूने ईश्वर माना, काहूने नाना देवता औ स्वर्ग आदिक सुख माना सो मान काहूसे तजा जाता नहीं । जेही मानमें देव ऋषी मुनी सब ठगाय गये सो ब्रह्म मान सबको खाता है । मान छोडे बिना पारख पदकी प्राप्ती होती नहीं औ पारख पद पाये बिना जीवका आवागवन कुछ छूटता नहीं । ये अर्थ ॥ १४० ॥

साखी–मायाके झक जग जरे । कनक कामिनी लाग ॥
कहहिं कबीर कस बांचिहो । रुई लपेटी आग॥ १४१॥

टीका गुरुमुख–मायाकी झांक में जग जरता है तामें और कनक कामिनी का लोभ लगा है । अंगमें रुई लपेटके आग में घुसे तो कैसा बचाव होयगा जरमरेगा । अभिमान विषय सोई माया कमन कामिनी रुई । ये अर्थ ॥ १४१ ॥

साखी–माया जग सांपिनि भई । विष ले पैठि पतार ॥
सब जग फंदे फंदिया । चले कबीरू काछ॥ १४१ ॥

टीका गुरुमुख–माया कहिये; काया कहिये, कल्पना कहिये, वेद कहिये, बानी कहिये, स्त्री कहिये, द्रव्य कहिये । सो येते रूप धरके माया जगत् में सांपिनि भई । औ विषय विष लेके पतार में पैठी अन्तःकरण में पैठी सो उस के फन्दे में सब जग फन्द गया । औ कबीरू कहिये जीव को, सो काछ के चले भाग के चले ब्रह्म में

मिलने के वास्ते । परन्तु जो कोई ब्रह्म माना है सोई माया है इनके परखने में आई नहीं सो ब्रह्म बन के माया ने जीव को खाय लिया । ये अर्थ ॥ १४२ ॥

साखी–सांप बिच्छूका मंत्र है । माहुरहू झारा जाय ॥
बिकट नारिके पाले परे । काढि करेजा खाय ॥ १४३ ॥

टीका गुरुमुख–जगत में सांप बिच्छू जहर इनका उतार है ये उतर जाता है परन्तु नारी का औ बानी का विष बडा बिकट है याका उतार एक पारख बिना दूसरा नहीं । जो कोई याके पाले पडे ताका करेजा काढ के खाय गई । स्त्री का जहर जाको चढा ताका जीव सकल संपती सहित खाय लिया । परंतु स्त्री का जहर किसीसे उतरा नहीं स्त्री का विष उतरना कठिनहै । ये अर्थ॥ १४३॥

साखी–तामस केरे तीन गुण । भौंर लेइ तहाँ बास ॥
एकै डारी तीन फल । भांटा ऊख कपास ॥ १४४ ॥

टीका गुरुमुख–तामस कहिये ब्रह्म ताके तीन गुण ज्ञान भक्ती औ योग, तामें ज्ञानी भक्त योगी ये संपूर्ण भौंरे बास लेते हैं । एक डारी माया तामें तीन फल लगे, भाँटा तमोगुण; ऊख सतोगुण, कपास रजोगुण । रजोगुण काम, सतोगुण धर्म, तमोगुण अर्थ, ज्ञानी आत्म-धर्म को प्राप्त भये भक्त स्वर्गादि काम को प्राप्त भये, योगिन को अष्ट सिद्धी आदि अर्थ की प्राप्ती भई । औ तामस कहिये ब्रह्म ताके तीन गुण तत्वमसी एक डारी तुर्या, तीन फल ज्ञान अज्ञान बिज्ञान, तत्पद सो भी ब्रह्म, त्वंपद सोभी ब्रह्म असीपद सो भी ब्रह्म । एक माया के तीन भेद ताही के तीन गुण, तीन गुण के तीन फल बेद कहता है । "श्लोक–ऊर्ध्वं गच्छंति सत्त्वस्था मध्ये तिष्ठंति राजसाः। जघन्यगुणवृत्तिस्था अधो गच्छंति तामसाः" ॥ १ ॥ याका अभि-

प्राय कि सात्विक उपासक जीव हैं सो अहिंसा धर्म आचरण करते हैं औ जीव दया रखते हैं। गुरू उपासना या बिष्णु उपासना शुद्ध आचरते हैं जल छान के पीते हैं औ अनिच्छा जो लाभ होय तामें खुश रहते हैं, काहू से द्वेषभाव रखते नहीं औ सत्तभाव साधुभाव से अत्यन्त जिनकी प्रीति सो ऊर्ध्व गच्छन्ति, ऊर्धलोक सर्वोपर ज्ञानपद को प्राप्त होते हैं। औ राजसी उपासक जो जीव हैं सो ब्राह्मण संतर्पण करते हैं, यज्ञ करते हैं, नाना देवनका सेवन करते हैं, बडी तपस्या करते हैं, तीर्थाटन ब्रत आदि करते हैं, मान प्रतिष्ठा का डिंभ रखते हैं, बहुत द्रव्य पैदा करके मान प्रतिष्ठा की जगा में खर्च करते हैं औ विधियुक्त कर्म आचरण करते हैं, वर्णाश्रम प्रमाण। ऐसे राज उपचार पूजन आपनेभी दूसरे का करना औ दूसरे से आपनेभी लेना ऐसी भावना उनकी सदा रहती है सो मध्ये तिष्ठंति, कहिये बीच में रहते हैं मानुष योनी को प्राप्त होते है। कोई राजा होते हैं, कोई धनवान संपतिवान होते हैं। औ कोई तामसी उपासक तमोगुण उपासना करते हैं। कोई काली की, कोई चंडी की, कोई रुद्र की, कोई महादेव की कोई बटुक भैरव, शाक्त ये उपासना करते हैं। औ बाममार्ग कँवलमार्ग आचरते हैं, जीवहिंसा करते हैं,मदिरा पान मांस भोजन करते हैं; भैरवीचक्र करते हैं औ स्त्रियन से रति करते हैं। नाना विषय में आसक्त रहते हैं औ शाक्तन को खिलाते हैं शाक्त ब्राह्मण का पूजन करते हैं, रुद्राक्ष भस्म बहुत धारण करते हैं ऐसे जो जीव हैं सो अधो पतन्ति कहिये तरे नाना नर्क खानी में पचते हैं। ऊंट की योनी अथवा श्वान की योनी, सूकर की योनी, गदहे की योनी, बकरे की योनी को प्राप्त होते हैं ऐसा भगवद्गीताका वाक्य है। सोई तीन फल यामें संपूर्ण जीव बंधमान भये। एक डारी तामें तीन प्रकार के फल बताये सो संपूर्ण जगत बंध भया तामस कहिये मन सो

मनकी कल्पना ये तीनों गुण औ मनका अध्यास तीनों फल, सो एक डार जो बानी है तामें जीवको दृढाया है । औ जीव उसीमें आसक्त है ताते त्रिविधी चौरासी भोगतेहैं । येता परखके न्यारा होय तब आवागवन से रहित होय । ये अर्थ ॥ १४४ ॥

साखी--मन मतंग गैयर हने । मनसाभई सचान ॥
यंत्र मंत्र माने नहीं । लागी उडि उडि खान ॥१४५॥

टीका गुरुमुख--मन मानंदी सोई मतंग उन्मत्तता जामें कुछ आप पर सूझ परता नहीं । औ मानंदीकी आश सोई मनसा सचान बांझ पक्षी माफिक उडी उडी फिरतीहै ताके मारनेको बेदादिक मंत्र औ यामलादिक यंत्र नाना प्रकारके पैदा भये । परन्तु वो काहू की मानती नहीं औ यंत्र मंत्रनके प्रतापसे ज्यादा पुष्ट होतीहै उडि उडिके जीवनको खाने लगी । ये अर्थ ॥ १४५ ॥

साखी--मन गयेंद्र माने नहीं । चलै सुरति के साथ ॥
महावत बिचारा क्या करै।जो अंकुश नाहीं हाथ१४६

टीका गुरुमुख--मन है सोई उन्मत्त हाथी तापर जीव महावत बैठा है परन्तु जीव महावत को मानता नहीं । मस्त हाथी मन है सो विषय आरण्य में औ बानीके आरण्यमें जीवको लेके चला जाताहै। औ भग खोरे का रहनेवाला हाथी सो जीवको लेके भग कंदलामें निवास करता है। जीव महावत बिचारा क्या करै उसके हाथ में बीर रूपी धैर्य औ बिवेकरूपी अंकुश है नहीं । उन्मत्त हाथी का चढना औ हाथमें अंकुश नहीं तब महावत की मृत्यु सहज ही आई । जो कोई पारखी संत मिलै औ गज मर्दन विचार दिखावै, ऐसा विचार महावत के हाथ में आवै तो हाथी वश होय । शार शब्द सोई गज मर्दन ये अर्थ । १४६ ॥

साखीः-ई मायाहै चूहडी । औ चूहडों की जोय ॥
बाप पूत अरुझायके । संग न काहुके होय॥ १४७ ॥

टीका गुरुमुख--ई माया कहिये काया सो चूहडी हलालखोरिन जो सदा नर्कमें भरी रहतीहै औ जो कायाका खाविंद है जीव सो कायामें आसक्त रहताहै सोभी चुहडे हलालखोर याने अपने विषयनमें बाप पूत आदि सकल जीवनको अरुझाया काहूके संग भई नहीं आखिर को छूट गई । ये अर्थ ॥ १४७ ॥

साखी--कनक कामिनी देखके । तू मत भूल सुरंग ॥
बिछुरन मिलन दुहेलरा । जस केंचुलि तजत भुवंग॥ १४८॥

टीका गुरुमुख--मायाके मुख्य रूप दो एक कनक दूजे कामिनी, सो याको देखिके हे जीव । तू अपने को भूले मत। तू सुरंग ज्ञानरंग है औ ये काया कुरंग नर्क की खान है यामें तू आसक्त न हो। ये कनक कामिनी कायाका विषयहै सो याही विषयमें बंध होके जीव फिर फिर गर्भ संकट भोगताहै औ देह धारण करताहै । आखिर कनक कामिनी दोनों छूट जातीहैं सपनेकी नाईं कनक कामिनीका मिलना बिछुरना है जैसा सर्प केंचुली छोडता है फिर दूसरी केंचुली उस केंचुली के अध्याससे आती है । तैसा ये चोला जीव छोडताहै और चोलेके अध्यास से दूसरा चोला जीवको प्राप्त होता है। तो वो भी स्वप्नवत् होताहै इनको देखिके ज्ञानरंग तू भूल मत, सत्संग में अपने स्वरूपको परख ले । ये अर्थ ॥ १४८ ॥

साखी--माया केरी बसि परे । ब्रह्मा विष्णु महेश ॥
नारद शारद सनक सनंदन । गौरी पुत्र गणेश॥ १४९

टीका गुरुमुख--माया दो प्रकारकी एक स्थूल माया कनक कामिनी देह आदि दूसरी सूक्ष्म बेदबानी कल्पना अनुमान भास

अध्यासादि,ऐसी माया के वश सब जीव परे । ब्रह्मा विष्णु महेश ये तो स्थूल सूक्ष्म दोनों मायाके वश हैं औ नारद शारद सनक सनंदन स्वामीकार्तिक गणेशादि सूक्ष्म माया के बश पडे । ये अर्थ॥१४९॥

साखी-पीपरि एक जो महा गंभानि।ताकर मर्म कोई नहिंजानि डार लंबाय फल कोई न पाय।खसम अछत बहु पीपरे जाय॥

टीका गुरुमुख--पीपरी कहिये जो कोई एक पीव है ताकी परी कहिये बानी वा कल्पना, सो प्रथमारंभ में जीवमें एक कल्पना उठी कि हमारा कर्ता कोई दूसरा है सोई कल्पना महा गंभानी गंभीर बड़ी दृढ भई । सो ता कल्पना का मर्म कोई नहीं जाना कि मिथ्या है ताते ब्रह्मा विष्णु महेशादि जेते ऋषी मुनी सब भये तिन सब अपनी अपनी कल्पना की डार लंबाई । बेद शास्त्र पुराण इतिहासादि नाना बानी नाना ग्रन्थ बनाये, परन्तु फल मुक्त स्थिती काहूने पाई नहीं । एक खसम ब्रह्म है ऐसा अध्यास थाप दिया, सो सब जीवन ने मान के बहु पीपरे जाय । बहु बानी बहु कल्पना में जीव चले । ये अर्थ ॥ १५० ॥

साखी--साहू से भौ चोरवा । चोरहु से भौ हीन ॥
तब जानेगे जीयरा । जबरे परेगी तुझ ॥ १५१ ॥

टीका गुरुमुख--साहू कहिये जीवको सो जीवसे चोर पैदा भया। चोर कहिये जाने जीव की सत्य विचारादि संपती हरली,सोई ब्रह्म आनंद निर्विकल्प औ सोई.चोरसे जीवने हेत लगाया कि मेरा हित कल्याण याहीसे होयगा परंतु चोरसेभी कहीं हित कल्याण भया है? अरे !जबसे तूं ब्रह्म में मिला तबहीं से तूं खराब हुआ ये तेरेको मालूम नहीं हुवा, परन्तु हे जीव जब तेरेको पारख पडेगी तब ये कसर तुम जानोगे बिना पारख चोरही साहू हो रहा है,जो तेरा घाती सोई तेरा

मित्र हो रहा है, सो वो चोर पारख बिना कछु छूटने का नहीं।साहू जो जीव सोई चोर हुवा ब्रह्मांड में जायके छिपने लगा औ चोर योगी लोग तासे प्रीति किया । पर हे जीव जब मनुष्य तन छोड के तू जायगा तब योग समाधी औ योगी लोग सबही छूट जायँगे औ तेरे पर गर्भयातना का दुख आन परेगा तब जानेगा तूं । अभी जबलग मनुष्य तन है तबलग तो सारशब्द का प्रमाण तेरे से जाना नहीं जाता पीछे पछतायगा । ये अर्थ ॥ १५१ ॥

साखी--ताकी पूरी क्योंपरें । जाके गुरु न लखाई बाट॥
ताके बेडा बूडि है। फिरि फिरि औघट घाट॥१५२॥

टीका गुरुमुख--अरे जाको गुरुने पारख पदकी बाट लखाई नहीं ताकी पूरी कैसे परेगी औ स्थिति कैसे होयगी औ कल्पना कैसे छूटेगी। तो ताका बेडा गर्भवास में फिर फिर बूडेगा । ये अर्थ ॥ १५२ ॥

साखी--जाना नहीं बूझा नहीं। समुझि किया नहिं गौन॥
अन्धेको अंधा मिला । राह बतावे कौन ॥१५३॥

टीका गुरुमुख--अपने स्वरूप को गुरुवा लोगों ने जाना नहीं अपने स्वरूप को देखने के विषय गुरुवा लोग ब्रह्मादिक अंध हैं क्योंकि यथार्थ पारख स्वरूप उनको भी मिला नहीं ।देखो उनको बानी, उनके सिद्धांत, उनके ग्रंथ वेद शास्त्रादिक सब विदित हैं,तो प्रथम भास परियंत सब कहते हैं आगे गती काहू की चली नहीं । तब कारण कार्य एक भाव करके अन्वय सबनने सिद्ध किया सोई स्वरूप माना। औ चेलेलोग जो आगे भये सो काहू ने भी उनके सिद्धांत की कसर जानी नहीं औ वेदबानी धोखा काहू के बूझने में आया नहीं । औ ऐसी तरफ जो उनके चेला लोग भये सो कोई समुझते नहीं औ समझ

के चलते नहीं सब अधाधुंध में चले जाते हैं। ताते इस जगतके जीव सब अंधे जायके गुरुवालोगोंसे मिले। सो वो भी मूल के अंधे औ जो वेदके भरोसे बैठे हैं सो वेद जन्म अंधे तासे जगत अंधा मिला, अब राह बतावै कौन। ये अर्थ ॥ १५३ ॥

साखी--जाका गुरु है आंधरा। चेला काह कराय ॥
अंधे अंधा पेलिया। दोऊ कूप पराय ॥ १५४ ॥

टीका गुरुमुख--जाका गुरु अंधा है ताका चेला पक्का अंधा अंधा कहिये पारख हीन, सो वेद आदि जेते गुरुवा भये सो सबही पारख-हीन, औ संसारी जीव ये तो आदिके पारखहीन, ताते पारखहीनसे पारखहीन अंधे मिले औ दोनों भ्रमकूपमें परे अथवा अंधा कहिये ग्रेही मिले सो जाका गुरु ग्रेही है ताका चेला आदि ग्रेही है तो ग्रेही से ग्रेही मिले फिर विषयासक्त होके भग कूपमें परे। ग्रेही कहिये स्त्री धन जाति पांति कुल कुटुम्ब घर गांव जागा वतन वेदवानी कर्म उपासना वर्णाश्रम आदि कल्पना जाको ग्रहण होय सोई ग्रेही सोई अंधा है जो धनमदमें अंधा भया। औ राजमद, विद्यामद, ज्ञानमद, यौवनमद, देहमद, तपमद, सिद्धिनके मदमें अंधा भया। ये अष्ट मद में गुरुवा लोग अंध तिनको ग्रेही जन्म अंधे मिले तो अंधेको अंधेने ठेल दिया उपदेश दिया ताते दोनों कल्पनाकूप चौरासी कूप में परे। अथवा विषय अंध वाममार्गी तिनके उपदेशमें जगत अंधे जीव गये। सो उनको उपदेश देके माया अंध कूपमें दोनों परे। अथवा अंध कहिये जाको अपना स्वरूप दिखाता नहीं सोई गुरुवालोग औ चेले जगत जीवन क्या करना ये तो कभी स्वरूपकी बार्ताही जानते नहीं। स्वरूपको जाननेके वास्ते गुरुवालोगके शरणमें गये सो वो गर्भ अंधे, भ्रमका उपदेश देके दोनों प्रपंच कूपमें परे। ये अर्थ॥ १५४॥

साखी—लोगों केरी अथाइया । मत कोई पैठो धाय ॥
एकै खेत चरतहैं । बाघ गदहरा गाय ॥ १९९ ॥

टीका गुरुमुख—ये गुरुवालोग अंध इन के अथाईमें मत कोई बैठो । अथाई कहिये, संगत कहिये, देवढी कहिये, सो इनकी संगत में हे जीव कोई दौरदौरके मत बैठो, क्योंकि इनका खेत अद्वैत आत्मा तामें तीनों बिचरते हैं। बाघ तमोगुण, गदहरा सतोगुण गाय रजोगुण,ये तीन गुण एक आत्मामें विचरते हैं। कहते हैं कि त्यागी होय अथवा भोगी होय, विषयी होय, कामी होय अथवा मोही होय यें आत्मा येता जाना कि मुक्त है, क्योंकि आत्मा में सभी संभौता है । याको प्रमाण जनक भोगी, शुक त्यागी, रामचन्द्र रागी,कृष्ण कामी, वशिष्ठ कर्मी, ये पांचों ज्ञानीकी गती समान गुरुवालोग बोलते हैं तब न्याय न भया । जो रागी त्यागी अंध दिठीयार साहू चोर एक आत्मा में विचरते हैं औ आत्मारूप बन रहेहैं ये न्याय कछु न्याय नहीं बाघ गदहा, गाय, भक्ती योग, ज्ञान, ये तीनों एक खेतमें चरे ये कछु न्याय नहीं। गदहा गाय,अकर्म कर्म,अथवा कर्म गदहा, उपासना ज्ञान । उपासना गाय,बाघ दोनोंका उपाहार करनेवाला,सो तीनों एक वेदमें बताते हैं। अरे ज्ञान अज्ञान,जड चैतन्य, जहां एक होताहै सो अन्याय कछु न्याय नहीं । जो सम्पूर्ण एकहीहै तो विचार औ गुरुवाई काहे को चाहिये सब धोखा। ये अर्थ ॥ १९९ ॥

साखी--चारि मास घन बर्सिया । अति अपूर जल नीर ॥
पहिरे जडतन बख्तरी । चुभै न एको तीर ॥ १९६॥

टीका गुरुमुख—चारि मास कहिये चारि वेद,सो घन बरसे बहुत बरसे, नानां सिद्धांतनकी बानी बहुत बोली औ अती अपूर्व कल्पना बढी । वही कल्पनाकी बख्तरी कहिये कैवल्य देह सो जीवनने जड

तनमें पहिर लिया औ बाल पिशाच उन्मत्त मूक जडवत् ही गये। ताते इनके अंतःकरण में अब एकौ शब्द गडता नहीं। ये अर्थ ॥१५६॥

साखी--गुरुकी भेली जिव डरे। काया सींचनहार ॥
कुमति कमाई मन बसे। लाग जुवाकी लार॥१५७॥

टीका गुरुमुख--ये गुरुवालोगों की संगत में जीवको डर प्राप्त भया नाना प्रकारका डर इन्होंने लगाया। नर्क का डर, यम का डर, श्रापका डर, देवतन का डर बताया, ताते जीवन को डर प्राप्त भया। काया का अभिमान जीवनने माना कि काया का नाश न होय कायाको कोई बातका कष्ट होने न पावै ऐसी इच्छा धारण करके काया सींचनहार देह अभिमानी जीव विषयासक्त भयको प्राप्त होके गुरुवा लोगोंसे ऐसे उपदेश मांगते हैं। कि जामें लक्ष्मी मिले, राज मिले, अच्छी स्त्री मिले, बहु पुत्र लाभ होय, बहुत दिन जीवैं, तब नाना मंत्र यंत्र उपासना साधन क्रिया तपस्या उपदेश करके सब जीवनको गुरुवा लोगोंने बानी के बंधन में बांध के अपना गुलाम बनाये। औ ऐसा दृढाया कि वेद बानीके प्रमाण से सब चलना औ जो वेद बाहर होवेगा सो हमारा दुष्ट बहुत पछतायगा औ नाना दुख उसे होवेंगे औ यम उसे बहुत याचैंगे नर्क में डारैंगे। ऐसे नाना भय बताये तब जीवको भय प्राप्त हुवा औ कुमतिकमाई में मन बसा औ गुरुवालोगों के संग लगा। कुमति कहिये अज्ञान मत, नाना कर्म नाना उपासना, मंत्र यंत्रादिक साधनाकी कमाई करने लगा ताहीते बारम्बार आवागवन में परा। ये अर्थ ॥ १५७ ॥

साखी--तन संशय मन सोनहा। काल अहेरी नीति ॥
एकै डांग बसेरवा॥ कुशल पुछो का मीत ॥ १५८ ॥

टीका गुरुमुख--हे मीत हे जीव चोरन की संगत में बसि के फिर कुशल काहे की पूछता है । अरे चोरन का बिवर्ण सुनो एक तन दूसरी संशय तीसरा मन चौथा शब्द ॐकार, पांचवां काल अहेरी गुरुवा लोग, येते चोरन के संगत में तू नित रहता है अब कुशल पूछो का मीत । तन कहिये स्थूल, संशय कहिये सूक्ष्म, मन कहिये कारण, सोनहा कहिये महाकारण, काल अहेरी कैवल्य, एक डांग जगत याही में पांचों का बसेरा सो इनहिन में तू रहता है अब कुशल पूँछो का मीत । तन कहिये देह, संशय कहिये स्त्री, मन कहिये सम्पत्ती, सोनहा कहिये वेद, काल कहिये अहेरी, जन कुटुंब एक डांग प्रपंच ताही में इन का बसेरा तिन के संग में तू मिला है अब कुशल कहां से होय ? हे मीत । या तन कहिये रजोगुण, संशय कहिये सतोगुण, मन तमोगुण, सोनहा माया, काल ब्रह्म, एक डांग कहिये बन, बन कहिये बानी, तामें इनका बसेरा है तामें तू मिल रहा है, अब कुशल पूछो का मीत । तन कहिये प्रत्यक्ष, संशय कहिये कल्पना, अनुमान मन कहिये अध्यास, सोनहा कहिये भास, काल अहेरी कहिये कर्म, एकै डांग एक स्थूल तामें ये भी रहते हैं औ तू भी रहता है अब कुशल क्या पूछता है हे मीत । तन कहिये जीव, संशय कहिये ईश्वर, मन कहिये ब्रह्म, सोनहा कहिये गुरुवा लोग, काल अहेरी स्त्री, एक डांग बानी तामें बसेरवा, कुशल पूँछो का मीत । ये अभिप्राय ॥ १५८ ॥

साखी--साहू चोर चीन्हैं नहीं । अंधा मतिका हीन ॥
पारख बिना बिनाश है । करबिचार होहू भिन्न॥ १५९॥

टीका गुरुमुख--अरे ये संसारी जीव अंधे इन की मती हीन होय गई ताते शाहू चोर चीन्हता नहीं, चोरन की संगति में

जीव लूटा जाता है। चोर कहिये वेद शास्त्र पुरान, नाना देवता, ब्रह्म, गुरुवा, सो पारख बिना इन चोरनके सङ्गमें रहिके जीवका बिनाश है। ताते बिचार करके सब ते न्यारा हो सब परखके पारखरूप हो रहो। ये अर्थ ॥ १५९ ॥

साखी—गुरु सिकलीगर कीजिये। मनहि मस्कला देय ॥
शब्द छोलना छोलिके। चित्त दर्पण करि लेय ॥१६०॥

टीका गुरुमुख—गुरु पारखी करना जो मनको मस्कला विवेक का देय औ सार शब्दके छोलनेसे छोलके चैतन्य की कसर बिकार मैल सब निकार डारे। औ चैतन्यको शुद्ध दर्पण करके पारख प्रकाश करके पारखमें लेय अपना स्वरूप कर लेय ऐसा गुरु कीजिये। ये अर्थ ॥ १६० ॥

साखी—मूरखके सिखलावते। ज्ञान गांठिका जाय ॥
कोइला होइ न ऊजरा। जो सौ मन साबुन लाय॥१६१

टीका गुरुमुख—मूरख कहिये जाका अंतःकरण मैला होय औ विक्षिप्त मती होय औ विषयन में लुब्ध होय, कामी क्रोधी लोभी मोही होय, अन्यथा बाद करै, ताको मूरख कहिये। सो तासों क्या बोलिये, ताको सिखलावते ज्ञान अपने गांठिका जाता है औ उनके संग दोषसे अपने को भी अज्ञान उठता है। क्रोध तामस उठता है औ वो तो कोयले माफिक मूर्ख हो रहा है उसे केताभी बिचार बतावो लगावो तो वो कुछ शुद्ध होता नहीं। ये अर्थ ॥ १६१ ॥

साखी—मूढ कर्मिया मानवा। नखशिर पारख आहि ॥
वाहनहारा क्या करै। जो बान न लागै ताहि ॥१६२

टीका गुरुमुख—मूढ कर्मी मानुषके नखसे सिर परियन्त अज्ञानकी पारख परी रहती है ताको बिचार कहनेवाले ने क्या करना उसे एकभी बातकी समझ पडती नहीं। ये अर्थ ॥ १६२ ॥

साखी--सेमर केरा सूवना । छिवले बैठा जाय ॥
चोंच सँवारे शिर धुने । ई उसहीको भाय ॥१६३॥

टीका गुरुमुख--सेमर कहिये चारों वर्ण औ छिवला कहिये चार आश्रम, सो वर्ण छोडके जीव आश्रमनमें आया औ मुंह पसार पसारके गृही धर्म, ब्रह्मचारी धर्म, वानप्रस्थ धर्म औ सन्न्यास धर्म पढने लगा औ उसीमें सिर कूटने लगा आचरण करने लगा । परन्तु ये भी प्रपंच का भाई, जैसा चारों वर्ण जीवको बन्धन है तैसा चारों आश्रम भी जीवको बन्धन हैं । अथवा प्रपंच सोई सेमर औ भेष षटदर्शन चार संप्रदायादि सोई छिवले, सो प्रपंच छोडके जीव भेषमें आया तो यहां दूना प्रपंच लगा । नाना देव, नाना विद्या नाना तीर्थ औ अपनी अपनी सम्प्रदाय के कर्म क्रिया महा बन्धन होके पीछे लगी तामें शिर धुनके मरता है मुक्तीपदके प्राप्तीके वास्ते संसार त्याग करके भेषमें आया सो यहां दूना बन्धन प्राप्त भया । ये अर्थ ॥ १६३ ॥

साखी--सेमर सुवना बेगि तजु । तेरी घर्नी बिगुर्ची पांख ॥
ऐसा सेमर जो सेवे । जाके हृदया नाहिं आंख १६४

टीका गुरुमुख--अरे जैसा प्रपंच तैसाही भेष है दोनों सेमररूपी मिथ्या भ्रम है यामें कछु पारखपद की प्राप्ती नहीं औ मुक्तफलभी नहीं । ताते ये सेमर मिथ्या भ्रम, जगत ब्रह्म दोनों छोड दे बेगी, यामें तेरी पांख घनी बिगुर्ची, तेरी बुद्धी बहुत खराब हुई, जड हुई । ताते बारम्बार जन्म धारण करके तूने जो आशा किया सो अनेक बार तेरी आशा नाश हुई, तेरेको मुक्ती प्राप्त भई नहीं । तो ऐसा मिथ्या धोखा वेद बानी प्रपंच ताका सेवन कौन करे जाके हृदयमें विवेक विचाररूपी आंखी न होय सो सेवे । ये अर्थ ॥ १६४ ॥

साखी–सेमर सुवना सेइया। दुइढेंढीकी आस ॥
ढेढी फूटि चनाक दै। सुवना चले निरास ॥१६५॥

टीका गुरुमुख--सेमर कहिये जाका फूल अच्छा लाल औ फल भी अच्छा बडा देखनेमें आता है, ताही लोभसे तोता सेवन करता है, कि इस फलसे मेरी तृप्ती होगी फिर जब ये फल पकके फूटा उसमेंसे रुई उडी औ सुवा निरास भया उडि गया। तैसा वेद बानीका सेवन जीवने किया धर्म मोक्ष दो ढेंढी की आस से, उसकी फल श्रुती औ महिमा बहुत के, परंतु तत्कमसीका सिद्धांत निर्णय जब किया तब ढेंढी फूटी औ फल आसा सब मिथ्या ठहरी, तब ये जीव निरास होके पुनः गर्भवास को चला ॥ १६५ ॥

साखी–लोग भरोसे कौनके। बैठ रहें अरगाय ॥
ऐसे जियरा यम लुटे। जैसै मटिया लुटे कसाय १६६॥

टीका गुरुमुख–ये सब लोग कौनके भरोसे अभिमान करके बैठे हैं। अरे ये जीव सिवाय और कोई दूसरा तो है नहीं। औ ये तो ऐसा जानते नहीं ताते ऐसे गाफिल जीवको कल्पना बानी स्त्री दानादान क्षीण करके लूटेगी जैसे कसाई मटिया कहिये मांसको छिन्न भिन्न करके लूटते हैं तद्वत्। ये अर्थ ॥ १६६ ॥

साखी--समुझि बूझ जड हो रहे। बल तजि निर्बल होय॥
कहैं कबीर ता संतको। पला न पकरै कोय ॥१६७॥

टीका मायामुख--वेदान्तका विचार समझके सर्वात्मा अद्वैत बूझि के जडवत हो रहे औ मैं ब्रह्म सर्व शक्तिमान ऐसा बल सब छोडके निर्बल हो रहे अहंकार छोडके निरहंकार हो रहे ता संतका पल्ला पकडनेवाला कोई नहीं ऐसा वेदांती बोलते हैं। ये अर्थ १६७॥

साखी–हीरा सोइ सराहिये। सहैं घननकी चोट॥
कपट कुरंगी मानवा। परखत निकरा खोट ॥१६८॥

टीका गुरुमुख—हीरा कहिये सिद्धांत सोई सिद्धांत को सराये जाके ऊपर अनेक बानी, अनेक तर्क, अनेक सिद्धांतन की चोट चले औ वो फूटै नहीं, उसपर कोई चोट लगने न पावै, उसपर से सभी सिद्धांतनकी चोट उछल जाय सो पक्का सिद्धांत। औ ये गुरुवालोग कपट कुरङ्गी मिथ्या भ्रमके रंगमें रंगे हैं ताते इनके सिद्धांत सब परखने में खोटे निकरे। पारखमें कोई सिद्धांत ठहरता नहीं। ताते पारख सिद्धांत सच्चा औ सब झूँठा। ये अर्थ ॥ १६८ ॥

साखी--हरि हीरा जन जौहरी। सबन पसारी हाट ॥
जब आवै जन जौहरी। तब हीरोंकी साट १६९ ॥

टीका गुरुमुख—हरी कहिये ज्ञान सोई हीरा, जन कहिये ज्ञानी सोई ज्ञान जवाहिरको जौहरी बैपारी, जन कहिये मुमुक्षूजन, तिनने ज्ञान सिद्धांत ग्रहण करनेके वास्ते ज्ञानी लोगनके पास बजार लगाया ग्राहकी करने लगे। परन्तु जब कोई पारखी आवेंगे तब इनके सिद्धांत हीरनकी कसर निकरेगी। जबलग पारखिनका संग नहीं भया औ परखके देखा नहीं तबलग सकल उपदेश सकल सिद्धांत सच्चे हैं औ परखके ऊपर सभी मिथ्या हो गये। ये अर्थ ॥ १६९ ॥

साखी—हीरा तहां न खोलिये। जहां कुंजरा की हाट ॥
सहज गांठी बांधिके। लगिये अपनी बाट ॥ १७० ॥

टीका गुरुमुख—ज्ञान हीरा वहां न खोलना जहां कर्मकांडी उपासक रहते हैं उनकी हाटमें ज्ञान हीरा खोलना नहीं। वह ज्ञान की कीमत जानते नहीं ताते अपने अंतःकरणमें गांठी बांधिके अपने ज्ञानमार्गसे चले जाना कोई पारखी मिलैं तो उसके आगे खोलना। ये अर्थ ॥ १७० ॥

साखी—हीरा परा बजारमें। रहा छार लपटाय ॥
केतेहि मूरख पचि मुये। कोई पारखी लिया उठाय १७१ ॥

टीका गुरुमुख—ज्ञान सिद्धांत जगत बजार में परा है सो उसके ऊपर विषय कर्म उपासनारूपी छार माटी लगी है, तामें लपटा मालूम होता है ताते किसी को प्राप्त होता नहीं। केतेही मूर्ख पचिके मर गये कोई पारखी जनों ने परखके उठाय लिया। ये अभिप्राय। या हीरा पारखी संत जगत बजार में पडे हैं, जगत के देखने में जगत सरीखे बर्तते हैं। उत्तम भोजन उत्तम जलपान करते हैं, कंठी तिलक आदि भेष भी रखते हैं, ताते संसार को गेहीवत मालूम होते हैं कि जैसे विषयासक्त हैं। परंतु मूर्ख उनका भेद नहीं पावते ताते नाहक धोखे में पचि पचि के मरते हैं कोई पारखी जन उनको परख लेते हैं। ये अर्थ ॥ १७१ ॥

साखी—हीराकी ओबरी नहीं। मलयागिर नहिं पांत ॥
सिंघोंके लेहंडा नहीं। साधु न चले जमात॥ १७२॥

टीका गुरुमुख—हीरा के कछु महल ओबरी नहीं औ मलयागिर के कछु पंक्ती नहीं। मलयागिर भी संसार में एकही है औ हीरा भी कहूं कहूं होता है। सिंघके कछु लेहंडा नहीं होते सिंघभी कहूं कहूं एकाध होता है तैसे साधुन के भी जमात नहीं चलती साधू भी कहूं कहूं एकाध होते हैं। तो जोई सर्व पारखी सोई साधू और सब भेष जमात। ये अर्थ ॥ १७२ ॥

साखी—अपने अपने शिरोंका। सबन लीन्ह है मान ॥
हरीकी बात दुरंतरी। परी न काहू जान ॥ १७३ ॥

टीका गुरुमुख—अपनी अपनी बुद्धि से एक एक अनुमान सब ने माना ताही को अपने शिर का मान खाबिन्द सब कोई जानते हैं। काहू ने शिव माना, काहूने शक्ती माना, काहूने बिष्णू माना, काहूने सूर्यको माना, काहूने गणपती को माना, काहूने

वेदको माना, काहूने कुरान को माना काहूने अठासी सहस्र ऋषीको माना, काहूने एक लाख अस्सी हजार पैगम्बर माना, काहूने दश औतार माना, काहूने बारह इमाम माना, काहूने औलिया अंशिया गौस कुतुब फिरस्ते को माना, काहूने तैंतीस कोटी देवता माना, काहूने यक्ष गण गंधर्व पिंडजन को माना । इस प्रकार अपने अपने शिरों का मालिक सबनने मान रक्खा है । तातें ज्ञानकी बात दुरंतरी । ज्ञान कहिये जीव सो जीव की बात दुरंतर गई काहू को जान परी नहीं । ये अर्थ ॥ १७३ ॥

साखी—हाड जरै जस लाकडी । बार जरै जस घास ॥
कबिरा जरै रामरस । जस कोठी जरै कपास ॥१७४॥

टीका गुरुमुख—रामरस के मारे जीव दिवाना भया आखिर अपने स्वरूप को नहीं जाना औ चोला छूटा तब गर्भवास में जायके जठराग्नी में जरने लगा । जैसे कोठी में कपास को आग लगी सो ऊपर तो धुवां नजर आता नहीं औ भीतर जरके खाक भई । तैसा ऊपर काहूको जठराग्नी मालूम होती नहीं, नारी गार्भिनी है ऐसी जनवार्ता होती है । औ जब जीव चोला छोडता है तब सब लोग मिलके चोले को जराय देते हैं सो हाड जैसे लकडी के माफिक जर जाते हैं औ बार जैसे घासकी माफिक जर जाता है औ जीव दूसरी योनी में जाय के गर्भाग्नी में जरता है, जैसा कपास कोठी में जरता है तद्वत । ये अर्थ ॥ १७४ ॥

साखी—घाट भुलाना बाट बिनु । भेष भुलाना कान ॥
जाकी मांडी जगत में । सो न परा पहिचान॥१७५॥

टीका गुरुमुख—घाट कहिये सत्सङ्ग, बाट कहिये विचार, सो विचार बिना सत्सङ्ग भूला ब्रह्मास्मि कहलायके । औ भेष सब अपने

अपने संप्रदायके पक्ष में भूले । पर जाकी मांडी नाना प्रकार की बानी औ कल्पना इस जगत में मंड रही है सो मानुषरूप काहू को पहिचान परा नहीं, सब मिथ्या भ्रम औ कल्पनामें अरुझे । और ये जीवरूपने चार वेद छै शास्त्र आदिक नाना बानी बनाये, सो सब जीव वेद शास्त्र मंत्र यंत्रमें अरुझे । काहूने ये जीवरूप पहिचाना नहीं । ये अर्थ ॥ १७५ ॥

साखी—मूरख से क्या बोलियो । सठ से कहा बसाय ॥
पाहन में या मारिये । जोचोखा तीर नसाय॥ १७६॥

टीका गुरुमुख—मूर्ख कहिये जो मिथ्या पक्ष धारण करे औ सठ कहिये जाको सांच झूठ मालूम न परे सो सठ ताते मूर्ख पक्षपातिन से विचारकी बात बोलना नहीं औ हठी सठन तुम्हारा विचार कछु चलने का नहीं ताते उनसे बोलना नहीं । और जो अच्छा तीर भया तो क्या पत्थरमें मारना, पत्थरमें मारा तो तीर खराब होयगा पत्थरका कछु जानेका नहीं तैसा सार शब्द ये पक्षवादी सठ मूर्खन से बोलना नहीं क्योंकि एक तो कछु विषाद करके उठेंगे कि मन में उदास हो जायेंगे । ताते कोई श्रद्धामान निर्पक्ष जीव होय ताको सारशब्द का विचार बताना । ये अर्थ ॥ १७६ ॥

साखी--जैसी गोली गुमज की । नीच परी ठहराय ॥
तैसे हृदया मूर्ख । शब्द नहीं ठहराय ॥ १७७ ॥

टीका गुरुमुख—गुम्मज की गोली माफिक मूर्खके हृदयमें शब्द ठहरता नहीं तो हकनाहक काहेको बक बक मरना औ अपनी प्रकृती क्यों खराब करना ये अर्थ ॥ १७७ ॥

साखी—ऊपर की दोऊ गई । हियहु की गई हेराय॥
कहहिं कबीर जाकी चारों गई।ताको काह उपाय॥ १७८॥

टीका गुरुमुख–ऊपरकी दोऊ स्थूल सूक्ष्म औ भीतर की दोनों कारण महाकारण,सो गुरु कहतेहैं कि चारों देह जाकी हेराय गई लय होगई,सो कैवल्य ब्रह्म निर्विकल्प दशाको प्राप्त भया। अब तासो कछु जोर चलता नहीं औ वो किसीको मानता भी नहीं उसपर न वेदका हुकुम, न काहूका हुकुम,वो अजित आत्मा भया,अब उसपर किसी की गुरुवाई चलतीनहीं। वो सर्वरूप आपही हो रहा है बन रहाहै ताते किसीकी बसाती नहीं। ऐसे नरको पारख ती भी कहांसे प्राप्त होय, जाको अपनी भी स्मृती नहीं सदा उन्मत माफिक रहताहै । अरे झांईमें अंधा भया ऊपर की दोनों आंखी फूटी जो देखता है कि सब जगत पृथक पृथक न्यारा है औ फिर चराचर एकही आत्मा करके मानताहै ताते ऊपरकी भी गई औ भीतर की बूझ बुद्धी दोनों हेराय गई जो सब नाना बानी बोलता है औ सब पिंड ब्रह्मांड की हकीकत पृथक करके जानताहै फिर कहताहै कि मेरी सत्ता बिना कछु न्यारा नहीं ताते सब मेराही स्वरूप है। ऐसा कहिये हियेहू की बुद्धि नशाई गई । अरे सर्व औ सर्वका जाननेवाला न्यारा भास औ भासिक न्यारा, अनुमान औ अनुमानिक न्यारा,कल्पित औ कल्पनेवाला न्यारा, आप तीन काल में न्यारा होके अपनेको जानता नहीं तो ऐसे जड अंध सो क्या करना। ये अर्थ॥ १७८ ॥

साखी–केते दिन ऐसे गया। अनरूच का नेह ॥
ऊसर बोय न ऊपजै। जो घन बरसे मेह ॥१७९॥

टीका गुरुमुख–अनरुचा कहिये ब्रह्म तासे नेह किया जीवने ताते केतेही दिन बीत गये.धोखा कछु छूटा नहीं औ आवागवन कछु रहित भया नहीं। ताते अनेक योनिनकी मुर्छा औ अनेक दांव गर्भा-मीमें जर के जीव ऊसर निस्तेज गया अब इसे कछु अपने

पद की रुची रही नहीं । अब ऐसे जीवसे केतेही दिन नेह लगावो औ बिचार की वर्षा करो परंतु कछु उगने का नहीं यथार्थ समझने-का नहीं । जैसा ऊपर में बीज बोया औ केता भी पानी बरसा परंतु कछु उगता नहीं । ये अर्थ ॥ १७९ ॥

साखी-मैं रोवों यह जगत को । मोको रोवे न कोय ॥
मोको रोवे सो जना । जो शब्द बिबेकी होय॥१८०॥

टीका गुरुमुख-मैं जगत के कल्याण निमित्त रोता हों जामें जगत का भ्रम छूटे औ आवागवन से जीव रहित होय नाना दुखन से जीव बचै औ कैसेउ पारख पद को जीव मिलै, येही वास्ते मैंने नाना प्रकार से समुझाया परन्तु कोई समझ के पारख पदकी प्राप्ती निमित्त अपने दुःखको देख के रोता नहीं औ अपने बंधन का तिरस्कार भी कोई करता नहीं । तो जो कोई शब्दका विवेक यथार्थ करेगा सोई संपूर्ण विषय बंधन का तिरस्कार करके पारखरूप होयगा । औ मैं पारख स्वरूप को मिलने के वास्ते रोया गाया प्रेमसे क्योंकि मैं निरुपाधी पारख मेरेको कछु उपाधी संभवती नहीं, मैंने इस जगत के निमित्त नाना प्रकार की उपाधी उठाय लिया परंतु इस जगतको कछु सूझता नहीं । ये अर्थ ॥ १८० ॥

साखी-साहेब साहेब सब कहैं । मोहि अँदेशा और ॥
साहेब से परचय नहीं ॥बैठेंगे वहि ठौर ॥ १८१ ॥

टीका गुरुमुख-सबका साहेब जीवरूप,सो जीवरूपकी तो पारख किसीने की नहीं औ धोखे को सब साहेब साहेब कहते हैं तो इनकी स्थिति कहां होयगी । ये अभिप्राय ॥ १८१॥

साखी-जीव बिना जीव बांचे नहीं।जीवको जीव अधार॥
जीव दया करि पालिये । पंडित करो बिचार ॥१८२॥

टीका गुरुमुख—हे पंडित हे बुद्धिमान तुम विचार करके देखो कि जीवन जीव है। जीव बिना जीव बचता नहीं,एक जीव के आधार से एक जीव बचता है। देखो इस जगमें प्रसिद्ध है कि हाथी घोडे गदहे गाय भैंस बैल आदि मनुष्य के आधार से रहते हैं औ मानुष भी एक के आधार से एक रहते हैं आधार बिना किसी का गुजारा होता नहीं। ताते जीव दया करके पालना कोई जीव मात्रको दुःख देना नहीं यथाशक्ती जहांलग बने तहांलग जीवका रक्षण करना। ये अर्थ ॥ १८२ ॥

साखी—हम तो सबही की कही। मोको कोइ न जान ॥
तबभी अच्छा अबभी अच्छो।युग युग होउँ न आन॥१८३॥

टीका गुरुमुख—मैंने तो सबकी कसर औ कल्पना औ सिद्धांत कहा पर मेरे को किसी ने नहीं जाना,तो जासे सब परखने में आवै सो पारख मैं। तब आदि में भी अच्छा स्वच्छ विकार रहित औ अब वर्तमान में भी अच्छा स्वच्छ विकार रहित औ युग युग भविष्य समय में भी अच्छा स्वच्छ पारख स्थिर विकार रहित,कधी दूसरा नहीं होता। ये अर्थ ॥ १८३ ॥

साखी—प्रकट कहौं तो मारिया। परदा लखै न कोय॥
सहना छिपा पयारतर। को कहि बैरी होय॥१८४॥

टीका गुरुमुख—अरे जो कछु है सो ये जीव है ऐसा प्रगट करके कहोगे तो ये पक्षवादी मूर्ख जन तुम्हारे से विरुद्धता करके तुम्हारे को कोई लखता नहीं सब परदे के आसरे में रहि जाते हैं। औ सहना कहिये ब्रह्मादि गुरुवा लोग, सो पयार वेद ताके आसरे में छिपे हैं। पयार कहिये मिथ्या खाली घास जामें कछु जमा नहीं।

तैसा बेद मिथ्या बकवाद तामें कछु जथा नहीं पर कौन कहिके बैरी होय। ये अर्थ ॥ १८४ ॥

साखी—देश बिदेश हौं फिरा । मनही भरा सुकाल ॥
जाको ढूँढत हौं फिरों । ताका परा दुकाल॥ १८५ ॥

टीका गुरुमुख—देश पक्के तत्व औ विदेश कच्चे तत्व सो पक्के तत्व धारण करके कच्चे तत्वन में मैं जीवनके कल्याण निमित्त फिरा । सो जहां तहां मनही भरि रहा है, समस्त जीव मिथ्या मानंदी के पक्ष में परे हैं। पर जो मुमुक्षू निर्पक्ष जीव को मैं ढूंढता हौं सो ताका दुकाल परा है कोई बहुत नजर नहीं आता । ये अर्थ ॥ १८५ ॥

साखी—कलि खोटा जग आंधरा । शब्द न मानै कोय॥
जाहि कहौं हित आपना।सो उठि बैरी होय ॥१८६॥

टीका गुरुमुख—जेती बानी गुरुवा लोगों ने कही सो सब खोटी औ जगत तो अंधा,पारख बिना खोटाई नजर नहीं आती ताते शब्द कोई मानता नहीं । जिसको मैं अपना प्यारा जानके कहता हौं सोई उठ के बैरी होता है ऐसी दशा इस जीव की भई। अपना हित अनहित नहीं जानता अब इसे क्या करना । ये अर्थ ॥ १८६॥

साखी—मसी कागद छूवो नहीं । कलम गहो नहीं हाथ॥
चारिउ युग का महातम।कबीर मुखहि जनाई बात ॥१८७॥

टीका गुरुमुख—कबीर कहिये जीव को, सो हे जीव तेरे को मालूम होनेके वास्ते सकल बन्धन छूटने के वास्ते चारों युग का महात्म सकल मुखहीसे जनाया कुछ मैं कलम कागद मसी दवाइत छूता नहीं । ये अर्थ ॥ १८७ ॥

साखी—फहम आगे फहम पीछे । फहम दहिने डेरि ॥
फहम पर जो फहम करै । सो फहम है मेरि ॥१८८॥

टीका गुरुमुख—फहम कहिये, समझ कहिये, स्फुर्ती कहिये, याद कहिये, सो समझ तीन प्रकार की आदि अन्त औ मध्य तीन काल में एक आत्मा जो आदि सोई अन्त सोई मध्य, सुवर्णभूषणन्याय, ये समझ ब्रह्म ज्ञान की । सो ऐसी समझ को जो समझती है औ न्यारी रहती है सो समझ है मेरी । फहम आगे कहिये जो कुछ होनेवाला है महा प्रलय परयन्त भविष्यकी समझ औ स्फुर्ती औ फहम पीछे कहिये जो उत्पत्ती आदि से आज पर्यन्त गत बर्तमान भया ताही की समझ औ स्फुर्ती कोई रखते हैं सो भूतप्रतिबन्ध कहिये।ऐसी भूतप्रतिबन्धकी समझ जा समझसे मालूम होय औ समझ संपूर्णकी कसर निकारै सो मेरी समझ है । औ बर्तमान की समझ जो अब बर्तता है तामें दो प्रकार एक दक्षिण मार्ग एक वाममार्ग सो वाममार्ग कहिये मलीन दक्षिण मार्ग कहिये शुद्ध येही दो प्रकार की समझ औ स्फुर्ती औ एक शुद्ध बर्तमान वेदांतकी समझ सो ताहू की समझ जा समझसे मालूम होय सो समझ मेरी है । भूत भविष्यत बर्तमान तीनों फहमन पर जो फहम करै सो गुरुकी समझ फहम है । भूत फहम योग, भविष्य फहम कर्म, बर्तमान फहम ज्ञान ये तीनों फहमनपर जो फहम करै औ सब फहमन पर जो फहम करै सब की कसर निकारै सो पारख मेरी फहम है । ये अभिप्राय । औ भूत भविष्य बर्तमान त्रिकाल ज्ञान एक योगसे होता है; सो योगको परखके तीनों फहमन पर जो फहम करै ताही फहम को गहि के थीर होना । औ फहम कहिये ज्ञान, सो तीन प्रकार का एक शास्त्र ज्ञान दूसरा परोक्ष ज्ञान तीसरा अपरोक्ष ज्ञान, सो शास्त्र ज्ञान भूत औ परोक्ष ज्ञान भविष्य औ अपरोक्ष ज्ञान बर्तमान, संकल्प विकल्पात्मक फहम और सविकल्प फहम और निर्विकल्प फहम, इस प्रकार सब ज्ञानिनका ज्ञान और सब फहमन की फहम जासे होय सो मेरो फहम है । ये अर्थ ॥ १८८ ॥

साखी--हद चले सो मानवा । बे हद चलै सो साध ॥
हद बेहद दोऊ तजै । ताकर मता अगाध ॥ १८९॥

टीका गुरुमुख-- हद कहिये वेद प्रमाण बर्णाश्रम के कर्म यथा-विधि आचरण करै सो मनुष्य औ बेहद कहिये जो संपूर्ण बर्णाश्रम के कर्मन को निषेध करके ज्ञानमार्ग से चलै सो बेहद सोई साधू । औ जाने कर्म धर्म उपासना औ ज्ञान संपूर्ण परखके तज दिया औ आप पारखपदपर ठहरा तिन का मत कोई जानने का नहीं । वो सर्व मतन का पारखी वाको पारखी बिना कौन जानै । ये अर्थ॥ १८९॥

साखी--समुझे की गति एक है।जिन समुझा सब ठौर ॥
कहहिं कबीर ये बीच के । बलकहिं और की और॥१९०॥

टीका गुरुमुख--जाने तत्वमसी आदि सब सिद्धांत परख के छोडा औ भक्ती ज्ञान योग आदि भाव सम्पूर्ण परखके छोडा औ पारख रूप समझा सो सब पारखी उनकी गती एक पारख है । अरे जाने पारख भूमिका समझी औ सब ठौर परख के छोडे तिनकी गति सब की एक है । एक रहनी, एक बानी, एक पारखरूप, उनमें दुबिधा कछु संभवे नहीं । और ये नाना बानी नाना सिद्धांतन में फँसे हैं सो सब बीच भवसागर के जीव कछु पारख भूमिका के नहीं । सो बलकहिं और को और । कोई कर्मकांडही बताता है, कोई कालबादी कालबाद करता है कोई कर्ताबाद करता है, कोई योगबाद करता है,कोई प्रकृतीबाद करता है, कोई आत्मबाद करता है, कोई उपा-सनाबाद करता है, कोई मतबाद करता है । ये सब बीच के गाफिली के बंधे जीव हैं कुछ पारखी नहीं ऐसा गुरु कहते हैं । ये अर्थ ॥ १९० ॥

साखी--राह बिचारीक्या करे। जो पंथि न चले बिचार॥
अपना मारग छोडिके। फिरे उजार उजार॥ १९१॥

टीका गुरुमुख--पारखी गुरुने जो राह बताई सो राह से पंथी चलनेवाले जो विचारके न चले तो राहने क्या करना। अरे पंथीके चलनेके वास्ते गुरुने पंथ बनाया है परंतु विचारके चलेगा तब पारख गुरुपदको पावेगा। औ अपना विचारका मार्ग छोडके जौ कर्म उपासना नाना बानी योग ज्ञानादिकनमें परेगा, सो उजार उजार भ्रमहीमें फिरेगा। उजार कहिये शून्य, उजार कहिये जहां रस्ता नहीं औ बस्ती नहीं सोई ब्रह्म जगत रूपी। सो जगतही में उपजता बिनसताहै, ब्रह्म पुकारता फिरताहै। अरे आप चैतन्य अपना मार्ग बिचार सो जिनने छोडा सो भ्रममें पडा। ये अर्थ॥ १९१॥

सखी--मूवा है मरी जाहुगे। मुये कि बाजी ढोल॥
सपन सनेही जग भया। सहिदानी रहिगौ बोल १९२॥

टीका गुरुमुख--जिनने वेद शास्त्र पुराण बनाये औ बडे बडे सिद्ध मुनी जगमें स्वप्नवत होके मर मर गये, जिन के नाम पर अब संसारी जीव ढोल बजाय बजायके नाचतेहैं ये भी उनकी कथनी गाय गाय मर जायेंगे। आखिर मुवन के नामसें ढोल बजाये कछु गुरुपदकी प्राप्ती होती नहीं औ अवतारादि ऋषी मुनी आदि कोई पारख पद को प्राप्त भये नहीं स्वप्नसे नर जन्म पाके मर मर गये। परंतु उनकी निशानी रहीहै उनकी बानी, सो विचार करके देखो सब प्रथम भास में अरुझे। ये अर्थ॥ १९२॥

साखी--मुवा है मरी जाहुगे। बिनासिर थोथी भाल॥
परेहु करायल वृक्षतर। आज मरहुकी काल॥ १९३॥

टीका गुरुमुख- आगे तुमने जिनकी मानंदी की सो सब मरगये

औ उनके भरोसे तुम बैठे हो सो तुम भी मर जावोगे । बिनशिर कहिये ब्रह्म जो सब का शिर बन रहा है, वह शिर काहेका वह कुछ शिर नहीं, थोथी भाल कहिये झूठी भाल. भाल नाम बानीका, करायल वृक्ष कहिये जो गुरुवा लोगों से कराया अनुमान सोई करायल वृक्ष ईश्वर कहिये । याका अभिप्राय ऐसा है कि थोथी बानी कहिये वेद ताके प्रमाण से कोई ब्रह्म बनके मर गये औ कोई अपने ऊपर दूसरा ईश्वर मानके तरे उसके आश्रित होके पडे हैं । आज कालमें मर जावेंगे मिथ्या बानीके भरोसे । ये अर्थ ॥ १९३ ॥

साखी—बोली हमरी पूर्वकी । हमैं लखै नहिं कोय ॥
हमको तो सोई लखै । जो धूर पूरब होय ॥ १९४ ॥

टीका गुरुमुख—पूर्व कहिये आदि की; आदि कहिये हंसरूप की हमारी बोली ताते हमको कोई लखता नहीं अब हमें औ हमारी बोली सोई लखेगा जो निश्चय हंसरूपका जीव होयगा । ये अर्थ ॥ १९४ ॥

साखी—जाके चलते रौंदे परा । धरती होय बेहाल ॥
सो सावत घामें जरे । पंडित करहु बिचार ॥ १९५ ॥

टीका गुरुमुख—या जीव के चलते सारा रौंदा परा औ नाना पंथ नाना रस्ते चले औ सत्त आदि धरती बेहाल भई पक्की की कच्ची भई सो सावत मानुष घामें जरे । घाम कहिये ताप, सो तीन-प्रकार के ताप में जरता है । हे पंडित बुद्धिमान तुम विचार करके देखो, तो जो सकल सृष्टीका आदि कर्ता, औ सकल बानी वेदका कर्ता, सोई बाणी वेद के तापन में औ सृष्टी के त्रिविध तापन में जर रहा है । जैसा बांसमेंसे अग्नी निकरा औ बांसही को जराथा । ये अर्थ ॥ १९५ ॥

साखी—पांवन पुहुमी नापते । दरिया करते फाल ॥
हाथन पर्वत तौलते । तेहि धरि खायो काल ॥ १९६ ॥

टीका गुरुमुख--बावन हनुमंत कृष्ण आदि सबको पंचमुखी अभिमान जो काळ है ताने धरि खाया । ये अर्थ ॥ १९६ ॥

साखी--नौमन दूध बटोरि के । टिपके किया बिनाश ॥
दूध फाटि कांजी भया । हुवा घृत का नाश॥१९७॥

टीका गुरुमुख--दूध कहिये जीवरूप, आठ पसेरी का मन औ नौवा जीव, पांच तत्व औ त्रिगुण औ जीव एक सामिल रूप बना सो दूध, तामें टिपका अनुमान खडा भया कि दूसरा हमारा कर्ता ब्रह्म है । ताहिते जीवरूप का नाश भया औ फाटिके चौरासी लक्ष योनी होगई । ताते जीवरूप का नाश हुवा जडवत होके नाना दुःख भोगने लगा । ये अर्थ ॥ १९७ ॥

साखी--केतनो मनावो पांव परि । केतनको मनावो रोय॥
हिंदू पूजे देवता । तुरुक न काहू होय ॥ १९८ ॥

टीका गुरुमुख--चाहो इस जगतको कितना मनावो किसी तरह से रोय के मनावो, चाहे पांव परके मनावो पर यह अपना अपना पक्ष ऐसा पकडे हैं कि कधी छोडते नहीं हिंदू देवता पूजते हैं औ तुरुक बेनमून बेचून मानते हैं तो दोनों मिथ्या पक्षमें फँसे हैं । ये अर्थ॥ १९८।

साखी--मानुष तेरा गुण बडा । मासु न आवै काज ॥
हाड न होते आभरण । त्वचा न बाजन बाज ॥१९९॥

टीका गुरुमुख--सत विचार दया शील धीरज आदि जो गुण होय सो मानुष की अधिकताई है ये गुण मानुष का बडा है जासे निजपद की प्राप्ती होती है और कुछ वस्तू कामकी नहीं । हाडन का कछु गहना बनता नहीं औ चामका कछु नगारादि बाजा बनता नहीं औ माँस भी कोई काममें नहीं आता, ताते मानुषने अपने मानुष गुणको जानके ग्रहण करना । ये अर्थ ॥ १९९ ॥

साखी—जो मोहि जानै । ताहि मैं जानो ॥
लोक वेद का । कहा न मानो ॥ २०० ॥

टीका गुरुमुख—सत्त विचार सहित जो कोई मेरेको जानता है पारखरूप ताको मैं जानता हौं उससे कधी न्यारा होता नहीं । औ लोक वेद के प्रमाण से मेरेको कछु काम नहीं । अथवा लोक वेद सबका पक्ष छोडके जो कोई सतभाव से मेरेही को जानते हैं तिनको मैं सदा जानता हौं कधी बिसारता नहीं । उस जीव के सकल बिघ्न बंधन दूर करता हौं औ उसके छाजन भोजन वस्त्रादि संकल्प सब अपनी इच्छामात्रा से पूर्ण करता हौं, परंतु सकल भाव छोड के जाका लक्ष सदा मेरे तरफ है ताके तरफ मेरा भी लक्ष है। जैसा कोई सूर्य की तरफ लक्ष रखता है तो सूर्य का लक्ष उसीकी तरफ है। औ जिसने सूर्य की तरफ से मुंह छिपाया और तरफ देखने लगा तो सूर्य का लक्षभी उसकी तरफ कछु नहीं तद्वत । ये अर्थ ॥ २०० ॥

साखी—सबकी उत्पति धरती । सब जीवन प्रतिपाल ॥
धरति न जानै आप गुण । ऐसा गुरु बिचार ॥२०१

टीका मायामुख—जैसी पृथिवी सबकी अधिष्ठान पृथिवी में अंकुरादि पर्वतादि पदार्थ सब पैदा होते हैं औ पृथिवी से उनका प्रतिपाल होता है औ पृथिवी में लय होते हैं । औ अंडज पिंडज उष्मज आदि खानी सब पृथिवी से पैदा होती है अन्नमय कोस पृथिवीसे पैदा होता है औ सबका प्रतिपाल पृथिवी करती है आखिर अपने में मिलाय लेती है तद्वत आत्मा सर्वाधिष्ठान। सकल जीव वहां से पैदा होते हैं सकल जीवकी जन्म भूमिका आत्मा, औ सकल जीव अधिष्ठानही में रहते हैं, आखिर आत्मा ही में मिल जाते हैं । औ आत्मा में जानना और नहीं

टीका गुरुमुख–संपूर्ण ब्रह्म कहिके ब्रह्मज्ञानी लोग भूले । अरे ब्रह्म कौनसे गांममें रहताहै जाके नामका भी ठिकाना नहीं औ वेद जाको नेति नेति करके गावताहै, जाके गांवकाभी ठिकाना वेद जानता नहीं आखिर जगतको ब्रह्म ठहरावता है वेद औ अनेक भूले मार्ग वेद गावताहै । जो जगत सब ब्रह्मरूप है तो नाना मार्ग वेद किसे समुझाताहै औ वेद भी ब्रह्म से उपजा ऐसा महान ऋषी बोलतेहैं । तो वेद क्या ब्रह्मसे पैदा होके ब्रह्मको उपदेश नाना मार्ग कहने लगा । तो ब्रह्महीं बडी भूलका रूप है औ वेदके मार्ग सब भूले मार्ग ता मार्गसे संसार धोखेमें चला जाताहै । गांव कहिये ब्रह्म सो ताका नाम कोई जानता नहीं । अरे ब्रह्म का नाम भ्रम जीवका अध्यास कछु वस्तू नहीं सो अध्यास बस जीव आवागवनमें परा है । तो जब काल हो जायगा चोला छोडेगा तब अध्यास ही कांटा होके तेरे को गडेगा गर्भवासमें डारेगा ताते परखके आगेही तोर डारो । ये अर्थ ।। २०६ ।।

साखी–संगति कीजे साधु की । हरे और की व्याधि ।।
ओछी संगति कूर की । आठों पहर उपाधि ।।२०७

टीका गुरुमुख–संगत साधु पारखीकी करना, जाते जीवको नाना व्याधि जरामरणादि लगी है सो सब छूट जाय । जो कल्पना अनुमान भास अध्यासादि नाना व्याधिको हरे सो साधु ताकी संगत करना । औ कूर कहिये बेपारखी भ्रमिक जो जड चैतन्य एक मानतेहैं उनकी संगत न करना । वह आठों पहर कर्म ज्ञान योग भक्ती उपासना की उपाधी लगायेंगे ताते तेरेको जरा मरण की व्याधी कुछ छूटनेकी नहीं । ये अर्थ ।। २०७ ।।

साखी--संगतिसे सुख ऊपजे । कुसंगतिसे दुख होय ॥
कहहिं कबीर तहां जाइये।जहां अपनी सङ्गति होय २०८॥

टीका गुरुमुख--पारखी संतकी संगत से सुख की प्राप्ती होतीहै औ बेपारखी असत्संगी देह अभिमानी विषयासक्त तिनका संग करेसे दुःखकी प्राप्ती होतीहै। ताते गुरु कहतेहैं कि तहां जाइये जहां अपनाइत स्वदेशीय स्वजातीय संगती होय औ विजातीय विदेशीय कुसङ्गती ताको त्याग करिये । ये अर्थ ॥ २०८ ॥

साखी--जैसी लागी ओरकी । वैसी निबहै छोर ॥
कौडी कौडी जोरिके । पूंजी लक्ष करोर ॥ २०९ ॥

टीका मायामुख--जैसी प्रीति ओरसे लगी तैसी छोरलो निर्वाह हो । जबसे भगवत भक्तीकी प्रीती लगी तबसे जबलों चोला रहै तबलों निबहै तो भगवत प्राप्ती सहजै होय । जैसे कौडी कौडी जोरी के लाखों करोरों की पूंजी जमा होतीहै ऐसी भगवत प्राप्तीकी साधना थोडी थोडी करते करते बाच्यांश छूट जाताहै औ लक्षांश प्राप्त होताहै फिर लक्षांश के ऊपर परम अद्वैत भगवत स्वरूपका अनुभव होता शनैः शनैः लक्ष जोडते जोडते परम सिद्ध होताहै । ये अर्थ ॥ २०९ ॥

सखी--आजु काल दिन केक में । अस्थिर नाहिं शरीर ॥
कहि कबीर कस राखि हो।कांचे बासन नीर॥२०१॥

टीका गुरुमुख--अरे कहांलग साधना करोगे औ कब सिद्ध होगे ये शरीर तो असत्य है आज नासे या काल नास या कछु दिन में नाश होयगा नाशवान शरीर कछु स्थिर नहीं । सो नाना साधना क्रिया करके सिद्ध होने के वास्ते कांचे बासन में पानी कबतक रक्खोगे कच्चे चोले में श्वासा कबतक रक्खोगे एक दिन गाफिली में निकर जायगा । ये अर्थ ॥ २१० ॥

दश मन पाप शिर पर लाद लिया। इंद्री मन औ प्रकृती सब लय करना तब मुक्त ऐसा मानके समाधी प्राणायाम करने लगे, पवन चुराने लगे ताते दश इंद्री की बासना उनके भीतर रही औ भीतरकी इंद्रीसे शब्द स्पर्श रूप रस गंध आदि विषय में आसक्त भये। मुद्रादि रूप देखने लगे, अनहद शब्द सुनने लगे, अंतःकरणादि स्पर्श करने लगे अमृतादि रस चाखने लगे अष्टपद्मादि गंध लेनेलगे। इसप्रकार से सूक्ष्म विषय भोक्ता भये तो स्थूलसे सूक्ष्म, सूक्ष्मसे स्थूल ओतप्रोत दश प्रकारके विषय अपने ऊपर लादे। एक विषय भी इनसे कटा नहीं ताते देह त्याग होय उपरांत फिर गर्भवासका दुःख इनको बना है कछु छूटा नहीं, पाप कहिये विषय। ताते ज्ञान उपासना योग यही तीन मार्ग दुःख छूटने को बनाये परंतु परखके देखो तो इनसे एक दुःख भी छूटा नहीं। ये अभिप्राय ॥ २१४ ॥

साखी--तीरथ गयेते बहि मुये। जूडे पानि नहाय ॥
कहहिं कबीर सुनो हो संतो॥राक्षसहोयपछिताय२१५

टीका गुरुमुख--इन तीनों प्रकारके तीर्थको जो गये सो धोखे में बहिके मरे। कोई प्रयागको गये औ कल्पबास किया, देहमें तामस लाय के ठंडमें परे जूडे, पानी में जलशयन किया, नहाये। औ अन्न वस्त्र छोडके देहको महाकष्ट देके जूडे पानीमें नहाते फिरतेहैं। ये तामसी कर्मनसे राक्षसादि योनी पावेंगे और पीछे बहुत पछितायेंगे। ये अर्थ। तामसी जीव सोई राक्षस ये गीताहूका प्रमाण है २१५॥

साखी-तीरथ भई विष बेलरी। रही युगन युग छाय ॥
कबीरन मूल निकंदिया। कौन हलाहल खाय २१६

टीकागुरुमुख--तीन प्रकारके तीर्थ सोई बिषकी बेली भई औ

युगानयुग से जीवन पर छाये रही, सकल जीवन को गाफिल किया युगानयुग से गुरुवा लोगों ने मूल निकंदिया, मूल नाम मनुष्य ताको गुरुवन ने औ वेदने भरमाया । अब इन के संग हलाहल कौन खायगा अब कौन उपाधी में पडेगा । जो बेपारखी होयगा सो खायगा पारखी को इन से कौन काम ॥ ये अर्थ ॥ २१६ ॥

साखी—ये गुणवंती बेलरी । तव गुण बर्णि न जाय ॥
जर काटेते हरियरी । सींचे ते कुम्हिलाय॥ २१८ ॥

टीका गुरुमुख—बेलरी कहिये बानी, बानी कहिये कल्पना सो हे गुणवन्ती कल्पना तेरा गुण वेदसे भी नहीं बरना जाता । अरे कल्पना सकल गुण वेद शास्त्र, चौदह विद्या, चौसठ कला तेरेसे पैदा भई औ जीव सब बन्धमान् होके तेरे विषय में भूल गये । तो तेरी जर पंचमुखी अहंकार सो ताको विवेक शास्त्र से काट डारना तो ये जीव सुखी होता है, नहीं तो ब्रह्म आत्मा ईश्वरादि जगतादि बासना रूपी जल तेरे को सींचेते जीव कुम्हिलाते हैं, तेजहीन गाफिल होके गर्भवास को जाते हैं । ये अर्थ ॥ २१७ ॥

साखी—बेलि कुढंगी फल बुरो । फुलवा कुबुधि बसाय ॥
ओर बिनष्टी तू मरी। तेरो सरा पात करुवाय ॥२१८॥

टीका गुरुमुख-कल्पना बानी कुढंगी जाके अनेक मार्ग औ अनेक सिद्धांत जीवको भरमाय देते हैं औ बानी के फल अर्थ धर्म काम मोक्ष सो बुरे जीवको बंधन हैं । औ फूल कुबुद्धी कर्म जगत में बसाया रहा है, जैसा कर्म करना वैसा भोगना ये बासना जगत में फैल रही है । औ हे कल्पना बानी पैली और हंस रूप लो तेरी पहुंच भई नहीं । और कहिये ऐली तरफ ब्रह्मानंद में तेरा बिनाश

हुवा ताते तेरा सरा पात वेद मेरे को कडुवा मालूम होता है जीव को बंधनकारी है ताते बुरा मालूम होता है । ये अर्थ ॥ २१८ ॥

साखी—पानी ते अति पातला । धूवां ते अति झीन ॥
पवनहुते उतावला । सो दोस्त कबीरन कीन्ह ॥ २१९ ॥

टीका गुरुमुख—पानी से अती पातला औ धुयें से अती सूक्ष्म मन, ता मन से दोस्ती सकल जीवन ने किया ताते सोई मन इनको चौरासी भरमाता है औ जीवकी दोस्तीसे चैतन्य होता है नहीं तो मन जड़ है । ये अर्थ ॥ २१९ ॥

साखी—सतगुरु वचन सुनो हो संतो । मति लीजे शिरभार ॥
हौं हजूर ठाढ़ कहत हौं । अब तैं समर सँभार ॥ २२० ॥

टीका गुरुमुख—सतगुरु ब्रह्म ताका वचन वेद, सो हे संतो वेदका वचन सुनो औ परखो उसका भार धोखा शिरपर मत उठाय लेना । जो कोई सृष्टि का आदि कर्ता है सो जीव ही है दूसरा कर्ता कोई नहीं । तू पारख पर ठहर मैं यथार्थ समझाय के कहता हौं । औ अंतःकरण चतुष्टय औ दश इंद्री औ चार वेद, छै शास्त्र अठारह पुराण इनसे तेरा युद्ध मचा है सो तू संभर के इनसे समर करेगा तो जीतेगा नहीं तो माया तेरेको गाफिल करके समरमें जीत लेवेगी । ताते युद्ध में घबराना नहीं जो कछु है सो तूही है तू संभाल । ये अर्थ ॥ २२० ॥

साखी—वो करुवाई बेलरी । औ करुवा फल तोर ॥
सिद्ध नाम जब पाइये । बेलि बिछोहा होर ॥ २२१ ॥

टीका गुरुमुख—हे माया हे कल्पना । तू बहुत बुरी जो चैतन्य जीवको तूने अचेत किया औ तेरा फल सिद्धांत भी बुरा जो सकल जीवनको बंध किया । तब गुरु का उपदेश पूर्वार्ध में ऐसा ठहरा कि

कल्पना औ माया ये जीवको बंधन हैं तो याका त्याग करना। सो या उपदेश के ऊपर माया गुरुवा लोग अपनी कोटी सिद्ध करतेहैं सो सुनो। उत्तरार्ध-सिद्ध नाम जब पाइये, बेलि बिछोहा होय। मायामुख—जब कल्पना मायासे रहित भया जीव तब सिद्ध नाम पाया आपही ब्रह्म बना। ये अर्थ। अब याका निराकार एक साखी में गुरु करते हैं ॥ २२१ ॥

साखी—सिद्ध भया तो क्या भया। चहु दिश फूटी बांस॥
अन्तर याके बीज है। फिर जामनकी आस॥२२२॥

टीका गुरुमुख—सिद्ध ब्रह्म भया तोक्या भया, एकोहं करके चहुंदिश जगत होके फूटा प्रगटा, अनेक भया औ सर्वत्र बसा। येही स्वरूप समझके फिर ब्रह्म बना पर अंतर याके जगतका बीजहै तो फिरभी फूटेगा अनेक होयगा। जो इसने मैं ऐसा भास माना है सोई बीज आदिमें इसे ले उठाहै औ अब भी उठेगा। ताते माया कल्पना का भी त्याग करना औ ब्रह्म भी न होना, दोनोंको पारख के स्वच्छ पारख पर ठहर रहना। ये अर्थ ॥ २२२ ॥

साखी—परदे पानी ढारिया। संतो करो बिचार॥
शरमा शरमी पचि मुवा। काल घसीटन हार २२३

टीका गुरुमुख—हे संतो तुम विचार करके देखो इन गुरुवालोगोंने पाप पुण्यका औ ब्रह्म स्थितिका परदा देके बानी ढार दिया संसारमें दृढ कर दिया। अब तो बानीका पक्ष सबनको पडा ताते शरमा शरमी पचि मरा औ उनकी मानंदी उनका काल बना सो संसारमें घसिटा घसिटी चौरासीमें फिरता है। ब्रह्म है सोई परदा, जामें हंस गाफिल भया सोई परदेके आसरे सकल बानी ढारी ताते जीव

पारख पद पाता नहीं औ शरमा शरमी पचि पचिके धोखेमें मरताहै। इनका अनुमान इनको चौरासीमें घसीटता है,तुम हे संतो बिचारकरके देखो औ परदा फारके पारख स्थितिको प्राप्त हो । ये अर्थ॥२२३

साखी–आस्ति कहौं तोकोईन।पतीनैबिनाआस्पिकासिद्धा
कहहिं कबीर सुनो हो सन्तो।हीरी हीरा बेधा॥२२४॥

टीका गुरुमुख–अस्ती जीव, ताको आस्ती पारख कहताहैं तो कोई प्रतीत करता नहीं औ बिना आस्तीका सिद्ध ब्रह्म बना है । बिना आस्ती कहिये नास्ती जो कछु नहीं मिथ्या धोखा ब्रह्म ताहीको मानके सिद्ध हो रहाहै । एक जीव आस्ती और सब नास्ती पर कोई प्रतीत करता नहीं सब धोखेमें भूले हीरी कहिये, माया कहिये,काया कहिये,कल्पना कहिये बानी, स्त्री,ताने हीरा जीव बेध जीवमें बेधगई ताते आस्तिपदकी प्रतीत जीवमें नहीं आती बिना आस्तिका सिद्ध बनि रहाहै; नास्ति पदका गुलाम हो रहाहै । ये अर्थ ॥ २२४ ॥

साखी–सोना सज्जन साधु जन । टूटि जुरै सौ बार ॥
कुजन कुम्भ कुम्हारका । एकै धका दरार ॥ २२५॥

टीका गुरुमुख–सोना सज्जन साधुजन इनका एक स्वभावहै मृदु ताते सौ वक्त टूटके जुट सकतेहैं । औ अज्ञान विषयासक्त जीव कामी क्रोधी लोभी मोही जो हैं सो माटीके घडे माफिक कठिन है एक धक्केमें फूट जातेहैं फिर कधी जुटते नहीं । ये अर्थ ॥ २२५ ॥

साखी–काजर केरी कोठरी । बुडता है संसार ॥
बलिहारी तेहि पुरुषकी । जो पैठिके निकरनहार॥२२६॥

टीका गुरुमुख–काम क्रोध लोभ मोह भय आदि सकल प्रपंच

सोई काजर कोठरी, यामें सब संसार बूडता है। जो यामें पैठ के फिर विचार करके संभार के निकरा पारखपद को प्राप्त भया ताही पुरुष की बलिहारी। औ काजर कहिये अज्ञान ताकी कोठरी देह सो सकल जीव इस देहमें पैठे हैं औ देह विषय में सब बूड़ रहे हैं। परंतु वह पुरुष की बलाय सब दूर भई, बलाय कहिये दुःख, सो आवागवन आदि दुःख वाही पुरुष का नासा जो पैठ के बाहर निकरा, सब परख के पारख रूप हुवा। ये अर्थ ॥ २२६ ॥

साखी--काजरही की कोठरी। काजरही का कोट ॥
तोंदी कारी ना भई। रहा सो ओटहि ओट ॥२२७॥

टीका गुरुमुख--काजर की कोठरी देह औ काजरका कोट संसार तोंदी नाभी, नाभी कहिये वृत्ती, सो देह पायके महा अज्ञान-रूपी संसार तामें जीव रहा परंतु पारख के प्रतापसे जाकी वृत्ती मलिन न भई सो विचार की ओट से पारख भूमिका पर आय के रहित भया। ये अर्थ। ये गुरुका सिद्धांत भया अब माया का उपदेश सुनो ॥ २२७ ॥

साखी--अर्ब खर्ब ले द्रव्य है। उदय अस्त लों राज ॥
भक्ति महातम ना तुले। ई सब कौने काज ॥२२८॥

टीका मायामुख-अर्ब खर्ब ले द्रव्य मिला औ-उदय अस्त लों राज मिला परंतु सब नाशमान कछु काम का नहीं भगवत भक्ती के माहात्म को कुछ तुलता नहीं। द्रव्यराज अनीश्वर ताते भगवत भक्ती बिना जीव की मुक्ती नहीं। ये अर्थ ॥ २२८ ॥

साखी--मच्छ बिकाने सब चले। धीमरके दरबार ॥
आंखिया तेरी रतनारी। तू क्यों पहिरा जार ॥२२९॥

टीका गुरुमुख-ये माया का उपदेश भक्ती महात्म सुनि के भक्ती करने के वास्ते गुरुवा लोगों के दरबार में जीव सब बिकने चले, सो वहां वेद शास्त्र पुराण मंत्र यंत्र के जाल में पडे । ताते गुरु कहते हैं कि आंखिया तेरी बूझ बुद्धी आदि होते तूने ये जाल काहे को पहिरी क्यों बंधमान भया ये अर्थ ॥ २२९ ॥

साखी-पानी भीतर घर किया । सेज्या किया पतार ॥
पासा परा करीम का । तब मैं पहिरा जार ॥ २३० ॥

टीका गुरुमुख--बानी जैसी गुरु के मुखसे वेदांत शास्त्र के प्रमाण से सुनी तैसा मनन किया । फिर सब अनात्मा का त्याग औ आत्मा का ग्रहण करके निदिध्यास किया । फिर सब अनात्मा पदार्थ की यथार्थ विस्मृति औ अपनी स्मृति करके ध्याता ध्यान ध्येय त्रिपुटी नाश करके गुरु वाक्य में तदाकार हुवा । औ त्रिकुटी औहट गोलहाट ये तीनों छोड के पातार में सेज्या किया ओटपीट स्थानपर जाय के समाधी किया औ ब्रह्म हुवा पर मैंने मूलका भी ब्रह्म हों ये तो बीच में मायाका पासा परा तब मैंने प्रपंचरूपी जाला पहिरा । सो मिथ्या भ्रांती में ब्रह्म सत्य । ये अर्थ ॥ २३० ॥

साखी-मच्छ होय नहिं बांचि हो । धीमर तेरो काल ॥
जेहि जेहि डावर तुम फिरे । तहाँ तहाँ मेले जाल ॥ २३१ ॥

टीका गुरुमुख--अरे मच्छ होके श्वास परसे उलटे चढे औ पतार में समाधी किया पर जब चोला छूटेगा तब गर्भवास से बचने के नहीं । औ तेरा अभिमान सोई तेरा धीमर तेरे संग है तूं जेहि जेहि चोले में जायगा तहां तहां अपना करतूत मानंदीका जोला तेरे ऊपर डारेगा । ये अभिप्राय । औ मच्छ कयिये जीव, सो जीव हो संसार में तुम बचने के नहीं, ये धीमर गुरुवा लोग तेरे काल हैं, तो

जो जो मतके संगमें तू जायगा तहां तहां कर्म उपासना योग ज्ञानका जारा तेरे ऊपर फेंकेंगे । सो तू उसीमें अरुझ के मरेगा औ गर्भवास में जायगा बिना पारख गर्भवास से बचता नहीं । ये अर्थ । विषय सोई चाल औ विषयी जीव सोई मच्छ, कामिनी सोई धीमर, काम सोई जाला, चौरासी लक्ष योनी सोई चौरासी लक्ष डाबर । ये अर्थ ॥ २३१ ॥

साखी--बिन रसरी गर सकलो बँधा।तासो बँधा अलेख॥
दीन्हा दर्पण हस्तमें । चश्म बिना क्या देख॥२३२॥

टीका गुरुमुख--अरे बिना रसरी सबका गरा बांधा गया, कल्पनामें भ्रांतीमें बंध भया । सब जगको भ्रांतीका कारण अलेख ब्रह्म, जो प्रथमारंभ में हंसको गाफिली भई ताही का नाम अलेख ब्रह्म, तासों एक से अनेक होयके सकल जीव बंधा औ जडवत गाफिल हुवा । अब सकल ज्ञानग्रंथभी जो हाथमें दिये पर पारख बिना क्या देखेगा । जैसा जन्मअंध ताके हाथमें दर्पण दिया तो आंखि बिना क्या मुँह देखेगा। तद्वत मनुष्य को स्वयं पारख होना तब सकल शब्दका विचार औ धोखा मालूम होगा । अरे ये मनुष्य तो अपनी गाफिलीसे आप बंध ही रहा है इसको किसीने बांधा भी नहीं औ पकडा भी नहीं । तो ऐसा जन्मअंध पारख हीन कि नाना प्रकारके बिचार भी इसके हाथमें देव तो क्या देखेगा औ क्या गुरुपदको प्राप्त होयगा । ये अर्थ ॥ २३२ ॥

साखी--समुझाये समुझे नहीं । पर हाथ आपु बिकाय॥
मैं खैंचत हौं आपको ।चला सो यमपुर जाय२३३॥

टीका गुरुमुख--बहुत प्रकारसे खोल खोलके जीवनको समुझाता हौं परंतु ये कछु समझते नहीं औ पराये हाथमें बिकाय जाते हैं जब-

रदस्ती बंधमान होतेहैं । पराया हाथ कहिये गुरुवालोगोंके हाथ नारी के हाथ, बानीके हाथ, कल्पना मायाके हाथ औ कायाके हाथ विषयनके हाथ, गाफिलीसे बिकाय गये मैं पारख के ऊपर हर सुरतसे खैंचता हौं परंतु जीव मेरी बात पर नजर नहीं करते,विषयनमें बंध हुये यमपुर गर्भवासमें चले जातेहैं । और इस मानुष को केताभी समुझावो परंतु एकाएकी समझने का नहीं विषयन में शब्द स्पर्श रूप रस गंधमें बिकेगा आसक्त होय के विषयनका गुलाम होयगा । मैं अपनी तरफ खैंचोंगा वो विषयन में भोगमें जायगा ताका उपाय गुरु बोलते हैं ॥ २३३ ॥

साखी—नित खरसान लोहा घुन छूटै ॥
नित की गोष्ट माया मोह टूटै ॥ २३४ ॥

टीका गुरुमुख—जैसा लोहे पर मुर्चा चढा रहताहै तैसा जीव पर बहुत दिन का विषयन का मुर्चा चढाहै ताते मनकी आसक्तता जीवसे छूटती नहीं । औ मुर्चे के मारे जीवको स्वरूप बिचार कछु सूझ पडता नहीं,मुर्चा कहिये आसक्तता । सो गुरु का विचार सार शब्द ताका निर्णय नित्त करना जबलग यथार्थ आसक्तता छूटै । जैसा रोज खरसान पर चढाने से लोहाका गुण तेज निकरता है औ मैल भी झर जाता है तैसा अनेक योनीके अनेक विषय जीवके ऊपरसे लगे हैं । ताते जीव मलीन तेजहीन लाचार कछु समझता नहीं माया मोहमें बंधमान है । ताते जबलग देह संबंधी व्यवहार है तबलग सतसंगमें विचार करते रहना जामें सकल योनी का मल औ माया काया गुरुवा स्त्री वेद बानी का मोह, औ मायाकी आसक्तता सकल टूटके जीव स्वच्छ पारख पदको प्राप्त होयगा । ये अर्थ ॥ २३४ ॥

साखी—लोहा केरी नावरी । पाहन गरुवा भार ॥
शिरपर विषकी मोटरी । चाहै उतरन पार॥ २३५॥

टीका गुरुमुख—लोह वेद बानी ताकी बनाई नाव भवसागरसे पार होने के वास्ते औ पाहन कहिये मन सो ता मन का बोझ उस नाव पर दिया। औ विष कहिये बानी ता बानी का विषय ब्रह्म ईश्वर स्वर्गादि प्राप्ती सोई मोटरी शिर पर मान लिया औ भवसागरते पार उतरना चाहता है तो कैसे पार उतरेगा। जा बानीमें मन लगाय के उसका विषय शिर पर माना है सोई विषय औ मन नाव सहित याको लेके भवसागर में बूडेगा कभी निकरने देने का नहीं। ये अर्थ ॥ २३५ ॥

साखी— कृष्ण समीपी पंडवा। गले हिंवारे जाय ॥
लोहाको पारस मिलै। तो काहे को काई खाय ॥२३६॥

टीका गुरुमुख—देखो जो सदा कृष्ण के समीप रहते थे पांडव औ अर्जुन कृष्ण के परम भक्त थे तिन की कौन गती भई। जो अंत-समय कृष्ण ने देह त्याग की तब पांडव दर्शन को आये थे सो उनकी सकल शक्ती अपनी कला से कृष्ण ने हर ली। औ उन को कहा कि जाय के हिमालय में गलो तब स्वर्ग में आवोगे ऐसी गती उन की भई जो कृष्ण के अधिक प्रिय थे सो हिमालय में गले आगे इन्द्रलोक को गये, जो कछु पुण्य किया सो भोग करके फिर मृत्युलोक में आये ऐसा भविष्य उत्तर पुराण में व्यासजीने कहा। तो लोहा को पारस मिला तो सुवर्ण होयगा फिर मुर्चा काहे को लगेगा। औ जीव को स्वरूप प्राप्त भया फिर उसे हिमालय में गलने का क्या काम औ स्वर्ग में जानेका क्या काम औ मृत्युलोकमें आनेका क्या काम। तो देखो कृष्ण के परम विश्वासी औ समीपी पांडव थे सो भवसागरमें नाव मोट बोझे सहित बूडे। अब इस

गीता भागवतके पाछे हे मनुष्य लोगो तुम क्यों भूले हो । जिनको कृष्णने गीता भागवत उपदेश किया तिन पांडवनकी गति तो ऐसी भई कि आवागवनमें रहे तो तुम आवागवन से कैसे बचोगे कभी नहीं बचनेके । ये अर्थ ॥ २३६ ॥

साखी—पूरब उगे पश्चिम अथवे । भखै पवन के फूल ॥
ताहु को राहू ग्रासे । मानुष काहेके भूल ॥ २३७ ॥

टीका गुरुमुख—पूरब कहिये प्रथमारंभ में जो उदय भया ज्ञान एकोहं सो हंकार के पक्षमें डूब गया । ताते अविद्याके वश होयके अनेक हुवा । अब सोई जीव पवनके फूल भखता है । पवनके फूल कहिये चार वेद छौ शास्त्र अठराह पुराण बानीमात्र पवनका फूल ताको बहुत विचार करके फिर मैं एक ब्रह्म सर्वसाक्षी ऐसी बानी अनुभव सहित ग्रहण करता है । फिर ताहूको राहू ग्रास करता है, विज्ञान कैवल्य असीपद ब्रह्म भी जो हुवा तब भी मायाने उसे खाय लिया गाफिल किया औ जगतमें खैंच लाया । वही ब्रह्म आदि माया के पक्ष में बूडा औ अनेक जगत हुवा । अब हे मनुष्य तुम क्यों भूलते हो औ ब्रह्म बनते हो । अरे प्रथमारंभ में तेरेमें आनंद उगा ता आनंदके पक्षमें अथय गया, ताहीते पक्का जायके कच्चा हुवा औ अनेक रूप होके अनेक बानी बोला ताहीमें फँसा, सोई मानुष तू है अब क्यों भूलताहै । औ आदिका मानुष था सो ताहूको राहू माया ने ग्रास किया सोई माया तेरे पीछे लगीहै, तू इसे भूले मत परखके आसक्तता छोड न्यारा हो । ये अर्थ ॥ २३७ ॥

साखी—नैनन आगे मन बसै । पलक पलक करै दौर ॥
तीन लोक मन भूप है । मन पूजा सब ठौर ॥ २३८ ॥

टीकागुरुमुख--नैनन के आगे मन बसताहै रहताहै औ जेती पलक गती है तेती दौड करता है।मनके दो पांव औ दो पंख,दहिने दो पंख औ बायें चार पंख,काया कमलका वासी है पर शिर मुख कछु है नहीं, मन मानै तिधर उडा जाता है।नाम हैं सोई धड औ श्वासा सोई पांव। इंगला पिंगला आँख की चारों पलकें सोई चार पंख, ये सूक्ष्म मन वर्णन किया औ सूक्ष्म मनसे माना जाय सो स्थूल माना । तो देह आदि ब्रह्म परियंत जेती मानंदी होय सो सब मन । ताते तीन लोकमें सब ठिकाने मनही का पूजन, मनही का ध्यान, मनही का जाप, मनही का ज्ञान, मनहीका योग, मनहीका वैराग्य, मनहीकी भक्ती, मनही की उपासना होतीहै । औ तीन लोक का राजा मन है ।मन के रूप पांच, स्थूल सूक्ष्म कारण महाकारण कैवल्य, ये पांच रूप करके मन है, जो मन नहीं तो पांचोभी मिथ्याभूत। ताते इस मनको परखै मनके फंदेमें न परै सो पारखी । ये अर्थ ॥ २३८ ॥

साखी--मन स्वारथी आप रस । विषय लहरफहराय ॥
मनके चलाये तन चलै ।जाते सरबस जाय॥२३९ ॥

टीका गुरुमुख--मन का अर्थ बिषय, सो उसमें बिषय की लहर सदा उठा करती है; बिषय बिना मन को दूसरा स्वाद कछु नहीं । मन के चलाये तन चलता है ताते जीव की शुद्ध बुद्धी आदि सकल संपत्ती जाय के बिषय में बंध हो जाती है ताते मनकी लहर बचाव। ये अर्थ ॥ २३९ ॥

साखी--कैसी गति संसारकी । ज्यों गाडर की ठाट ॥
एकपरा जो गाड में । सबै गाड में जात ॥ २४० ॥

टीका गुरुमुख--जैसी एक भेडी पानीके खांचमें परी, उसकी

देखादेखी सब भेडी खांचमें चली जाती है तैसी गति संसार की भई। एक पहिला पुरान पुरुष जो धोखेमें औ बानीमें परा सोई धोखे बानी में सब संसार प्रडा चला जाता है। कहते हैं कि जैसे बडे बडे चलेहैं औ उन्होंने जो प्रमाण किया है सो आपने भी प्रमाण करके चलना जड पशू न्याय, संसार बंध होयके गर्भवासमें चला, कोई विचार करके नहीं देखता मनने सबको गाफिल करके नचाया। ये अर्थ ॥ २४० ॥

साखी–मारग तो कठिन है। वहां कोई मत जाव ॥
गये ते बहुरे नहीं। कुशल कहै को आव॥ २४१ ॥

टीका गुरुमुख–मार्ग कहिये कर्ममार्ग योगमार्ग उपासनामार्ग भक्ती मार्ग ज्ञानमार्ग दक्षिणमार्ग बाममार्ग ये सब मार्ग मनके हैं औ महा कठिन हैं। जीवके स्वतःस्वरूपको मिलने नहीं देते भरमाय देते हैं ताते उस मार्ग में औ उनकी संगतमें कोई मत जाव। जो कोई आगे गये हैं सो लौटे नहीं वहां ही मन के रूप हो गये। अब उनकी कुशल कौन कहै मन का रूप होके भ्रमचक्र में परे महा दुःख में परे। ये अर्थ ॥ २४१ ॥

साखी–मारी मरे कुसंग की। केरो साथे बेर।
वै हालै वै चीधरे। बिधिने संग निवेर ॥ २४२ ॥

टीका गुरुमुख–कुसंग का मारा ये जीव मरता है।कुसंग कहिये काया का संग, सो देखो जीव,अमर होके काया के संग में मरता है जैसा केरा के झाड बेरी के संगमें उगा औ रहा, जब पवन चली तब बेरी का झाड हिलने लगा तो केराका झाड सब फटने लगा चींधी चींधी उडने लगी। तैसा ये जीव मन माया देह ताका सङ्ग

करके ताहीके मारे मरता है। जब देहमें विषयरूपी बयार चलने लगी तब तन मनको हिलाय दिया, सो जीव की चींधी उडने लगी क्षीण तेजहीन होने लगा। ताते विधि ने संग निबेर। विधि कहिये ब्रह्मा, ब्रह्मा कहिये रजोगुण, रजोगुण कहिये नरदेही, सो नरदेह पायके सकल संगका त्याग कर,पीछे नरदेहकी भी आसक्ताई छोडा सकल निबेरा करके पारख पदको प्राप्त होना। ये अर्थ ॥ २४२ ॥

साखी—केरा तबहिं न चेतिया। जब ढिग लागी बेर ॥
अबके चेते क्या भया।जब कांटन लीन्हा घेर॥२४३॥

टीका गुरुमुख—ये, जीव तभी चेता नहीं जब पक्कीसे कच्ची देह भई औ अब नाना देहिक दैविक भौतिक दुखन ने घेरा सो देखके चेता समझा, कि ये जगत महा दुखरूपी है, तो अबके समझे क्या ये जगत का सब दुख छूटता है। औ जब गाफिली पडी थी, पक्केसे कच्चा बना था, वाही समय जो अपने पक्के रूपको समझता तो ये संसार दुख काहेको पैदा होता आपी आप सुखी रहता। तो ता समय याको ये फहम क्यों नहीं आया कि दुखरूपी संसार पैदा होयगा तामें दुखित होऊँगा। ये शंका। तो प्रथम याने कभी दुखरूपी संसार देखा होता तो मालूम रहता औ आगे जगत कारणकी इच्छा न करता। परंतु याने दुखरूपी जगत कधी सपनेमेंभी न देखा था सुख-रूपी पक्के तत्वन में आप सुखी रहता था। तो याहू से और विशेष सुख कछु होयगा ऐसा सुखके भरोसे से भूला तो दुखकी प्राप्ती भई। ये अर्थ॥ २४३ ॥

साखी-जीव मर्म जाने नहीं ।अंध भये सब जाय ॥
बादिद्वारे दाहि न पावै। जन्म जन्म पछिताय २४४

टीका गुरुमुख—ये जीव कोई अपना निज मर्म जानते नहीं, कि हम पहिले पक्षरूपमें हते सो विशेष सुख अझझांई ताही के लोभते भूले औ कच्चे तत्वन को प्राप्त भये। फिर इच्छा करके विचित्र जगत निर्माण किया औ नाना बानी नाना कल्पना हमने किया तो सबके आदि कर्ता हम ऐसा मर्म न जानके भूले। औ दूसरा कर्ता अनुमान किया ताके विषयनमें अंध भये सब गर्भवासमें चले जातेहैं कोई यथार्थ परखके देखते नहीं सब मिथ्या बाद करके बादी बने। सो कोई जन्ममें कोई द्वारे भी इनकी दाद लगती नहीं अनेक जन्म धरके जन्म जन्म पछितातेहैं कि कब दुखसे छूटेंगे औ कब मुक्त होवेंगे। परन्तु जबलग सच्चे पारख गुरु नहीं मिलेंगे तबलग भरमते रहेंगे। ये अर्थ ॥ २४४ ॥

साखी—जाको सतगुरु ना मिला। व्याकुल दहुं दिस धाय॥
आंखि न सूझे बावरा। घर जरै घूर बुताय॥ २४५॥

टीका गुरुमुख—जाको सच्चा पारखपद मिला नहीं सो व्याकुल होयके चार बेद छौ शास्त्रके प्रमाणसे दशों दिशामें दौरता फिरता है। कहताहै कि सर्व दिशा में और सर्वकाल में मैं ब्रह्म परिपूर्ण हौं। मेरेसे न्यारा कछु नहीं। तो अनेक दुखरूपी जगत अनेक उपाधी होते जाते हैं, सो इसकी आंखिनसे सूझता नहीं, सब रोग अपने शिरपर धर लेता है ऐसा ये बौराया दिवाना हुवा। जो घरको तो आगि लगी औ घूरा बुझाता है, तो घूरे के बुझाये घरकी आगि कैसे बुझगी। तो याका अभिप्राय ऐसा है, कि जैसा रोगी को थोरा रोग है तबलग रोग रोग पुकारता है औ दुख होता है औ जब बात पित्त कफ आदि सकल रोगन को प्राप्त भया तब सन्निपात होताहै, फिर शरीरमें कुछ दुख मालूम होता नहीं। विभ्रांत होके आव बाव बकताहै औ करने

को कछु तो करता कछु ही है, फिर वाको दवाई लगती नहीं वसा ही मरता है।तद्वत वात ज्ञान औ पित्त योग औ कर्म उपासना कफ ये तीनों इकट्ठे भये, तब विज्ञानरूपी सन्निपात भया,फिर बौराया, आवबाव बकने लगा ।औ बाल पिशाच उन्मत्त मूक जड होयके आत्म दशा जगतको समुझावने लगा ।औ अपना घर पक्का सो जर गया याकी खबर कछु पडी नहीं वैसाही मरा ।तो जाको पारख गुरु न मिला ताकी गति ऐसी भई जो बौरायके मरा । ये अर्थ ॥२४५॥

साखी--बस्तू अंतै खोजे अंतै ।क्यों कर आवै हाथ ॥
सज्जन सोई सराहिये ।जो पारख राखै साथ ॥२४६॥

टीका गुरुमुख--वस्तू तो और जगहपर और खोजता और जगह पर है तो कैसे हाथ लगै । सज्जन विवेकी सोई जाके पास पारख होय ताहीको सराहिये औ बेपारखी गाफिल को क्या सराहिये जो भ्रमचक्रमें परा है अरे वस्तू जीव तो देह में है औ पोथिन में, पथरन में, पानिनमें, धातुमुरतिन में, काष्ठनमें, स्वर्गादिकन में खोजते हो तो जीव वस्तू कैसे मालूम होवेगी । ताते पारखी संतन की तारीफ है कि जहां वस्तू है वहां से उठाय लेते हैं । जानते हैं एक पारख बिना सब भ्रम में पडे हैं, पारख बिना सांचो झूठी वस्तू कैसे मालूम होवेगी ताते जो पारख पास रखते हैं सो पारखी पारखरूप स्थितिवान संत । उनकी कीर्ती करना, उनकी स्तुति करना, उनकी संगती करना, उनकी सेवा करना, तन मन धन सब खर्च करके उनका विचार करना, उनहीसे पारख स्थिति मिलेगी । ये अर्थ ॥ २४६ ॥

साखी-सुनिये सब की । निबेरि ये अपनी ॥
सेंदुरका सिंधौरा । झपनी की झपनी ॥२४७॥

टीका गुरुमुख–सब पारखी सज्जनें की बानी लक्ष लगायके सुनना, बिचार में ऐसा लक्ष लगाना कि लक्ष बिचार में पैवस्त हो जाय औ दूसरा स्फुर्ण कछु न उठै फिर जैसा पारख पारखी बताते हैं तैसा अपनी पारख करना । जैसा सेंदुर का पात्र सिंधौरा तैसा बिचारका पात्र अपना लक्ष बनाना, जेता पारखी जन बिचार बतावै तेता संपूर्ण लक्ष में ठहर रहै बाहर जाने न पावै । औ झपनी कहिये देह; देह की झपनी अंतःकरण ब्रह्म, सो जगत से ब्रह्म परियंत सब कल्पना बानी को परखना औ आप पारखरूप हो रहना अथवा देह अंतःकरण के ऊपर हो रहना । ये अर्थ ॥ २४७ ॥

साखी-बाजन दे बाजन्तरी । कल कुकुही मत छेर ॥
तुझे बिरानी क्या परी । तू अपनी आप निबेर ॥ २४८ ॥

टीका गुरुमुख–संसारके लोग नाना कल्पना में नाना मत बानिन में बाज रहे हैं संसार हो रहेहैं तो उनको सौसक्त होने दे । तूं कल कुकुही बेदु वा शास्त्री पुराणिक इनको छेडै मत, इनको बानी का पक्ष दृढ हो रहा है ये छोडनेके नहीं । तो तुझें बिरानी क्या परी । बिराने लोगन से तुझे क्या काम तूं अपना निबेरा आप कर । ये अर्थ॥ २४८ ॥

साखी-गावै कथै बिचारै नाहीं । अन जाने का दोहा ॥
कहहिं कबीर पारस परसे बिना । जस पाहन भीतर लोहा ॥ २४९ ॥

टीका गुरुमुख– गाते भी हैं औ उसका अर्थ करते भी हैं पर बिचार करके समुझते नहीं तो पारख का स्पर्श कछु होता नहीं जब लग पारखका स्पर्श नहीं भया तबलग कछु पक्का हंस होता नहीं । जैसा पारस का स्पर्श जबलग भया नहीं औ पाथर में जन्म भर

लोहा पडा रहा तो क्या सोना होयगा औ जंग खाय के खराब हो जायगा । तद्वत जो लाख बरस बानी में जीव पडा रहै तबभी हंस कधी होनेका नहीं पारख बिना । औ बानी के धोखे में खराब जड हो जायगा ब्रह्म बन जायगा । ये अर्थ ॥ २४९ ॥

साखी-प्रथम एक जो हौं किया । भयो सो बारह बान ॥
कसत कसौटीना टिका । पीतर भयानिदान॥२५०॥

टीका गुरुमुख-प्रथमारंभ में एक सूक्ष्म अहंता हंस में खडा भया ताके प्रताप ते कच्चा रूप निर्माण भया । सो एकही रूप औ एकही जीव भया सो बारह बान सर्व समार्थवान सर्व सिद्धिवान स्वरूप निर्माण भया परंतु कसौटी पारखपर ठहरा नहीं सो आखिर पीतर भया अनेक योनीको प्राप्त भया जीव यह । औ प्रथम एक जो अहं ब्रह्म ऐसा सिद्धांत जीवने खड़ा किया ताकी बारह बानी बनी; जाको द्वादश महावाक्य बोलते हैंपरंतु पारख में एक भी सत्य ठहरे नहीं सब पीतर भये, सर्व सिद्धांत खोटे ठहरे पारख के आगे । ये अर्थ ॥ २५० ॥

साखी-कबीरन भक्ति बिगारिया । कंकर पत्थर धोय ॥
अंतर में बिष राखिके । अमृत डारिनि खोय॥२५१॥

टीका गुरुमुख-ये संसारिक जीवन के भक्ती बिगार डारी, कंकर पत्थर धोने लगे, जड पूजन करने लगे । भक्ती करना चैतन्यकी साधु गुरू की सो बिगड के पाखंड मत आचरण करने लगे । अंतर में विष वासना राखके अमृत जीवको खो दिया भूल गये । ये अर्थ ॥ २५१ ॥

साखी-रहा एकको भई अनेकको । बिस्वा बहुत भ्रतारि॥
कहहिं कबीर इसके सँग जरिहै । बहु पुरुषन की नारि२५२

टीका गुरुमुख—अरे ये काया एक जीव की थी सो अनेककी भई ईश्वर देवता पाथर पीतर तीरथ मूरत वेद शास्त्र लोग कुटुम्ब परिवार नारी माता पिता इष्ट मित्रादि अनेक की लौंडी बनी। इसके मालिक बहुत बने अब किसके संग जरेगी। विश्वसे पैदा होय औ विश्व अभिमान मानै सोई विश्वा काया। औ प्रथमारंभ में एक जीव की बानी थी एकोहं याही बानीका प्रसंग करके आप अनेक हुवा तब अनेकके पास भी वही बानी गई औ बानीके भोक्ता पुरुष अनेक भये। तो देखो वेद आदि जेतिक बानी है तेती जब एकके पास थी तब एक भोक्ता था औ उसके पाससे निकरी तब अनेक पुरुष भोक्ता भये, ताते बहु भतारि विश्वा कहलाई। याने ब्रह्मा विष्णु शिवादि सकल जीवन को ठगा पर किसीके पास रही भी नहीं औ किसीके संग रहने की भी नहीं। तो अनेक जीव देह धरके मरि मरि जरि जरि गये बानी जहांकी तहांही बनी है और जीवनको मोहित करने के वास्ते। अरे ये बानी प्रथम एक पुरुषकी रही सो ताही को मोहित करके भरमाया और ता पीछे अनेक पुरुषन को मोहित किया सो याही के फंदे में विधि हरि हरादि सब मर मर गये। अब पहिले खसमन की तारीफ करती है ये बानी कि और जो होवेंगे उनको मोहनेके वास्ते। सो सब मानुष मात्रको बानी ने भ्रमाया। एक ये बानीने बडा आश्चर्य किया जो आप तो बहु पुरुषनकी नारी है परंतु जीवन का पुरुषत्व हर लिया औ जीवन को रांड बनाके इनके ऊपर अनेक खसम खडे कर दिये ताहीकी नारी जीवभी बने। नारीने सबकी नारी बनाया। ये आश्चर्य। ताते हे संतो एक बानी औ अनेक बानी सब जीवको बंधन है औ जीव की कल्पना है, तो तुम बानी को परखा मान के कधी इसके फंदेमें मत जाना। ये अर्थ ॥ २५२ ॥

साखी-तन बोहित मन काग है। लछ योजन उडि जाय॥
कबहिंके भरमें अगम दरिया। कबहिंके गगन समाय॥२८३

टीका गुरुमुख—तन है सोई जहाज औ तापर सूक्ष्म मन कौवा बैठा है सो थरि होने नहीं पाता। नाना संकल्प विकल्प आदि विषय बयार में हला करता है जहां लक्ष लगाता है तहां लाख योजन पर उडि जाता है। परन्तु कहीं देह छोड के इस की स्थिति नहीं पीछे देह में आय के बैठता है। कबहीं तो अगम दरियाव बानी तामें भ्रमता है औ कबहीं गगन अंतःकरण तामें समाय जाता है ये लक्षण सूक्ष्म मन के हैं। औ मन विषयन का अहार करता है ताके संगमें जीव विषय बासना में बंध होता है औ चौरासी भोगता है। ताते मन का संग कधी न करिये मन के आधीन न कधी होना मन को सदा परखते रहना। ये अर्थ ॥ २५३ ॥

साखी--ज्ञान रतनकी कोठरी । चुम्बक दीन्हों ताल ॥
पारखी आगे खोलिये। कूञ्जी वचन रिसाल ॥२८४॥

टीका गुरुमुख—ज्ञान कहिये जान, चैतन्य चिरंजीव अविनाशी औ जासे सकल उपाधी अज्ञानजनित जानने में आवै सो ज्ञान सत्य अज्ञान कहिये अजान जड अचेत बिभ्रांत नाशमान, तज्जनित उपाधि कहिये पृथिवी आप तेज वायु आकाश। आकाशपंचक, वायुपंचक, तेज पंचक, जल पंचक, पृथिवी पंचक आदि सकल व्यवहार बोलना मिथ्या भ्रांती, जगत चेष्टा स्त्री पुत्रादिक मिथ्या भ्रांती, वर्ण कर्म आश्रम धर्मादिक मिथ्या भ्रांती देव ऋषी पिशाच मनुष्यादि योनी मिथ्या भ्रांती, मैं सत्य पदार्थ, ऐसा निज बोध जाको प्राप्त हुवा सोई चुम्बक का ताला ज्ञानी ने अपने अंतःकरणरूपी कोठरी को दिया वा देहरूपी कोठरी को मौनरूपी ताला दिया। मौन कहिये जो जगतादि

सकल दृश्य उपाधी में नहीं औ ये मेरी नहीं ऐसा सर्वकाल जान के अभाव रखना सोई मौन ताला देहको ज्ञानिन ने दिया, वा बोधरूपी ताला अंतःकरण को दिया। सो ताला खोलना पारखीके आगे तब पारखपद की प्राप्ती होय। शील युक्त जो अती रिसाल मिष्ट बानी है सोई, मौन औ बोधरूपी ताले को कुञ्जी है औ बानी में विचार भी रहना ऐसी बानी जाके पास है सोई मौन ताले को खोलेगा औ सकल परख के पारखरूप होवेगा। ये अर्थ ॥ २५४॥

साखी--स्वर्ग पताल के बीच में। दुई तुमरिया बद्ध ॥
षट दर्शन संशय परी। लख चौरासी सिद्ध ॥२५५॥

टीका गुरुमुख-जो नाथ चौरासी लाख सिद्ध आदि सब के भीतर एक संशय खडी भई, कि भवसागर के बीच से कैसे पार होना औ परमात्मा में कैसे मिलना। ताते एक सगुण औ एक निर्गुण ये दो मत सो तुमडी अनुमानी औ अपने हाथ से बंध भये औ सकल संसार को बंध किया। औ जा भवसागर से पार होने की औ परमात्मा में मिलने की छौ दर्शन में संशय परी थी सो नाभी त्रिकुटी के बीच में दुइ तुमरिया बांधी। सोहं ओहं राम,ये छौ अक्षर मेंसे कोई दो अक्षर से लक्ष बांधा औ चौरासी प्रपंच मेंसे लक्ष खैंच लिया। दो अक्षर में धारणा बांध के सिद्ध हुये, भवसागर से पार हुये, परमात्मा में मिले। परंतु सकल भवसागर दुःख का कारण ब्रह्म सो महाझांई में परे ये कसर मालूम न भई। ये अर्थ ॥ २५५ ॥

साखी--सकल दुर्मति दूर करु। अच्छा जन्म बनाव॥
काग गौन गति छाडि के। हंस गवन चलि आव॥२५६॥

टीका गुरुमुख--प्रथम विचार तत्व को ग्रहण करना। औ जीव से रहित जेतिक मति है सो. दुरमती तिन सभन को दूर करना ।

वेद मत, शास्त्र मत, पुराण मत, चारबाक्य मत, नास्तिक, द्वैत, अद्वैत, विशिष्टाद्वैत, सो सकल मत जीव को बंधन है औ मिथ्या कल्पना है ऐसा जान के विचार से दूर करना जामें इनकी भावना उठने न पावै । तो मिथ्या भावना सब दूर भई तो बाकी आप रहा सत्य भाव सांच भूमिका । तब विचार तत्व से जीव अविनाशी सांच ठहरा औ देह आदि सकल भावना नाशमान ठहरी । तो देह गृह धन वेद आदि सब बानी इन को मान के मैं अधीर होता था परंतु ये सब क्षणभंगुर इन से मेरे से तीन काल संबंध नहीं, ये विजाती इन को मानना सोई सकल भयका कारण औ भय सोई अधीर्य का कारण, सो विचार से दूर किया तब धैर्य सहजही रहा । सो सत्त विचार धैर्य मेरे स्वजाती इन को छोडना नहीं; इन को छोडे से मैं नाना दुख को प्राप्त भया । ऐसा जान के आगे सकल जीव मात्र मेरे स्वजाती, ये अपनी भूल से अनेक बंधन में परे औ नाना कर्म करके अनेक योनीमें गये सो अनेक दुख भोगते हैं । जो इन को सुख प्राप्त होय सोई करना, ये नादान अपनी गाफिली से दुख भोगते हैं ऐसा जान के दया तत्व ग्रहण करना, कि मेरी स्वजाती निर्बैरत्व । अब सकल जीव मेरे स्वजाती, तब निर्वैरत्व बैरभाव असंभव ऐसा विचार में ठहरा तब दया तत्व सहजही सिद्ध हुवा । फिर शील तत्व लेके सकल व्यवहार करनेलगा, मृदु मीठा वचन सब से बोलने लगा । शील सकल सुखकी खानी । सकल दुख सुख जो वर्तमान में बर्ते सो सहन करना औ उस में आसक्त न होना, आसक्त न होते सब से मीठे रहना सोई शील । इस प्रकार दुर्मती दूर कर के अच्छा जन्म बनाव औ प्रपंच की काग गती छोड

के इस प्रकार बिचार सत्त दया धैर्य सहित हंस गति गहिके पारखपद को चला आव ये अर्थ ॥ २५६ ॥

साखी—जैसी कहै करै जो तैसी । राग दोष निरुवारै ॥
तामें घटै बढै रतियो नहीं । येहि बिधिआप सँवारै॥२५७॥

टीका गुरुमुख—जैसी शब्द से पारख कही है तैसी यथार्थ जो जीव करै तो पारख पद की प्राप्ती होय । तो सकल राग कहिये प्रीती औ दोष कहिये क्रोध, सो दोनों छोड के सत्त धीरज बिचार आदि तत्व ग्रहण करके सब की पारख यथार्थ से करै औ आप पारख पर स्थिर रहै । ता पारखमें ना रत्ती भर घटै ना रत्ती भर बढै, ज्यों का त्यों पारख में रहि जाय येहि बिधि आप अपने को सँवारे । ये अर्थ ॥ २५७ ॥

साखी—द्वारे तेरे रामजी । मिलहु कबीरा मोहि ॥
तैं तो सबमें मिलि रहा । मैंन मिलोंगा तोहि ॥ २५८ ॥

टीका गुरुमुख—हे जीव तू सब में रमा ताते रामजी कहिये जो तू सब में रमा तो चौरासी लक्ष योनी सब तेरा द्वारा ठहरा सो हे जीव जो तेरे को चौरासी छोडना है तो सत्त बिचार धीरज आदि तत्व ग्रहण करके पारख में आय मिलो, पारख सोई मैं अगर तू चाहता है कि तेरे में आय के पारख मिले तो तेरे में पारख तो मिलने का नहीं । क्योंकि तू तो सब में मिल रहा है मैं तेरे में नहीं मिलनेका । तेरेको रहित होना होय तो तू पारख पदको बिचार द्वारे आन के मिल । औ पारख पद तो अचल काहू में मिल नहीं सक्ता ताते तू आनके मिल । ये अर्थ ॥ २५८ ॥

साखी—भरम बढा तिहुं लोक में । भरम मंडा सब ठांव ॥
कहहिं कबीर बिचार के । तुम बसेहु भरमके गांव ॥२५९॥

टीका गुरुमुख—भरम कहिये सच्चिदानंद जामें एक जीव मिल के तीन लोक में हो गया ब्रह्म बना, सर्वव्यापी सर्वाधिष्ठान बना औ कच्चे तत्वन के रोगमें पडा । भरम ही से एकोहं कहिके अनेक योनी को प्राप्त भया हे जीव तुम विचार करके देखो कि जो वेदने ब्रह्म स्थिति बताई सो कहां है, वही भ्रमका गांव जामें तुम बसे हो । एक देहसे भ्रम खडा भया कि कोई हमारा दूसरा कर्ता है सोई भ्रम ब्रह्मा विष्णु शिवके हृदय में बसा औ तीन लोक में भ्रम मंड रहा, सोई भ्रम सब ठांव वेद शास्त्र पुराण छै दर्शन छानबे पाखंड में मंडा । ताते गुरू कहते हैं कि हे जीव ! तुम विचार के देखो तुम भी भ्रम के गांवमें बसे हो । भ्रम का गांव कहिये देह जहां से सकल भ्रम खडे होते हैं सो देहमें तुम रहते हो तो भ्रमचक्र में पडोगे, नहीं तो जल्दी परख के न्यारे होवो । ये अर्थ ॥ २५९ ॥

साखी—रतन अडाइनि रेत में । कंकर चुनि चुनि खाय ॥
कहहिं कबीर पुकारके । ई पिंडे होहु कि जाय ॥ २६० ॥

टीका गुरुमुख—हे संतो सुनो रतन कहिये ज्ञान सो रेतमें अडाय दिया विषयन में बिथार दिया औ अज्ञान दशा को जीव प्राप्त भया। ताते कंकर चुनि चुनि खाय । विषयन में आसक्त होके विषय कंकर चुनि चुनि खाता है औ ताहीमें प्रसन्न रहता है तो विषय याको खाय जायेंगे औ चौरासी में डार देवेंगे । तो ये पिंड मानुष तन यामें जो पारख पद मिला तो मिलता है नहीं तो चौरासी में जीव जायगा फिर कधी पारखपद मिलने का नहीं । ये अर्थ ॥ २६० ॥

साखी—जेते पत्र बनस्पती । औ गंगा की रेन ॥
पंडित बिचार क्या कहै । कबीर कही मुख बैन ॥ २६१ ॥

टीका गुरुमुख—हे कबीर जीव तुम बिचार करके देखो कि ब्रह्मा

बिचारा क्या कहेगा औ केतिक बानी कहेगा । सकल जीव कल्पि कल्पि जेतिक पत्र वनस्पती औ जेतिक गंगाकी रेनु है इतनी अनंत बानी बोले अगनित, सो सकल जीवन को बंधकारी भई सोई नाना बानी जाल में जीव परे । ताको परखने के वास्ते औ जीवन का बंधन छुडाने वास्ते मैंने भी बहुत बानी कहा परंतु अभीलग जीवके परखने में आया नहीं । ये अर्थ ॥ २६१ ॥

साखी—हौं जाना कुलहंस हो । ताते कीन्हा संग ॥
जो जानत बगु बावरा । छुवै न देतेउ अंग ॥ २६२ ॥

टीका गुरुमुख—मैंने जाना है जीव कि तुम सब हंस हो ताते तुम्हें परखाने के वास्ते संग किया । जो मैं ऐसा जानता कि तुम सब बकुले हो नाना विषयन में बौराय रहे हो औ नाना बानी कल्पना में तुम्हारा हंसत्व जायके बकत्व आया है, तो कभी अंग न छूने देता नजदीक न आने देता । परंतु हे हंसा तुम बक रहनी छोड देव औ अपनी स्वजातीय रहनी हंस दशा ग्रहण करके जड चैतन्य असत्य सत्यका निरुवारा करो । ये अर्थ ॥ २६२ ॥

साखी—गुणिया तो गुणहि कहै । निर्गुणिया गुणहि घिनाय ॥
बैलहि दीजे जायफर । क्या बूझै क्या खाय ॥ २६३ ॥

टीका गुरुमुख—गुणिया कहिये जो सदा गुणवान करै बिचार करै, तो जो कछु कहेगा सो बिचार की बातें कहेगा । औ निर्गुणिया कहिये जो बिचार न करै, सो बिचारी जीव, ताको बिचार अच्छा लगै नहीं । बिचार सुनिके घिनाता है औ विषयन में राता है ताको कभी बिचार कहना नहीं । जो पढना भी बहुत जानता है औ बिचार नहीं करता सो बैलमाफिक है । देवतन का पक्ष लेवै सो सुरपशु, वेदका पक्ष लेवै सो वेदपशु, बडे बडे आदमिन का पक्ष लेवै सो नर-

पशु शास्त्रन का पक्ष लेवै सो शास्त्रपशु पुराणनका पक्ष लेवै सो पुराण पशु, स्त्रियन से लंपट रहै सो स्त्रीपशु, ऐसे छै विधिका पशु जगतमें हैं इनको सत विचार बतावोगे तो ये क्या बूझैंगे औ क्या ग्रहण करैंगे । जैसे बैलके आगे जायफर रक्खै तो वो क्या बूझेगा औ क्या खायगा ताते निर्पक्ष होके मुक्त होनेकी श्रद्धा जाको होय ताको यथार्थ विचार कहना । ये अर्थ ॥ २६३ ॥

साखी--अहिरहु तजि खसमहु तजी । बिना दादकी ढोर ॥
मुक्ति परे बिलल्लात है । बृन्दावन की खोर ॥२६४॥

टीका गुरुमुख--खसम कहिये ईश्वर औ अहिर कहिये गुरुवा-लोग दोनोंने जीवको त्याग किया वेद बानी में लगाया । ताते सब के परे मुक्ती है ऐसा मानकर के जीव बिललाता फिरता है संसारके गलिनमें औ जंगल में औ तीर्थनमें । बृन्दावन कहिये जो बिंदुसे पैदा भया । ये अर्थ ॥ २६४ ॥

साखी--मुखकी मीठी जो कहै । हृदया है मति आन ॥
कहैं कबीर ता लोगनसे । तैसेहि राम सयान॥ २६५॥

टीका मायामुख--अर्थ स्पष्ट । कपट भक्ती जो करते हैं तिनसों कभी भगवान प्रसन्न नहीं होते । कपट भक्ती कहिये जो ऊपर कहते हैं, कि हे भगवान तन मन धन सकल सम्पति सहित तेराही है औ खर्च एक भी उसके नामपर नहीं करा जाता येही कपट भक्ती । ये अभिप्राय ॥ २६५ ॥

साखी--इतते सब कोई गये । भार लदाय लदाय ॥
उतते कोई न आइया । जासो पूछिये धाय॥ २६६ ॥

टीका गुरुमुख--इधर जगतमें पैदा होके नाना कल्पना कर बानी ग्रंथ बनाया औ जीवनपर पाप पुण्य स्वर्ग नर्कका बोझ लदाय

के आप मरे औ लिखि गये कि हम स्वर्गको जाते हैं । पर उधर स्वर्गसे उतर के कोई नहीं आया कि जासों पूछिये स्वर्गका समाचार धायके। तब इहांही से कल्पि कल्पि मिथ्या बातें रख गये । ये अर्थ ॥ २६६ ॥

साखी--भक्ति पियारी रामकी। जैसि पियारी आग ॥
सारा पट्टन जरि मुवा। बहुरि ले आवै मांग ॥ २६७ ॥

टीका गुरुमुख-- संसारमें रामकी भक्ती कैसी पियारी भई जैसी पियारी आग । जैसा आगिसे सारा नगर जरिके मर गया पर फिर भी मांग ले आते हैं । तैसा रामकी भक्तीमें जगत सब जरके मर गया पर फिरभी गुरुवा लोगनके पाससे मांग ले आते हैं । ये अर्थ २६७

साखी--नारि कहावै पीवकी । रहै और संग सोय ॥
जार मीत हृदया बसै । खसम खुशी क्यों होय २६८

टीका गुरुमुख--शिष्य तो कहाते हैं गुरुके औ उपासना करते हैं दूसरे देवतनकी, सो और देवताकी मिताई सोई जार मिताई । ये अज्ञान वश जीवनके खाविंद मुक्तिदाता एक गुरु हैं । औ गुरु छोडके जेते ब्रह्मा विष्णू महेश आदि देवता हैं सो सब जार ता जारनकी मित्रताई जा जीवनके हृदयमें बसती है ता जीवनपर गुरु कैसे खुशी होयँगे। वास्तविक तो इन जीवकी मुक्ती कधी न होना परन्तु इसका अयव न देखके अपने दयाके स्वभावसे गुरु परखायके मुक्त करते हैं । ये अर्थ ॥ २६८ ॥

साखी--सज्जन से दुर्जन भया । सुनि काहूके बोल ॥
कासा तामा होय रहा । हता ठिकोंका मोल ॥ २६९ ॥

टीका गुरुमुख-ये जीव सज्जन परम मित्र था तब अनमोल था सो गुरुवा लोगोंके औ बेद के बोल सुनके दुर्जन अपनी स्थिति का दुशमन हो रहा है। ताते जो हीरा का मोल था सो कांसा तांबाका मोल भया । जैसा हींग के संग कस्तूरी का मोल घट गया औ कस्तूरी का गुन जायके कस्तूरी में अवगुण पदा भया तैसा देह के संग औ गुरुवा लोगन के संग में जीव की कीमत जाती रही।चैतन्य था सो जड के मोल हो गया औ जडको चैतन्य के मोल किया औ सज्जनपना जाय के दुर्जनपना अवगुण पैदा भया । जैसी कस्तूरी हींग के संग नासी फिर न हींगही बनी न कस्तूरी ही रही तैसा गुरुवा लोगन की संगत में बेद के बोल सुनके जीव खराब हुवा सो न चैतन्य ही रहा न जडही बना, अधबीच में मिश्र होके रहि गया। ये अर्थ॥ २६९ ॥

साखी--बिरहिन साजी आरती । दर्शन दीजे राम ॥
मूये दर्शन देहुगे। तो आवै कौने काम ॥२७० ॥

टीका गुरुमुख—बिरहिन कहिये जीवको जिन गुरुवा लोगोंने बिरह लगाया कि राम तुम्हारा पुरुष औ तुम रामकी नारी हो। रामके मिले बिना तुम्हें सुख होने का नहीं । ऐसा खाविंद का वियोग सुनके जीवभक्तिमान तिनका धीरज छूटा औ अधीर होयके बहुत आरत भये । ताते बिरही जीवन ने राम के मिलने के वास्ते आरती साजी स्तुति साजी । सो जीते दर्शन होय तो बिरहिनी का मन शीतल तो भी होयगा औ मूये उपरांत दर्शन दिया तो कौन काम में आवेगा वो तो आपही मर गया फिर दर्शनका सुख मिथ्याभूत । ये अर्थ ॥ २७० ॥

साखी—पलमें परलय बीतिया। लोगहिं लागु तमारि ॥
आगल सोच निवारिके । पाछल करो गोहारि ॥ २७१ ॥

टीका गुरुमुख—अरे पल में परलय हो जायगा चोला छूट जायगा, सो न जानके बडे बडे अनुष्ठान तपस्या योग विद्याभ्यास लोग करत हैं । कोई यज्ञादिक कर्म करते हैं, कोई दौलत पैदा होनेके वास्ते बडे बडे उद्यम करते हैं, कोई महल माडी बाग बगीचे लगाते हैं औ विषयन में अंध हो रहे हैं। अरे आंखसे देखते हैं कि जेते दिन उदय अस्त होते हैं तेती उमर घटती है । कोई पैदा होते ही मरता है, कोई पांचमें, कोई दशमें, कोई बीसमें, कोई तीस चालीस पचास में मरता है, विपत भोगके अथवा सुख भोगके वृद्ध जर्जर होयके ऐसे ही मरते हैं, सो देखते हैं कि हमारी भी ये दशा होयगी । परंतु ऐसा जानके प्रपंच का त्रास नहीं आता क्योंकि माया में मोहित भये ताते जीवन पर तमारी आई अँधियारी छाय गई। सूझ परता नहीं। ताते अब आगल कुछ सोच करो मत । पिछले लोग पुकार पुकारके मर मर गये हैं उनकी कल्पनामें भी मत परो सब विचार के निराश हो जाव सुखी होवो औ वर्तमान में विचार करके वर्तो आसक्त होवो मत । ये अर्थ ॥ २७१ ॥

साखी—एक समाना सकल में । सकल समाना ताहि ॥
कबीर समाना बूझमें । जहां दुतीया नाहिं ॥ २७२ ॥

टीका गुरुमुख—एक ब्रह्म सकल संसारमें समाया औ सकल संसार ब्रह्म में समाया जलतरंग न्याय सुवर्ण भूषण न्याय। इस प्रकार अद्वैत उपदेश वेदने कहा सोई बूझ में अनुभव में जीव समाया जहां दुतिया नहीं अद्वैतमें । ये अर्थ ॥ २७२ ॥

साखी--एक साधे सब साधिया । सब साधे एक जाय ॥
जैसा सींचे मूल को। फूलै फरै अघाय ॥ २७३ ॥

टीका मायामुख--इस मनको साधा तिनने अष्ट सिद्धी, नौ निधी सब साधा । अगर मनको नहीं साधा औ अनेक मंत्र तंत्र आदि साधना करने लगा ताके पीछे मन अपनी ऐन में से निकर गया तब एकभी फल होने का नहीं । क्योंकि सकल ऋद्धी सिद्धी आदि फल का कारण मूल मन, तो सदा एकाग्र करके विचाररूपी जलसे सींचना तो सब फल फूल सहित तृप्ती को प्राप्त होय । ये अर्थ ॥२७३॥

साखी--जेहि बन सिंघ न संचरै । पंछी ना उडि जाय ॥
सो बन कबीरन हिंडिया । शून्य समाधि लगाय ।२७४।

टीका गुरुमुख--मायाने उपदेश किया कि एक मनको जिनने साधा लय किया सोई ब्रह्म हुवा तब जहां सिंघ जीवका संसार नहीं औ पंछी मन भी जहां उडि जाय सक्का नहीं औ न भवानी की भी जहां पहुंच नहीं तहां योगी लोगों ने शून्य समाधी लगाय के ब्रह्म का खोज किया । राजयोग हठयोग विधी से मनको लय किया उन्मनी अवस्था लेके ब्रह्म की बार्ता करने लगे । ये अर्थ ॥ २७४ ॥

साखी--सांच कहौ तौ हैं नहीं । झूठहि लागु पियारि ॥
मो शिर ढारे ढेकुली । सींचै औरकी क्यारि ॥२७५॥

टीका गुरुमुख--अब योगी लोगों ने जो ब्रह्म सिद्धांत किया है सो कछु सच्चा नहीं मिथ्या धोखा है परंतु बिना पारख जगत् को मिथ्या धोखा प्यारा लगा । ताते मेरे शिर ढेकुली डारके और और की क्यारी सींचते हैं । याका अभिप्राय ऐसा है कि गुरु के शिष्य कहलाते हैं औ गुरु के शिरपर मुक्ती का बोझा देते हैं । औ और और धोखा अनुमान कल्पना भास अध्यासादि की बानी दृढ करते हैं तो मुक्त कैसे होयँगे । ये अर्थ ॥ २७५ ॥

साखी--बोल तो अमोल है। जो कोई बोले जान ॥
हिये तराजू तौलि के। तब मुख बाहर आन ॥ २७६ ॥

टीका गुरुमुख--गुरु ऐसा जो बोल है सो अमोल है याको मोल कछु नहीं । अर्थ धर्म काम मोक्ष ज्ञान विज्ञान योग बैराग्य सब इस बोल की निछावर है पर जो कोई जानके बोले तो गुरु क्या पदार्थ है ऐसा विचार हिये में करना । गुरु कहिये जो कधी चलायमान न होय औ जाको पाय कसर खोट धोखा आदी अंत मध्य, सब परख-ने में आवे सोई पारख गुरु, ऐसा हृदय में विचार करके तौलना । जो किसी के हिलाये हिले नहीं औ उसके सामने सकल पद हिल जाय अतिशय गरुवा होय सो गुरुपद । ऐसा तौलके आप उसपर थीर होय तब मुख बाहर लाय तो ताका नाम स्मरण अमोल है । अगर कोई बात किसीसे कहना होय बोलना भई तो, पहिले अपने हृदय में उस बात को तौलना कि ये बात बडी वजनदार है किसीके हिलाये हिलने की नहीं औ जो दूसरेके हिलाये हिल जाय सो हलकी बात उसे जान के दूर करना मुख बाहर निकारना नहीं । गुरु शब्द जानके मुख बाहर निकारना सोई शब्द अमोल । ये अर्थ ॥ २७६ ॥

साखी--करुबहिया बल अपनी । छांड बिरानी आस ॥
जाके आँगन नदिया बहै। सो कस मरे पियास ॥ २७७ ॥

टीका गुरुमुख--बहिया कहिये गुरु गुरु, कहिये पारख सो अपनी पारखका बल करना औ सब धोखा परखके छोडना । जाके आँगन नदिया बहै, सो कस मरै पियास । मानुष तन पायके पारख पद को पावना मानुष पदके सामने पारख पद है औ मानुष पारखका अधिकारी है । तो नाना प्रकार के धोखे में इनने काहेको मरना । ये अर्थ ॥ २७७ ॥

साखी–वो तो वैसाहीहुवा । तू मति होहु अयान ॥
वै निर्गुनिया तै गुणवंता । मत एकहि में सान॥२७८॥

टीका गुरुमुख--अरे जो पहिले आरंभ समय बडे बडे भये सो सब अजान भये उनको पारखपद मिला नहीं जान परा नहीं ताते वैसेही बानी के प्रमाण से अजान ब्रह्म भये पर तूं मत अजान होय । वो तो निर्गुणिया निर्गुण अनुमान में फँसे ताते निर्गुण बानी सभी धोखा धार, चार बेदादि कथन किया । पर तूं गुणवंत पारखी सब एक में मत सानै; सब को न्यारा न्यारा परखके तूं पारखपर थीर हो । अरे वो निर्गुणियन ने तो जड चैतन्य जगत ब्रह्म सब एक ही में सान दिया सबको आत्मा बनाया, सो निर्गुण सगुण दोनों धोखा नाशमान औ पारख सत्य अविनाशी । ये अर्थ ॥ २७८ ॥

साखी–जो मतवारे राम के । मगन होहिं मनमांहि ॥
ज्यों दर्पण की सुन्दरी । गहै न आवै बांहि ॥२७९॥

टीका गुरुमुख–राम के मतवार रामभक्त सो अपने मन से ध्यान अनुमान से मानस पूजा करके मनही की मूरत, मनही की पूजा, मनहीमें मगन भये । जैसा दर्पण का प्रतिबिंब तैसा इनका मालिक, कुछ गहै न आवै बांहि । ये अर्थ ॥ २७९ ॥

साखी–साधू होना चाहिये । पक्का ह्वैके खेल ॥
कच्चा सरसों पेरि के । खरी भया नहिं तेल॥२८०॥

टीका गुरुमुख–साधु होना चाहिये तो पक्के तत्व ग्रहण करके पक्के होना, कच्चे का अमल मिटाय के खेलना । जैसे सरसों अधकच्चरी पेरी गई तो न खरी भई न तेल निकरा तैसा न करना । विवेक कोल्हू में पेर के पक्का तेल न्यारा निकारना औ

कच्ची खरी न्यारी निकार डारना । पक्के का ग्रहण कच्चे का त्याग करना । धीरज ग्रहण करना अधीरता छोडना, सत्य ग्रहण करना असत्य नाशमान छोड देना, शील ग्रहण करना अशील निष्ठुरताई त्याग करना, दया ग्रहण करना निर्दयत्व छोडना, बिचार ग्रहण करना बिविचार त्यागना । ये पक्के का अर्थ ॥ २८० ॥

साखी--सिंघो केरी खोलरी । मेंढा पैठा धाय ॥
बानी से पहिचानिये । शब्दहि देत लखाय॥ २८१ ॥

टीका गुरुमुख--सिंघोंकी खोलरी कहिये गुरुका भेष, मेंढा कहिये संसार के जीव, सो गुरुके भेष में बैठा ताते गुरु करके नहीं जानिये उसकी बानी से पहिचानना । शब्द जो है सो उसका स्वरूप उसकी जाति बताय देगा । जैसे सिंघके खाल में मेंढा पैठा तो सिंघ सरीखा मालूम भया सो देख के जीव भय मानने लगे परंतु विचार मान सिंघ करके भूलते नहीं उस की बानी से पहिचानते हैं कि सिंघ का रूप धरा पर सिंघकी आवाज नहीं निकरने का । तैसा गुरु कहिये सब का पारखी तो पारखी का भेष धरे कछु पारखी नहीं होता, जो पारख पद को प्राप्त होय औ पारखरूप होय सो पारखी ताते बानी से पहिचानिये । जो पारखी की बानी है सो निपक्ष बानी, ताके आगे सब बानी उडि जाती हैं, बेद आदिक कोई बानी उसके आगे ठहरती नहीं । जैसा सिंघ का आवाज हुवा । तब सब बनके सावजन का आवाज उडगया माकूफ होगया काहू के शब्द की मंजील चलती नहीं । तद्वत् पारखी का शब्द है सो सिंघ समान है, पारखी के शब्द की पहिचान है औ वचन की विशेषताई है कछु भेष की पहिचान की विशेषताई नहीं । ये अर्थ । अगर सिंघोंकी खोलरी कहिये मानुष देह तामें मेंढा चैरासी का जीव आयके प्राप्त

भया तो मानुष करके न जानिये उस की बानी से उस की खानी पहिचानिये।बानी खानी की पारख बतावती है औ शब्दसार सबको लखावता है । मानुष की बानी न्यारी औ पशू की बानी न्यारी ताको अर्थ जो निर्णय बानी है औ सत धैर्य विचार शील दया ये पदार्थ संयुक्त बानी है सो मानुष की बानी।इनमें जो निरंतर है सो मानुष, मानुष गुरुपदका अधिकारी, मानुष सब का निर्णय कर्ता, मानुष आवागवन से रहित, मानुष से दूसरी खानी नहीं, मानुष उत्तम खानी । औ मिलित समुच्चय बानी, अनमिल विषय बानी, मोह काम पक्षापक्ष बानी ये सब पशू बानी बिबिचार बानी, असत्य बानी, निर्दय बानी,निष्ठुर बानी, अधैर्य बानी, इस बानी इन तत्व युक्त जो जीव है सोई पशू । औ तिर्यक सिंह सो ज्ञानी कर्मी अकर्मी योगी वियोगी संयोगी उपासक रागी बैरागी सब आवागवन के अधिकारी हैं ।चार खानी हैं अनेक चोले धारण करते हैं बिना पारख अपने स्वरूप को चीन्हते नहीं ताते धोखा खाते हैं दुख पावते हैं । ताते रूप देख के न भूलिये बानी से खानी पहिचानिये । ये अभिप्राय ॥ २८१ ॥

साखी–जेहि खोजत कल्पौ गया ।घटहि माहीं सो मूर॥
बाढी गर्भ गुमान ते । ताते परि गो दूर॥ २८२ ॥

टीका गुरुमुख–जेहि खोजत कल्पौ गया । जेहि परमात्मा को खोजते खोजते कई कल्प बीत गये, सो हे जीव तुम्हारी कल्पना तुम्हारे घटही में है परमात्माका मूल कल्पना । कल्पना बिना दूसरा परमात्मा निश्चय होता नहीं । हे जीव तुम तो सिंघ हो परंतु कल्पना के बश मेंढा रहे हो । सो कल्पना गर्भ गुमान से बढी । काया का गर्भ, दौलत का गर्भ, बानी ब्रह्म का गर्भ, बिद्या का गर्भ; ज्ञान का गर्भ, सिद्धी का गर्भ, तपस्याका

गर्भ, राज का गर्भ, चतुराईका गुण, ये आठ प्रकार के गर्भ की मानंदी सोई गुमान । गुमान कहिये, अभिमान कहिये, सो अभिमान पांचप्रकार का विश्व अभिमान, तैसज अभिमान, प्राज्ञ अभिमान, प्रत्यज्ञात्मा अभिमान, निरंजन अभिमान, ये पांच अभिमान में हे जीव तू बंध भया, ताते पारख तेरे से दूर पडी औ पारख बिना तू छूटने का नहीं । ये अर्थ ॥ २८२ ॥

साखी—दश द्वारे का पींजरा । तामें पंछी पौन ॥
रहिबे को अचरज है । जात अचभौ कौन॥ २८३ ॥

टीका गुरुमुख—दश द्वारे का पींजरा देह तामें पंछी कहिये प्राण सो पवनरूपी, सो रहवे को तो आश्चर्यहै, जो खुले द्वारे पींजरे में रहता है औ उडि जाय तो उसको कछु आश्चर्य नहीं । ताते हे जीव तू गाफिल मत रहे औ गर्भ गुमान में भूले मत, सब कल्पना धोखा परख के दूर कर जीतेही मुक्त हो, पारख रूप हो थीर हो । ये अर्थ॥ २८३ ॥

साखी--रामहि सुमिरे रण भिरे । फिरे और की गैल ॥
मानुपकेरी खोलरी । ओढे फिरत हैं बैल॥ २८४ ॥

टीका गुरुमुख—संसारी लोग राम को सुमिरन करते हैं कहत हैं कि राम परमात्मा है सबका मालिक है हम सब उसके भक्त हैं । औ बेद कहता है कि सब में रमा है आकाशवत सोई परमात्मा सोई राम । तो भला ये परशुराम राम कृष्ण पांडवादिक क्षत्री रण में भिरे युद्ध किये, तो युद्ध कासों किया क्या जासे युद्ध किया तामें राम नहीं क्या । तो इन राम से कैसा युद्ध किया राम का गरा कैसे काटा, गरा काटा तो राम के दुषमन ठहरे कि राम के भक्त ठहरे । और और की गैल कहिये बाममार्ग

आदि और देवतनके मार्ग में फिरते हैं और जीवहिंसा करते हैं बलिदान देते हैं । तो देखो इन के बचनको ये नहीं सँभारते ताते पशू बैल हैं । मानुषकी खोलरी ओढे फिरते हैं इनके बचनका क्या प्रमाण है । ये अर्थ ॥ २८४ ॥

साखी-खेत भला बीज भला । बोये मूठीका फेर ॥
काहे बिरवा रूखरा । येगुण खेतहि केर ॥ २८५ ॥

टीका गुरुमुख—खेत कहिये मानुष देह और बीज कहिये बिंदु, सो दोनों साबूत हैं फिर कोई लडकी औ कोई लडका औ कोई नपुंसक ऐसी देह पैदा होती है इसका कारण क्या है सो सुनो । बोये मूठी का फेर कहिये, जो चन्द्र में पुरुष सम्भोग करै औ स्त्रीका रज पहले कँवल में उतरै पीछे पुरुषका रेत उतरै औ गर्भ रहे सो कन्या औ पुरुष सूर्यमें सम्भोग करै औ पहिले पुरुषका रेत उतरै पीछे स्त्रीका रेत उतरै तो पुत्र पैदा होय, दोनों का बराबर उतरा तो नपुंसक पैदा भया, ये आकाश तत्वमें संयोग भया ताका फेर । भला जो बिरवा रूखरा हो गया सल हो गया इसका कारण क्या ? तोई गुण खेतहि केर । वो स्त्रीके कोठेका गुण; कोठे में कुछ विकार है ताते सल हो गया । ये अर्थ । और खेत शिष्य, बोनेवाले गुरुवा लोग, बीज उपदेश विचार, सो दोनों भले परन्तु जाने जैसा उपदेश किया तैसा उगा । और कहूं कहूं बिरवा विचार फीका परा सो क्यों, तो ये शिष्यही के तरफ कसर उसका अन्तःकरण मलिन औ बुद्धिहीन, ताते विचार का फल हुवा नहीं । विचार का फल कहिये पारख स्थिति सो हुई नहीं काहे ते कि पारखकी तरफ सुरत किया नहीं । प्रकृतिके वश होयके सुरत गुम होगई ये देहका गुण । ये अर्थ ॥ २८५ ॥

साखी--गुरु सीढी ऊतरे । शब्द बिमूखा होय ॥
ताको काल घसीटि हैं । राखि सके नहिं कोय २८६

टीका गुरुमुख--गुरु सीढी कहिये गुरुका विचार सो गुरुके विचार से जो उतरा सो शब्द से बेमुख भया भवचक्रमें परा । ताको काल गुरुवालोग गर्भवासमें घसीटेंगे औ स्त्री काममें, उसे घसीटेंगी उसे कोई रोक सकने का नहीं औ गुरु बिना गर्भवाससे कौन रोकनवाला है । ताते गुरुके विचारसे उतरा सो जीव जहँडाया । ये अर्थ ॥ २८६ ॥

साखी--भुँभुरी घाम बसै घट माहीं ॥
सब कोइ बसै सोग की छाहीं ॥२८७॥

टीका गुरुमुख--भुँभुरी घाम कहिये कछु ज्ञान कछु अज्ञान ताको अज्ञान बिशिष्ट ज्ञान कहिये, सो सबके घटमें बसताहै । ताते सब कोई सोगके छांयमें रहतेहैं कधी सुख पावते नहीं । आशा तृष्णा मोह कल्पना के वश नाना दुख पावते हैं । ताते गुरु सीढीपर चढना फिर कदराई खाय के उतरना नहीं, पीछे प्रपंच के तरफ फिरके न देखै, तब गुरु पारख को प्राप्त होय औ सुखी होय, सोग संताप सब छूट जाय । ये अर्थ । और भुभुरी घाम कहिये बानी सो सबके घटमें बसती है ताते सोग की छांही मोह तामें सब जीव रहतेहैं । सो पारख पाय उड जायगी शोक मोह दूर हो जायगा । ये अर्थ ॥ २८७ ॥

साखी--जो मिला सो गुरु मिला । शिष्य न मिलिया कोय
छौ लाख छानबे सहस्र रमैनी । एक जीव पर होय ॥ २८८ ॥

टीका गुरुमुख--जो पारख में मिला सो आपी पारख हुवा औ जो गुरु में मिला सो गुरु हुवा सो तो स्थित भया । अब बाकी जो कोई जीव रहे हैं सो पारख गुरु से अनमिले हैं ताते दुखी हैं सो अपने दुखको जानके विरक्त भये औ जगत सुख स्वर्गादि सुख स्वप्नवत्

मिथ्या जाना, सांच विचारादि तत्वन को प्राप्त भये सो शिष्य । गुरुपद प्राप्ती की श्रद्धा जिन के अंतःकरण में दूसरी श्रद्धा नहीं । औ एक गुरु भक्ति धनी करके गुरु को खोजते हैं कि गुरु कौन है औ गुरुपद कौन है । उनका दुख दूर करने को गुरुने छौ लाख छानवे हजार रमैनी एक जीवपर कही । छौ लाख कहिये छौ दर्शन, छानवे कहिये छानवे पाखंड, सहस्र रमैनी कहिये नाना भक्ती इन का न्याय कसर कही जामें जीव सकल बंधन ते न्यारा होय । ये अर्थ । यामें एक शंका है कि गुरुने छौ लाख छानवे हजार रमैनी एक जीव के समुझाने के वास्ते कही परंतु जीव सब समुझे क्यों नहीं । तो सब गुरुत्वभाव ले रहे हैं अपना अपना अभिमान गहि रहे हैं ताते गुरु स्वरूप इनको समझा नहीं । निराभिमान शिष्यभाव से कोई मिला नहीं ताते रहि गया आज लों काहू के समझने में आया नहीं । और जो निराभिमानी शिष्य दशा को प्राप्त होके गुरुमें मिले सो गुरुपद को प्राप्त भये । ये अभिप्राय ॥ २८८ ॥

साखी—जहाँ गाहक तहाँ हौं नहीं । हौं तहाँ गाहक नाहिं ॥
बिन बिवेक भटकत फिरे । पकरि शब्द की छाहिं ॥ २८९ ॥

टीका गुरुमुख—गाहक कहिके मुमुक्षु, मुमुक्षु, कहिये शिष्य हौं कहिये हंकार अभिमान, सो जहां शिष्य दशा प्राप्त भई है तहां पांच अभिमानमें कोई अभिमान नहीं । अभिमान रहित शिष्य होयके अपनी स्थितीकी श्रद्धा और सब अभिमान का त्याग सोई शिष्य दशा गुरुपद का गाहक । और जहां पांच हंकार में एकौ अहंकार दृढ भया सो गुरुपद का गाहक नहीं उसे पारखपद की प्राप्ती नहीं । ताते बिना विचार जगत में भटकता फिरता है शब्दका आसरा पक्ष पकड रहा है । ये अर्थ ॥ २८९ ॥

साखी—नगपषान जग सकल है । पारख बिरला कोय ॥
नगते उत्तम पारखी । जग में बिरला होय ॥ २९० ॥

टीका गुरुमुख—नग कहिये पर्वत, पषान कहिये पत्थर, सो ये पर्वताकार जगत है तामें चौरासी लाख योनी नाना प्रकारके रूप सोई नाना प्रकार के पत्थर उनकी कीमत न्यारी न्यारी एकसे एकता तेज जास्ती तामें पांच रतन सर्वोपर हीरा लाल पन्ना पुखराज नील । ये पाञ्च रतनका अर्थ । हीरा कहिये सतोगुणी मानुष सोई देवता, सोई ज्ञान के भक्ती के अधिकारी बिचार के अधिकारी, उनको जो पारखीका संग मिले तो गुरुभक्ती सहवर्तमान पारख पद को प्राप्त होय । औ दूजा लाल कहिये रजोगुणी मानुष, सोई कर्मिष्ठ चतुर बेकारी, भक्ती उपासना सभी के अधिकारी जो उनको बिज्ञान बिचार उपदेश करो तो होय, जो अच्छा पारखी मिले तो देर करके पारख पदकी प्राप्ती होय । और तीजे नील सोई तमोगुणी मानुष, सोई राक्षस बिषयी अधकर्मी पापयोनी, काहूका अधिकारी नहीं, जो उपदेशी मिले तो योग बैराग्य का अधिकारी होय । चौथा पन्ना शुद्ध सतोगुण सो तो ईश्वर सिद्ध, ज्ञान बिज्ञान का अधिकारी, जो अच्छा पारखी गुरु मिलै सर्वदेशी तो उसे भी पारख पद की प्राप्ती होय । पांचवाँ पुखराजनिर्गुण, सो तो परमहंस ब्रह्म बिज्ञानी कहिये । औ अनेक मत सो अनेक प्रकार के पत्थर परंतु पाँच रतन बिशेष हैं । तो इस प्रकार के रतन औ पत्थर भी जगत में बहुत हैं परंतु पारखी हंस कोई कोई बिरले हैं उनके बिना जीव का निस्तार और स्थिति नहीं । तो नग पर्वत जगत और अनेक पषान सब अनेक तरह के जीव, पर्वत जड औ पषान भी जड जो अपने स्वरूप को जानते नहीं । औ पारखी चैतन्य जो अपने स्वरूप को जानता है ताते उत्तम है औ जगमें कोई बिरला है । ये अर्थ ॥ २९० ॥

सवैया—पारखि उत्तम है सबहिन ते, अरु पारखि भक्तहिं में कहिलैये ॥ काल औ कर्म अनेकन फंद सो, पारखि बिना न पारख लहिये ॥ ज्ञानी कर्म उपासक कोई, बिज्ञानी योगिन के पथ रहिये ॥ पूरण पारख आप मिलै तब, सबहि जालनाते अलगैये ॥ १ ॥

या नग पर्वत सोई स्त्री, ता पर्वत में पैदा भये सोई पाषान अनेक पुरुष, स्त्रीमें सेही पैदा होते हैं फिर स्त्रीसे बिलास करते हैं, स्त्री के संग में रहते हैं, अन्त में स्त्री के गर्भवास में समाते हैं पर्वत पषान न्याय । जैसे पषान पर्वतमेंसे पैदा होते हैं औ पर्वत में रहते हैं, अंत पर्वत के पेटमें जाते हैं, पर्वत छोडके पषान को अंते जगह नहीं तद्वत स्त्री छोडके पुरुषन को अंते जगह नहीं । स्त्री सब पुरुषनका अधिष्ठान बन रही है भग स्त्री छोडके उत्पत्ती स्थिति लय तीनों को जगह नहीं परंतु इनका पारखी कोई बिरला है सो स्त्री पुरुष दोनों से न्यारा है, सो सबका न्याय कसर बताता है । सो स्त्री पुरुष में नहीं आता सब से न्यारा रहता है, स्थिर है, पारखरूप है, रहित है । ये अर्थ । यामें एक शंका है, कि पारखी स्त्री नहीं, पुरुष नहीं, दोनों से न्यारा है तो क्या नपुंसक है । ये शंका । याका निराकारण करते हैं, कि नपुंसक कहिये ब्रह्म सो पारखी नपुंसक ब्रह्म को परखनेवाला नपुंसक ब्रह्म नहीं । नपुंसक कहिये स्त्री पुरुष की एकताई औ स्त्री पुरुष का अधिष्ठान, स्त्री पुरुष की एकता औ अधिष्ठान सोई ब्रह्म, ब्रह्म की दो वृत्ती एक पुरुष दूजे प्रकृती, ताहीके दो रूप विद्या वेष्टित औ अविद्या वेष्टित जीव ईश्वर दो रूप एकोंह वृत्ती से दो वृत्ती भई तासे बहुस्याम अनेक रूप जगत पैदा

भया । जैसा समुद्र में से एक बडा तरंग उठा ताके दो भाग भये ताकी अनंत लहरें भई । तो समुद्र भी जल तरंग भी जल, लहर भाग भी जल, तद्वत ब्रह्म से जगत हुवा ये वेद वचन ब्रह्म भी ब्रह्म, वृत्ती भी ब्रह्म, प्रकृती भी ब्रह्म, ईश्वर जीव जगत सब ब्रह्म, नाम रूप उपाधी मिथ्या, सुवर्ण भूषण न्याय,अद्वैत अखंड ब्रह्म; ये वेद वचन । ताते याको पारखी याते न्यारा पारख भूमिका पर, ब्रह्म के विषय सब कसर बिकार, ताते जीव को न्यारा करता है सो पारखी नपुंसक नहीं । ये अर्थ । एक अनीश्वर जाके मत से प्रकृती पुरुष मानते हैं, सो अनेक पुरुष मानते । एक पुरुष एक ब्रह्म एक ईश्वर नहीं मानते । तो प्रकृती पर्वत और अनेक पुरुष सो पषान सोई जगत, तो ये दोनोंका पारखी दोनों से न्यारा पारख भूमिका पर, सबका परखने वाला, सबके सांच झूठ को न्यारा करता है ताते सबसे न्यारा। ये अर्थ। कोई एक मत में जीवरूप औ पंच महा तत्वन को मानते हैं और कछु मानते नहीं । तो पंच महातत्व सो पर्वत, जीवरूप अनेक सोई पषान, तो पांच तत्व जीवरूप की उत्पत्ती स्थिति औ लय इनते अंते जीवरूप को जगह नहीं ऐसे मानते हैं । तो पंच महातत्व और जीवरूप और इनकी कसर बिकार परखने वाला पारखी इनते न्यारा पारख भूमिका पर, पारखी पारखरूप रहित थीर । ये अर्थ ॥ २९० ॥

साखी—सपने सोया मानवा । खोलि जो देखे नैन ॥
जीव परा बहु लूट में । ना कछु लेन न देन ॥ २९१ ॥

टीका गुरुमुख—अज्ञानता सोई नींद तामें मनुष्य सोया गाफिल हुवा, आप को आप बिसर गया तामें जगत स्वपना देखने लगा

सो जगत में राम नामकी लूट होतीहै। कोई कहते हैं योग करो,कोई कहते हैं यज्ञ करो,कोई कहते हैं तप करो,कोई कहत हैं जप करो, कोई कहते हैं उपासना करो,कोई कहते हैं भजन करो,कोई कहते हैं कीर्तन करो, सो जीव सब सुन सुनके बहुत लूट में परे। परंतु जब गुरु की दया से जागा औ बिचार करके लगा, अज्ञानरूपी नींद उड गई और गुरु पारख आने लगी, स्वपनेकी भ्रांती उडी पारखी का प्रकाश भया तब देखताहै तो राम नाम और ईश्वर औ ब्रह्म ये कछु वस्तु नहीं जो लेयँगे देयँगे। और धन स्त्री पुत्र कुटुम्ब जो देखते थे सो भी अंत में कछु लेने देने को नहीं और हक नाहक जीव लूटमें परा है न कछु लेना न देना। स्वपने की संपत स्वपनेमांह सांचीसी मालूम होतीहै जागृती बिचारमें सब मिथ्या। ये अभिप्राय ॥ २०१ ॥

साखी--नष्ट का यह राज है। नफर का बरते तेज ॥
सार शब्द टकसार है। कोई हृदय मांहि बिबेक२०२

टीका गुरुमुख--नष्ट कहिये नाशमान, नाशमान कहिये देह सो देहके राज्य में नफर मन ताका तेज बरताता है सो तेज में जीव लाचार है औ बंध है। मनके तेज से बारंबार गाफिल होताहै। ताते सारशब्द टकसार कहिये गुरुवा बचन, ताका बिबेक सदा हृदय में करते रहना, कभी गाफिल होना नहीं। जब बिबेक का तेज प्रकाश होयगा तब मनका तेज फीका परेगा औ जीव स्वतंत्र होयके मुक्त होयगा पारख पदको प्राप्त होयगा। बिबेक का तेज जैसा सूर्य औ मन का तेज जैसा दीपक। ये अभिप्राय। जब देह नाशमान तो देह से जो पैदा होय दूसरा अनुमान ब्रह्म ईश्वर कर्ता सो भी नाशमान। सच्चिदानंद पद बानी, निर्विकल्प सविकल्प समाधी, सगुण निर्गुण भाव, सिद्धी देवता सभी नाशमान, बेदबानी ये भी नाशमान क्योंकि देह बिना

ये कहां से सिद्ध होयगा, ताते सभी नष्ट हैं । तो नष्ट कहिये ब्रह्म औ ब्रह्मके नफर कहिये त्रिदेव छौ दर्शन छानवे पाखंड ये सब नफर येसबका तेज संसार में बरतता है।ताते सब जीवन को इन लोगोंने भुलाया, नाना ग्रंथ नाना प्रमाण किये तामें जीव सब अरुझे, स्वपनेकी लूटमें परे । ताते सारशब्द कहिये छौ दोष रहित छौ पुढ़ी की मांनदी रहित और जा शब्द से सकल शब्द की कसर धोखा मालूम होय औ पारख पदको जीव प्राप्त होय सो सार शब्द । और टकसार कहिये जहां चार प्रकारका शब्द और सांच झूठ का निर्णय होय सो टकसार सब का बीजक, ताको विवेक सदा हृदयमें कोई कोई जीव करते हैं सो गुरुपद को प्राप्त होतेहैं और नफर के तेजमें नहीं आते । नफर का तेज पारखी पर नहीं पर सकता ताते पारखी सदा मुक्त रहित हैं ये अर्थ ॥ २९२ ॥

साखी—जबलग बोला तबलग ढोला।तौलो धनव्योहार॥
ढोला फूटा बाला गया।कोई न झांके द्वार॥२९३ ॥

टीका गुरुमुख—बोला कहिये शब्द,ढाल कहिये देह,तो धन औ ब्योहार जेते हैं सो सब देह के साथी । और देह छूट गया बोलना माकूफ हुवा, जीव निकर गया, जहां आशा था तहां बासा पाया गर्भमें । अब वो द्वारन जाना परा और धनमाल सब दूसरे ले गये, अब ये सकल लौटके फिर उस द्वारे नहीं जाने सके। तो देखो सब नाशमान व्यवहार मिथ्या है औ नष्टके राजमें नफरका तेज है वाका संग्रह पारखिनने न करना । ये अर्थ॥ २९३ ॥

साखी—कर बंदगी बिबेककी।भेष धरे सब कोय ॥
सो बंदगी बहि जान दे।जहां शब्द बिबेक न होय२९४

टीका गुरुमुख—बिवेक कहिये जो सांच झूठ दोनों मिले रहे हैं जड औ चैतन्य ताको न्यारा न्यारा करके समुझौता समुझ का नाम बिवेक है ताही समुझ की बंदगी करना। क्योंकि समुझेसे समुझ होती है और समुझ से जीव का कारज है कछू भेष से जीव का कारज नहीं । भेष तो सब कोई धर लेता है तासे कछु जीव का कारज नहीं । ताते सो बंधगी जामें जीवका कारज नहीं ताको पहिचान नहीं । जहां शब्द का बिवेक समुझ नहीं ताकी बंदकी में कछु फायदा नहीं । बेफायदे की बंदकी वहि जाने दे, जो आपही तृप्त नहीं है सो दूसरे को क्या तृप्त करेगा । ये अर्थ ॥ २९४ ॥

साखी—सुर नर मुनि औ देवता । सात दीप नौखंड ॥
कहहिं कबीर सब भोगिया। देह धरे को दंड॥२९५॥

टीका गुरुमुख—देह कर्मन से पैदा होता है, कर्म के अधार से रहता है और कर्मन से नाश होता है । मैथुन कर्म से पैदा होता है, उद्योग कर्मन से पालन होता है, संवार कर्मन से नाश होता है। जैसा कर्तव्य जीव करता है तैसा देह जीव को होता है, फिर वह कर्तव्य का भोग सोई दंड जीव को होता है । सो दंड देव देवादि नरमुनी सब भोगते हैं जब भोग सरा तब देह छूट जाता है। कर्म तीन प्रकार का संचित प्रारब्ध क्रियमान,संचित कहिये जो अनेक जन्मका कर्म भोगते भोगते बाकी रहा औ प्रारब्ध कहिये पिछले जन्मके कर्म अब भोगता है सोई कर्मनका रूप ये देह । कर्म के जोर से भोग के वास्ते खडा है, कर्म भोगे बिना मिटते नहीं, जब हो चुका तब कर्म मिट गया, जब कर्म मिटा तब देह छूटा, ये प्रारब्ध कर्म । तीसरे क्रियमान कर्म जो अब मानंदी कर के कर्म होता है सो क्रियमान, आगे देह होने का कारण देह होने का बीज

कर्म है । ये तीन प्रकार के कर्म जीव को दंड हैं । सो सुर नर मुनी देवता आदि जेते देहधारी भये सो सबन ने देह धरेका दंड भोगे, दंड भोगे बिना छूटते नहीं । तब विचार करने की और सतसङ्ग करने की विशेषताइ क्या । ये शंका । विचार और सतसङ्ग की विशेषता ऐसी है कि गुरु विचार उदय होनेसे संचित कर्मका नाश होताहै और क्रियमान कर्म हो सक्ता नहीं क्योंकि विचारसे मानंदी सब मिथ्या ठहरी ताते मानंदी कर्मभी मिथ्या ठहरा ताते हो सक्ता नहीं । जब क्रियमान नहीं, तब आगे देहभी नहीं जब बीजनाश हुवा तब वृक्ष भी नहीं । अब रहा प्रारब्ध सो ताका रूप देह बना है सो भोगे से नाश होवेगा, फिर आगे कछु नहीं ये विचारकी विशेषताई । तो भला येही तरह ब्रह्मज्ञानी वेदांती बोलतेहैं । ये शंका । तो बोलते तो सत्य हैं परंतु गुरुपद पारख स्थिति को प्राप्त भये नहीं ये कसर है ताते बीज है, कसर सोई बीज ताते फिर देह होता है, ये कसर पारख प्राप्त होय तो रहित होय । ये अर्थ ॥ २९५ ॥

साखी—जबलग दिलपर दिल नहीं।तबलग सब सुखनाहिं॥
चारि युग पुकारिया । सो संसे दिल माहिं ॥२९६॥

टीका गुरुमुख—दिलकहिये चित्त; चित्त कहिये चैतन्य, चैतन्य के ऊपर चैतन्य कहिये पारख, सब चैतन्य की गति मति जासे जानने में आवै सो सब चैतन्य के ऊपर चैतन्य । तो याको अभिप्राय ऐसा है कि जबलग जीव पारख पद को प्राप्त नहीं हुवा तबलग सब सुख को प्राप्त नहीं । सब सुख कहिये जासे आवागवनका दुःख दूर होय सो सब सुख । चारों युग वेद शास्त्र सब पुकार करते हैं सर्व सुख के प्राप्ती के वास्ते और जीव सबने सर्व सुख ब्रह्मानंद सुख माना है सो तो सुख नहीं । क्योंकि ब्रह्मानंद सुख में से जगत दुःख

का रूप पैदा भया जा सुख में दुख पैदा भया सो कछु सुख नहीं, दुख दुख का अधिष्ठान। तो ब्रह्मानंद कहिये ज्ञान की सुषुप्ती, और सब सुख कहिये विषयानंद योगानंद अद्वैतानंद विदेहानंद ब्रह्मानंद ये पांच आंनद उड जाय पारख से और जोई सुख रहै सो निजसुख पारखी विना प्राप्त होता नहीं। सो जीवन को पारख आने के वास्ते परखीने चारों युग पुकारा परन्तु जीवन ने कछु पांचों आनंद की कसर पारखी नहीं, ताते सब सुख की प्राप्ती भई नहीं संशय जीव में बनी रही। ये अर्थ॥ २९६ ॥

साखी—यंत्र बजावत हौं सुना। टूटि गया सब तार॥
यन्त्र बिचारा क्या करे। जब गया बजावन हार२९७॥

टीका गुरुमुख—यंत्र कहिये देह, यंत्र कहिये बाजा, सो देहबिन कोई आवाज उठा नहीं, वेद शास्त्रादि सब आवाज देहसे उठे। तेही ब्रह्म येही जीव ऐसा आवाज उठा, सोई आवाज सब मनुष्यनने सुना ताहि में वश भया, तो देखो दोष जीवका कि देहका। ये शंका। अरे यंत्री विना कहीं यन्त्र बाजता है, तो यंत्र कैसाही बाजै कछू यंत्र का दोष नहीं, जैसा बजानेवालेने बजाया तैसा यंत्र बजा जैसा बोलनेवालेने बोला तैसा देह से आवाज निकरा। जब बोलने वाला निकर गया तब देह यंत्र पडा रहा देह क्या करेगा। ये यंत्री ने यंत्र बजाया, आप अवाज के बंधन में आया, सोई आगे देह धरने को बीज हुवा। जैसा बाजावालेने एक बाजा बनाया और उसको बजाया और उसके शब्द में बंधि के आसक्त हुवा फिर वो यंत्र के तार टूटे तो दूसरा यंत्र बनावेगा, दूसरा यंत्र बनाने का बीज आसक्ती है। तैसा देह यंत्र यामें इंगला पिंगला सुषुमना ये तीनो तार, याहीसे यंत्र बजता है और यंत्री जीव बजाता है। जब तार टूट गया श्वासा टूटा, तब यंत्र फीका परा देह गिर परा। फिर यंत्री

जीव गया यंत्र का क्या काम, तार टूटै आवाज तो निकरने का नहीं; यंत्री कैसें खुशी होयगा । ताते दुखी उदास होयके और देह छोडके अन्ते दूसरा देह यन्त्र बनाया, फिर आपही बजाने लगा अब वो देह निकम्मा भया । ये अर्थ ॥ २९७ ॥

साखी–जो तुं चाहै मूझको । छांड सकल की आस ॥
मुझही ऐसा होय रहो ।सब सुख तेरे पास॥२९८ ॥

टीका मायामुख–जो तू मुझे पारख को चाहता है तो सकल की आशा छोड दे आशा सोई दूसरी बंधन, बंधन सोई दुखका रूप है । आशा पुत्रकी धनकी स्त्री की, घरकी, कुटुम्ब की, राजकी, काज की, अनाज की, वस्त्र की, जलकी, ऋद्धी सिद्धी की; स्वर्गकी, देवता की; योग ज्ञान भक्ती की, देहकी केवल मुक्ती की, आशामात्र सब जीव को बंधन। और पारख की आशा सब वो नहीं ताते जो पारखको चाहै तो सबही आशा छोडै और मुझही ऐसा पारख हो रहे तो सबही सुख तेरे पास है। जबलग तू सुखकी आशा करेगा तबलग तेरे को दुख होवेगा सुख नहीं मिलनेका । जबही सुख दुख दोनों मिथ्या परखके छोडेगा तब सुख तेरे पास है पारख सुख तेरे पास है और जो आशा बामा छोडके पारखरूप हुवा सो गुरुरूप जो गुरुका सुख सो उसका सुख स्वइच्छा वर्तमान सिद्धीका, पर इच्छा वर्तमान भक्तका अनीच्छा वर्तमान ज्ञानी का, निरास वर्तमान पारखी का, जहां कोई वर्तमान की आशा नहीं सो निरास वर्तमान तामें सब सुख है । ये अर्थ ॥ २९८

साखी–साधु भया तो क्या भया । बोलै नाहिं बिचार ॥
हतै पराई आतमा । जीभ बांधि तरवार ॥ ९९ ॥

टीका गुरुमुख–साधु भया, जाति पांति मर्यादा छोडी. भेष

साधुका धारण किया, पर बिचार करके बोलता नहीं पक्ष लेके बोलता है। बेद पक्ष, शास्त्र पक्ष नाना ऋषिनका नाना मतनका पक्ष, सो सब विचार बानी जासे पराई आत्मा को मारते हैं जीव हिंसा करते हैं उनका संग दूर छोडना। जाने जीभ में तरवार बांध के अनेक बानी बोलके जीवको बंधन दिया सो काल उसकी संगत छोड देना। जामें जीव दुख पावै और जीव का बिनाश होय सो बानी तरवार के माफिक है। जाने जीभमें बांधा सो साधु भया तब भी उसका संग छोड़ना वह जीवका घात करेगा। ये अर्थ ॥ २९९ ॥

साखी–हंसा के घट भीतरे। बसै सरोवर खोट ॥
चलै गांव जहवाँ नहीं। तहाँ उठावन कोट ॥३००॥

टीका गुरुमुख–हंसा के घट में जो अनुभव बसता है सो सब खोटा मिथ्या है। अरे जहाँ गांव वस्ती नहीं तहां शून्य में स्वर्ग में कोट उठाने चले तो मिथ्या भ्रांती। हंसा कहिये जीव को, जीव कहिये जाको कभी नाश न होय, मान सरोवर कहिये जीवकी मानंदी, मानंदी परोक्ष प्रत्यक्ष अनुमान उपनेय शास्त्र अर्थापत्ति भाव अनुभव। मानंदी दो प्रकार परोक्ष अपरोक्ष ताके आठ प्रमाण ताको अर्थ। प्रत्यक्ष कहिये जो आंखसे देखनेमें आवै सो स्थूल देह। अनुमान कहिये जो देखने में न आवै चित्त से अनुसंधान करै जो ऐसा होयगा सो सूक्ष्म। उपमेय कहिये इसके सरीखा है आकाशसा, बायूसा, तेजसा, पृथिवीसा, सो कारण। शास्त्र प्रमाण कहिये जैसा शास्त्र में वेद में लिखा होय सो मानिये। अर्थापत्ती कहिये जो अर्थ करके वस्तू ठहरे सो मानिये। अभाव प्रमाण कहिये काहू प्रमाण का काहू वस्तू का भाव नहीं सो भी कारण। भाव कहिये सबका अभाव सुषोप्तिवत औ अपनी भाव सोई

महाकारण तुरिया, अनुभव कहिये निज समुझ जहां काहू का भाव नहीं और अपना भी भाव नहीं भावातीत भाव कैवल्य आत्मा सच्चिदानंद । ये अष्ट प्रमाण कर करके दो प्रकार की मानंदी हंसा के घट में बसी सो खोटी और बंधन । सो परख के दूर करना। ये अर्थ ॥ ३०० ॥

साखी—मधुर वचन है औषधी । कटुक बचन है तीर ॥
श्रवन द्वार होय संचरे । सालै सकल शरीर ॥ ३०१ ॥

टीका गुरुमुख—मधुर वचन मीठा बचन मानसी कटुक वचन की औषध है ताते मीठी बानी बोलना जाते जीव सुख पावै । कटुक वचन है सो मनको तीर है कान के द्वार से पैठ के मनको बेध करता है । फिर सब शरीर में दुख होता है ताते कटुक वचन काहूको न बोलिये । ये अर्थ ॥ ३०१ ॥

साखी—ढाढस देखो मरजीवको । धाय जुरी पैठि पतार ॥
जीव अटक माने नहीं । लेगहि निकरा लाल ॥ ३०२ ॥

टीका गुरुमुख—ढाढस कहिये दृढता, मरजीव कहिये योगी, सो योगिन की दृढताई देखो । दृढ कहिये श्वासा, सो श्वासा में जुरके पातालवास में बैठा, नाभी कुंडली में बैठा । अरु मरुडंड होय के ब्रह्मांड में पैठ के लाल कहिये ब्रह्म अनुभव सो ले निकरा, जीव ने षट्चक्र की अटक मानी नहीं । राजयोग संधान से प्रथम अग्निचक्र बेधा फिर बिशुद्धीचक्र बेधा फिर अनहद चक्र बेधा फिर मनिपूर चक्र बेधा फिर स्वाधिष्ठान चक्र बेधा फिर मूलाधारचक्र बेधा ऐसी उलटी राह चलाई । मरजीव ने काहू बात की अटक मानी नहीं मरने जीने को

डरा नहीं ब्रह्म अनुभव लेके निकरा सोई ढाढस जीवन को दृढता भई कि हम ब्रह्ममें मिले आवागवनसे रहित भये परंतु धोखे में परे । इनकी ढाढस अंतमें डूबजायगी जब चोला छूट जायगा तब योग कला नाश होयगी इनका अनुभव कहां रहेगा । ये अर्थ ॥ ३०२ ॥

साखी–ई जग तो जहँडे गया । भया योग ना भोग ॥
तिल झारि कबीरा लई । तिलैठी झारें लोग ॥३०३॥

टीका गुरुमुख--योगकी विशेषता योगीलोग बताते हैं, कि ये जग जहँडे गया भ्रमही में गया । न जगतमें योग भया न भोग भया दोनोंमें से एककी प्राप्ती भई नहीं । तिल कहिये जीव, तिलैठी कहिये देह, सो नेती धोती कपाली कुंजल बस्ती ये क्रिया करके षट्चक्र झारिके जीवको लेके योगीजन ब्रह्म भुवनमें गये और ब्रह्म भये। तिलैठी देह ताको अज्ञानी लोग झारते हैं, तीर्थ नहाते हैं, व्रत करते हैं जप तप करते हैं, शिला धातू अंधे जड मूर्ती पूजते हैं, वेद शास्त्र आदि बहुबानी पढतेहैं, तो इनको ब्रह्मप्राप्ती होनेकी नहीं तिलके पेरे तेल निकरता है कुछ तिलैठी के पेरे तेल निकरता नहीं । तैसा योग क्रियामें जीवको परना तामें सकल सिद्धांत निकरता है और ऊपर देहको कर्मनमें पेरे कुछ निकरता नहीं । सो आदिनाथादि सकल सिद्ध योग सिद्धांत का रस लेके परमपद को गये अब खाली बानी रही है सो लोग झारते हैं यामें कहां पावेंगे योग विना । ये अर्थ ॥ ३०३ ॥

साखी–येमरजीवा अमृत पीवा । क्या धसि मरसि पतार ॥
गुरुकी दया साधुकी संगति । निकरि आव यहि द्वार ॥

टीका गुरुमुख–अब मायाने ऊपरकी साखीमें योग उपदेश किया

तामें सब जीव अंरुझा ताते गुरु निकारते हैं, कि हे मरजीवा जीव
तू जीयतही मरि रहा योग समाधिस्थ हुवा और ब्रह्मांडमेंसे अमृत
चूवताहै सो लंबीका योग करके ऊर्ध्वद्वारेसे तूने पिया और मग्न हुआ।
परंतु इसका कारण क्या तेरेको कुछ अमृतसे और समाधीसे काम नहीं
क्योंकि उससे तेरी कछु स्थिति नहीं, अमृत औ समाधी नाशमान
है और बिजाती है तेरी स्वजाती नहीं। तू अविनाशी जीव है चैतन्य है
और पारख तेरी स्वजाती भूमिका है। सो गुरुकी दयासे सत्संग द्वारा तू
अपनी भूमिका पर निकरि आव थीर हो। अरे काहेके वास्ते पतार
में नाभी कुंडली में धसके मरताहै याते कछु कारज नहीं। अरे जेता
न्यारा करके जाना तूंने सो सब बिजाती तेरेको बंधन है। तू सत्संग
द्वारा सबको परखके पारख भूमिका पर थीर हो। ये अर्थ ॥ ३०४ ॥

साखी—केतेहि बुन्द हलफो गये। केते गये बिगोय ॥
एक बुन्द के कारणे। मानुष काहेके रोय ॥ ३०५ ॥

टीका गुरुमुख—बूंद कहिये देहको, जो पिताके बिंदुसे पैदा
भया। सो कितनी तेरी देह तो हलफो गई, पिताके रेतके संग माता के
गर्भमेंही छूट गई गर्भपतन हुवा। केतिक देह माताके गर्भमें पुष्ट होयके
छूटी, केतिक देह लरकाई में छूटी, केतिक तरुणाई में छूटी, केतिक
वृद्धाई में छूटी, केतिक सुख भोगते छूटी, केतिक दुःख भोगते छूटी।
अब हे जीव ये वर्तमानमें तेरी एक देह है सो वर्तमानके अधीन है
जैसा उसका वर्तमान है तैसा बर्त जायगा। तू देहका आश्रित होयके
काहेको रोता है, काहे को चिंता करता है अचिंत पारख पर
आरूढ रहे। ये अर्थ ॥ ३०५ ॥

साखी—आगि जो लागि समुद्रमें। टूटि टूटि खसे झोल ॥
रोवै कबिरा डांडिया। मोर हीरा जरे अमोल ॥ ३०६ ॥

टीका गुरुमुख—समुद्र कहिये संसार तामें माया कल्पना की आग लगी । आग कहिये पांच प्रकार की जठराग्नी योगाग्नी मंदाग्नी ज्ञानाग्नी औ ब्रह्माग्नी, ये पांच प्रकार की अग्नी तामें अमोल हीरा कहिये जीवको सो जरता है । औ कबीरा कहिये गुरुवा लोग सो अनेक तरह की कल्पना कर कर के रोते हैं सो सुनि के जीव जरते है । कोई पेट की अग्नी के मारे दुखित हैं, खेती करते हैं, वैपार करते हैं, पराई ताबेदारी करते हैं गुलामगीरी खिदमतदारी करते हैं, दूतपना कसब चतुराई कारीगरी करते हैं । चोरी छिनारिबटपारी लबारी धूतारी करते हैं, नचनियां बजनियां गवैयां भवैयां भांड बनते हैं, भिखारी भीख मांगते हैं । ऐसी पेट की अग्नी कठिन है, नाना कर्म करते हैं ताहू पर शांत होती नहीं जीवन को जराती है ।

कवित्त—अग्नी जब पेटकी उठत पर्चंड होय, भूखही भूख सब करत लोई । भूख से मात पिता पुत्र त्यागहीं, भूखसे जात कुल गोत खोई ॥ भूख से होत दुर्बुद्धी अती मानुषको, भूख से कामिनी जारा होई ॥ भूखसे ज्ञान गुण ध्यान थकि जात हैं, भूखसे डरे सुर नर मुनि लोई ॥ भूख चंडालिनी मोर पाछे परी, भूख ले जात है राजद्वारा ॥ ज्ञान वैराग सब करत साधू जना, भूख ले जात है द्वार द्वारा । भूख से राग रंग विषय फीका लगे, भूख से योग जप होत न्यारा । भूखते देव मुनी होत बेहाल बहु, पूरन यहि भूखने जगत मारा ॥ १ ॥

ये पेट की अग्नी महा दारुण तामें अमोल हीरा जीव जरता है । ये जठराग्नी से बचने के वास्ते गुरुवालोगों ने बहुत रोय के विरह जगाया । जगत में विरह अग्नी लगाया और योग उपदेश किया तब जीव योगाग्नी में जरने लगे । खेचरी सन्मुखी अगोचरी चाचरी भूचरी शांभवी उन्मीलनी आत्मभावनी, सर्वसाक्षिनी, पूर्णबोधनी ये दश मुद्रा

साधने लगे । यमनियम प्राणायाम प्रत्याहार संयम ध्यान धारणा आसन,समाधी; लंबिका योग,लय योग,अमनस्क योग,तारक,कुण्डली, आहाट योग करने लगे। नेति धोती बस्ती कपाली कुंजल ये पंच क्रिया करने लगे । हठ योगादि कर्म करके योगाग्नी में जी जरने लगे। तीसरी मंदाग्नी अज्ञान जनित तामसी कल्पना उठी तब नाना प्रकार का तप करने लगे । तीर्थ, व्रत, दूब अहार, दूध अहार, फल कंद मूल पत्र अहार करने लगे । निराहार, वायु अहार, जलशय्या, अनल-शय्या, पंचाग्नी तापने लगे । नाना प्रकार के काया कष्ट ताही अग्निमें जरे, गुरुवा लोगन की बानी के प्रमाण से जीव दुख भोगी भये । चौथी ज्ञानाग्नी संन्यासी भये, दंड धारण किया,संन्यास क्रिया आचरण करने लगे; साधन चतुष्टय साधने लगे, नित्यानित्य विवेक इहामुत्रफल भोग विराग, शम दम उपरती तितिक्षा श्रद्धा समाधान, समाधी षट साधने लगे । मुमुक्षु दशा साधिके ज्ञानाग्नी में जरने लगे। अब ब्रह्माग्नी अहं ब्रह्मास्मि। स्वयं ब्रह्मास्मि।इत्यादि सर्व वाक्य साधिकेमें आत्मा जैसे का तैसा ये निश्चय करके बाल पिशाच उन्मत्त मूक जड़वत होय के ब्रह्माग्नी में जरते भये। इस प्रकार से गुरुवा लोगन के उपदेश से मेरा हीरा अमोल जीव जरता है दुख भोगता है बिना पारख ऐसा गुरु कहते हैं । ये अर्थ । गुरुवा लोगन का उपदेश सोई संसार सागर में अग्नी लगी । तामें बडे बडे झोल कहिये बडे बडे जीव मरदही के सो टूट टूट के फँस पडे उपदेश अग्नी में जरे । ये अर्थ । संसार समुद्र में स्त्री आग लगी तामें पुरुष जीव सोई झोल टूट टूट के खस परते हैं गर्भवास में, और कबीर जीव जब गर्भ का दुख देखता है तब रोवता है । सो गुरु कहते हैं कि मेरा अमोल हीरा जीव सो गर्भवास में गाफिलीके बश जरता है । ये अर्थ । विषय अग्नी में रेल के झोल टूट टूट के खस परते हैं । विषयन की प्राप्ती के वास्ते जीव

नाना उद्योग करते हैं परन्तु सुखी होती नहीं ताते रोते हैं । तो देखो ये जीव अमोल सो विषयन के वश होय के बाकी कीमत होगई विषय अग्नी में जरता है । कल्पना की आग में जीव गर्भवास में खस परता है । और मोह की आग से जीव गर्भवास में जाता है और चौरासी का दुख देख कर रोते हैं । अपने गाफिली के वश रहते हैं बिना पारख ॥ ये अर्थ ॥ ३०६ ॥

साखी—छौ दर्शनमें जो परवाना । तासुनाम बनवारी ॥
कहहिं कबीर सब खलक सयाना । इन्हमें हमहिं अनारी३०७

टीका गुरुमुख—योगी जंगम सेवड़ा सन्यासी दरवेश ब्रह्मचारी ये छौ दर्शन में जो प्रमाण भया सोई नाम जगत में प्रमाण भया । जाप षट् दर्शन का ॐकार ब्राह्मण उपासक, सोहं ब्रह्मास्मि संन्या-सीका जाप, दरवेश में दो प्रकार, एक हिंदू ताका जाप सोहं हंस और मुसलमान का जाप हू अल्लाहू, नाद मही अहं नाद ये योगी का जाप, तत्वनाम अरिहन ये सेवडे का जाप, निरंजनाय ये जंगम का जाप । सिद्धांत षट दर्शन का अदेव मूल ये ब्रह्मचारी का अहं-ब्रह्मास्मि ये संन्यासी का, पवन में पवन ये दरवेश का पृथिवी में पृथिवी ये योगीका, चन्द्रमुक्त शीला ये सेवडे का, महदाकाश में आकाश ये जंगम का ये षट सिद्धांत षट नाम संसार में प्रमाण भये सो छवो धोखा परन्तु कोई विचार करके परखते नहीं । अगर छौ मत से पार पारखपद ऐसा कोई बताया चाहै तो उसे बौरा दिवाना ठहराते हैं और खलक छौ मताका बँधुवा सो सब सयाना बनता है । ये आश्चर्य । तो गुरु याका दृष्टांत बताते हैं जैसा कोई एक नगर का राजा परमध्यानी सो योगध्यान में बैठा तीन दिन । तबलग उसके नगर में अबुधका जल बरसा सो जल सबन ने

पिया सो सबकी बुद्धि नाश भई। चौथें दिन राजाने दरबार किया और सब प्रधान और सब पंडित और नगर के लोग आये, सो दिवानी बातैं करने लगे। सो सुनिके राजा ने आश्चर्य किया और सब को समुझावने लगा कि दिवानी बातैं तुम सब मत करो क्यों करते हो। तब सब लोग चमके और कहने लगे कि राजा दिवाना हो गया, देखो सब पागल सरीखी बातैं बोलता है याको कैद करो या मारो ऐसा मनसुबा सबन मिलि किया। तब राजा चकित हुवा और कहने लगा कि सबकी अती बुद्धि नाश हुई अब इन से कछु बोलना नहीं। नहीं तो आप अकेले और ये बहुत हैं सो ये अपने को फजीहत करेंगे। ताते इनहीं की ऐसी बातैं करके इनको समुझाना जाते ये सब मानुष पन में आवैं ऐसा निश्चय राजा ने किया, फिर सबकी ऐसी बातैं कहिके सबको समुझाने लगा कसर बताने लगा। तद्वत् गुरुने जगत में देखा थाका दृष्टांत सुनो। गुरु अपना पक्का देह लेके पारख समाधी में बैठे थे, उतने में आनंद जल बरसा सो हंसाने पान किया सो भूला, पक्केका कच्चा हुवा, एकका अनेक हुवा। तब काम जल बरसा और सब जीवन ने पीया सो दिवाने भये औ दिवानी बातैं करने लगे और दुख पावने लगे। तब गुरु आप प्रगट होके सबको ऐसी बानी बोलके सबकी कसर परखावने लगे। सब खलक सयाना इनमें हमही अनारी। इनका अनारीपना आपने लिया और अपना सयानपना उनको देके परखावने लगे। ये अभिप्राय ॥ ३०७ ॥

साखी—साँचे श्राप न लागै। साँचे काल न खाय ॥
साँचहि साँचा जो चलै। ताको काह नशाय ॥ ३०८॥

टीका गुरुमुख—हे जीव तू सच्चा है ताते तेरा नाश तीन कालमें नहीं तू अविनाशी है। जो कोई श्राप देके तेरा नाश किया चाहे

तो तेरा नाश होता नहीं तेरेको श्राप लगता नहीं क्योंकि तेरे सिवाय श्रापादिक जेते पदार्थ हैं सो सब मिथ्या हैं अनित्य हैं तू नित्य वस्तु तेरा नाश अनित्य वस्तुसे होवे नहीं । और सत्य वस्तूको काल नहीं खाता क्यों काल अनित्य नाशमान और तू जीव अविनाशी कभी तेरा नाश नहीं । तू सच्चा विचार भी सच्चा, याके लिये गुरु कहतेहैं कि हे जीव तू पारखी और सब अनुमान कल्पना भास अध्यासादि ये सब मिथ्या विविचार सोई अनित्य औ तू नित्य वस्तु परखी सो पारख भूमिका ते परखके सत्त विचार शील दया धीरज और विवेक वैराग्य औ गुरु भक्ती, ऐसी तेरी सच्ची चाल और चलनेवाला जीव, सो पारख भूमिकाको प्राप्त भया ताका नुकसान तीन कालमें नहीं । ये अर्थ ॥ ३०८ ॥

साखी—पूरा साहेब सेईये । सब विधि पूरा होय ॥
ओछे से नेह लगाय के । मूलहु आवै खोय ॥ ३०९ ॥

टीका गुरुमुख—गुरु कहतेहैं कि हे जीव ! पूरा कहिये जो अपना निजपद पारख परखावै सोई गुरु भूमिकाको प्राप्त होना सोई सेवा । सब विधि पूरा होय कहिये सब अध्यासको दर्शावै । कर्म अध्यास यामें दो प्रकार एक शुभ और एक अशुभ, अशुभ कहिये विषयादिक शुभ कहिये स्वर्गादिक । और योग अध्यास याहू में दो प्रकार एक शुभ और एक अशुभ, अशुभ कहिये हठयोग और शुभ कहिये राजयोग । भक्ती अध्यास याहू में दो प्रकार एक शुभ और एक अशुभ । अशुभ कहिये जो आठ प्रकारकी मूर्ति प्रतिमादिक पूजन और तीर्थ व्रत करे और शुभ कहिये नाम सुमिरन । औ ज्ञान अध्यास याहूमें दो प्रकार शुभ और अशुभ, अशुभ कहिये जो विधि निषेध ज्ञान करे और शुभ कहिये जहां विधि निषेध कछु नहीं मैं जैसे का तैसा । इस प्रकार से

सर्व अध्यास को जो जानता है और इनसे चित्त नहीं रखता ताको पूरा कहिये । और अध्यास में जो कोई जीवको नेह लगावता है सो झूठा ओछा सो ओछा झूठकी संगत किये से मूल जो याकी समुझ है सो ता समुझ की हानी होती है । ये अर्थ ॥ ३०९ ॥

साखी--जाहु बैद घर आपने । यहां बात न पूछै कोय ।
जिन यह भार लदाइया । निबाहैगा सोय॥ ३१० ॥

टीका जीवमुख--वेद कहिये गुरुवालोग,सो गुरुवालोगनने जीवन को उपदेश किया, श्रवण मनन निदिध्यास साक्षात्कार ऐसा संयम बतायके निज साक्षात्कार विज्ञान शब्दातीत आनंदमय ब्रह्मपदको प्राप्त होनेके वास्ते संबोधन जीवको किया । सो जीव गुरुवा लोगन से कहते हैं कि हे महाराज आपने शब्दातीत का उपदेश किया सो शब्दही से किया सो तो शब्दही है सो शब्दातीत कैसे हुवा । अब गुरुवालोग जीवनको समुझावते हैं कि आनंदमें कछु द्वैत भावना नहीं तो सहजही शब्दातीत हुवा । तब मुमुक्षु जीव बोलते हैं, कि शब्दातीत अनिर्वाच्य ब्रह्म स्वरूप है ऐसा प्रमाण तुमने किया सो ऐसा भास किस को हुवा भासे बिना प्रमाण तुमने कैसा किया । तो ये सब तुम्हारा भास और तुम शब्दातीत के भासिक, सो भासमें स्थिति जीवन की कैसी भई जीव सब नष्ट गये कछु खातिरी न भई । तो तुम्हारा उपदेश मिथ्या धोखा है, सो वैद्यजी तुम्हारा उपदेश रूपी दवाई से तुम्हारा ही यह संशय रूपी रोग न गया तो हमारा कल्याण कैसे होयगा । तुम्हारा उपदेश तो मिथ्या धोखा ठहरा । ऐसा जो मिथ्या धोखेमें तुमने घर किया है तासे गुरु कहते हैं कि । जाव वैद्य घर आपने जो वो धोखा में घर किया है सो धोखामें जाव । इहां कोई तुम्हारा अनुग्रह अंगीकार नहीं करता ताकेवास्ते उपदेशरूपी भार लिये चौरासीमें आते जाते हो सो तुम्हारा भार तुमहीं निर्वाहो । ये अर्थ ॥ ३१० ॥

साखी—औरन के सिखलावते । मोहडे परगौ रेत ॥
रास बिरानी राखते । खाइनि घर का खेत ॥३११॥

टीका गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि गुरुवालोग जीवन को सिखापन देते हैं कि ब्रह्मज्ञान आनंदमय अद्वैत स्वरूप को प्राप्त होय सो उपदेश करते करते थकित भये । सोई रेत मोहडन में कांटा पर गया परन्तु जीवनको ब्रह्मपद की प्राप्ती न भई । रास बिरानी राखते, खाइनि घरका खेत । रास कहिये ब्रह्मसुख औ खेत कहिये एकाग्रवृत्ती सो औरन को बतलावते हैं परन्तु अपने घरकी खबर नहीं कि हमारा घरका खेत काल दुबिधा खाते हैं । ये अर्थ ॥ ३११ ॥

साखी—मैं चितवत हौं तोहिको । तू चितवत है वोहि ॥
कहहिं कबीर कैसे बनिहै । मोहि तोहि औ वोहि ३१२

टीका गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि हे जीव तेरा दुख देख के मैं तेरेको चितवत नाम देखता हौं काहेते कि तू सबका कर्ता । क्योंकि जगत ब्रह्म दोनों तेरी कल्पना सो कल्पना में भ्रमवश होके नाना दुख तेरे को प्राप्त हुवा सो तूने दुख देखके अधैर्य वश होयके घबरायके दूसरा कर्ता कल्पना से खडा किया सो उस कर्ताको तू संभारता है नाम चितवता है सो मिथ्या तेरी कल्पना। मोही नाम कहिये गुरु, तोहि नाम कहिये जीव, वोहि नाम कहिये कल्पना अनुमान, सो अनुमानका तू कर्ता है और अनुमान का कर्ता आप, सो अपने पद की तरफ निगाह नहीं रखता तो पारखपद कैसे प्राप्त होय। क्योंकि दो दृष्टी करके देखता है एक दृष्टी सो कर्ता को देखता है और एक दृष्टी कर के पारखी गुरु को देखता है । सो पारखी गुरु कहते हैं कि ये कैसे बनी हैं, कि शुद्ध पारखपद के विषय मोहि तोहि वोहि ये कछु संभवता नहीं । क्योंकि पारखी कबलग हैं जबलग परछावता है सो पारखी पारख

समाना । शुद्ध पारखके विषय त्रिपुटी नाश हुये बिना शुद्ध स्वरूप को प्राप्त होता नहीं सोई बनाना । ये अर्थ ॥ ३१२ ॥

साखी–तकत तकावत तकि रहा । सके न बोझा मार ॥
सबै तीर खाली परा । चला कमानहि डार ॥ ३१३ ॥

टीका गुरुमुख–तकत नाम देखने वाला जीव, तकावत नाम देखाने वाले गुरुवा लोग, सो गुरुवा लोगों ने आनंदी अनुमान ब्रह्म पद देखाया सोई जीव, तकने लगे देखने लगे । बोझा कहिये निशाना और तीर कहिये क्रिया आदिक औ कमान कहिये कल्पना;सो कल्पनारूपी कमान पर क्रियारूपी तीर ब्रह्म निशानेपर खैंचा । परंतु क्रिया से ब्रह्मपद प्राप्त न भया और क्रिया करते करते थके तब खिसियाय-के कल्पनारूपी कमान डार के चौरासी में चले गये। ये अर्थ ॥ ३१३ ॥

साखी–जस करनी तस करनी । जस चुंबक तस ज्ञान ॥
कहैं कबीर चुंबक बिना । क्यों जीते संग्राम ॥ ३१४ ॥

टीका मायामुख–माया जीवन को समुझावती है कि जाके प्राप्त होने के वास्ते तुम कथनी गुणानुवाद कथते हो और करनी तो करते नहीं तो कर्ता कैसे प्राप्त होय, क्योंकि लोहारूपी कथनी चुंबकरूपी करनी । याको दृष्टांत जैसे चुंबक से लोहा की प्रीति है लोहेको अपने में मिलाय लेता है, ऐसे कथनी और करनी की एकाग्रता होय तब ज्ञान प्राप्त होगा और ज्ञान प्राप्त हुये बिना मन राजा से कैसे संग्राम जीतोगे । ये अर्थ ॥ ३१४ ॥

साखी–अपनी कहै मेरी सुनै । सुनि मिली एकै होय ॥
हमरे देखत जग जात है । ऐसा मिला न कोय ॥ ३१५ ॥

टीका गुरुमुख–गुरु कहते हैं कि मैं जीवन को बार बार समुझावता हों कि तुम्हारेको क्या दुख है जेहि दुख के मारे तुम बेहाल

हो, सो दुख तुम हमारे से कहो।तब जीव बोलता है कि हे गुरु हम अजान कछु जानते नहीं, पर एक संशय है कि हम कौन और कहां से आये और कहां को जायेंगे । ये शंका । ताते गुरु दयादृष्टी करके कहतेहैं कि हे जीव, तुम स्वतंत्र चैतन्य अविनाशी और आना जाना ये तो सर्व तुम्हारी कल्पना सो मिथ्या धोखा ऐसा समझके पारख रूपमें मिलो । पारख पारखी एक कछु भिन्न नहीं ।और जो पारख पदको नहीं प्राप्त भये सो हमारे देखते देखते कल्पना वश होके मिथ्या धोखे में जीव जाते हैं । ऐसा कोई न मिला कि मिथ्या धोखा परख के अपने पदको प्राप्त होय । ये अर्थ ॥ ३१५ ॥

साखी–देश विदेश हौं फिरा । गांव गांव की खारी ॥
ऐसा जियरा ना मिला ।लेवैं फटक पछोरि ॥ ३१६ ॥

टीका गुरुमुख–देश कहिये ज्ञान और गांव कहिये तुरिया अवस्था और खोरि कहिये पंच ज्ञान इंद्री । औ विदेश कहिये अज्ञान औ गांव कहिये सुषोप्ती अवस्था और खोरि कहिये पंच कर्मइन्द्री ।औ हौं कहिये अभिमान, सो अभिमान दो प्रकारका एक प्रत्यज्ञात्मा ज्ञानी सो पांच ज्ञान इन्द्री में बिलास करते हैं और दूसरा–अभिमान प्राज्ञ अज्ञानी सो पंच कर्मइन्द्री में बिलास करते हैं । ताते गुरू कहते हैं कि ये अपने अपने अभिमान में आसक्त हैं निरभिमानी जीव कोई मिला नहीं कि ज्ञान और अज्ञान दोनों अभि-मान सोई कचरा फटक पछोर के बिचार द्वारा करके पारख पद से मिलाय लेउं । ये अर्थ ॥ ३१६ ॥

साखी–मैं चितवत हौं तोहिको ।तू चितवत कछु और ॥
नालत ऐसी चित्तपर । एक चित्त दुइ ठौर ॥ ३१७ ॥

टीका गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि हे जीव मैं तेरेको पारख दृष्टी करके चितवता हौं अपरोक्ष पारख पदको परखावता हौं काहेते कि तेरेको सुखकी प्राप्ती होवै और थीर होय, आवागवनसे रहित होय। और तू चितवत कछु और और कहिये परोक्ष परमात्मा सिद्ध करकेताको तू चितवन करता है तो तेरेको पारख पद कैसे प्राप्त होय। अरे चित्त तो एक और भूमिका तो दो, एक परोक्ष और एक अपरोक्ष।ताते गुरु कहते हैं नालत ऐसी चित्त पर,एक चित्त दुइ ठौर । जो तू एक चित्त करके दो भूमिका पर प्राप्त होना चाहताहै तो कैसे बनेगा । याका दृष्टांत चौपाई-दुइ न होहिं इक संग भुवालू ॥ हँसब ठठाय फुलाउब गालू ॥हँसना और गाल फुलावना ये दो बात कैसे बनें ।ताते चित्त को परोक्ष पदसे फेर कर अपरोक्ष गुरुपदके विषय राख और सुखिया हो । ये अर्थ ॥ ३१७ ॥

साखी-चुंबक लोहे प्रीति है । लोहे लेत उठाय ॥
ऐसा शब्द कबीर का । कालसे लेत छुडाय॥ ३१८ ॥

टीका मायामुख—माया जीवन को उपदेश करती है, कि हे जीव चुंबक कहिये गुरुका शब्द औ लोहा कहिये सुर्त,जैसा चुम्बक लोहे को उठाय लेता है ऐसे जो गुरुका शब्द है। गुरुका शब्द कहिये अनहद, सो अनहद दश प्रकारका पहिले दुन्दुभी घंटा मृदंग झांझ नफीरी शंख शहनाई बीना भेरी बांसुरीनाद इस प्रकारके अनेक तरहके नाद तामें मुख्य दश नाद, तामें बांसुरीनाद अंत में ब्रह्मांड के विषय शब्द उठता है । ता शब्द में सुर्त प्रवेश होयगी, तब बांसुरी शब्द इसको खैंच अपने में मिलाय लेवेगा तब पिंडांडका विश्व अभिमान छूट जायगा । माया कहती है कि ऐसा शब्द कबीर का, कालसे लेत

छुडाय।कबीर कहिये गुरु योगिलोक का शब्द उपदेश ऐसा है कि कम काल से छुडाय के ब्रह्मांड में थीर करता है। ये अर्थ ॥ ३१८ ॥

साखी–भूला तो भूला । बहुरि के चेतना ॥
बिस्मय की छुरी। संशय का रेतना ॥ ३१९ ॥

टीका गुरुमुख–गुरू कहते हैं कि अपने निज स्वरूप को ये भूला।याको दृष्टांत, जैसे सूर्यको यह भ्रम भया कि प्रकाश कर्ता कोई दूसरा है ऐसे जीव प्रवृत्ती पिंडांड के विषय भूला। उत्पत्ती प्रलय जो होती है ताको कर्ता कौन है ये शंका जीव को भई।तब प्रवृत्ती गुरुवा लोगों ने कहा कि उत्पत्ती प्रलय करनेवाला एक ईश्वर है।ता ईश्वर की प्राप्ती कैसे होय, तब गुरुवा लोग समुझावते हैं कि पंचाग्नी तापो, जलशयन लेब, तीर्थ व्रत प्रतिमा पूजन करो, चारों धाम परसो, तब कर्ता की प्राप्ती होयगी। तब ऐसे करत करते थकित भये,पिंडांड में कर्ता की प्राप्ती न भई, ऐसा भूला फिर बहुरि के चेतना। ता ऊपर योगीलोग उपदेश चेतावते हैं कि जा ईश्वर कर्ता की प्राप्ती के वास्ते पिंडांड में बूडते हो सो ईश्वर ब्रह्मांड में ज्योति स्वरूप है ताको प्राप्ती हुये विना भूल कैसे मिटेगी। तब जीव बिनती योगी लोगों से करते हैं कि हे स्वामी कर्ता की प्राप्ती कैसे होय सो दया करके कहिये तब योगी युक्ती बतावने लगे, कि इंगला पिंगला सम करके सुषुमना मार्ग होके त्रिकुटी में सुरत लगाव तब ज्योति प्रकाश होयगी और आनंद समाधी लगेगी सोई तेरा स्वरूप। अब गुरू कहते हैं कि बिस्मय की छुरी, संशय का रेतना।बिस्मय की छूरी कहिये संशय और संशय का रेतना सोभी संशय, तो संशय के रेतने से बिस्मय की छूरी को रेता तो संशय रूपी रेतना तो बना रहा। ऐसे विस्मयरूपी शब्द प्रवृत्ती उपदेश किया सो भी शब्द और संशयरूपी निवृत्ती उपदेश किया सो भी शब्द, तो संशयरूपी जो

दुख था सो तो दुख बनाही रहा । तो बहुर के क्या चेतना तो कुछ चेता नहीं पारखपद को प्राप्त भया नहीं अचेत जड ब्रह्म पद में घर किया । ये अर्थ ॥ ३१९ ॥

साखी--दोहरा कथि कहैं कबीर।प्रतिदिन समय जो देखि॥
मुये गये नहिं बाहुरे । बहुरि न आये फेरि ॥ ३२० ॥

टीका गुरुमुख--दोहरा कहिये परमात्मा गुसैंया की कीर्ति गुणानुवाद कथन करके जीवन से गुरुवालोग कहते हैं, कि हे जीव नितप्रती गुसैंया परमात्मा को मिलने का समय निरखते रहना, क्योंकि आवागवन का जो दुख है ताकी निवृत्ती होय तब चोला छूटे उपरांत फिर गर्भवास में नहीं आवे ऐसा माया उपदेश जीवनको करती है । ये अर्थ॥ ३२० ॥

साखी--गुरू बिचारा क्या करे । शिष्यहि मां है चूक ॥
भावे त्यों परमोधिये । बांस बजाये फूक॥ ३२१ ॥

टीका गुरुमुख--गुरु कहिये योगीलोग, सो जीवन को सांख्य योग का उपदेश करते हैं, कि प्रकृती तत्व एक ताके ऊपर लक्ष लगाना । और सब तत्वन को लय करके जो शेष रहि जाय सो नित्य और जो प्रकृती तत्व लय होय सो अनित्य । अथ इतिहास, सांख्य शास्त्रके आचार्य कपिल मुनी ताकी माता देवहूती, सो माता को समुझावते बहुत दिन व्यतीत भये परन्तु पुत्र भाव जानके माता ने उपदेश अंगीकार नहीं किया । तब कपिल मुनीने अपने अन्तःकरण में बिचार किया कि पुत्र भाव छूटे बिना माताकी वृत्ती शांत होनेकी नहीं । तब मातासे कपिल मुनी ने कहा कि हे माता हम छै महीना रामत करके फिर आवेंगे । सो माता की आज्ञा लेके फिर अपना स्वरूप योगी का धारण करके माताके घरमें

आये। सो माता ने योगेश्वर जान के सेवा करने लगी और योगे-श्वर के सामने बहुत बिलाप करने लगी। कि हे महाराज ! एक तो मेरा पुरुष नहीं ताका दुख, दूसरे छै महीना हुये पुत्र रामत को गया है सो भी नहीं आया ताका दुख रात दिन मेरे को लगा है मेरे ताईं कछु कल पडती नहीं तब योगेश्वर समुझाते हैं, कि अरे देह तो नाशमान अनित्य, सो तू प्रकृती भाव लेके देह के विषय आसक्त क्यों रहती है, एक दिन तेरा भी शरीर नाश हो जायगा। ताते देह धन कुटुंब आदि सब की आसक्ती छोड औ आत्म स्वरूप जो नित्य आस्ती प्रकृतितीत तेरा स्वरूप है ताको प्राप्त क्यों नहीं होती। तब देवभूती बिनती करती है, कि हे महाराज ! आत्म स्वरूप प्राप्त होने की क्या युक्ती है सो कृपा करके कहिये। तब स्वामीने सर्वसाक्षिनी मुद्रा का उपदेश युक्ति बताने लगे। कि प्रथम सिद्धा-सन करना और उत्तराभिमुख करके सुरत अंतरिक्ष अंतःकरण के मध्य में लक्ष लगावना और दशों दिशा प्रकृती भाव है सो अंत-रिक्ष लय करते करते आप विशेष रह जाना सोई आत्मस्वरूप। ऐसा उपदेश योगेश्वरने कहा तब सर्व आसक्ती छूटी और अपने आत्मस्वरूप को देवभूती प्राप्त भइ। तब देवभूती अपना अनुभव स्वामी से कहने लगी कि हे महाराज ! जो स्फूर्ण उठता है ताको मैं जानती हौं, सो स्फूर्ण कछु मैं नहीं मैं द्रष्टा सर्व साक्षी सर्वत्र को जानने वाली, मेरे बिषय प्रकृती भाव कछु नहीं। ऐसी देवभूतीकी परिपक्व दशा देख के योगेश्वर ने कपिल मुनिका स्वरूप धारण किया और कहते हैं, कि हे माता मैं तो तेरा पुत्र हौं तेरे को बोध करने के वास्ते योग धारण किया। काहे ते कि तेरे को पुत्र भाव था तब देवभूती कहती है, कि काको पुत्र, काको माता, काको पिता, अरे ये तो सब प्रकृती भाव नाशवंत और मैं तो हे गुरु

तुम्हारे बोध करके अविनाशी अखंड स्वरूप हौं । तो गुरु बिचारा क्या करै शिष्यही की तरफ कसर है, अनेक तरह से गुरु ने बोध किया शिष्य ने उपदेश अंगीकार न किया । कैसा ताको दृष्टांत जैसी बांसकी नली एक तरफ से फूंका और दूसरी तरफ से फूंक निकर गइ । तद्वत् कपिल मुनी ने देवभूती माता को बोध किया । ये अर्थ ॥ ३२१ ॥

साखी-दादा भाई बाप के लेखो । चरनन होइ हौं बंदा ॥
अबकी पुरिया जो निरुवारे । सो जन सदा अनंदा ॥ ३२२ ॥

टीका गुरुमुख--गुरुवा लोग जीवन को उपदेश करते हैं परंतु जीवन के अंतःकरण में कछु उपदेश ठहरता नहीं । ताके वास्ते गुरुवा लोग जैसे माता पिता बालक को समुझाते हैं तैसे अजान जीवन को दादा भाई बाप करके समझावते हैं तब भी समुझते नहीं । और जीवन को समझ प्राप्त हुये बिना आनंद कैसे होय ताके वास्ते फिर गुरुवालोग जीवन के पांव पर गिर करके बंदगी करके कहते हैं कि अबकी पुरिया जो निरुवारे । और ऐसा नरदेह पाय के काल के मुख में क्यों जाते हो, धन दारा सुत लोग कुटुंब सब की आसक्ती छोड़ के भगवत भजन से प्रीति रखना । क्योंकि प्रपंच ब्योहार धन दारा आदि ये सब नाशवंत पदार्थ हैं ऐसा निरुवार तिरस्कार करके परमार्थ परमात्मा की तरफ वृत्ती लय करना तामें सदा सर्व-काळ आनंदरूप रहै । ये अर्थ ॥ ३२२ ॥

साखी-सबते लघुता भली । लघुता से सब होय ॥
जस दुतिया को चंद्रमा । सीस नावै सब कोय ॥ ३२३ ॥

टीका मायामुख--सबते लघुताई भली, लघुता कहिये दीनता गरीबी दासपन, जैसी स्त्री अपने बालक को छलती नहीं और अपने

पुरुषन को छलती है । कि बालक अजान ये जानके माता रक्षा करती है और पुरुष स्त्री भाव को जानता है ताके वास्ते छलती है । याको दृष्टांत एक समय शुकदेवजी अपनी ब्रह्म समाधी में बैठे थे । ता समय इन्द्रकी अप्सरा रंभा उर्वसी छल करनेको आई । अनेक तरह का अद्‌भुत रूप धारके हाव भाव कटाक्ष करके नृत्य करने लगी । औ बचन रूपी कामका बाण मारा और कहतीहै, कि महाराज मैं इन्द्रलोकसे आपके दर्शन करने को आई सो कृपादृष्टी करके मेरा अंगीकार करना । शरीर कछु मल मूत्र दुर्गन्धका नहीं मेरा शरीर तो अर्गजा सुगंधादि निर्मल है । तब शुकदेव स्वामी बोलतेहैं कि हम जो ऐसा तुमको जानते तो व्यासजीकी स्त्रीके पेटमें अवतार न लेते हे माता तुम्हारेही पेटमें अवतार लेते तब रंभा ऊर्बसी लज्यायमान हो नमस्कार करके इन्द्रलोक को गई । ज्यों दुतिया को चंद्रमा छोटा स्वरूप ताको सब संसार नमस्कार करतेहैं ।और पूर्णिमा को चंद्र संपूर्ण कला प्रकाश होताहै ताको कोई नमस्कार दीर्घपद जानके करता नहीं ।तैसे रंभा ऊर्बसी अहंभाव मायारूप लेके शुकदेवको ठगने को आई परंतु शुकदेव मुनीने लघुता पद निरभिमान बालदशा धारण किया तब सर्व तरहसे माया बाण बेधा नहीं और ब्रह्म समाधीमें स्थिर हुवा माया खिसियायके लजायगई । ये अर्थ॥ ३२३ ॥

साखी--मरते मरते जग मुवा । मुये न जाना कोय ॥
ऐसा होयके न मुवा।जो बहुरि न मरना होय॥ ३२४॥

टीका गुरुमुख--गुरु कहतेहैं कि तीर्थ व्रत करते करते येही आशा में सारा जग मूवा और चौरासीमें चला जाता है परंतु आशा छोडके कोई मरा नहीं कि आवागवन से रहित होय, आशा रूपी बीज सोई फिर देह होनेका कारण है । ये अर्थ ॥ ३२४ ॥

साखी--मरते मरते जग मुवा। बहुरि न किया विचार ॥
एक सयानी आपनी । परबस मुवा संसार॥ ३२५ ॥

टीका गुरुमुख--गुरु कहते हैं कि मानुष देह पायके जीवनने कछु विचार किया नहीं कि ब्रह्म जगत लोक परलोक स्वर्ग नर्क लोग कुटुम्ब इन सबकी आशा बंधनरूपी है।और इसी आशामें सब मरे, ऐसा न जानके फिरके विचार न किया। एक सयानी अपनी कहिये अपनी स्वतः बुद्धि बिना परवश गुरुवा लोगन के वचन को प्रमाण करके सब संसार लोभ में मारा गया पारख पदकी प्राप्ती न भई। ये अर्थ॥ ३२५ ॥

साखी--शब्द है गाहक नहीं । वस्तु है महंगे मोल ॥
बिना दाम काम न आवे । फिरै सो डामाडोल ३२६

टीका गुरुमुख--शब्द कहिये गुरुमुख सारशब्द निर्णयरूपी यथार्थ है । ऐसा जो वस्तू गुरुका शब्द है सो महंगे मोल है । दाम कहिये सचौटी, अंतःकरण की निर्मलता चंद्रमणी पत्थरके माफिक सोई दाम सचौटी, बिना गुरुमुख शब्द की यथार्थ प्राप्ती होती नहीं । और प्राप्ती हुये बिना जीवन मुख शब्द मायामुख शब्द और ब्रह्ममुख शब्द ये तीनों शब्द में गुरु पारख बिना गुरुवा मिथ्या धोखेमें डामाडोल होके चौरासीमें फिरते हैं कछु पारख पदकी प्राप्ती होती नहीं । ये अर्थ ॥ ३२६ ॥

साखी--गृह तजिके भये योगी । योगीके गृह नाहिं ॥
बिना बिबेक भटकत फिरं।पकरि शब्दकी छाहिं॥ ३२७॥

टीका गुरुमुख--गुरु कहते हैं कि गुसैया परमात्मा कर्ताकी प्राप्तीके वास्ते घर की स्त्री लडका कुटुंब द्रव्य संपत्ती छोडके वैराग्यधारण करके आरण्य जंगल में योग क्रिया करने लगे । सो गुसैया कर्ता

योगी के गृह नहीं है गृह कहिये ब्रह्मांड,सो ब्रह्मांड में भी गुसैंया प्राप्ती न भया और विना विवेक विचार अपना प्रतिबिंब जो शब्दकी छाया का अनुभव भया तामें बंध भया मुस्तकीम हुवा । ये अर्थ॥३२७॥

साखी–सिंघ अकेला बन रमै। पलक पलक करै दौर ॥
जैसा बन है आपना । वैसा बन है और ॥३२८ ॥

टीका गुरुमुख––सिंघ कहिये जीव औ बन कहिये देह, पांच तत्व, पचीस प्रकृती, तीन गुण, दश इंद्री, पंच विषय और चतुर्दश देवता आदि समुदायरूपी बनमें जीव निरंतर एक आप रहता है और अनेक उपाय करके अपने जीवका यतन रखता है । और पल पल दौरके पराये जीवका घात करता है मनके वश होके कछु दया लावता नहीं । ताते गुरु कहते हैं, कि हे जीव जैसा दुख सुख तेरे शरीर बनके विषय मालूम होता है वैसेही और शरीरके विषय मालूम होता है । ऐसा न जानके मनरूपी कालके वश होके अपना स्वतन्त्र विचार दया छोड़ देते हैं । ये अर्थ ॥ ३२८ ॥

साखी--पैठा है घट भीतरे । बैठा है साचेत ॥
जब जैसी गति चाहै। तब तैसी मति देत ॥३२९॥

टीका गुरुमुख–गुरु कहते हैं कि गुरुवा लोगोंका मानंदी रूपी शब्द उपदेश जीवन के घटमें पैठा है । सोई शब्द सचेत हुशियार होके अंतःकरण में पैठके जब जैसी गती चाहना होती है तब तैसी मती मानंदी जीवन के अंतःकरण में प्रेरणा करता है । मानदी अनेक प्रकार की नाम रूप गुण कर्म विधि निषेध इस प्रकार करिके विचार समुझ बिना जीव मानंदी में बंध भये । ये अर्थ ॥ ३२९ ॥

साखी–बोलतहीं पहिचानिये । साहु चोरका घाट ॥
अंतर घटकी करनी । निकरे मुखकी बाट॥३३०॥

टीका गुरुमुख--साहू कहिये गुरुका शब्द, चोर कहिये गुरुवा लोगन का शब्द, अब निगाहमान निगाह करवाते हैं;कि उस ॐकार का स्वरूप धारण करके चोर जो गुरुवा लोगन का शब्द उपदेश जीवन को दृढापन करके भास अध्यास अनुमान कल्पना में लगावते हैं दृढ करते हैं सोई चोर और भास अध्यास अनुमान कल्पना को मिथ्या करके अपने निज स्वरूप को प्राप्त करते हैं सोई साहू । तो है जीव अंतर घटकी करनी बोल निकरे मुखकी बाट सोई पहिचानिये कि दोनोंका शब्द मुखके द्वारे से होके निकरता है और शब्द तो एकही और द्वारा भी एकही है परंतु करनी घाट न्यारी न्यारी है सोई पहिचान । ये अर्थ ॥ ३३० ॥

साखी-दिलका महरम कोई न मिलिया।जोमिलियासोगर्जी॥
कहहिं कबीर असमानहि फाटा।क्यों कर सीवै दर्जी॥३३१॥

टीका गुरुमुख--गुरू कहते हैं कि दिल कहिये अंतःकरण जिगरका महरमी सोई जानकार, सो ऐसा कोई न मिला, कि अपना सर्व बिकार छोड कर और निर्विकार होके पारखपदको प्राप्त होय । और जो कोई जीव मिले सो अपने गरज के लोभी मिले । लोभ कहिये अष्ट प्रकार की सिद्धी--अणिमा कहिये बैठ तो किसी के उठाये न उठै । गरिमा कहिये पृथ्वी में गडिके दूसरी जगह प्रगट होय । लरिमा कहिये बालक हो जाय । गिरिमा कहिये पर्वताकार हो जाय, हुतासनी कहिये अग्नी में न जरे । महिमा कहिये सर्व जगत माने । अंतर्यामिनी कहिये एकईस ब्रह्मांड भरेका हवाल जाने और वाचा सिद्धी कहिये शाप आशीश लगे । इस प्रकार अष्ट सिद्धीका लोभ और नौमी सिद्धी कहिये संपत्ती का लोभ, अन्नपूर्णा का लोभ, लोभ स्वर्ग का, लोभ नामधारीका, लोभ प्रपंच व्योहार,

लोभ कुटुम्ब घरसुत स्त्री आदि अनेक प्रकारके लोभमें परे और लोभ की वासना लेके मिले । कहहीं कबीर आसमानहि फाटा । तो गुरु कहतेहैं कि,हे जीव आसमान कहिये, आकश कहिये अंतःकरण सो अंतःकरण में अनेक प्रकारकी वासना पैठी सोई आकाश फाटा और दरजी कहिये विचारमान सो विचारमान कबलग तेरे दिलको समुझावै तू निर्वासना होके गुरुको मिलता नहीं तो पारख पद कैसे प्राप्त होय । ये अर्थ ॥ ३३१ ॥

साखी--ई जग जरते देखिया ।अपनी अपनी आगि ॥
ऐसा कोई ना मिला । जासो रहिये लागि॥३३२॥

टीका गुरुमुख--गुरु कहते हैं कि जहांलग जीव जगतमें हैं सो सब अपनी अपनी आगमें जरते हैं । आग कहिये पांच प्रकारकी, कामाग्नी में सारा जगत जरता है, योगी योगाग्नीमें जरते हैं,विश्वास अग्नीमें भक्त जरतेहैं, वैराग अग्नीमें वैरागी लोग जरतेहैं औ ज्ञानी लोग ज्ञानाग्नी भास अध्यास में जरतेहैं । और इस प्रकारसे अपनी अपनी कहिये अपनी अपनी मानंदीके विषय में सब जरते हैं।ऐसा एक विचारमान न देखा कि इन पांच अग्नी से व्यतिरेक पारखी गुरु कोई मिला नहीं कि जाके शरण में जायके बचाव होय: पारख पद प्राप्त होय । ये अर्थ ॥ ३३२ ॥

साखी--बना बनाया मानवा । बिना बुद्धि बेतूल ॥
कहा लाल ले कीजिये । बिना वासकाफूल॥३३३॥

टीका गुरुमुख--बना बनाया मानवा बिना बुद्धि बेतूल । सो गुरु कहते हैं, कि प्रथम अहंकारूपी आप बना कि मैं जीव दुखिया लाचार मेरे से मेरा दुख नाश होता नहीं ऐसा दीन बना । तब दूसरा एक अनुमान करके कर्ता बनाया। कि मेरे को सुख देनेवाला

कोई और कर्ता है । तब गुरु कहते हैं कि इसका स्वतन्त्र स्वजातीय विचार जाकी मति थीर । सो बिना बुद्धी कीमत हलकी हो गई सर्व कला छीन भई औ बेतूल अधीर हुवा अब लाल कहिये मानुषदेह सो बासनारूपी गुरुबुद्धी नहीं तो ऐसा बेबुद्धी मानुषको क्या अंगीकार करना । ये अर्थ ॥ ३३३ ॥

साखी—सांच बराबर तप नहीं । झूठ बराबर पाप ॥
जाके हृदय सांच है । ताके हृदया आप ॥ ३३४ ॥

टीका गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि सांचा कहिये जाके हृदयमें झूठा अनुमान अध्यास नहीं सोई सांचा तप और झूठ अनुमान अध्यास जो मानताहै सोई पाप । काहेते कि भास अध्यास जरासा भी विविचार तहां भासीक नहीं । और जाके हृदय में सांचा विचार है तहां भास अध्यास अनुमान की मानंदी त्रिकाल भूत भविष्य वर्तमानके विषय नहीं ताके घटमें भासीक आप है । ये अर्थ ॥ ३३४ ॥

साखी—कारे बडे कुल ऊपजे । जोरे बडी बुद्धि नाहिं ॥
जैसा फूल उजारिका । मिथ्या लागि झरि जाहिं ॥ ३३५ ॥

टीका गुरुमुख—गुरु कहतेहैं कि चौरासी लक्ष योनी में फिरते फिरते मनुष्य योनीमें आयके जीव प्राप्त भया सोई सब योनिन से बडी योनी । क्योंकि और योनीमें कछु गुरु विचार सत्संग पारख पदकी प्राप्ती होती नहीं और भोग विलास खान पान काम क्रोध लोभ मोह भय अहंकार ये सब खानीमें सबको प्राप्त है परंतु एक गुरुपद की प्राप्ती नहीं सो गुरुपदकी प्राप्ती सत्संग विचार एक मनुष्य देहके विषय प्राप्त होताहै । तासे गुरु जीवको कहते हैं कि ऐसी मनुष्य देह पायके बडी बुद्धी कहिये गुरु बुद्धि विचार हासिल न भया और लोग

कुटुंब स्त्री धन दारा सुत कलत्र आदिका मोह मिथ्या विषयन में मानुष देह नाश होयके फिर चौरासी का दुख बनांही है । ताका दृष्टांत कि जैसा उजारी जंगल के विषय फूल लगा सो मिथ्या कहिये पृथिवी में लाल बेकाम झरगाय तैसा बिना पारख जीव मिथ्या चौरासी गर्भबास में जाय के प्राप्त भये बिना गुरुबुद्धि । ये अर्थ॥ ३ ३ ५॥

साखी—कर्ते किया न बिधि किया।रवि शशि परी न दृष्ट॥
तीन लोक में है नहीं । जाने सकलो सृष्ट ॥ ३३६ ॥

टीका गुरुमुख—गुरु कहते हैं कि जीवने एक अनुमानसे जो प्रमाण किया है कि कोई एक सिरजनहार मालिक है, ऐसा अनुमानसे प्रमाण सारा जगत ने किया ।परंतु गुरु कहते हैं कि जो अनुमान से प्रमाण जीवने किया है सो वस्तु कुछ नहीं मिथ्या धोखा तेरी कल्पना । सो तेरी कल्पना करिके कल्पित प्रतिबिम्बरूप जो अनुभव में आया सो कछु तेरे सिवाय प्रतिबिम्ब खडी भई नहीं । परंतु बिना विवेक ये कर्तव्य करके कर्ता बनाया । अब बिधी कहिये संयोग सो कछु संयोग से हुवा नहीं, क्योंकि तेरे सिवाय दूसरा कोई नहीं ।औ रवी कहियेसूर्य औ शशी कहिये चंद्र, सो दिन को सूर्य के प्रकाश से भी अनुमान का रूप देखने में नहीं आया । औ रातको चंद्र के भी प्रकाश में अनुमान का रूप देखने में नहीं आया । औ रात दिवस दोनों की संधी में भी देखो तो कुछ है नहीं सब तेरी कल्पना । अथवा इंगला पिंगला सुषुम्ना येही तीनों लोक तामें भी देखना परा । अथवा श्वास उश्वासके मध्य शून्य सोई तीनों लोक तामें भी देखना परा । अथवा अर्ध उर्ध मध्य सोई तीन लोक तामें भी देखना परा । अथवा तत्वमसी ये तीन लोक अथवा जाग्रती स्वप्न सुषोती ये तीन लोक अथवा कर्म काल कर्ता ये तीन लोक अथवा ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय ये तीन लोक

अथवा ध्याता ध्यान ध्येय ये तीन लोक में देखा परन्तु देखने में आइ नहीं । और मिथ्या धोखामें जानके सारा जगत अनुमान में बंध भया कछु पारख पद प्राप्त न भया । ये अर्थ ॥ २३६ ॥

साखी–सुरहुर पेड अगाध फल । पन्छी मरिया झूर ॥
बहुत जतन कै खोजिया । फल मीठा पै दूर ॥ २३७ ॥

टीका गुरुमुख–गुरू ऐसा कहते हैं कि मायाने जीवनको ऐसा उपदेश किया कि सुरहुर पेड, सुरहुर कहिये लंबा सूधा ऐसा जो बानीरूपी वृक्ष है । और ता पेड़ का अंतःकरण भूमिका में जड औ ता वृक्ष का अंत ब्रह्मांड में है । सोई ब्रह्म अगाध कहिये सायुज्य मुक्ती सो बडी मुक्ती सो मुक्ती कहिये सर्वोपर । सायुज्य कहिये जीव ब्रह्म की एकता, मीठा कहिये ब्रह्मानंद सुख, सो ऐसा सुख पाये बिना आवागवन का दुख कैसे छूटेगा; ये बडा दुर्लभ है बडी सुकृत से प्राप्त होयगा । बिना प्राप्त हुये दुख तीन काल में छूटेगा नहीं ऐसा मायाका उपदेश सुनिके जीवनको हर्ष विस्मय खडा भया । सो हर्ष कहिये ब्रह्मानंद सुख का लोभ औ विस्मय कहिये डर आवागवन का दुख नर्क का, तब जीव पक्षी झूरने लगे । झूरना कहिये अभ्यास सो उपदेश प्रमाण बहुत यतन करके खोजने लगे । पूरक कुंभक रेचक करके, श्रवन मनन निदिध्यास करके और विश्वास करके खोजने लगे नाम सुमिरन किया । और शम दम आदि अनेक यतन करके खोजा पर मिला नहीं, क्योंकि ब्रह्म जीव की एकताई भई नहीं । कदाचित कोई शंका करेगा कि काहे नहीं एकताई भई, तो जो एकताइ होती तो ब्रह्म सुखको कौन कहता । अरे जो ब्रह्मानंद हुआ सो तो जीवका किआपद है सो आनंद को जीव जानता है, जो आनंद होता तो आनन्द कौन कहता इस वास्ते एकताई अद्वैत होता तो आनन्द सिद्ध

नहीं होती ताते दूर है । दूर कहिये भास, भास कहिये दर्श सो जीव पक्षी अपने अध्यास में थकि गये मरगये । मीठा कहिये दृष्टी देखनेवाला द्रष्टा तो द्रष्टा दृष्टी की एकताई होती नहीं तो इस की कैसे होयगी ताते फल मीठा पै दूर उपदेश मिथ्या । ये अर्थ ॥ ३३७ ॥

साखी—बैठा रहै सो बानिया । ठाड रहै सो ग्वाल ॥
जागत रहै सो पहरुवा । तेहि धरि खायो काल ॥३३८॥

टीका गुरुमुख—बैठा रहै सो बानिया कहिये सतोगुण भक्त दानी बैठी जगह दान करते हैं, पुण्य करते हैं, नामस्मरण करते हैं, पांव में घुंघुरू बांध के नाचते हैं, अपनी मुक्ती के वास्ते तन मन धन से बिकाय गये, परन्तु मुक्ती रूप कल्पना सोई काल भक्तन को आखिर पकड के खा गया, कछु कल्पना रहित न भया । और ठाढ रहै सो ग्वाल, रजोगुणी कर्मी खडे रहते हैं और कोई ठाढेश्वरी बना, कोई अनेक प्रकारके तीर्थ करे, कोई चारों धाम जगन्नाथ रामनाथ बद्रीनाथ द्वारिकानाथ परस्ते हैं, कोई पृथिवी परिक्रमा देते हैं, ऐसे अनेक प्रकार के कर्म करते हैं मुक्ती के वास्ते । परन्तु कर्मरूपी कल्पना सोई काल कर्मिन को आखिर अंत में खाय गया कछु कल्पना रहित न भया । औ जागत रहै सो पहरुवा कहिये तमोगुणी योगी रात दिन जागते रहते हैं, क्योंकि इंगला पिंगला को देखते रहते हैं और श्वासोश्वास को लक्ष से देखते रहते हैं औ रेचक पूरक कुंभक करते हैं और इन्द्रियन को देखतेरहते हैं कि कहूं चलायमान न होय । इस प्रकार अनेक तरह के साधन भुक्ती मुक्ती के वास्ते करते हैं । परंतु साधनरूपी कल्पना सोई काल, सो योगिन को अन्त में खाय गया कछु कल्पना रहित न भया । रजोगुण सतोगुण तमोगुण इन तीनों को

शुद्ध सतोगुणरूपी काल कल्पना खाय गई और आप कल्पना नाश न भई । ये अर्थ ॥ ३३८ ॥

साखी–आगे आगे दौं जरे । पाछे हरियर होय ॥
बलिहारी तेही वृक्ष की । जर काटे फल होय ३३९॥

टीका गुरुमुख–आशारूपी वृक्ष औ ब्रह्मरूपी अग्नी, सो गुरू कहते हैं कि माया जीवन को उपदेश करती है, कि आगे आगे दौं जरे । तो भगवत प्राप्ती होनेके वास्ते भक्तीरूपी विरह अग्नि आशा-रूपी प्रपंच जो वृक्ष है ताको जलावने के वास्ते लगी । जासों आशारूपी वृक्ष जला और नाश भया परंतु कछु भगवत की प्राप्ती न भई । पाछे संदेहरूपी जड बनी रही ताते जन्म मरण का दुख कछु गया नहीं । औ संदेह रूपी जड करके पाछे फिर वृक्ष उत्पन्न जन्मना, मरना, उत्पत्ती अरु लय बनी रही कछु दुख छूटा नहीं । अब गुरु फिर कहते हैं कि हे जीव संदेहरूपी वृक्ष की जो जड है सो जड काटो क्योंकि जो जडमें कूवत चले है सो हरे बिना नाश हुये बिना सुखरूपी फल प्राप्त होने का नहीं । सुख कहिये जो जन्म मरणका दुख छूट जावै सोई सुख । ये अर्थ ॥ ३३९ ॥

साखी–जन्ममरण बालापना । चौथे वृद्ध अवस्था आय ॥
जस मूसा को तके बिलाई। अस यमजिव घातलगाय॥

टीका गुरुमुख–गुरू कहते हैं कि मूसा कहिये जीव और बिला-री कहिये कल्पना माया सोई यम काल, सो जा दिन ते नरदेह प्राप्त भई औ देह का अंत भया बालापन जीव का जाय के बुढापा भया । आशा तृष्णा मान गुमान काम क्रोध लोभ मोह अहंकार और प्रपंच बिषयन में अथवा सूक्ष्म विषय अध्यास अनुमान

आदि जाग्रती स्वप्न सुषोप्ती तुर्या ये चारों अवस्था के विषय जीव गाफिल रहा। परंतु कछु सतसङ्ग करके दया क्षमा शील सत्त धैर्य ऐसी पक्की अवस्था को प्राप्त न भया तब अंतमें कल्पना माया ने घात किया औ गाफिल के बश जीव दुखरूपी रहि गये बिना पारख। ये अर्थ ॥ ३४० ॥

साखी–है बिगरायल ओर का। बिगरो नाहिं बिगारो ॥
घाव काहि पर घालों। जित देखो तित प्राण हमारो॥३४१॥

टीका गुरुमुख–है बिगरायल ओर का सो ओर कहिये मध्य में जीव बिगरा कछु आदि में बिगरा न था शुद्ध स्वरूप निर्विकार जीव हता। परंतु मध्य में गुरुवा लोगों ने अनेक प्रकार के उपदेश करके जीव के अंतःकरण में बिकार खडा किया। और जीवकी शुद्धताई हरके बिकाररूपी खराब किया चौरासी आवागवन का अधिकारी बनाया। अब वही गुरुवन का उपदेश जीवन के अंतःकरण में जड हो गया गाफिल हो गये, कछु अपने स्वरूप की खबर रही नहीं आसक्त भये। अब गुरु विचार करते हैं कि जीवन की गाफिली आसक्ती कैसे छूटे गुरुवा लोगन ने तो जीवनको अनेक तरह से दुख दिया, सो दुख छुडाने के वास्ते गुरु कहते हैं कि जो भास अध्यास आदि गुरुवनते दृढाया सो मिथ्या धोखा है। और तू तो है प्राण भास अध्यास को जानने वाला मेरा स्वजाती है। कछु मैं जीव घातक काल नहीं जो त्रासरूपी घाव मारों तो जीव बहुत दुखी होते हैं। इस वास्ते शनैः शनैः मिथ्या धोखा परखाय के पारख पर थीर करता हौं। ये अर्थ ॥ ३४१ ॥

साखी–पारस परसै कंचन भौ। पारस कधी न होय ॥
पारस के अर्स पर्सते। सुवर्ण कहावै सोय ॥ ३४२ ॥

टीका गुरुमुख–पारस कहिये ब्रह्म और लोहा कहिये जीव जगत, सो विशिष्टाद्वैत के मतवाले बोलते हैं कि जीव कभी ब्रह्म होता नहीं, जीवकोटी न्यारी औ ब्रह्मकोटी न्यारी । जीव तो कर्म के अधीन प्रकृती बश; प्रकृती से उत्पन्न होता है औ प्रकृती में लय होता है कछु ब्रह्म की उत्पत्ती लय होती नहीं ।जीवनने नाम स्मरण भक्ती करी तब ब्रह्म प्रसन्न हुवा सोई स्पर्श हुवा, तब लोहरूपी जो जीव था सो कंचनरूपी ईश्वर दशों अवतार उत्पन्न भये । ये ब्रह्म के नाम स्मरणकी विशेषता है ये अर्थ ॥ ३४२ ॥

साखी–ढूँढत ढूँढत ढूँढिया । भया सो गूनागून ॥
ढूँढत ढूँढत ना मिला । तब हारी कहा बेचून ॥३४३॥

टीका गुरुमुख–गुरु कहते हैं कि जीव को स्वतः अनुभव एक संशय खड़ा भया कि एक समय दुख होता है और एक समय सुख होताहै सो सुख दुखको देनेवाला कोई कर्ता और है । जो कहिये कि मैंही कर्ता हौं तो जा समय सुख चाहिये ता समय दुख होता है औ जा समय दुख होना ता समय सुख होताहै तो हमारा किया कछु होता नहीं ताते कर्ता कोई और है ऐसा जीवको अनुभव हुवा । तब हिंदू और मुसलमान दोनों ने मनतुखा कर के अनुमान से कर्ता सिद्ध किया । हिंदू ने एक निराकार निरंजन निर्गुण चौदह लोक के ऊपर शून्य में ठहराया औ मुसलमान ने एक खुदा बेचून बेनमून लामुकाम गोयमगोय ऐसा चौदह तबक के परे अवर में ठहराया औ ता कर्ता की खोज करने लगे । तब खोज करते करते कछु वस्तुता मिली नहीं तब मन बुद्धी थाकी ये गुन के परे सोई गूनागून ऐसा हारि के कहा, कि अरूप है, अगम है, बेचून है । ये अर्थ ॥ ३४३ ॥

साखी–बेचूने जग चूनिया । सांई नूर निनार ॥
आखिर ताके बखत में । किसका करो दिदार ॥३४४॥

टीका गुरुमुख–गुरु कहते हैं कि बेचूने जग चूनिया, साई नूर निरार । ऐसा मायाने जीवन को समुझाया कि बेचूने निराकार ऐसा जो है ताने न कहिये जगत उत्पत्ती किया । निर्गुणसे सगुण भया औ निराकार से आकार हुवा बेचूनसे जगत रूप खडा भया औ बेनमूनसे नमून खडा भया और मालिक सोई ताका रूप नूरसो तो न्यारा ही है । अब गुरु कहतेहैं कि जो अरूप बेनूर परे ठहरा तो आखिर महाप्रलय क्यामत के वख्तमें किस का दीदार करोगे औ रूप विना दीदार होता नहीं । तो ये उपदेश तुम्हारा असंभव कछु संभवता नहीं है । ये अर्थ ॥ ३४४ ॥

साखी–सोई नूर दिल पाक है । सोई नूर पहिचान ॥
जाका कीया जग हुआ । सो बेचून क्यों जान ॥३४५॥

टीका गुरुमुख–गुरु कहते हैं कि सोई नूर दिल पाक है । नूर कहिये रूप दिल कहिये जीवका अंतःकरण और पाक नाम सच्चा निर्मल सोई सत्य है हाल हजूर है । काहे ते कि चूनसे बेचूनका भास भया कछु बेचूनको चूनका भास नहीं होता, औ रूपको अरूपका भास भया कछु अरूप को रूपका भास नहीं होता, औ गुणको निर्गुणका भास भया पर कछु निर्गुण को गुणका भास नहीं होता, और आकार को निराकार का भास होता है कछु निराकार को आकारका भास नहीं होता है । काहेते कि ताका दृष्टांत, बिम्ब कहिये जीव, प्रतिबिम्ब कहिये ब्रह्म सो जीवसे ब्रह्म सिद्ध होता है, सो तो जीवका अनुमान भास है और जड है कछु वस्तु चैतन्य है नहीं । तो नूर चैतन्य जीव हाजिर नजर है । जीवही से जगत ब्रह्म होता है सो मिथ्या धोखा छोडके

अपने रूपको पहिचान । और जाके किये जग हुवा सो अकर्ता वेचून जानके क्यों मानताहै और अपने भास अध्यास अनुमान ब्रह्म में क्यों बंध होताहै । और भास अध्यास अनुमान ब्रह्म सबको परखके पारख पर थीर हो । ये अर्थ ॥ ३४५ ॥

साखी—ब्रह्मा पूछै जननि से । कर जोरे सीस नवाय ॥
कवन वर्ण वह पुरुष है । माता कहु समुझाय॥ ३४६॥

टीका जीवमुख—ब्रह्माने माता—जननीसे कर जोरिके प्रश्न किया कि हे माता सिर्जनहार पुरुषका क्या रूप रंग है और कौन वर्ण है और कहां रहता है सो कर्ता कैसे प्राप्त होय सो समुझाय के कहिये ये शंका ब्रह्मा को भई ताका उत्तर ॥ ३४६ ॥

साखी—रेख रूप वै है नहीं । अधर धरी नहीं देह ॥
गगन मंडलके मध्यमें । निरखो पुरुष विदेह ॥ ३४७॥

टीका मायामुख—तब ब्रह्मासों माता उत्तर करके दृढापन देती है, कि सिर्जनहार जो पुरुष है वाको रूप नहीं, रेख नहीं, अंग नहीं, वर्ण नहीं, आकार नहीं ऐसा निराकार विदेह स्वरूप है । सो अधर धरी नहिं देह । अधर कहिये पिंडांड पिंड बिहूना ब्रह्मांड ऊर्ध शून्यमें ज्योती स्वरूप है सोई कर्ता को देखो वही तुम्हारा सिर्जनहार पुरुष । ऐसा माताने समुझाया तब ब्रह्माको माताके वचनकी प्रतीत भई । ये अभिप्राय ॥ ३४७ ॥

साखी—धरै ध्यान गगन के माहीं । लाये बज्र किवार ॥
देखी प्रतिमा आपनी । तीनिउ भये निहाल ॥ ३४८ ॥

टीका गुरुमुख—तब ऊपर की साखी में अभिप्राय जो कहा सोई धारणा ब्रह्मा करने लगे । गगन के माहि ब्रजासन करके दशोंद्वार रोक के, मूलबन्ध उडियानबंध औ जालंधरबंध ये तीनों बंध औ नव

नाडीको दश वायु को साध के, बाहर की वृत्ती फेर के, अंतर मुख करके,इंगला पिंगला को सम करके, सुषुम्ना नाडी के संग पिंडांडसे सुरतो खैंचके ब्रह्मांडको चढाई तब ज्योतिरूप प्रकाश भया।और शब्द धुन घोर करने लगा औ श्वासा का शब्द घोर हुवा श्वासा डंडायमान हुवा सोई ज्योति खडी हुई ।पिंडांडकी शक्ती ब्रह्मांड में लय हुई औ प्रतिबिम्ब रूप खडा भया,सोई अपने प्रतिबिंबको देखके आनंद निहाल भया।येही युक्ती कर के ब्रह्मा विष्णु महेश तीनों ब्रह्मानंदसुखमें थीर भये और वही स्वरूप कर्ताको निश्चय माताके बचन प्रमाण प्रतीत अनुभव हुवा, तब तीनों देवता माताकी स्तुति करने लगे हे माता तू धन्य धन्य है कि तेरी कृपासे हमने देखा जगदीश।सोई उपदेश तीनों देवता ऋषिमुनी योगी आदि सब जगतको करते भये।ये अर्थ३४८

साखी–ये मन तो शीतल भया । जब उपजा ब्रह्मज्ञान ॥
जेहि बसंदर जग जरै । सो पुनि उदक समान॥३४९।

टीका गुरुमुख–गुरु कहते हैं कि मायाने प्रथम उपदेश तीनों देवताको किया तैसी ब्रह्मांड में ब्रह्म समाधी में जग वृत्ती लय भई और आनंद भया । ता आनंद में मन उन्मुन हुवा सोई शीतल भया और समाधी की अनुभव जागी।तब ब्रह्मज्ञान उत्पन्न भया ब्रह्मरूप लखाया; सोई शीतलरूपी सुख माना । ताते गुरु कहते हैं कि जा ब्रह्म पद को शीतलरूपी सुख माना है परंतु वो सुख शीतलरूपी नहीं, वह तो अग्नीरूपी दुख है । क्योंकि जगत से ब्रह्म औ ब्रह्म से जगत उत्पन्न होता है और फिर लय होता है तो देखो उत्पत्ती प्रलय का कारण ब्रह्मही है । जो ब्रह्म निरुपाधी सुखरूपी होता तो जगतरूपी उपाधी जड दुख न होता । जो तुमने जलरूप ब्रह्मसुख माना सो भी ब्रह्मसुख काहेका वो तो अग्नी के माफिक दुखरूप है औ आवागमनका कारण ब्रह्मही है । ये अर्थ॥३४९ ॥

साखी–जासों नाता आदि का। बिसरि गया सो ठौर ॥
चौरासी के बसि परे। कहै और की और ॥ ३५० ॥

टीका गुरुमुख–जासों नाता आदि का आदि कहिये मूल में शुद्ध चैतन्य, क्योंकि जीवकी स्वजातीय सोई नाता सांच शुद्धताई निर्मलताई शुद्ध चैतन्य भूमिका ठौर था, ताको जीव अपनी मूल शुद्धताई को विसर गया। जो शुद्ध ज्ञान स्वरूप था सो शुद्ध अज्ञान से नाता जोरा। और प्रीति दिनोदिन खानी और बानी की बढ़ी ताते चौरासी लक्ष योनिन के फंद में परा और जीव जड़रूप हो गया। चौरासी लक्ष खानी में जहां जहां प्राप्त हुवा तहां तहां तैसाही होके परवश हो गया। और अपना शुद्ध चैतन्य ज्ञान स्वजातीय छोड़के और की और कहने लगा। औरकी और कहिये, कहीं ज्ञानी बना, कहीं कर्मी बना, कहीं योगी बना, कहीं भोगी बना कहीं रोगी बना, कहीं भक्त बना, कहीं दीवाना बना, कहीं सयाना बना, कहीं निरोगी बना, कहीं अकर्मी बना, कहीं अज्ञानी बना, कहीं विज्ञानी बना। ऐसे ऐसे अनेक तरह जहां जैसा बना तहां तैसाही बोलने लगा ताते स्वजातीय भूमिका छूटगई। ये अर्थ॥ ३५० ॥

साखी–अलख लखौं अलखैं लखौं। लखौं निरंजन ताहि।
हौं कबीर सबको लखौं। मोको लखै न काहि ॥ ३५१ ॥

टीका गुरुमुख–अलख कहिये जो लखने में न आवे, और अलखै कहिये जो लखने में आवे, सो जीवने दोनोंको लखा। और निरंजन कहिये अंजन से रहित दृष्टि, अगोचर सो अंजन निरंजन दोनोंको जीवने लखा। तो कहिये मानंदी पद ताको भी लखा। अब हौं कबीर सबको लखौं। अब हौं कबीर कहिये ज्ञानी, सो ब्रह्मज्ञानी बोलते हैं कि दृष्ट और अदृष्ट, प्रत्यक्ष और अपरोक्ष, निवृत्तीओं

प्रवृत्ती आदि सबको हौं लखता हौं ऐसा ब्रह्मज्ञानी बेदांती अहं लेके बोलतेहैं तब गुरु कहतेहैं कि अहंने सबको लखा परन्तु मूल पारखीजो ज्ञानरूपी है ताको कोईने लखा नहीं बिना पारख । ये अर्थ ॥ ३५१

साखी—हम तो लखा तिहुँ लोक में । तू क्यों कहै अलेख॥
सार शब्द जाना नहीं । धोखे पहिरा भेष ॥३५२॥

टीका गुरुमुख-हम तो लखा तिहुँ लोक में सो गुरु दर्सावतेहैं कि हम तो कहिये अहंकार, सो अहंकार तीनिउँ लोकमें है । मन बुद्धी बानी येही तीनिउ लोक, संकल्प सोई मन, निश्चय सोई बुद्धी, बयान सोई बानी; इस प्रकार तीनिउ लोकमें जो लखा सो हंकार हीने लखा सो क्या लखा, तूं कहिये मानंदी ब्रह्म, सो तो लखने में आया सो अलेख कैसे कहा । कदाचित कोई शंका करैगा कि तू ब्रह्म अलेख मन बुद्धी बानी ये तीन लोकसे न्यारा व्यतिरिक्त है सो गुरु व्यतिरेकका निराकरण करते हैं उसकी कसर निकारते हैं । मन बिना कोई संकल्प होता नहीं औ बुद्धी बिना कोई पदका निश्चय होता नहीं औ बानी बिना कोई उपदेश होता नहीं और मन बुद्धी बानीके परे जो तुम कहते हो सो तो मन बुद्धी बानी ही है परे तो कछु नहीं । जहवांसे जो बस्तू खडी होय सोई ताका अधिष्ठान, याहीते तुम्हारा उपदेश अनुमान भास अध्यास कल्पना सब मिथ्या . धोखा सो धोखेका उपदेश देनेको षट् दर्शन ने अनेक तरह का भेष धारण किया । सार शब्द जाने बिना अपना ही धोखा परखनेमें नहीं आया सो दूसरे को क्या परखावेंगे मिथ्या धोखा । सार शब्द कहिये जा शब्द से सब शब्दन की कसर मालूम होय सोई सारशब्द पारख । ये अर्थ ॥ ३५२ ॥

साखी—साखी आंखी ज्ञानकी । समुझि देखु मनमाहि ॥
बिनु साखी संसार का । झगरा छूटत नाहिं ॥३५३॥

टीका गुरुमुख—साखी कहिये साक्षी सो साक्षी बिना ज्ञान अंधा है याके वास्ते ज्ञानकी आंखी साक्षी से गुरु कहत हैं कि अपने मनमें विचार करके देखता नहीं कि बिना साखीसे संसारका झगरा टूटता नहीं। संसार कहिये जगत में खानी और बानी का झगरा पडा। सो कोई कहता है कि खानीही रूप भगवान है और कोई कहता है कि बानीही रूप भगवान है ऐसा खानी और बानी का झगरा भया। खानीवाला कहता है कि रूप जो देखने में आता है सोई सत्य है कैसे कि रूप से नाम होताहै कछु नाम से रूप नहीं होता, जैसे अग्नि से धुवां होता है कछु धुवेंसे अग्नि नहीं होती। याका दृष्टांत;कि जैसे यंत्र से आवाज होता है कछु आवाज से यंत्र कहिये देह सो होता नहीं।तैसे खानीसे बानी होती है कछु बानीसे खानी होती नहीं,तो खानी सत्य और बानी मिथ्या।और बानीवाला बोलता है कि बानी सत्य औ खानी मिथ्या, कैसे कि जबलग यह शरीर खडा है देह साबूत है सो बानीके आधार से खडा है। जब बानी निकर जायगी तब चोला शरीर शून्य हो जायगा कोई छूने का भी नहीं। जैसे बानी शब्द जो है सो आकाशका अंश है सो बानी का अधिष्ठान आकाश सो आकाशसे वर्षा होती है तब खानी पैदा होतीहै,याके वास्ते खानी मिथ्या और बानी सत्य।बिंदुरूपी खानी और नादरूपी बानी,सो कोई ने बानी सत्य करी और कोईने खानी बिंदु सत्य करके झगरेमें जीव परा। और खानी बानीका अभिमान धारण करके चौरासी लक्ष योनीमें सामिल होके झगरा रूप भया।सो झगरा बिनु साखी निरुवार होता नहीं। क्योंकि खानी और बानी दोनोंका साक्षी निर्णय कर्ता जो है सो दोनोंसे न्यारा है। जो आपही खानी बानी होता तो खानी बानी कहता कौन? ।सो खानी बानी मिथ्या जड और खानी

बानीका जानने वाला जनैया जीव चैतन्य सत्य।सो सत्य मिथ्या झगरा जाके जानने में आया सो गुरु पारख प्राप्त हुये बिना खानी बानी का दुख जनैया को है सो कछु छूटता नहीं।खानी और बानी नाशवंत मिथ्या और पारख गुरु आस्ती । सोई जीव की भूमिका स्थिर पद, आवागवन से रहित । ये अभिप्राय ॥ ३५३ ॥

इति साखी टीकासहित गुरुकी दयासे सम्पूर्ण ।

अथ. त्रिजा कहिये बानी,तामें तीन प्रकार करके इच्छा ने जाया ताको नाम त्रिजा बानीके अंग तीन,एक मायामुख करके उपदेश किया और एक जीवमुख करके स्तुति दीनता करने लगा और एक ब्रह्ममुख करके कर्ता बनाया । तीन अंग बानी का जाल गुरुमुख करके परखाया । अथवा त्रिजा कहिये खानी, तामें तीन प्रकार करके इच्छाने जाया ताका नाम त्रिजा ।खानी के अंग तीन, एक पुरुष एक स्त्री औ एक नपुंसक ये तीन अंग इच्छा मायाके, सो ता खानी का जाल गुरुमुख करके परखाया। क्योंकि जीव शुद्ध होयके खानी और बानी के जालमें आसक्त होके दुखिया हो गया । ताते गुरुने जीव दया स्वजाती जानके खानी और बानी दोनों जाल परखायके पारखभूमिका पर जीवको थीर किया ।भूल दृष्टी करके खानी और बानीरूप जीव हो रहा था,सो गुरुने खानी और बानीकी आसक्ती भूल थी सो परखाय के सर्व भूलदृष्टि छुडाई । और अपनी निज दृष्टी देके अपने स्वरूप पारख पद को प्राप्त किया तब जीव आवागवन दुख से रहित भया।

इति बीजकका त्रिजा गुरुकी दयासे सम्पूर्ण ।

साखी—सत गुरु स्वयं स्वरूप।आदि अंत गुण काल त्रिय॥
पांच तत्व मिलि स्थूल । सदा प्रकाशी परख प्रिय ॥ १॥
काल जाल के मध्य में । देखा जीव बेहाल ॥
दया दृष्टि गुरु जानि के । परखायो सब जाल ॥ २ ॥

सँबत अठारहसें सही। साल चौरानवे जान ॥
कातिक मास पूनम तिथी। शुक्र पक्ष परधान ॥ ३ ॥
बार रवी ता दिन कही । समय प्रभात बखान ॥
नग्र बुरहानपुर बैठक । नागिझिरी अस्थान ॥ ४ ॥
दास पूरन सो अहौं । संतन दया चहंत ॥
गुरु मोपै कृपा करी । तो मैं स्तुती कहंत ॥ ५ ॥
सांचा शब्द बताइया । सांचा दिया मुकाम ॥
ताते बंदत हौं तव चरण । सांचा गुरु सतनाम ॥ ६ ॥
सत कहेते सुख ऊपजे । सुकृत कहे दुख जाय ॥
सतसुकृत प्रभु तव चरण । निशिदिन बंदौं पाय ॥ ७ ॥
सबहि गुरुन के आदि गुरु । हंस देह निज चीन्ह ॥
अदली नाम कहाइया । अदल काल पर कीन्ह ॥८॥
जरा मरण जाके नहीं । अजर नाम कहि ताहि ॥
भव भारी दुख मेटिया । काल कला के माहि ॥९॥
चिन्ता रहित अचिन्त गुरु । बंदौं चरण सरोज ॥
सुमिरन कियेते मेटहीं । सब चिन्ता को खोज॥१०॥
पूरण पुरुष कृपाल प्रभु । और सकल जग नार ॥
कल्पित पुरुष बताइया । मानि भये जग छार॥ ११ ॥
करुणा खन कृपाल तन । सब ज्ञानिन में इंद्र ॥
अवगुन हरन सबसुखकरन । ताते नाम मुनिंद्र ॥ १२ ॥
दुखित जीव सब जानि के । दीन्हों सुख को धाम ॥
ताते प्रभु तव पद शरण । गुरु करुणामयनाम ॥ १३ ॥
कलियुगके जीव तुच्छ धी । तिनकी मेटी पीर ॥
दया करी परसाय पद । अशरण शरण कबीर ॥ १४ ॥
सत कबीर सुखलाल गुरु । तेहि सुत पूरनदास ॥

बीजक की टीका करी । जब तू हृदय प्रकाश ॥ १५ ॥
कहि पुकार स्तुती करो । हौं मतिमंद लाचार ॥
आपन मोको जानि के । दियो परख पद सार ॥१६ ॥
दास जानि निज आपना । बिनती सुनिये मोर ॥
बिनवत हौं कर जोरि के । गुरु शरणागत तोर ॥ १७ ॥
सुख साहेब तुम कृपा करी । पद परखायो मोहि ॥
सो पद जीवनसों कहा । परख भूमिका सोहि ॥ १८ ॥
असंत और निठुरता । निर्दय औ बिबिचार ॥
अधिरता तजि दीजिये । तब हंस होय ततसार ॥१९ ॥
देह जगत औ ब्रह्म लौ । जेते अहैं बिकार ॥
इनमें आसक्त न होइये । यह बिचार तत सार ॥ २० ॥
सुख दुख धर्म अधर्म सब । बरते असतहि माहिं ॥
निठुरता क्यों राखिये । शील गहो नर नाहिं ॥ २१ ॥
तेरी जाली जीव सब । दुखिया बश अज्ञान ॥
तिनको राह बताइये । दयाधरि करो सुजान ॥ २२ ॥
नाशमान त्रयकाल में । ताहि गह्यो बिबिचार ॥
अबिनाशी तू सत्य है । यों सो बिचारे बिचार ॥ २३ ॥
नाशमान सो ना रहै । अबिनाशी न नशाय ॥
तदासक्ति भय ना लहै । महा थीरता पाय ॥ २४ ॥
हंस समाधी एकही । सदा निरंतर होय ॥
इनते जो बिचलै नहीं । लेहु परख पद सोय ॥ २५ ॥
सत्य शील दया सहित । धीर बिचार सुजान ॥
जेहिते यह सब परखिया।सो पारख पहिचान ॥ २६ ॥
परख भूमिका भिन्न है । मिलै न काहु को भाय ॥
परखत परखत हंस को । ता भूमिकाको पाय ॥ २७ ॥

जाते सकलो परखिया । सो पारख निज रूप ।
तहां होय रहु थीर तू । नहिं झांई भ्रमकूप ॥ २८ ॥
पारख स्थिति कबीर गुरु । सकलो कही बखान ॥
तुम जियरा मम प्राण हो । लहहु सोइ दृढ ज्ञान ॥२९॥

चौबोला ।

पारख सब को परखत है । पुनि पारखकाको परखनिहारा ॥
सत चित आनंद और महानंद। पारख सबको कीन्ह निबेरा
बडे बडे अनुभव के कर्ता । बिन पारख कस कीन्ह बिचारा
पूरण दास कहैं सुनु ज्ञानी । निज पारख सोभयानिनारा ३०
साखी—पांच तत्व औ देह जड । याको नास्तिक जान॥
यामें रहियाको लखे । सो पारख पहिचान ॥ ३१ ॥
आनंद आनंद सब कहे । आनंद जीवको काल ॥
पूरन पारख प्रकाश भो । शरण कबीर दयाल ॥ ३२ ॥
अथ टीका समाप्ती भया । बांचि बिचारे जोय ॥
सदा बिमल सत्संग करि । संत बिबेकी सोय ॥३३॥
परखावे परखे सदा । सतसंगति के बीच ॥
ताको हमारी बंदगी । किंचित रहै न कीच ॥ ३४ ॥
पूरन गुरु प्रसाद ते । तिरजा भया तमाम ॥
सोई हम तुम सों कहा । पारख सदा अमान ॥३५॥
परख पारखी एक है । भिन्न भेद कछु नाहिं ॥
देह बिलास करि भेद है । सोई दियो दरसाहिं ॥३६॥

इति त्रिजाविचारबीजक गुरुकी दयासे संपूर्ण ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेस, खेतवाडी—बंबई.